नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

भाग 12



आगम - ६

'ज्ञाताधर्मकथा' मूलं एवं वृत्तिः

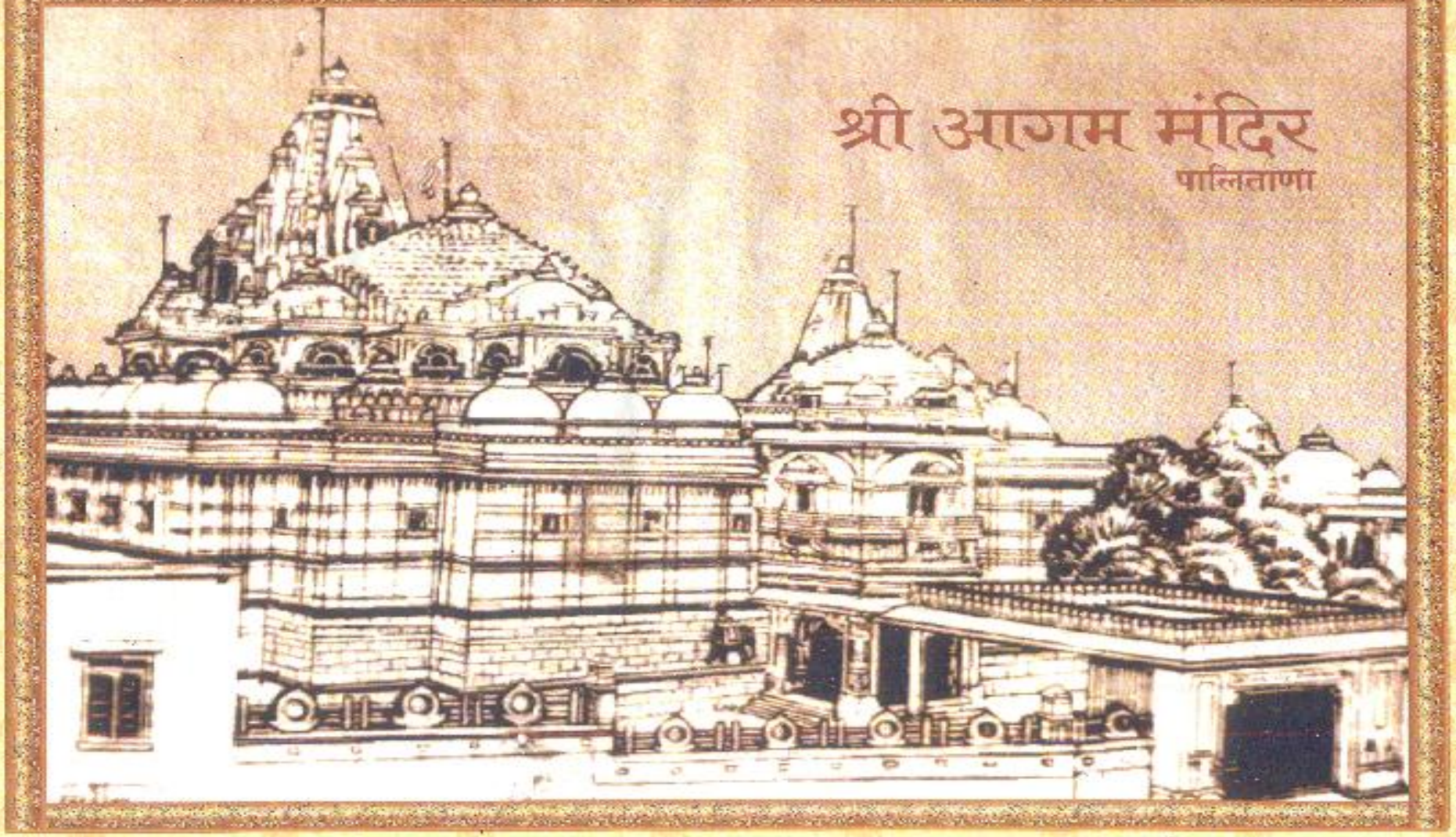
मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी की प्रेरणा से

'वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था' पालिताणा

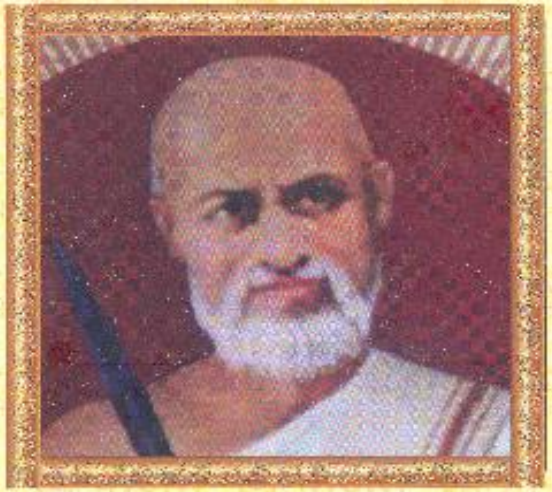
ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता



नमो नमो निम्मलदंसणस्स

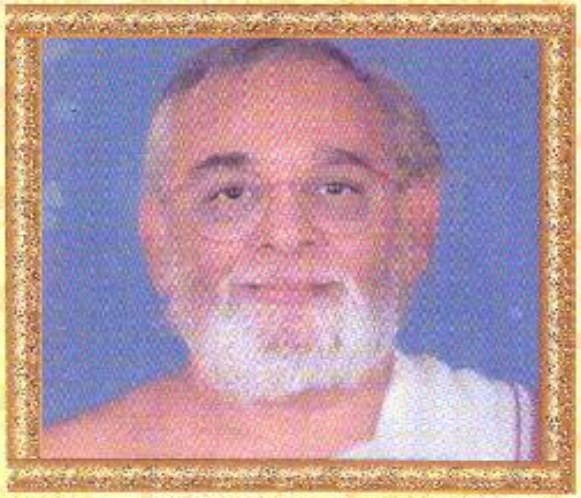
सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदावाद Mo 9825598855 / 9825306275



आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

[भाग-१२] श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं वृत्ति:

[मूलं एवं अभयदेवसूरि रचित वृत्ति:]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D.श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५

'सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग-12

श्री आगमोद्धारक-वाचना-शताब्दी-वर्ष-निमित्त 'आगम-वृत्ति-मुद्रण-प्रोजेक्ट'

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अवचूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ७०० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... *.....मुनि दीपरत्नसागर...*

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

*** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |

*** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण* " इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भावबरी वंदना |

*** मुनि दीपरत्नसागर...

◆◆◆ श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था, पालिताणा ◆◆◆

पूज्यपाद आनंदसागर-सूरीश्वरजी की बौद्धिक-प्रतिभा का मूर्तिमंत स्वरुप ऐसी इस संस्था की स्थापना विक्रम-संवत १९९९ मे महा-वद ५ को हुइ| *पूज्य आचार्य हर्षसागरसूरिजी की प्रेरणा से* जिन की तरफ़ से इस *सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि* के लिए संपूर्ण द्रव्य-सहाय की प्राप्ति हुइ |

शिल्प-स्थापत्य, शिलोत्कीर्ण आगम और समवसरण स्थित नयनरम्य ४५ चौमुख जिन-प्रतिमाजी से सुशोभित ऐसा ये 'आगममंदिर' है, जो शत्रुंजय-गिरिराज कि तलेटीमे स्थित है | वर्तमान २४ जिनवर, २० विहरमान जिनवर और १ शाश्वत मिलाकर ४५ चौमुखजी यहा बिराजमान है | जहां ४० समवसरण की रचना मेरु पर्वत के तिनो काण्ड के वर्णो के अनुसार चार अलग-अलग रंगो के आरस-पत्थर से बना है, देवो द्वारा रचित समवसरण के शास्त्र वर्णन-अनुसार आगम-मंदिर कि समवसरण का स्थापत्य है | ऐसी अनेक विशेषता से युक्त ये आगममंदिर है |

**** मुनि दीपरत्नसागर...*

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग १ से ४० के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई , उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे| समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रेज]पूना, शंखेश्वर, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

.....मुनि दीपरत्नसागर

श्रुतस्कन्ध: १			श्रुतस्कन्ध: १			श्रुतस्कन्ध: २		
मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:	मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक	मूलांक:	वर्ग्ग:	पृष्ठांक:
००१-	०१- उत्क्षिप्तज्ञातं	०११	१४२-	११- दावद्रव:	३५२	२२०-	०१- चमरेन्द्र अग्रमहिषि	५०२
०४२-	०२- संघाटकं	१६५	१४३-	१२- उदकज्ञात:	३५६	२२५-	०२- बलिन्द्र अग्रमहिषि	५११
०५५-	०३- अंड:	१९१	१४५-	१३- दर्दुरक:	३६५	२२६-	०३- धरणादि अग्रमहिषि	५१२
०६२-	०४- कूर्म्म:	२०२	१४८-	१४- तैतलिपुत्रं	३७७	२२७-	०४- भूतानंदादि अग्रमहिषि	५१३
०६३-	०५- शेलक:	२०६	१५७-	१५- नंदिफलं	३९५	२२८-	०५- पिशाचादि अग्रमहिषि	५१३
०७४-	०६- तूम्बक:	२३६	१५८-	१६- अपरकंका	४०१	२३४-	०६- महाकाल अग्रमहिषि	५१४
०७५-	०७- रोहिणी	२३९	१८४-	१७- अश्व:	४६४	२३५-	०७- सूर्य अग्रमहिषि	५१४
०७६-	०८- मल्ली	२५१	२०८-	१८- सुंसुमा	४७९	२३६-	०८- चन्द्र अग्रमहिषि	५१४
११०-	०९- माकंदी	३२१	२१३-२२०	१९- पुण्डरीक:	४९४	२३७-	०९- शक्र अग्रमहिषि	५१५
१४१-	१०- चन्द्रमा	३४९		----------		२३८-२४१	१०- ईशान अग्रमहिषि	५१५

['ज्ञाताधर्मकथा' - मूलं एवं वृत्तिः] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" के नामसे सन १९१९ (विक्रम संवत १९७५) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

इसी प्रत को फिर से दुसरे पूज्यश्रीओने अपने-अपने नामसे भी छपवाई, जिसमे उन्होंने खुदने तो कुछ नहीं किया, मगर इसी प्रत को ऑफसेट करवा के, अपना एवं अपनी प्रकाशन संस्था का नाम छाप दिया. जिसमे किसीने पूज्यपाद् सागरानंदसूरिजी के नाम को आगे रखा, और अपनी वफादारी दिखाई, तो किसीने स्वयं को ही इस पुरे कार्य का कर्ता बता दिया और श्रीमद्सागरानंदसूरिजी तथा प्रकाशक का नाम ही मिटा दिया |

✤ हमारा ये प्रयास क्यों? ✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर श्रुतस्कन्ध, अध्ययन, मूलसूत्र- आदि के नंबर लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन, उद्देशक आदि चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन एवं उद्देशक लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे विशिष्ठ फूटनोट भी लिखी है, जिसमे उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणासे और श्री वर्धमान जैन आगममंदिर, पालिताणा की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' भाग-१२ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है |

.....मुनि दीपरत्नसागर.

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]

अर्हम् ।

नवाङ्गीवृत्तिकारकश्रीमदभयदेवसूरिवरविहितवृत्तियुतं गणभृत्पादप्रणीतं

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम् ।

॥ नत्वा श्रीमन्महावीरं, प्रायोऽन्यग्रन्थवीक्षितः । ज्ञाताधर्मकथाङ्गस्यानुयोगः कश्चिदुच्यते ॥ १ ॥ तत्र च फलमङ्गलादिचर्चेः स्थानान्तरादवसेयः, केवलमनुयोगद्वारविशेषस्योपक्रमस्य प्रतिभेदरूपप्रक्रान्तशास्त्रस्य वीरजिनवरेन्द्रापेक्षयाऽर्थतः आत्मागमत्वं तच्छिष्यं तु पञ्चमगणधरं सुधर्मस्वामिनमाश्रित्यानन्तरागमत्वं तच्छिष्यं च जम्बूस्वामिनमपेक्ष्य परम्परागमतां प्रतिपिपादयिषुः अथवा अनुगमाख्यस्य तृतीयस्यानुयोगद्वारस्य भेदभूताया उपोद्घातनिर्युक्तेः प्रतिभेदभूतनिर्गमद्वारस्वभावं प्रस्तुतग्रन्थस्यार्थतो महावीरनिर्गतत्वमभिधित्सुः सूत्रकारः–'तेणं कालेणं'मित्यादिकमुपोद्घातग्रन्थं तावदादावाह—

ॐ नमः सर्वज्ञाय । ते णं काले णं ते णं समए णं चंपानामं नयरी होत्था वण्णओ ॥ (सूत्रं १)

तत्र योऽयं णंशब्दः स वाक्यालङ्कारार्थः, ते इत्यत्र च य एकारः स प्राकृतशैलीप्रभवो यथा 'करेमि भंते!' इत्यादिषु, ततोऽयं वाक्यार्थो जातः–तस्मिन् काले तस्मिन् समये यस्मिन्नसौ नगरी बभूवेति, अधिकरणे चेयं सप्तमी, अथ कालसमययोः कः प्रति-

ज्ञा. ध.

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]

विशेषः ?, उच्यते, काल इति सामान्यकालः अवसर्प्पिण्याश्चतुर्थविभागलक्षणः समयस्तु तद्विशेषो यत्र सा नगरी स राजा सुधर्म्मस्वामी च बभूव, अथवा तृतीयैवेयं, ततस्तेन कालेन–अवसर्प्पिणीचतुर्थारकलक्षणेन हेतुभूतेन तेन समयेन–तद्विशेषभूतेन हेतुना **'चंपा नाम नयरी होत्थ'**त्ति अभवत् आसीदित्यर्थः, ननु चेदानीमपि साऽस्ति किं पुनरधिकृतग्रन्थकरणकाले ?, तत्कथमुक्तमासीदिति ?, उच्यते, अवसर्प्पिणीत्वात् कालस्य वर्णकग्रन्थवर्णितविभूतियुक्ता तदानीमासीद् इदानीं नास्तीति **'वण्णओ'**त्ति चम्पानगर्या वर्णकग्रन्थोऽत्रावसरे वाच्यः, स चायं–**'रिद्धत्थिमियसमिद्धा'** ऋद्धा–भवनादिभिर्वृद्धिमुपगता स्तिमिता–भयवर्जितत्वेन स्थिरा समृद्धा–धनधान्यादिभुक्ता ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः **'पमुइयजणजाणवया'** प्रमुदिताः प्रमोदकारणवस्तूनां सद्भावाज्जनाः–नगरीवास्तव्यलोका जानपदाश्च–जनपदभवास्तत्रायाताः सन्तो यस्यां सा प्रमुदितजनजानपदा **'आइण्णजणमणुस्सा'** मनुष्यजनेनाकीर्णा–संकीर्णा, मनुष्यजनाकीर्णेति वाच्ये राजदन्तादिदर्शनादाकीर्णजनमनुष्येत्युक्तं, **'हलसयसहस्ससंकिट्ठविय्टलट्ठपन्नत्तसेउसीमा'** हलानां–लाङ्गलानां शतैः सहस्रैश्च शतसहस्रैर्वा–लक्षैः संकृष्टा–विलिखिता विकृष्टं–दूरं यावद्विकृष्टा वा–आसन्ना लष्टा–मनोज्ञा कर्षकाभिमतफलसाधनसमर्थत्वात् **'पण्णत्ते'**ति योग्या कृता बीजवपनस्य सेतुसीमा–मार्गसीमा यस्याः सा तथा, अथवा संकृष्टादिविशेषणानि सेतूनि–कुल्याजलसेक्यक्षेत्राणि सीमासु यस्याः सा तथा, अनेन तज्जनपदस्य लोकबाहुल्यं क्षेत्रबाहुल्यं चोक्तं **'कुक्कुडसंडेयगामपउरा'** कुक्कुटाः–ताम्रचूडा षाण्ढेयाः–षण्ढपुत्रकाः षण्ढा एव तेषां ग्रामाः–समूहास्ते प्रचुराः–प्रभूता यस्यां सा तथा, अनेन लोकप्रमुदितत्वं व्यक्तीकृतं, प्रमुदितो हि लोकः क्रीडार्थं कुक्कुटान् पोषयति षण्डांश्च करोतीति, **'उच्छुजवसालिकलिया'** अनेन च जनप्रमोदकारणमुक्तं, नह्येवंप्रकारवस्त्वभावेन प्रमोदो जनस्य स्यादिति,

१ उत्क्षिप्त-साध्य० चम्पावर्णनं सू. १

॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चम्पा-नगर्याः वर्णनम्

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]

'गोमहिसगवेलगप्पभूया' गवादयः प्रभूताः–प्रचुरा यस्यामिति वाक्यं गवेलका–उरभ्राः 'आयारवंतचेइयजुवइविविहसण्णिविट्ठबहुला' आकारवन्ति–सुन्दराकाराणि यानि चैत्यानि–देवतायतनानि युवतीनां च–तरुणीनां पण्यतरुणीमामिति हृदयं यानि विविधानि संनिविष्टानि–संनिवेशनानि पाटकास्तानि बहुलानि–बहूनि यस्यां सा तथा 'उक्कोडियगायगंठिभेयभडतक्करखंडरक्खरहिया' उक्कोडा उत्कोटा–लञ्चेत्यर्थः तया ये व्यवहरन्ति ते उत्कोटिकाः गात्रान्–मनुष्यशरीरावयवविशेषान् कव्यादेः सकाशाद्ग्रन्थिकार्षापणादिपोट्टलिकां भिन्दन्ति–आच्छिन्दन्तीति गात्रग्रन्थिभेदा भटाः–चारभटा बलात्कारप्रवृत्तयः तस्कराः–तदेव–चौर्यं कुर्वन्तीत्येवंशीलास्तस्कराः खण्डरक्षा–दण्डपाशिकाः शुल्कपाला वा एभी रहिता या सा तथा, अनेन तत्रोपद्रवकारिणामभावमाह, 'खेमा' अशिवाभावात् 'निरुवद्दुवा' निरुपद्रुता अविद्यमानराजादिकृतोपद्रवेत्यर्थः, 'सुभिक्खा' सुष्ठु–मनोज्ञा प्रचुरा भिक्षा भिक्षुकाणां यस्यां सा सुभिक्षा, अत एव पाखण्डिकानां गृहस्थानां च 'वीसत्थसुहावासा' विश्वस्तानां निर्भयानामनुत्सुकानां वा सुखः–सुखस्वरूपः शुभो वा आवासो यस्यां सा तथा, 'अणेगकोडीकोडुंबियाइण्णनिव्वुयसुहा' अनेकाः कोटयो द्रव्यसंख्यायां स्वरूपपरिमाणे वा येषां ते अनेककोटयः तैः कौटुम्बिकैः–कुटुम्बिभिश्चाकीर्णा–संकुला या सा तथा सा चासौ निर्वृता च–संतुष्टजनयोगात् संतोषवतीति कर्मधारयोऽत एव सा चासौ सुखा च शुभा च वेति कर्मधारयः, 'नडनट्टगजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबगकहकपवककलासकआइक्खयलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियअणेगतालाचराणुचरिया' नटा–नाटकानां नाटयितारो नर्त्तका–ये नृत्यन्ति अंकोल्ला इत्येके जल्ला–वरत्राखेलकाः राज्ञः स्तोत्रपाठका इत्यन्ये मल्लाः–प्रतीताः मौष्टिका–मल्ला एव ये मुष्टिभिः प्रहरन्ति विडम्बका–विदूषकाः कथकाः–प्रतीताः प्लवका–ये

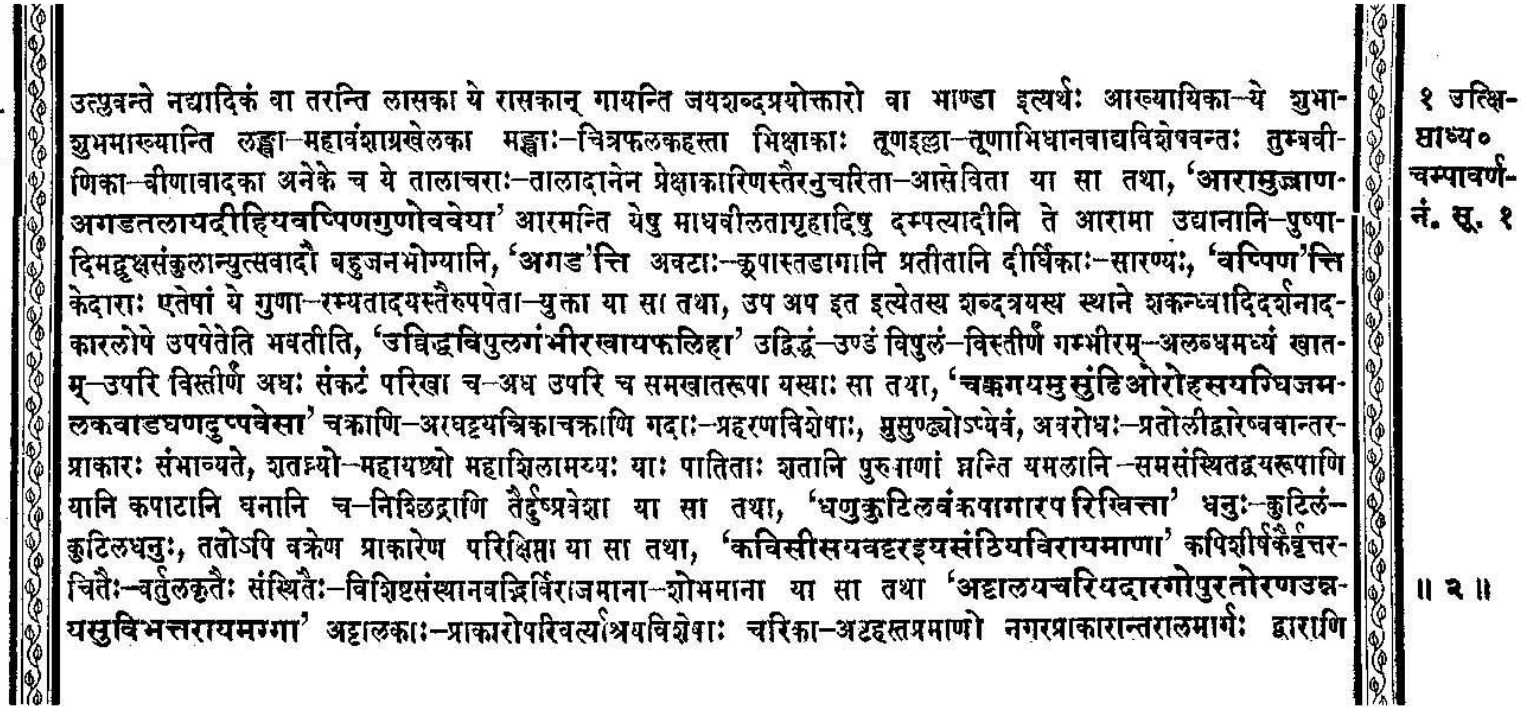
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चम्पा-नगर्याः वर्णनम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ २ ॥

उत्प्लवन्ते नद्यादिकं वा तरन्ति लासका ये रासकान् गायन्ति जयशब्दप्रयोक्तारो वा भाण्डा इत्यर्थः आख्यायिका–ये शुभाशुभमाख्यान्ति लङ्घा–महावंशाग्रखेलका मङ्खाः–चित्रफलकहस्ता भिक्षाकाः तूणइल्ला–तूणाभिधानवाद्यविशेषवन्तः तुम्बवीणिका–वीणावादका अनेके च ये तालाचराः–तालादानेन प्रेक्षाकारिणस्तैरनुचरिता–आसेविता या सा तथा, 'आरामुज्जाणअगडतलायदीहियवप्पिणगुणोववेया' आरमन्ति येषु माधवीलतागृहादिषु दम्पत्यादीनि ते आरामा उद्यानानि–पुष्पादिमद्वृक्षसंकुलान्युत्सवादौ बहुजनभोग्यानि, 'अगड'त्ति अवटाः–कूपास्तडागानि प्रतीतानि दीर्घिकाः–सारण्यः, 'वप्पिण'त्ति केदाराः एतेषां ये गुणा–रम्यतादयस्तैरुपपेता–युक्ता या सा तथा, उप अप इत इत्येतस्य शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादकारलोपे उपपेतेति भवतीति, 'उविद्धविपुलगंभीरखायफलिहा' उद्विद्धं–उण्डं विपुलं–विस्तीर्णं गम्भीरम्–अलब्धमध्यं खातम्–उपरि विस्तीर्णं अधः संकटं परिखा च–अध उपरि च समखातरूपा यस्याः सा तथा, 'चक्कगयमुसुंढिओरोहसयग्घिजमलकवाडघणदुप्पवेसा' चक्राणि–अरघट्टयन्त्रिकाचक्राणि गदाः–प्रहरणविशेषाः, मुसुण्ढ्योऽप्येवं, अवरोधः–प्रतोलीद्वारेष्ववान्तरप्राकारः संभाव्यते, शतघ्नयो–महायष्ट्यो महाशिलामय्यः याः पातिताः शतानि पुरुषाणां घ्नन्ति यमलानि–समसंस्थितद्वयरूपाणि यानि कपाटानि घनानि च–निश्छिद्राणि तैर्दुष्प्रवेशा या सा तथा, 'धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ता' धनुः–कुटिलं–कुटिलधनुः, ततोऽपि वक्रेण प्राकारेण परिक्षिप्ता या सा तथा, 'कविसीसयवट्टरइयसंठियविरायमाणा' कपिशीर्षकैर्वृत्तरचितैः–वर्तुलकृतैः संस्थितैः–विशिष्टसंस्थानवद्भिर्विराजमाना–शोभमाना या सा तथा 'अट्टालयचरियदारगोपुरतोरणउन्नयसुविभत्तरायमग्गा' अट्टालकाः–प्राकारोपरिवर्त्याश्रयविशेषाः चरिका–अट्टहस्तप्रमाणो नगरप्राकारान्तरालमार्गः द्वाराणि

१ उत्क्षिप्तज्ञाध्य० चम्पावर्णनं. सू. १

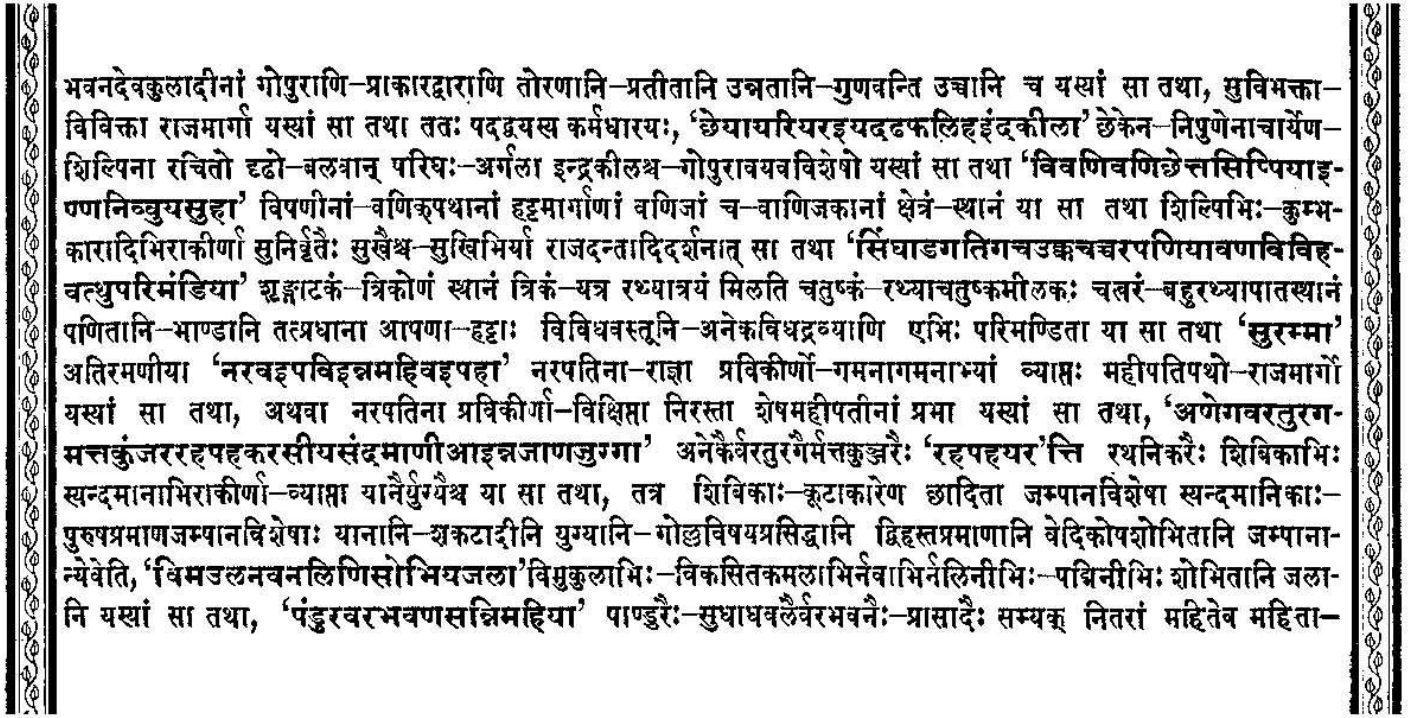
॥ २ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चम्पा-नगर्याः वर्णनम्

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]



भवनदेवकुलादीनां गोपुराणि–प्राकारद्वाराणि तोरणानि–प्रतीतानि उन्नतानि–गुणवन्ति उच्चानि च यस्यां सा तथा, सुविभक्ता–विविक्ता राजमार्गा यस्यां सा तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, 'छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीला' छेकेन–निपुणेनाचार्येण–शिल्पिना रचितो दृढो–बलवान् परिघः–अर्गला इन्द्रकीलश्च–गोपुरावयवविशेषो यस्यां सा तथा 'विवणिवणिच्छेत्तसिप्पियाइण्णनिव्वुयसुहा' विपणीनां–वणिक्पथानां हट्टमार्गाणां वणिजां च–वाणिजकानां क्षेत्रं–स्थानं या सा तथा शिल्पिभिः–कुम्भकारादिभिराकीर्णा सुनिर्वृतैः सुखैश्च–सुखिभिर्या राजदन्तादिदर्शनात् सा तथा 'सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरपणियावणविविहवत्थुपरिमंडिया' शृङ्गाटकं–त्रिकोणं स्थानं त्रिकं–यत्र रथ्यात्रयं मिलति चतुष्कं–रथ्याचतुष्कमीलकः चत्वरं–बहुरथ्यापातस्थानं पणितानि–भाण्डानि तत्प्रधाना आपणा–हट्टाः विविधवस्तूनि–अनेकविधद्रव्याणि एभिः परिमण्डिता या सा तथा 'सुरम्मा' अतिरमणीया 'नरवइपविइन्नमहिवइपहा' नरपतिना–राज्ञा प्रविकीर्णो–गमनागमनाभ्यां व्याप्तः महीपतिपथो–राजमार्गो यस्यां सा तथा, अथवा नरपतिना प्रविकीर्णा–विक्षिप्ता निरस्ता शेषमहीपतीनां प्रभा यस्यां सा तथा, 'अणेगवरतुरगमत्तकुंजररहपहकरसीयसंदमाणीआइन्नजाणजुग्गा' अनेकैर्वरतुरगैर्मत्तकुञ्जरैः 'रहपहयर'त्ति रथनिकरैः शिबिकाभिः स्यन्दमानाभिराकीर्णा–व्याप्ता यानैर्युग्यैश्च या सा तथा, तत्र शिबिकाः–कूटाकारेण छादिता जम्पानविशेषा स्यन्दमानिकाः–पुरुषप्रमाणजम्पानविशेषाः यानानि–शकटादीनि युग्यानि–गोल्लविषयप्रसिद्धानि द्विहस्तप्रमाणानि वेदिकोपशोभितानि जम्पानान्येवेति, 'विमउलनवनलिणिसोभियजला' विमुकुलाभिः–विकसितकमलाभिर्नवाभिर्नलिनीभिः–पद्मिनीभिः शोभितानि जलानि यस्यां सा तथा, 'पंडुरवरभवणसन्निमहिया' पाण्डुरैः–सुधाधवलैर्वरभवनैः–प्रासादैः सम्यक् नितरां महितेव महिता–

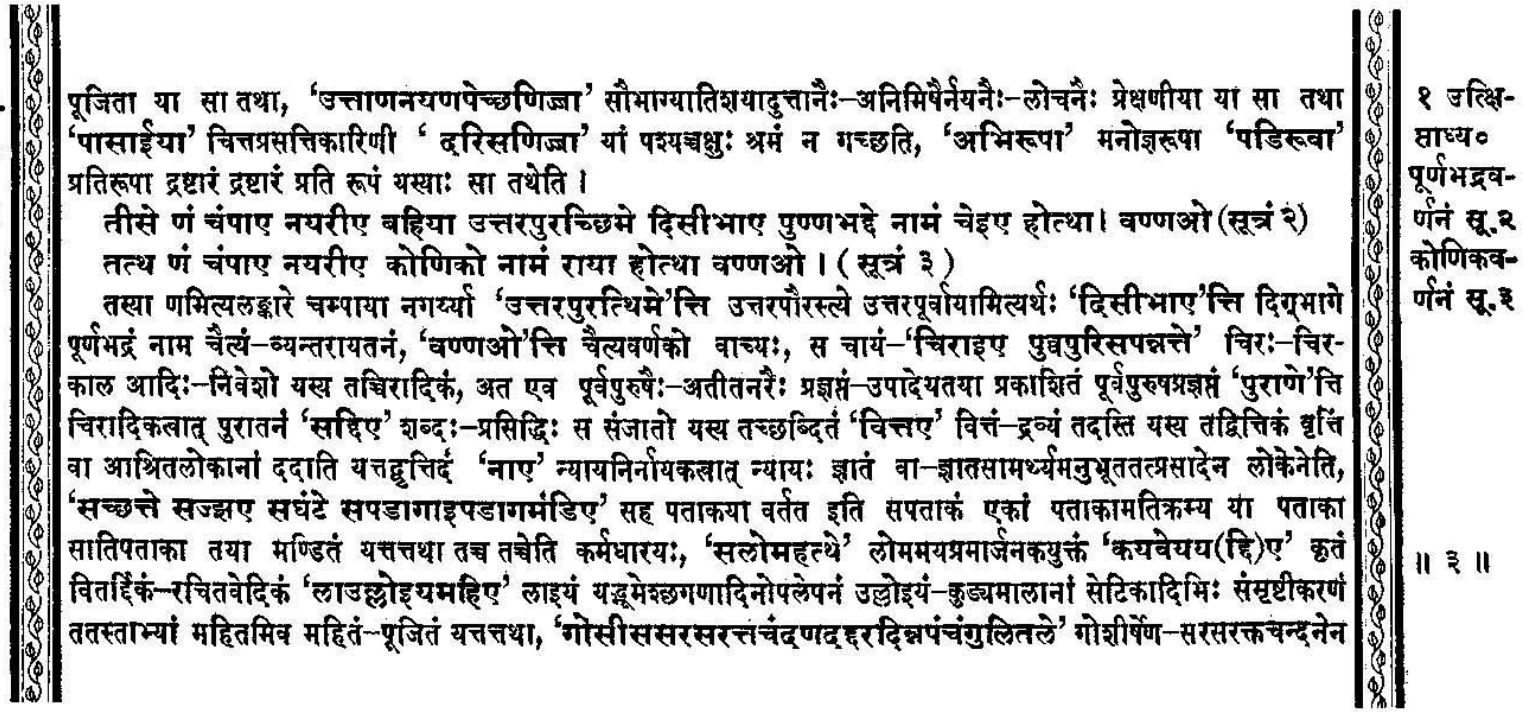
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चम्पा-नगर्याः वर्णनम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्-

॥ ३ ॥

पूजिता या सा तथा, 'उत्ताणनयणपेच्छणिज्जा' सौभाग्यातिशयादुत्तानैः–अनिमिषैर्नयनैः–लोचनैः प्रेक्षणीया या सा तथा 'पासाईया' चित्तप्रसत्तिकारिणी 'दरिसणिज्जा' यां पश्यच्चक्षुः श्रमं न गच्छति, 'अभिरूपा' मनोज्ञरूपा 'पडिरूवा' प्रतिरूपा द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रूपं यस्याः सा तथेति।

तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था। वण्णओ (सूत्रं २)

तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिको नामं राया होत्था वण्णओ। (सूत्रं ३)

तस्या णमित्यलङ्कारे चम्पाया नगर्य्या 'उत्तरपुरत्थिमे'त्ति उत्तरपौरस्त्ये उत्तरपूर्वायामित्यर्थः 'दिसीभाए'त्ति दिग्भागे पूर्णभद्रं नाम चैत्यं–व्यन्तरायतनं, 'वण्णओ'त्ति चैत्यवर्णको वाच्यः, स चायं–'चिराइए पुव्वपुरिसपन्नत्ते' चिरः–चिर-काल आदिः–निवेशो यस्य तच्चिरादिकं, अत एव पूर्वपुरुषैः–अतीतनरैः प्रज्ञप्तं–उपादेयतया प्रकाशितं पूर्वपुरुषप्रज्ञप्तं 'पुराणे'त्ति चिरादिकत्वात् पुरातनं 'सद्दिए' शब्दः–प्रसिद्धिः स संजातो यस्य तच्छब्दितं 'वित्तिए' वित्तं–द्रव्यं तदस्ति यस्य तद्वित्तिकं वृत्तिं वा आश्रितलोकानां ददाति यत्तद्वृत्तिदं 'नाए' न्यायनिर्नायकत्वात् न्यायः ज्ञातं वा–ज्ञातसामर्थ्यमनुभूततत्प्रसादेन लोकेनेति, 'सच्छत्ते सज्झए सघंटे सपडागाइपडागमंडिए' सह पताकया वर्तत इति सपताकं एकां पताकामतिक्रम्य या पताका सातिपताका तया मण्डितं यत्तत्तथा तच्च तच्चेति कर्मधारयः, 'सलोमहत्थे' लोममयप्रमार्जनकयुक्तं 'कयवेयय(दि)ए' कृतं वितर्दिकं–रचितवेदिकं 'लाउल्लोइयमहिए' लाइयं यद्भूमेश्छगणादिनोपलेपनं उल्लोइयं–कुड्यमालानां सेटिकादिभिः संमृष्टीकरणं ततस्ताभ्यां महितमिव महितं–पूजितं यत्तत्तथा, 'गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितले' गोशीर्षेण–सरसरक्तचन्दनेन

१ उत्क्षि-प्तज्ञा-ध्य० पूर्णभद्रव-र्णनं सू.२ कोणिकव-र्णनं सू.३

॥ ३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कोणिक-राज्ञः वर्णनं

च दर्दरेण–बहलेन चपेटाकारेण वा दत्ताः पंचाङ्गुलास्तला–हस्तकाः यत्र तत्तथा, 'उवचियचंदणकलसे' उपचिता–निवेशिताः चन्दनकलशा–मङ्गल्यघटा यत्र तत्तथा, 'चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागे' चन्दनघटाश्च सुष्ठु कृतास्तोरणानि च द्वारदेशभागं प्रति यस्मिंस्तच्चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागं, देशभागाश्च देशा एव, 'आसत्तोसत्तविपुलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावे' आसक्तो–भूमौ संबद्धः उत्सक्त–उपरि संबद्धः विपुलो–विस्तीर्णः वृत्तो–वर्तुलः 'वग्घारिय'त्ति प्रलम्बमानः माल्यदामकलापः–पुष्पमालासमूहो यत्र तत्तथेति 'पंचवण्णसुरभिमुक्कपुप्फपुञ्जोवयारकलिए' पंचवर्णेन सुरभिणा मुक्तेन–क्षिप्तेन पुष्पपुञ्जलक्षणेनोपचारेण–पूजया कलितं यत्तत्तथा 'कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे' कालागरुप्रभृतीनां धूपानां यो मघमघायमानो गन्ध उद्धूत–उद्भूतस्तेनाभिरामं यत्तत्तथा, तत्र कुंदुरुक्कं–चीडा तुरुक्कं–सिल्हकं 'सुगंधवरगंधगंधिए' सद्गन्धा ये वरगन्धा–वासास्तेषां गन्धो यत्रास्ति तत्तथा 'गंधवट्टिभूए' सौरभ्यातिशयात् गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पमित्यर्थः 'नडनट्टकजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबगपवककहकलासकआइक्खयलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियभुयगमागहपरिगए' पूर्ववन्नवरं भुजगा–भोगिन इत्यर्थः भोजका वा तदर्चका मागधा–भट्टाः 'बहुजणजाणवयस्स विस्सुयकित्तिए' बहोर्जनस्य पौरस्य जानपदस्य च–जनपदभवलोकस्य विश्रुतकीर्त्तिकं–प्रतीतख्यातिकं, 'बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे' आहोतुः–दातुः आहवनीयं–संप्रदानभूतं 'पाहुणिज्जे' प्रकर्षेण आहवनीयमिति गमनिका 'अच्चणिज्जे' चन्दनगन्धादिभिः 'वंदणिज्जे' स्तुतिभिः 'पूयणिज्जे' पुष्पैः 'सक्कारणिज्जे' वस्त्रैः 'सम्माणणिज्जे' बहुमानविषयतया 'कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे' कल्याणमित्यादिधिया विनयेन पर्युपासनीयं 'दिव्वे' दिव्यं प्रधानं 'सच्चे' सत्यं सत्यादेशत्वात् 'सच्चोवाए'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२,३]

दीप अनुक्रम [२,३]

सत्यावपातं 'सत्यसेवं' सेवायाः सफलीकरणात् 'सन्निहियपाडिहेरे' विहितदेवताप्रातिहार्यं 'जागसहस्सभागपडिच्छए' यागाः–पूजाविशेषा ब्राह्मणप्रसिद्धास्तत्सहस्राणां भागम्–अंशं प्रतीच्छति आभाव्यत्वात् यत्तत्था 'बहुजणो अच्चेइ आगम्म पुण्णभद्दं चेइअं। से णं पुण्णभद्दे चेइए एक्केणं महया वणसंडेण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते' सर्वतः–सर्वदिक्षु समन्तात्–विदिक्षु च 'से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे' कृष्णावभासः–कृष्णप्रभः कृष्ण एव वाऽवभासत इति कृष्णावभासः, 'नीले नीलोभासे' प्रदेशान्तरे 'हरिए हरिओभासे' प्रदेशान्तर एव, तत्र नीलो मयूरगलवत् हरितस्तु शुकपिच्छवत्, हरिताभ इति वृद्धाः, 'सीए सीओभासे' शीतः स्पर्शापेक्षया बह्व्याद्याक्रान्तत्वादिति वृद्धाः, 'निद्धे निद्धोभासे' स्निग्धो न तु रूक्षः, 'तिव्वे तिव्वोभासे' तीव्रो वर्णादिगुणप्रकर्षवान्, 'किण्हे किण्हच्छाए' इह कृष्णशब्दः कृष्णच्छाय इत्यस्य विशेषणमिति न पुनरुक्तता, तथाहि–कृष्णः सन् कृष्णच्छायः, छाया चादित्यावरणजन्यो वस्तुविशेषः, एवं 'नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीयच्छाए निद्धे निद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए घणकडियकडिच्छाए' अन्योऽन्यं शाखानुप्रवेशाद्बहलनिरन्तरच्छायः 'रम्मे महामेहनिकुरंबभूए' महामेघवृन्दकल्पे इत्यर्थः, 'ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो' कन्दो–मूलानामुपरि 'खंधमंतो' स्कन्धः–स्थुडं 'तयामंतो' सालमंतो शाला–शाखा 'पवालमंतो' प्रवालः–पल्लवाङ्कुरः, 'पत्तमंतो पुप्फमंतो फलमंतो बीयमंतो' 'अणुपुव्वसुजायरुइलवट्टभावपरिणया' आनुपूर्व्येण–मूलादिपरिपाट्या सुष्ठु जाता रुचिराः वृत्तभावं च परिणता ये ते तथा 'एक्कखंधा अणेगसाला अणेगसाहप्पसाहविडिमा' अनेकशाखाप्रशाखो विटपस्तन्मध्यभागो वृक्षविस्तारो येषां ते तथा 'अणेगणरवामसुप्पसारियअगेज्झघणविपुलवट्टखंधा' अनेकाभिर्नरवामाभिः सुप्रसारिताभिरग्राह्यो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णभद्र-चैत्यस्य वर्णनं

घनो–निबिडो विपुलो–विस्तीर्णो वृत्तश्च स्कन्धो येषां ते तथा 'अच्छिद्दपत्ता' नीरन्ध्रपर्णा 'अविरलपत्ता' निरन्तरदलाः 'अवाईणपत्ता' अवाचीनपत्राः–अधोमुखपलाशाः अवातीनपत्रा वा–अवातोपहतवर्हाः 'अणईइपत्ता' ईतिविरहितच्छदाः, 'निद्धुयजरठपंडुरयपत्ता' अपगतपुराणपाण्डुरपत्राः, 'नवहरियभिसंतपत्तभारंधकारगंभीरदरिसणिज्जा' नवेन हरितेन 'भिसन्त'त्ति दीप्यमानेन पत्रभारेण–दलसंचयेनान्धकारा–अन्धकारवन्तः अत एव गम्भीराश्च दृश्यन्ते ये ते तथा 'उवनिग्गयनवतरुणपत्तपल्लवकोमलउज्जलचलंतकिसलयसुकुमालपवालसोहियवरंकुरग्गसिहरा' उपनिर्गतैर्नवतरुणपत्रपल्लवैरिति–अभिनवपत्रगुच्छैः तथा कोमलोज्ज्वलैश्चलद्भिः किशलयैः–पत्रविशेषैस्तथा सुकुमालप्रवालैः शोभितानि वराङ्कुराण्यग्रशिखराणि येषां ते तथा, इह चाङ्कुरप्रवालकिशलयपत्राणां अल्पबहुबहुतरादिकालकृतावस्थाविशेषाद् विशेषः संभाव्यत इति, 'निच्चं कुसुमिया निच्चं माइया' मयूरिताः 'निच्चं लवइया' पल्लविताः 'निच्चं थवइया' स्तबकवन्तः 'निच्चं गुल्लइया' गुल्मवन्तः, 'निच्चं गोच्छिया' जातगुच्छाः, यद्यपि स्तबकगुच्छयोरविशेषो नामकोशेऽधीतस्तथाऽपीह विशेषो भावनीयः, 'निच्चं जमलिया' यमलतया समश्रेणितया व्यवस्थिताः, 'निच्चं जुयलिया' युगलतया स्थिताः 'निच्चं विणमिया' विशेषेण फलपुष्पभारेण नताः, 'निच्चं पणमिया' तथैव नन्तुमारब्धाः, 'निच्चं कुसुमियमाइयलवइयथवइयगुलइयगोच्छियजमलियजुवलियविणमियपणमियसुविभत्तपिंडिमंजरिवडेंसगधरा' केचित् कुसुमितादयैकैकगुणयुक्ताः अपरे तु समस्तगुणयुक्तास्ततः कुसुमिताश्च ते इत्येवं कर्मधारयः, नवरं सुविभक्ता–विविक्ताः सुनिष्पन्नतया पिण्ड्यो–लुम्ब्यः मञ्जर्यश्च प्रतीतास्ता एवावतंसकाः–शेखरकास्तान् धारयन्ति ये ते तथा, 'सुयबरहिणमयणसालकोइलकोभंडकभिंगारककोमलक-

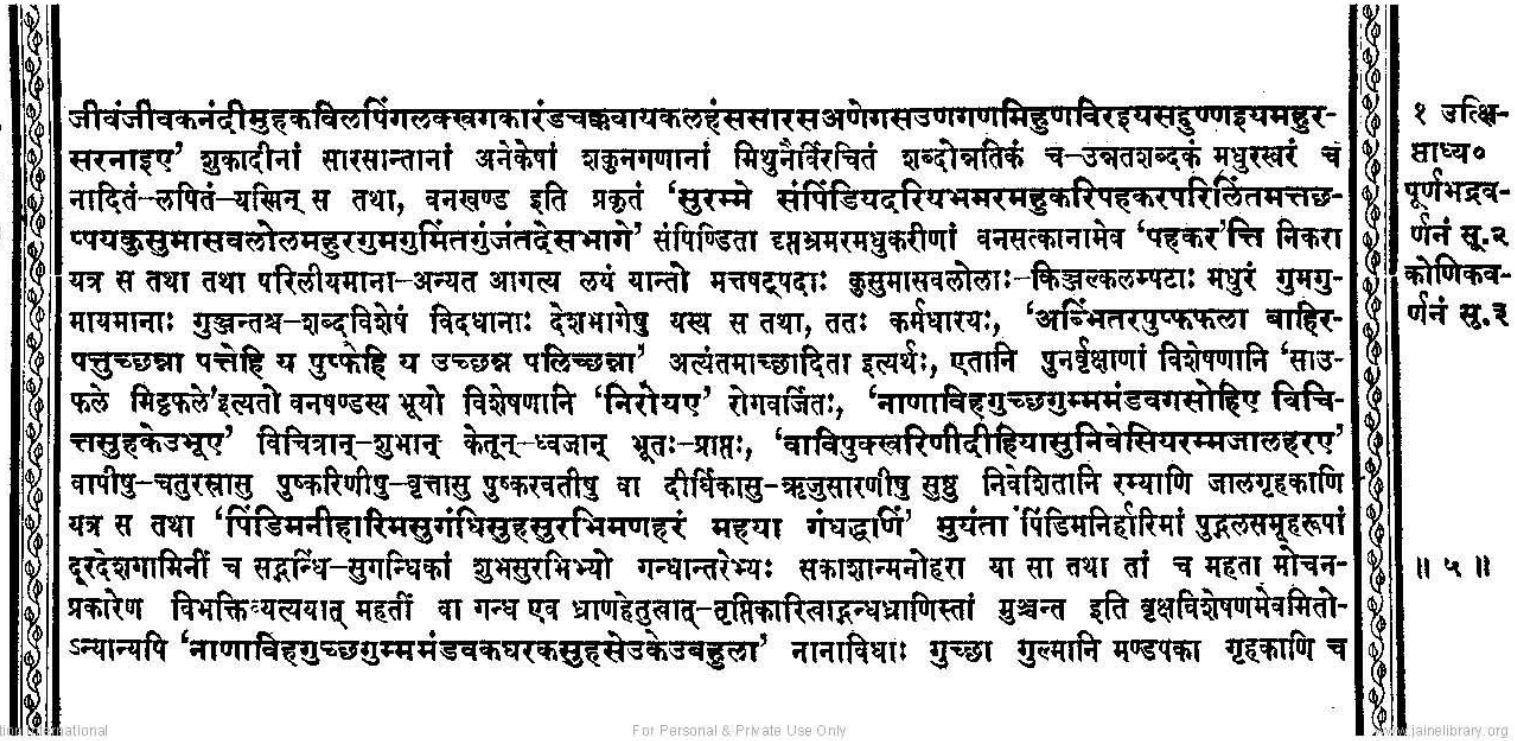
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	पूर्णभद्र-चैत्यस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२,३]

दीप अनुक्रम [२,३]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ५ ॥

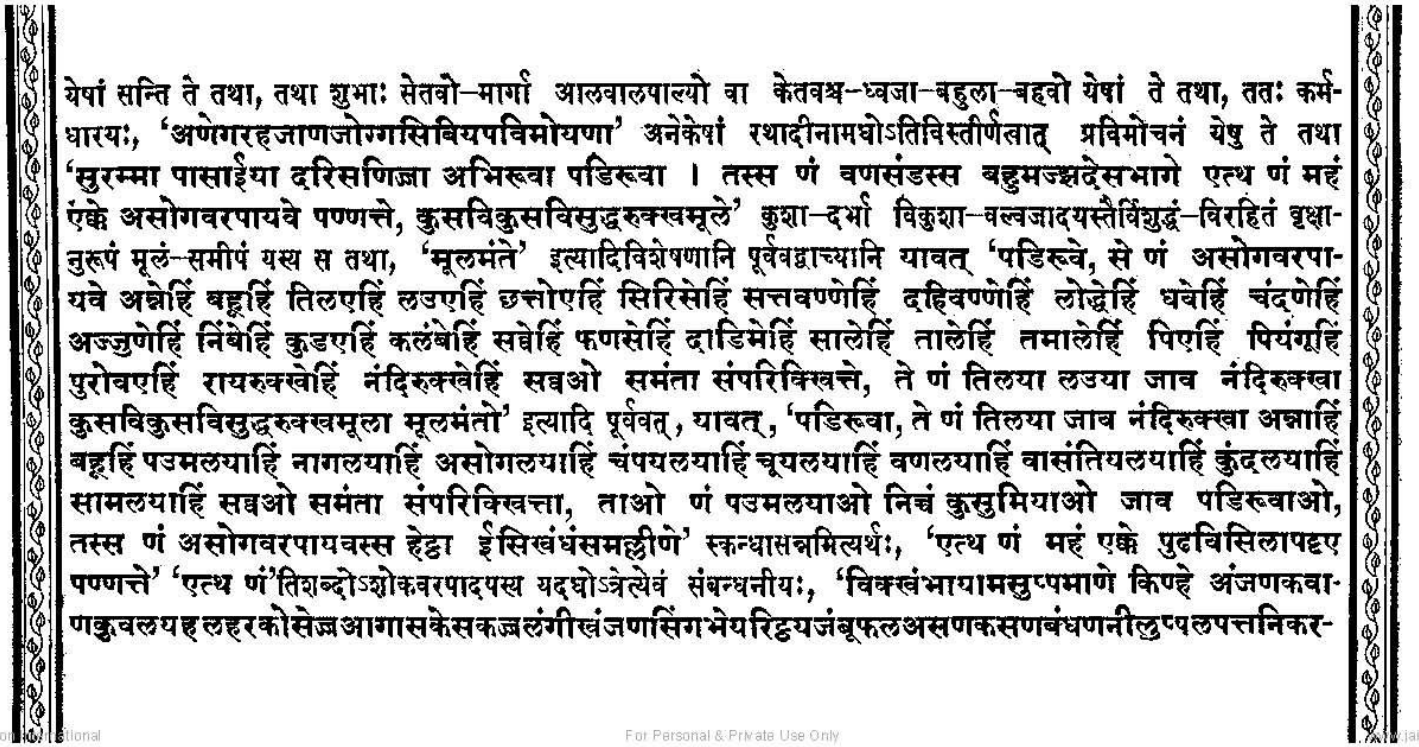
जीवंजीवकनंदीमुहकविलपिंगलकखगकारंडचक्कवायकलहंससारसअणेगसउणगणमिहुणविरइयसद्दुण्णइयमहुर-सरनाइए' शुकादीनां सारसान्तानां अनेकेषां शकुनगणानां मिथुनैर्विरचितं शब्दोन्नतिकं च–उन्नतशब्दकं मधुरस्वरं च नादितं–लपितं–यस्मिन् स तथा, वनखण्ड इति प्रकृतं 'सुरम्मे संपिंडियदरियभमरमहुकरिपहकरपरिलिंतमत्तछ-प्पयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमिंतगुंजंतदेसभागे' संपिण्डिता दृप्तभ्रमरमधुकरीणां वनसत्कानामेव 'पहकर'त्ति निकरा यत्र स तथा तथा परिलीयमाना–अन्यत आगत्य लयं यान्तो मत्तषट्पदाः कुसुमासवलोलाः–किञ्जल्कलम्पटाः मधुरं गुमगु-मायमानाः गुञ्जन्तश्च–शब्दविशेषं विदधानाः देशभागेषु यस्य स तथा, ततः कर्मधारयः, 'अब्भिंतरपुप्फफला बाहिर-पत्तुच्छन्ना पत्तेहि य पुप्फेहि य उच्छन्न पलिच्छन्ना' अत्यंतमाच्छादिता इत्यर्थः, एतानि पुनर्वृक्षाणां विशेषणानि 'साउ-फले मिट्ठफले'इत्यतो वनषण्डस्य भूयो विशेषणानि 'निरोयए' रोगवर्जितः, 'णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवगसोहिए विचि-त्तसुहकेउभूए' विचित्रान्–शुभान् केतून्–ध्वजान् भूतः–प्राप्तः, 'वावितुक्खरिणीदीहियासुनिवेसियरम्मजालहरए' वापीषु–चतुरस्रासु पुष्करिणीषु–वृत्तासु पुष्करवतीषु वा दीर्घिकासु–ऋजुसारणीषु सुष्ठु निवेशितानि रम्याणि जालगृहकाणि यत्र स तथा 'पिंडिमनीहारिमसुगंधिसुहसुरभिमणहरं महया गंधद्धणिं' मुयंता पिंडिमनिर्हारिमां पुद्गलसमूहरूपां दूरदेशगामिनीं च सद्गन्धि–सुगन्धिकां शुभसुरभिभ्यो गन्धान्तरेभ्यः सकाशान्मनोहरा या सा तथा तां च महता मोचन-प्रकारेण विभक्तिव्यत्ययात् महतीं वा गन्ध एव घ्राणहेतुत्वात्–वृत्तिकारित्वाद्गन्धघ्राणिस्तां मुञ्चन्त इति वृक्षविशेषणमेवमितो-ऽन्यान्यपि 'णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवकघरकसुहसेउकेउबहुला' नानाविधाः गुच्छा गुल्मानि मण्डपका गृहकाणि च

१ उत्क्षि-प्तोध्य० पूर्णभद्रव-र्णनं सू.२ कोणिकव-र्णनं सू.३

॥ ५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णभद्र-चैत्यस्य वर्णनं



येषां सन्ति ते तथा, तथा शुभाः सेतवो–मार्गा आलवालपाल्यो वा केतवश्च–ध्वजा–बहुला–बहवो येषां ते तथा, ततः कर्मधारयः, 'अणेगरहजाणजोग्गसिबियपविमोयणा' अनेकेषां रथादीनामघोऽतिविस्तीर्णत्वात् प्रविमोचनं येषु ते तथा 'सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महं एगे असोगवरपायवे पण्णत्ते, कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूले' कुशा–दर्भा विकुशा–वल्वजादयस्तैर्विशुद्धं–विरहितं वृक्षानुरूपं मूलं–समीपं यस्य स तथा, 'मूलमंते' इत्यादिविशेषणानि पूर्ववद्वाच्यानि यावत् 'पडिरूवे, से णं असोगवरपायवे अन्नेहिं बहूहिं तिलएहिं लउएहिं छत्तोएहिं सिरिसेहिं सत्तवण्णेहिं दहिवण्णेहिं लोद्धेहिं धवेहिं चंदणेहिं अज्जुणेहिं निंबेहिं कुडएहिं कलंबेहिं सवेहिं फणसेहिं दाडिमेहिं सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पिएहिं पियंगूहिं पुरोवएहिं रायरुक्खेहिं नंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, ते णं तिलया लउया जाव नंदिरुक्खा कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो' इत्यादि पूर्ववत्, यावत्, 'पडिरूवा, ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा अन्नाहिं बहूहिं पउमलयाहिं नागलयाहिं असोगलयाहिं चंपयलयाहिं चूयलयाहिं वणलयाहिं वासंतियलयाहिं कुंदलयाहिं सामलयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ताओ णं पउमलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव पडिरूवाओ, तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसिखंधसमल्लीणे' स्कन्धासन्नमित्यर्थः, 'एत्थ णं महं एगे पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते' 'एत्थ णं'तिशब्दोऽशोकवरपादपस्य यदधोऽत्रेत्येवं संबन्धनीयः, 'विक्खंभायामसुप्पमाणे किण्हे अंजणकवाणकुवलयहलहरकोसेज्जआगासकेसकज्जलंगीखंजणसिंगभेयरिट्ठयजंबूफलअसणकसणबंधणनीलुप्पलपत्तनिकर-

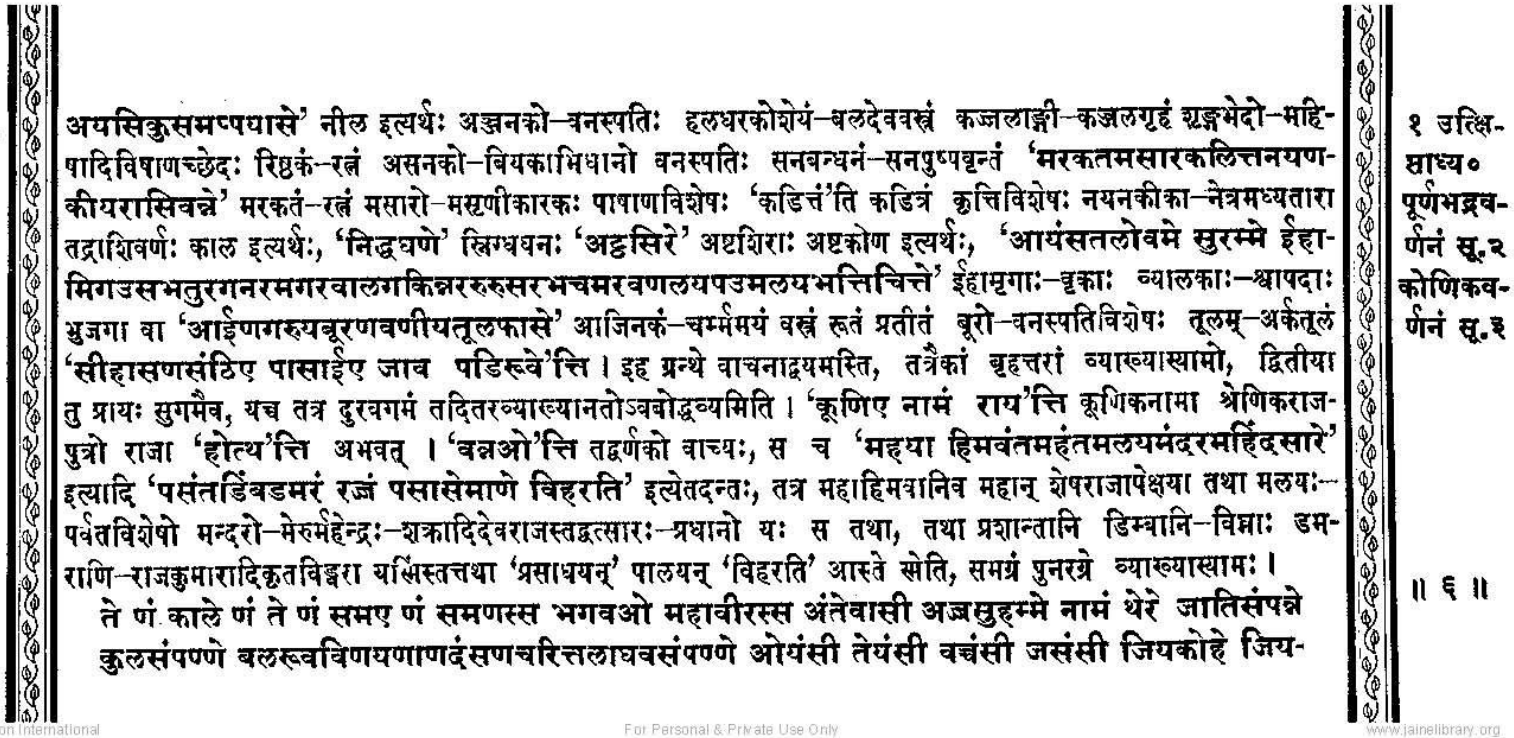
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	पूर्णभद्र-चैत्यस्य आदि-वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२,३]

दीप अनुक्रम [२,३]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ६ ॥

अयसिकुसमप्पगासे' नील इत्यर्थः अञ्जनको–वनस्पतिः हलधरकोशेयं–बलदेववस्त्रं कज्जलाङ्गी–कज्जलगृहं शृङ्गभेदो–महिषादिविषाणच्छेदः रिष्टकं–रत्नं असनको–बियकाभिधानो वनस्पतिः सनबन्धनं–सनपुष्पबृन्तं 'मरकतमसारकलित्तनयणकीयरासिवन्ने' मरकतं–रत्नं मसारो–मसृणीकारकः पाषाणविशेषः 'कडित्तं'ति कडित्रं कृत्तिविशेषः नयनकीका–नेत्रमध्यतारा तद्राशिवर्णः काल इत्यर्थः, 'निद्धघणे' स्निग्धघनः 'अट्ठसिरे' अष्टशिराः अष्टकोण इत्यर्थः, 'आयंसतलोवमे सुरम्मे ईहामिगउसभतुरगनरमगरवालगकिन्नररुरुसरभचमरवणलयपउमलयभत्तिचित्ते' ईहामृगाः–वृकाः व्यालकाः–श्वापदाः भुजगा वा 'आईणगरुयबूरणवणीयतूलफासे' आजिनकं–चर्म्ममयं वस्त्रं रूतं प्रतीतं बूरो–वनस्पतिविशेषः तूलम्–अर्कतूलं 'सीहासणसंठिए पासाईए जाव पडिरूवे'त्ति । इह ग्रन्थे वाचनाद्वयमस्ति, तत्रैकां बृहत्तरां व्याख्यास्यामो, द्वितीया तु प्रायः सुगमैव, यच्च तत्र दुरवगमं तदितरव्याख्यानतोऽवबोद्धव्यमिति । 'कूणिए नामं राय'त्ति कूणिकनामा श्रेणिकराजपुत्रो राजा 'होत्थ'त्ति अभवत् । 'वन्नओ'त्ति तद्वर्णको वाच्यः, स च 'महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' इत्यादि 'पसंतडिंबडमरं रज्जं पसासेमाणे विहरति' इत्येतदन्तः, तत्र महाहिमवानिव महान् शेषराजापेक्षया तथा मलयः–पर्वतविशेषो मन्दरो–मेरुर्महेन्द्रः–शक्रादिदेवराजस्तद्वत्सारः–प्रधानो यः स तथा, तथा प्रशान्तानि डिम्बानि–विघ्नाः डमराणि–राजकुमारादिकृतविद्रवा यस्मिंस्तत्तथा 'प्रसाधयन्' पालयन् 'विहरति' आस्ते स्मेति, समग्रं पुनरग्रे व्याख्यास्यामः ।

ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जातिसंपन्ने कुलसंपण्णे बलरूवविणयणाणदंसणचरित्तलाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जिय-

१ उत्क्षिप्त-साध्य० पूर्णभद्रवर्णनं सू.२ कोणिकवर्णनं सू.३

॥ ६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूर्णभद्र-चैत्यस्य आदि-वर्णनं, सुधर्मस्वामिनः वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४]

दीप अनुक्रम [४]

माणे जियमाए जियलोहे जियइंदिए जियनिद्दे जियपरिसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुण-
प्पहाणे एवं करणचरणनिग्गहणिच्छयअज्जवमद्दवलाघवखंतिगुत्तिमुत्ति १० विज्जामंतबंभवयनयनियमसच्च-
सोयणाणदंसण २० चारित्त० ओराले घोरे घोरव्वए घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तवि-
उलतेयल्लेसे चोद्दसपुव्वी चउणाणोवगते पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामा-
णुगामं दूतिज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेतिए तेणामेव उवागच्छइ
उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। (सूत्रं ४)

'थेरे'त्ति श्रुतादिभिर्वृद्धत्वात् स्थविरः, 'जातिसंपन्न' इति उत्तममातृकपक्षयुक्त इति प्रतिपत्तव्यमन्यथा मातृकपक्षसंपन्नत्वं पुरुषमात्रस्यापि स्यादिति नास्योत्कर्षः कश्चिदुक्तो भवेद्, उत्कर्षाभिधानार्थं चास्य विशेषणकलापोपादानं चिकीर्षितमिति, एवं कुलसंपन्नोऽपि, नवरं कुलं–पैतृकः पक्षः तथा बलं–संहननविशेषसमुत्थः प्राणः रूपम्–अनुत्तरसुररूपादनंतगुणं शरीरसौन्दर्यं विन-
यादीनि प्रतीतानि नवरं लाघवं–द्रव्यतोऽल्पोपधित्वं भावतो गौरवत्रयत्यागः एभिः संपन्नो यः स तथा, 'ओयंसि'त्ति ओजो-
मानसोऽवष्टम्भस्तद्वानोजस्वी तथा तेजस्वी तेजः–शरीरप्रभा तद्वांस्तेजस्वी वचो–वचनं सौभाग्याद्युपेतं यस्यास्ति स वचस्वी अथवा वर्चः–तेजः प्रभाव इत्यर्थस्तद्वान् वर्चस्वी यशस्वी–ख्यातिमान्, इह विशेषणचतुष्टयेऽपि अनुस्वारः प्राकृतत्वात्, जितक्रोध इत्यादि तु विशेषणसप्तकं प्रतीतं, नवरं क्रोधादिजय उदयप्राप्तक्रोधादिविफलीकरणतोऽवसेयः, तथा जीवितस्य–प्राणधारणस्याशा–वाञ्छा मरणाच्च यद्भयं ताभ्यां विप्रमुक्तः जीविताशामरणभयविप्रमुक्तस्तदुभयोपेक्षक इत्यर्थः, तथा तपसा प्रधान–उत्तमः शेषमुनिजना-

ज्ञा. ध. २

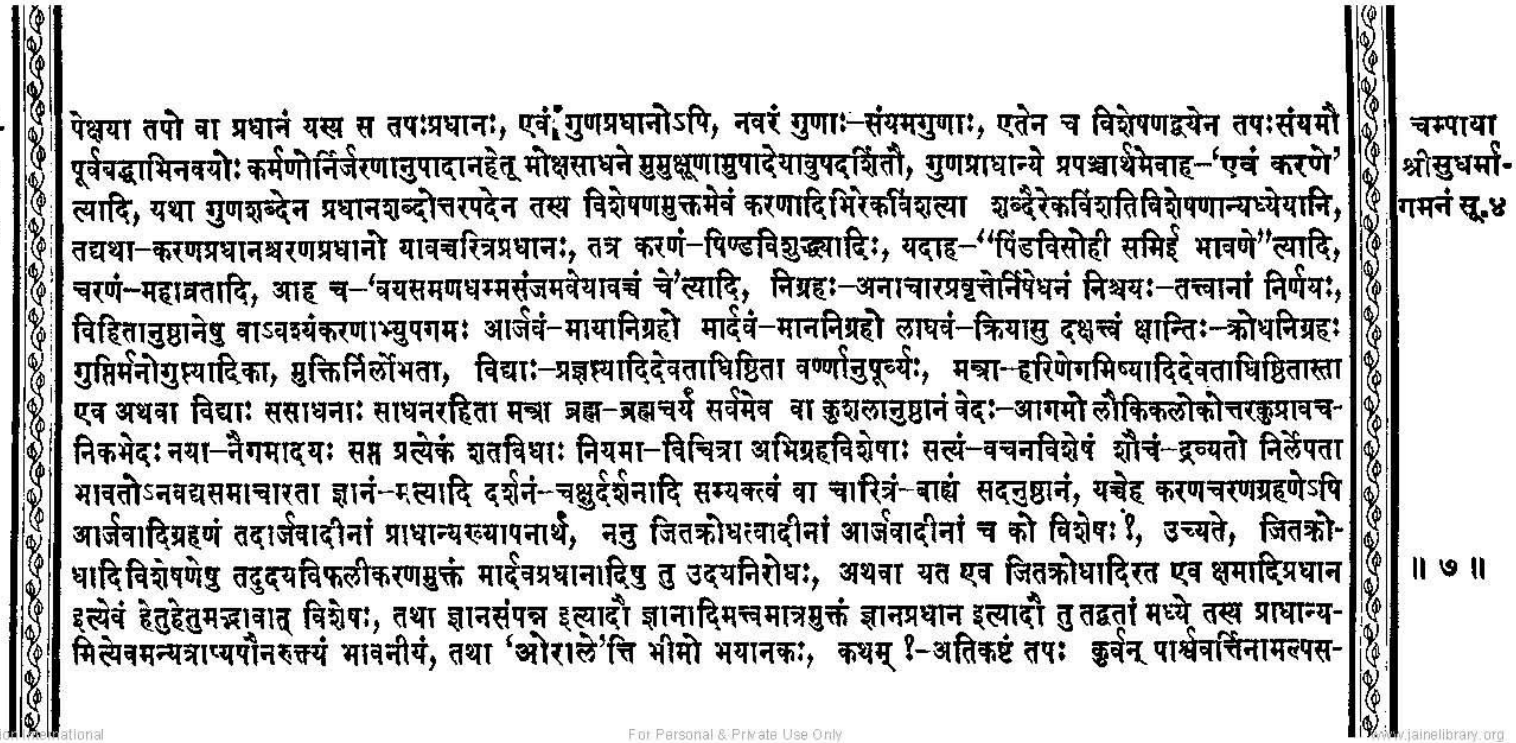
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सुधर्मस्वामिनः वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४]

दीप अनुक्रम [४]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ७ ॥

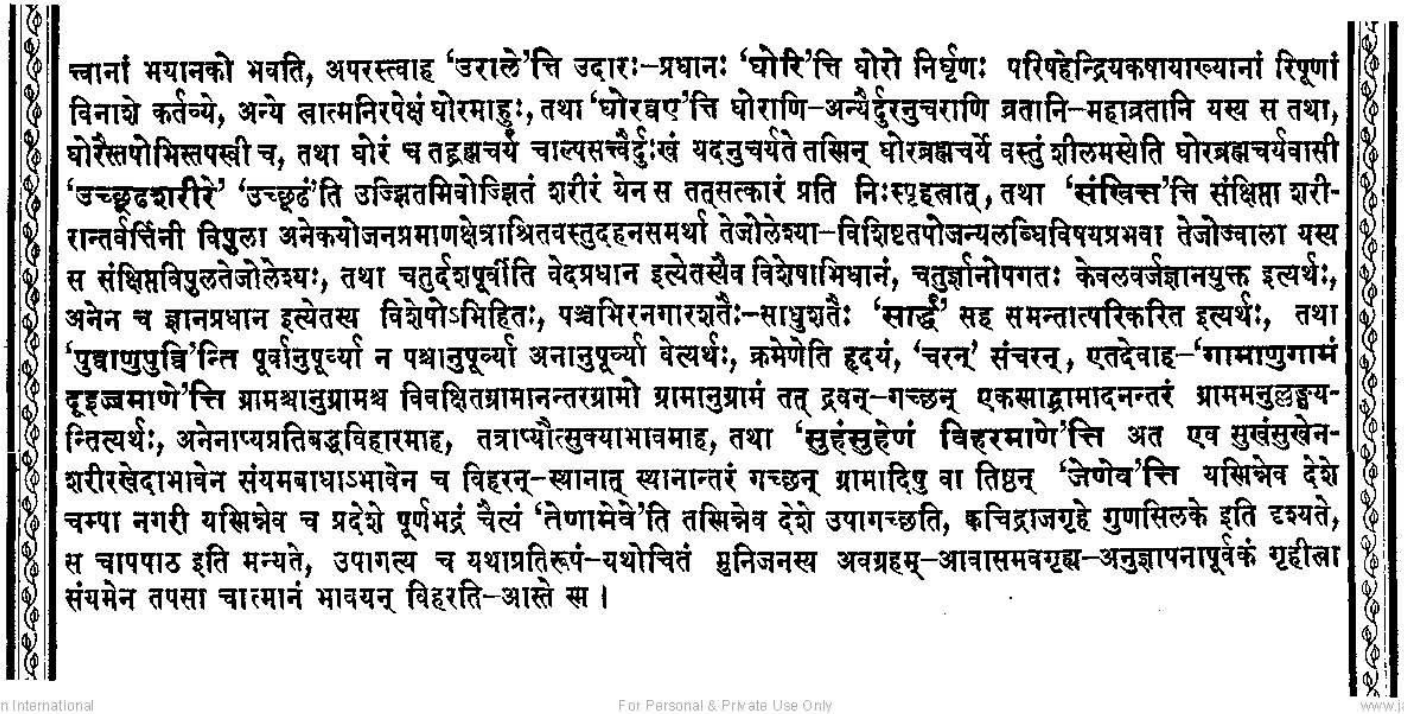
पेक्षया तपो वा प्रधानं यस्य स तपःप्रधानः, एवं गुणप्रधानोऽपि, नवरं गुणाः–संयमगुणाः, एतेन च विशेषणद्वयेन तपःसंयमौ पूर्ववद्वाभिनवयोः कर्मणोर्निर्जरणानुपादानहेतू मोक्षसाधने मुमुक्षूणामुपादेयावुपदर्शितौ, गुणप्राधान्ये प्रपञ्चार्थमेवाह–'एवं करणे' त्यादि, यथा गुणशब्देन प्रधानशब्दोत्तरपदेन तस्य विशेषणमुक्तमेवं करणादिभिरेकविंशत्या शब्दैरेकविंशतिविशेषणान्यध्येयानि, तद्यथा–करणप्रधानश्चरणप्रधानो यावच्चरित्रप्रधानः, तत्र करणं–पिण्डविशुद्ध्यादिः, यदाह–"पिंडविसोही समिई भावणे"त्यादि, चरणं–महाव्रतादि, आह च–'वयसमणधम्मसंजमवेयावच्चं चे'त्यादि, निग्रहः–अनाचारप्रवृत्तेर्निषेधनं निश्चयः–तत्त्वानां निर्णयः, विहितानुष्ठानेषु वाऽवश्यंकरणाभ्युपगमः आर्जवं–मायानिग्रहो मार्दवं–माननिग्रहो लाघवं–क्रियासु दक्षत्वं क्षान्तिः–क्रोधनिग्रहः गुप्तिर्मनोगुप्त्यादिका, मुक्तिर्निर्लोभता, विद्याः–प्रज्ञप्त्यादिदेवताधिष्ठिता वर्ण्णानुपूर्व्यः, मन्त्रा–हरिणेगमिष्यादिदेवताधिष्ठितास्ता एव अथवा विद्याः ससाधनाः साधनरहिता मन्त्रा ब्रह्म–ब्रह्मचर्यं सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानं वेदः–आगमो लौकिकलोकोत्तरकुप्रावचनिकभेदः नया–नैगमादयः सप्त प्रत्येकं शतविधाः नियमा–विचित्रा अभिग्रहविशेषाः सत्यं–वचनविशेषं शौचं–द्रव्यतो निर्लेपता भावतोऽनवद्यसमाचारता ज्ञानं–मत्यादि दर्शनं–चक्षुर्दर्शनादि सम्यक्त्वं वा चारित्रं–बाह्यं सदनुष्ठानं, यच्चेह करणचरणग्रहणेऽपि आर्जवादिग्रहणं तदार्जवादीनां प्राधान्यख्यापनार्थं, ननु जितक्रोधत्वादीनां आर्जवादीनां च को विशेषः ?, उच्यते, जितक्रोधादिविशेषणेषु तदुदयविफलीकरणमुक्तं मार्दवप्रधानादिषु तु उदयनिरोधः, अथवा यत एव जितक्रोधादिरत एव क्षमादिप्रधान इत्येवं हेतुहेतुमद्भावात् विशेषः, तथा ज्ञानसंपन्न इत्यादौ ज्ञानादिमत्त्वमात्रमुक्तं ज्ञानप्रधान इत्यादौ तु तद्वतां मध्ये तस्य प्राधान्यमित्येवमन्यत्राप्यपौनरुक्त्यं भावनीयं, तथा 'ओराले'त्ति भीमो भयानकः, कथम् ?–अतिकष्टं तपः कुर्वन् पार्श्ववर्त्तिनामल्पस-

चम्पाया श्रीसुधर्मा-गमनं सू.४

॥ ७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सुधर्मस्वामिनः वर्णनं



त्वानां भयानको भवति, अपरस्त्वाह 'उराले'त्ति उदारः–प्रधानः 'घोरे'त्ति घोरो निर्घृणः परिषहेन्द्रियकषायाख्यानां रिपूणां विनाशे कर्तव्ये, अन्ये त्वात्मनिरपेक्षं घोरमाहुः, तथा 'घोरव्वए'त्ति घोराणि–अन्यैर्दुरनुचराणि व्रतानि–महाव्रतानि यस्य स तथा, घोरैस्तपोभिस्तप्पी च, तथा घोरं च तद्ब्रह्मचर्यं चाल्पसत्त्वैर्दुःखं यदनुचर्यते तस्मिन् घोरब्रह्मचर्ये वस्तुं शीलमस्येति घोरब्रह्मचर्यवासी 'उच्छूढशरीरे' 'उच्छूढं'ति उज्झितमिवोज्झितं शरीरं येन स तत्सत्कारं प्रति निःस्पृहत्वात्, तथा 'संखित्त'त्ति संक्षिप्ता शरीरान्तर्वर्त्तिनी विपुला अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्था तेजोलेश्या–विशिष्टतपोजन्यलब्धिविषयप्रभवा तेजोज्वाला यस्य स संक्षिप्तविपुलतेजोलेश्यः, तथा चतुर्दशपूर्वीति वेदप्रधान इत्येतस्यैव विशेषाभिधानं, चतुर्ज्ञानोपगतः केवलवर्जज्ञानयुक्त इत्यर्थः, अनेन च ज्ञानप्रधान इत्येतस्य विशेषोऽभिहितः, पञ्चभिरनगारशतैः–साधुशतैः 'सार्द्धं' सह समन्तात्परिकरित इत्यर्थः, तथा 'पुव्वाणुपुव्विं'न्ति पूर्वानुपूर्व्या न पश्चानुपूर्व्या अनानुपूर्व्या वेत्यर्थः, क्रमेणेति हृदयं, 'चरन्' संचरन्, एतदेवाह–'गामाणुगामं दूइज्जमाणे'त्ति ग्रामश्चानुग्रामश्च विवक्षितग्रामानन्तरग्रामो ग्रामानुग्रामं तत् द्रवन्–गच्छन् एकस्माद्ग्रामादनन्तरं ग्राममनुल्लङ्घयन्नित्यर्थः, अनेनाप्यप्रतिबद्धविहारमाह, तत्राप्यौत्सुक्याभावमाह, तथा 'सुहंसुहेणं विहरमाणे'त्ति अत एव सुखंसुखेन-शरीरखेदाभावेन संयमबाधाऽभावेन च विहरन्–स्थानात् स्थानान्तरं गच्छन् ग्रामादिषु वा तिष्ठन् 'जेणेव'त्ति यस्मिन्नेव देशे चम्पा नगरी यस्मिन्नेव च प्रदेशे पूर्णभद्रं चैत्यं 'तेणामेवे'ति तस्मिन्नेव देशे उपागच्छति, क्वचिद्राजगृहे गुणसिलके इति दृश्यते, स चापपाठ इति मन्यते, उपागत्य च यथाप्रतिरूपं–यथोचितं मुनिजनस्य अवग्रहम्–आवासमवगृह्य–अनुज्ञापनापूर्वकं गृहीत्वा संयमेन तपसा चात्मानं भावयन् विहरति–आस्ते स्म ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५] + गाथा: दीप अनुक्रम [५-८]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति: ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ८ ॥ तएणं चंपानयरीए परिसा निग्गया कोणिओ निग्गओ धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समयेणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे कासवगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगते संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं से अज्जजंबूणामे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले संजातसड्ढे संजातसंसए संजायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति उट्ठाए उट्ठित्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणामेव उवागच्छति २ अज्जसुहम्मे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता अज्जसुहम्मस्स थेरस्स णचासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहं पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जति णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थग० सयंसंबु० पुरिसु० पुरिससी० पुरिसव० पुरिसवरगं० लोगु० लोगनाहे० लोगहिएणं लोगप० लोगपज्जोय० अभयद० सरणद० चक्खुद० मग्गद० बोहिद० धम्मद० धम्मदे० धम्मना० धम्मसा० धम्मवरचा० अप्पडिह० दंसणध० वियट्टछ० जिणेणं जाणएणं तिन्नेणं तार० बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोअगेणं सव्वण्णेणं सव्वद० सिवमयलमरुतमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तियं सासयं ठाणमुवगतेणं पंचमस्स अंगस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, छट्ठस्स णं अंगस्स णं भंते! णायाधम्मकहाणं के अट्ठे पं०?, जंबूत्ति तए णं अज्जसुहम्मे थेरे अज्जजंबूणामं अणगारं एवं व०– जम्बूस्वामिप्रश्नः अध्ययनोद्देशः सू.५ ॥ ८ ॥ Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org
	जंबूस्वामिन: वर्णनं एवं प्रश्न:

एवं खलु जंबू समणेणं भगवता महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तंजहा-णायाणि य धम्मकहाओ य, जति णं भंते ! समणेणं भगवता महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयखंधा पं० तं०–णायाणि य धम्मकहाओ य, पढमस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं कति अज्झयणा पन्नत्ता?, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पं०, तं०–उक्खित्तणाए १ संघाडे २, अंडे ३ कुम्मे य ४ सेलगे ५। तुंबे य ६ रोहिणी ७ मल्ली ८, मायंदी ९ चंदिमा इय १० ॥ १ ॥ दावद्दवे ११ उदगणाए १२, मंडुक्के १३ तेयलीविय १४। नंदीफले १५ अवरकंका १६, अतिन्ने १७ सुंसुमा इय १८॥२॥ अवरे य पुंडरीयणायए १९ एगुणवीसतिमे। (सूत्रं ५)

'तए णं'ति ततोऽनन्तरं णमित्यलंकारे चम्पाया नगर्याः परिषत्–कूणिकराजादिका निर्गता–निःसृता सुधर्मस्वामिवन्दनार्थं, "जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगए'ति यस्या दिशः सकाशात् प्रादुर्भूता–आविर्भूता आगता इत्यर्थः तामेव दिशं प्रतिगतेति। तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽन्तेवासी आर्यजम्बूनामानगारः काश्यपगोत्रेण 'सत्तुस्सेहे'त्ति सप्त-हस्तोच्छ्रयो यावत्करणादिदं दृश्यं "समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे" कनकस्य–सुवर्णस्य 'पुलग'त्ति यः पुलको लवस्तस्य यो निकषः–कषपट्टे रेखालक्षणः तथा 'पम्ह'त्ति पद्मगर्भस्तद्वत् गौरो यः स तथा, वृद्धव्याख्या तु कनकस्य न लोहादेर्यः पुलकः–सारो वर्णातिशयः तत्प्रधानो यो निकषो–रेखा तस्य यत्पक्ष्मबहुलत्वं तद्वद्यो गौरः स कनकपुलकनिकषपक्ष्मगौरः, तथा 'उग्गतवा' उग्रम्–अप्रधृष्यं तपोऽस्येतिकृत्वा, तथा 'तत्ततवे' तप्तं–तापितं तपो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	जंबूस्वामिनः वर्णनं एवं प्रश्नः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५] + गाथा: दीप अनुक्रम [५-८]

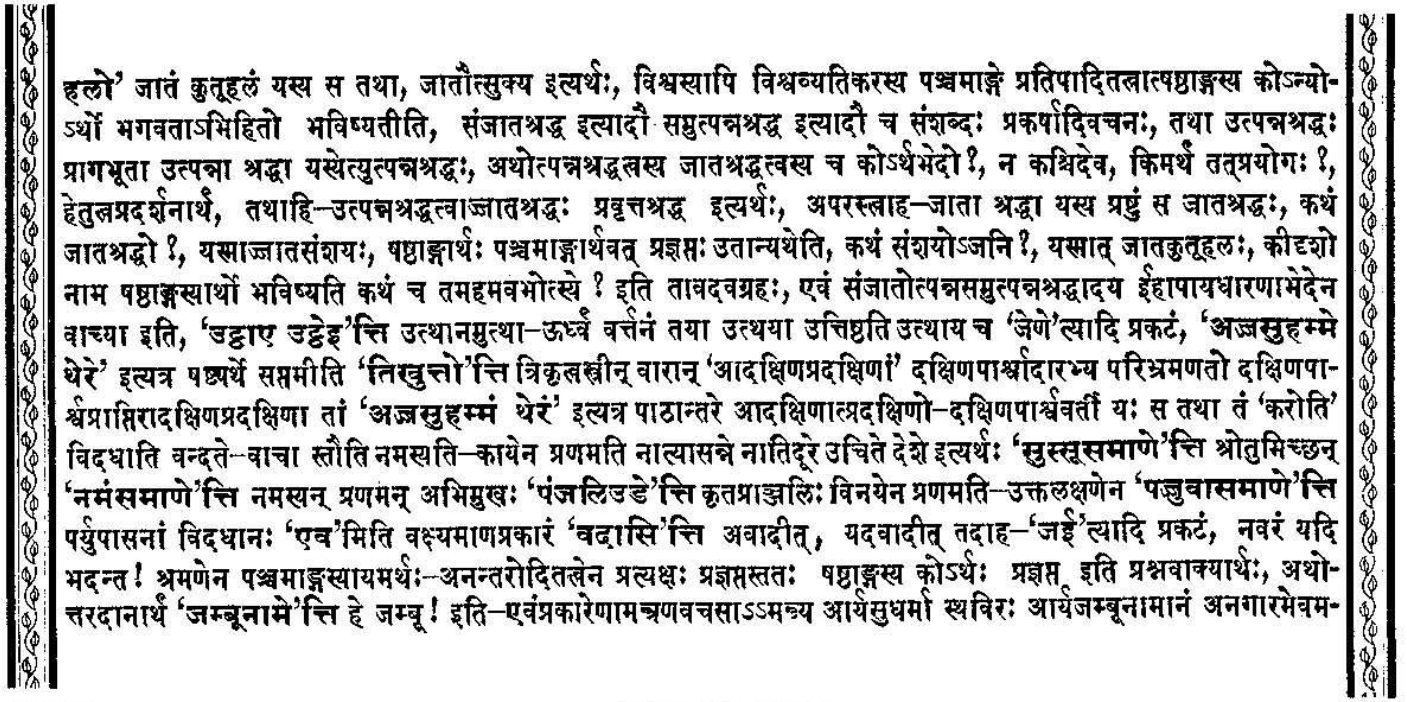
ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ९ ॥

येन स तप्ततपाः, एवं तेन तप्तपस्तप्तं येन कर्म्माणि संताप्य तेन तपसा स्वात्मापि तपोरूपः संतापितो यतोऽन्यस्यास्पृश्यमिव जातमिति, तथा महातपाः–प्रशस्ततपा बृहत्तपा वा, तथा दीप्तं तपो यस्य स दीप्ततपाः, दीप्तं तु हुताशन इव ज्वलत्तेजः कर्म्मेन्धनदाहकत्वात्, तथा "उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेसे" इति पूर्ववत्, एवंगुणविशिष्टो जम्बूस्वामी भगवान् आर्यसुधर्म्मणः स्वविरस्य 'अदूरसामंते'त्ति दूरं–विप्रकर्षः सामन्तं–समीपं उभयोरभावोऽदूरसामन्तं तस्मिन्नातिदूरे नातिसमीपे उचिते देशे स्थित इत्यर्थः, कथं?–'उड्ढंजाणू' इत्यादि शुद्धपृथिव्यासनवर्जनात् औपग्रहिकनिषद्याभावाच्च उत्कटुकासनः सन्नपदिश्यते ऊर्द्ध जानुनी यस्य स ऊर्द्धजानुः 'अधःशिराः' अधोमुखो नोर्द्ध तिर्यग् वा विक्षिप्तदृष्टिः किं तु नियतभूभागनियमितदृष्टिरिति भावना, 'झाणकोट्ठोवगए'त्ति ध्यानमेव कोष्ठो ध्यानकोष्ठस्तमुपगतो ध्यानकोष्ठोपगतः, यथा हि कोष्ठके धान्यं प्रक्षिप्तमविप्रकीर्णं भवत्येवं स भगवान् धर्मध्यानकोष्ठकमनुप्रविश्येन्द्रियमनांस्यधिकृत्य संवृतात्मा भवतीति भावः, संयमेन–संवरेण तपसा–ध्यानेनात्मानं भावयन्–वासयन् विहरति–तिष्ठति। 'तए णं से' इत्यादि, तत इत्यानन्तर्ये तस्मात् ध्यानादनन्तरं णमित्यलंकारे, 'स' इति पूर्वप्रस्तुतपरामर्शार्थः तस्य तु सामान्योक्तस्य विशेषावधारणार्थं आर्यजम्बूनामेति, स च उत्तिष्ठतीति संबन्धः, किम्भूतः सन्नित्याह–'जायसड्ढे' इत्यादि, जाता–प्रवृत्ता श्रद्धा–इच्छाऽस्येति जातश्रद्धः, क ?–वक्ष्यमाणानां पदार्थानां तत्त्वपरिज्ञाने स तथा, जातः संशयोऽस्येति जातसंशयः, संशयस्त्वनिर्द्धारितार्थं ज्ञानमुभयवस्त्वंशावलम्बितया प्रवृत्तं, स चेवं तस्य भगवतो जातः–यथा भगवता श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिना त्रिभुवनभवनप्रकाशप्रदीपकल्पेन पञ्चमस्यांगस्य समस्तवस्तुस्तोमव्यतिकराविर्भावनेनार्थोऽभिहित एवं षष्ठस्याप्युक्तोऽन्यथा वेति, तथा 'जातकुतू-

जम्बूस्वामिप्रश्नः अध्ययनो देशः सू.५ ॥ ९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जंबूस्वामिनः वर्णनं एवं प्रश्नः



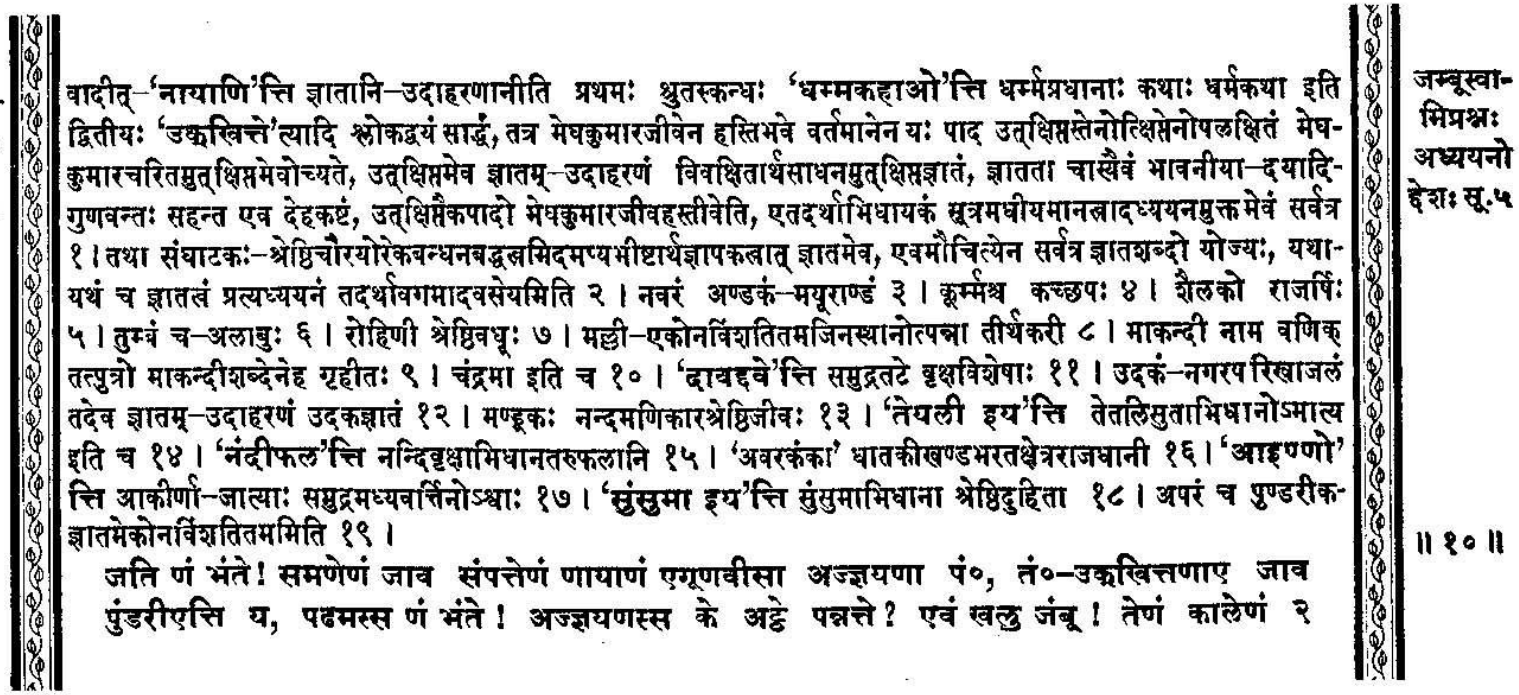
हलो' जातं कुतूहलं यस्य स तथा, जातौत्सुक्य इत्यर्थः, विश्वस्यापि विश्वव्यतिकरस्य पञ्चमाङ्गे प्रतिपादितत्वात्षष्ठाङ्गस्य कोऽन्योऽर्थो भगवताऽभिहितो भविष्यतीति, संजातश्रद्ध इत्यादौ समुत्पन्नश्रद्ध इत्यादौ च संशब्दः प्रकर्षादिवचनः, तथा उत्पन्नश्रद्धः प्रागभूता उत्पन्ना श्रद्धा यस्येत्युत्पन्नश्रद्धः, अथोत्पन्नश्रद्धत्वस्य जातश्रद्धत्वस्य च कोऽर्थभेदो?, न कश्चिदेव, किमर्थं तत्प्रयोगः?, हेतुलप्रदर्शनार्थं, तथाहि–उत्पन्नश्रद्धत्वाज्जातश्रद्धः प्रवृत्तश्रद्ध इत्यर्थः, अपरस्त्वाह–जाता श्रद्धा यस्य प्रष्टुं स जातश्रद्धः, कथं जातश्रद्धो?, यस्माज्जातसंशयः, षष्ठाङ्गार्थः पञ्चमाङ्गार्थवत् प्रज्ञप्तः उतान्यथेति, कथं संशयोऽजनि?, यस्मात् जातकुतूहलः, कीदृशो नाम षष्ठाङ्गस्यार्थो भविष्यति कथं च तमहमवभोत्स्ये ? इति तावदवग्रहः, एवं संजातोत्पन्नसमुत्पन्नश्रद्धादय ईहापायधारणाभेदेन वाच्या इति, 'उट्ठाए उट्ठेइ'त्ति उत्थानमुत्था–ऊर्ध्वं वर्त्तनं तया उत्थया उत्तिष्ठति उत्थाय च 'जेणे'त्यादि प्रकटं, 'अज्जसुहम्मे थेरे' इत्यत्र षष्ठ्यर्थे सप्तमीति 'तिक्खुत्तो'त्ति त्रिकृत्वस्त्रीन् वारान् 'आदक्षिणप्रदक्षिणां' दक्षिणपार्श्वादारभ्य परिभ्रमणतो दक्षिणपार्श्वप्राप्तिरादक्षिणप्रदक्षिणा तां 'अज्जसुहम्मं थेरं' इत्यत्र पाठान्तरे आदक्षिणात्प्रदक्षिणो–दक्षिणपार्श्ववर्ती यः स तथा तं 'करोति' विदधाति वन्दते–वाचा स्तौति नमस्यति–कायेन प्रणमति नात्यासन्ने नातिदूरे उचिते देशे इत्यर्थः 'सुस्सूसमाणे'त्ति श्रोतुमिच्छन् 'नमंसमाणे'त्ति नमस्यन् प्रणमन् अभिमुखः 'पंजलिउडे'त्ति कृतप्राञ्जलिः विनयेन प्रणमति–उक्तलक्षणेन 'पज्जुवासमाणे'त्ति पर्युपासनां विदधानः 'एव'मिति वक्ष्यमाणप्रकारं 'वदासि'त्ति अवादीत्, यदवादीत् तदाह–'जई'त्यादि प्रकटं, नवरं यदि भदन्त! श्रमणेन पञ्चमाङ्गस्यायमर्थः–अनन्तरोदितत्वेन प्रत्यक्षः प्रज्ञप्तस्ततः षष्ठाङ्गस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्त इति प्रश्नवाक्यार्थः, अथोत्तरदानार्थं 'जम्बूनामे'त्ति हे जम्बू! इति–एवंप्रकारेणामन्त्रणवचसाऽऽमन्त्र्य आर्यसुधर्मा स्थविरः आर्यजम्बूनामानं अनगारमेवम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	जंबूस्वामिनः वर्णनं एवं प्रश्नः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५] + गाथा: दीप अनुक्रम [५-८]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥ १० ॥

वादीत्–'नायाणि'त्ति ज्ञातानि–उदाहरणानीति प्रथमः श्रुतस्कन्धः 'धम्मकहाओ'त्ति धर्म्मप्रधानाः कथाः धर्मकथा इति द्वितीयः 'उक्खित्ते'त्यादि श्लोकद्वयं सार्द्धं, तत्र मेघकुमारजीवेन हस्तिभवे वर्तमानेन यः पाद उत्क्षिप्तस्तेनोत्क्षिप्तेनोपलक्षितं मेघकुमारचरितमुत्क्षिप्तमेवोच्यते, उत्क्षिप्तमेव ज्ञातम्–उदाहरणं विवक्षितार्थसाधनमुत्क्षिप्तज्ञातं, ज्ञाततः चास्यैवं भावनीया–दयादिगुणवन्तः सहन्त एव देहकष्टं, उत्क्षिप्तैकपादो मेघकुमारजीवहस्तीवेति, एतदर्थाभिधायकं सूत्रमधीयमानत्वादध्ययनमुक्तमेवं सर्वत्र १। तथा संघाटकः–श्रेष्ठिचौरयोरेकबन्धनबद्धत्वमिदमप्यभीष्टार्थज्ञापकत्वात् ज्ञातमेव, एवमौचित्येन सर्वत्र ज्ञातशब्दो योज्यः, यथायथं च ज्ञातत्वं प्रत्यध्ययनं तदर्थावगमादवसेयमिति २। नवरं अण्डकं–मयूराण्डं ३। कूर्म्मश्च कच्छपः ४। शैलको राजर्षिः ५। तुम्बं च–अलाबुः ६। रोहिणी श्रेष्ठिवधूः ७। मल्ली–एकोनविंशतितमजिनस्थानोत्पन्ना तीर्थकरी ८। माकन्दी नाम वणिक् तत्पुत्रो माकन्दीशब्देनेह गृहीतः ९। चंद्रमा इति च १०। 'दावद्दवे'त्ति समुद्रतटे वृक्षविशेषाः ११। उदकं–नगरपरिखाजलं तदेव ज्ञातम्–उदाहरणं उदकज्ञातं १२। मण्डूकः नन्दमणिकारश्रेष्ठिजीवः १३। 'तेयली इय'त्ति तेतलिसुताभिधानोऽमात्य इति च १४। 'नंदीफल'त्ति नन्दिवृक्षाभिधानतरुफलानि १५। 'अवरकंका' धातकीखण्डभरतक्षेत्रराजधानी १६। 'आइण्णो'त्ति आकीर्णा–जात्याः समुद्रमध्यवर्त्तिनोऽश्वाः १७। 'सुंसुमा इय'त्ति सुंसुमाभिधाना श्रेष्ठिदुहिता १८। अपरं च पुण्डरीकज्ञातमेकोनविंशतितममिति १९।

जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं णायाणं एगूणवीसा अज्झयणा पं०, तं०–उक्खित्तणाए जाव पुंडरीएत्ति य, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २

जम्बूस्वामिप्रश्नः अध्ययनोद्देशः सू.५

॥ १० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जंबूस्वामिनः वर्णनं एवं प्रश्नः, अध्ययनानि-नामानि,

अथ अध्ययन-१- "उत्क्षिप्त" आरब्धः

इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे णामं नयरे होत्था, वण्णओ, चेतिए वन्नओ, तत्थ णं रायगिहे नगरे सेणिए नामं राया होत्था महताहिमवंत० वन्नओ, तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था सुकुमालपाणिपाया वण्णओ (सूत्रं. ६) तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था अहीण जाव सुरूवे सामदंडभेयउवप्पयाणणीतिसुप्पउत्तणयविहिन्नू ईहावूह-मग्गणगवेसणअत्थसत्थमइविसारए उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणामिआए चउव्विहाए बुद्धिए उववेए सेणियस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपु-च्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खूभूए सव्वकज्जेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुरचिंतए यावि होत्था, सेणियस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव समुवेक्खमाणे २ विहरति (सूत्रं. ७)

यदि प्रथमश्रुतस्कन्धस्यैतान्यध्ययनानि भगवतोक्तानि ततः प्रथमाध्ययनस्य कोऽर्थो भगवता प्रज्ञप्त इति शास्त्रार्थप्रस्तावना ॥ अथैवं पृष्टवन्तं जम्बूस्वामिनं प्रति सुधर्मस्वामी यथाश्रुतमर्थं वक्तुमुपक्रमते सेति। 'एव' मित्यादि सुगमं, नवरं 'एव'मिति वक्ष्य-माणप्रकारार्थः प्रज्ञप्त इति प्रक्रमः, खलुवाक्यालङ्कारे जम्बूरिति शिष्यामन्त्रणे 'इहेवे'ति देशतः प्रत्यक्षासन्ने न पुनरसंख्येयत्वात् जम्बूद्वीपानामन्यत्रेतिभावः भारते वर्षे–क्षेत्रे 'दाहिणड्ढभरहे'त्ति दक्षिणार्धभरते नोत्तरार्द्धभरते 'देवी'ति राजभार्या 'वण्णओ'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६,७]

दीप अनुक्रम [९,१०]

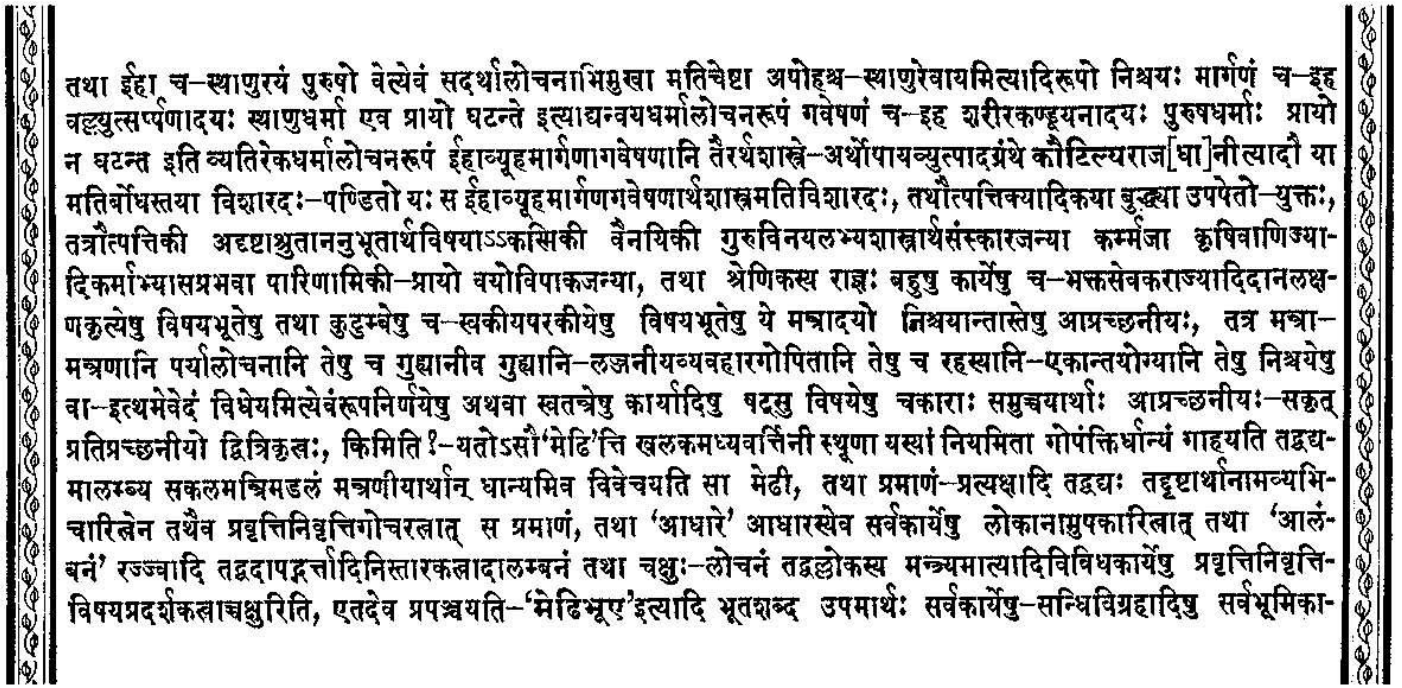
त्ति वर्णको वाच्यः, स च वक्ष्यमाणधारिण्या इव दृश्यः, 'अत्तए'त्ति आत्मजः अङ्गज इत्यर्थः, 'अहीण जाव सुरूवे'त्ति इह यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं 'अहीणपंचिंदियसरीरे' अहीनानि–अन्यूनानि लक्षणतः स्वरूपतो वा पञ्चापीन्द्रियाणि यस्मिंस्तत्तथाविधं शरीरं यस्य स तथा, 'लक्खणवंजणगुणोववेए'लक्षणानि–स्वस्तिकचक्रादीनि व्यञ्जनानि–मषतिलकादीनि तेषां यो गुणः–प्रशस्तता तेनोपपेतो–युक्तो यः स तथा, उप अप इत इति शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादुपपेत इति स्यात्, 'माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगे'तत्र मानं–जलद्रोणप्रमाणता कथं ?–जलस्यातिभृते कुण्डे पुरुषे निवेशिते यज्जलं निस्सरति तद्यदि द्रोणमानं भवति तदा स पुरुषो मानप्राप्त उच्यते, तथा उन्मानं–अर्द्धभारप्रमाणता, कथं ?, तुलारोपितः पुरुषो यद्यर्द्धभारं तुलति तदा स उन्मानप्राप्त इत्युच्यते, प्रमाणं–स्वाङ्गुलेनाष्टोत्तरशतोच्छ्रयता, ततश्च मानोन्मानप्रमाणैः प्रतिपूर्णानि–अन्यूनानि सुजातानि–सुनिष्पन्नानि सर्वाणि अङ्गानि–शिरःप्रभृतीनि यस्मिन् तत्तथाविधं सुन्दरमंगं–शरीरं यस्य स तथा, 'ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे' शशिवत् सौम्याकारं कान्तं–कमनीयमत एव प्रियं द्रष्टृणां दर्शनं–रूपं यस्य स तथा, अत एव 'सुरूवे'त्ति सुरूप इति, तथा सामदण्डभेदउपप्रदानलक्षणा या राजनीतयः तासां सुष्ठु प्रयुक्तं–प्रयोगो व्यापारणं यस्य स तथा, नयानां–नैगमादीनां उक्तलक्षणनीतीनां च या विधा–विधयः प्रकारास्तान् जानाति यः स तथा, पश्चात्पदद्वयस्य कर्मधारयः, तत्र परस्परोपकारप्रदर्शनगुणकीर्तनादिना शत्रोरात्मवशीकरणं साम, तथाविधपरिक्लेशे धनहरणादिको दण्डः, विजिगीषितशत्रुपरिवर्गस्य स्वाम्यादिस्नेहापनयनादिको भेदः, गृहीतधनप्रतिदानादिकमुपप्रदानं, नयविधयस्तु सप्त नैगमादयो नयाः प्रत्येकं शतभेदा, नीतिभेदास्तु सामनीतेः पञ्च दण्डस्य त्रयः भेदस्य उपप्रदानस्य च पञ्च कामन्दकादिप्रसिद्धा इति,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अभयकुमारस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [६,७]

दीप अनुक्रम [९,१०]

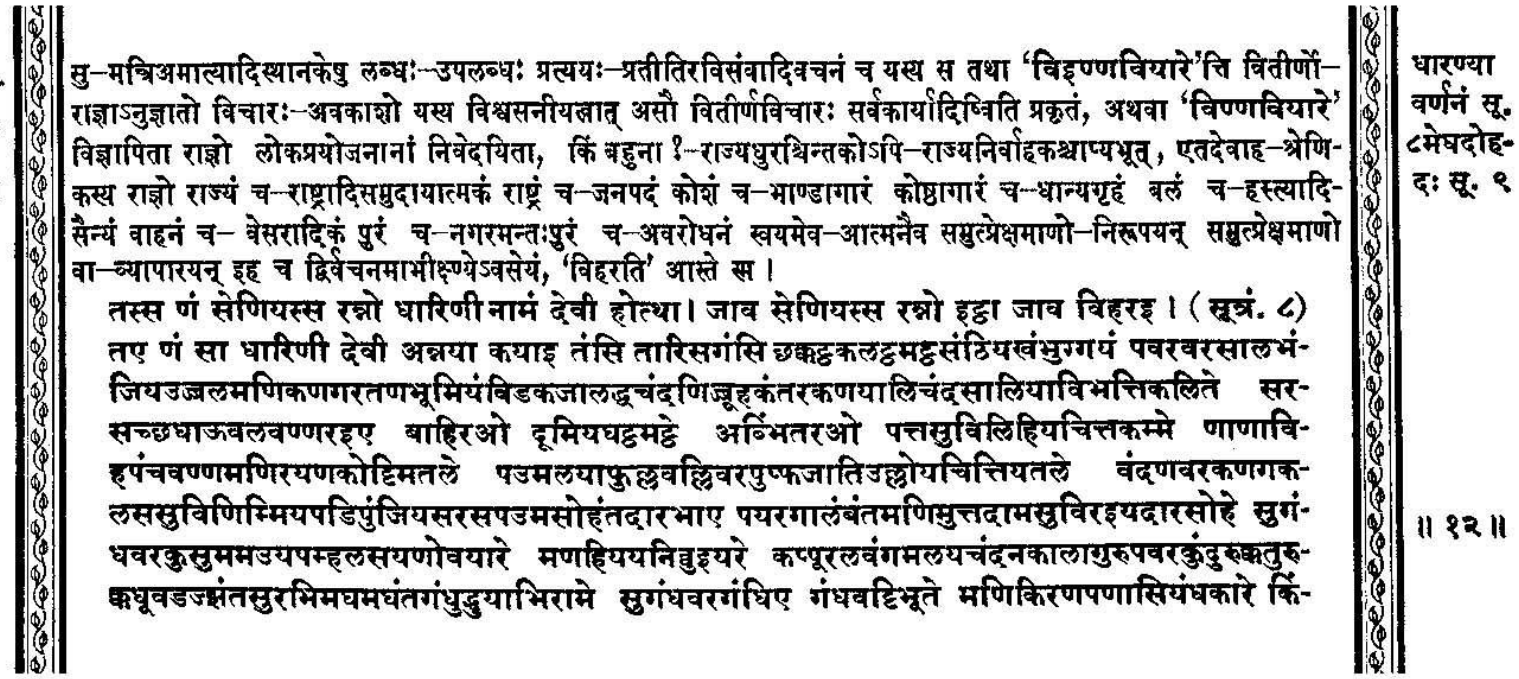


तथा ईहा च–स्थाणुरयं पुरुषो वेत्येवं सदर्थालोचनाभिमुखा मतिचेष्टा अपोहश्च–स्थाणुरेवायमित्यादिरूपो निश्चयः मार्गणं च–इह वल्युत्सर्पणादयः स्थाणुधर्मा एव प्रायो घटन्ते इत्याद्यन्वयधर्मालोचनरूपं गवेषणं च–इह शरीरकण्डूयनादयः पुरुषधर्माः प्रायो न घटन्त इति व्यतिरेकधर्मालोचनरूपं ईहाव्यूहमार्गणागवेषणानि तैरर्थशास्त्रे–अर्थोपायव्युत्पादग्रंथे कौटिल्यराज[धा]नीत्यादौ या मतिर्बोधस्तया विशारदः–पण्डितो यः स ईहाव्यूहमार्गणगवेषणार्थशास्त्रमतिविशारदः, तथौत्पत्तिक्यादिकया बुद्ध्या उपपेतो–युक्तः, तत्रौत्पत्तिकी अदृष्टाश्रुताननुभूतार्थविषयाऽऽकस्मिकी वैनयिकी गुरुविनयलभ्यशास्त्रार्थसंस्कारजन्या कर्म्मजा कृषिवाणिज्यादिकर्माभ्यासप्रभवा पारिणामिकी–प्रायो वयोविपाकजन्या, तथा श्रेणिकस्य राज्ञः बहुषु कार्येषु च–भक्तसेवकराज्यादिदानलक्षणकृत्येषु विषयभूतेषु तथा कुटुम्बेषु च–स्वकीयपरकीयेषु विषयभूतेषु ये मन्त्रादयो निश्चयान्तास्तेषु आप्रच्छनीयः, तत्र मन्त्रा–मन्त्रणानि पर्यालोचनानि तेषु च गुह्यानीव गुह्यानि–लज्जनीयव्यवहारगोपितानि तेषु च रहस्यानि–एकान्तयोग्यानि तेषु निश्चयेषु वा–इत्थमेवेदं विधेयमित्येवंरूपनिर्णयेषु अथवा स्वतन्त्रेषु कार्यादिषु षट्सु विषयेषु चकाराः समुच्चयार्थाः आप्रच्छनीयः–सकृत् प्रतिप्रच्छनीयो द्विस्त्रिकृत्वः, किमिति?–यतोऽसौ'मेढि'त्ति खलकमध्यवर्त्तिनी स्थूणा यस्यां नियमिता गोपंक्तिर्धान्यं गाहयति तद्वद्यमालम्ब्य सकलमन्त्रिमडलं मन्त्रणीयार्थान् धान्यमिव विवेचयति सा मेढी, तथा प्रमाणं–प्रत्यक्षादि तद्वद्यः तदृष्टार्थानामव्यभिचारित्वेन तथैव प्रवृत्तिनिवृत्तिगोचरत्वात् स प्रमाणं, तथा 'आधारे' आधारस्येव सर्वकार्येषु लोकानामुपकारित्वात् तथा 'आलंबनं' रज्ज्वादि तद्वदापद्गर्त्तादिनिस्तारकत्वादालम्बनं तथा चक्षुः–लोचनं तद्वल्लोकस्य मन्त्र्यमात्यादिविविधकार्येषु प्रवृत्तिनिवृत्तिविषयप्रदर्शकत्वाच्चक्षुरिति, एतदेव प्रपञ्चयति–'मेढिभूए'इत्यादि भूतशब्द उपमार्थः सर्वकार्येषु–सन्धिविग्रहादिषु सर्वभूमिका-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अभयकुमारस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [६,७] दीप अनुक्रम [९,१०]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ १२ ॥

सु–मन्त्रिअमात्यादिस्थानकेषु लब्धः–उपलब्धः प्रत्ययः–प्रतीतिरविसंवादिवचनं च यस्य स तथा 'विइण्णवियारे'त्ति वितीर्णो–राज्ञाऽनुज्ञातो विचारः–अवकाशो यस्य विश्वसनीयत्वात् असौ वितीर्णविचारः सर्वकार्यादिष्विति प्रकृतं, अथवा 'विण्णवियारे' विज्ञापिता राज्ञो लोकप्रयोजनानां निवेदयिता, किं बहुना ?–राज्यधुरश्चिन्तकोऽपि–राज्यनिर्वाहकश्चाप्यभूत्, एतदेवाह–श्रेणि-कस्य राज्ञो राज्यं च–राष्ट्रादिसमुदायात्मकं राष्ट्रं च–जनपदं कोशं च–भाण्डागारं कोष्ठागारं च–धान्यगृहं बलं च–हस्त्यादि-सैन्यं वाहनं च– वेसरादिकं पुरं च–नगरमन्तःपुरं च–अवरोधनं स्वयमेव–आत्मनैव समुत्प्रेक्षमाणो–निरूपयन् समुत्प्रेक्षमाणो वा–व्यापारयन् इह च द्विर्वचनमाभीक्ष्ण्येऽवसेयं, 'विहरति' आस्ते स्म ।

तस्स णं सेणियस्स रन्नो धारिणी नामं देवी होत्था। जाव सेणियस्स रन्नो इट्ठा जाव विहरइ । (सूत्रं. ८)

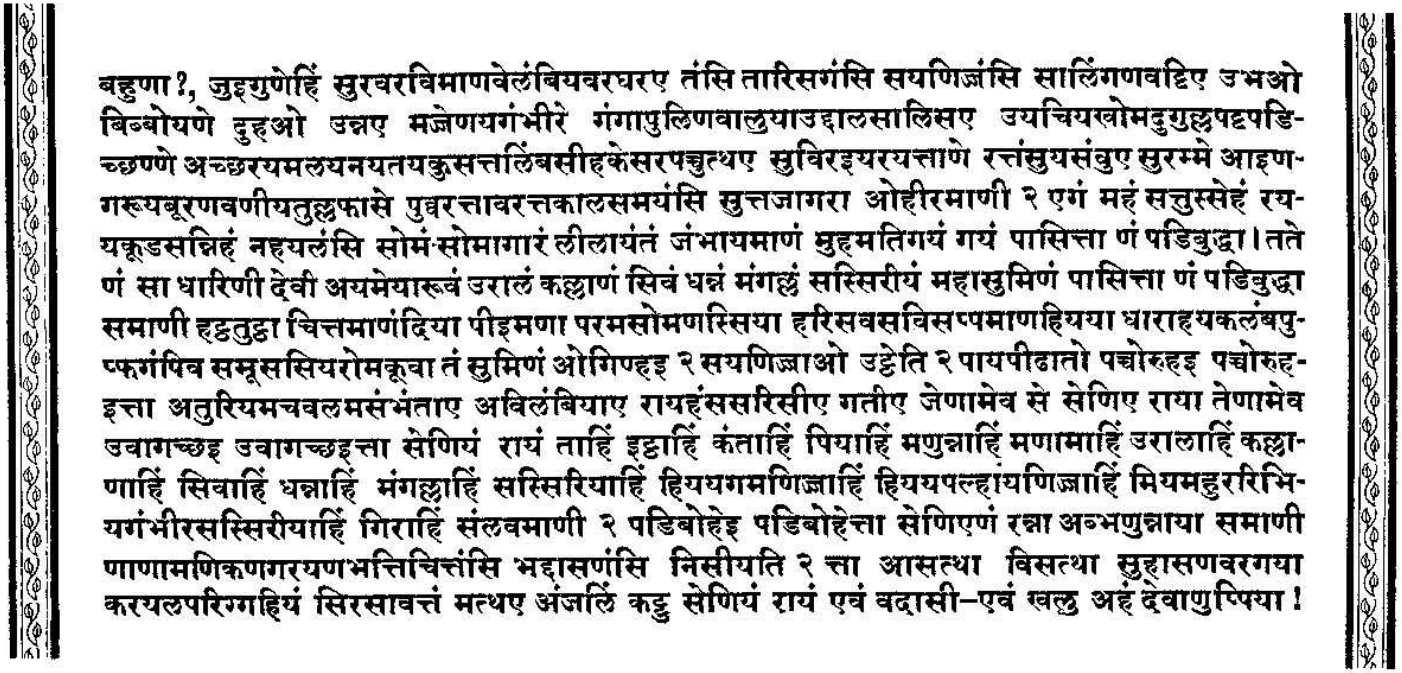
तए णं सा धारिणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि छक्कट्ठकलट्ठमट्ठसंठियखंभुग्गयं पवरवरसालभंजियउज्जलमणिकणगरतणभूमियंविडकजालद्धचंदणिज्जूहकंतरकणयालिचंदसालियाविभत्तिकलिते सरसच्छधाऊवलवण्णरइए बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे अब्भिंतरओ पत्तसुविलिहियचित्तकम्मे णाणाविहपंचवण्णमणिरयणकोट्टिमतले पउमलयाफुल्लवल्लिवरपुप्फजातिउल्लोयचित्तियतले वंदणवरकणगकलससुविणिम्मियपडिपुंजियसरसपउमसोहंतदारभाए पयरगालंबंतमणिमुत्तदामसुविरइयदारसोहे सुगंधवरकुसुममउयपम्हलसयणोवयारे मणहियययनिव्वुइयरे कप्पूरलवंगमलयचंदनकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतसुरभिमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूते मणिकिरणपणासियंधकारे किं-

॥ १२ ॥

धारण्या वर्णनं सू. ८मेघदोहदः सू. ९

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अभयकुमारस्य वर्णनं, राज्ञी-धारिणी एवं तस्या: स्वप्नं

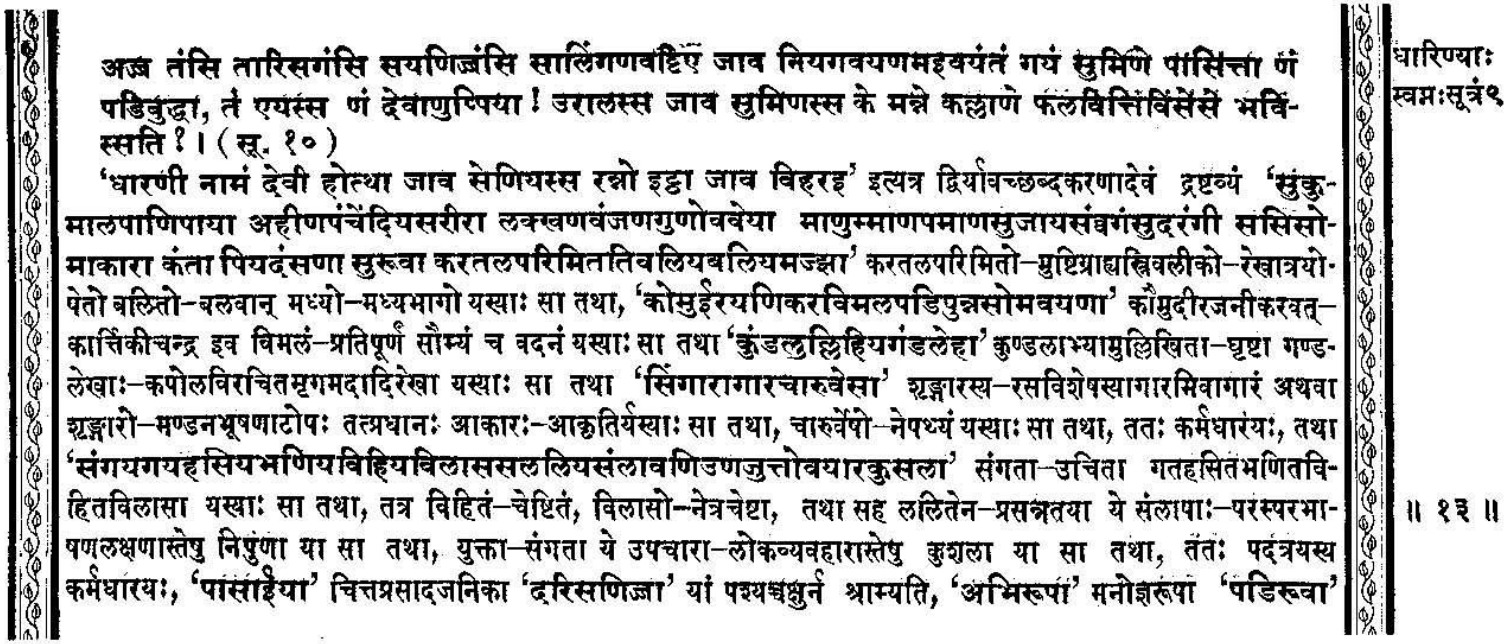


बहुणा?, जुइगुणेहिं सुरवरविमाणवेलंबियवरघरए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणे दुहओ उन्नए मज्झेणयगंभीरे गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए उवचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छण्णे अच्छरयमलयनयतयकुसत्तलिंबसीहकेसरपच्चुत्थए सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणगरूयबूरणवणीयतुल्लफासे पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ एगं महं सत्तुस्सेहं रयकूडसन्निहं नहयलंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं मुहमतिगयं गयं पासित्ता णं पडिबुद्धा। तते णं सा धारिणी देवी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठा चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा तं सुमिणं ओगिण्हइ २ सयणिज्जाओ उट्ठेति २ पायपीढातो पच्चोरुहइ पच्चोरुहइत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गतीए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरियाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मियमहुररिभियगंभीरसस्सिरीयाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेइ पडिबोहेत्ता सेणिएणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयति २ त्ता आसत्था विसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वदासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया!

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८,९]

दीप अनुक्रम [११,१२]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्-

॥ १२ ॥

अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए जाव सियगवयणमइवयंतं गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तं एयस्स णं देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव सुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति ? । (सू. १०)

'धारणी नामं देवी होत्था जाव सेणियस्स रन्नो इट्ठा जाव विहरइ' इत्यत्र द्विर्यावच्छब्दकरणादेवं द्रष्टव्यं 'सुकुमालपाणिपाया अहीणपंचेंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणपमाणसुजायसव्वंगसुदरंगी ससिसोमाकारा कंता पियदंसणा सुरूवा करतलपरिमिततिवलियवलियमज्झा' करतलपरिमितो–मुष्टिग्राह्यस्त्रिवलीको–रेखात्रयोपेतो वलितो–बलवान् मध्यो–मध्यभागो यस्याः सा तथा, 'कोमुईरयणिकरविमलपडिपुन्नसोमवयणा' कौमुदीरजनीकरवत्–कार्त्तिकीचन्द्र इव विमलं–प्रतिपूर्णं सौम्यं च वदनं यस्याः सा तथा 'कुंडलुल्लिहियगंडलेहा' कुण्डलाभ्यामुल्लिखिता–घृष्टा गण्डलेखाः–कपोलविरचितमृगमदादिरेखा यस्याः सा तथा 'सिंगारागारचारुवेसा' शृङ्गारस्य–रसविशेषस्यागारमिवागारं अथवा शृङ्गारो–मण्डनभूषणाटोपः तत्प्रधानः आकारः–आकृतिर्यस्याः सा तथा, चारुर्वेषो–नेपथ्यं यस्याः सा तथा, ततः कर्मधारयः, तथा 'संगयगयहसियभणियविहियविलाससललियसंलावणिउणजुत्तोवयारकुसला' संगता–उचिता गतहसितभणितविहितविलासा यस्याः सा तथा, तत्र विहितं–चेष्टितं, विलासो–नेत्रचेष्टा, तथा सह ललितेन–प्रसन्नतया ये संलापाः–परस्परभाषणलक्षणास्तेषु निपुणा या सा तथा, युक्ता–संगता ये उपचारा–लोकव्यवहारास्तेषु कुशला या सा तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः, 'पासाईया' चित्तप्रसादजनिका 'दरिसणिज्जा' यां पश्यश्चक्षुर्न श्राम्यति, 'अभिरूवा' मनोज्ञरूपा 'पडिरूवा'

धारिण्याः स्वप्नः सूत्रं९

॥ १३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

***अत्र यत् (सू. १०) लिखितं तत् मुद्रण-दोषः वर्तते, (सू. ९ स्थाने सू. १० मुद्रितं)

राज्ञी-धारिणी एवं तस्याः स्वप्नं

द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रूपं यस्याः सा तथा, **'सेणियस्स रन्नो इट्ठा वल्लभा'** कांता काम्यत्वात् प्रिया प्रेमविषयत्वात् मणुन्ना सुन्दरत्वात् **'नामधेज्जा'** नामधेयवती प्रशस्तनामधेयवतीत्यर्थः नाम वा धार्यं–हृदि धरणीयं यस्याः सा तथा, **'वेसासिया'** विश्वसनीयत्वात् **'सम्मया'** तत्कृतकार्यस्य सम्मतत्वाद्बहुमता–बहुशो बहुभ्यो वाऽन्येभ्यः सकाशान्मता बहुमता बहुमानपात्रं वा **'अणुमया'** विप्रियकरणस्यापि पश्चात्मता अनुमता **'भंडकरंडगसमाणा'** आभरणकरण्डकसमानोपादेयत्वात् **'तेल्लकेला इव सुसंगोविया'** तैलकेला–सौराष्ट्रप्रसिद्धो मृन्मयस्तैलस्य भाजनविशेषः स च भङ्गभयाल्लोच(ठ)नभयाच्च सुष्ठु संगोप्यते एवं साऽपि तथोच्यते **'चेलपेडा इव सुसंपरिगिहीया'** वस्त्रमञ्जूषेवेत्यर्थः, **'रयणकरंडगोविव सुसारक्खिया'** सुसंरक्षितेत्यर्थः, कुत इत्याह, **'मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं वाइयपित्तियसंभियसन्निवाइयविविहरोगायंका फुसंतुत्तिकट्टु सेणिएणं रन्ना सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरति'** माशब्दा निषेधार्थाः, णंकारा वाक्यालङ्कारार्थाः, अथवा **'माणं'**ति मैनामिति प्राकृतत्वात्, व्यालाः–श्वापदभुजगाः रोगाः–कालसहाः आतङ्काः–सद्योघातिनः, इतिकट्टु–इतिकृत्वा इतिहेतोर्भोगभोगान्–अतिशयवद्भोगानिति, **'तए णं'**ति ततोऽनन्तरं **'तंसि तारिसयंसि'**त्ति यदिदं वक्ष्यमाणगुणं तस्मिंस्तादृशके यादृशमुपचितपुण्यस्कन्धानामङ्गिनामुचितं **'वरघरए'**त्ति संबन्धः वासभवने इत्यर्थः, कथंभूते ?–**'षट्काष्ठकं'** गृहस्य बाह्यालन्दकं षड्दारुकमिति यदागमप्रसिद्धं, द्वारमित्यन्ये स्तम्भविशेषणमिदमित्यन्ये, तथा लष्टा–मनोज्ञा मृष्टा–मसृणाः संस्थिता–विशिष्टसंस्थानवन्तो ये स्तम्भास्तथा उद्गता–ऊर्द्वगता स्तम्भेषु वा उद्गता–व्यवस्थिताः स्तम्भोद्गताः प्रवराणां वराः प्रवरवराः–अतिप्रधाना याः शालभञ्जिकाः–पुत्रिकास्तथा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८,९]

दीप अनुक्रम [११,१२]

उज्ज्वलानां मणीनां–चंद्रकान्तादीनां कनकस्य रत्नानां–कर्केतनादीनां या स्तूपिका–शिखरं, तथा विटङ्कः–कपोतपाली वरण्डिकाधोवर्त्ती अन्तरविशेषः जालं–सच्छिद्रो गवाक्षविशेषः, अर्द्धचन्द्रः–अर्द्धचन्द्राकारं सोपानं निर्यूहकं–द्वारपार्श्वविनिर्गतदारु अंतरं–अन्तरविशेष एव पानीयान्तरमिति सूत्रधारैर्यद् व्यपदिश्यते निर्यूहकद्वयस्य यान्यन्तराणि तानि वा निर्यूहकान्तराणि कणकाली–अन्तरविशेषश्चन्द्रसालिका च–गृहोपरि शाला एतेषां गृहांशानां या विभक्तिः–विभजनं विविक्तता तथा कलितं–युक्तं यत्तत्तथा तस्मिन्, '**सरसच्छवाडवडंबसरइए**'त्ति श्राव्यं, कैश्चित् पुनरेवं संभावितमिदं–'**सरसच्छधाउवलवन्नरइए**'त्ति तत्र सरसेन–अच्छेन धातूपलेन–पाषाणधातुना गैरिकविशेषेणेत्यर्थः वर्णो रचितो यत्र तत्तथा '**बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे**'त्ति दूमितं–धवलितं घृष्टं–कोमलपाषाणादिना अत एव मृष्टं–मसृणं यत्तत्तथा तस्मिन्, तथा अभ्यन्तरतः प्रशस्तं–स्वकीय २ कर्मव्यापृतं शुचि–पवित्रं लिखितं चित्रकर्म यत्र तत्तथा तस्मिन्, तथा नानाविधानां जातिभेदेन पञ्चवर्णानां मणिरत्नानां सत्कं कुट्टिमतलं–मणिभूमिका यस्मिंस्तत्तथा तत्र, तथा पद्मैः–पद्माकारैरेवं लताभिरशोकलताभिः पद्मलताभिर्वा मृणालिकाभिः पुष्पवल्लीभिः–पुष्पप्रधानाभिः पत्रवल्लिभिः तथा वराभिः पुष्पजातिभिः–मालतीप्रभृतिभिश्चित्रितमुल्लोकतलं–उपरितनभागो यस्मिन् तत्तथा तत्र, इह च प्राकृतत्वेन '**उल्लोयचित्तियतले**' इत्येवं विपर्ययनिर्देशो द्रष्टव्य इति, अथवा पद्मादिभिरुल्लोकस्य चित्रितं तलं–अधोभागो यस्मिन्निति, तथा वन्द्यन्त इति वन्दना–मङ्गल्याः ये वरकनकस्य कलशाः सुष्ठु–'**निम्मिय**'त्ति न्यस्ताः प्रतिपूजिताः–चन्दनादिचर्चिताः सरसपद्माः–सरसमुखस्थगनकमलाः शोभमाना द्वारभागेषु यस्य पाठान्तरापेक्षया चन्दन वरकनककलशैः सुन्यस्तैस्तथा प्रतिपुञ्जितैः–पुञ्जीकृतैः सरसपद्मैः शोभमाना द्वारभागा यस्य तत्तथा तस्मिन्, तथा प्रतरकाणि–स्वर्णादिमया आभरणविशेषास्तत्प्रधानैर्मणिमुक्तानां

॥ १४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राज्ञी-धारिणी एवं तस्याः स्वप्नं

प्रत सूत्रांक [८,९]

दीप अनुक्रम [११,१२]

दामभिः–स्रग्भिः सुष्ठु विरचिता द्वारशोभा यस्य तत्तथा तस्मिन्, तथा सुगन्धिवरकुसुमैर्मृदुकस्य–मृदोः पक्ष्मलस्य च–पक्ष्मवतः शयनस्य–तूल्यादिशयनीयस्य यः उपचारः–पूजा उपचारो वा स विद्यते यस्मिन् मण इत्यस्य मत्वर्थीयत्वात् तत् सुगन्धिवरकुसुममृदुपक्ष्मलशयनीयोपचारवत्तच्च यद् हृदयनिर्वृतिकरं च–मनःस्वास्थ्यकरं तत्तथा तस्मिन्, तथा कर्पूरश्च लवङ्गानि च–फलविशेषाः मलयचन्दनं च–पर्वतविशेषप्रभवं श्रीखण्डं कालागुरुश्च–कृष्णागरुः प्रवरकुन्दुरुकं च–चीडाभिधानो गन्धद्रव्यविशेषः तुरुष्कं च–सिल्हकं धूपश्च–गन्धद्रव्यसंयोगज इति द्वन्द्वः, एतेषां वा संबन्धी यो धूपः तस्य दह्यमानस्य सुरभिर्यो मघमघायमानः–अतिशयवान् गन्धः उद्धूतः–उद्भूतः तेनाभिरामम्–अभिरमणीयं यत्तत्तथा तस्मिन्, तथा सुष्ठु गन्धवराणां–प्रधानचूर्णानां गन्धो यस्मिन् अस्ति तत् सुगन्धवरगन्धिकं तस्मिन्, तथा गंधवर्त्तिः–गन्धद्रव्यगुटिका कस्तूरिका वा गन्धस्तद्गुटिका गन्धवर्त्तिस्तद्भूते–सौरभ्यातिशयात्तत्कल्पे, तथा मणिकिरणप्रणाशितान्धकारे, किं बहुना वर्णकेन ?, वर्णकसर्वस्वमिदं द्युत्या गुणैश्च सुरवरविमानं विडम्बयति–जयति यद्वरगृहकं तत्तथा तत्र, तथा तस्मिन् तादृशे शयनीये सहालिङ्गनवर्त्या–शरीरप्रमाणोपधानेन यत्तत्सालिङ्गनवर्त्तिकं तत्र, 'उभओ विव्वोयणे'त्ति उभयतः उभौ–शिरोऽन्तपादान्तावाश्रित्य 'विव्वोयणे'त्ति उपधाने यत्र तत्तथा तस्मिन्, 'दुहओ'त्ति उभयतः उन्नते मध्ये नतं च तन्निम्नत्वाद्गभीरं च महत्त्वान्नतगम्भीरं अथवा मध्येन च भागेन तु गम्भीरे–अवनते गङ्गापुलिनवालुकायाः अवदातः–अवदलनं पादादिन्यासेऽधोगमनमित्यर्थः तेन 'सालिसए'त्ति सदृशकमतिनम्रत्वाद्यत्तत्तथा तत्र, दृश्यते च हंसतूल्यादिष्वयं न्याय इति । तथा 'उयचिय'त्ति परिकर्मितं यत् क्षौमं दूकूलं–कार्पासिकमतसीमयं वा वस्त्रं तस्य युगलापेक्षया यः पट्टः–एकः शाटकः स प्रतिच्छादनम्–आच्छादनं यस्य तत्तथा तत्र, तथा आस्त-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राज्ञी-धारिणी एवं तस्याः स्वप्नं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [८,९]

दीप अनुक्रम [११,१२]

रको मलको नवतः कुशक्तो लिम्बः सिंहकेसरश्चैते आस्तरणविशेषास्तैः प्रत्यवस्तृतम्–आच्छादितं यत्तत्तथा, इह चास्तरको लोकप्रतीत एव मलककुशक्तौ तु रूढिगम्यौ नवतस्तु ऊर्णाविशेषमयो जीनमिति लोके यदुच्यते, लिम्बो–बालोरभ्रस्योर्णायुक्ता कृतिः सिंहकेसरो–जटिलकम्बलः, तथा सुष्ठु विरचितं शुचि वा रचितं रजस्त्राणं–आच्छादनविशेषोऽपरिभोगावस्थायां यस्मिंस्तत्तथा तत्र, रक्तांशुकसंवृते– मशकगृहाभिधानवस्त्रावृते सुरम्ये तथा आजिनकं–चर्ममयो वस्त्रविशेषः स च स्वभावादतिकोमलो भवति तथा रूतं–कर्पासपक्ष्म बूरो–वनस्पतिविशेषः नवनीतं–प्रक्षणं एभिस्तुल्यः स्पर्शो यस्य, तूलं वा–अर्कतूलं तत्र पक्षे एतेषामिव स्पर्शो यस्य तत्तथा तत्र, पूर्वरात्रश्चासावपररात्रश्च पूर्वरात्रापररात्रः स एव काललक्षणः समयः न तु सामाचारादिलक्षणः पूर्वरात्रापररात्रकालसमयस्तत्र, मध्यरात्रे इत्यर्थः, इह चार्षत्वादेकरेफलोपेन 'पुव्वरत्तावरत्ते'त्युक्तं, अप[र]रात्रशब्दो वाऽयमिति, सुप्तजागरा–नातिसुप्ता नातिजाग्रती, अत एवाह 'ओहीरमाणी २'त्ति वारं वारमीषन्निद्रां गच्छन्तीत्यर्थः, एकं महान्तं सप्तोत्सेधमित्यादिविशेषणं मुखमतिगतं गजं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धेति योगः, तत्र सप्तोत्सेधं सप्तसु–कुम्भादिषु स्थानेषून्नतं सप्तहस्तोच्छ्रितं वा 'रययं'ति रूप्यं 'नहयलंसि'त्ति नभस्तलान्मुखमतिगतमिति योगः, वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते–'जाव सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा' तत्र यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं 'एक्कं च णं महंतं पंडुरं धवलयं सेयं' एकार्थशब्दत्रयोपादानं चात्यन्तशुक्लताख्यापनार्थं, एतदेवोपमानेनाह–'संखउलविमलदहिघणगोखीर (विमल) फेणरयणिकरपगासं' शंखकुलस्येव विमलदध्न इव घनगोक्षीरस्येव विमलफेनस्येव रजनीकरस्येव प्रकाशः–प्रभा यस्य स तथा तं, अथवा 'हाररजतखीरसागरदगरयमहासेलपंडुरतरोरुरमणिज्जदरिसणिज्जं' हारादिभ्यः पाण्डुरतरो यः स तथा, इह च महाशैलो–महाहिमवान् तथा उरुः–विस्तीर्णः रम-

॥ १५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राज्ञी-धारिणी एवं तस्याः स्वप्नं

प्रत सूत्रांक [८,९]

दीप अनुक्रम [११,१२]

णीयो–रम्योऽत एव दर्शनीय इति पदचतुष्टयस्य कर्मधारयोऽतस्तं, तथा **'थिरलट्ठपउट्ठपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुहं'** स्थिरौ–अप्रकम्पौ लष्टौ–मनोज्ञौ प्रकोष्ठौ–कूर्परायेतनभागौ यस्य स तथा, तथा पीवराः–स्थूला सुश्लिष्टाः–अविसर्वरा विशिष्टा–मनोहरास्तीक्ष्णा या दंष्ट्रास्ताभिः कृत्वा **'विडंबियं'**ति विवृतं मुखं यस्य स तथा ततः कर्मधारयस्तं, तथा **'परिकम्मियजच्चकमलकोमलमाईयसोहंतलट्ठउट्ठं'** परिकर्म्मितं–कृतपरिकर्मा **'माइय'**त्ति मात्रावान् परिमित इत्यर्थः, शेषं प्रतीतं, तथा **'रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुनिल्लालियग्गजीहं'** रक्तोत्पलपत्रमिव मृदुकेभ्यः सुकुमारमतिकोमलं तालु च निर्लालिताग्रा–प्रसारिताग्रा जिह्वा च यस्य स तथा तं, तथा **'महुरगुलियभिसंतपिंगलच्छं'**मधुगुटिकेव–क्षौद्रवर्त्तिरिव **'भिसंत'**त्ति दीप्यमाने पिङ्गले–कपिले अक्षिणी यस्य स तथा तं, तथा **'मूसागयपवरकणयतावियआवत्तायंतवट्टतडियविमलसरिसनयणं'** मूषागतं–मृन्मयभाजनविशेषस्थं यत्प्रवरकनकं तापितमग्निधमनात् **'आवत्तायंत'**त्ति आवर्त्तं कुर्वत् तद्वत् तथा वृत्ते च तर्हिते –विवृत्ते विमले च सदृशे च–समाने नयने यस्य स तथा तं, अत्र च **'वट्टतट्ट'** इत्येतावदेव पुस्तके दृष्टं संभावनया तु वृत्ततर्हित इति व्याख्यातमिति, पाठान्तरेण तु **'वट्टपडिपुण्णपसत्थनिद्धमहुगुलियपिंगलच्छं'** स्फुटश्चायं पाठः, तथा **'विसालपीवरभमरोरुपडिपुण्णविमलखंधं'** विशालो–विस्तीर्णः पीवरो–मांसलः **'भ्रमरोरुः'** भ्रमरा–रोमावर्त्तो उरवो–विस्तीर्णा यत्र स तथा परिपूर्णो विमलश्च स्कन्धो यस्य स तथा तं, अथवा **'पडिपुण्णसुजायखंधं'** तथा **'मिदुविसदसुहुमलक्खणपसत्थविच्छिन्नकेसरसडं'** मृद्वो विशदा–अविमूढाःसूक्ष्मा लक्षणप्रशस्ताः–प्रशस्तलक्षणा विस्तीर्णाः केसरसटाः–स्कन्धकेशरजटा यस्य स तथा तं, अथवा **'निम्मलवरकेसरधरं'** तथा **'ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियलंगू-**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राज्ञी-धारिणी एवं तस्याः स्वप्नं

प्रत सूत्रांक [८,९]

दीप अनुक्रम [११,१२]

लं'उच्छ्रितम्–ऊर्द्धं नीतं सुनिर्मितं सुष्ठु भंगुरतया न्यस्तं सुजातं सद्गुणोपपेततया आस्फोटितं भुवि लाङ्गुलं–पुच्छं येन स तथा तं, सौम्यं–उपशान्तं सौम्याकारं–शान्ताकृतिं, **'लीलायंतं'**ति लीलां कुर्वन्तं **'जंभायंतं'** विजृम्भमाणं शरीरचेष्टाविशेषं विदधानं **'गगणतलाओ ओवयमाणं सीहं अभिमुहं मुहे पविसमाणं पासित्ता पडिबुद्ध'**त्ति **'अयमेयारूवं'**ति इमं महास्वप्नमिति संबंधः, एतदेव–वर्णितस्वरूपं रूपं यस्य स्वप्नस्य न कविकृतमूनमधिकं वा स तथा तं, **'उरालं'**ति उदारं प्रधानं कल्याणं–कल्याणानां शुभसमृद्धिविशेषाणां कारणत्वात् कल्ये वा–नीरोगत्वमणति–गमयति कल्याणं तद्धेतुत्वात्, शिवम्–उपद्रवोपशमहेतुत्वात् धन्यं धनावहत्वात् **'मंगल्यं'** मङ्गले दुरितोपशमे साधुत्वात्सश्रीकं–सशोभनमिति **'समाणी'**त्ति सती हृष्टतुष्टा–अत्यर्थं तुष्टा अथवा हृष्टा–विस्मिता तुष्टा–तोषवती, **'चित्तमाणंदिय'**त्ति चित्तेनानन्दिता आनन्दितं वा चित्तं यस्याः सा चित्तानन्दिता, मकारः प्राकृतत्वात्, प्रीतिर्मनसि यस्याः सा प्रीतिमनाः, **'परमसोमणस्सिया'** परमं सौमनस्यं संजातं यस्याः सा परमसौमनस्यिता, हर्षवशेन विसर्पद्–विस्तारयायि हृदयं यस्याः सा तथा, सर्वाणि प्राय एकार्थिकान्येतानि पदानि प्रमोदप्रकर्षप्रतिपादनार्थत्वात् स्तुतिरूपत्वाच्च न दुष्टानि, आह च–"वक्ता हर्षभयादिभिराक्षिप्तमनास्तथा स्तुवन्निन्दन् । यत्पदमसकृद्ब्रूयात्तत्पुनरुक्तं न दोषाय ॥ १ ॥' इति, **'पच्चोरुहइ'**त्ति प्रत्यवरोहति, अत्वरितं मानसौत्सुक्याभावेनाचपलं कायतः असंभ्रान्त्याऽस्खलन्त्या अविलम्बितया–अविच्छिन्नतया **'राजहंससरिसीए'**त्ति राजहंसगमनसदृश्या गत्या **'ताहिं'**ति या विशिष्टगुणोपेतास्ताभिर्गीर्भिरिति संबन्धः, इष्टाभिः–तस्य वल्लभाभिः कान्ताभिः–अभिलषिताभिः सदैव तेन प्रियाभिः–अद्वेष्याभिः सर्वेषामपि मनोज्ञाभिः–मनोरमाभिः मनःप्रियाभिश्चिन्तयापि उदाराभिः–उदारनादवर्णोच्चारादियुक्ताभिः कल्याणाभिः–समृद्धिकारिकाभिः

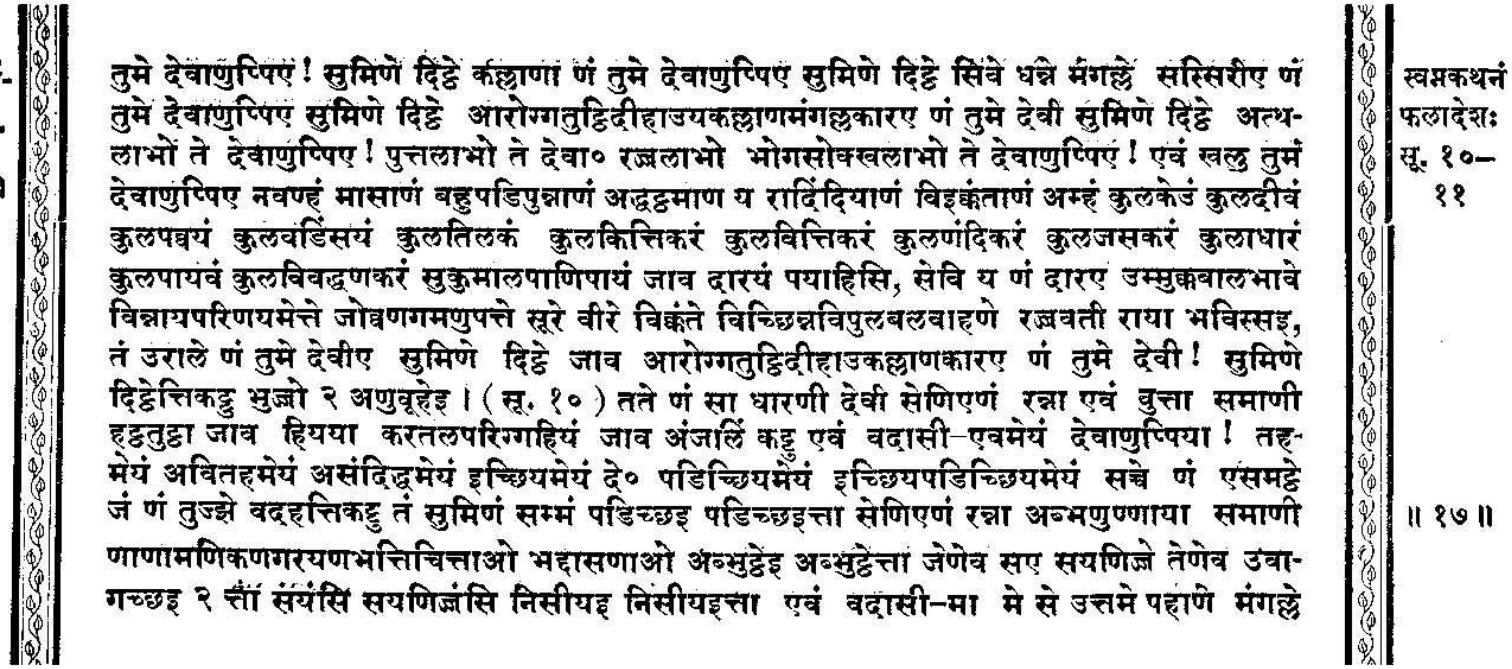
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

राज्ञी-धारिणी एवं तस्याः स्वप्नं

शिवाभिः–गीर्दोषानुपद्रुताभिः धन्याभिः–धनलम्भिकाभिर्मङ्गल्याभिः–मङ्गलसाध्वीभिः सश्रीकाभिः–अलङ्कारादिशोभावद्भिः हृदयगमनीयाभिः–हृदये या गच्छन्ति कोमलत्वात् सुबोधत्वाच्च तास्तथा ताभिः, हृदयप्रह्लादिकाभिः–हृदयप्रह्लादनीयाभिः आह्लादजनकाभिः 'मितमधुररिभितगंभीरसश्रीकाभिः' मिताः–वर्णपदवाक्यापेक्षया परिमिताः मधुराः–स्वरतः रिभिताः–स्वरघोलनाप्रकारवत्यः गम्भीराः–अर्थत शब्दतश्च सह श्रिया–उक्तगुणलक्ष्म्या यास्तास्तथा ततः पदपञ्चकस्य कर्मधारयस्ततस्ताभिः गीर्भिः–वाग्भिः संलपन्ती–पुनः पुनर्जल्पन्तीत्यर्थः नानामणिकनकरत्नानां भक्तिभिः–विच्छित्तिभिश्चित्रं–विचित्रं यत्तत्तथा तत्र भद्रासने–सिंहासने आश्वस्ता गतिजनितश्रमापगमात् विश्वस्ता संक्षोभाभावात् अनुत्सुका वा 'सुहासणवरगय'त्ति सुखेन शुभे वा आसनवरे गता–स्थिता या सा तथा, करतलाभ्यां परिगृहीतः–आत्तः करतलपरिगृहीतस्तं शिरस्यावर्त्तं आवर्त्तनं–परिभ्रमणं यस्य स तथा शिरसावर्त्तं इत्येके, शिरसा अप्राप्त इत्यन्ये, तमंजलिं मस्तके कृत्वा एवमवादीत्–'किं मन्ने' इत्यादि, को मन्ये कः कल्याणफलवृत्तिविशेषो भविष्यति, इह मन्ये वितर्कार्थो निपातः, 'सोच्च'त्ति श्रुत्वा श्रवणतः निशम्य–अवधार्य हृष्टतुष्टो यावद्विसर्पद्धृदयः । तथा वाचनान्तरे पुनरिह राज्ञीवर्णके चेदमुपलभ्यते ।

तते णं सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियये धाराहयनीवसुरभिकुसुमचुंचुमालइयतणुऊससियरोमकूवे तं सुमिणं उग्गिण्हइ उग्गिण्हइत्ता ईहं पविसति २ अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेति २ धारिणिं देवीं ताहिं जाव हिययपल्हायणिज्जाहिं मिउमहुररिभियगंभीरसस्सिरियाहिं वग्गूहिं अणुवूहेमाणे २ एवं वयासी–उराले णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ १७ ॥

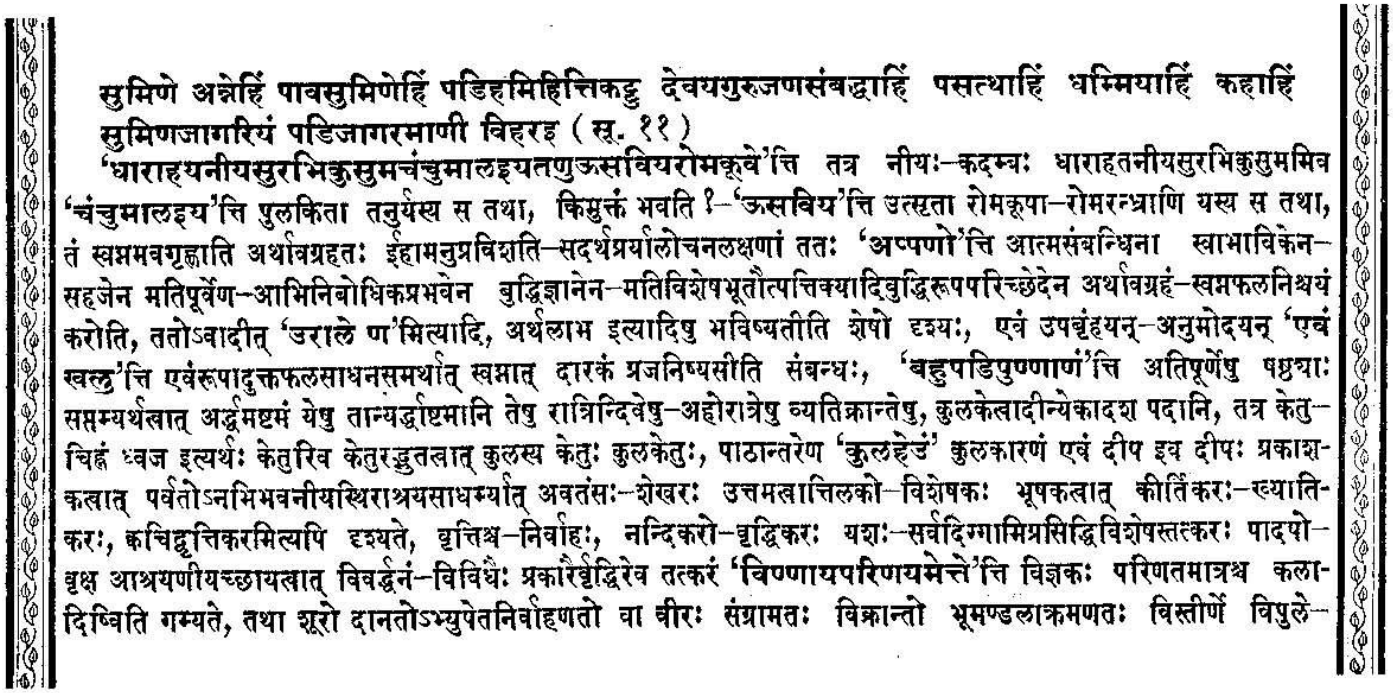
तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे कल्लाणा णं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणे दिट्ठे सिवे धन्ने मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए सुमिणे दिट्ठे आरोग्गतुट्ठिदीहाउयकल्लाणमंगल्लकारए णं तुमे देवी सुमिणे दिट्ठे अत्थ-लाभो ते देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो ते देवा० रज्जलाभो भोगसोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं कुलतिलकं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं कुलणंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव दारयं पयाहिसि, सेवि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सइ, तं उराले णं तुमे देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणकारए णं तुमे देवी! सुमिणे दिट्ठेत्तिकट्टु भुज्जो २ अणुवूहेइ। (सू. १०) तते णं सा धारणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जाव हियया करतलपरिग्गहियं जाव अंजलिं कट्टु एवं वदासी–एवमेयं देवाणुप्पिया! तह-मेयं अवितहमेयं असंदिद्धमेयं इच्छियमेयं दे० पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं सच्चे णं एसमट्ठे जं णं तुज्झे वदहत्तिकट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ पडिच्छइत्ता सेणिएणं रन्ना अब्भणुण्णाया समाणी णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता संयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ निसीयइत्ता एवं वदासी–मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले

स्वप्नकथनं फलादेशः सू. १०–११

॥ १७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	स्वप्न-फल कथनं



सुमिणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहमिहित्तिकट्टु देवयगुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी विहरइ (सू. ११)

'धाराहयनीयसुरभिकुसुमचंचुमालइयतणुऊसवियरोमकूवे'त्ति तत्र नीपः–कदम्बः धाराहतनीयसुरभिकुसुममिव 'चंचुमालइय'त्ति पुलकिता तनुर्यस्य स तथा, किमुक्तं भवति ?–'ऊसविय'त्ति उत्सृता रोमकूपा–रोमरन्ध्राणि यस्य स तथा, तं स्वप्नमवगृह्णाति अर्थावग्रहतः ईहामनुप्रविशति–सदर्थप्रर्यालोचनलक्षणां ततः 'अप्पणो'त्ति आत्मसंबन्धिना स्वाभाविकेन–सहजेन मतिपूर्वेण–आभिनिबोधिकप्रभवेन बुद्धिज्ञानेन–मतिविशेषभूतौत्पत्तिक्यादिबुद्धिरूपपरिच्छेदेन अर्थावग्रहं–स्वप्नफलनिश्चयं करोति, ततोऽवादीत् 'उराले ण'मित्यादि, अर्थलाभ इत्यादिषु भविष्यतीति शेषो दृश्यः, एवं उपबृंहयन्–अनुमोदयन् 'एवं खलु'त्ति एवंरूपादुक्तफलसाधनसमर्थात् स्वप्नात् दारकं प्रजनिष्यसीति संबन्धः, 'बहुपडिपुण्णाणं'त्ति अतिपूर्णेषु षष्ठ्याः सप्तम्यर्थत्वात् अर्द्धमष्टमं येषु तान्यर्द्धाष्टमानि तेषु रात्रिन्दिवेषु–अहोरात्रेषु व्यतिक्रान्तेषु, कुलकेत्वादीन्येकादश पदानि, तत्र केतु–चिह्नं ध्वज इत्यर्थः केतुरिव केतुरद्भुतत्वात् कुलस्य केतुः कुलकेतुः, पाठान्तरेण 'कुलहेउं' कुलकारणं एवं दीप इव दीपः प्रकाश-कत्वात् पर्वतोऽनभिभवनीयस्थिराश्रयसाधर्म्यात् अवतंसः–शेखरः उत्तमत्वात्तिलको–विशेषकः भूषकत्वात् कीर्तिकरः–ख्याति-करः, क्वचिद्वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते, वृत्तिश्च–निर्वाहः, नन्दिकरो–वृद्धिकरः यशः–सर्वदिग्गामिप्रसिद्धिविशेषस्तत्करः पादपो–वृक्ष आश्रयणीयच्छायत्वात् विवर्द्धनं–विविधैः प्रकारैर्वृद्धिरेव तत्करं 'विण्णायपरिणयमेत्ते'त्ति विज्ञकः परिणतमात्रश्च कला-दिष्विति गम्यते, तथा शूरो दानतोऽभ्युपेतनिर्वाहणतो वा वीरः संग्रामतः विक्रान्तो भूमण्डलाक्रमणतः विस्तीर्णे विपुले–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	स्वप्न-फल कथनं

प्रत सूत्रांक [१०,११]

दीप अनुक्रम [१३,१४]

अतिविस्तीर्णे बलवाहने–सैन्यगवादिके यस्य स तथा, राज्यपती राजा स्वतन्त्र इत्यर्थः । 'त'मिति यस्मादेवं तस्मादुदारादिविशेषणः स्वप्नः 'तुमे'त्ति त्वया दृष्ट इति निगमनं । 'एवमेत'दिति राजवचने प्रत्ययाविष्करणम्, एतदेव स्फुटयति–'तहमेयं'ति तथैव तद्यथा भवन्तः प्रतिपादयन्ति, अनेनान्वयतस्तद्वचनसत्यतोक्ता 'अवितहमेयं'ति अनेन व्यतिरेकभावतः 'असंदिद्धमेय'मित्यनेन संदेहाभावतः 'इच्छियं'ति इष्टं ईप्सितं वा 'पडिच्छियं'ति प्रतीष्टं प्रतीप्सितं वा अभ्युपगतमित्यर्थः, इष्टप्रतीष्टम् ईप्सितप्रतीप्सितं वा धर्मद्वययोगात्, अत्यन्तादरख्यापनाय चैवं निर्देशः, 'इतिकट्टु'त्ति इति भणित्वा 'उत्तमे'त्ति स्वरूपतः 'पहाणे'त्ति फलतः, एतदेवाह–'मंगल्ले'त्ति मंगले साधुः स्वप्न इति 'सुमिणजागरियं'ति स्वप्नसंरक्षणार्थं जागरिका तां 'प्रतिजाग्रती' प्रतिविदधती ।

तए णं सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावइत्ता एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज सविसेसं परमरम्मं गंधोदगसित्तसुइयसंमज्जिओवलित्तं पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूतं करेह य कारवेह य २ एवमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पच्चप्पिणंति, तते णं सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगासकिंसुयसुयमुहगुंजद्धरागबंधुजीवगपारावयचलणनयणपरहुयसुरत्तलोयणजासुयणकुसुमजलियजलणतवणिज्जकलसहिंगुलयनिगररूवाइरेगरेह-

॥ १८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वप्न-फल कथनं,

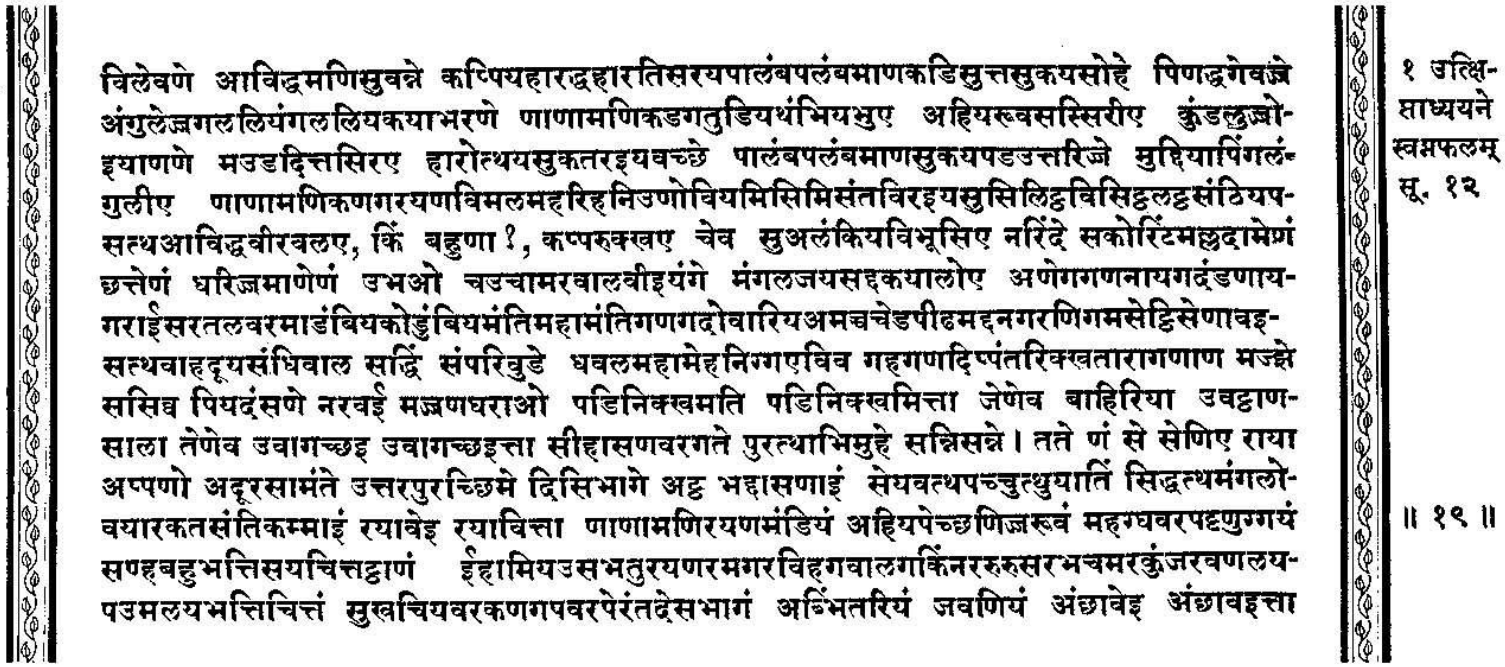
न्तसस्सिरीए दिवागरे अहकमेण उदिए तस्स दिण [कर] करपरपरावयारपारद्धंमि अंधयारे बालातवकुं-
कुमेण खइयव जीवलोए लोयणविसआणुआसविगसंतविसददंसियंमि लोए कमलागरसंडबोहए
उट्ठियंमि सूरे सहस्सरस्सिंमि दिणयरे तेयसा जलंते सयणिज्जाओ उट्ठेति २ जेणेव अट्टणसाला तेणेव
उवागच्छइ २ अट्टणसालं अणुपविसति २ अणेगवायामजोगवग्गणवामद्दणमल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते
सयपागेहिं सहस्सपागेहिं सुगंधवरतेल्लमादिएहिं पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मदणिज्जेहिं विंह-
णिज्जेहिं सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भंगएहिं अब्भंगिए समाणे तेल्लचम्मंसि पडिपुण्णपाणिपाय-
सुकुमालकोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणेहिं निउणसिप्पोवगतेहिं
जियपरिस्समेहिं अब्भंगणपरिमद्दणुव्वलणकरणगुणनिम्माएहिं अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसु-
हाए चउव्विहाए संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ पडि-
निक्खमइत्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता मज्जणघरं अणुपविसति अणुपविसित्ता
समंत (सुत्त) जालाभिरामे विचित्तमणिरयणकोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणिरयणभत्ति-
चित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसन्ने सुहोदगेहिं पुप्फोदएहिं गंधोदएहिं सुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणगप-
वरमज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हलसुकुमालगंध-
कासाईयलूहियंगे अहतसुमहग्घदूसरयणसुसंवुए सरससुरभिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते सुइमालावन्नग-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१२] + गाथा

दीप अनुक्रम [१५-१७]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ १९ ॥

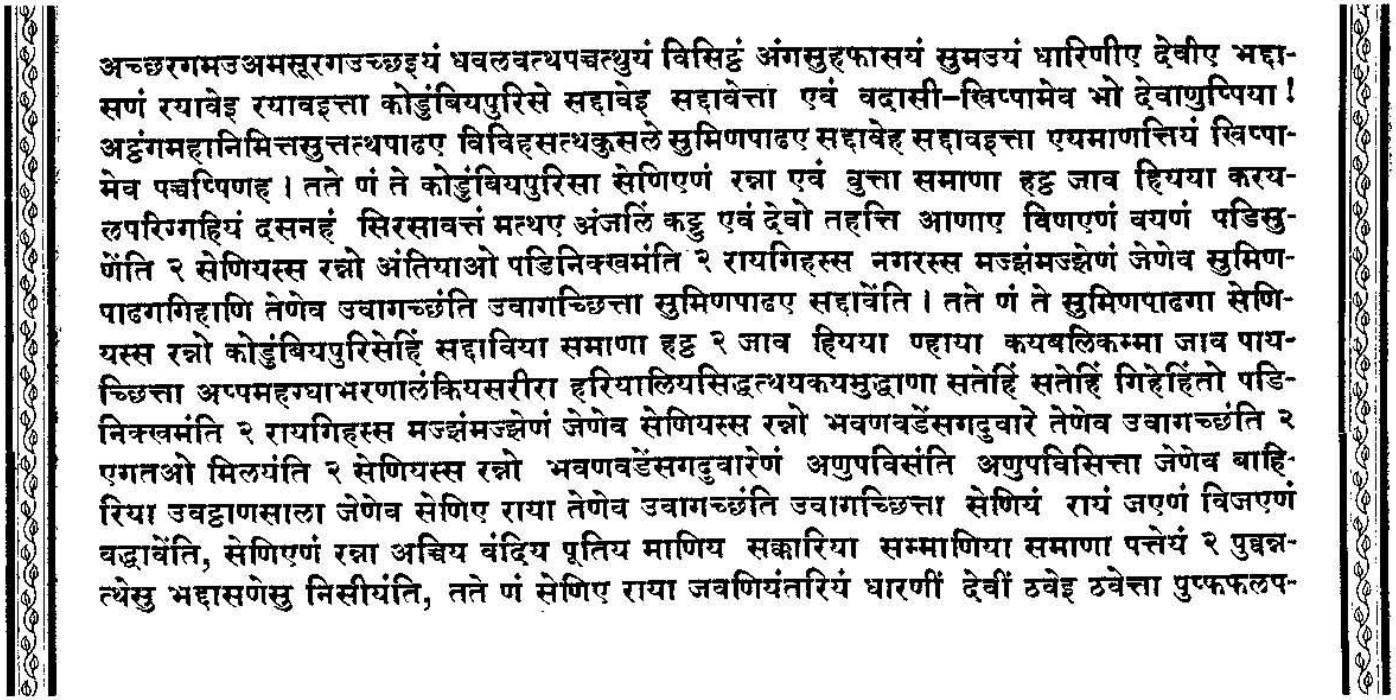
विलेवणे आविद्धमणिसुवन्ने कप्पियहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तसुकयसोहे पिणद्धगेवज्जे अंगुलेज्जगललियंगललियकयाभरणे णाणामणिकडगतुडियथंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलुज्जो-इयाणणे मउडदित्तसिरए हारोत्थयसुकतरइयवच्छे पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे मुद्दियापिंगलंगुलीए णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए, किं बहुणा?, कप्परुक्खए चेव सुअलंकियविभूसिए नरिंदे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उभओ चउचामरवालवीइयंगे मंगलजयसद्दकयालोए अणेगगणनायगदंडणायगराईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दनगरणिगमसेट्ठिसेणावइसत्थवाहदूयसंधिवाल सद्धिं संपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गएविव गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने। तते णं से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामंते उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थुयाइं सिद्धत्थमंगलोवयारकतसंतिकम्माइं रयावेइ रयावित्ता णाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जरूवं महग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हबहुभत्तिसयचित्तट्ठाणं ईहामियउसभतुरयणरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं सुखचियवरकणगपवरपेरंतदेसभागं अब्भितरियं जवणियं अंछावेइ अंछावइत्ता

१ उत्क्षिप्तज्ञाध्ययने स्वप्नफलम् सू. १२

॥ १९ ॥

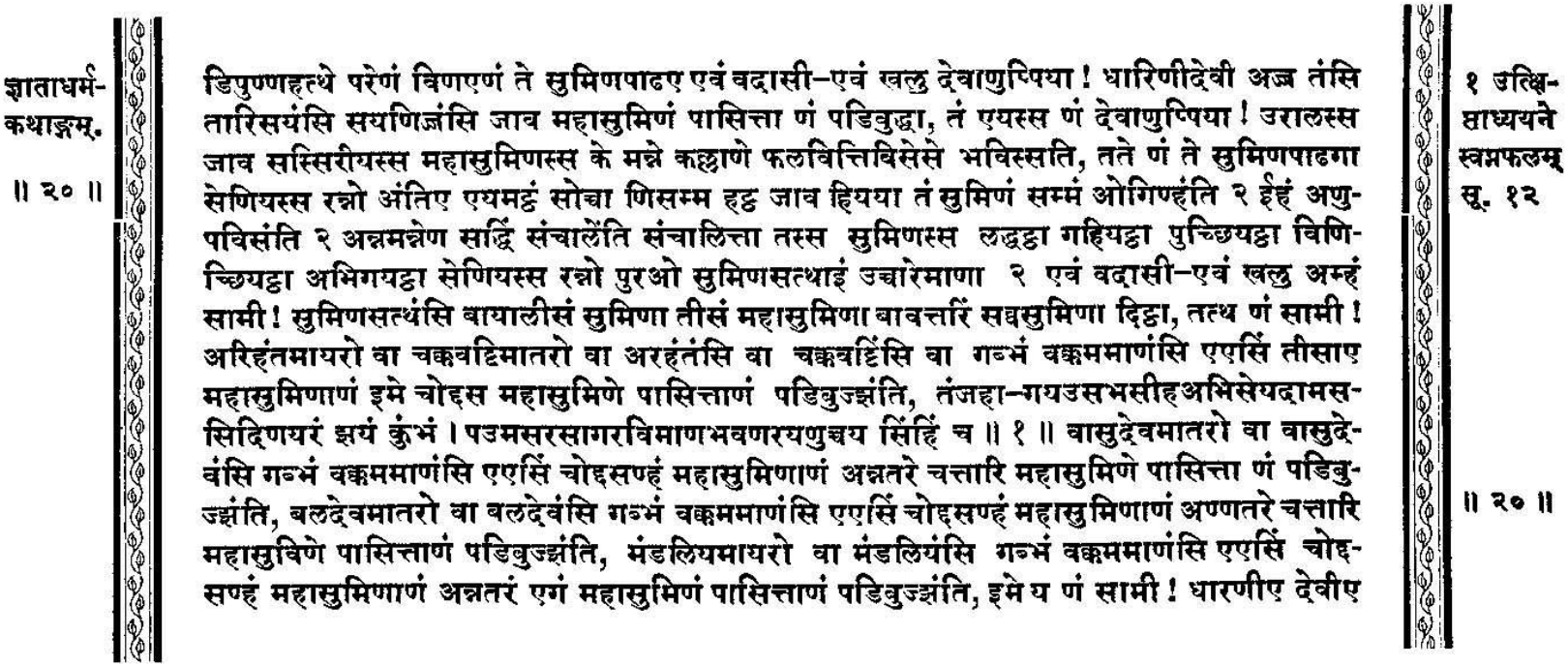
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वप्न-फल कथनं



अच्छरगमउअमसूरगउच्छइयं धवलवत्थपच्चत्थुयं विसिट्ठं अंगसुहफासयं सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ रयावइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थपाढए विविहसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेह सद्दावइत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति २ सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति। तते णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ २ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हरियालियसिद्धत्थयकयमुद्धाणा सतेहिं सतेहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति २ रायगिहस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसगदुवारे तेणेव उवागच्छंति २ एगतओ मिलयंति २ सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसगदुवारेणं अणुपविसंति अणुपविसित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, सेणिएणं रन्ना अच्चिय वंदिय पूतिय माणिय सक्कारिया सम्माणिया समाणा पत्तेयं २ पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति, तते णं सेणिए राया जवणियंतरियं धारणीं देवीं ठवेइ ठवेत्ता पुप्फफलप-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ २० ॥

डिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! धारिणीदेवी अज्ज तंसि तारिसयंसि सयणिज्जंसि जाव महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा, तं एयस्स णं देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति, ततेणं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया तं सुमिणं सम्मं ओगिण्हंति २ ईहं अणुपविसंति २ अन्नमन्नेण सद्धिं संचालेंति संचालित्ता तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रन्नो पुरओ सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा २ एवं वदासी–एवं खलु अम्हं सामी ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा, तत्थ णं सामी ! अरिहंतमायरो वा चक्कवट्टिमातरो वा अरहंतंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुमिणाणं इमे चोद्दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, तंजहा–गयउसभसीहअभिसेयदामससिदिणयरं झयं कुंभं । पउमसरसागरविमाणभवणरयणुच्चय सिहिं च ॥ १ ॥ वासुदेवमातरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नतरे चत्तारि महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, बलदेवमातरो वा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अण्णतरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति, मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अन्नतरं एगं महासुमिणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति, इमे य णं सामी ! धारणीए देवीए

१ उत्थि-साध्ययने स्वप्नफलम् सू. १२

॥ २० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वप्न-फल कथनं

एगे महासुमिणे दिट्ठे, तं उराले णं सामी! धारणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगल्लकारए णं सामी! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, अत्थलाभो सामी! सोक्खलाभो सामी! भोगलाभो सामी! पुत्तलाभो, रज्जलाभो एवं खलु सामी! धारिणीदेवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव दारगं पयाहिसि, सेवि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविउलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सइ अणगारे वा भावियप्पा, तं उराले णं सामी! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, जाव आरोग्गतुट्ठिजावदिट्ठेत्तिकट्टु भुज्जो २ अणुबूहेंति। तते णं सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियए करयल जाव एवं वदासी–एवमेयं देवाणुप्पिया! जाव जन्नं तुब्भे वदहत्तिकट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति २ ते सुमिणपाढए विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेंति सम्माणेति २ विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति २ पडिविसज्जेइ। तते णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता धारिणीदेवीं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिए! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा जाव एगं महासुमिणं जाव भुज्जो २ अणुबूहति, तते णं धारिणीदेवी सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म हट्ठ जाव हियया तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति २ जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छति २ ण्हाया कयबलिकम्मा जाव विपुलाहिं जाव विहरति (सूत्रं १२)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१२] + गाथा

दीप अनुक्रम [१५-१७]

'पच्चूसे'त्यादि प्रत्यूषकाललक्षणो यः समयः–अवसरः स तथा तत्र कौटुम्बिकपुरुषान्–आदेशकारिणः 'सद्दावेइ'त्ति शब्दं करोति शब्दयति 'उपस्थानशालां' आस्थानमण्डपं 'गन्धोदकेने'त्यादि गन्धोदकेन सिक्ता शुचिका–पवित्रा संमार्जिता कचवरापनयनेन उपलिप्ता छगणादिना या सा तथा तां, इदं च विशेषणं गन्धोदकसिक्तसंमार्जितोपलिप्तशुचिकामित्येवं द्रष्टव्यं, सिक्ताद्यनन्तरभावित्वाच्छुचिकत्वस्य, तथा पञ्चवर्णः सरसः सुरभिश्च मुक्तः–क्षिप्तः पुष्पपुञ्जलक्षणो यः उपचारः–पूजा तेन कलिता या सा तथा तां, 'काले'त्यादि पूर्ववत्, 'आणत्तियं पच्चप्पिणह'त्ति आज्ञप्तिम्–आदेशं प्रत्यर्पयत–कृतां सतीं निवेदयत, 'कल्ल'मित्यादि 'कल्ल'मिति श्वः प्रादुः–प्राकाश्ये ततः प्रकाशप्रभातायां रजन्यां 'फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलितं' फुल्लं–विकसितं तच्च तदुत्पलं च–पद्मं फुल्लोत्पलं तच्च कमलश्च–हरिणविशेषः फुल्लोत्पलकमलौ तयोः कोमलम्–अकठोरमुन्मीलितं–दलानां नयनयोश्चोन्मीलनं यस्मिंस्तत्तथा तस्मिन्, अथ रजनीविभातानन्तरं पाण्डुरे–शुक्ले प्रभाते–उषसि 'रत्तासोगे'त्यादि रक्ताशोकस्य प्रकाशः–प्रभा स च किंशुकं च–पलाशपुष्पं शुकमुखं च गुञ्जा–फलविशेषो रक्तकृष्णस्तदर्धं बंधुजीवकं च–बन्धूकं पारापतः–पक्षिविशेषः तच्चलननयने च परभृतः–कोकिलः तस्य सुरक्तं लोचनं च 'जासुमिण'इति जपा वनस्पतिविशेषः तस्याः कुसुमं च ज्वलितज्वलनश्च तपनीयकलशश्च हिङ्गुलको–वर्णकविशेषस्तन्निकरश्च–राशिरिति द्वन्द्वः, तत एतेषां यद्रूपं ततोऽतिरेकेण–आधिक्येन 'रेहंत'त्ति शोभमाना सा स्वकीया श्रीः–वर्णलक्ष्मीर्यस्य स तथा तस्मिन्, 'दिवाकरे' आदित्ये अथ–अनन्तरं क्रमेण–रजनीक्षयपाण्डुरप्रभातकरणलक्षणेन 'उदिते' उद्गते 'तस्स दिण[कर]करपरंपराक्यारपारद्धंमि अंधकारे'त्ति तस्य–दिवाकरस्य दिने–दिवसे अधिकरणभूते दिनाय वा यः करपरम्परायाः–किरणप्रवाहस्यावतारः–

॥ २१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वप्न-फल कथनं

अवतरणं तेन प्रारब्धम्–आरब्धमभिभवितुमिति गम्यते अपराद्धं वा–विनाशितं दिनकरपरम्परावतारप्रारब्धं तस्मिन् सति, इह च तस्येति सापेक्षत्वेऽपि समासः, तथा दर्शनादन्धकारे–तमसि तथा बालातप एव कुङ्कुमं तेन खचिते इव जीवलोके सति, तथा लोचनविषयस्य–दृष्टिगोचरस्य योऽणुयासोक्ति–अनुकाशो विकाशः प्रसर इत्यर्थस्तेन विकसंश्चासौ वर्द्धमानो विशदश्च–स्पष्टः स चासौ दर्शितश्चेति लोचनविषयानुकाशविशददर्शितस्तस्मिन्, कस्मिन्नित्याह–लोके अयमभिप्रायः–अन्धकारस्य क्रमेण हानौ लोचनविषयविकाशः क्रमेणैव भवति स च विकसन्तं लोकं दर्शयत्येव, अंधकारसद्भावे दृष्टेरप्रसरणे लोकस्य संकीर्णस्येव प्रतिभासनादिति, तथा कमलाकरा–ह्रदादयस्तेषु षण्डानि–नलिनीषण्डानि तेषां बोधको यः तस्मिन् उत्थिते–उदयानन्तराव-स्थावाप्ते 'सूरे' आदित्ये किंभूते ?–सहस्ररश्मौ तथा 'दिनकरे' दिनकरणशीले तेजसा ज्वलति सतीति । 'अट्टणसाल'त्ति अट्टनशाला व्यायामशालेत्यर्थः, अनेकानि यानि व्यायामानि योग्या च–गुणनिका वल्गनं च–उल्ललनं व्यामर्दनं च–परस्परेण बाहा-युद्धमोटनं मल्लयुद्धं च–प्रतीतं करणानि च–बाहुभङ्गविशेषा मल्लशास्त्रप्रसिद्धानि तैः श्रान्तः सामान्येन परिश्रान्तो अङ्गप्रत्यङ्गा-पेक्षया सर्वतः शतकृत्वो यत्पक्वं शतेन वा कार्षापणानां यत्पक्वं तच्छतपक्वमेवमितरदपि सुगन्धिवरतैलादिभिरभ्यंगैरिति योगः आदिशब्दात् घृतकर्पूरपानीयादिग्रहः किम्भूतैः ?–'प्रीणनीयैः' रसरुधिरादिधातुसमताकारिभिर्दीपनीयैः–अग्निजननैः दर्प-णीयैः–बलकरैः मदनीयैः–मन्मथवृंहणीयैर्मांसोपचयकारिभिः सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयैः अभ्यंगैः–स्नेहनैः अभ्यंगः क्रियते यस्य सोऽभ्यङ्गितः सन्, ततस्तैलचर्मणि–तैलाभ्यक्तस्य संबाधनाकरणाय यच्चर्म तत्तैलचर्म तस्मिन् संबाहिते 'समाणे'त्ति योगः, कैरित्याह ?–पुरुषैः, कथम्भूतैः ?–प्रतिपूर्णानां पाणिपादानां सुकुमालकोमलानि–अतिकोमलानि तलानि–अधोभागा येषां ते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१२] + गाथा

दीप अनुक्रम [१५-१७]

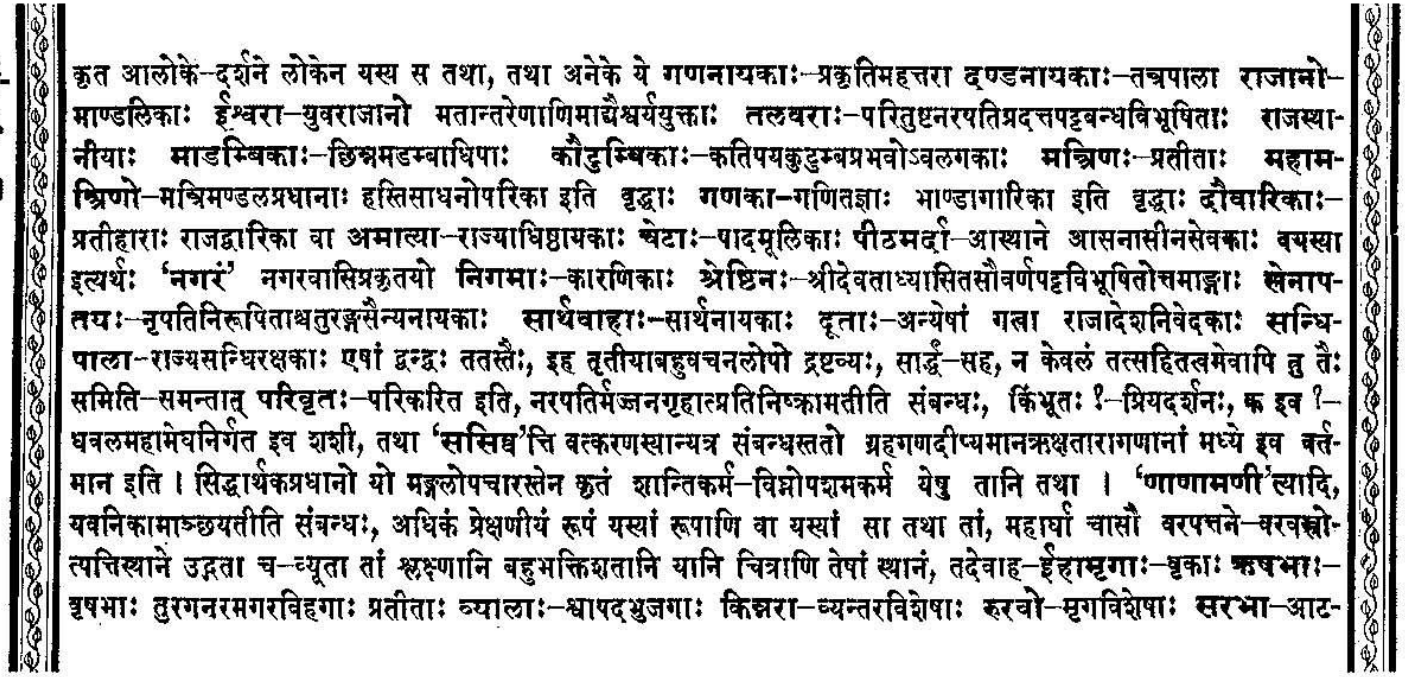
तथा तैः, छेकैः–अवसरज्ञैर्दिसप्ततिकलापण्डितैरिति च वृद्धाः, दक्षैः–कार्याणामविलम्बितकारिभिः प्रष्टैः–वाग्मिभिरिति वृद्धव्याख्या, अथवा प्रष्टैः–अग्रगामिभिः कुशलैः–साधुभिः संबाधनाकर्मणि मेधाविभिः–अपूर्वविज्ञानग्रहणशक्तिनिष्ठैः निपुणैः–क्रीडाकुशलैर्निपुणशिल्पोपगतैः–निपुणानि–सूक्ष्माणि यानि शिल्पानि–अङ्गमर्दनादीनि तान्युपगतानि–अधिगतानि यैस्ते तथा तैर्जितपरिश्रमैः, व्याख्यान्तरं तु छेकैः–प्रयोगज्ञैर्दक्षैः–शीघ्रकारिभिः 'पत्तट्ठेहिं'ति प्राप्तार्थैरधिकृतकर्मणि निष्ठां गतैः कुशलैः–आलोचितकारिभिः मेधाविभिः–सकृच्छ्रुतदृष्टकर्मज्ञैः निपुणैः–उपायारम्भिभिः निपुणशिल्पोपगतैः–सूक्ष्मशिल्पसमन्वितैरिति, अभ्यङ्गनपरिमर्दनोद्वलनानां करणे ये गुणास्तेषु निर्मातैः, अस्थां सुखहेतुत्वादस्थिसुखा तया 'संवाहनये'ति विश्रामणया अपगतपरिश्रमः 'समंतजालाभिरामे'त्ति समन्तात्–सर्वतो जालकैर्विच्छित्तिभिः छिद्रवद्बृहावयवविशेषैरभिरामो–रम्यो यः स्नानमण्डपः स तथा, पाठान्तरे 'समत्तजालाभिरामे'त्ति तत्र समस्तैर्जालकैरभिरामो यः स तथा, पाठान्तरेण 'समुत्तजालाभिरामे' सह मुक्ताजालैर्यो वर्ततेऽभिरामश्च स तथा तत्र, शुभोदकैः–पवित्रस्थानाहृतैः गन्धोदकैः–श्रीखण्डादिमिश्रैः पुष्पोदकैः–पुष्परसमिश्रैः शुद्धोदकैश्च स्वाभाविकैः, कथं मज्जित इत्याह–'तत्र' स्नानावसरे यानि कौतुकशतानि रक्षादीनि तैः 'पक्ष्मले'त्यादि पक्ष्मला–पक्ष्मवती अत एव सुकुमाला गन्धप्रधाना काषायिका–कषायरक्ता शाटिका तया लूषितमङ्गं यस्य स तथा, अहतं–मलमूषिकादिभिरनुपद्रुतं प्रत्यग्रमित्यर्थः, सुमहार्घं दूष्यरत्नं–प्रधानवस्त्रं तेन सुसंवृतः–परिगतस्तद्वा सुष्ठु संवृतं–परिहितं येन स तथा, शुचिनी–पवित्रे माला च–पुष्पमाला वर्णकविलेपनं च–मण्डनकारि कुङ्कुमादि विलेपनं यस्य स तथा, आविद्धानि–परिहितानि मणिसुवर्णानि येन स तथा, कल्पितो–विन्यस्तो हारः–अष्टादशसरिकः अर्द्धहारो–नवसरिकः त्रिसरिकं च–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वप्न-फल कथनं

प्रतीतमेव यस्य स तथा, प्रालम्बो–झुम्बनकं प्रलम्बमानो यस्य स तथा, कटिसूत्रेण–कट्याभरणविशेषेण सुष्ठु कृता शोभा यस्य स तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः, अथवा कल्पितहारादिभिः सुकृता शोभा यस्य स तथा, तथा पिनद्धानि–परिहितानि ग्रैवेयकाङ्गुलीयकानि येन स तथा, तथा ललिताङ्गके अन्यान्यपि ललितानि कृतानि–न्यस्तानि आभरणानि यस्य स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, तथा नानामणीनां कटकत्रुटिकैः–हस्तबाह्वाभरणविशेषैर्बहुत्वात् स्तम्भितावित्र स्तम्भितौ भुजौ यस्य स तथा, अधिकरूपेण सश्रीकः–सशोभो यः स तथा, कुण्डलोद्योतिताननः मुकुटदीप्तशिरस्कः हारेणावस्तृतम्–आच्छादितं तेनैव सुष्ठु कृतरतिकं वक्षः–उरो यस्यासौ हारावस्तृतसुकृतरतिकवक्षाः, मुद्रिकापिङ्गलाङ्गुलीकः–मुद्रिका–अङ्गुल्याभरणानि ताभिः पिङ्गलाः–कपिला अङ्गुलयो यस्य स तथा, प्रलम्बेन–दीर्घेण प्रलम्बमानेन च सुष्ठु कृतं पटेनोत्तरीयम्–उत्तरासङ्गो येन स तथा, नानामणि-कनकरत्नविमलानि महार्हाणि–महार्घाणि निपुणेन शिल्पिना 'उचिय'त्ति परिकर्मितानि 'मिसिमिसंत'त्ति दीप्यमानानि यानि विरचितानि–निर्मितानि सुश्लिष्टानि सुगन्धीनि विशिष्टानि–विशेषवन्त्यन्येभ्यो लष्टानि–मनोहराणि संस्थितानि प्रशस्तानि च आविद्धानि–परिहितानि वीरवलयानि येन स तथा, सुभटो हि यदि कश्चिदन्योऽप्यस्ति वीरव्रतधारी तदाऽसौ मां विजित्य मोचयत्वेतानि वलयानीति स्पर्द्धयन् यानि परिदधाति तानि वीरवलयानीत्युच्यन्ते, किं बहुना ?, वर्णितेनेति शेषः, कल्पवृक्ष इव सुष्ठु अलङ्कृतो विभूषितश्च फलपुष्पादिभिः कल्पवृक्षो राजा तु मुकुटादिभिरलङ्कृतो विभूषितस्तु वस्त्रादिभिरिति, सह कोरण्टकप्र-धानैर्माल्यदामभिर्यच्छत्रं तेन ध्रियमाणेन, कोरण्टकः–पुष्पजातिः, तत्पुष्पाणि मालान्तेषु शोभार्थं दीयन्ते, मालायै हितानि–माल्यानि–पुष्पाणि दामानि–माला इति, चतुर्णां चामराणां प्रकीर्णकानां वालैर्वीजितमङ्गं यस्येति वाक्यं, मङ्गलभूतो जयशब्दः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ २३ ॥

कृत आलोके–दर्शने लोकेन यस्य स तथा, तथा अनेके ये गणनायकाः–प्रकृतिमहत्तरा दण्डनायकाः–तत्रपाला राजानो–माण्डलिकाः ईश्वरा–युवराजानो मतान्तरेणाणिमाद्यैश्वर्ययुक्ताः तलवराः–परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषिताः राजस्था-नीयाः माडम्बिकाः–छिन्नमडम्बाधिपाः कौटुम्बिकाः–कतिपयकुटुम्बप्रभवोऽवलगकाः मन्त्रिणः–प्रतीताः महाम-न्त्रिणो–मन्त्रिमण्डलप्रधानाः हस्तिसाधनोपरिका इति वृद्धाः गणका–गणितज्ञाः भाण्डागारिका इति वृद्धाः दौवारिकाः–प्रतीहाराः राजद्वारिका वा अमात्या–राज्याधिष्ठायकाः चेटाः–पादमूलिकाः पीठमर्दा–आस्थाने आसनासीनसेवकाः वयस्या इत्यर्थः 'नगरं' नगरवासिप्रकृतयो निगमाः–कारणिकाः श्रेष्ठिनः–श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गाः सेनाप-तयः–नृपतिनिरूपिताश्चतुरङ्गसैन्यनायकाः सार्थवाहाः–सार्थनायकाः दूताः–अन्येषां गत्वा राजादेशनिवेदकाः सन्धि-पाला–राज्यसन्धिरक्षकाः एषां द्वन्द्वः ततस्तैः, इह तृतीयाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः, सार्द्धं–सह, न केवलं तत्सहितत्वमेवापि तु तैः समिति–समन्तात् परिवृतः–परिकरित इति, नरपतिर्मज्जनगृहात्प्रतिनिष्क्रामतीति संबन्धः, किंभूतः ?–प्रियदर्शनः, क इव ?–धवलमहामेघनिर्गत इव शशी, तथा 'ससिव्व'त्ति वत्करणस्यान्यत्र संबन्धस्ततो ग्रहगणदीप्यमानऋक्षतारागणानां मध्ये इव वर्त-मान इति । सिद्धार्थकप्रधानो यो मङ्गलोपचारस्तेन कृतं शान्तिकर्म–विघ्नोपशमकर्म येषु तानि तथा । 'णाणामणी'त्यादि, यवनिकामाच्छयतीति संबन्धः, अधिकं प्रेक्षणीयं रूपं यस्यां रूपाणि वा यस्यां सा तथा तां, महार्घा चासौ वरपत्तने–वरबन्दो-त्पत्तिस्थाने उद्गता च–च्यूता तां श्लक्ष्णानि बहुभक्तिशतानि यानि चित्राणि तेषां स्थानं, तदेवाह–ईहामृगाः–वृकाः ऋषभाः–वृषभाः तुरगनरमगरविहगाः प्रतीताः व्यालाः–श्वापदभुजगाः किन्नरा–व्यन्तरविशेषाः रुरवो–मृगविशेषाः सरभा–आट-

१ उत्क्षि-प्तज्ञाध्ययने स्वप्नफलम् सू. १२

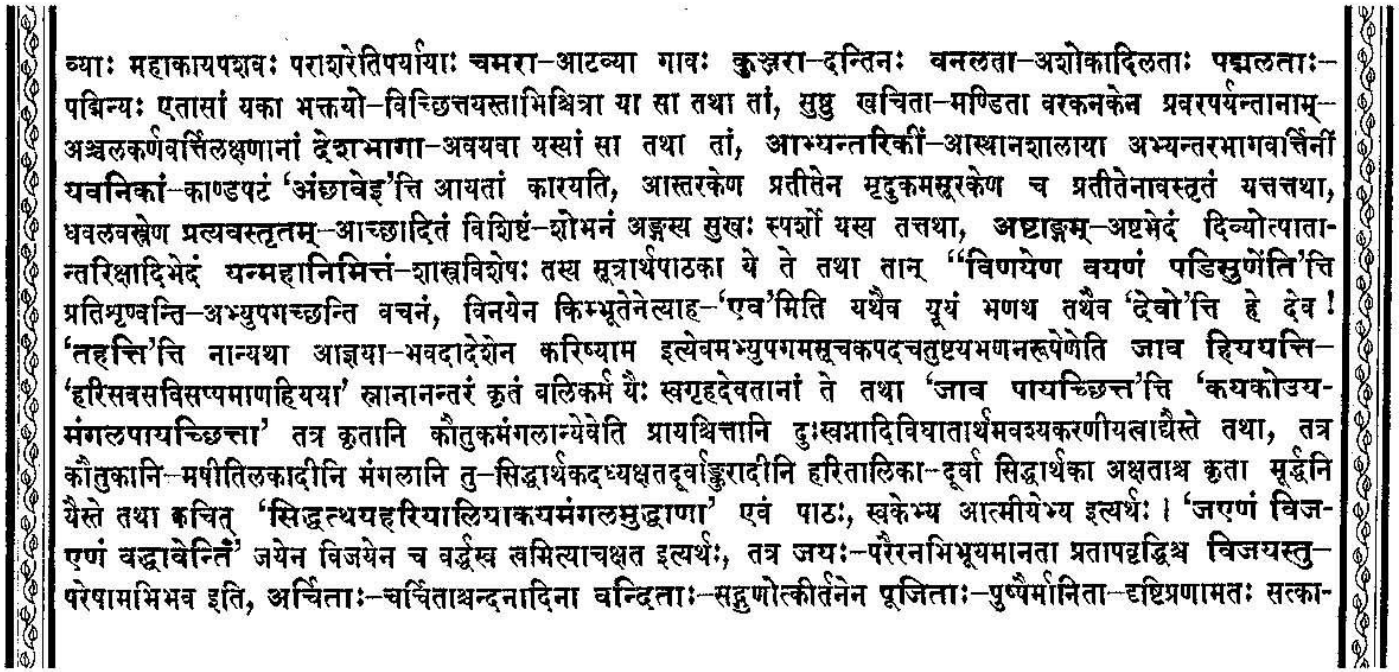
॥ २३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वप्न-फल कथनं

प्रत सूत्रांक [१२] + गाथा

दीप अनुक्रम [१५-१७]



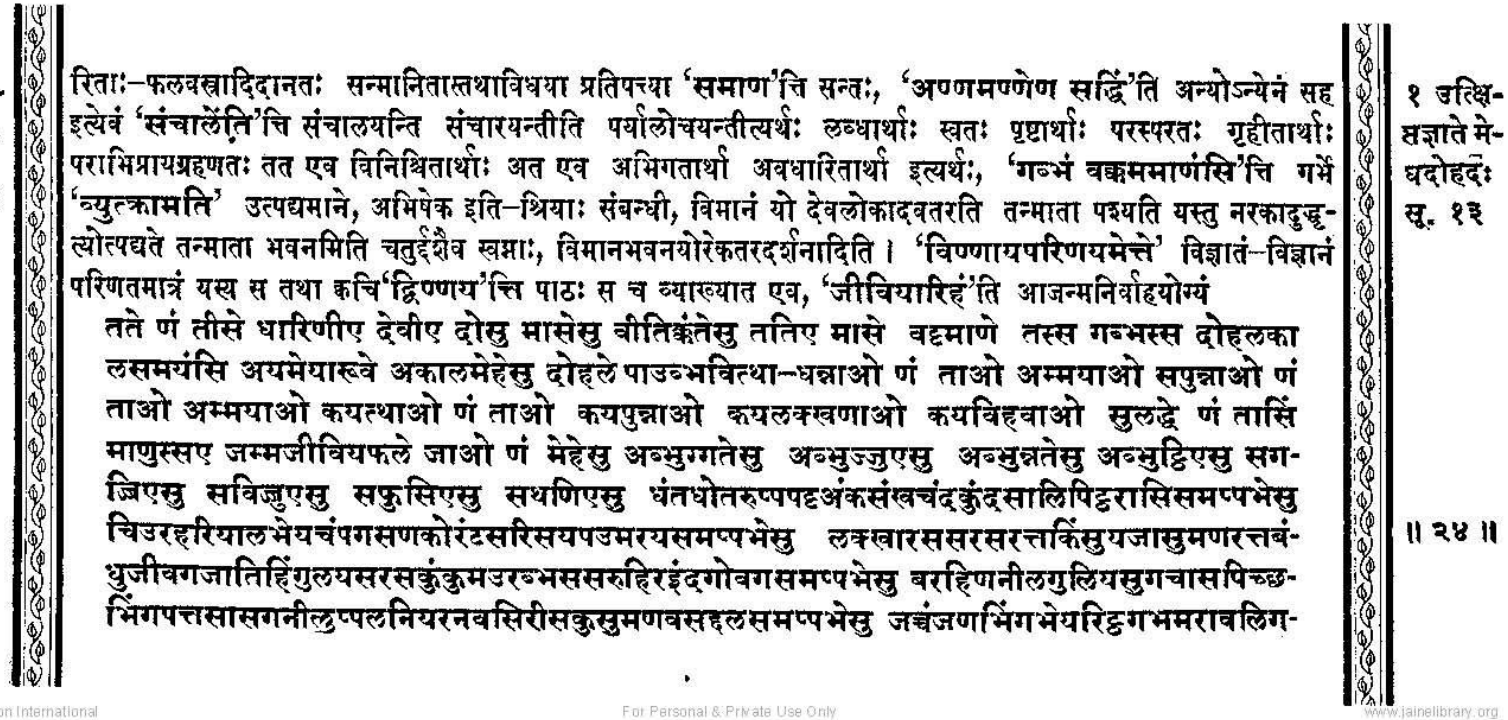
व्याः महाकायपशवः पराशरेतिपर्यायाः **चमरा**–आटव्या गावः **कुञ्जरा**–दन्तिनः **वनलता**–अशोकादिलताः **पद्मलताः**–पद्मिन्यः एतासां यका भक्तयो–विच्छित्तयस्ताभिश्चित्रा या सा तथा तां, सुष्ठु खचिता–मण्डिता वरकनकेन प्रवरपर्यन्तानाम्–अञ्चलकर्णवर्त्तिलक्षणानां **देशभागा**–अवयवा यस्यां सा तथा तां, **आभ्यन्तरिकीं**–आस्थानशालाया अभ्यन्तरभागवर्त्तिनीं **यवनिकां**–काण्डपटं 'अंछावेइ'त्ति आयतां कारयति, आस्तरकेण प्रतीतेन मृदुकमसूरकेण च प्रतीतेनावस्तृतं यत्तत्तथा, धवलवस्त्रेण **प्रत्यवस्तृतम्**–आच्छादितं विशिष्टं–शोभनं अङ्गस्य सुखः स्पर्शो यस्य तत्तथा, **अष्टाङ्गम्**–अष्टभेदं दिव्योत्पातान्तरिक्षादिभेदं **यन्महानिमित्तं**–शास्त्रविशेषः तस्य सूत्रार्थपाठका ये ते तथा तान् **"विणयेण वयणं पडिसुणेंति"**त्ति प्रतिशृण्वन्ति–अभ्युपगच्छन्ति वचनं, विनयेन किम्भूतेनेत्याह–'एव'मिति यथैव यूयं भणथ तथैव 'देवो'त्ति हे देव! 'तहत्ति'त्ति नान्यथा आज्ञया–भवदादेशेन करिष्याम इत्येवमभ्युपगमसूचकपदचतुष्टयभणनरूपेणेति **जाव हियएहिं**–'हरिसवसविसप्पमाणहियया' स्नानानन्तरं कृतं बलिकर्म यैः स्वगृहदेवतानां ते तथा **'जाव पायच्छित्त'**त्ति **'कयकोउय-मंगलपायच्छित्ता'** तत्र कृतानि कौतुकमंगलान्येवेति प्रायश्चित्तानि दुःस्वप्नादिविघातार्थमवश्यकरणीयत्वाद्यैस्ते तथा, तत्र कौतुकानि–मषीतिलकादीनि मंगलानि तु–सिद्धार्थकदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि हरितालिका–दूर्वा सिद्धार्थका अक्षताश्च कृता मूर्द्धनि यैस्ते तथा क्वचित् **'सिद्धत्थयहरियालियाकयमंगलमुद्धाणा'** एवं पाठः, स्वकेभ्य आत्मीयेभ्य इत्यर्थः। **'जएणं विजएणं वद्धावेन्तिं'** जयेन विजयेन च वर्द्धस्व त्वमित्याचक्षत इत्यर्थः, तत्र जयः–परैरनभिभूयमानता प्रतापवृद्धिश्च विजयस्तु–परेषामभिभव इति, **अर्चिताः**–चर्चिताश्चन्दनादिना **वन्दिताः**–सद्गुणोत्कीर्तनेन **पूजिताः**–पुष्पैर्मानिता–दृष्टिप्रणामतः सत्का-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वप्न-फल कथनं

प्रत सूत्रांक [१२] + गाथा

दीप अनुक्रम [१५-१७]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ २४ ॥

रिताः–फलवस्त्रादिदानतः सन्मानितास्तथाविधया प्रतिपत्त्या 'समाण'त्ति सन्तः, 'अण्णमण्णेण सद्धिं'ति अन्योऽन्येन सह इत्येवं 'संचालेंति'त्ति संचालयन्ति संचारयन्तीति पर्यालोचयन्तीत्यर्थः लब्धार्थाः स्वतः पृष्टार्थाः परस्परतः गृहीतार्थाः पराभिप्रायग्रहणतः तत एव विनिश्चितार्थाः अत एव अभिगतार्था अवधारितार्था इत्यर्थः, 'गब्भं वक्कममाणंसि'त्ति गर्भे 'व्युत्क्रामति' उत्पद्यमाने, अभिषेक इति–श्रियाः संबन्धी, विमानं यो देवलोकादवतरति तन्माता पश्यति यस्तु नरकादुद्वृत्योत्पद्यते तन्माता भवनमिति चतुर्दशैव स्वप्नाः, विमानभवनयोरेकतरदर्शनादिति। 'विण्णायपरिणयमेत्ते' विज्ञातं–विज्ञानं परिणतमात्रं यस्य स तथा क्वचि'द्विण्णय'त्ति पाठः स च व्याख्यात एव, 'जीवियारिहं'ति आजन्मनिर्वाहयोग्यं

तते णं तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीतिक्कंतेसु ततिए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भवित्था–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ सपुन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ कयपुन्नाओ कयलक्खणाओ कयविहवाओ सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले जाओ णं मेहेसु अब्भुग्गतेसु अब्भुज्जुएसु अब्भुन्नतेसु अब्भुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जुएसु सफुसिएसु सथणिएसु धंतधोतरुप्पपट्टअंकसंखचंदकुंदसालिपिट्ठरासिसमप्पभेसु चिउरहरियालभेयचंपगसणकोरंटसरिसयपउमरयसमप्पभेसु लक्खारससरसरत्तकिंसुयजासुमणरत्तबंधुजीवगजातिहिंगुलयसरसकुंकुमउरब्भससरुहिरइंदगोवगसमप्पभेसु बरहिणनीलगुलियसुगचासपिच्छभिंगपत्तसासगनीलुप्पलनियरनवसिरीसकुसुमणवसद्दलसमप्पभेसु जच्चंजणभिंगभेयरिट्ठगभमरावलिग-

१ उत्क्षिप्तज्ञाते मेघदोहदः सू. १३

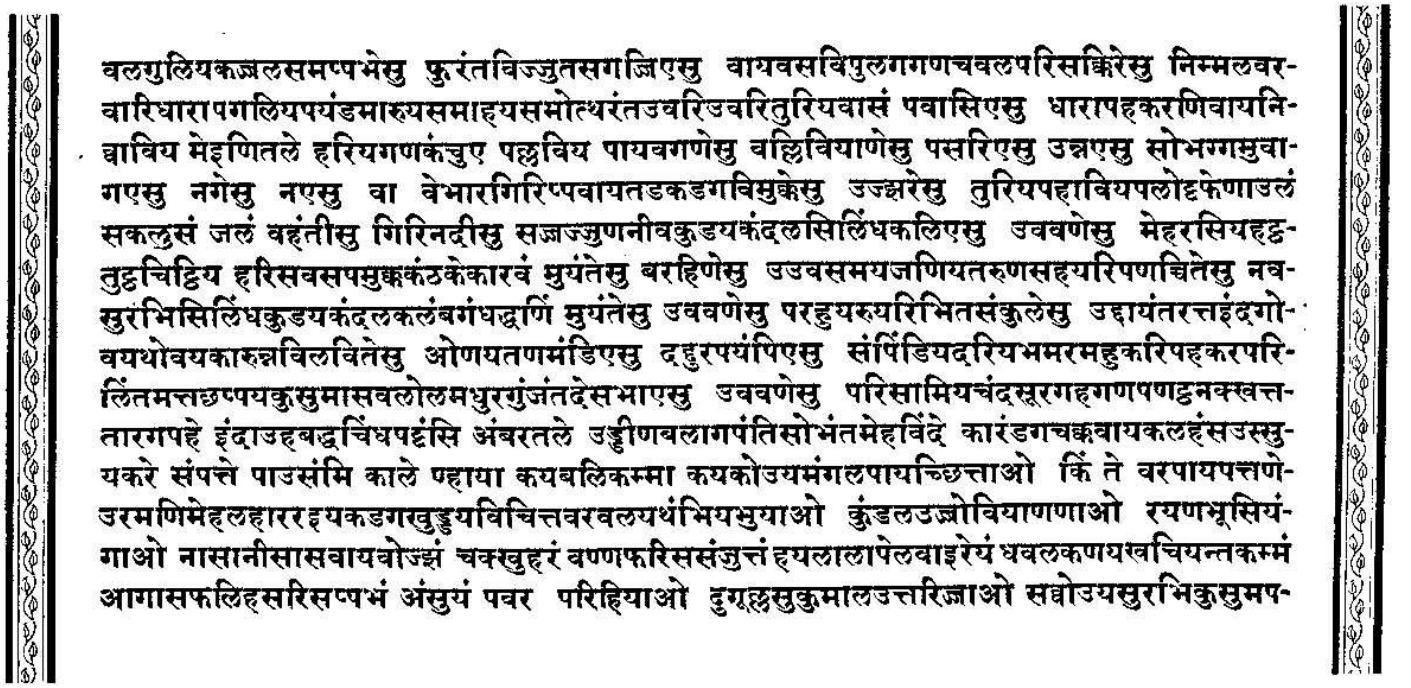
॥ २४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकाल मेघस्य दोहद (मनोरथ)

प्रत सूत्रांक [१३]

दीप अनुक्रम [१८]



वलगुलियकज्जलसमप्पभेसु फुरंतविज्जुतसगज्जिएसु वायवसविपुलगगणचवलपरिसक्किरेसु निम्मलवर-
वारिधारापगलियपयंडमारुयसमाहयसमोत्थरंतउवरिउवरितुरियवासं पवासिएसु धारापहकरणिवायनि-
वाविय मेइणितले हरियगणकंचुए पल्लविय पायवगणेसु वल्लिवियाणेसु पसरिएसु उन्नएसु सोभग्गमुवा-
गएसु नगेसु नएसु वा वेभारगिरिप्पवायतडकडगविमुक्केसु उज्झरेसु तुरियपहावियपलोट्टफेणाउलं
सकलुसं जलं वहंतीसु गिरिनदीसु सज्जज्जुणनीवकुडयकंदलसिलिंधकलिएसु उववणेसु मेहरसियहट्ठ-
तुट्ठचिट्ठिय हरिसवसपमुक्ककंठकेकारवं मुयंतेसु बरहिणेसु उउवसमयजणियतरुणसहयरिपणच्चितेसु नव-
सुरभिसिलिंधकुडयकंदलकलंबगंधद्धणिं मुयंतेसु उववणेसु परहुयरुयरिभितसंकुलेसु उद्दायंतरत्तइंदगो-
वयथोवयकारुन्नविलवितेसु ओणयतणमंडिएसु दद्दुरपयंपिएसु संपिंडियदरियभमरमहुकरिपहकरपरि-
लिंतमत्तछप्पयकुसुमासवलोलमधुरगुंजंतदेसभाएसु उववणेसु परिसामियचंदसूरगहगणपणट्ठनक्खत्त-
तारगपहे इंदाउहबद्धचिंधपट्टंसि अंबरतले उड्डीणबलागपंतिसोभंतमेहविंदे कारंडगचक्कवायकलहंसउस्सु-
यकरे संपत्ते पाउसंमि काले ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ताओ किं ते वरपायपत्तणे-
उरमणिमेहलहाररइयकडगखुड्डयविचित्तवरवलयथंभियभुयाओ कुंडलउज्जोवियाणणाओ रयणभूसियगा-
गाओ नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिससंजुत्तं हयलालापेलवाइरेयं धवलकणयखचियन्तकम्मं
आगासफलिहसरिसप्पभं अंसुयं पवर परिहियाओ दुगूल्लसुकुमालउत्तरिज्जाओ सव्वोउयसुरभिकुसुमप-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकाल मेघस्य दोहद (मनोरथ)

प्रत सूत्रांक [१३]

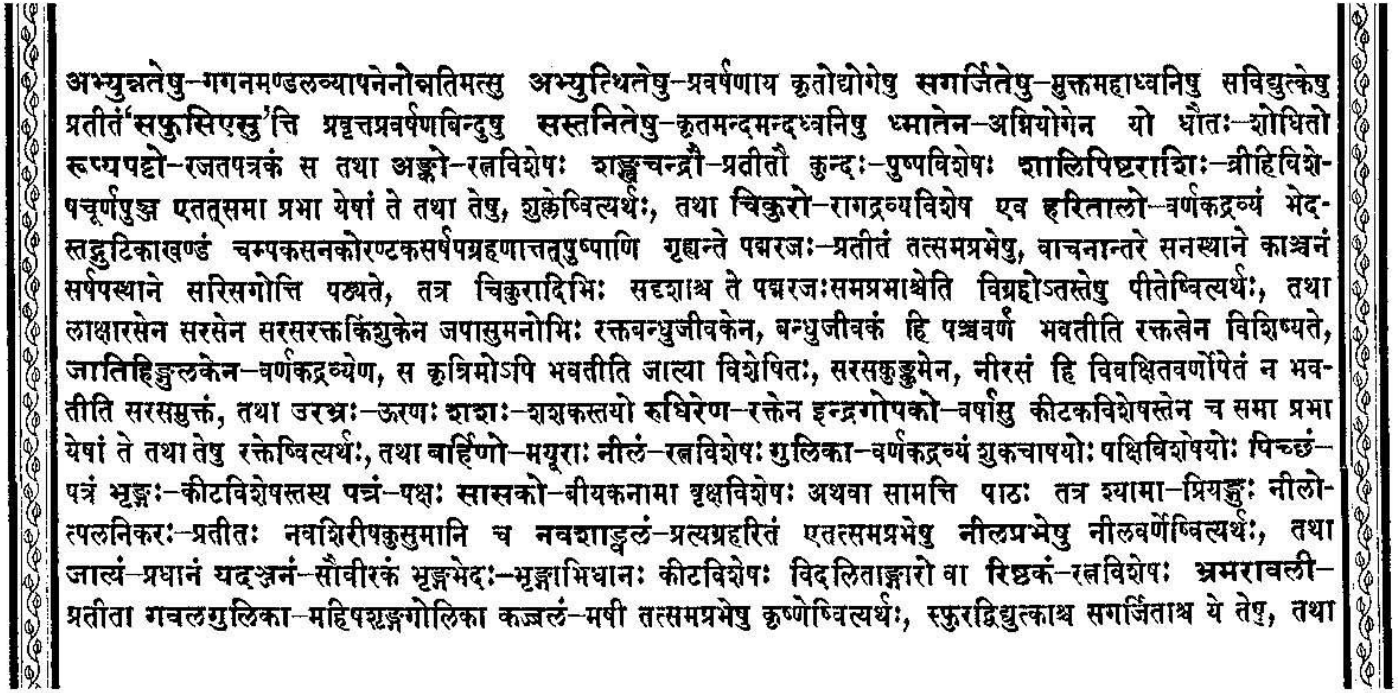
दीप अनुक्रम [१८]

वरमल्लसोभितसिराओ कालागरूधूवधूवियाओ सिरिसमाणवेसाओ सेयणयगंधहत्थिरयणं दुरूढाओ समाणीओ सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडसंखकुंददगरयअमय-महियफेणपुंजसन्निगासचउचामरवालवीजितंगीओ सेणिएणं रन्ना सद्धिं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चाउरंगिणीए सेणाए महता हयाणीएणं गयाणिएणं रहाणिएणं पायत्ताणीएणं सव्वड्ढीए सव्वज्जुइए जाव निग्घोसणादियरवेणं रायगिहं नगरं सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु आसित्तसित्तसुचियसंमज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टीभूयं अवलोएमाणीओ नागरजणेणं अभिणंदिज्जमाणीओ गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडगपायमूलं सव्वओ समंता आहिंडेमाणीओ २ दोहलं विणियंति, तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुवगएसु जाव दोहलं विणिज्जामि (सूत्रं १३)

'दोहलो पाउब्भवित्थ'त्ति दोहदो–मनोरथः प्रादुर्भूतवान्, तथाहि–धनं लब्धारो धन्यास्ता या अकालमेघदोहदं विनयन्तीति योगः 'अम्मयाओ'त्ति अम्बाः पुत्रमातरः, स्त्रिय इत्यर्थः, संपूर्णाः–परिपूर्णाः आदेयवस्तुभिः (सपुण्याः) कृतार्थाः–कृतप्रयोजनाः कृतपुण्याः–जन्मान्तरोपात्तसुकृताः कृतलक्षणाः–कृतफलवच्छरीरलक्षणाः कृतविभवाः–कृतसफलसंपदः सुलब्धं तासां मानुष्यकं–मनुष्यसंबन्धि जन्मनि–भवे जीवितफलं–जीवितव्यप्रयोजनं जन्मजीवितफलं, सापेक्षत्वेऽपि च समासः छान्दसत्वात्, या मेघेषु अभ्युद्गतेषु–अङ्कुरवदुत्पन्नेषु सत्सु, एवं सर्वत्र सप्तमी योज्या, अभ्युद्यतेषु–वर्द्धितुं प्रवृत्तेषु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकाल मेघस्य दोहद (मनोरथ)



अभ्युन्नतेषु–गगनमण्डलव्यापनेनोन्नतिमत्सु अभ्युत्थितेषु–प्रवर्षणाय कृतोद्योगेषु सगर्जितेषु–मुक्तमहाध्वनिषु सविद्युत्केषु प्रतीतं'सफुसिएसु'त्ति प्रवृत्तप्रवर्षणबिन्दुषु सस्तनितेषु–कृतमन्दमन्दध्वनिषु ध्मातेन–अग्नियोगेन यो धौतः–शोधितो रूप्यपट्टो–रजतपत्रकं स तथा अङ्को–रत्नविशेषः शङ्खचन्द्रौ–प्रतीतौ कुन्दः–पुष्पविशेषः शालिपिष्टराशिः–व्रीहिविशेषचूर्णपुञ्ज एतत्समा प्रभा येषां ते तथा तेषु, शुक्लेष्वित्यर्थः, तथा चिकुरो–रागद्रव्यविशेष एव हरितालो–वर्णकद्रव्यं भेदस्तद्गुटिकाखण्डं चम्पकसनकोरण्टकसर्षपग्रहणात्तत्पुष्पाणि गृह्यन्ते पद्मरजः–प्रतीतं तत्समप्रभेषु, वाचनान्तरे सनस्थाने काञ्चनं सर्षपस्थाने सरिसगोत्ति पठ्यते, तत्र चिकुरादिभिः सदृशाश्च ते पद्मरजःसमप्रभाश्चेति विग्रहोऽतस्तेषु पीतेष्वित्यर्थः, तथा लाक्षारसेन सरसेन सरसरक्तकिंशुकेन जपासुमनोभिः रक्तबन्धुजीवकेन, बन्धुजीवकं हि पञ्चवर्णं भवतीति रक्तत्वेन विशिष्यते, जातिहिङ्गुलकेन–वर्णकद्रव्येण, स कृत्रिमोऽपि भवतीति जात्या विशेषितः, सरसकुङ्कुमेन, नीरसं हि विवक्षितवर्णोपेतं न भवतीति सरसमुक्तं, तथा उरभ्रः–ऊरणः शशः–शशकस्तयो रुधिरेण–रक्तेन इन्द्रगोपको–वर्षासु कीटकविशेषस्तेन च समा प्रभा येषां ते तथा तेषु रक्तेष्वित्यर्थः, तथा बर्हिणो–मयूराः नीलं–रत्नविशेषः गुलिका–वर्णकद्रव्यं शुकचाषयोः पक्षिविशेषयोः पिच्छं–पत्रं भृङ्गः–कीटविशेषस्तस्य पत्रं–पक्षः सासको–बीयकनामा वृक्षविशेषः अथवा सामत्ति पाठः तत्र श्यामा–प्रियङ्गुः नीलोत्पलनिकरः–प्रतीतः नवशिरीषकुसुमानि च नवशाद्वलं–प्रत्यग्रहरितं एतत्समप्रभेषु नीलप्रभेषु नीलवर्णेष्वित्यर्थः, तथा जात्यं–प्रधानं यदञ्जनं–सौवीरकं भृङ्गभेदः–भृङ्गाभिधानः कीटविशेषः विदलिताङ्गारो वा रिष्टकं–रत्नविशेषः भ्रमरावली–प्रतीता गवलगुलिका–महिषशृङ्गगोलिका कज्जलं–मषी तत्समप्रभेषु कृष्णेष्वित्यर्थः, स्फुरद्विद्युत्काश्च सगर्जिताश्च ये तेषु, तथा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१३]

दीप अनुक्रम [१८]

वातवशेन विपुले गगने चपलं यथा भवत्येवं 'परिसक्किरेसु'त्ति परिष्वष्कितुं शीलं येषां ते तथा तेषु, तथा निर्मलवरवारिधाराभिः प्रगलितः–क्षरितः प्रचण्डमारुतसमाहतः सन् 'समोत्थरंत'त्ति समवस्तृणंश्च–महीपीठमाक्रामन् उपर्युपरि च सातत्येन त्वरितश्च–शीघ्रो यो वर्षो–जलसमूहः स तथा तं प्रवृष्टेषु–वर्षितुमारब्धेषु मेघेष्विति प्रक्रमः, धाराणां 'पहकरो'त्ति निकरस्तस्य निपातः–पतनं तेन निर्वापितं–शीतलीकृतं यत्तत्तथा तस्मिन्, निर्वापितशब्दाच्च सप्तम्येकवचनलोपो दृश्यः, कस्मिन्नित्याह–मेदिनीतले–भूतले, तथा हरितकानां–हस्वतृणानां यो गणः स एव कञ्चुको यत्राच्छादकत्वात् तत्तथा तत्र, 'पल्लविय'त्ति इह सप्तमीबहुवचनलोपो दृश्यः, ततः पल्लवितेषु पादपगणेषु तथा वल्लीवितानेषु प्रसृतेषु–जातप्रसरेष्वित्यर्थः, तथोन्नतेषु भूप्रदेशेष्विति गम्यते सौभाग्यमुपगतेषु अनवस्थितजलत्वेनाकर्दमत्वात् पाठान्तरे नगेषु–पर्वतेषु नदेषु वा–ह्रदेषु तथा वैभाराभिधानस्य गिरेः ये प्रपाततटाः–भृगुतटाः कटकाश्च–पर्वतैकदेशास्तेभ्यो ये विमुक्ताः–प्रवृत्तास्ते तथा तेषु, केषु?–'उज्झरेसु'त्ति निर्झरेषु त्वरितप्रधावितेन यः 'पल्लोट्ट'त्ति प्रवृत्त–उत्पन्नः फेनस्तेन आकुलं–व्याप्तं। 'सकलुसं'ति सकालुष्यं जलं वहन्तीषु गिरिनदीषु सर्जार्जुननीपकुटजानां वृक्षविशेषाणां यानि कन्दलानि–प्ररोहाः शिलिन्ध्राश्च–छत्रकाणि तैः कलितानि यानि तानि तथा तेषु उपवनेषु, तथा मेघरसितेन हृष्टतुष्टा–अतिहृष्टाश्चेष्टिताश्च–कृतचेष्टा ये ते तथा तेषु, इदं च सप्तमीलोपात्, हर्षवशात् प्रमुक्तो–मुत्कलीकृतः कण्ठो–गलो यस्मिन् स तथा स चासौ केकारवश्च तं मुञ्चत्सु बर्हिणेषु–मयूरेषु, तथा ऋतुवशेन–कालविशेषबलेन यो मदस्तेन जनितं तरुणसहचरीभिः–युवतिमयूरीभिः सह प्रनृत्तं–प्रनर्तनं येषां ते तथा तेषु, बर्हिणेष्वित्यन्वयः, नवः सुरभिश्च यः शिलीन्ध्रकुटजकन्दलकदम्बलक्षणानां पुष्पाणां गन्धस्तेन या घ्राणिः–तृप्तिस्तां मुञ्चत्सु गन्धोत्कर्षतां विदधानेष्वित्यर्थः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकाल मेघस्य दोहद (मनोरथ)

प्रत सूत्रांक [१३]

दीप अनुक्रम [१८]

उपवनेषु–भवनासन्नवनेषु, तथा परभृतानां–कोकिलानां यद्भुतं–रवो रिभितं–स्वरघोलनावत्तेन संकुलानि यान्युपवनानि तानि तथा तेषु, 'उद्दाइंत'त्ति शोभमाना रक्ता इन्द्रगोपकाः–कीटविशेषाः स्तोककानां–चातकानां कारुण्यप्रधानं विलपितं च येषु तानि तथा तेषूपवनेष्वित्यन्वयः, तथा अवनततृणैर्मण्डितानि यानि तानि तथा तेषु, दर्दुराणां प्रकृष्टं जल्पितं येषु तानि तथा तेषु, संपिण्डिता–मिलिताः दृप्ता–दर्पिताः भ्रमराणां मधुकरीणां च 'पहकर'त्ति निकरा येषु तानि तथा, 'परिलिन्त'त्ति परिलीयमानाः संश्लिष्यन्तो मत्ताः षट्पदाः कुसुमासवलोलाः–मकरन्दलम्पटाः मधुरं–कलं गुञ्जन्तः–शब्दायमानाः देशभागेषु येषां तानि तथा ततः कर्मधारयः ततस्तेषु उपवनेषु, तथा परिइयामिताः–कृष्णीकृताः सान्द्रमेघाच्छादनात्, पाठान्तरेण परिभ्रामिताः–कृतप्रभाभ्रंशाः चन्द्रसूरग्रहाणां यस्मिन् ग्रनष्टा च नक्षत्रतारकप्रभा यस्मिंस्तत्तथा तस्मिन्नम्बरतले इति योगः, इन्द्रायुधलक्षणो बद्ध इव बद्धः चिह्नपट्टो–ध्वजपटो यस्मिंस्तत्तथा तत्राम्बरतले–गगने उड्डीनबलाकापङ्क्तिशोभमानमेघवृन्देऽम्बरतले इति योगः, तथा कारण्डकादीनां पक्षिणां मानससरोगमनादि प्रत्यौत्सुक्यकरे संप्राप्ते–उक्तलक्षणयोगेन समागते प्रावृषि काले, किंभूता अम्मयाओ ? इत्याह–'पहायाओ'इत्यादि, किं ते इति किमपरमित्यर्थः, वरौ पादप्राप्तनूपुरौ मणिमेखलारत्नकाञ्ची हारश्च यासां तास्तथा रचितानि–न्यस्तानि उचितानि–योग्यानि कटकानि–प्रतीतानि खुड्डुकानि च–अङ्गुलीयकानि यासां तास्तथा विचित्रैर्वरवलयैः स्तम्भिताविव स्तम्भितौ भुजौ यासां तास्तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः । तथा "कुंडलोज्जोतिताननाः वरपायपत्तनेउरमणिमेहलाहाररइयउचियकडगखुड्डुयएगावलिकंठसुरयतिसरयवरवलयहेमसुत्तकुंडलुज्जोवियाणणाओ"त्ति पाठान्तरं तत्र वरपादप्राप्तनूपुरमणिमेखलाहारास्तथा रचितान्युचितानि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकाल मेघस्य दोहद (मनोरथ)

प्रत सूत्रांक [१३]

दीप अनुक्रम [१८]

कटकानि च खुडुकानि च एकावली च–विचित्रमणिकृता एकसरिका कण्ठमुरजश्च–आभरणविशेषः त्रिसरकं च वरवलयानि च हेमसूत्रकं च–संकलकं यासां तास्तथा, तथा कुण्डलोद्योतिताननास्ततो वरपादप्राप्तनूपुरादीनां कर्मधारयः रत्नविभूषिताङ्गः नासानिःश्वासवातेनोह्यते यल्लघुत्वात्तत्तथा चक्षुर्हरं दृष्ट्याक्षेपकत्वात्, अथवा प्रच्छादनीयाङ्गदर्शनाच्चक्षुर्हरति धरति वा निवर्तयति यद्युवत्वात्तत्तथा, वर्णस्पर्शसंयुक्तं वर्णस्पर्शातिशायीत्यर्थः हयलालायाः–अश्वलालायाः सकाशात् 'पेलव'त्ति पेलवत्वेन मृदुत्वलघुत्वलक्षणेनातिरेकः–अतिरिक्तत्वं यस्य तत् तथा धवलं च तत् कनकेन खचितं–मंडितमन्तयोः–अश्वलयोः कर्म वानलक्षणं यस्य तत्तथा तच्चेति वाक्यं, आकाशस्फटिकस्य सदृशी प्रभा यस्य धवलत्वात्तत्तथा, अंशुकं–वस्त्रविशेषं प्रवरमिहानुस्वारलोपो दृश्यः परिहिताः–निवसिताः दुकूलं च–वस्त्रं अथवा दुकूलो–वृक्षविशेषः तद्वल्कलाज्जातं दुकूलं–वस्त्रविशेष एव तत् सुकुमालमुत्तरीयम्–उपरिकायाच्छादनं यासां तास्तथा, सर्वर्तुकसुरभिकुसुमैः प्रवरैर्माल्यैश्च–ग्रथितकुसुमैः शोभितं शिरो यासां तास्तथा, पाठान्तरे 'सर्वर्तुकसुरभिकुसुमैः सुरचिता प्रलम्बमाना शोभमाना कान्ता विकसन्ती चित्रा माला यासां तास्तथा, एवमन्यान्यपि पदानि बहुवचनान्तानि संस्करणीयानि, इह वर्णके बृहत्तरो वाचनाभेदः, तथा चन्द्रप्रभवैरवैडूर्यविमलदण्डाः शङ्खकुन्ददकरजोऽमृतमथितफेनपुञ्जसन्निकाशाश्च ये चत्वारश्चामराः–चामराणि तद्वालैर्वीजितमङ्गं यासां तास्तथा, अयमेवार्थो वाचनान्तरे इत्थमधीतः 'सेयवरचामराहिं उद्धुवमाणीहिं' २ 'सविड्ढीए'त्ति छत्रादिराजचिह्नरूपया, इह यावत्करणादेवं द्रष्टव्यं 'सव्वज्जुइए' सर्वद्युत्या–आभरणादिसंबन्धिन्या सर्वयुक्त्या वा–उचितेष्टवस्तुघटनालक्षणया 'सर्वबलेन' सर्वसैन्येन 'सर्वसमुदायेन' पौरादिमीलनेन 'सर्वादरेण' सर्वोचितकृत्यकरणरूपेण 'सर्वविभूत्या' सर्वसंपदा

॥ २७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकाल मेघस्य दोहद (मनोरथ)

'सर्वविभूषया' समस्तशोभया 'सर्वसंभ्रमेण' प्रमोदकृतौत्सुक्येन सर्वपुष्पगन्धमाल्यालङ्कारेण 'सर्वतूर्यशब्दसंनिनादेन' तूर्यशब्दानां मीलनेन यः संगतो नितरां नादो–महान् घोषस्तेनेत्यर्थः, अल्पेष्वपि ऋद्ध्यादिषु सर्वशब्दप्रवृत्तिर्दृष्टा अत आह 'महया इड्ढीए महया जुईए जुत्तीए वा महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमगप्पवाइएणं' 'यमकसमकं' युगपत्, एतदेव विशेषेणाह–'संखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरवमुइंगदुंदुहिनिग्घोसनाइयरवेणं' तत्र शङ्खादीनां नितरां घोषो निर्घोषो–महाप्रयत्नोत्पादितः शब्दो नादितं–ध्वनिमात्रमेतद्द्वयलक्षणो यो रवः स तथा तेन, 'सिंघाडे'त्यादि, सिंघाडकादीनामयं विशेषः, सिंघाडकं–जलजबीजं फलविशेषः तदाकृतिपथयुक्तं स्थानं सिंघाटकं, त्रिपथयुक्तं स्थानं त्रिकं चतुष्पथयुक्तं चतुष्कं त्रिपथभेदि चत्वरं चतुर्मुखं–देवकुलादि महापथो–राजमार्गः पथः–पथमात्रं, तथा आसिक्तं–गन्धोदकेनेषत्सिक्तं सकृद्वा सिक्तं सिक्तं तन्यथा शुचिकं–पवित्रं संमार्जितम्–अपहृतकचवरं उपलिप्तं च गोमयादिना यत्तत्तथा यावत्करणादुपस्थानशालावर्णकः पूर्वोक्त एव वाच्यः, एवंभूतं नगरमवलोकयन्त्यो गुच्छा वृन्ताकीप्रभृतीनां लताः सहकारादिलता वृक्षाः सहकारादयः गुल्मा वंशीप्रभृतयः वल्ल्यः त्रपुष्पादिकाः एतासां ये गुच्छाः–पल्लवसमूहास्तै र्यत् 'ओच्छवियं'ति अवच्छादितं वैभारगिरेर्यः कटकाः–देशास्तेषां ये पादा–अधोभागास्तेषां यन्मूलं–समीपं तत्तथा तत्सर्वतः समन्तात् 'आहिंडन्ति'त्ति आहिण्डन्ते, अनेन चैवमुक्तव्यतिकरभाजां सामान्येन स्त्रीणां प्रशंसाद्वारेणात्मविषयोऽकालमेघदोहदो धारिण्याः प्रादुरभूदित्युक्तं, वाचनान्तरे तु 'ओलोएमाणीओ २ आहिंडेमाणीओ २ डोहलं विणिंति' विनयन्त्यपनयन्तीत्यर्थः, 'तं जति णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव डोहलं विणेज्जामि'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकाल मेघस्य दोहद (मनोरथ)

प्रत सूत्रांक [१३]

दीप अनुक्रम [१८]

विनयेयमित्यर्थः, संगतश्चायं पाठ इति । उक्तदोहदाप्राप्तौ यत्तस्याः संपन्नं तदाह—

तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि असंपुन्नदोहला असंपुन्नदोहला असंमाणियदोहला सुक्का भुक्खा णिम्मंसा ओलग्गा ओलुग्गसरीरा पमइलदुब्बला किलंता ओमंथियवयणनयणकमला पंडुइयमुही करयलमलियव्व चंपगमाला णित्तेया दीणविवण्णवयणा जहोचियपुप्फगंधमल्लालंकारहारं अणभिलसमाणी कीडारमणकिरियं च परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयदिट्ठीया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तते णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडियारियाओ अब्भिंतरियाओ दासचेडीयाओ धारिणीं देवीं ओलुग्गं जाव झियायमाणिं पासंति पासित्ता एवं वदासी–किण्णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?, तते णं सा धारणी देवी ताहिं अंगपडियारियाहिं अब्भिंतरियाहिं दासचेडियाहिं एवं वुत्ता समाणी नो आढाति णो य परियाणाति अणाढायमाणी अपरियाणमाणी तुसिणिया संचिट्ठति, तते णं ताओ अंगपडियारियाओ अब्भिंतरियाओ दासचेडियाओ धारिणीं देवीं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–किन्नं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?, तते णं सा धारिणीदेवी ताहिं अंगपडियारियाहिं अब्भिंतरियाहिं दासचेडियाहिं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ता समाणी णो आढाति णो परियाणति अणाढायमाणा अपरियायमाणा तुसिणिया संचिट्ठति, तते णं ताओ अंगपडियारियाओ दासचेडियाओ धारिणीए देवीए अणाढातिज्जमाणीओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]

अपरिजाणिज्जमाणिओ तहेव संभंताओ समाणीओ धारणीए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ करतलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावइत्ता एवं व०–एवं खलु सामी! किंपि अज्ज धारिणीदेवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायति, ☆ तते णं से सेणिए राया तासिं अंगपाडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं जेणेव धारिणीदेवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता धारणीं देवीं ओलुग्गं ओलुग्गसरीरं जाव अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वदासी–किन्नं तुमे देवाणुप्पिए! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायसि?, तते णं सा धारणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठति, तते णं से सेणिए राया धारिणीं देवीं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी–किन्नं तुमे देवाणुप्पिए ओलुग्गा जाव झियायसि?, तते णं सा धारिणीदेवी सेणिएणं रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ता समाणी णो आढाति णो परिजाणाति तुसिणीया संचिट्ठइ, तते णं सेणिए राया धारणिं देविं सवहसावियं करेइ २ त्ता एवं वयासी–किण्णं तुमं देवाणुप्पिए! अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए? ता णं तुमं ममं अयमेयारूवं मणोमाणसियं दुक्खं रहस्सी करेसि, तते णं सा धारिणीदेवी सेणिएणं रन्ना सवहसाविया समाणी सेणियं रायं एवं वदासी–एवं खलु सामी! मम तस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

☆ यहाँ से दूसरा सूत्र आरम्भ होता है |

धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव वेभारगिरिपायमूलं आहिंडमाणीओ डोहलं विणिंति, तं जइ णं अहमवि जाव डोहलं विणिज्जामि, तते णं हं सामी! अयमेयारूवंसि अकालदोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि, एएणं अहं कारणेणं सामी! ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि, तते णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म धारिणिं देविं एवं वदासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिए! ओलुग्गा जाव झियाहि, अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं तुब्भं अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइत्तिकट्टु धारिणीं देवीं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं बहूहिं आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य परिणामियाहि य चउव्विहाहिं बुद्धीहिं अणुचिंतेमाणे २ तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा ठिइं वा उप्पत्तिं वा अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति (सूत्रं १४) तदाणंतरं अभए कुमारे ण्हाते कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकारविभूसिए पायवंदते पहारेत्थ गमणाए, तते णं से अभयकुमारे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं जाव पासइ २ त्ता अयमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए मणोगते संकप्पे समुप्पज्जित्था–अन्नया य ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासति पास-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाताध्य. श्रेणिका-गमः सू. १४

॥ २९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]

इत्ता आढाति परिजाणति सक्कारेइ सम्माणेइ आलवति संलवति अद्धासणेणं उवणिमंतेति मत्थयंसि अग्घाति, इयाणिं ममं सेणिए राया णो आढाति णो परियाणइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं आलवति संलवति नो अद्धासणेणं उवणिमंतेति णो मत्थयंसि अग्घाति य किंपि ओहयमणसंकप्पे झियायति, तं भवियव्वं णं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु मे सेणियं रायं एयमट्ठं पुच्छित्तए, एवं संपेहेइ २ जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावइत्ता एवं वदासी–तुब्भे णं ताओ! अन्नया ममं एज्जमाणं पासित्ता आढाह परिजाणह जाव मत्थयंसि अग्घायह आसणेणं उवणिमंतेह, इयाणिं ताओ! तुब्भे ममं नो आढाह जाव नो आसणेणं उवणिमंतेह किंपि ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह तं भवियव्वं ताओ! एत्थ कारणेणं, तओ तुब्भे मम ताओ! एयं कारणं अगूहेमाणा असंकेमाणा अनिण्हवेमाणा अप्पच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसंदिद्धं एयमट्ठमाइक्खह, तते णं हं तस्स कारणस्स अंतगमणं गमिस्सामि, तते णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे अभयकुमारं एवं वदासी–एवं खलु पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कंतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे दोहले पाउब्भवित्था–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव विणिंति, तते णं अहं पुत्ता धारिणीए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]

देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य उवाएहिं जाव उप्पत्तिं अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायामि तुमं आगयंपि न याणामि तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता ! ओहय जाव झियामि, तते णं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म हट्ठ जाव हियए सेणियं रायं एवं वदासी–मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमण० जाव झियायह अहण्णं तहा करिस्सामि जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालडोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइत्तिकट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव समासासेइ, तते णं सेणिए राया अभयेणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव अभयकुमारं सक्कारेति संमाणेति २ पडिविसज्जेति (सूत्रं १५) तते णं से अभयकुमारे सक्कारियसम्माणिए पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २ सीहासणे निसन्ने, तते णं तस्स अभयकुमारस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकालडोहलमणोरहसंपत्तिं करेत्तए णन्नत्थ दिवेणं उवाएणं, अत्थि णं ममं सोहम्मकप्पवासी पुव्वसंगतिए देवे महिड्ढीए जाव महासोक्खे, तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणिसुवन्नस्स ववगयमालावन्नगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबीयस्स दब्भसंथारोवगयस्स अट्ठमभत्तं परिगिण्हित्ता पुव्वसंगतियं देवं मणसि करेमाणस्स विहरित्तए, तते णं पुव्वसं-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]

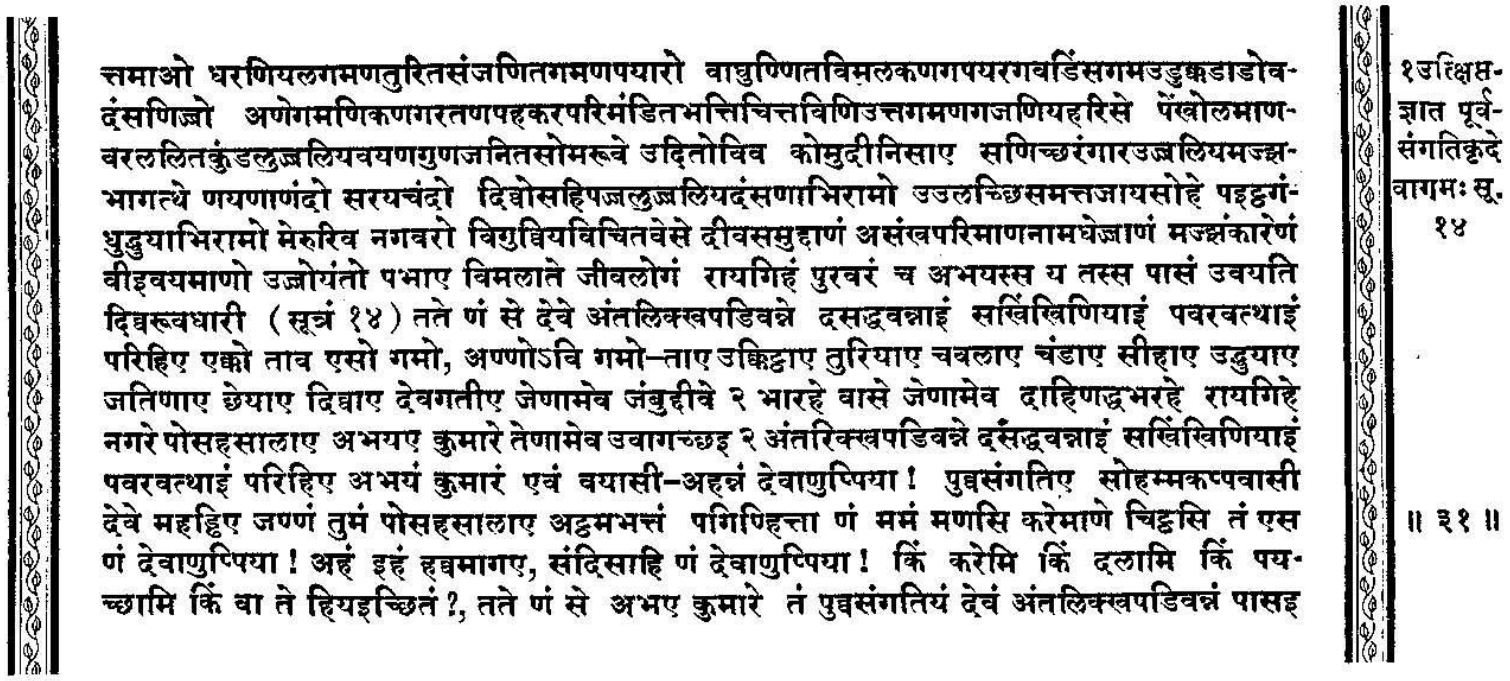
गतिए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालमेहेसु डोहलं विणेहिति, एवं संपेहेति २ जेणेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छति २ पोसहसालं पमज्जति २ उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ दब्भसंथारगं पडिलेहेइ २ दब्भसंथारगं दुरूहइ २ अट्ठमभत्तं परिगिण्हइ २ पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव पुव्वसंगतियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ, तते णं तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसंगतिअस्स देवस्स आसणं चलति, तते णं पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलियं पासति २ ओहिं पउंजति, तते णं तस्स पुव्वसंगतियस्स देवस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु मम पुव्वसंगतिए जंबूदीवे २ भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे वासे रायगिहे नयरे पोसहसालाए पोसहिए अभए नामं कुमारे अट्ठमभत्तं परिगिण्हित्ता णं मम मणसि करेमाणे २ चिट्ठति, तं सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अंतिए पाउब्भवित्तए, एवं संपेहेइ २ उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति २ संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरति, तंजहा–रयणाणं १ वइराणं २ वेरुलियाणं ३ लोहियक्खाणं ४ मसारगल्लाणं ५ हंसगब्भाणं ६ पुलगाणं ७ सोगंधियाणं ८ जोइरसाणं ९ अंकाणं १० अंजणाणं ११ रयणाणं १२ जायरूवाणं १३ अंजणपुलगाणं १४ फलिहाणं १५ रिट्ठाणं १६, अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ २ अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हति परिगिण्हइत्ता अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे पुव्वभवजणियनेहपीइबहुमाणजायसोगे तओ विमाणवरपुंडरीयाओ रयणु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥ ३१ ॥

क्षमाओ धरणियलगमणतुरितसंजणितगमणपयारो वाघुण्णितविमलकणगपयरगवडिंसगमउडुक्कडाडोव-दंसणिज्जो अणेगमणिकणगरतणपहकरपरिमंडितभत्तिचित्तविणिउत्तगमणगजणियहरिसे पेंखोलमाण-वरललितकुंडलुज्जलियवयणगुणजनितसोमरूवे उदितोविव कोमुदीनिसाए सणिच्छरंगारउज्जलियमज्झ-भागत्थे णयणाणंदो सरयचंदो दिवोसहिपज्जलुज्जलियदंसणाभिरामो उउलच्छिसमत्तजायसोहे पइट्ठगं-धुद्धुयाभिरामो मेरुरिव नगवरो विणुवियविचितवेसे दीवसमुद्दाणं असंखपरिमाणनामधेज्जाणं मज्झंकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो पभाए विमलाते जीवलोगं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स य तस्स पासं उवयति दिव्वरूवधारी (सूत्रं १४) तते णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं सखिंखिणियाइं पवरवत्थाइं परिहिए एक्को ताव एसो गमो, अण्णोऽवि गमो–ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उद्धुयाए जतिणाए छेयाए दिव्वाए देवगतीए जेणामेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे जेणामेव दाहिणद्धभरहे रायगिहे नगरे पोसहसालाए अभयए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ २ अंतरिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं सखिंखिणियाइं पवरवत्थाइं परिहिए अभयं कुमारं एवं वयासी–अहन्नं देवाणुप्पिया! पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे महड्ढिए जण्णं तुमं पोसहसालाए अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता णं ममं मणसि करेमाणे चिट्ठसि तं एस णं देवाणुप्पिया! अहं इहं हव्वमागए, संदिसाहि णं देवाणुप्पिया! किं करेमि किं दलामि किं पय-च्छामि किं वा ते हियइच्छितं?, तते णं से अभए कुमारे तं पुव्वसंगतियं देवं अंतलिक्खपडिवन्नं पासइ

१उत्क्षिप्त-ज्ञात पूर्व-संगतिकृदेवागमः सू. १४

॥ ३१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र यत् (सूत्रं १४) लिखितं एवं शिर्षक-स्थाने सूचितं तत् किञ्चित् मुद्रण-दोष: संभाव्यते

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

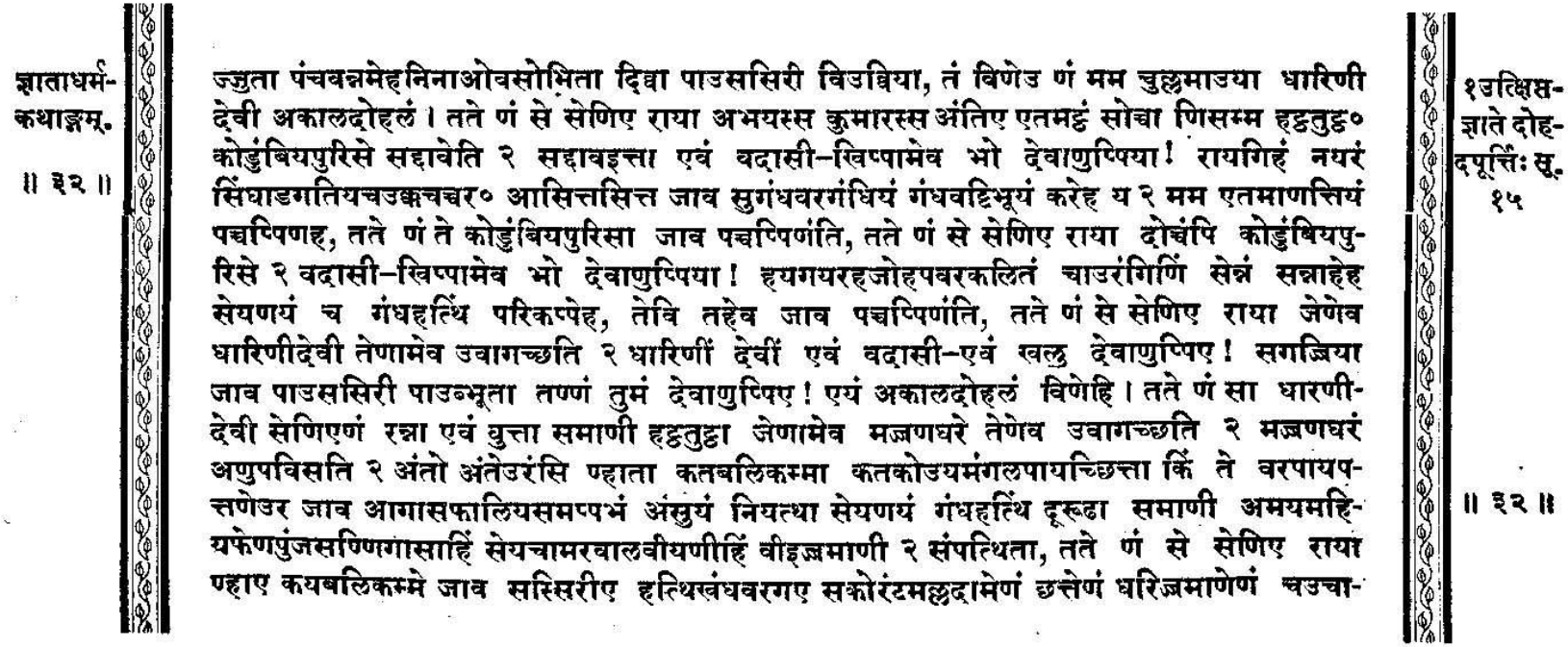
दीप अनुक्रम [१९-२४]

पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोसहं पारेइ २ करयल० अंजलिं कट्टु एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालडोहले पाउब्भूते–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं जाव विणिज्जामि, तन्नं तुमं देवाणुप्पि० मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालडोहलं विणेहि, तते णं से देवे अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ अभयकुमारं एवं वदासी–तुमण्णं देवाणुप्पिया! सुणिव्वुयवीसत्थे अच्छाहि, अहण्णं तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं डोहलं विणेमीतिकट्टु अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिणिक्खमति २ उत्तरपुरच्छिमे णं वेभारपव्वए वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति २ संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरति जाव दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति २ खिप्पामेव सगज्जतियं सविज्जुयं सफुसियं तं पंचवन्नमेहणिणाओवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं विउव्वेइ २ जेणेव अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ २ अभयं कुमारं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए तव पियट्ठयाए सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया दिव्वा पाउससिरी विउविया, तं विणेउ णं देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणीदेवी अयमेयारूवं अकालडोहलं, तते णं से अभयकुमारे तस्स पुव्वसंगतियस्स देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे सयातो भवणाओ पडिनिक्खमति २ जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति करयल० अंजलिं कट्टु एवं वदासी–एवं खलु ताओ ! मम पुव्वसंगतिएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिता सवि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ३२ ॥

ज्जुता पंचवन्नमेहनिनाओवसोभिता दिव्वा पाउससिरी विउविया, तं विणेउ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं। तते णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ सद्दावइत्ता एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायगिहं नयरं सिंघाडगतियचउक्कचचर० आसित्तसित्त जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य २ मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे २ वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! हयगयरहजोहपवरकलितं चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेह सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह, तेवि तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से सेणिए राया जेणेव धारिणीदेवी तेणामेव उवागच्छति २ धारिणीं देवीं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिए! सगज्जिया जाव पाउससिरी पाउब्भूता तण्णं तुमं देवाणुप्पिए! एयं अकालदोहलं विणेहि। तते णं सा धारणी-देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति २ मज्जणघरं अणुपविसति २ अंतो अंतेउरंसि ण्हाता कतबलिकम्मा कतकोउयमंगलपायच्छित्ता किं ते वरपायप-त्तणेउर जाव आगासफालियसमप्पभं अंसुयं नियत्था सेयणयं गंधहत्थिं दूरूढा समाणी अमयमहि-यफेणपुंजसण्णिगासाहिं सेयचामरवालवीयणीहिं वीइज्जमाणी २ संपत्थिता, तते णं से सेणिए राया ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सस्सिरीए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचा-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते दोह-दपूर्त्तिः सू. १५

॥ ३२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र यत् (सूत्रं १५) शिर्षक-स्थाने सूचितं तत् किञ्चित् मुद्रण-दोष: संभाव्यते

मराहिं वीइज्जमाणेणं धारिणीदेवीं पिट्ठतो अणुगच्छति, तते णं सा धारिणीदेवी सेणिएणं रन्ना हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठतो पिट्ठतो समणुगम्ममाणमग्गा हयगयरहजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुए महता भडचडगरवंदपरिक्खित्ता सविड्ढीए सव्वजुइए जाव दुंदुभिनिग्घोसनादितरवेणं रायगिहे नगरे सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर जाव महापहेसु नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणा २ जेणामेव वेब्भारगिरिपव्वए तेणामेव उवागच्छति २ वेब्भारगिरिकडगतडपायमूले आरामेसु य उज्जाणेसु य काणणेसु य वणेसु वणसंडेसु य रुक्खेसु य गुच्छेसु य गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कंदरासु य दरीसु य चुण्हीसु य दहेसु य कच्छेसु य नदीसु य संगमेसु य विवरतेसु य अच्छमाणी य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य पल्लवाणि य गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी य परिभुंजमाणी य परिभाएमाणी य वेब्भारगिरिपायमूले दोहलं विणेमाणी सव्वतो समंता आहिंडति, तते णं धारिणी देवी विणीतदोहला संपुन्नदोहला संपन्नडोहला जाया यावि होत्था, तते णं से धारिणीदेवी सेयणयगंधहत्थिं दूरूढा समाणी सेणिएणं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ २ समणुगम्ममाणमग्गा हयगय जाव रहेणं जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता विउलाइं माणुस्साइं भोगभोगाइं जाव विहरति (सूत्रं १५) तते णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ २ पुव्वसंगतियं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ २ पडिविसज्जेति २,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र यत् (सूत्रं १४) लिखितं तत् किञ्चित् मुद्रण-दोष: संभाव्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]

ततेणं से देवे सगज्झियं पंचवन्नं मेहोवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं पडिसाहरति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगते (सूत्रं १६) ततेणं सा धारिणीदेवी तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियडोहला तस्स गब्भस्स अणुकंपणट्ठाए जयं चिट्ठति जयं आसयति जयं सुवति आहारंपिय णं आहारेमाणी णाइतित्तं णातिकडुयं णातिकसायं णातिअंबिलं णातिमहुरं जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थयं देसे य काले य आहारं आहारेमाणी णाइचिन्तं णाइसोगं णाइदेण्णं णाइमोहं णाइभयं णाइपरितासं भोयणच्छायणगंधमल्लालंकारेहिं तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति। (सूत्रं १७)

'तए ण'मित्यादि, 'अविणिज्जमाणंसि'त्ति दोहदे अविनीयमाने–अनपनीयमाने सति असंप्राप्तदोहदा मेघादीनामजातत्वात् असंपूर्णदोहदा तेषामजातत्वेनैवासंपूर्णत्वात् अत एव असन्मानितदोहदा तेषामननुभवनादिति, ततः शुष्का मनस्तापेन शोणितशोषात् 'भुक्ख'त्ति बुभुक्षाक्रान्तेव अत एव निर्मांसा 'ओलुग्ग'त्ति अवरुग्णा–जीर्णेव, कथमित्याह–'ओलुग्गं'ति अवरुग्णमिव–जीर्णमिव शरीरं यस्याः सा तथा, अथवा अवरुग्णा चेतसा अवरुग्णशरीरा तथैव प्रमलितदुर्बला–स्नानभोजनत्यागात् क्लान्ता–ग्लानीभूता 'ओमंथिय'त्ति अधोमुखीकृतं वदनं च नयनकमले च यया सा तथा, पांडुकितमुखी–दीनास्येव विवर्णं वदनं यस्याः सा तथा, क्रीडा–जलक्रीडादिका रमणमक्षादिभिः तत्क्रियां च परिहापयन्ती दीना दुःस्था दुःखं मनो यस्याः सा तथा यतो निरानन्दा उपहतो मनसः संकल्पः–युक्तायुक्तविवेचनं यस्याः सा तथा, यावत्करणात् 'करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाइ'त्ति आर्त्तध्यानं ध्यायतीति, 'नो आढाइ'त्ति नाद्रियते–नादरं करोति नो

॥ ३३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

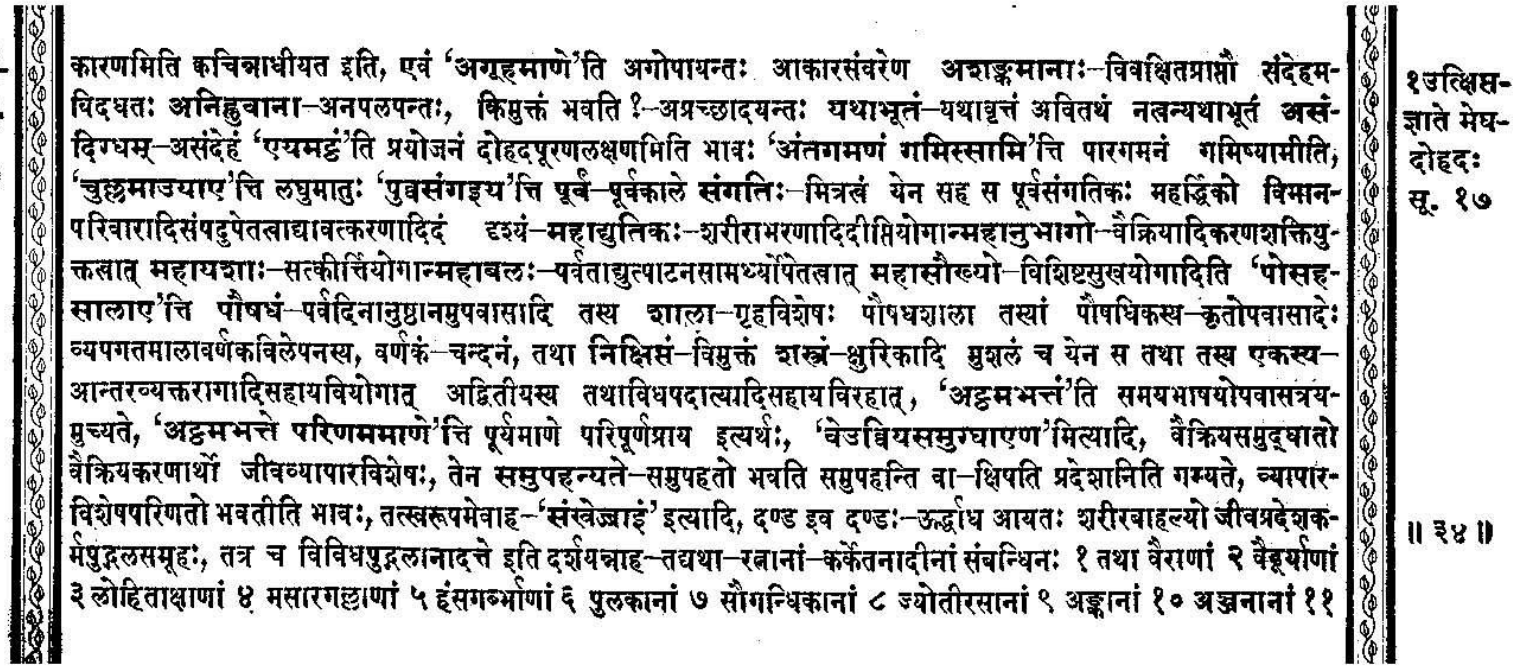
परिजानाति–न प्रत्यभिजानाति विचित्तत्वात्, **'संभंताउ'**त्ति आकुलीभूताः, शीघ्रमित्यादीनि चत्वार्येकार्थिकानि अतिसंभ्रमोपदर्शनार्थं 'जेणेवे' त्यादि यत्र धारिणी देवी तत्रोपागच्छति स्मागत्य चावरुग्णादिविशेषणां धारणीं देवीं पश्यति, वाचनान्तरे तु **'जेणेव धारणीदेवी तेणेवेत्यतः पहारेत्थ गमणाए'** इत्येतदृश्यते, तत्र **'पहारेत्थ'** संप्रधारितवान्–विकल्पितवानित्यर्थः गमनाय–गमनार्थं, तथा **'तए णं से सेणिए राया जेणेव धारणीदेवी तेणेव उवागच्छति २ पासइ'**त्ति पश्यति सामान्येन ततोऽवरुग्णादिविशेषणां पश्यतीति, **'दोच्चंपि'**त्ति द्वितीयामपि वारामिति गम्यते, **'सवहसाविय'**त्ति शपथान्–देवगुरुद्रोहिका भविष्यसि त्वं यदि विकल्पं नाख्यासीत्यादिकान् वाक्यविशेषान् श्राविता–श्रोत्रेणोपलम्भिता शपथैर्वा श्राविता शपथश्राविता शपथशापिता वा तां करोति, 'किण्हं किन्न'मिति वा पाठो देवानुप्रिये! एतस्यार्थस्यानर्हः श्रावणतायां **'मणोमाणसियं'**ति मनसि जातं मानसिकं मनस्येव यद्वर्तते मानसिकं–दुःखं वचनेनाप्रकाशितत्वान्मनोमानसिकं रहस्यीकरोषि गोपयसीत्यर्थः, **'तिण्ह'**मित्यादि त्रिषु मासेषु **'बहुपडिपुन्नाणं'**ति ईषदूनेषु **'जत्तिहामि'**त्ति यतिष्ये कचित्करिष्यामीति पाठः, **'अयमेयारूवस्स'**त्ति अस्यैवंरूपस्य **'मणोरहसंपत्ती'**ति मनोरथप्रधाना प्राप्तिर्यथा विचिन्तितेत्यर्थः, आयैः–लाभैरीप्सितार्थहेतूनामुपायैः–अप्रतिहतलाभकारणैः आयं वा उवायं वा ठियं वा–स्थितं वा क्रमं वा स्थिरहेतुदोहदानां वेप्सितार्थस्य पाठान्तरे उत्पत्तिं वा तस्यैवेत्यर्थः **'अविंदमाणे'**त्ति अलभमानः **'अयमेयारूवे'**त्ति अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः–आत्माश्रयः चिन्तितः–स्मरणरूपः प्रार्थितो–लब्धुमाशंसितः मनोगतः–अबहिः प्रकाशितः संकल्पो–विकल्पः **'संपेहेति'**त्ति संप्रेक्षते पर्यालोचयति **'ताओ'**त्ति हे तातेत्यामन्त्रणं **'एयं कारणं'**ति अपध्यानहेतुं दोहदापूर्त्तिलक्षणमितिभावः,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ३४ ॥

कारणमिति कचिन्नाधीयत इति, एवं 'अगूहमाणे'ति अगोपायन्तः आकारसंवरेण **अशङ्कमानाः**–विवक्षितप्राप्तौ संदेहम-विदधतः **अनिह्नुवाना**–अनपलपन्तः, किमुक्तं भवति ?–अप्रच्छादयन्तः **यथाभूतं**–यथावृत्तं अवितथं **नत्वन्यथाभूतं असं-दिग्धम्**–असंदेहं 'एयमट्ठं'ति प्रयोजनं दोहदपूरणलक्षणमिति भावः 'अंतगमणं गमिस्सामि'त्ति पारगमनं गमिष्यामीति, 'चुल्लमाउयाए'त्ति लघुमातुः 'पुव्वसंगइय'त्ति **पूर्व**–पूर्वकाले **संगतिः**–मित्रत्वं येन सह स पूर्वसंगतिकः **महर्द्धिको** विमान-परिवारादिसंपदुपेतत्वाद्यावत्करणादिदं दृश्यं–**महाद्युतिकः**–शरीराभरणादिदीप्तियोगान्महानुभागो–वैक्रियादिकरणशक्तियु-क्तत्वात् **महायशाः**–सत्कीर्त्तियोगान्महाबलः–पर्वताद्युत्पाटनसामर्थ्योपेतत्वात् महासौख्यो–विशिष्टसुखयोगादिति 'पोसह-सालाए'त्ति पौषधं–पर्वदिनानुष्ठानमुपवासादि तस्य शाला–गृहविशेषः पौषधशाला तस्यां पौषधिकस्य–कृतोपवासादेः व्यपगतमालावर्णकविलेपनस्य, वर्णकं–चन्दनं, तथा **निक्षिप्तं**–विमुक्तं **शस्त्रं**–क्षुरिकादि मुशलं च येन स तथा तस्य **एकस्य**–आन्तरव्यक्तरागादिसहायवियोगात् अद्वितीयस्य तथाविधपदात्यादिसहायविरहात्, 'अट्ठमभत्तं'ति समयभाषयोपवासत्रय-मुच्यते, 'अट्ठमभत्ते परिणममाणे'त्ति पूर्यमाणे परिपूर्णप्राय इत्यर्थः, 'वेउव्वियसमुग्घाएण'मित्यादि, वैक्रियसमुद्घातो वैक्रियकरणार्थो जीवव्यापारविशेषः, तेन **समुपहन्यते**–समुपहतो भवति समुपहन्ति वा–क्षिपति प्रदेशानिति गम्यते, व्यापार-विशेषपरिणतो भवतीति भावः, तत्स्वरूपमेवाह–'**संखेज्जाइं**' इत्यादि, दण्ड इव दण्डः–ऊर्द्धाध आयतः शरीरबाहल्यो जीवप्रदेशक-र्मपुद्गलसमूहः, तत्र च विविधपुद्गलानादत्ते इति दर्शयन्नाह–तद्यथा–रत्नानां–कर्केतनादीनां संबन्धिनः १ तथा वैराणां २ वैडूर्याणां ३ लोहिताक्षाणां ४ मसारगल्लाणां ५ हंसगर्भाणां ६ पुलकानां ७ सौगन्धिकानां ८ ज्योतीरसानां ९ अङ्कानां १० अञ्जनानां ११

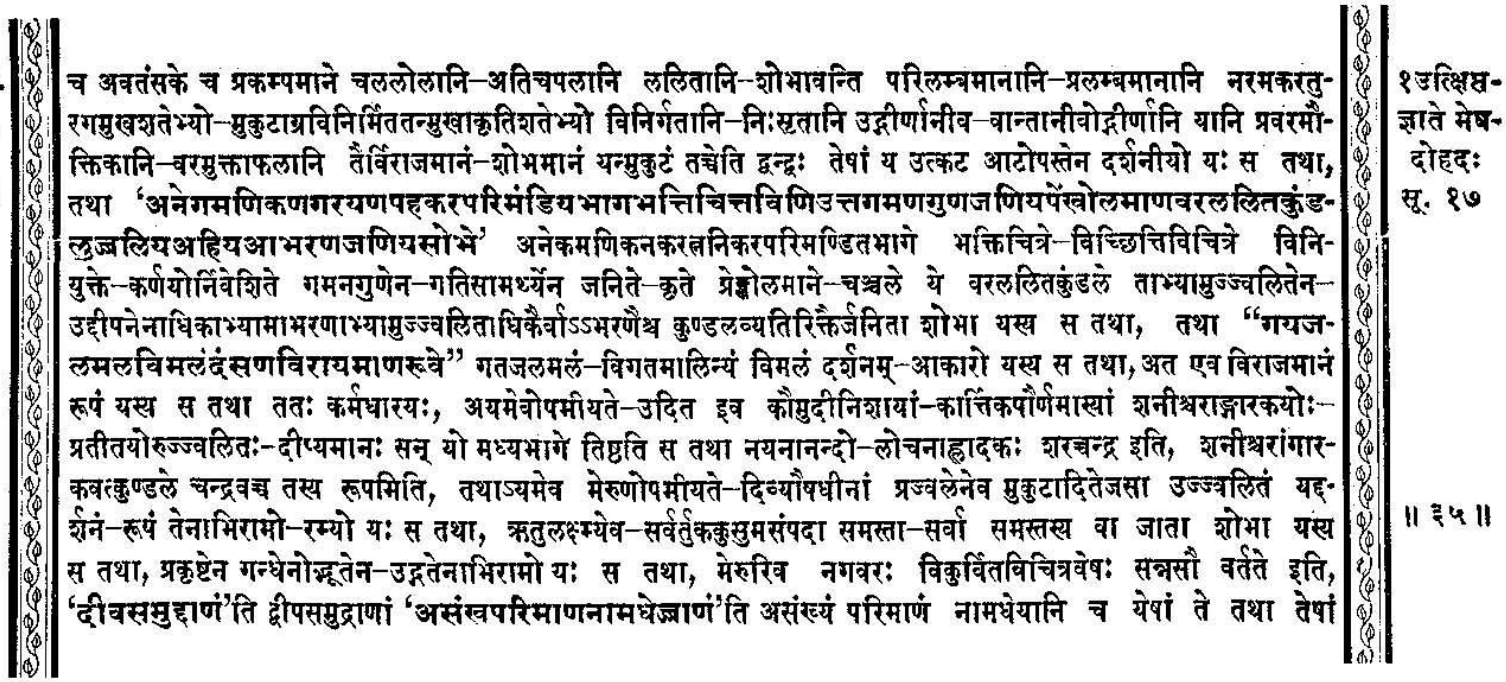
१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघ-दोहदः सू. १७

॥ ३४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रजतानां १२ जातरूपाणां १३ अञ्जनपुलकानां १४ स्फटिकानां १५ रिष्ठानां १६, किमत आह–यथाबादरान्–असारान् यथासूक्ष्मान्–सारान् ततो वैक्रियं करोति, 'अभयकुमारमणुकंपमाणे'त्ति अनुकम्पयन् हा तस्याष्टमोपवासरूपं कष्टं वर्त्तते इति विकल्पयन्नित्यर्थः, पूर्वभवे–पूर्वजन्मनि जनिता–जाता या स्नेहात्प्रीतिः–प्रियत्वं न कार्यवशादित्यर्थः बहुमानश्च–गुणानुरागस्ताभ्यां सकाशात् जातः शोकः–चित्तखेदो विरहसद्भावेन यस्य स पूर्वजनितस्नेहप्रीतिबहुमानजातशोकः, वाचनान्तरे–'पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिबहुमानजनितशोभस्तत्र शोभा–पुलकादिरूपा, तस्मात्स्वकीयात् विमानवरपुण्डरीकात्, पुण्डरीकता च विमानानां मध्ये उत्तमत्वात् 'रयणुत्तमाउ'त्ति रत्नोत्तमात् रचनोत्तमाद्वा 'धरणीतलगमनाय' भूतलप्राप्तये त्वरितः–शीघ्रं संजनितः–उत्पादितो गमनप्रचारो–गतिक्रियावृत्तिर्येन स तथा, वाचनान्तरे 'धरणीतलगमनसंजनितमनःप्रचार' इति प्रतीतमेव, व्याघूर्णितानि–दोलायमानानि यानि विमलानि कनकस्य प्रतरकाणि च–प्रतरवृत्तरूपाणि आभरणानि च–कर्णपूरे मुकुटं च–मौलिः तेषामुत्कटो य आटोपः–स्फारता तेन दर्शनीयः–आदेयदर्शनो यः स तथा, तथा अनेकेषां मणिकनकरत्नानां 'पहकर'त्ति निकरस्तेन परिमण्डितो–भक्तिभिश्चित्रो विनियुक्तकः–कट्यां निवेशितो 'मणु'त्ति मकारस्य प्राकृतशैलीप्रभवत्वात् योऽनुरूपो गुणः–कटिसूत्रं तेन जनितो हर्षो यस्य स तथा, प्रेङ्खोलमानाभ्यां–दोलायमानाभ्यां वरललितकुण्डलाभ्यां यदुज्ज्वलितम्–उज्ज्वलीकृतं वदनं–मुखं तस्य यो गुणः–कान्तिलक्षणः तेन जनितं सौम्यं रूपं यस्य स तथा, वाचनान्तरे पुनरेवं विशेषणत्रयं दृश्यते "वाघुन्नियविमलकणगपयरगवडेंसगपकंपमाणचललोललिलियपरिलंबमाणनरमगरतुरगमुहसयविणिग्गउग्गिन्नपवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्कडाडोवदरिसणिज्जे" तत्र व्याघूर्णितानि–चञ्चलानि विमलकनकप्रतरकाणि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ३५ ॥

च अवतंसके च प्रकम्पमाने चललोलानि–अतिचपलानि ललितानि–शोभावन्ति परिलम्बमानानि–प्रलम्बमानानि नरमकरतुरगमुखशतेभ्यो–मुकुटाग्रविनिर्मिततन्मुखाकृतिशतेभ्यो विनिर्गतानि–निःसृतानि उद्गीर्णानीव–वान्तानीवोद्गीर्णानि यानि प्रवरमौक्तिकानि–वरमुक्ताफलानि तैर्विराजमानं–शोभमानं यन्मुकुटं तच्चेति द्वन्द्वः तेषां य उत्कट आटोपस्तेन दर्शनीयो यः स तथा, तथा 'अनेगमणिकणगरयणपहकरपरिमंडियभागभत्तिचित्तविणिउत्तगमणगुणजणियपेंखोलमाणवरललितकुंडलुज्जलियअहियआभरणजणियसोभे' अनेकमणिकनकरत्ननिकरपरिमण्डितभागे भक्तिचित्रे–विच्छित्तिविचित्रे विनियुक्ते–कर्णयोर्निवेशिते गमनगुणेन–गतिसामर्थ्येन जनिते–कृते प्रेङ्खोलमाने–चञ्चले ये वरललितकुंडले ताभ्यामुज्ज्वलितेन–उद्दीपनेनाधिकाभ्यामाभरणाभ्यामुज्ज्वलिताधिकैर्वाऽऽभरणैश्च कुण्डलव्यतिरिक्तैर्जनिता शोभा यस्य स तथा, तथा "गयजलमलविमलदंसणविरायमाणरूवे" गतजलमलं–विगतमालिन्यं विमलं दर्शनम्–आकारो यस्य स तथा, अत एव विराजमानं रूपं यस्य स तथा ततः कर्मधारयः, अयमेवोपमीयते–उदित इव कौमुदीनिशायां–कार्त्तिकपौर्णमास्यां शनीश्वराङ्गारकयोः–प्रतीतयोरुज्ज्वलितः–दीप्यमानः सन् यो मध्यभागे तिष्ठति स तथा नयनानन्दो–लोचनाह्लादकः शरचन्द्र इति, शनीश्वरांगारकवत्कुण्डले चन्द्रवच्च तस्य रूपमिति, तथाऽयमेव मेरुणोपमीयते–दिव्यौषधीनां प्रज्वलेनेव मुकुटादितेजसा उज्ज्वलितं यद्दर्शनं–रूपं तेनाभिरामो–रम्यो यः स तथा, ऋतुलक्ष्म्येव–सर्वर्तुककुसुमसंपदा समस्ता–सर्वा समस्तस्य वा जाता शोभा यस्य स तथा, प्रकृष्टेन गन्धेनोद्भूतेन–उद्गतेनाभिरामो यः स तथा, मेरुरिव नगवरः विकुर्वितविचित्रवेषः सन्नसौ वर्तते इति, 'दीवसमुद्दाणं'ति द्वीपसमुद्राणां 'असंखपरिमाणनामधेज्जाणं'ति असंख्यं परिमाणं नामधेयानि च येषां ते तथा तेषां

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघ-दोहदः सू. १७

॥ ३५ ॥

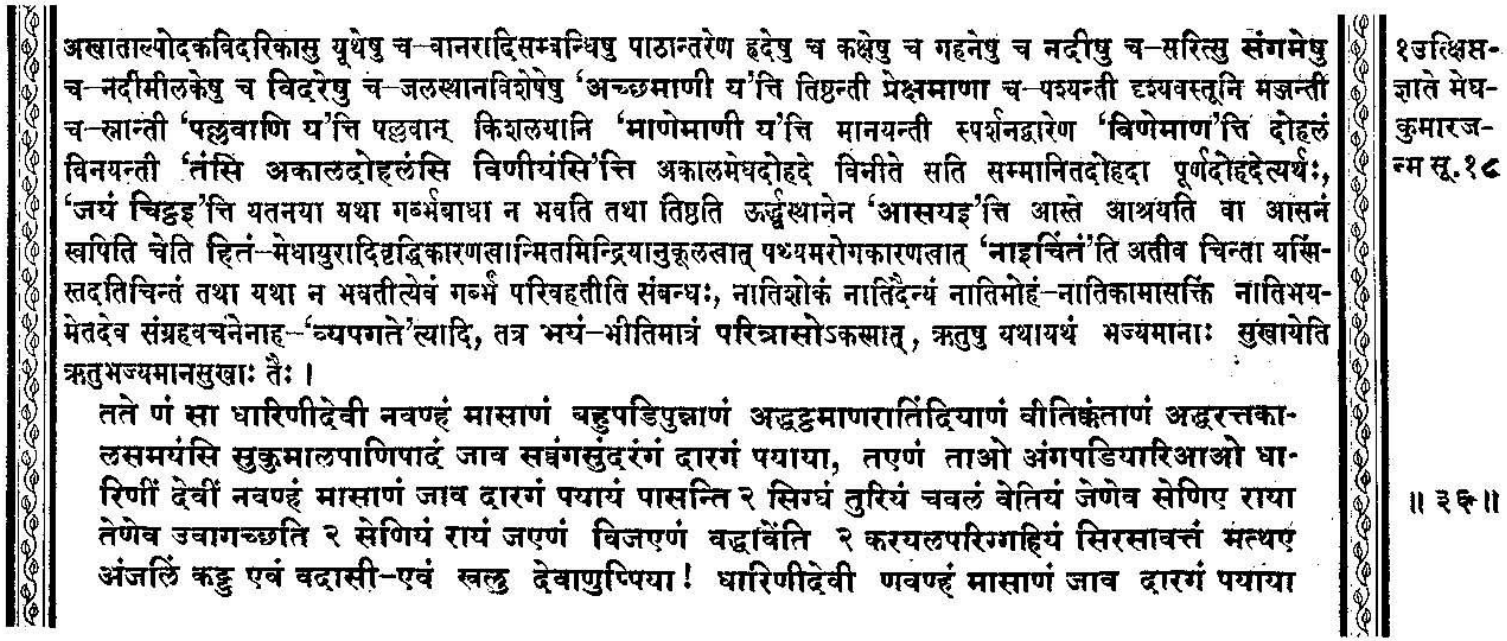
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'मध्यकारेण' मध्यभागेन 'वीइवयमाणे'त्ति व्यतिव्रजन् गच्छन् उद्योतयन् विमलया प्रभया जीवलोकं 'ओवयइ'त्ति अवपतति अवतरति, **अन्तरिक्षप्रतिपन्नः**–आकाशस्थः दशार्द्धवर्णानि सकिङ्किणीकानि–क्षुद्रघण्टिकोपेतानि एकस्तावदेष गमः–पाठः, अन्योऽपि–द्वितीयो गमो–वाचनाविशेषः पुस्तकान्तरेषु दृश्यते, **'ताए'** तया उत्कृष्टया गत्या **त्वरितया**–आकुलया न स्वाभाविक्या आन्तराकूततोऽप्येषा भवत्यत आह–**चपलया** कायतोऽपि **चण्डया**–रौद्रयाऽत्युत्कर्षयोगेन **सिंहया**–तद्दार्ढ्यस्थैर्येण **उद्धतया**–दर्पातिशयेन **जयिन्या**–विपक्षजेतृत्वेन **छेकया**–निपुणया **दिव्यया**–देवगत्या, अयं च द्वितीयो गमो जीवाभिगमसूत्रवृत्त्यनुसारेण लिखितः, **'किं करेमि'**त्ति किमहं करोमि भवदभिप्रेतं कार्यं किं वा **'दलयामि'**त्ति तुभ्यं ददामि, किं वा प्रयच्छामि भवत्संगतायान्यस्मै, किं वा ते हृदयेप्सितं–मनोवाञ्छितं वर्तत इति प्रश्नः, **'सुनिव्वुयवीसत्थे'**त्ति सुष्ठु निर्वृतः–स्वस्थात्मा **विश्वस्तो**–विश्वासवान् निरुत्सुको वा यः स तथा, **'तातो'**त्ति हे तात! । **'परिकप्पेह'**त्ति सन्नाहयन्तं कुरुत **'अंतो-अंतेउरंसि'**त्ति अन्तरन्तःपुरस्य **"महयाभडचडगरवंदपरिक्खित्त"**त्ति महाभटानां यच्चटकरप्रधानं–विच्छर्दप्रधानं वृन्दं तेन संपरिक्षिप्ता, वैभारगिरेः कटतटानि–तदेकदेशतटानि पादाश्च–तदासन्नलघुपर्वतास्तेषां यन्मूलं तत्र, तथा आरामेषु च आरमन्ति येषु माधवीलतागृहादिषु दम्पत्या(दी)नि ते आरामास्तेषु पुष्पादिमद्वृक्षसंकुलानि उत्सवादौ बहुजनभोग्यानि उद्यानानि तेषु च तथा सामान्यवृक्षवृन्दयुक्तानि नगरासन्नानि काननानि तेषु च नगरविप्रकृष्टानि वनानि तेषु च तथा वनखण्डेषु–च–एकजातीयवृक्षसमूहेषु वृक्षेषु चैकैकेषु गुच्छेषु च–वृन्ताकीप्रभृतिषु गुल्मेषु च–वंशजालीप्रभृतिषु लतासु–च–सहकारलतादिषु वल्लीषु–च–नागवल्ल्यादिषु च कन्दरासु च–गुहासु दरीषु च–शृगालादिउत्कीर्णभूमिविशेषेषु **'चुंडीसु य'**त्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१४-१७] +[१४-R +१५-R]

दीप अनुक्रम [१९-२४]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ३६ ॥

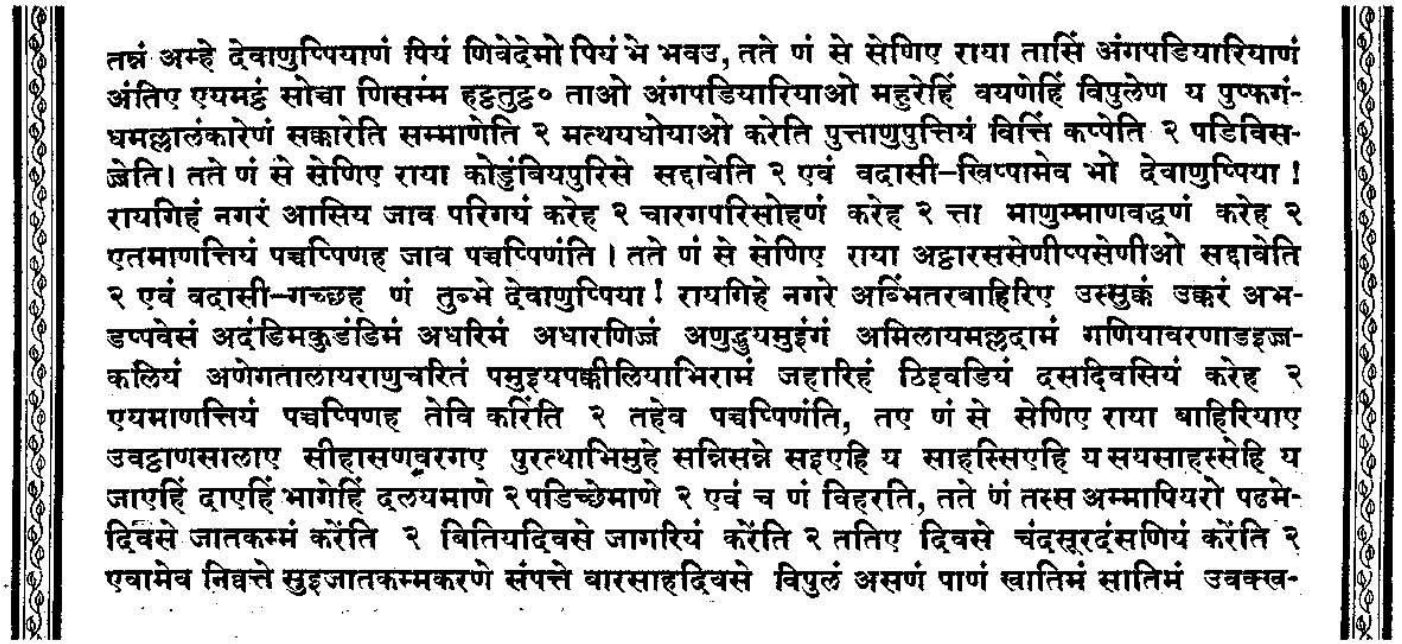
अखातालपोदकविदरिकासु यूथेषु च–वानरादिसम्बन्धिषु पाठान्तरेण हदेषु च कक्षेषु च गहनेषु च नदीषु च–सरित्सु संगमेषु च–नदीमीलकेषु च विदरेषु च–जलस्थानविशेषेषु 'अच्छमाणी य'त्ति तिष्ठन्ती प्रेक्षमाणा च–पश्यन्ती दृश्यवस्तूनि मज्जन्ती च–स्नान्ती 'पल्लवाणि य'त्ति पल्लवान् किशलयानि 'माणेमाणी य'त्ति मानयन्ती स्पर्शनद्वारेण 'विणेमाण'त्ति दोहलं विनयन्ती 'तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि'त्ति अकालमेघदोहदे विनीते सति सम्मानितदोहदा पूर्णदोहदेत्यर्थः, 'जयं चिट्ठइ'त्ति यतनया यथा गर्भबाधा न भवति तथा तिष्ठति ऊर्द्धस्थानेन 'आसयइ'त्ति आस्ते आश्रयति वा आसनं स्वपिति चेति हितं–मेधायुरादिवृद्धिकारणत्वान्मितमिन्द्रियानुकूलत्वात् पथ्यमरोगकारणत्वात् 'नाइचिंतं'ति अतीव चिन्ता यस्मिंस्तदतिचिन्तं तथा यथा न भवतीत्येवं गर्भं परिवहतीति संबन्धः, नातिशोकं नातिदैन्यं नातिमोहं–नातिकामासक्तिं नातिभयमेतदेव संग्रहवचनेनाह–'व्यपगते'त्यादि, तत्र भयं–भीतिमात्रं परित्रासोऽकस्मात्, ऋतुषु यथायथं भज्यमानाः सुखायेति ऋतुभज्यमानसुखाः तैः ।

ततेणं सा धारिणीदेवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणरातिंदियाणं वीतिक्कंताणं अद्धरत्तकालसमयंसि सुकुमालपाणिपादं जाव सव्वंगसुंदरंगं दारगं पयाया, तएणं ताओ अंगपडियारिआओ धारिणीं देवीं नवण्हं मासाणं जाव दारगं पयायं पासन्ति २ सिग्घं तुरियं चवलं वेतियं जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति २ सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! धारिणीदेवी णवण्हं मासाणं जाव दारगं पयाया

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघ-कुमारज-न्म सू.१८ ॥ ३६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	मेघकुमारस्य जन्म



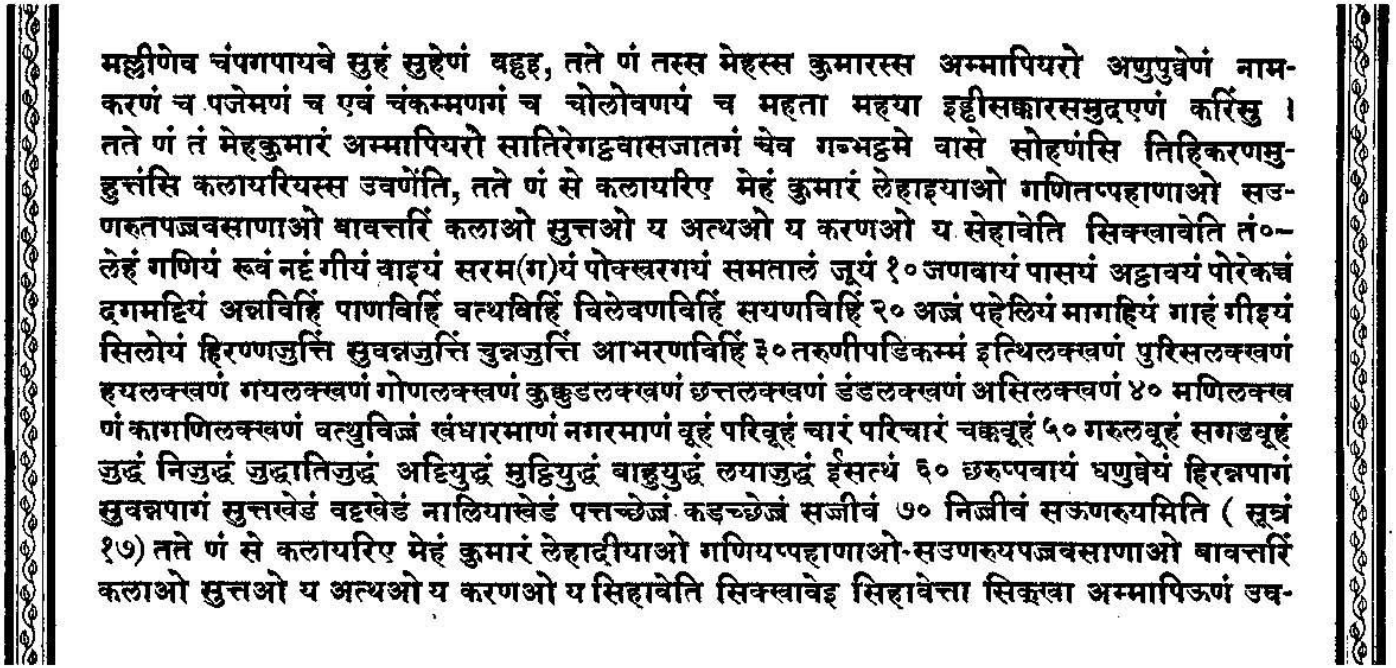
तन्नं अम्हे देवाणुप्पियाणं पियं णिवेदेमो पियं भे भवउ, तते णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म हट्ठतुट्ठ० ताओ अंगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विपुलेण य पुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति २ मत्थयधोयाओ करेति पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेति २ पडिविसज्जेति। तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायगिहं नगरं आसिय जाव परिगयं करेह २ चारगपरिसोहणं करेह २ त्ता माणुम्माणवद्धणं करेह २ एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति। तते णं से सेणिए राया अट्ठारससेणीप्पसेणीओ सद्दावेति २ एवं वदासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! रायगिहे नगरे अब्भितरबाहिरिए उस्सुक्कं उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिमकुडंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं गणियावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरितं पमुइयपक्कीलियाभिरामं जहारिहं ठिइवडियं दसदिवसियं करेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह तेवि करिंति २ तहेव पच्चप्पिणंति, तए णं से सेणिए राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने सइएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सेहि य जाएहिं दाएहिं भागेहिं दलयमाणे २ पडिच्छेमाणे २ एवं च णं विहरति, तते णं तस्स अम्मापियरो पढमेदिवसे जातकम्मं करेंति २ बितियदिवसे जागरियं करेंति २ ततिए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति २ एवामेव निव्वत्ते सुइजातकम्मकरणे संपत्ते बारसाहदिवसे विपुलं असणं पाणं खातिमं सातिमं उवक्ख-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	मेघकुमारस्य जन्म

डावेंति २ मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरिजणं बलं च बहवे गणणायग दंडणायग जाव आमन्तेति ततो पच्छा ण्हाता कयबलिकम्मा कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया महतिमहालयंसि भोयणमंडवंसि तं विपुलं असणं पाणं खाइमं सातिमं मित्तनातिगणणायग जाव सद्धिं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरति जिमितभुत्तुत्तरागतावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरितणगणणायग०विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति २ एवं वदासी–जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु डोहले पाउब्भूते तं होउ णं अम्हं दारए मेहे नामेणं मेहकुमारे, तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति, तए णं तते णं से मेहकुमारे पंचधातीपरिग्गहिए, तंजहा–खीरधातीए मंडणधातीए मज्जणधातीए कीलावणधातीए अंकधातीए अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणिवडभिवब्बरिबउसिजोणियपल्हविणइसिणियाचाधोरुगिणिलासियलउसियदमिलिसिंहलिआरबिपुलिंदिपक्कणिबहलिमरुंडिसबरिपारसीहिं णाणादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं इंगितचिंतियपत्थियवियाणियाहिं सदेसणेवत्थगहितवेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवालवरिसधरकंचुइअमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं संहरिज्जमाणे अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे परिगिज्जमाणे चालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे रम्मंसि मणिकोट्टिमतलंसि परिमिज्जमाणे २ णिवायणिवाघायंसि गिरिकंदर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



मल्लीणेव चंपगपायवे सुहं सुहेणं वड्ढइ, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं नामकरणं च पजेमणं च एवं चंकम्मणगं च चोलोवणयं च महता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करिंसु । तते णं तं मेहकुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजातगं चेव गब्भट्ठमे वासे सोहणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति, तते णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणितप्पहाणाओ सउणरुतपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेति सिक्खावेति तं०–लेहं गणियं रूवं नट्टं गीयं वाइयं सरम(ग)यं पोक्खरगयं समतालं जूयं १० जणवायं पासयं अट्ठावयं पोरेकच्चं दगमट्टियं अन्नविहिं पाणविहिं वत्थविहिं विलेवणविहिं सयणविहिं २० अज्जं पहेलियं मागहियं गाहं गीइयं सिलोयं हिरण्णजुत्तिं सुवन्नजुत्तिं चुन्नजुत्तिं आभरणविहिं ३० तरुणीपडिकम्मं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं हयलक्खणं गयलक्खणं गोणलक्खणं कुक्कुडलक्खणं छत्तलक्खणं डंडलक्खणं असिलक्खणं ४० मणिलक्खणं कागणिलक्खणं वत्थुविज्जं खंधारमाणं नगरमाणं वूहं परिवूहं चारं परिचारं चक्कवूहं ५० गरुलवूहं सगडवूहं जुद्धं निजुद्धं जुद्धातिजुद्धं अट्ठियुद्धं मुट्ठियुद्धं बाहुयुद्धं लयाजुद्धं ईसत्थं ६० छरुप्पवायं धणुवेयं हिरन्नपागं सुवन्नपागं सुत्तखेडं वट्टखेडं नालियाखेडं पत्तच्छेज्जं कडच्छेज्जं सज्जीवं ७० निज्जीवं सउणरुयमिति (सूत्रं १७) तते णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहादीयाओ गणियप्पहाणाओ-सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सिहावेति सिक्खावेइ सिहावेत्ता सिक्खा अम्मापिऊणं उव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र यत् सूत्रं १७ लिखितं तत् मुद्रण-दोषः संभाव्यते (सूत्र १७, यह संख्या दुसरी दफ़ा छपी है, इसके पहले पृष्ठ ६९ (३३)पे भी सू.१७ हि लिखा था

दवासप्तति-कलायाः नामानि

णेति, तते णं मेहस्स कुमारस्स अम्मापितरो तं कलायरियं मधुरेहिं वयणेहिं विपुलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति २ त्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति २ त्ता पडिविसज्जेंति (सूत्रं१८) तते णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए गीइरई गंधव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलं भोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाते यावि होत्था, तते णं तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं बावत्तरिकलापंडितं जाव वियालचारी जायं पासंति २ त्ता अट्ठ पासातवडिंसए करेंति अब्भुग्गयमुसियपहसिए विव मणिकणगरयणभत्तिचित्ते वाउद्धूतविजयवेजयंतीपडागाछत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतररयणपंजरुम्मिल्लियव्व मणिकणगथूभियाए वियसितसयपत्तपुंडरीए तिलयरयणद्धचंदचिए नानामणिमयदामालंकिते अंतो बहिं च सण्हे तवणिज्जरुइलवालुयापत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासादीए जाव पडिरूवे एगं च णं महं भवणं करेंति अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं अब्भुग्गयसुकयवइरवेतियातोरणवररइयसालभंजियासुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठितपसत्थवेरुलियखंभनाणामणिकणगरयणखचितउज्जलं बहुसमसुविभत्तनिचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामिय जाव भत्तिचित्तं खंभुग्गयवयरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजुत्तंपिव अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचणमणिरयणथूभियागं नाणाविहपं-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

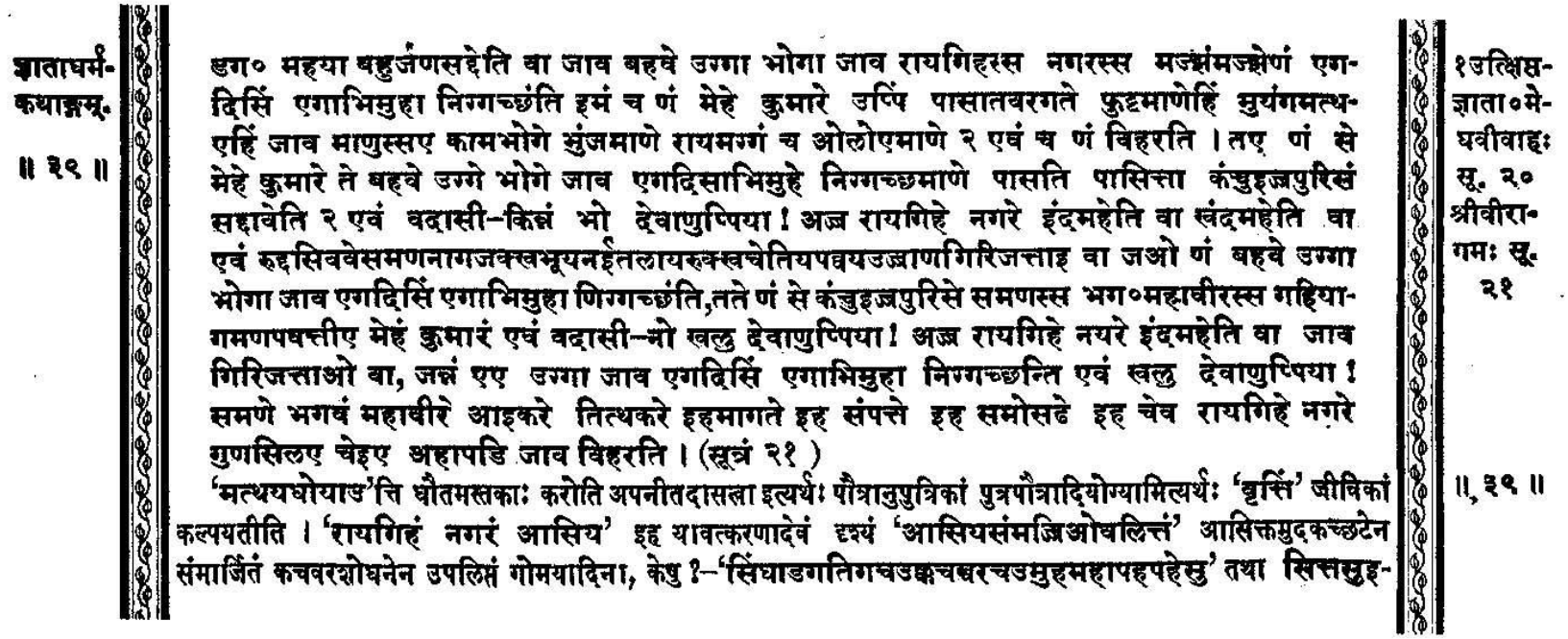
चवन्नघंटापडागपरिमंडियग्गसिरं धवलमिरीचिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं जाव गंधवट्टिभूयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं (सूत्रं१९) तते णं तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि सरिसियाणं सरिसत्तयाणं सरित्तयाणं सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाणं सरिसएहिंतो रायकुलेहिंतो आणिअल्लियाणं पसाहणट्ठंगअविहवबहुओवयणमंगलसुजंपियाहिं अट्ठहिं रायवरकण्णाहिं सद्धिं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु। तते णं तस्स मेहस्स अम्मापितरो इमं एतारूवं पीतिदाणं दलयइ अट्ठ हिरण्णकोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण भावियव्वं जाव पेसणकारियाओ, अन्नं च विपुलं धणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावतेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं, तते णं से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयति एगमेगं सुवन्नकोडिं दलयति जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयति, अन्नं च विपुलं धणकणग जाव परिभाएउं दलयति, तते णं से मेहे कुमारे उप्पिं पासातवरगते फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे उ० २ उवलालिज्जमाणे २ सद्दफरिसरसरूवगंधविउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरति (सूत्रं२०) तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेतिए जाव विहरति, तते णं से रायगिहे नगरे सिंघा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१८-२१]

दीप अनुक्रम [२५-३०]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ३९ ॥

डग० महया बहुजणसद्देति वा जाव बहवे उग्गा भोगा जाव रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं एग-दिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति इमं च णं मेहे कुमारे उप्पिं पासातवरगते फुट्टमाणेहिं मुयंगमत्थ-एहिं जाव माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे रायमग्गं च ओलोएमाणे २ एवं च णं विहरति । तए णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव एगदिसाभिमुहे निग्गच्छमाणे पासति पासित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेति २ एवं वदासी–किन्नं भो देवाणुप्पिया ! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहेति वा खंदमहेति वा एवं रुद्दसिववेसमणनागजक्खभूयनईतलायरुक्खचेतियपव्वयउज्जाणगिरिजत्ताइ वा जओ णं बहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा णिग्गच्छंति,तते णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भग०महावीरस्स गहिया-गमणपवत्तीए मेहं कुमारं एवं वदासी–नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नयरे इंदमहेति वा जाव गिरिजत्ताओ वा, जन्नं एए उग्गा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छन्ति एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइकरे तित्थकरे इहमागते इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडि जाव विहरति । (सूत्रं २१)

'मत्थयधोयाउ'त्ति धौतमस्तकाः करोति अपनीतदासत्वा इत्यर्थः पौत्रानुपुत्रिकां पुत्रपौत्रादियोग्यामित्यर्थः 'वृत्तिं' जीविकां कल्पयतीति । 'रायगिहं नगरं आसिय' इह यावत्करणादेवं दृश्यं 'आसियसंमज्जिओवलित्तं' आसिक्तमुदकच्छटेन संमार्जितं कचवरशोधनेन उपलिप्तं गोमयादिना, केषु ?–'सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउमुहमहापहपहेसु' तथा सित्तसुइ-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाता०मे-घवीवाहः सू. २० श्रीवीरा-गमः सू. २१

॥ ३९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यसंमट्ठरत्थंतरावणवीहियं' सिक्तानि जलेनात एव शुचीनि-पवित्राणि संमृष्टानि कचवरापनयनेन रथ्यान्तराणि आपणवीथयश्च-हट्टमार्गा यस्मिन् तत्तथा 'मंचातिमंचकलितं' मञ्चा-मालकाः प्रेक्षणकद्रष्टृजनोपवेशननिमित्तं अतिमञ्चाः-तेषामप्युपरि ये तैः कलितं 'णाणाविहरागभूसियज्झयपडागमंडियं' नानाविधरागैः कुसुम्भादिभिर्भूषिता ये ध्वजाः सिंहगरुडादिरूपकोपलक्षितबृह-त्पटरूपाः पताकाश्च तदितरास्ताभिर्मंडितं 'लाउल्लोइयमहियं' लाइयं-छगणादिना भूमौ लेपनं उल्लोइयं-सेटिकादिना कुड्या-दिषु धवलनं ताभ्यां महितं-पूजितं ते एव वा महितं-पूजनं यत्र तत्तथा 'गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितलं' गोशीर्षस्य-चन्दनविशेषस्य सरसस्य च-रक्तचन्दनविशेषस्यैव दर्दरेण-चपेटारूपेण दत्ता-न्यस्ताः पञ्चाङ्गुलयस्तला-हस्तका यस्मिन् कुड्यादिषु तत्तथा 'उवचियचंदणकलसं' उपचिता-उपनिहिता गृहान्तःकृतचतुष्केषु चन्दनकलशा-मङ्गल्यघटाः यत्र तत्तथा 'चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं' चंदनघटाः सुष्ठुकृताः तोरणानि च प्रतिद्वारं द्वारस्य २ देशभागेषु यत्र तत्तथा 'आसत्तोसत्तविपुलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं' आसक्तो-भूमिलग्नः उत्सक्तश्च-उपरिलग्नो विपुलो वृत्तो 'वग्घारि-य'त्ति प्रलम्बो माल्यदाम्नां-पुष्पमालानां कलापः-समूहो यत्र तत्तथा 'पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारक-लियं' पञ्चवर्णाः सरसाः सुरभयो ये मुक्ताः-करप्रेरिताः पुष्पपुञ्जास्तैर्य उपचारः-पूजा भूमेः तेन कलितं 'कालागरुपवर-कुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं' कुंदुरुक्कं-चीडा तुरुक्कं-सिल्हकं 'सुगन्धवरगन्धियं गंधवट्टिभूयं न-डनट्टगजल्लमल्लगमुट्ठियवेलंबगकहकहगपवगलासगआइक्खगलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियअणेगतालायरपरिगीयं' तत्र नटा-नाटकानां नाटयितारः नर्त्तका-ये नृत्यन्ति अंकिला इत्येके जल्ला-वरत्राखेलका राज्ञः स्तोत्रपाठका इत्यन्ये मल्लाः-

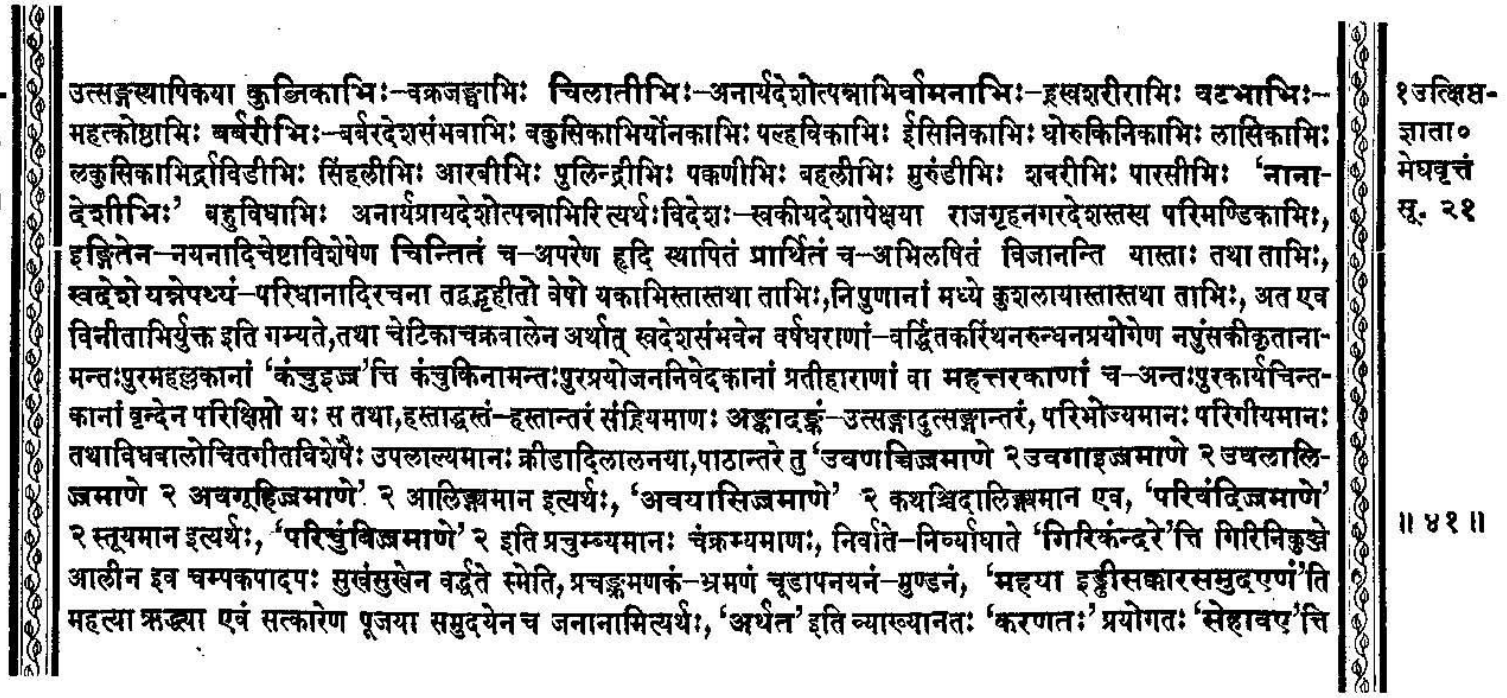
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रतीताः मौष्टिका–मल्ला एव ये मुष्टिभिः प्रहरन्ति विडम्बकाः–विदूषकाः कथाकथकाः–प्रतीताः प्लवका ये उत्प्लवन्ते नद्यादिकं वा तरन्ति लासकाः–ये रासकान् गायन्ति जयशब्दप्रयोक्तारो वा भाण्डा इत्यर्थः, आख्यायका–ये शुभाशुभमाख्यान्ति लङ्घा–वंशखेलकाः मङ्खाः–चित्रफलकहस्ता भिक्षाटाः तूणइल्लाः–तूणाभिधानवाद्यविशेषवन्तः, तुम्बवीणका–वीणावादकाः अनेके ये तालाचराः–तालाप्रदानेन प्रेक्षाकारिणः तेषां परि–समन्ताद्गीतं–ध्वनितं यत्र तत्तथा कुरुत स्वयं कारयतान्यैस्तथा चारगशोधनं कुरुत कृत्वा च मानोन्मानवर्द्धनं कुरुत, तत्र मानं–धान्यमानं सेतिकादि उन्मानं–तुलामानं कर्षादिकं श्रेणयः–कुम्भकारादिजातयः प्रश्रेणयः–तत्प्रभेदरूपाः । 'उस्सुक्क'मित्यादि, उच्छुल्कां–उन्मुक्तशुल्कां स्थितिपतितां कुरुतेति संबन्धः, शुल्कं तु विक्रेतव्यं भाण्डं प्रति राजदेयं द्रव्यं, उत्करां–उन्मुक्तकरां, करस्तु गवादीनां प्रति प्रतिवर्षं राजदेयं द्रव्यं, अविद्यमानो भटानां–राजपुरुषाणां आज्ञादायिनां प्रवेशः कुटुम्बिमन्दिरेषु यस्यां सा तथा तामभटप्रवेशां, दण्डेन निर्वृत्तं दण्डिमं कुदण्डेन निर्वृत्तं कुदण्डिमं राजद्रव्यं तन्नास्ति यस्यां सा तथा तामदंडिमकुदंडिमां , तत्र दण्डोऽपराधानुसारेण राजग्राह्यं द्रव्यं कुदण्डस्तु कारणिकानां प्रज्ञाद्यपराधान्महत्यप्यपराधिनोऽपराधे अल्पं राजग्राह्यं द्रव्यम्, अविद्यमानं 'धरिमं'ति ऋणद्रव्यं यस्यां सा तथा तां, अविद्यमानो धारणीयः–अधमर्णो यस्यां सा तथा तां, 'अणुद्धुयमुइंग'त्ति अनुद्धूता–आनुरूप्येण वादनार्थमुत्क्षिप्ता अनुद्धता वा–वादनार्थमेव वादकैरत्यक्ता मृदङ्गा–मर्दला यस्यां सा तथा तां, 'अ[म्मा]यमिलायमल्लदाम'न्ति अम्लानपुष्पमालां गणिकावरैः–विलासिनीप्रधानैर्नाटकीयैः–नाटकप्रतिबद्धपात्रैः कलिता या सा तथा तां, अनेकतालाचरानुचरितां–प्रेक्षाकारिविशेषैः सेवितां प्रमुदितैः–हृष्टैः प्रक्रीडितैश्च–क्रीडितुमारब्धैर्जनैरभिरामा या सा तथा तां, 'यथार्हां'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यथोचितां 'स्थितिपतितां' स्थितौ–कुलमर्यादायां पतिता–अन्तर्भूता या क्रिया पुत्रजन्मोत्सवसंबन्धिनी सा स्थितिपतिता तां, वाचनान्तरे 'दसदिवसियं ठियपडिय'न्ति दशाहिकमहिमानमित्यर्थः कुरुत कारयत वा, 'सएहिं'ति शतपरिमाणैः, 'दायेहिं'ति दानैः, वाचनान्तरे शतिकांश्चेत्यादि, यागान्–देवपूजाः दायान्–दानानि भागान्–लब्धद्रव्यविभागानिति, प्रथमे दिवसे जातकर्म–प्रसवकर्म्म नालच्छेदननिखननादिकं द्वितीयदिने जागरिकां–रात्रिजागरणं तृतीये दिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनं उत्सवविशेष एत इति, पाठान्तरे तु प्रथमदिवसे स्थितिपतितां तृतीये चंद्रसूर्यदर्शनिकां षष्ठे जागरिकां 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे'त्ति निवृत्ते–अतिक्रान्ते–अशुचीनां जातकर्म्मणां करणे 'निवत्ते सुइजायकम्मकरणे'त्ति वा पाठान्तरं, तत्र निर्वृत्ते–कृते शुचीनां जातकर्मणां करणे 'बारसाहे दिवसे'त्ति द्वादशाख्ये दिवसे इत्यर्थः, अथवा द्वादशानामह्नां समाहारो द्वादशाहं तस्य दिवसो येन द्वादशाहः पूर्यते तत्र तथा, मित्राणि–सुहृदः ज्ञातयो–मातापितृभ्रात्रादयः निजकाः–स्वकीयाः पुत्रादयः स्वजनाः–पितृव्यादयः संबन्धिनः–श्वशुरपुत्रश्वशुरादयः परिजनो–दासीदासादिः बलं च–सैन्यं च गणनायकादयस्तु प्रागभिहिताः, 'महइमहालइ'त्ति अतिमहति, आस्वादयन्तावास्वादनीयं, परिभाजयन्तौ अन्येभ्यो यच्छन्तौ मातापितराविति प्रक्रमः, 'जेमिय'त्ति जेमितौ भुक्तवन्तौ, 'भुत्तुत्तर'त्ति भुक्तोत्तरं–भुक्तोत्तरकालं 'आगय'त्ति आगतावुपवेशनस्थाने इति गम्यते, 'समाणे'त्ति सन्तौ, किंभूतौ भूतेत्याह ?–आचान्तौ शुद्धोदकयोगेन चोक्षौ लेपसिक्थाद्यपनयनेन अत एव परमशुचिभूताविति, 'अयमेयारूवे'त्ति इदमेतद्रूपं गौणं कोऽर्थो ?–गुणनिष्पन्नं नामधेयं–प्रशस्तं नाम मेघ इति । क्षीरधात्र्या–स्तन्यदायिन्या मण्डनधात्र्या–मण्डिकया मज्जनधात्र्या–स्नापिकया क्रीडनधात्र्या–क्रीडनकारिण्या अङ्कधात्र्या–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ४१ ॥

उत्सङ्गस्थापिकया कुब्जिकाभिः–वक्रजङ्घाभिः चिलातीभिः–अनार्यदेशोत्पन्नाभिर्वामनाभिः–ह्रस्वशरीराभिः वडभाभिः–महत्कोष्ठाभिः बर्बरीभिः–बर्बरदेशसंभवाभिः बकुसिकाभिर्योनकाभिः पल्हविकाभिः ईसिनिकाभिः थोरुकिनिकाभिः लासिकाभिः लकुसिकाभिर्द्राविडीभिः सिंहलीभिः आरबीभिः पुलिन्द्रीभिः पक्कणीभिः बहलीभिः मुरुंडीभिः शबरीभिः पारसीभिः 'नाना-देशीभिः' बहुविधाभिः अनार्यप्रायदेशोत्पन्नाभिरित्यर्थः विदेशः–स्वकीयदेशापेक्षया राजगृहनगरदेशस्तस्य परिमण्डिकाभिः, इङ्गितेन–नयनादिचेष्टाविशेषेण चिन्तितं च–अपरेण हृदि स्थापितं प्रार्थितं च–अभिलषितं विजानन्ति यास्ताः तथा ताभिः, स्वदेशे यन्नेपथ्यं–परिधानादिरचना तद्ग्रहीतो वेषो यकाभिस्तास्तथा ताभिः, निपुणानां मध्ये कुशलायास्तास्तथा ताभिः, अत एव विनीताभिर्युक्त इति गम्यते, तथा चेटिकाचक्रवालेन अर्थात् स्वदेशसंभवेन वर्षधराणां–वर्द्धितकरिंथनरुन्धनप्रयोगेण नपुंसकीकृतानाम् अन्तःपुरमहल्लकानां 'कंचुइज्ज'त्ति कंचुकिनामन्तःपुरप्रयोजननिवेदकानां प्रतीहाराणां वा महत्तरकाणां च–अन्तःपुरकार्यचिन्तकानां वृन्देन परिक्षिप्तो यः स तथा, हस्ताद्धस्तं–हस्तान्तरं संहियमाणः अङ्कादङ्कं–उत्सङ्गादुत्सङ्गान्तरं, परिभोज्यमानः परिगीयमानः तथाविधबालोचितगीतविशेषैः उपलाल्यमानः क्रीडादिलालनया, पाठान्तरे तु 'उवणचिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ अवगूहिज्जमाणे' २ आलिङ्ग्यमान इत्यर्थः, 'अवयासिज्जमाणे' २ कथञ्चिदालिङ्ग्यमान एव, 'परिचुंबिज्जमाणे' २ स्तूयमान इत्यर्थः, 'परिचुंबिज्जमाणे' २ इति प्रचुम्ब्यमानः चंक्रम्यमाणः, निर्वाते–निर्व्याघाते 'गिरिकंन्दरे'त्ति गिरिनिकुञ्जे आलीन इव चम्पकपादपः सुखंसुखेन वर्द्धते स्मेति, प्रचङ्क्रमणकं–भ्रमणं चूडापनयनं–मुण्डनं, 'महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं'ति महत्या ऋद्ध्या एवं सत्कारेण पूजया समुदयेन च जनानामित्यर्थः, 'अर्थत' इति व्याख्यानतः 'करणतः' प्रयोगतः 'सेहावए'त्ति

१उत्क्षिप्त-ज्ञाता० मेघवृत्तं सू. २१

॥ ४१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

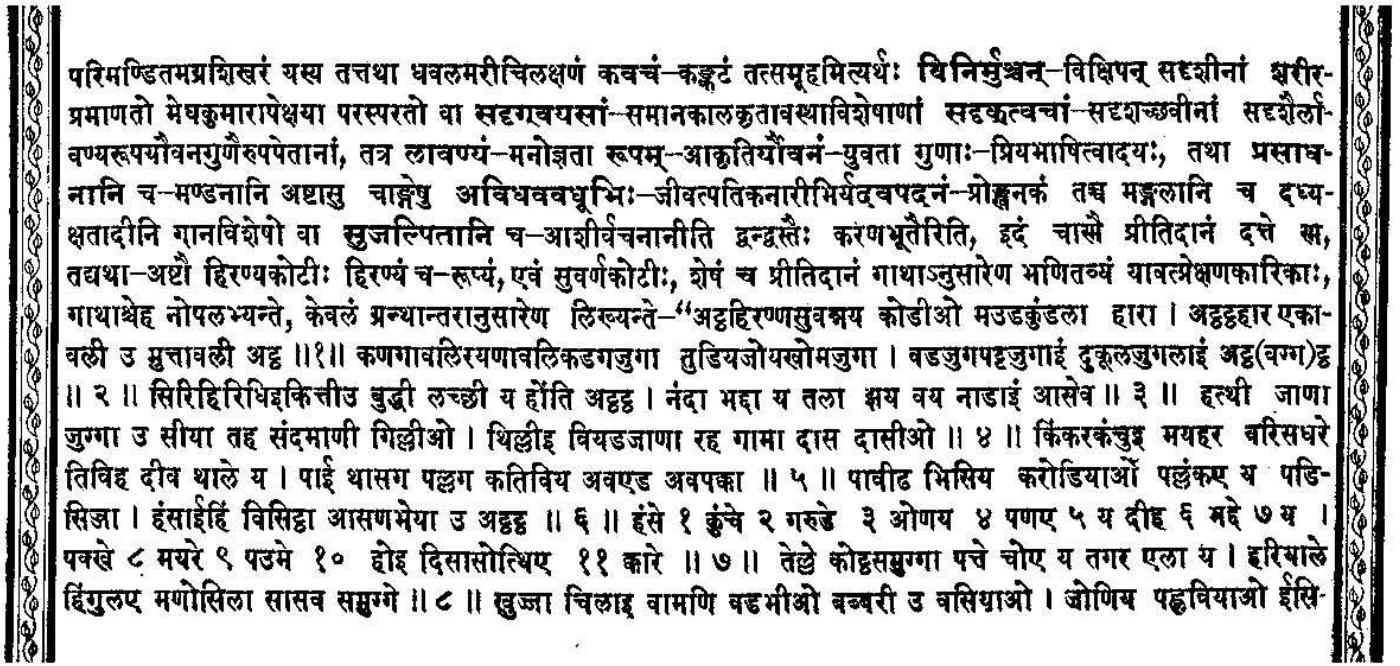
सेधयति निष्पादयति शिक्षयति–अभ्यासं कारयति 'नवंगसुत्तपडिबोहिए'त्ति नवाङ्गानि द्वे द्वे श्रोत्रे नयने नासिके जिह्वैका त्वगेका मनश्चैकं सुप्तानीव सुप्तानि–बाल्यादव्यक्तचेतनानि प्रतिबोधितानि–यौवनेन व्यक्तचेतनावन्ति कृतानि यस्य स तथा, आह च व्यवहारभाष्ये–'सोत्ताई नव सुत्ता'इत्यादि, अष्टादश विधिप्रकाराः–प्रवृत्तिप्रकाराः अष्टादशभिर्वा विधिभिः–भेदैः प्रचारः–प्रवृत्तिर्यस्याः सा तथा तस्यां, देशीभाषायां–देशभेदेन वर्णावलीरूपायां विशारदः–पण्डितो यः स तथा, गीतिरतिर्गंधर्वे–गीते नाट्ये च कुशलः, हयेन युध्यत इति हययोधी, एवं रथयोधी बाहुयोधी बाहुभ्यां प्रमृद्नातीति बाहुप्रमर्दी, साहसिकत्वाद्विकाले चरतीति विकालचारी । 'पासायवडिंसए'त्ति अवतंसका इवावतंसकाः शेखराः प्रासादाश्च तेऽवतंसकाश्च प्रासादावतंसका प्रधानप्रासादा इत्यर्थः'अब्भुग्गयभूसिय'त्ति अभ्युद्गतोच्छ्रितान् अत्युच्चानित्यर्थः, अत्र च द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्यः, 'पहसिएविव'त्ति प्रहसितानिव श्वेतप्रभाप्रबलपटलतया हसन्त इवेत्यर्थः, तथा मणिकनकरत्नानां भक्तिभिः–विच्छित्तिभिश्चित्रा ये ते तथा वातोद्धूता याः विजयसूचिका वैजयन्त्यभिधानाः पताकाः छत्रातिच्छत्राणि च तैः कलिता ये ते तथा ततः कर्मधारयस्ततस्तान्, तुङ्गान् कथमिव ?–गगनतलमभिलङ्घ्यच्छिखरान् 'जालंतररयणपंजरुम्मिल्लियव्व'त्ति जालान्तेषु–मत्तालम्बपर्यन्तेषु जालान्तरेषु वा–जालकमध्येषु रत्नानि येषां ते तथा ततो द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्यः पञ्जरोन्मीलितानि च–पृथक्कृतपञ्जराणि च प्रत्यग्रच्छायानि त्यर्थः, अथवा जालान्तररत्नपञ्जरैः–तत्समुदायविशेषैरुन्मीलितानीवोन्मीलितानि चोन्मीषितलोचनानि चेत्यर्थः, मणिकनकस्तूपिकानिति प्रतीतं विकसितानि शतपत्राणि पुण्डरीकाणि च प्रतिरूपापेक्षया साक्षाद्वा येषु ते तथा तान्, तिलकैः–पुण्ड्रैः रत्नैः–कर्केतनादिभिः अर्द्धचन्द्रैः–सोपानविशेषैः भित्तिषु वा–चन्दनादिमयैरालेख्यैः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अर्चिता ये ते तथा तान्, पाठान्तरेण 'तिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रान्' नानामणिमयदामालङ्कृतान् अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णान्–मसृणान् तपनीयस्य या रुचिरा वालुका तस्याः प्रस्तरः–प्रतरः प्राङ्गणेषु येषां ते तथा तान्, सुखस्पर्शान् सश्रीकाणि–सशोभनानि रूपाणि–रूपकाणि येषु ते तथा तान्, प्रसादीयान्–चित्ताह्लादकान् दर्शनीयान्–यान् पश्यचक्षुर्न श्राम्यति, अभिरूपान्–मनोज्ञरूपान् द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रूपं येषां ते तथा तान्, एकं महद्भवनमिति, अथ भवनप्रासादयोः को विशेषः?, उच्यते, भवनमायामापेक्षया किञ्चित्न्यूनोच्छ्रायमानं भवति, प्रासादस्तु आयामद्विगुणोच्छ्राय इति, अनेकेषु स्तम्भशतेषु संनिविष्टं यत्तत्तथा, लीलया स्थिताः शालभञ्जिकाः–पुत्रिका यस्मिन् तत्तथा, अभ्युद्गता–सुकृता वज्रस्य वेदिका–द्वारमुण्डिकोपरि वेदिका तोरणं च यत्र तत्तथा, वराभिः रचिताभी रतिदाभिर्वा शालभञ्जिकाभिः सुश्लिष्टाः संबद्धाः विशिष्टा लष्टाः संस्थिताः प्रशस्ताः वैडूर्यस्य स्तम्भा यत्र तत्तथा, नानामणिकनकरत्नैः खचितं च उज्ज्वलं च यत्तत्तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः,'बहुसम'त्ति अतिसमः सुविभक्तो निचितो–निबिडो रमणीयश्च भूभागो यत्र तत्तथा, ईहामृगवृषभतुरगनरमकरविहगव्यालकिन्नररुरुसरभचमरकुञ्जरवनलतापद्मलताभक्तिचित्रमिति यावत्करणात् दृश्यं, तथा स्तम्भोद्गतया–स्तम्भोपरिवर्तिन्या वज्रस्य वेदिकया परिगृहीतं–परिवेष्टितमभिरामं च यत्तत्तथा 'विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तं'ति विद्याधरयोर्यत् यमलं–समश्रेणीकं युगलं–द्वयं तेनैव यन्त्रेण–संचरिष्णुपुरुषप्रतिमाद्वयरूपेण युक्तं यत्तत्तथा आर्षत्वाच्चैवंविधः समास इति, तथा अर्चिषां–किरणानां सहस्रैर्मालनीयं–परिवारणीयं 'भिसमाणं'ति दीप्यमानं 'भिब्भिसमाणं'ति अतिशयेन दीप्यमानं चक्षुः कर्तृ लोकने–अवलोकने दर्शने सति लिशतीव–दर्शनीयत्वातिशयात् श्लिष्यतीव यत्र तत्तथा, नानाविधाभिः पञ्चवर्णाभिर्घण्टाप्रधानपताकाभिः

॥ ४२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



परिमण्डितमग्रशिखरं यस्य तत्तथा धवलमरीचिलक्षणं कवचं–कङ्कटं तत्समूहमित्यर्थः **विनिर्मुञ्चन्**–विक्षिपन् सदृशीनां शरीरप्रमाणतो मेघकुमारापेक्षया परस्परतो वा **सदृग्वयसां**–समानकालकृतावस्थाविशेषाणां **सदृक्त्वचां**–सदृशच्छवीनां सदृशैर्लावण्यरूपयौवनगुणैरुपपेतानां, तत्र **लावण्यं**–मनोज्ञता रूपम्–आकृतिर्यौवनं–युवता गुणाः–प्रियभाषित्वादयः, तथा **प्रसाधनानि** च–मण्डनानि अष्टासु चाङ्गेषु **अविधववधूभिः**–जीवत्पतिकनारीभिर्यद्वपदनं–प्रोङ्खनकं तच्च मङ्गलानि च दध्यक्षतादीनि ग्रानविशेषो वा **सुजल्पितानि** च–आशीर्वचनानीति द्वन्द्वस्तैः करणभूतैरिति, इदं चास्मै प्रीतिदानं दत्त स्म, तद्यथा–अष्टौ हिरण्यकोटीः हिरण्यं च–रूप्यं, एवं सुवर्णकोटीः, शेषं च प्रीतिदानं गाथाऽनुसारेण भणितव्यं यावत्प्रेक्षणकारिकाः, गाथाश्चेह नोपलभ्यन्ते, केवलं ग्रन्थान्तरानुसारेण लिख्यन्ते–"अट्ठहिरण्णसुवन्नय कोडीओ मउडकुंडला हारा । अट्ठट्ठहार एकावली उ मुत्तावली अट्ठ ॥१॥ कणगावलिरयणावलिकडगजुगा तुडियजोयखोमजुगा । वडजुगपट्टजुगाइं दुकूलजुगलाइं अट्ठ(वग्ग)ट्ठ ॥ २ ॥ सिरिहिरिधिइकित्तीउ बुद्धी लच्छी य होंति अट्ठट्ठ । नंदा भद्दा य तला सय वय नाडाइं आसेव ॥ ३ ॥ हत्थी जाणा जुग्गा उ सीया तह संदमाणी गिल्लीओ । थिल्लीइ वियडजाणा रह गामा दास दासीओ ॥ ४ ॥ किंकरकंचुइ मयहर वरिसधरे तिविह दीव थाले य । पाई थासग पल्लग कतिविय अवएड अवपक्का ॥ ५ ॥ पावीढ भिसिय करोडियाओ पल्लंकए य पडिसिज्जा । हंसाईहिं विसिट्ठा आसणभेया उ अट्ठट्ठ ॥ ६ ॥ हंसे १ कुंचे २ गरुडे ३ ओणय ४ पणए ५ य दीह ६ भद्दे ७ य । पक्खे ८ मयरे ९ पउमे १० होइ दिसासोत्थिए ११ क्कारे ॥ ७ ॥ तेल्ले कोट्ठसमुग्गा पत्ते चोए य तगर एला य । हरियाले हिंगुलए मणोसिला सासव समुग्गे ॥ ८ ॥ खुज्जा चिलाइ वामणि वडभीओ बब्बरी उ वसियाओ । जोणिय पह्नवियाओ ईसि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णिया घोरुइणिया य॥९॥लासिय लउसिय दमिणी सिंहलि तह आरबी पुलिंदी य । पक्कणि बहणि मुरंढी सबरीओ पारसीओ य ॥१०॥ छत्तधरी चेडीओ चामरधरतालियंटयधरीओ । सकरोडियाधरीउ खीराती पंच धाचीओ ॥ ११ ॥ अट्ठंगमद्दियाओ उम्मद्दिगविगमंडियाओ य । वण्णयचुण्णय पीसिय कीलाकारी य दवगारी ॥१२॥ उच्छाविया उ तह नाडइल्ल कोडुंबिणी महाणसिणी । भंडारि अज्जधारि पुप्फधरी पाणीयधरी य॥१३॥वलकारिय सेज्जाकारियाओ अब्भंतरी उ बाहिरिया । पडिहारी मालारी पेसणकारीउ अट्ठट्ठ ॥१४॥" अत्र चायं पाठक्रमः, स्वरूपं च–'अट्ठ मउडे मउडपवरे अट्ठ कुंडले कुंडलजोयप्पवरे,' एवमौचित्येनाध्येयं, हारार्द्धहारौ–अष्टादशनवसरिकौ एकावली–विचित्रमणिका, मुक्तावली–मुक्ताफलमयी, कनकावली–कनकमाणिक्यमयी, कटकानि–कलाचिकाभरणानि योगो–युगलं तुटिका–बाहुरक्षिका क्षौमं–कार्पासिकं वटकं–त्रिसरीमयं पट्टं–पट्टसूत्रमयं दुकूलं–दुकूलाभिधानवृक्षनिष्पन्नं वल्कं–वृक्षवल्कनिष्पन्नं, श्रीप्रभृतयः षट् देवताप्रतिमाः संभाव्यन्ते, नन्दादीनां लोकतोऽर्थोऽवसेयः, अन्ये त्वाहुः–नंदं–वृत्तं लोहासनं भद्रं–शरासनं, मूढक इति यत्प्रसिद्धं, 'तल'त्ति–अस्यैवं पाठः, "अट्ठ तले तलप्पवरे सवरयणामए नियगवरभवणकेऊ" वे च तालवृक्षाः संभाव्यन्ते, ध्वजाः–केतवो 'वए'त्ति गोकुलानि दशसाहस्रिकेण गोव्रजेनेत्येवं दृश्यं 'नाडय'त्ति 'बत्तीसइबद्धेणं नाडगेण'मिति दृश्यं, द्वात्रिंशद्बद्धं–द्वात्रिंशत्पात्रबद्धमिति व्याख्यातारः, 'आसे'त्ति 'आसे आसप्पवरे सवरयणामए सिरिघरपडिरूवे–श्रीगृहं भाण्डागारं, एवं हस्तिनोऽपि, यानानि–शकटादीनि युग्यानि–गोल्लविषये प्रसिद्धानि जम्पानानिद्विहस्तप्रमाणानि चतुरस्राणि वेदिकोपशोभितानि शिबिकाः–कूटाकारेणाच्छादिताः स्यन्दमानिकाः–पुरुषप्रमाणायामा जम्पानविशेषाः, गिल्लयः–हस्तिन उपरि कोल्लरूपा मानुषं गिलन्तीवेति गिल्लयः, लाटानां यानि अङ्गपल्यानानि तान्यन्यविषयेषु थिल्लीओ

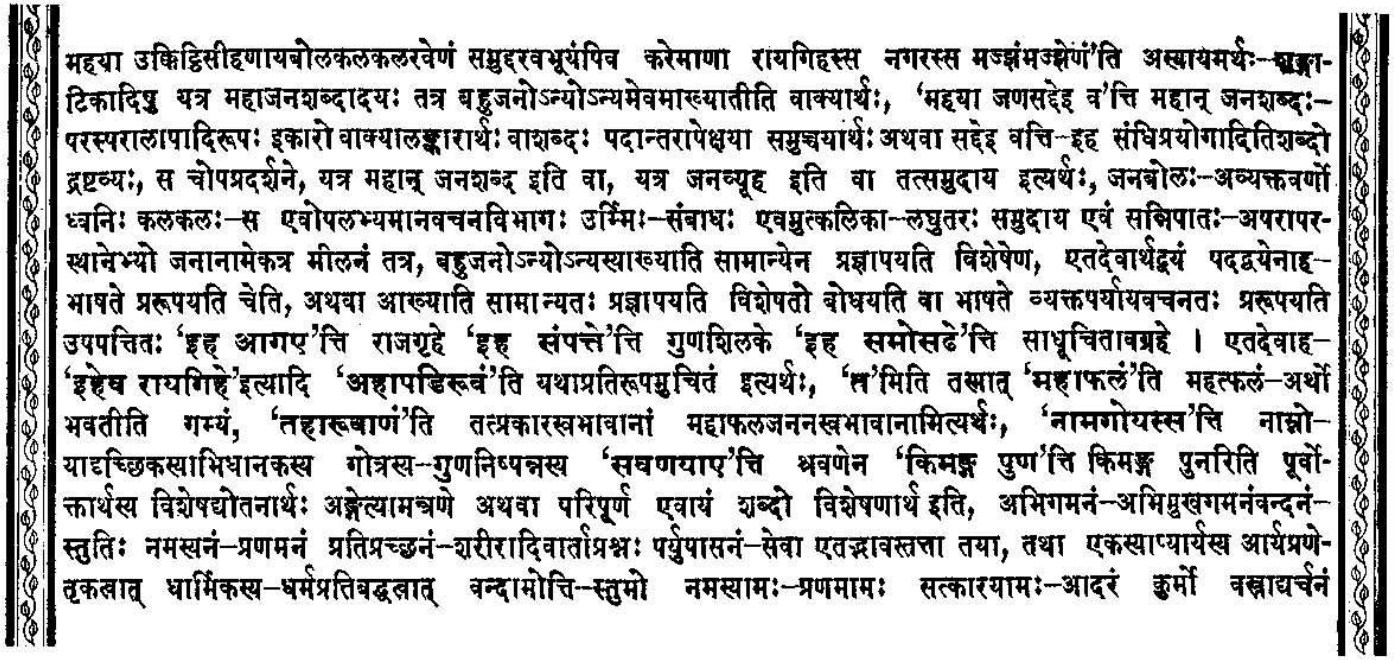
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अभिधीयन्ते, वियडजाणत्ति अनाच्छादितानि वाहनानि रहत्ति–संग्रामिकाः परियानिकाश्चाष्टाष्ट, तत्र संग्रामरथानां कटीप्रमाणा-फलकवेदिका भवन्ति, वाचनान्तरे रथानन्तरमश्वा हस्तिनश्चाभिधीयन्ते तत्र ते वाहनभूताः ज्ञेयाः, 'गाम'त्ति–दशकुलसाह-स्रिको ग्रामः तिविहदीवत्ति–त्रिविधा दीपाः अवलंबनदीपाः शृङ्खलाबद्धा इत्यर्थः, उत्कम्पनदीपाः–ऊर्ध्वदण्डवन्तः पञ्जरदीपा–अभ्रपटलादिपञ्जरयुक्ताः त्रयोऽप्येते त्रिविधाः सुवर्णरूप्यतदुभयमयत्वादिति, एवं स्थालादीनि सौवर्णादिभेदात् त्रिविधानि वाच्यानि, कइविका–कलाचिका अवएज इति–तापिकाहस्तकः 'अवपक्क'त्ति अवपाक्या तापिकेति संभाव्यते, भिसियाओ–आसनविशेषाः करोटिकाधारिकाः–स्थगिकाधारिकाः द्रवकारिकाः–परिहासकारिकाः, शेषं रूढितोऽवसेयं, 'अन्नं चे'त्यादि, विपुलं–प्रभूतं धनं–गणिमधरिममेयपरिच्छेद्यभेदेन चतुर्विधं कनकं च–सुवर्णं रत्नानि च–कर्केतनादीनि स्वस्वजातिप्रधानवस्तूनि वा मणयश्चन्द्रकान्ताद्या मौक्तिकानि च शङ्खाश्च प्रतीता एव शिलाप्रवालानि च–विद्रुमाणि अथवा शिलाश्च–राजपट्टा गन्ध-पेषणशिलाश्च प्रवालानि च–विद्रुमाणि रक्तरत्नानि च–पद्मरागादीनि एतान्येव 'संत'त्ति सत् विद्यमानं यत्सारं–प्रधानं स्वाप-तेयं–द्रव्यं तद्दन्तवन्ताविति प्रक्रमः, किंभूतं ?–'अलाहि'त्ति अलं–पर्याप्तं परिपूर्णं भवति 'याव'त्ति यावत्परिमाणं आसप्तमात् कुललक्षणे वंशे भवः कुलवंश्यस्तस्मात्सप्तमं पुरुषं यावदित्यर्थः प्रकामं–अत्यर्थं दातुं–दीनादिभ्यो दाने एवं भोक्तुं–स्वयं भोगे परिभाजयितुं–दायादादीनां परिभाजने तत्परिमाणं दत्तवन्ताविति प्रकृतं, 'उप्पिं'ति उपरि 'फुट्टमाणेहिं मुयं-गमत्थएहिं' स्फुटद्भिरिवातिरभसाऽऽस्फालनात् मृदङ्गभस्तकैः–मर्दलमुखपुटैः 'रायगिहे नगरे सिंघाडग' इत्यनेनालापकां-शेनेदं द्रष्टव्यं–'सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु' 'महया जणसद्देइ वा' इह यावत्करणादिदं दृश्यं 'जणसमूहेइ वा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जणबोलेइ वा जणकलकलेइ वा जणुम्मीइ वा जणुक्कलियाइ वा जणसन्निवाएइ वा बहुजनो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवं पन्नवेइ एवं भासइ एवं परूवेइ–एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे ३ आइगरे तित्थगरे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ–तं महाफलं खलु भो देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवि सवणयाए किमंग पुण अभिगमणवंदणणमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए, एगस्सवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए?, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो एयं नो पेच्चभवे हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए अणुगामित्ताए भविस्सइ'त्तिकट्टु 'बहवे उग्गा' इह यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं–उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं राइन्ना खत्तिया माहणा भडा जोहा मल्लई लेच्छई अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभियओ अप्पेगइया वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूयणवत्तियं एवं सक्कारवत्तियं सम्माणवत्तियं कोउहल्लवत्तियं असुयाइं सुणिस्सामो सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो अप्पे० मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो अप्पे० पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो अप्पेगइया जिणभत्तिरागेणं अप्पेगइया जीयमेयंतिकट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सिरसा-कंठेमालकडा आविद्धमणिसुवण्णा कप्पियहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तयसुकयसोभाभरणा पवरवत्थपरिहिया चंदणोवलित्तगायसरीरा अप्पेगइया हयगया एवं गयरहसिवियासंदमाणिगया अप्पेगइया पायविहारचारिणो पुरिसवग्गुरापरिखित्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



महया उक्किट्ठिसीहणायबोलकलकलरवेणं समुद्दरवभूयंपिव करेमाणा रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं'ति अस्यायमर्थः–सङ्घाटिकादिषु यत्र महाजनशब्दादयः तत्र बहुजनोऽन्योऽन्यमेवमाख्यातीति वाक्यार्थः, 'महया जणसद्देइ व'त्ति महान् जनशब्दः–परस्परालापादिरूपः इकारो वाक्यालङ्कारार्थः वाशब्दः पदान्तरापेक्षया समुच्चयार्थः अथवा सद्देइ वत्ति–इह संधिप्रयोगादितिशब्दो द्रष्टव्यः, स चोपप्रदर्शने, यत्र महान् जनशब्द इति वा, यत्र जनव्यूह इति वा तत्समुदाय इत्यर्थः, जनबोलः–अव्यक्तवर्णो ध्वनिः कलकलः–स एवोपलभ्यमानवचनविभागः उर्म्मिः–संबाधः एवमुत्कलिका–लघुतरः समुदाय एवं सन्निपातः–अपरापरस्थानेभ्यो जनानामेकत्र मीलनं तत्र, बहुजनोऽन्योऽन्यस्याख्याति सामान्येन प्रज्ञापयति विशेषेण, एतदेवार्थद्वयं पदद्वयेनाह–भाषते प्ररूपयति चेति, अथवा आख्याति सामान्यतः प्रज्ञापयति विशेषतो बोधयति वा भाषते व्यक्तपर्यायवचनतः प्ररूपयति उपपत्तितः 'इह आगए'त्ति राजगृहे 'इह संपत्ते'त्ति गुणशिलके 'इह समोसढे'त्ति साधूचितावग्रहे । एतदेवाह–'इहेव रायगिहे'इत्यादि 'अहापडिरूवं'ति यथाप्रतिरूपमुचितं इत्यर्थः, 'त'मिति तस्मात् 'महाफलं'ति महत्फलं–अर्थो भवतीति गम्यं, 'तहारूवाणं'ति तत्प्रकारस्वभावानां महाफलजननस्वभावानामित्यर्थः, 'नामगोयस्स'त्ति नाम्नो–यादृच्छिकस्याभिधानकस्य गोत्रस्य–गुणनिष्पन्नस्य 'सवणयाए'त्ति श्रवणेन 'किमङ्ग पुण'त्ति किमङ्ग पुनरिति पूर्वोक्तार्थस्य विशेषद्योतनार्थः अङ्गेत्यामन्त्रणे अथवा परिपूर्ण एवायं शब्दो विशेषणार्थ इति, अभिगमनं–अभिमुखगमनंवन्दनं–स्तुतिः नमस्यनं–प्रणमनं प्रतिप्रच्छनं–शरीरादिवार्ताप्रश्नः पर्युपासनं–सेवा एतद्भावस्तत्ता तया, तथा एकस्याप्यार्यस्य आर्यप्रणेतृकत्वात् धार्मिकस्य–धर्मप्रतिबद्धत्वात् वन्दामोत्ति–स्तुमो नमस्यामः–प्रणमामः सत्कारयामः–आदरं कुर्मो वस्त्राद्यर्चनं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वा सन्मानयामः–उचितप्रतिपत्तिभिः कल्याणं–कल्याणहेतुं मङ्गलं–दुरितोपशमहेतुं दैवतं–दैवं चैत्यमिव चैत्यं पर्युपासयामः–सेवामहे, एतत् णो–अस्माकं प्रेत्यभवे–जन्मान्तरे हिताय पथ्यान्नवत् सुखाय–शर्मणे क्षमाय–संगतत्वाय निःश्रेयसाय–मोक्षाय आनुगामिकत्वाय–भवपरम्परासुखानुबन्धिसुखाय भविष्यतीतिकृत्वा–इतिहेतोर्बहव उग्रा–आदिदेवावस्थापितारक्षवंशजाः उग्रपुत्राः–त एव कुमारावस्था एवं भोगाः–आदिदेवेनैवावस्थापितगुरुवंशजाताः राजन्या–भगवद्वयस्यवंशजाः क्षत्रियाः–सामान्यराजकुलीनाः भटाः–शौर्यवन्तो योधाः–तेभ्यो विशिष्टतरा मल्लकिनो लेच्छकिनश्च राजविशेषाः, यथा श्रूयन्ते चेटकराजस्याष्टादश गणराजानो नव मल्लकिनो नव लेच्छकिन इति, लेच्छइत्ति कचिद्गणिजो व्याख्याताः लिप्सव इति संस्कारेणेति, राजेश्वरादयः प्राग्वद्, 'अप्पेगइय'त्ति अप्येके केचन 'वंदणवत्तियं'ति वन्दनप्रत्ययं वन्दनहेतोः शिरसा कण्ठे च कृता–धृता माला यैस्ते शिरसाकण्ठेमालाकृताः कल्पितानि हारार्द्धहारत्रिसरकाणि प्रालम्बश्च–प्रलम्बमानः कटिसूत्रकं च येषां ते तथा, तथाऽन्यान्यपि सुकृतशोभान्याभरणानि येषां ते तथा, ततः कर्मधारयः, चन्दनावलिप्तानि गात्राणि यत्र तत्तथाविधं शरीरं येषां ते तथा, पुरिसवग्गुरत्ति–पुरुषाणां वागुरेव वागुरा–परिकरं च महया–महता उत्कृष्टिश्च–आनन्दमहाध्वनिः गम्भीरध्वनिः सिंहनादश्च बोलश्च–वर्णव्यक्तिवर्जितो ध्वनिरेव कलकलश्च–व्यक्तवचनः स एव एतल्लक्षणो यो रवस्तेन समुद्ररवभूतमिव–जलधिशब्दप्राप्तमिव तन्मयमिवेत्यर्थो नगरमिति गम्यते कुर्वाणाः 'एगदिसिं'ति एकया दिशा पूर्वोत्तरलक्षणया एकाभिमुखा–एकं भगवन्तं अभि मुखं येषां ते एकाभिमुखा निर्गच्छन्ति, 'इमं च णं'ति इतश्च 'रायमग्गं च ओलोएमाणे एवं च णं विहरइ, तते णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे जाव एगदिसाभिमुहे निग्गच्छ-

१उल्लिख-ज्ञाते श्री-वीरसम-वसरणं सू. २१

॥ ४५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

माणे पासइ पासित्ता' इत्यादि स्फुटं, इन्द्रमहः–इन्द्रोत्सवः एवमन्यान्यपि पदानि, नवरं स्कन्दः–कार्त्तिकेयः रुद्रः–प्रतीतः शिवो–महादेवः वैश्रमणो–यक्षराट् नागो–भवनपतिविशेषः यक्षो भूतश्च व्यन्तरविशेषौ चैत्यं–सामान्येन प्रतिमा पर्वतः–प्रतीत उद्यानयात्रा–उद्यानगमनं गिरियात्रा–गिरिगमनं 'गहियागमणपवित्तिए'त्ति परिगृहीतागमनप्रवृत्तिको गृहीतवार्त्त इत्यर्थः

तते णं से मेहे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, तहत्ति उवणेंति, तते णं से मेहे ण्हाते जाव सव्वालंकारविभूसिए चाउग्घंटं आसरहं दूरूढे समाणे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरियालसंपरिवुडे रायगिहस्स नगरस्स मज्झं मज्झेणं निग्गच्छति २ जेणामेव गुणसिलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्तातिछत्तं पडागातिपडागं विज्जाहरचारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासति पासित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहति २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तंजहा–सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए एगसाडियउत्तरासंगकरणेणं चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं मणसो एगत्तीकरणेणं, जेणामेव समणे भ० महावीरे तेणामेव उवागच्छति २ समणं ३ तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेति २ वंदति णमंसइ २ समणस्स ३ णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अंजलियउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासति, तए णं समणे ३ मेहकुमारस्स तीसे य महतिमहा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममातिक्खति जहा जीवा बज्झंति मुच्चंति जह य संकिलिस्संति धम्मकहा भाणियव्वा जाव परिसा पडिगया (सूत्रं २२)

'चाउग्घंटं आसरहं'ति चतस्रो घण्टा अवलम्बमाना यस्मिन् स तथा, अश्वप्रधानो रथोऽश्वरथः, युक्तमेव अश्वादिभिरिति, 'दूरूढे'त्ति आरूढः 'महया'इत्यादि महद् यत् भटानां चटकरं वृन्दं विस्तारवत्समूहस्तल्लक्षणो यः परिवारस्तेन संपरिवृतो यः स तथा। जृम्भकदेवास्तिर्यग्लोकचारिणः 'ओवयमाणे'त्ति अवपततो–व्योमाङ्गणादवतरतः 'उप्पयंते'त्ति भूतलादुत्पततो दृष्ट्वा 'सचित्ते'त्यादि सचित्तानां द्रव्याणां पुष्पताम्बूलादीनां 'विउसरणयाए'त्ति व्यवसरणेन व्युत्सर्जनेनाचित्तानां द्रव्याणामलङ्कारवस्त्रादीनामव्यवसरणेन–अव्युत्सर्जनेन, क्वचिद्विओसरणयेति पाठः, तत्र अचेतनद्रव्याणां छत्रादीनां व्युत्सर्जनेन–परिहारेण, उक्तं च–'अवणेइ पंच ककुहाणि रायवरवसभचिंधभूयाणि। छत्तं खग्गोवाहण मउडं तह चामराओ य ॥ १ ॥'त्ति एका शाटिका यस्मिंस्तत्तथा तच्च तदुत्तरासङ्गकरणं च–उत्तरीयस्य न्यासविशेषस्तेन, चक्षुःस्पर्शे–दर्शने अञ्जलिप्रग्रहेण–हस्तजोटनेन मनस एकत्वकरणेन एकाग्रत्वविधानेनेति भावः, क्वचिदेगत्तभावेणंति पाठः, अभिगच्छतीति प्रक्रमः 'महइमहालयाए'त्ति महातिमहत्याः धर्म–श्रुतचारित्रात्मकं आख्याति, स च यथा जीवा बध्यन्ते कर्म्मभिः मिथ्यात्वादिहेतुभिर्यथा मुच्यन्ते तैरेव ज्ञानाद्यासेवनतः यथा संक्लिश्यन्ते अशुभपरिणामा भवन्ति तथा आख्यातीति, इहावसरे धर्म्मकथा उपपातिकोक्ता भणितव्या, अत्र च बहुर्ग्रन्थ इति न लिखितः।

ततेणं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२३]

दीप अनुक्रम [३१]

महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेति २ वंदति नमंसइ २ एवं वदासी–सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं एवं पत्तियामि णं रोएमि णं अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गथं पावयणं एवमेयं भंते ! तहमेयं अवितहमेयं इच्छितमेयं पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छितपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेव तं तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं पव्वइस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तते णं से मेहे कुमारे समणं ३ वंदति नमंसति २ जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दूरूहति २ महया भडचडगरपहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरूहति २ जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छति २ त्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेति २ एवं वदासी–एवं खलु अम्मयाओ! मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए धम्मे णिसंते सेवि य मे धम्मे इच्छिते पडिच्छिते अभिरुइए, तते णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो एवं वदासी–धन्नेसि तुमं जाया! संपुन्नो० कयत्थो० कयलक्खणोऽसि तुमं जाया ! जन्नं तुमे समणस्स ३ अंतिए धम्मे णिसंते सेवि य ते धम्मे इच्छिते पडिच्छिते अभिरुइए, तते णं से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी-एवं खलु अम्मयातो ! मए समणस्स ३ अंतिए धम्मे निसंते सेवि य मे धम्मे० इच्छियपडिच्छिए अभिरुइए तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुंडे भवित्ताणं आगारातो अणगारियं पव्वइत्तए, तते णं सा धारिणी देवी तमणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुन्नं अमणामं असुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा णिसम्म इमेणं एतारूवेणं मणोमाणसिएणं महया-पुत्तदुक्खेणं अभिभूता समाणी सेयागयरोमकूवपगलंतविलीणगाया सोयभरपवेवियंगी णित्तेया दीणविमणवयणा करयलमलियव्व कमलमाला तक्खणउल्लुगदुब्बलसरीरा लावन्नसुन्ननिच्छायगयसिरीया पसिढिलभूसण-पडंतखुम्मियसंचुन्नियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा सूमालविकिन्नकेसहत्था मुच्छावसणट्ठचेयगरुई परसुनि-यत्तव्व चंपकलया निव्वत्तमहिमव्व इंदलट्ठी विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिया, तते णं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलजलविमलधाराए परिसिं-चमाणा निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवणतालवंटवीयणगजणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसा-सिया समाणी मुत्तावलिसन्निगासपवडंतअंसुधाराहिं सिंचमाणी पओहरे कलुणविमणदीणा रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेहं कुमारं एवं वयासी—(सूत्रं २३)

'सद्दहामी'त्यादि, श्रद्दधे–अस्तीत्येवं प्रतिपद्ये नैर्ग्रन्थं प्रवचनं–जैनं शासनं, एवं 'पत्तियामि'त्ति प्रत्ययं करोम्यस्येति भावः, रोचयामि–करणरुचिविषयीकरोमि चिकीर्षामीत्यर्थः, किमुक्तं भवति ?–अभ्युत्तिष्ठामि अभ्युपगच्छामीत्यर्थः, तथा एवमेवैतत् यद्भवद्भिः प्रतिपादितं तत्तथैवेत्यर्थः, तथैव तद्यथा वस्तु, किमुक्तं भवति ?–अवितथं सत्यमित्यर्थः, अत 'इच्छिए'इत्यादि प्राग्वत्,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'इच्छिए'त्ति इष्टः, 'पडिच्छिए'त्ति पुनः पुनरिष्टः भावतो वा प्रतिपन्नः अभिरुचितः–स्वादुभावमिवोपगतः **'आगाराओ'**त्ति गेहात् निष्क्रम्यानगारितां–साधुतां प्रव्रजितुं मे, **'मणोमाणसिएणं'**ति मनसि भवं यन्मानसिकं तन्मनोमानसिकं तेन अबहिर्वृत्तिनेत्यर्थः, तथा स्वेदागताः–आगतस्वेदा रोमकूपा येषु तानि स्वेदागतरोमकूपाणि, तत एव प्रगलन्ति–क्षरन्ति विलीनानि च–क्लिन्नानि गात्राणि यस्याः सा तथा शोकभरेण प्रवेपिताङ्गी–कम्पितगात्रा या सा तथा, निस्तेजा, दीनस्येव–विमनस इव वदनं वचनं वा यस्याः सा तथा, तत्क्षणमेव–प्रव्रजामीति वचनश्रवणक्षणे एव अवरुग्णं–म्लानं दुर्बलं च शरीरं यस्याः सा तथा, लावण्येन शून्या लावण्यशून्या निश्छाया–गतश्रीका च या सा तथेति, पदचतुष्टयस्य कर्मधारयः, दुर्बलत्वात् प्रशिथिलानि भूषणानि यस्याः सा तथा, कृशीभूतबाहुत्वात्पतन्ति–विगलन्ति **खुम्मियत्ति**–भूमिपतनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि चूर्णितानि च–भूपातादेव भग्नानि धवलवलयानि यस्याः सा तथा, प्रभ्रष्टमुत्तरीयं च यस्याः सा तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः, सुकुमारो विकीर्णः केशहस्तः–केशपाशो यस्याः सा तथा, मूर्च्छावशान्नष्टे चेतसि सति गुर्वीं–अलघुशरीरा या सा तथा, परशुनिकृत्तेव चम्पकलता कुट्टिमतले पतितेति संबन्धः, निवृत्तमहेवेन्द्रयष्टिः–इन्द्रकेतुर्विमुक्तसन्धिबन्धना–श्लथीकृतसन्धाना धसतीत्यनुकरणे ससंभ्रमं व्याकुलचित्ततया **'उक्खित्तियाए'**त्ति अपवर्त्तितया क्षिप्तया त्वरितं–शीघ्रं काञ्चनभृङ्गारमुखविनिर्गता या शीतलजलविमलधारा तया परिषिच्यमाना निर्वापिता–शीतलीकृता गात्रयष्टिर्यस्याः सा परिषिच्यमाननिर्वापितगात्रयष्टिः, उत्क्षेपको–वंशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यो दण्डमध्यभागः तालवृन्तं तालाभिधानवृक्षपत्रवृन्तं पत्तछोट इत्यर्थः, तदाकारं वा चर्ममयं वीजनकं तु–वंशादिमयमेवान्तर्ग्राह्यदण्डं एतैर्जनितो यो वातस्तेन **सफुसिएणं** सोदकबिन्दुना अन्तःपुरजनेन समाश्वासिता सती मुक्ता-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२३]

दीप अनुक्रम [३१]

वलीसन्निकाशा याः प्रपतन्त्योऽश्रुधारास्ताभिः सिञ्चन्ती पयोधरौ, करुणा च विमनाश्च दीना च या सा तथा, रुदन्ती–साश्रुपातं शब्दं विदधाना क्रदन्ती–ध्वनिविशेषेण तेपमाना–स्वेदलालादि क्षरन्ती शोचमाना–हृदयेन विलपन्ती–आर्त्तस्वरेण ।

तुमंसि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूते जीवियउस्सासय हियया णंदजणणे उंबरपुप्फं व दुल्लभे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए ? णो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तते तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सएकामभोगे जाव ताव वयं जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगतेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जंमि निरावयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वइस्ससि । तते णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वदासी-तहेव णं तं अम्मतायो ! जहेव णं तुम्हे ममं एवं वदह तुमंसि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स ३ जाव पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे अणियए असासए वसणसउवद्दवाभिभूते विज्जुलयाचंचले अणिचे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भरागसरिसे सुविणदंसणोवमे सडणपडणविद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्स विप्पजहणिज्जे से केणं जाणति अम्मयाओ ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ?, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे समणस्स भगवतो० जाव पव्वतित्तए, तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दीक्षा-सम्बन्धे मेघकुमारेण सह तस्य माता-पितरः संवादः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३२]

एवं वदासी–इमातो ते जाया ! सरिसियाओ सरिसत्तयाओ सरिसव्वयाओ सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणियल्लियाओ भारियाओ, तं भुंजाहि णं जाया ! एताहिं सद्धिं विपुले माणुस्सए कामभोगे तओ पच्छा भुत्तभोगे समणस्स ३ जाव पव्वइस्ससि, तते णं से मेहे कुमारे अम्मापितरं एवं वदासी–तहेव णं अम्मयाओ ! जन्नं तुब्भे ममं एवं वदह–इमाओ ते जाया ! सरिसियाओ जाव समणस्स ३ पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई असासया वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा दुरुस्सासनीसासा दुरूयमुत्तपुरिसपूयबहुपडिपुन्ना उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणगवंतपित्तसुक्कसोणितसंभवा अधुवा अणितिया असासया सडणपडणविद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा, से के णं अम्मयाओ ! जाणंति के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ?, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! जाव पव्वतित्तए । तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापितरो एवं वदासी–इमे ते जाया ! अज्जयपज्जयपिउपज्जयागए सुबहु हिरन्ने य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणिमोत्तिए य संखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावतिज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं तं अणुहोहि ताव जाव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पव्वइस्ससि, तते णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वदासी–तहेव णं अम्मयाओ ! जण्णं तं वदह इमे ते जाया !

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

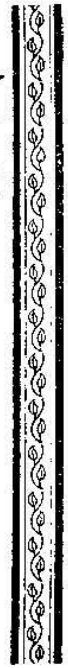
दीक्षा-सम्बन्धे मेघकुमारेण सह तस्य माता-पितरः संवादः

***अत्र शीर्षक-स्थाने सू.२४ मुद्रितं तत् सत्यम्, परन्तु सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम २३ मुद्रितं. तत् कारणात् मया २३-R निर्दिष्टम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३२]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्-

॥ ४९ ॥

अज्जगपज्जगपि० जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ! हिरन्ने य सुवण्णे य जाव सावतेज्जे अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए मच्चुसाहिए अग्गिसामन्ने जाव मच्चुसामन्ने सडणपडणविद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे से के णं जाणइ अम्मयाओ! के जाव गमणाए तं इच्छामि णं जाव पव्वतित्तए। तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएइ मेहं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा सन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणा एवं वदासी–एस णं जाया! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुन्ने णेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे अहीव एगंतदिट्ठीए खुरो इव एगंतधाराए लोहमया इव जवा चावेयव्वा वालुयाकवले इव निरस्साए गंगा इव महानदी पडिसोयगमणाए महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे तिक्खं चंकमियव्वं गरुअं लंबेयव्वं असिधारव्व संचरियव्वं, णो य खलु कप्पति जाया! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठवियए वा रइयए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा, तुमं च णं जाया! सुहसमुचिए णो चेव णं दुहसमुचिए णालं सीयं णालं उण्हं णालं



१उत्क्षिप्त-ज्ञाते दीक्षायां मातापितृ-रोधः सू. २४

॥ ४९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दीक्षा-सम्बन्धे मेघकुमारेण सह तस्य माता-पितरः संवादः

***अत्र शीर्षक-स्थाने सू.२४ मुद्रितं तत् सत्यम्, परन्तु सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम २३ मुद्रितं. तत् कारणात् मया २३-R निर्दिष्टम्

प्रत सूत्रांक [२३-R]

दीप अनुक्रम [३२]

खुहं णालं पिवासं णालं वाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइयविविहे रोगायंके उच्चावए गामकंटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिन्ने सम्मं अहियासित्तए, भुंजाहि ताव जाया! माणुस्सए कामभोगे ततो पच्छा भुत्तभोगी समणस्स ३ जाव पव्वतिस्ससि, तते णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापितरं एवं वदासी–तहेव णं तं अम्मयाओ! जन्नं तुब्भे ममं एवं वदह एस णं जाया! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे० पुणरवि तं चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स ३ जाव पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ! णिग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स णो चेव णं धीरस्स निच्छियस्स (च्छया) ववसियस्स एत्थं किं दुक्करं करणयाए?, तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ० जाव पव्वइत्तए (सूत्रं २३)

'जाय'त्ति हे पुत्र! इष्टः इच्छाविषयत्वात् कान्तः कमनीयत्वात् प्रियः प्रेमनिबन्धनत्वात् मनसा ज्ञायसे उपादेयतयेति मनोज्ञः मनसा अभ्यसे–गम्यसे इति मनोऽमः, स्थैर्यगुणयोगात् स्थैर्यो वैश्वासिको–विश्वासस्थानं संमतः कार्यकरणे बहुमतः बहुष्वपि कार्येषु बहुर्वाऽनल्पतयाऽस्तोकतया मतो बहुमतः, कार्यविधानस्य पश्चादपि मतोऽनुमतः, 'भाण्डकरण्डकसमानो' भाण्डं–आभरणं, रत्नमिव रत्नं मनुष्यजातावुत्कृष्टत्वात् रजनो वा रञ्जक इत्यर्थः रत्नभूतः–चिन्तामणिरत्नादिकल्पो जीवितमस्माकमुच्छ्वासयसि–वर्द्धयसीति जीवितोच्छ्वासः स एव जीवितोच्छ्वासिकः, वाचनान्तरे तु जीविउस्सइएत्ति–जीवितस्योत्सव इव जीवितोत्सवः स एव जीवितोत्सविकः, हृदयानन्दजननः उदुम्बरपुष्पं ह्यलभ्यं भवति अतस्तेनोपमानं, 'जाव ताव अम्हेहिं जीवामो'त्ति इह भुङ्क्ष्व ताव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

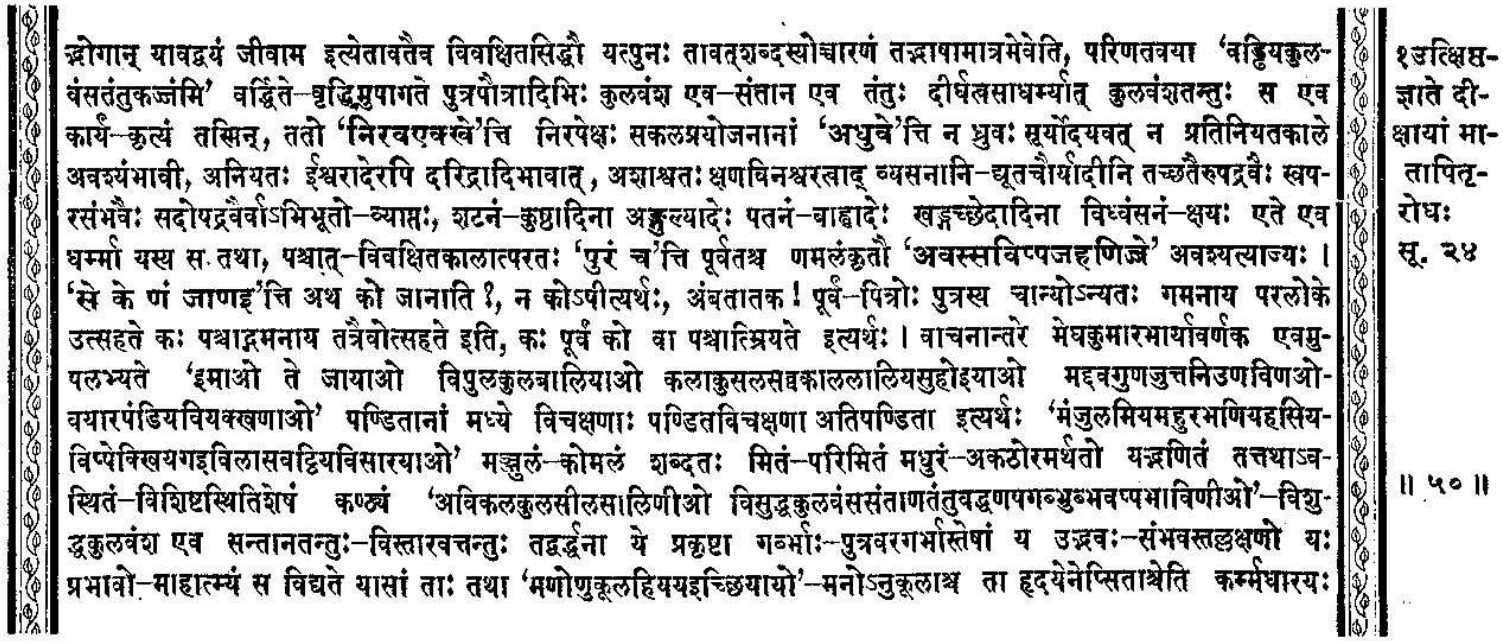
दीक्षा-सम्बन्धे मेघकुमारेण सह तस्य माता-पितरः संवादः

***अत्र शीर्षक-स्थाने सू.२४ मुद्रितं तत् सत्यम्, परन्तु सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम २३ मुद्रितं. तत् कारणात् मया २३-R निर्दिष्टम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२३-R]

दीप अनुक्रम [३२]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ५० ॥

द्रोगान् यावद्वयं जीवाम इत्येतावतैव विवक्षितसिद्धौ यत्पुनः तावत्शब्दस्योच्चारणं तद्भाषामात्रमेवेति, परिणतवया 'वड्ढियकुल-वंसतंतुकज्जंमि' वर्द्धिते–वृद्धिमुपागते पुत्रपौत्रादिभिः कुलवंश एव–संतान एव तंतुः दीर्घत्वसाधर्म्यात् कुलवंशतन्तुः स एव कार्यं–कृत्यं तस्मिन्, ततो 'निरवएक्खे'त्ति निरपेक्षः सकलप्रयोजनानां 'अधुवे'त्ति न ध्रुवः सूर्योदयवत् न प्रतिनियतकाले अवश्यंभावी, अनियतः ईश्वरादेरपि दरिद्रादिभावात्, अशाश्वतः क्षणविनश्वरत्वाद् व्यसनानि–द्यूतचौर्यादीनि तच्छतैरुपद्रवैः स्वप-रसंभवैः सदोपद्रवैर्वाऽभिभूतो–व्याप्तः, शटनं–कुष्ठादिना अङ्गुल्यादेः पतनं–बाह्वादेः खड्गच्छेदादिना विध्वंसनं–क्षयः एते एव धर्म्मा यस्य स तथा, पश्चात्–विवक्षितकालात्परतः 'पुरं च'त्ति पूर्वतश्च णमलंकृतौ 'अवस्सविप्पजहणिज्जे' अवश्यत्याज्यः। 'से के णं जाणइ'त्ति अथ को जानाति ?, न कोऽपीत्यर्थः, अंबतातक ! पूर्वं–पित्रोः पुत्रस्य चान्योऽन्यतः गमनाय परलोके उत्सहते कः पश्चाद्गमनाय तत्रैवोत्सहते इति, कः पूर्वं को वा पश्चात्म्रियते इत्यर्थः। वाचनान्तरे मेघकुमारभार्यावर्णक एवमु-पलभ्यते 'इमाओ ते जायाओ विपुलकुलबालियाओ कलाकुसलसव्वकाललालियसुहोइयाओ मद्दवगुणजुत्तनिउणविणओ-वयारपंडियवियक्खणाओ' पण्डितानां मध्ये विचक्षणाः पण्डितविचक्षणा अतिपण्डिता इत्यर्थः 'मंजुलमियमहुरभणियहसिय-विप्पेक्खियगइविलासवट्टियविसारयाओ' मञ्जुलं–कोमलं शब्दतः मितं–परिमितं मधुरं–अकठोरमर्थतो यद्भणितं तत्तथाऽव-स्थितं–विशिष्टस्थितिशेषं कण्ठ्यं 'अविकलकुलसीलसालिणीओ विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धणपगब्भुब्भवप्पभाविणीओ'–विशु-द्धकुलवंश एव सन्तानतन्तुः–विस्तारवत्तन्तुः तद्वर्द्धना ये प्रकृष्टा गर्भाः–पुत्रवरगर्भास्तेषां य उद्भवः–संभवस्तल्लक्षणो यः प्रभावो–माहात्म्यं स विद्यते यासां ताः तथा 'मणोणुकूलहियइच्छियायो'–मनोऽनुकूलाश्च ता हृदयेनेप्सिताश्चेति कर्म्मधारयः

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते दी-क्षायां मा-तापितृ-रोधः सू. २४

॥ ५० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

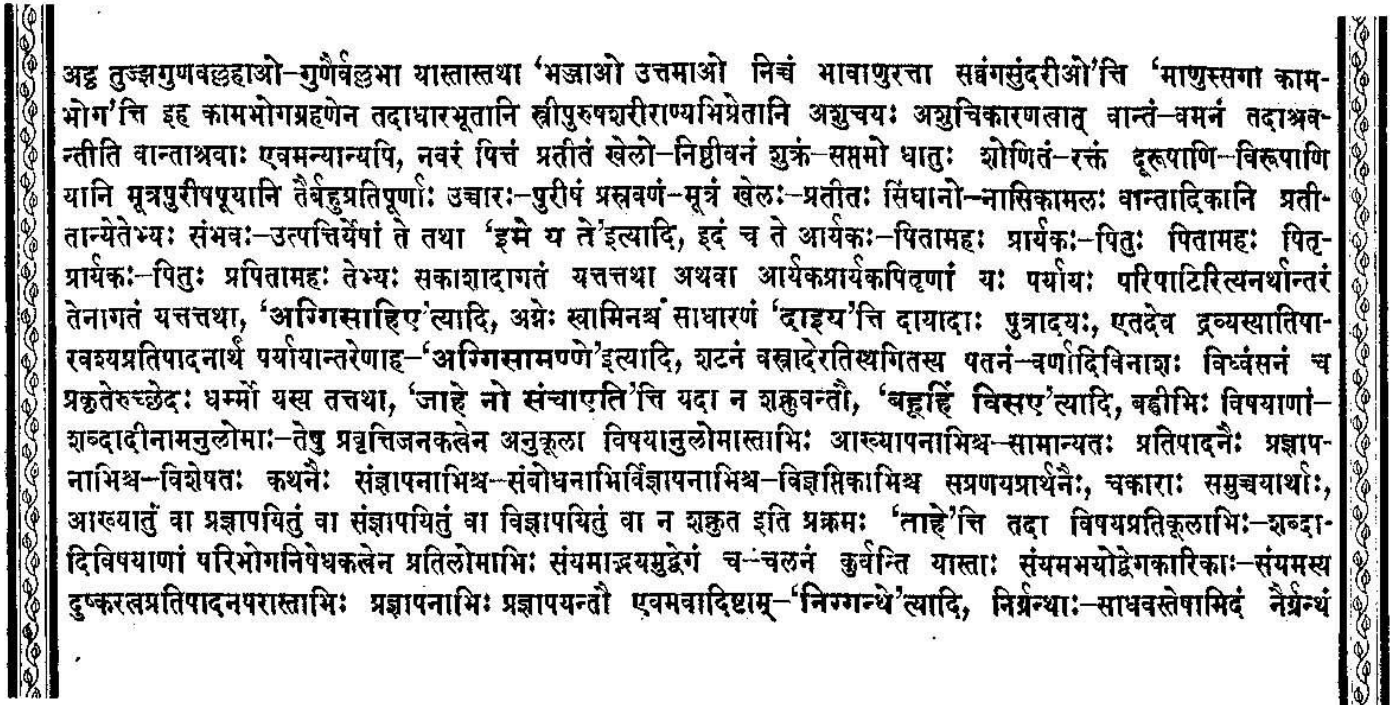
दीक्षा-सम्बन्धे मेघकुमारेण सह तस्य माता-पितरः संवादः

***अत्र शीर्षक-स्थाने सू.२४ मुद्रितं तत् सत्यम्, परन्तु सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम २३ मुद्रितं. तत् कारणात् मया २३-R निर्दिष्टम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२३-R]

दीप अनुक्रम [३२]



अट्ठ तुज्झगुणवल्लहाओ–गुणैर्वल्लभा यास्तास्तथा 'भज्जाओ उत्तमाओ निच्चं भावाणुरत्ता सव्वंगसुंदरीओ'त्ति 'माणुस्सगा कामभोग'त्ति इह कामभोगग्रहणेन तदाधारभूतानि स्त्रीपुरुषशरीराण्यभिप्रेतानि अशुचयः अशुचिकारणत्वात् वान्तं–वमनं तदाश्रवन्तीति वान्ताश्रवाः एवमन्यान्यपि, नवरं पित्तं प्रतीतं खेलो–निष्ठीवनं शुक्रं–सप्तमो धातुः शोणितं–रक्तं दूरूपाणि–विरूपाणि यानि मूत्रपुरीषपूयानि तैर्बहुप्रतिपूर्णाः उच्चारः–पुरीषं प्रस्रवणं–मूत्रं खेलः–प्रतीतः सिंघानो–नासिकामलः वान्तादिकानि प्रतीतान्येतेभ्यः संभवः–उत्पत्तिर्येषां ते तथा 'इमे य ते'इत्यादि, इदं च ते आर्यकः–पितामहः प्रार्यकः–पितुः पितामहः पितृप्रार्यकः–पितुः प्रपितामहः तेभ्यः सकाशादागतं यत्तत्तथा अथवा आर्यकप्रार्यकपितृणां यः पर्यायः परिपाटिरित्यनर्थान्तरं तेनागतं यत्तत्तथा, 'अग्गिसाहिए'त्यादि, अग्नेः स्वामिनश्च साधारणं 'दाइय'त्ति दायादाः पुत्रादयः, एतदेव द्रव्यस्वातिपारवश्यप्रतिपादनार्थं पर्यायान्तरेणाह–'अग्गिसामण्णे'इत्यादि, शटनं वस्त्रादेरतिस्थगितस्य पतनं–वर्णादिविनाशः विध्वंसनं च प्रकृतेरुच्छेदः धर्म्मो यस्य तत्तथा, 'जाहे नो संचाएति'त्ति यदा न शक्नुवन्तौ, 'बहूहिं विसए'त्यादि, बह्वीभिः विषयाणां–शब्दादीनामनुलोमाः–तेषु प्रवृत्तिजनकत्वेन अनुकूला विषयानुलोमास्ताभिः आख्यापनाभिश्च–सामान्यतः प्रतिपादनैः प्रज्ञापनाभिश्च–विशेषतः कथनैः संज्ञापनाभिश्च–संबोधनाभिर्विज्ञापनाभिश्च–विज्ञप्तिकाभिश्च सप्रणयप्रार्थनैः, चकाराः समुच्चयार्थाः, आख्यातुं वा प्रज्ञापयितुं वा संज्ञापयितुं वा विज्ञापयितुं वा न शक्नुत इति प्रक्रमः 'ताहे'त्ति तदा विषयप्रतिकूलाभिः–शब्दादिविषयाणां परिभोगनिषेधकत्वेन प्रतिलोमाभिः संयमाद्भयमुद्वेगं च–चलनं कुर्वन्ति यास्ताः संयमभयोद्वेगकारिकाः–संयमस्य दुष्करत्वप्रतिपादनपरास्ताभिः प्रज्ञापनाभिः प्रज्ञापयन्तौ एवमवादिष्टाम्–'निग्गन्थे'त्यादि, निर्ग्रन्थाः–साधवस्तेषामिदं नैर्ग्रन्थं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

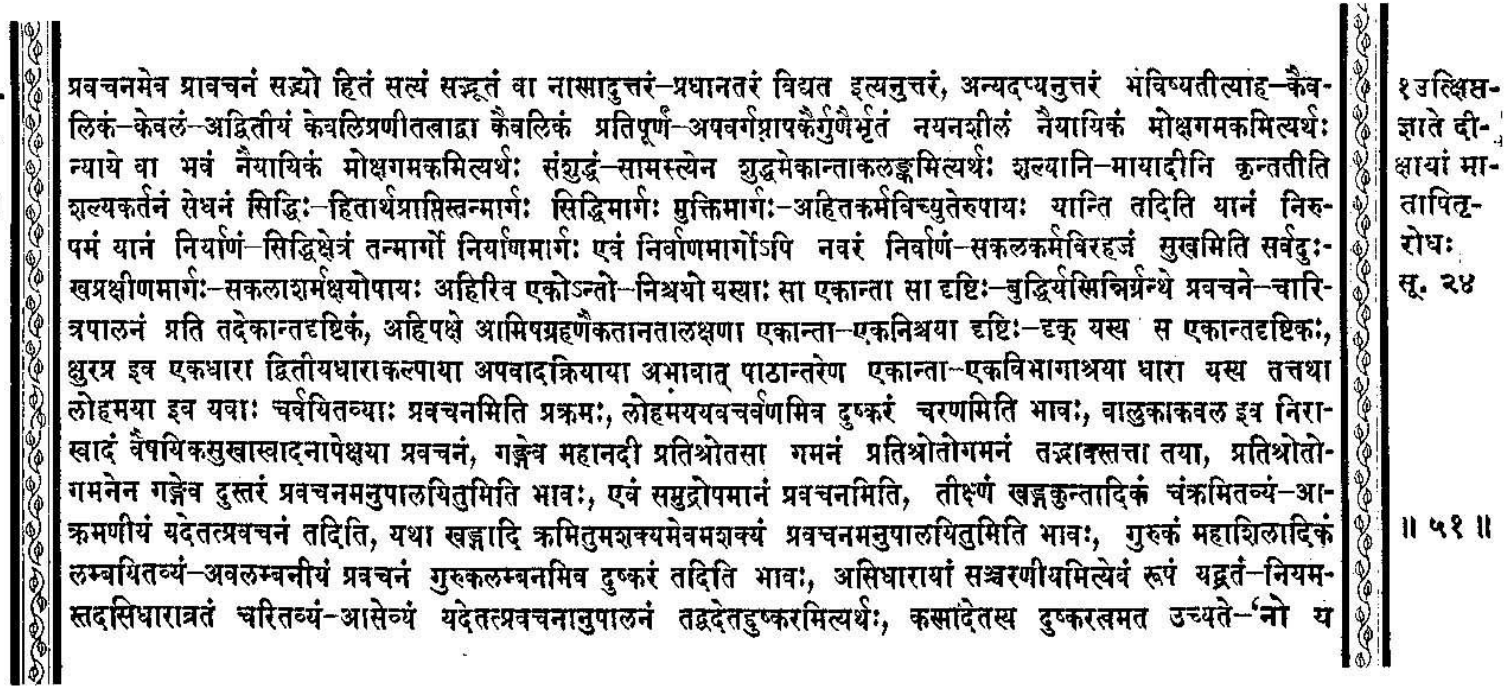
दीक्षा-सम्बन्धे मेघकुमारेण सह तस्य माता-पितरः संवादः

***अत्र शीर्षक-स्थाने सू.२४ मुद्रितं तत् सत्यम्, परन्तु सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम २३ मुद्रितं. तत् कारणात् मया २३-R निर्दिष्टम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२३-R]

दीप अनुक्रम [३२]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्-

॥ ५१ ॥

प्रवचनमेव प्रावचनं सद्यो हितं सत्यं सद्भूतं वा नास्मादुत्तरं–प्रधानतरं विद्यत इत्यनुत्तरं, अन्यदप्यनुत्तरं भविष्यतीत्याह–कैवलिकं–केवलं–अद्वितीयं केवलिप्रणीतत्वाद्वा कैवलिकं प्रतिपूर्णं–अपवर्गप्रापकैर्गुणैर्भृतं नयनशीलं नैयायिकं मोक्षगमकमित्यर्थः न्याये वा भवं नैयायिकं मोक्षगमकमित्यर्थः संशुद्धं–सामस्त्येन शुद्धमेकान्ताकलङ्कमित्यर्थः शल्यानि–मायादीनि कृन्ततीति शल्यकर्तनं सेधनं सिद्धिः–हितार्थप्राप्तिस्तन्मार्गः सिद्धिमार्गः मुक्तिमार्गः–अहितकर्मविच्युतेरुपायः यान्ति तदिति यानं निरुपमं यानं निर्याणं–सिद्धिक्षेत्रं तन्मार्गो निर्याणमार्गः एवं निर्वाणमार्गोऽपि नवरं निर्वाणं–सकलकर्मविरहजं सुखमिति सर्वदुःखप्रक्षीणमार्गः–सकलाशर्मक्षयोपायः अहिरिव एकोऽन्तो–निश्चयो यस्याः सा एकान्ता सा दृष्टिः–बुद्धिर्यस्मिन्निर्ग्रन्थे प्रवचने–चारित्रपालनं प्रति तदेकान्तदृष्टिकं, अहिपक्षे आमिषग्रहणैकतानतालक्षणा एकान्ता–एकनिश्चया दृष्टिः–दृक् यस्य स एकान्तदृष्टिकः, क्षुरप्र इव एकधारा द्वितीयधाराकल्पाया अपवादक्रियाया अभावात् पाठान्तरेण एकान्ता–एकविभागाश्रया धारा यस्य तत्तथा लोहमया इव यवाः चर्वयितव्याः प्रवचनमिति प्रक्रमः, लोहमययवचर्वणमिव दुष्करं चरणमिति भावः, वालुकाकवल इव निरास्वादं वैषयिकसुखास्वादनापेक्षया प्रवचनं, गङ्गेव महानदी प्रतिश्रोतसा गमनं प्रतिश्रोतोगमनं तद्भावस्तत्ता तया, प्रतिश्रोतोगमनेन गङ्गेव दुस्तरं प्रवचनमनुपालयितुमिति भावः, एवं समुद्रोपमानं प्रवचनमिति, तीक्ष्णं खड्गकुन्तादिकं चंक्रमितव्यं–आक्रमणीयं यदेतत्प्रवचनं तदिति, यथा खड्गादि क्रमितुमशक्यमेवमशक्यं प्रवचनमनुपालयितुमिति भावः, गुरुकं महाशिलादिकं लम्बयितव्यं–अवलम्बनीयं प्रवचनं गुरुकलम्बनमिव दुष्करं तदिति भावः, असिधारायां सञ्चरणीयमित्येवं रूपं यद्व्रतं–नियमस्तदसिधाराव्रतं चरितव्यं–आसेव्यं यदेतत्प्रवचनानुपालनं तद्वदेतदुष्करमित्यर्थः, कस्मादेतस्य दुष्करत्वमत उच्यते–'नो य

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते दीक्षायां मातापितृ-रोधः सू. २४

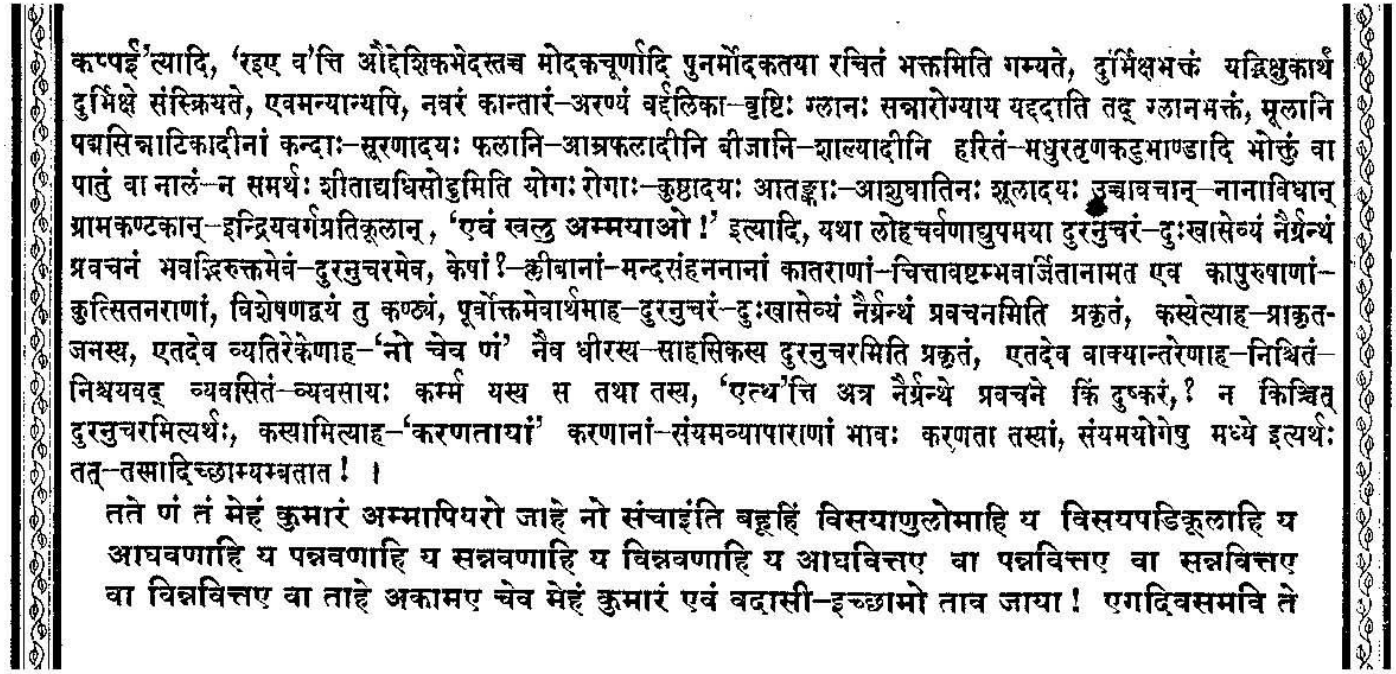
॥ ५१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दीक्षा-सम्बन्धे मेघकुमारेण सह तस्य माता-पितरः संवादः

***अत्र शीर्षक-स्थाने सू.२४ मुद्रितं तत् सत्यम्, परन्तु सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम २३ मुद्रितं. तत् कारणात् मया २३-R निर्दिष्टम्

प्रत सूत्रांक [२३-R] दीप अनुक्रम [३२]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः



कप्पई'त्यादि, 'रइए व'त्ति औद्देशिकभेदस्तच्च मोदकचूर्णादि पुनर्मोदकतया रचितं भक्तमिति गम्यते, दुर्भिक्षभक्तं यद्भिक्षुकार्थं दुर्भिक्षे संस्क्रियते, एवमन्यान्यपि, नवरं कान्तारं–अरण्यं वर्दलिका–वृष्टिः ग्लानः सन्नारोग्याय यद्दाति तद् ग्लानभक्तं, मूलानि पद्मसिन्नाटिकादीनां कन्दाः–सूरणादयः फलानि–आम्रफलादीनि बीजानि–शाल्यादीनि हरितं–मधुरतृणकदुभाण्डादि भोक्तुं वा पातुं वा नालं–न समर्थः शीताद्यधिसोढुमिति योगः रोगाः–कुष्ठादयः आतङ्काः–आशुघातिनः शूलादयः उच्चावचान्–नानाविधान् ग्रामकण्टकान्–इन्द्रियवर्गप्रतिकूलान्, 'एवं खलु अम्मयाओ !' इत्यादि, यथा लोहचर्वणाद्युपमया दुरनुचरं–दुःखासेव्यं नैर्ग्रन्थं प्रवचनं भवद्भिरुक्तमेवं–दुरनुचरमेव, केषां ?–क्लीबानां–मन्दसंहननानां कातराणां–चित्तावष्टम्भवर्जितानामत एव कापुरुषाणां–कुत्सितनराणां, विशेषणद्वयं तु कण्ठ्यं, पूर्वोक्तमेवार्थमाह–दुरनुचरं–दुःखासेव्यं नैर्ग्रन्थं प्रवचनमिति प्रकृतं, कस्येत्याह–प्राकृतजनस्य, एतदेव व्यतिरेकेणाह–'नो चेव णं' नैव धीरस्य–साहसिकस्य दुरनुचरमिति प्रकृतं, एतदेव वाक्यान्तरेणाह–निश्चितं–निश्चयवद् व्यवसितं–व्यवसायः कर्म्म यस्य स तथा तस्य, 'एत्थ'त्ति अत्र नैर्ग्रन्थे प्रवचने किं दुष्करं ? न किञ्चित् दुरनुचरमित्यर्थः, कस्यामित्याह–'करणतायां' करणानां–संयमव्यापाराणां भावः करणता तस्यां, संयमयोगेषु मध्ये इत्यर्थः तत्–तस्मादिच्छाम्यम्बतात ! ।

ततेणं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा सन्नवित्तए वा विन्नवित्तए वा ताहे अकामए चेव मेहं कुमारं एवं वदासी–इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि ते

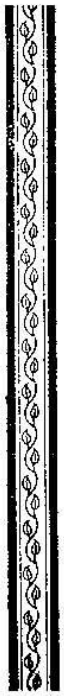
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	दीक्षा-सम्बन्धे मेघकुमारेण सह तस्य माता-पितरः संवादः

***अत्र शीर्षक-स्थाने सू.२४ मुद्रितं तत् सत्यम्, परन्तु सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम २३ मुद्रितं. तत् कारणात् मया २३-R निर्दिष्टम्

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]



रायसिरिं पासित्तए, तते णं से मेहे कुमारे अम्मापितरमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ त्ता एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव तेवि तहेव उवट्ठवेंति, तते णं से सेणिए राया बहूहिं गणणायगदंडणायगेहि य जाव संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसएणं सोवन्नियाणं कलसाणं एवं रुप्पमयाणं कलसाणं सुवन्नरुप्पमयाणं कलसाणं मणिमयाणं कलसाणं सुवन्नमणिमयाणं० रुप्पमणिमयाणं० सुवन्नरुप्पमणिमयाणं० भोमेज्जाणं० सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहिहि य सिद्धत्थएहि य सविड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं जाव दुंदुभिनिग्घोसणादितरवेणं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचति २ करयल जाव कट्टु एवं वदासी–जय जय णंदा! जय २ भद्दा! जय णंदा० भद्दं ते अजियं जिणेहि जियं पालयाहि जियमज्झे वसाहि अजियं जिणेहि सत्तुपक्खं जियं च पालेहि मित्तपक्खं जाव भरहो इव मणुयाणं रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागरनगरजाव सन्निवेसाणं आहेवच्चं जाव विहराहित्ति कट्टु जय २ सद्दं पउंजंति, तते णं से मेहे राया जाते महया जाव विहरति, तते णं तस्स मेहस्स रन्नो अम्मापितरो एवं वदासी–भण जाया! किं दलयामो किं पयच्छामो किं वा ते हियइच्छिए सामत्थे (मन्ते)?, तते णं से मेहे राया अम्मापितरो एवं वदासी–इच्छामि णं



॥ ५२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]

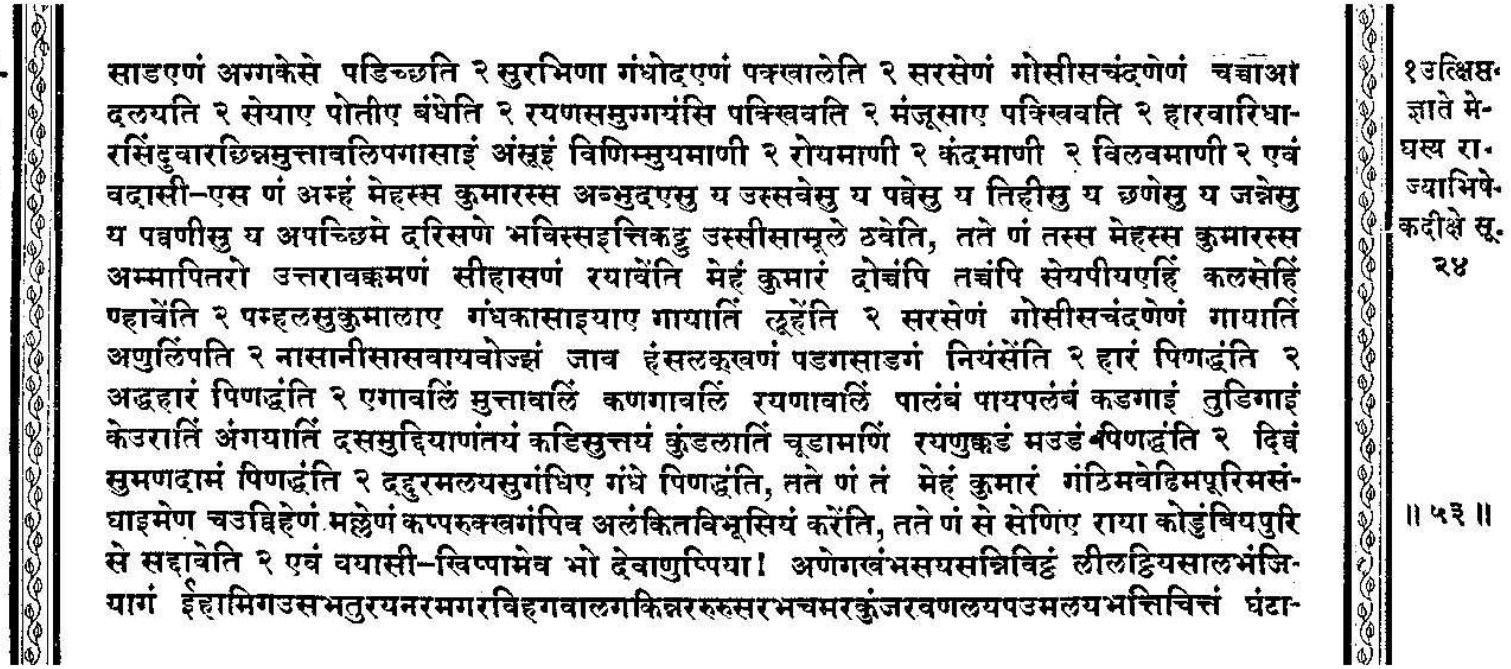
अम्मयाओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहगं च उवणेह कासवयं च सद्दावेह, तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वदासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघरातो तिन्नि सयसहस्सातिं गहाय दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहगं च उवणेह सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्सातिं गहाय कुत्तियावणातो दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरणं पडिग्गहं च उवणेंति सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेंति, तते णं से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे जाव हयहियए पहाते कतबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसातिं वत्थाइं मंगलाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकितसरीरे जेणेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति २ सेणियं रायं करयलमंजलिं कट्टु एवं वयासी–संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं, तते णं से सेणिए राया कासवयं एवं वदासी–गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सुरभिणा गंधोदएणं णिक्के हत्थपाए पक्खालेह सेयाए चउप्फालाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि, तते णं से कासवए सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव हियए जाव पडिसुणेति २ सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपाए पक्खालेति २ सुद्धवत्थेणं मुहं बंधति २ त्ता परेणं जत्तेणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं पड-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ५३ ॥

साडएणं अग्गकेसे पडिच्छति २ सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेति २ सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चाओ दलयति २ सेयाए पोतीए बंधेति २ रयणसमुग्गयंसि पक्खिवति २ मंजूसाए पक्खिवति २ हारवारिधा-रसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिपगासाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी २ रोयमाणी २ कंदमाणी २ विलवमाणी २ एवं वदासी–एस णं अम्हं मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पवणीसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइत्तिकट्टु उस्सीसामूले ठवेंति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापितरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति मेहं कुमारं दोच्चंपि तच्चंपि सेयपीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति २ पम्हलसुकुमालाए गंधकासाइयाए गायातिं लूहेंति २ सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायातिं अणुलिंपति २ नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं पडगसाडगं नियंसेंति २ हारं पिणद्धंति २ अद्धहारं पिणद्धंति २ एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं पालंबं पायपलंबं कडगाइं तुडिगाइं केउरातिं अंगयातिं दससुद्दियाणंतयं कडिसुत्तयं कुंडलातिं चूडामणिं रयणुक्कडं मउडं पिणद्धंति २ दिव्वं सुमणदामं पिणद्धंति २ दद्दुरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धंति, तते णं तं मेहं कुमारं गंठिमवेढिमपूरिमसंघाइमेण चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगंपिव अलंकितविभूसियं करेंति, तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं ईहामिगउसभतुरयनरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं घंटा-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघस्य रा-ज्याभिषेकदीक्षे सू. २४

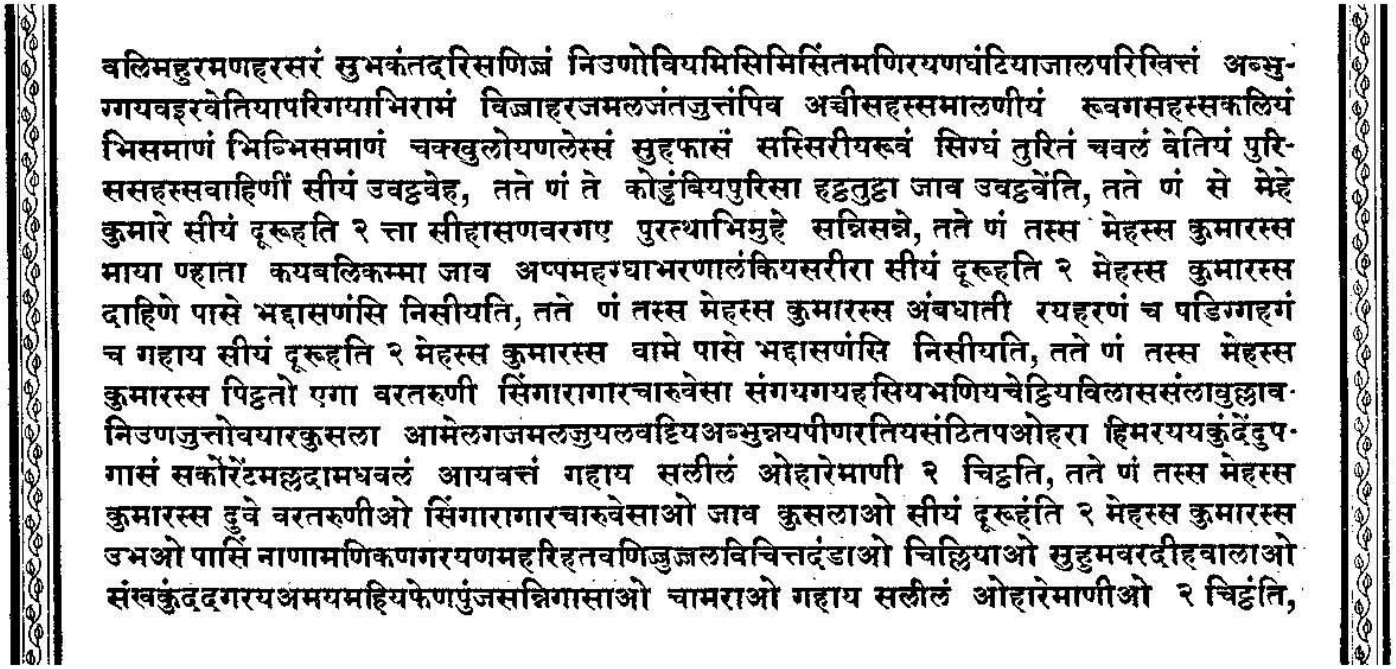
॥ ५३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]



वलिमहुरमणहरसरं सुभकंतदरिसणिज्जं निउणोवियमिसिमिसिंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं अब्भुग्गयवइरवेतियापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजंतजुत्तंपिव अचीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुलोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं सिग्घं तुरितं चवलं वेतियं पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं उवट्ठवेह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठतुट्ठा जाव उवट्ठवेंति, तते णं से मेहे कुमारे सीयं दूरूहति २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाता कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सीयं दूरूहति २ मेहस्स कुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणंसि निसीयति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अंबधाती रयहरणं च पडिग्गहगं च गहाय सीयं दूरूहति २ मेहस्स कुमारस्स वामे पासे भद्दासणंसि निसीयति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठतो एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगयगयहसियभणियचेट्ठियविलाससंलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयारकुसला आमेलगजमलजुयलवट्टियअब्भुन्नयपीणरतियसंठितपओहरा हिमरययकुंदेंदुप-गासं सकोरेंटमल्लदामधवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहारेमाणी २ चिट्ठति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ सीयं दूरूहंति २ मेहस्स कुमारस्स उभओ पासिं नाणामणिकणगरयणमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ संखकुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारेमाणीओ २ चिट्ठंति,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

तते णं तस्स मेहकुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा जाव कुसला सीयं जाव दूरूहति २ मेहस्स कुमारस्स पुरतो पुरत्थिमेणं चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं तालविंटं गहाय चिट्ठति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी जाव सुरूवा सीयं दूरूहति २ मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणेणं सेयं रययामयं विमलसलिलपुन्नं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठति, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ त्ता एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सरिसयाणं सरिसत्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरणगहितनिज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेह जाव सद्दावंति, तए णं कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठा ण्हाया जाव एगाभरणगहितणिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति २ सेणियं रायं एवं वदासी–संदिसह णं देवाणुप्पिया! जन्नं अम्हेहिं करणिज्जं, तते णं से सेणिए तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वदासी–गच्छह णं देवाणुप्पिया! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं परिवहेह, तते णं तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सेणिएणं रन्ना एवं वुत्तं संतं हट्ठं तुट्ठं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं परिवहति, तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दूरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलया तप्पढमयाए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं०–सोत्थिय सिरिवच्छ णंदियावत्त वद्धमाणग भद्दासण कलस मच्छ दप्पण जाव बहवे अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं अभिणंदंता य अभिथुणंता य एवं वदासी–जय २ णंदा!

॥ ५४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]

जय २ णंदा जय २ भद्दा ! भद्दं ते अजियाइं जिणाहि इंदियाइं जियं च पालेहि समणधम्मं जियविग्घोऽवि य वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्झे निहणाहि रागदोसमल्ले तवेणं धितिधणियबद्धकच्छे महाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं गच्छ य मोक्खं परमपयं सासयं च अयलं हंता परीसहचमुं णं अभीओ परीसहोवसग्गाणं धम्मे ते अविग्घं भवउत्तिकट्टु पुणो २ मंगलजय २ सद्दं पउंजंति, तते णं से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ जेणेव गुलसिलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति २ पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभति (सूत्रं २४)

'महत्थं'ति महाप्रयोजनं महार्घं–महामूल्यं महार्हं–महापूज्यं महतां वा योग्यं राज्याभिषेकं–राज्याभिषेकसामग्रीं उपस्थापयत-सम्पादयत, सौवर्णादीनां कलशानामष्टौ शतानि चतुःषष्ट्यधिकानि 'भोमेज्जाणं'ति भौमानां पार्थिवानामित्यर्थः, सर्वोदकैः–सर्वतीर्थसंभवैः एवं मृत्तिकाभिरिति । 'जय जये'त्यादि, जय जय त्वं–जयं लभस्व नन्दति नन्दयतीति वा नन्दः–समृद्धः समृद्धिप्रापको वा तदामन्त्रणं हे नन्द !, एवं भद्र–कल्याणकारिन् हे जगन्नन्द भद्रं ते भवतिति शेषः, इह गमे यावत्करणादिदं दृश्यं 'इन्दो इव देवाणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चन्दो इव ताराणं'ति, 'गामागर' इह दण्डके यावत्करणादिदं दृश्यं 'नगरखेडकब्बडदोणमुहमडंबपट्टणसंबाहसन्निवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भत्तित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरा-हि'त्ति, तत्र करादिगम्यो ग्रामः आकरो–लवणाद्युत्पत्तिभूमिः अविद्यमानकरं नगरं धूलीप्राकारं खेटं कुनगरं कर्वटं यत्र

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

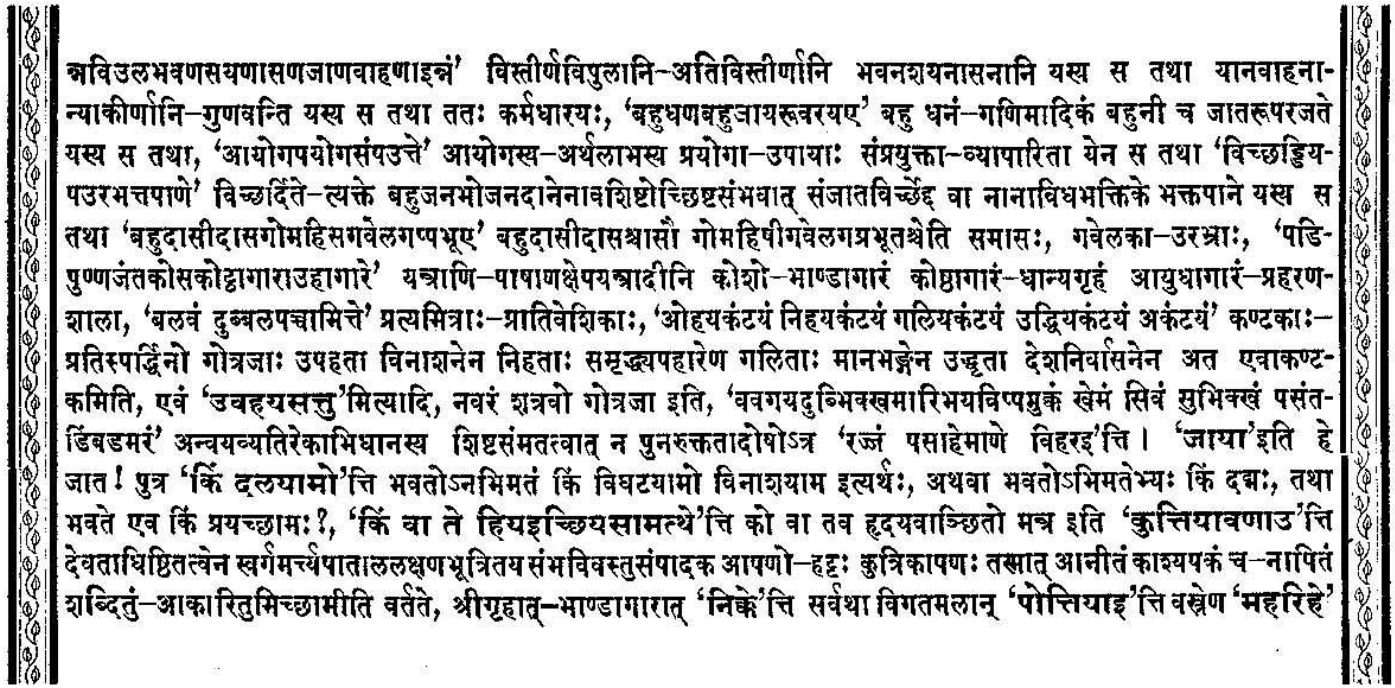
जलस्थलमार्गाभ्यां भाण्डान्यागच्छन्ति तद् द्रोणमुखं यत्र योजनाभ्यन्तरे सर्वतो ग्रामादि नास्ति तन्मडम्बं, पत्तनं द्विधा–जलपत्तनं स्थलपत्तनं च, तत्र जलपत्तनं यत्र जलेन भाण्डान्यागच्छन्ति, यत्र तु स्थलेन तत् स्थलपत्तनं, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहन्ति स संवाहः, सार्थादिस्थानं सन्निवेशः, आधिपत्यं अधिपतिकर्म रक्षेत्यर्थः, 'पोरेवच्चं' पुरोवर्त्तित्वमग्रेसरत्वमित्यर्थः स्वामित्वं–नायकत्वं भर्तृत्वं–पोषकत्वं महत्तरकत्वं–उत्तमत्वं आज्ञेश्वरस्य–आज्ञाप्रधानस्य सतः तथा सेनापतेर्भावः आज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयन् अन्यैर्नियुक्तैः पालयन् स्वयमेव महता–प्रधानेन 'अहय'त्ति आख्यानकप्रतिबद्धं नित्यानुबन्धं वा यन्नाट्यं च–नृत्यं गीतं च–गानं तथा वादितानि यानि तन्त्री च–वीणा तलौ च–हस्तौ तालश्च–कंसिका तुडितानि च–वादित्राणि तथा घनसमानध्वनिर्यो मृदङ्गः पटुना पुरुषेण प्रवादितः स चेति द्वन्द्वः ततस्तेषां यो रवस्तेनेति, इतिकट्टु–इतिकृत्वा एवमभिधाय जय २ शब्दं प्रयुङ्क्ते श्रेणिकराज इति प्रकृतं, ततोऽसौ राजा जातः, 'महया' इह यावत्करणात् एवं वर्णको वाच्यः–"महयाहिमवन्तमहंतमलयमंदरमहिंदसारे अच्चंतविसुद्धदीहरायकुलवंसप्पसूए निरंतरं रायलक्खणविराइयंगमंगे बहुजणबहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुदिए मुद्धाभिसित्ते' पित्रादिभिर्मूर्द्धन्यभिषिक्तत्वात् 'माउपिउसुजाए दयपत्ते' दयावानित्यर्थः, सीमंकरे मर्यादाकारित्वात् सीमंधरे कृतमर्यादापालकत्वात्, एवं खेमंकरे खेमंधरे, क्षेमं–अनुपद्रवता, 'मणुस्सिंदे जणवयपिया' हितत्वात् 'जणवयपुरोहिए' शान्तिकारित्वात् सेउकरे–मार्गदर्शकः केउकरे अद्भुतकार्यकारित्वात् केतुः–चिह्नं, 'नरपवरे' नराः प्रवराः यस्येतिकृत्वा, 'पुरिसवरे' पुरुषाणां मध्ये वरत्वात्, 'पुरिससीहे' शूरत्वात्, 'पुरिसआसीविसे' शापसमर्थत्वात्, 'पुरिसपुंडरीए' सेव्यत्वात्, 'पुरिसवरगंधहत्थी' प्रतिराजगजभञ्जकत्वात् 'अड्ढे' आढ्यः'दित्ते' दर्प्पवान् 'वित्ते' प्रतीतः 'विच्छि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]



अविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्नं' विस्तीर्णविपुलानि-अतिविस्तीर्णानि भवनशयनासनानि यस्य स तथा यानवाहनाकीर्णानि-गुणवन्ति यस्य स तथा ततः कर्मधारयः, 'बहुधणबहुजायरूवरयए' बहु धनं-गणिमादिकं बहुनी च जातरूपरजते यस्य स तथा, 'आयोगपयोगसंपउत्ते' आयोगस्य-अर्थलाभस्य प्रयोगा-उपायाः संप्रयुक्ता-व्यापारिता येन स तथा 'विच्छड्डियपउरभत्तपाणे' विच्छर्दिते-त्यक्ते बहुजनभोजनदानेनावशिष्टोच्छिष्टसंभवात् संजातविच्छेदे वा नानाविधभक्तिके भक्तपाने यस्य स तथा 'बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूए' बहुदासीदासश्चासौ गोमहिषीगवेलगप्रभूतश्चेति समासः, गवेलका-उरभ्राः, 'पडिपुण्णजंतकोसकोट्ठागाराउहागारे' यन्त्राणि-पाषाणक्षेपयन्त्रादीनि कोशो-भाण्डागारं कोष्ठागारं-धान्यगृहं आयुधागारं-प्रहरणशाला, 'बलवं दुब्बलपच्चामित्ते' प्रत्यमित्राः-प्रातिवेशिकाः, 'ओहयकंटयं निहयकंटयं गलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं' कण्टकाः-प्रतिस्पर्द्धिनो गोत्रजाः उपहता विनाशनेन निहताः समृद्ध्यपहारेण गलिताः मानभङ्गेन उद्धृता देशनिर्वासनेन अत एवाकण्टकमिति, एवं 'उवहयसत्तु'मित्यादि, नवरं शत्रवो गोत्रजा इति, 'ववगयदुब्भिक्खमारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसंतडिंबडमरं' अन्वयव्यतिरेकाभिधानस्य शिष्टसंमतत्वात् न पुनरुक्तादोषोऽत्र 'रज्जं पसाहेमाणे विहरइ'त्ति। 'जाया'इति हे जात! पुत्र 'किं दलयामो'त्ति भवतोऽनभिमतं किं विघटयामो विनाशयाम इत्यर्थः, अथवा भवतोऽभिमतेभ्यः किं दद्मः, तथा भवते एव किं प्रयच्छामः?, 'किं वा ते हियइच्छियसामत्थे'त्ति को वा तव हृदयवाञ्छितो मत्र इति 'कुत्तियावणाउ'त्ति देवताधिष्ठितत्वेन स्वर्गमर्त्यपातालरूपभूत्रितयसंभविवस्तुसंपादक आपणो-हट्टः कुत्रिकापणः तस्मात् आनीतं काश्यपकं च-नापितं शब्दितुं-आकारितुमिच्छामीति वर्तते, श्रीगृहात्-भाण्डागारात् 'निक्के'त्ति सर्वथा विगतमलान् 'पोत्तियाइ'त्ति वस्त्रेण 'महरिहे'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]

त्यादि, 'महरिहेणं'त्ति महतां योग्येन महापूजेन वा हंसस्येव लक्षणं–स्वरूपं शुक्लता हंसा वा लक्षणं–चिह्नं यस्य स तथा तेन शाटको–वस्त्रमात्रं स च पृथुलः पटोऽभिधीयत इति पटशाटकस्तेन 'सिंदुवारे'त्ति वृक्षविशेषो निर्गुण्डीति केचित् तत्कुसुमानि सिन्दुवाराणि तानि च शुक्लानि। 'एस णं'ति एतत् दर्शनमिति योगः णमित्यलंकारे, अभ्युदयेषु–राज्यलाभादिषु उत्सवेषु–प्रियसमागमादिमहेषु प्रसवेषु–पुत्रजन्मसु तिथिषु–मदनत्रयोदशीप्रभृतिषु क्षणेषु–इन्द्रमहादिषु यज्ञेषु–नागादिपूजासु पर्वणीषु च–कार्त्तिक्यादिषु अपश्चिमं–अकारस्यामङ्गलपरिहारार्थत्वात् पश्चिमं दर्शनं भविष्यति, एतत्केशदर्शनमपनीतकेशावस्थस्य मेघकुमारस्य यद्दर्शनं सर्वदर्शनपाश्चात्यं तद्भविष्यतीति भावः, अथवा न पश्चिममपश्चिमं–पौनःपुन्येन मेघकुमारस्य दर्शनमेतद्दर्शनेन भविष्यतीत्यर्थः। 'उत्तरावक्कमणं'ति उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणं–अवतरणं यस्मात्तदुत्तरापक्रमणं–उत्तराभिमुखं राज्याभिषेककाले पूर्वाभिमुखं तदासीदिति, 'दोच्चंपि' द्विरपि 'तच्चंपि' त्रिरपि 'श्वेतपीतैः' रजतसौवर्णैः 'पायपलंबं'ति पादौ यावद् यः प्रलम्बतेऽलङ्कारविशेषः स पादप्रलम्बः, 'तुडियाइं'ति बाहुरक्षकाः, केयूराङ्गदयोर्यद्यपि नामकोशे बाह्याभरणतया न विशेषः तथापीहाकारभेदेन भेदो दृश्यः, 'दशमुद्रिकानन्तकं' हस्ताङ्गुलिसंबन्धि मुद्रिकादशकं 'सुमणदामं'ति पुष्पमालां पिनद्धतः–परिधत्तः दर्दरः–चीवरावनद्धकुण्डिकादिभाजनमुखं तेन गालितास्तत्र पक्का वा ये 'मलय'त्ति मलयोद्भवं श्रीखण्डं तत्संबन्धिनः सुगन्धयोगन्धास्तान् पिनद्धतः, हारादिस्वरूपं प्राग्वत्, ग्रन्थिमं–यद्ग्रथ्यते सूत्रादिना वेष्टिमं–यद्वेष्टितं सद्वेष्ट्यते यथा पुष्पलम्बूसकः गेन्दुक इत्यर्थः, पूरिमं–येन वंशशलाकामयपञ्जरकादि कूर्चादि वा पूर्यते संयोगिकं–यत्परस्परतो नालसंघातनेन संघात्यते अलङ्कृतं–कृतालङ्कारं, विभूषितं–जातविभूषं। 'सद्दावेह जाव सद्दाविंति' 'एगा वरतरुणी'त्यादि शृङ्गारस्यागारमिव शृङ्गारागारं अथवा

॥ ५६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]

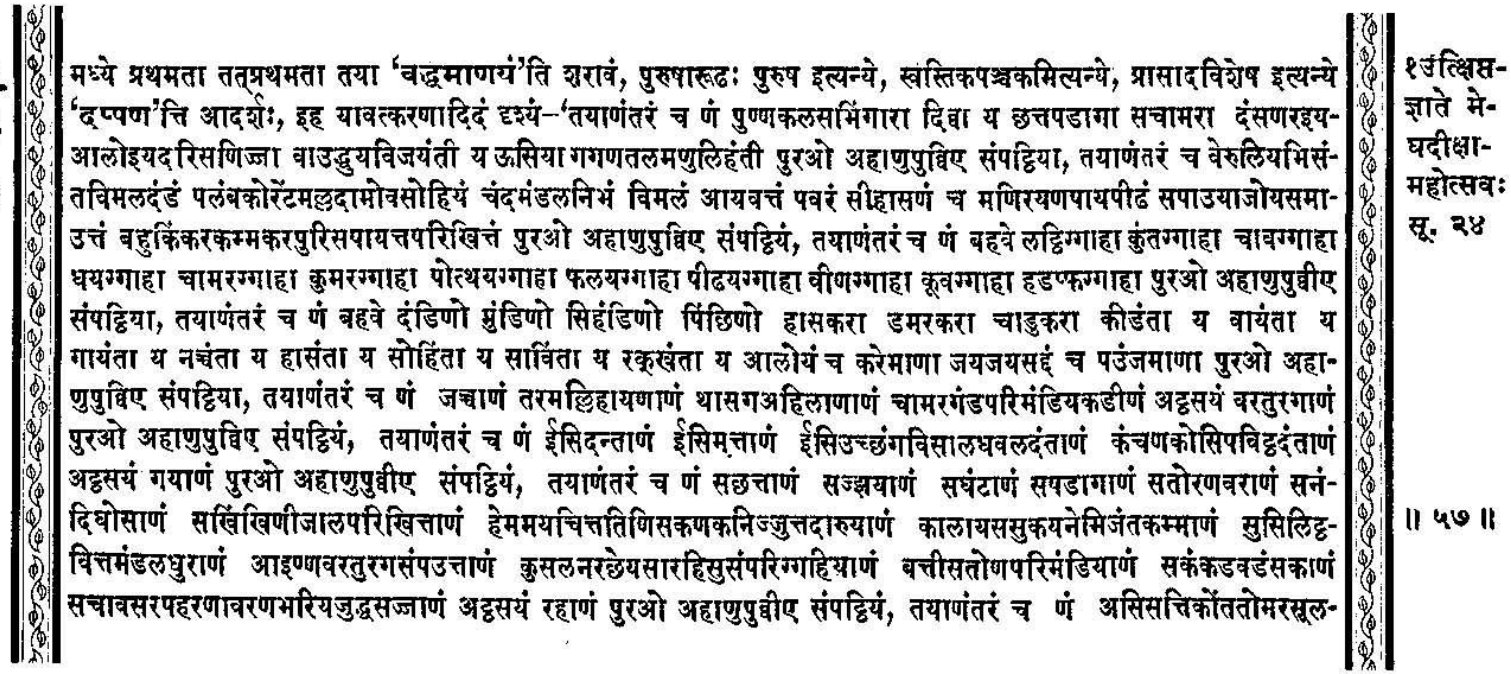
शृङ्गारप्रधान आकारो यस्याश्चारुश्च वेषो यस्याः सा तथा, सङ्गतेषु गतादिषु निपुणा युक्तेषूपचारेषु कुशला च या सा तथा, तत्र विलासो–नेत्रविकारो, यदाह–"हावो मुखविकारः स्याद्भावश्चित्तसमुद्भवः । विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विभ्रमो भ्रूसमुद्भवः ॥१॥" संलापो–मिथो भाषा उल्लापः–काकुवर्णनं, आह च–"अनुलापो मुहुर्भाषा, प्रलापोऽनर्थकं वचः । काका वर्णनमुल्लापः, संलापो भाषणं मिथः ॥ १ ॥" इति । 'आमेलग'त्ति आपीडः–शेखरः स च स्तनः–प्रस्तावाच्चुचुकस्तत्प्रधानौ आमेलकौ वा–परस्परमीषत्सम्बद्धौ यमलौ–समश्रेणिस्थितौ युगलौ–युगलरूपौ द्वावित्यर्थः वर्त्तितौ–वृत्तौ अभ्युन्नतौ–उच्चौ पीनौ–स्थूलौ रतिदौसुखप्रदौ संस्थितौ–विशिष्टसंस्थानवन्तौ पयोधरौ–स्तनौ यस्याः सा तथा, हिमं च रजतं च कुन्दश्चेन्दुश्चेति द्वन्द्वः, एषामिव प्रकाशो यस्य तत्तथा, सकोरेण्टानि–कोरेण्टकपुष्पगुच्छयुक्तानि माल्यदामानि–पुष्पमाला यत्र तत्तथा, धवलमातपत्रं–छत्रं, नानामणिकनकरत्नानां महार्हस्य महार्घस्य तपनीयस्य च सत्कावुज्ज्वलौ विचित्रौ दण्डौ ययोस्ते तथा, अत्र कनकतपनीययोः को विशेषः ?, उच्यते, कनकं पीतं तपनीयं रक्तं इति, 'चिल्लियाओ'त्ति दीप्यमाने लीने इत्येके सूक्ष्मवरदीर्घवाले शङ्खकुन्ददकरजसां अमृतस्य मथितस्य सतो यः फेनपुंजस्तस्य च सन्निकाशे–सदृशे ये ते तथा, चामरे चन्द्रप्रभवज्रवैडूर्यविमलदण्डे, इह चन्द्रप्रभः–चन्द्रकान्तमणिः, तालवृन्तं–व्यजनविशेषः मत्तगजमहामुखस्य आकृत्या–आकारेण समानः–सदृशो यः स तथा तं भृङ्गारं, 'एगे'त्यादि, एकः–सदृशः आभरणलक्षणो गृहीतो निर्योगः–परिकरो यैस्ते तथा तेषां कौटुम्बिकवरतरुणानां सहस्रमिति । 'तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सद्दाविय'त्ति शब्दिताः 'समाण'त्ति सन्तः, 'अट्ठट्ठमंगलय'त्ति अष्टावष्टाविति वीप्सायां द्विर्वचनं मङ्गलकानि–माङ्गल्यवस्तूनि, अन्ये त्वाहुः–अष्टसंख्यानि अष्टमङ्गलसंज्ञानि वस्तूनीति 'तप्पढमयाए'त्ति तेषां विवक्षितानां

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥ ५७ ॥

मध्ये प्रथमता तत्प्रथमता तया 'चद्धमाणयं'ति शरावं, पुरुषारूढः पुरुष इत्यन्ये, स्वस्तिकपञ्चकमित्यन्ये, प्रासादविशेष इत्यन्ये 'दप्पण'त्ति आदर्शः, इह यावत्करणादिदं दृश्यं–'तयाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारा दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसणरइय-आलोइयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्विए संपट्ठिया, तयाणंतरं च वेरुलियभिस-तविमलदंडं पलंबकोरेंटमल्लदामोवसोहियं चंदमंडलनिभं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं च मणिरयणपायपीढं सपाउयाजोयसमा-उत्तं बहुकिंकरकम्मकरपुरिसपायत्तपरिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्विए संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चावग्गाहा धयग्गाहा चामरग्गाहा कुमरग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलयग्गाहा पीढयग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्फग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो पिंछिणो हासकरा डमरकरा चाडुकरा कीडंता य वायंता य गायंता य नचंता य हासंता य सोहिंता य सावेंता य रक्खंता य आलोयं च करेमाणा जयजयसद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहा-णुपुव्विए संपट्ठिया, तयाणंतरं च णं जच्चाणं तरुणीहायणाणं थासगअहिलाणाणं चामरगंडपरिमंडियकडीणं अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्विए संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं ईसिदन्ताणं ईसिमत्ताणं ईसिउच्छंगविसालधवलदंताणं कंचणकोसिपविट्ठदंताणं अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं सछत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सनं-दिघोसाणं सखिंखिणीजालपरिक्खित्ताणं हेममयचित्ततिणिसकणकनिज्जुत्तदारुयाणं कालायससुकयनेमिजंतकम्माणं सुसिलिट्ठ-वित्तमंडलधुराणं आइण्णवरतुरगसंपउत्ताणं कुसलनरछेयसारहिसुसंपरिग्गहियाणं बत्तीसतोणपरिमंडियाणं सकंकडवडंसकाणं सचावसरपहरणावरणभरियजुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं असिसत्तिकोंततोमरसूल-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघदीक्षा-महोत्सवः सू. २४

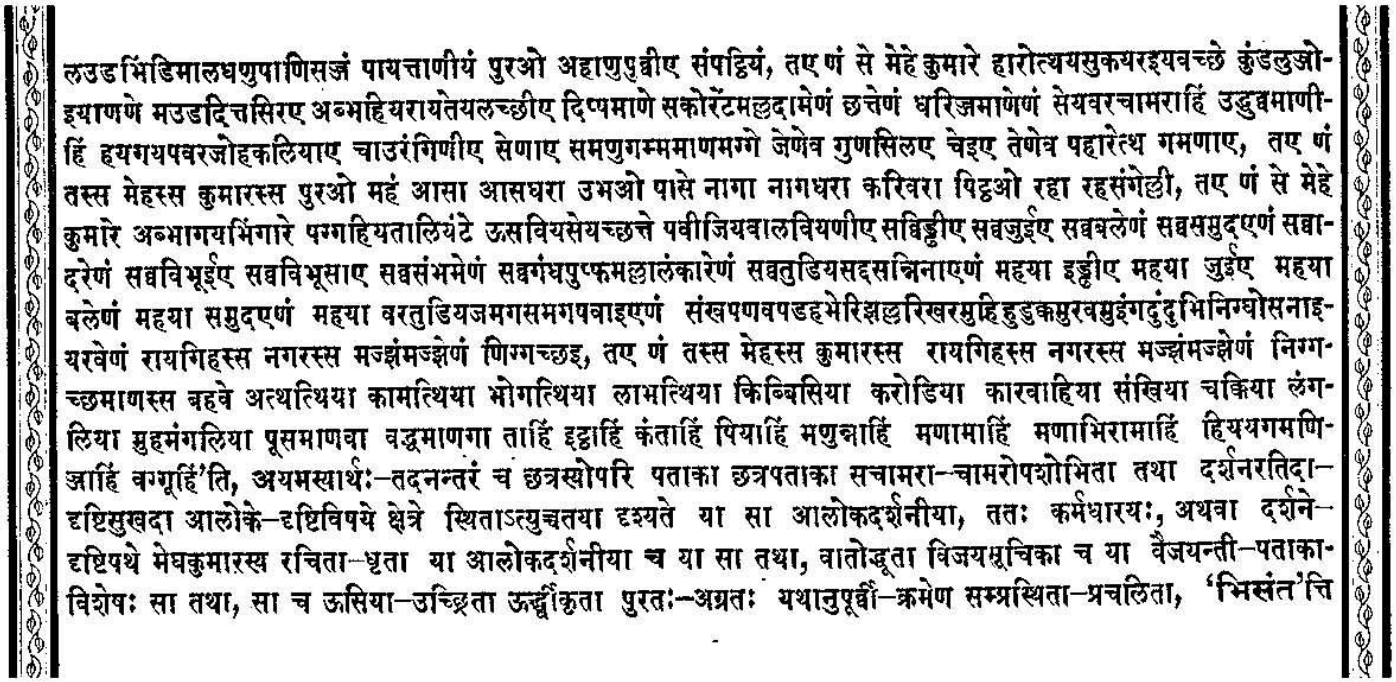
॥ ५७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]



लउडभिंडिमालधणुपाणिसज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं, तए णं से मेहे कुमारे हारोत्थयसुकयरइयवच्छे कुंडलुज्जो-
इयाणणे मउडदित्तसिरए अब्भहियरायतेयलच्छीए दिप्पमाणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणी-
हिं हयगयपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं
तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरओ महं आसा आसधरा उभओ पासे नागा नागधरा करिवरा पिट्ठओ रहा रहसंगेल्ली, तए णं से मेहे
कुमारे अब्भागयभिंगारे पग्गहियतालियंटे ऊसवियसेयच्छत्ते पवीजियवालवियणीए सव्विड्ढीए सव्वजुईए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वा-
दरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वगंधपुप्फमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्दसन्निनाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया
बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमगपवाइएणं संखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरवमुइंगदुंदुभिनिग्घोसनाइ-
यरवेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्ग-
च्छमाणस्स बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किब्बिसिया करोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया लंग-
लिया मुहमंगलिया पूसमाणवा वद्धमाणगा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणि-
ज्जाहिं वग्गूहिं'ति, अयमस्यार्थः–तदनन्तरं च छत्रस्योपरि पताका छत्रपताका सचामरा–चामरोपशोभिता तथा दर्शनरतिदा–
दृष्टिसुखदा आलोके–दृष्टिविषये क्षेत्रे स्थिताऽत्युच्चतया दृश्यते या सा आलोकदर्शनीया, ततः कर्मधारयः, अथवा दर्शने–
दृष्टिपथे मेघकुमारस्य रचिता–धृता या आलोकदर्शनीया च या सा तथा, वातोद्धूता विजयसूचिका च या वैजयन्ती–पताका-
विशेषः सा तथा, सा च ऊसिया–उच्छ्रिता ऊर्द्धीकृता पुरतः–अग्रतः यथानुपूर्वी–क्रमेण सम्प्रस्थिता–प्रचलिता, 'भिसंत'त्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

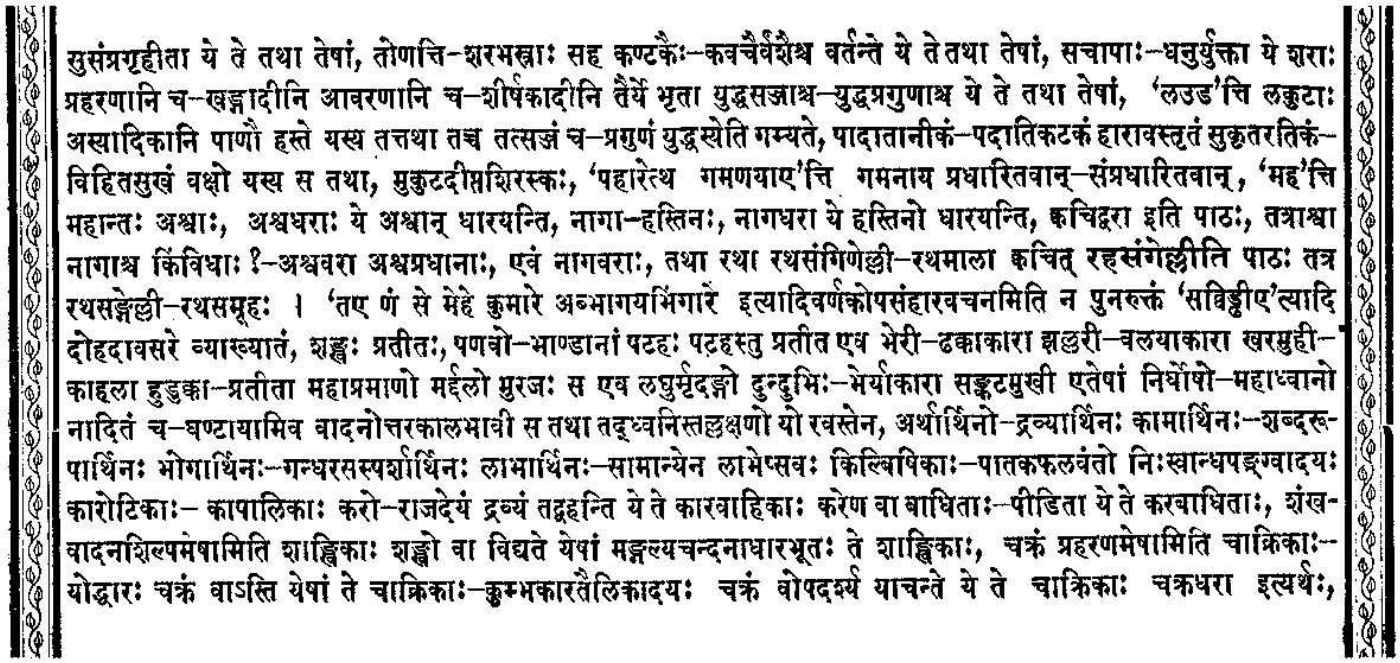
दीप्यमानः, मणिरत्नानां सम्बन्धि पादपीठं यस्य सिंहासनस्य तत्तथा, स्वेन–स्वकीयेन मेघकुमारसम्बन्धिना पादुकायुगेन समायुक्तं यत्तत्तथा, बहुभिः किङ्करैः–किंकुर्वाणैः कर्मकरपुरुषैः पादातेन च–पदातिसमूहेन शस्त्रपाणिना परिक्षिप्तं यत्तत्तथा 'कूय'त्ति कुतुपः 'हडप्फो'त्ति आभरणकरण्डकं 'मुंडिणो' मुण्डिताः 'छिडिणो' शिखावन्तः 'डमरकराः' परस्परेण कलहविधायकाः 'चाटुकराः' प्रियंवदा 'सोहंता य'त्ति शोभां कुर्वन्तः 'सावंता य'त्ति श्रावयन्तः आशीर्वचनानि रक्षन्तः न्यायं आलोकं च कुर्वाणाः–मेघकुमारं तत्समृद्धिं च पश्यन्तः, जात्यानां–काम्बोजादिदेशोद्भवानां तरोमल्लिनो–बलाधायिनो वेगाधायिनो वा हायनाः–संवत्सरा येषां ते तथा तेषां, अन्ये तु 'भायल'त्ति मन्यन्ते, तत्र भायला–जात्यविशेषा एवेति गमनिकैवैषा, थासका–दर्पणाकाराः अहिलाणानि च–कविकानि येषां सन्ति ते तथा, मतुब्लोपात्, 'चामरगंडा' चामरदण्डास्तैः परिमण्डिता कटी येषां ते तथा तेषां, ईषद्दान्तानां–मनाग् ग्राहितशिक्षाणामीषन्मत्तानां–नातिमत्तानां, ते हि जनमुपद्रवयन्तीति, ईषत्–मनागुत्सङ्गः इवोत्सङ्गः–पृष्ठिदेशस्तत्र विशाला–विस्तीर्णा धवलदन्ताश्च येषां ते तथा तेषां, कोशी–प्रतिमा, नन्दिघोषः–तूर्यनादः, अथवा सुनंदी–सत्समृद्धिको घोषो येषां ते तथा तेषां, सकिङ्किणि–सक्षुद्रघण्टिकं यज्जालं–मुक्ताफलादिमयं तेन परिक्षिप्ता ये ते तथा तेषां, तथा हैमवतानि–हिमवत्पर्वतोद्भवानि चित्राणि तिनिशस्य–वृक्षविशेषस्य सम्बन्धीनि कनकनियुक्तानि–हेमखचितानि दारूणि–काष्ठानि येषां ते तथा तेषां, कालायसेन–लोहविशेषेण सुष्ठु कृतं नेमेः–गण्डमालायाः यन्त्राणां च–रथोपकरणविशेषाणां कर्म्म येषां ते तथा तेषां, सुश्लिष्टे वित्तत्ति–वत्रदण्डवत् मण्डले वृत्ते धुरौ येषां ते तथा तेषां, आकीर्णा–वेगादिगुणयुक्ताः ये वरतुरगास्ते संप्रयुक्ता–योजिता येषु ते तथा तेषां, कुशलनराणां मध्ये ये छेकाः–दक्षाः सारथयस्तैः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [३३]



सुसंग्रगृहीता ये ते तथा तेषां, तोणत्ति-शरभस्त्राः सह कण्टकैः-कवचैर्वैश्च वर्तन्ते ये ते तथा तेषां, सचापाः-धनुर्युक्ता ये शराः प्रहरणानि च-खड्गादीनि आवरणानि च-शीर्षकादीनि तैर्ये भृता युद्धसज्जाश्च-युद्धप्रगुणाश्च ये ते तथा तेषां, 'लउड'त्ति लकुटाः अस्यादिकानि पाणौ हस्ते यस्य तत्तथा तच्च तत्सज्जं च-प्रगुणं युद्धस्येति गम्यते, पादातानीकं-पदातिकटकं हारावस्तृतं सुकृतरतिकं-विहितसुखं वक्षो यस्य स तथा, मुकुटदीप्तशिरस्कः, 'पहारेत्थ गमणयाए'त्ति गमनाय प्रधारितवान्-संप्रधारितवान्, 'मह'त्ति महान्तः अश्वाः, अश्वधराः ये अश्वान् धारयन्ति, नागा-हस्तिनः, नागधरा ये हस्तिनो धारयन्ति, क्वचिद्वरा इति पाठः, तत्राश्वा नागाश्च किंविधाः ?-अश्ववरा अश्वप्रधानाः, एवं नागवराः, तथा रथा रथसंगिणेल्ली-रथमाला क्वचित् रहसंगेल्लीति पाठः तत्र रथसङ्गेल्ली-रथसमूहः । 'तए णं से मेहे कुमारे अब्भागयभिगारं इत्यादिवर्णकोपसंहारवचनमिति न पुनरुक्तं 'सविड्ढीए'त्यादि दोहदावसरे व्याख्यातं, शङ्खः प्रतीतः, पणवो-भाण्डानां पटहः पटहस्तु प्रतीत एव भेरी-ढक्काकारा झल्लरी-वलयाकारा खरमुही-काहला हुडुक्का-प्रतीता महाप्रमाणो मर्दलो मुरजः स एव लघुर्मृदङ्गो दुन्दुभिः-भेर्याकारा सङ्कटमुखी एतेषां निर्घोषो-महाध्वानो नादितं च-घण्टायामिव वादनोत्तरकालभावी स तथा तद्ध्वनिस्तल्लक्षणो यो रवस्तेन, अर्थार्थिनो-द्रव्यार्थिनः कामार्थिनः-शब्दरूपार्थिनः भोगार्थिनः-गन्धरसस्पर्शार्थिनः लाभार्थिनः-सामान्येन लाभेप्सवः किल्बिषिकाः-पातकफलवंतो निःस्थान्धपङ्ग्वादयः कारोटिकाः- कापालिकाः करो-राजदेयं द्रव्यं तद्वहन्ति ये ते कारवाहिकाः करेण वा बाधिताः-पीडिता ये ते करबाधिताः, शंखवादनशिल्पमेषामिति शाङ्खिकाः शङ्खो वा विद्यते येषां मङ्गल्यचन्दनाधारभूतः ते शाङ्खिकाः, चक्रं प्रहरणमेषामिति चाक्रिकाः-योद्धारः चक्रं वाऽस्ति येषां ते चाक्रिकाः-कुम्भकारतैलिकादयः चक्रं वोपदर्श्य याचन्ते ये ते चाक्रिकाः चक्रधरा इत्यर्थः,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य राज्याभिषेक एवं दीक्षा

लाङ्गूलिकाः–हालिकाः लाङ्गूलं वा प्रहरणं येषां गले वा लम्बमानं सुवर्णादिमयं तद्येषां ते लाङ्गूलिकाः–कार्पटिकविशेषाः, मुखमङ्गलानि–चाटुवचनानि ये कुर्वन्ति ते मुखमङ्गलिकाः, पुष्पमाणवा–नग्नाचार्या वर्द्धमानकाः–स्कन्धारोपितपुरुषाः, 'इट्ठाहि'त्यादि पूर्ववत्,' 'जियविग्घोविय वसाहि'त्ति इहैव सम्बन्धः, अपि च जितविघ्नः त्वं हे देव! अथवा देवानां सिद्धेश्च मध्ये वस–आस्व, 'निहणाहि'त्ति विनाशय रागद्वेषौ मल्लौ, केन करणभूतेनेत्याह–तपसा–अनशनादिना, किंभूतः सन्?–धृत्या–चित्तस्वास्थ्येन 'धणियं'ति अत्यर्थं पाठान्तरेण बलिका–दृढा बद्धा कक्षा येन स तथा, मल्लं हि प्रतिमल्लो मुष्ट्यादिना करणेन वस्त्रादिदृढबद्धकक्षः सन्निहन्तीति एवमुक्तमिति, तथा मर्दय अष्टौ कर्मशत्रून् ध्यानेनोत्तमेन–शुक्लेनाप्रमत्तः सन्, तथा 'पावय'त्ति प्राप्नुहि वितिमिरं–अपगताज्ञानतिमिरपटलं नास्मादुत्तरमस्तीति अनुत्तरं–केवलज्ञानं, गच्छ च मोक्षं परं पदं शाश्वतमचलं चेत्येवं चकारस्य सम्बन्धः, किं कृत्वा?–हत्वा परीषहचमूं–परीषहसैन्यं, णमित्यलंकारे अथवा किंभूतस्त्वं?–हन्ता–विनाशकः परीषहचमूनां।

ततेणं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति २त्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति २त्ता वंदंति नमंसंति २ त्ता एवं वदासी–एस णं देवाणुप्पिया! मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव जीवियाउसासए हियय्णंदिजणए उंबरपुप्पंपिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण दरिसणयाए?, से जहा नामए उप्पलेति वा पउमेति वा कुमुदेति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संवुड्ढे नोवलिप्पति कामरएणं नोवलिप्पति भोगरएणं, एस णं देवाणुप्पिया!

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघदीक्षा सू. २५

॥ ५९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य दीक्षा

प्रत सूत्रांक [२५]

दीप अनुक्रम [३४]

संसारभउव्विगे भीए जम्मणजरमरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतित्तए, अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सभिक्खं, तते णं से समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊएहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेति, तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमति २ त्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति, तते णं से मेहकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छति २ हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिपगासाति अंसूणि विणिम्मुयमाणी २ रोयमाणी २ कंदमाणी २ विलवमाणी २ एवं वदासी–जतियव्वं जाया! घडियव्वं जाया! परक्कमियव्वं जाया! अस्सिं च णं अट्ठे नो पमादेयव्वं अम्हंपि णं एमेव मग्गे भवउत्तिकट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति २ जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया (सूत्रं २५)

'एगे पुत्ते'इति धारिण्यपेक्षया, श्रेणिकस्य बहुपुत्रत्वात्, जीवितोच्छ्वासको हृदयनंदिजनकः, उत्पलमिति वा–नीलोत्पलं पद्ममिति वा–आदित्यबोध्यं कुमुदमिति वा–चन्द्रबोध्यं। 'जइयव्व'मित्यादि, अप्राप्तेषु संयमयोगेषु यत्नः कार्यो हे जात!–पुत्र! घटितव्यं–अप्राप्तप्राप्तये घटना कार्या पराक्रमितव्यं च–पराक्रमः कार्यः, पुरुषत्वाभिमानः सिद्धफलः कर्तव्य इति भावः, किमुक्तं भवति?–एतस्मिन्नर्थे प्रव्रज्यापालनलक्षणे न प्रमादयितव्यमिति।

तते णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति २ जेणामेव समणे ३ तेणामेव उवागच्छति २

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य दीक्षा

समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति २ वंदति नमंसति २ एवं वदासी–आलित्ते णं भंते! लोए पलित्ते णं भंते! लोए आलित्तपलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य, से जहाणामए केई गाहावती आगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवति अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमति एस मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति एवामेव ममवि एगे आयाभंडे इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सति तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाहिं सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं सेहावियं सिक्खावियं सयमेव आयारगोयरविणयवेणइयचरणकरणजायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं, तते णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेति सयमेव आयारजाव धम्ममातिक्खइ–एवं देवाणुप्पिया! गंतव्वं चिट्ठितव्वं णिसीयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूतेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमितव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं, तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं णिसम्म सम्मं पडिवज्जइ तमाणाए तह गच्छइ तह चिट्ठइ जाव उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूतेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमइ (सूत्रं २६) जं दिवसं च णं मेहे कुमारे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए तस्स णं दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि समणाणं निग्गंथाणं अहारातिणियाए सेज्जासंथारएसु विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स दारमूले

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य दीक्षा एवं शिक्षा

प्रत सूत्रांक [२६, २६R]

दीप अनुक्रम [३५,३६]

सेज्जासंथारए जाए यावि होत्था, तते णं समणा णिग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगतिया मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्टंति एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि अप्पेगतिया ओलंडेंति अप्पेगइया पोलंडेइ अप्पेगतिया पायरयरेणुगुंडियं करेंति, एवंमहालियं च णं रयणीं मेहे कुमारे णो संचाएति खणमवि अच्छिं निमीलित्तए, तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे जाव समणयाए तं जया णं अहं अगारमज्झे वसामि तया णं मम समणा णिग्गंथा आढायंति परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अट्ठाइं हेऊतिं पसिणातिं कारणाइं वागरणाइं आतिक्खंति इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति संलवेंति, जप्पभितिं च णं अहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए तप्पभितिं च णं मम समणा नो आढायंति जाव नो संलवंति, अदुत्तरं च णं मम समणा णिग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए जाव महालियं च णं रत्तिं नो संचाएमि अच्छिं णिमिलावेत्तए, तं सेयं खलु मज्झं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे वसित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए णिरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेति २ कल्लं पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य दीक्षा एवं शिक्षा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२६, २६R]

दीप अनुक्रम [३५,३६]

तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं० तेणामेव उवागच्छति २ तिखुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेइ २ वंदइ नमंसइ २ जाव पज्जुवासइ (सूत्रं २६)

आदीप्त–ईषदीप्तः प्रदीप्तः–प्रकर्षेण दीप्त आदीप्तप्रदीप्तोऽत्यन्तप्रदीप्त इति भावः, 'गाहावइ'त्ति गृहपतिः, 'झियायमाणंसि'त्ति ध्मायमाने भाण्डं–पण्यं हिरण्यादि अल्पभारं पाठान्तरे अल्पं च तत्सारं चेत्यल्पसारं मूल्यगुरुकं, 'आयाए'त्ति आत्मना 'पच्छा पुरा य'त्ति पश्चादागामिनि काले पुरा च पूर्वमिदानीमेव लोके–जीवलोके अथवा पश्चाल्लोके–आगामिजन्मनि पुरालोके–इहैव जन्मनि, पाठान्तरे 'पच्छाउरस्स'त्ति पश्चादग्निभयोत्तरकालं आतुरस्य–बुभुक्षादिभिः पीडितस्येति। 'एगे भंडे'त्ति एकं–अद्वितीयं भाण्डमिव भाण्डं 'सयमेवे'त्यादि स्वयमेव प्रव्राजितं वेषदानेन आत्मानं इति गम्यते भावे वा क्तः प्रत्ययः प्रव्राजनमित्यर्थः मुण्डितं शिरो-लोचेन सेधितं–निष्पादितं करणप्रत्युपेक्षणादिग्राहणतः, शिक्षितं सूत्रार्थग्राहणतः, आचारो–ज्ञानादिविषयमनुष्ठानं कालाध्ययनादि गोचरो–भिक्षाटनं विनयः–प्रतीतो वैनयिकं–तत्फलं कर्म्मक्षयादि चरणं–व्रतादि करणं–पिण्डविशुद्धादि यात्रा–संयमयात्रा मात्रा–तदर्थमेवाहारमात्रा ततो द्वन्द्वः तत एषामाचारादीनां वृत्तिः–वर्त्तनं यस्मिन्नसौ आचारगोचरविनयवैनयिकचरणकरणयात्रामात्रावृत्तिकस्तं धर्म्ममाख्यातं–अभिहितं, ततः श्रमणो भगवान् महावीरः स्वयमेव प्रव्राजयति यावत् धर्म्ममाख्याति, कथमित्याह–एवं गन्तव्यं–युगमात्रभून्यस्तदृष्टिनेत्यर्थः, 'एवं चिट्ठियव्वं'ति शुद्धभूमौ ऊर्द्ध्वस्थानेन स्थातव्यं, एवं निषीदितव्यं–उपवेष्टव्यं संदंशकभूमिप्रमार्जनादिन्यायेनेत्यर्थः, एवं तग्वर्त्तितव्यं–शयनीयं सामायिकाद्युच्चारणापूर्वकं शरीरप्रमार्जनां विधाय संस्तारकोत्तरपट्टयोर्बाहूपधानेन वामपार्श्वत इत्यादिना न्यायेनेत्यर्थः, भोक्तव्यं–वेदनादिकारणतो अङ्गारा-

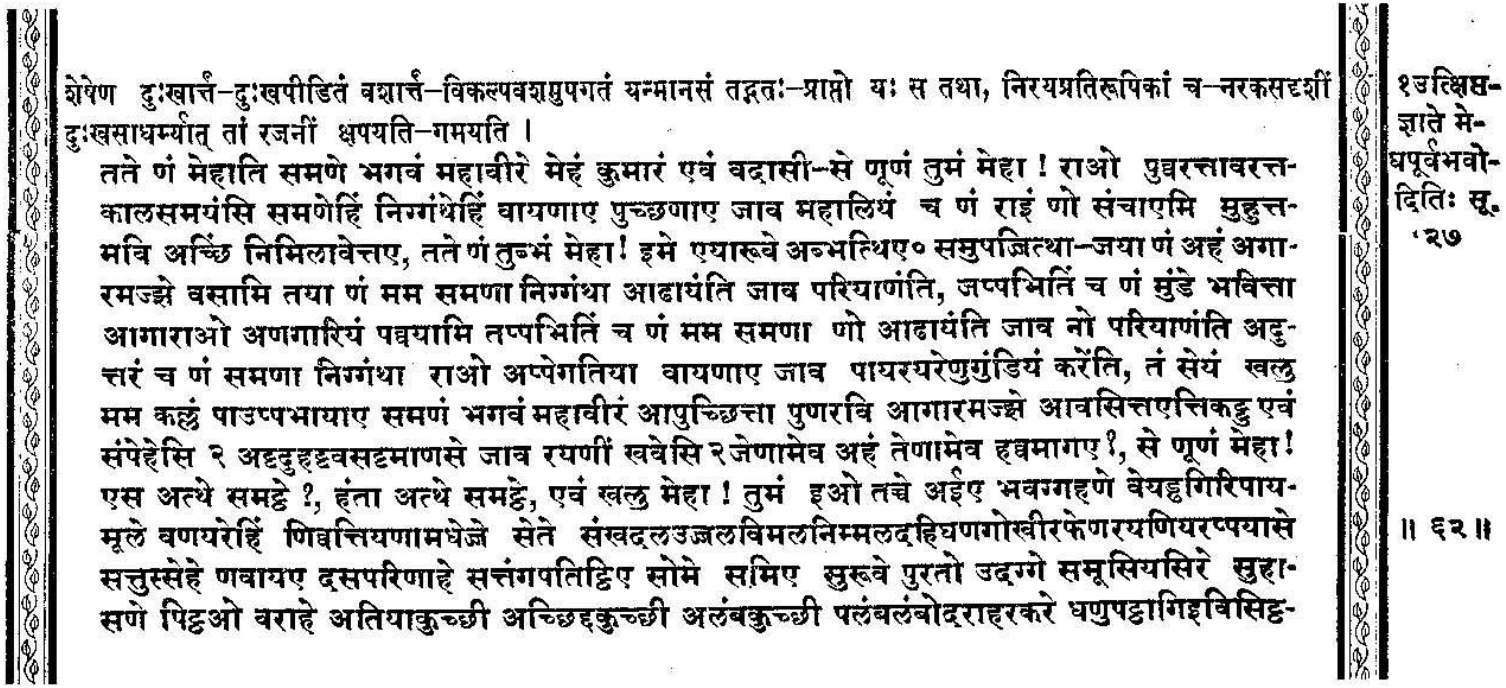
॥ ६१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य दीक्षा एवं शिक्षा

दिदोषरहितमित्यर्थः भाषितव्यं–हितमितमधुरादिविशेषणतः, एवमुत्थायोत्थाय–प्रमादनिद्राव्यपोहेन विबुध्य २ प्राणादिषु विषयेषु संयमो–रक्षा तेन संयंतव्यम्–संयतितव्यमिति, तत्र–"प्राणा द्वित्रिचतुः प्रोक्ताः, भूतास्तु तरवः स्मृताः । जीवाः पञ्चेन्द्रिया ज्ञेयाः, शेषाः सत्त्वा उदीरिताः ॥ १ ॥" किं बहुना ?–अस्मिन् प्राणादिसंयमे न प्रमादयितव्यमुद्यम एव कार्य इत्यर्थः । प्रत्यपराह्णकालसमयो–विकालः, 'अहाराइणियाए'त्ति यथारत्नाधिकतया यथाज्येष्ठमित्यर्थः, शय्या–शयनं तदर्थं संस्तारकभूमयः अथवा शय्यायां–वसतौ संस्तारकाः शय्यासंस्तारकाः, वाचनायै–वाचनार्थं धर्मार्थमनुयोगस्य–व्याख्यानस्य चिन्ता धर्म्मानुयोगस्य वा–धर्मव्याख्यानस्य चिन्ता धर्मानुयोगचिन्ता तस्यै अतिगच्छन्तःप्रविशन्तो निर्गच्छन्तश्चालयादिति गम्यते, 'ओलंडिंतिति'त्ति उल्लङ्घयंति 'पोलंडेन्ति'त्ति प्रकर्षेण द्विस्त्रिर्वोल्लघयंतीत्यर्थः, पादरजोलक्षणेन रेणुना पादरयाद्वा-तद्वेगात् रेणुना गुण्डितो यः स तथा तं कुर्वन्ति । 'एवंमहालियं च णं रयणि'न्ति इतिमहतीं च रजनीं यावदिति शेषः, मेघकुमारो 'नो संचाएति'त्ति न शक्नोति क्षणमप्यक्षि निमीलयितुं निद्राकरणायेति, आध्यात्मिकः–आत्मविषयश्चिन्तितः–स्मरणरूपः प्रार्थितः–अभिलाषात्मकः मनोगतः–मनस्येव वर्त्तते यो न बहिः स तथा सङ्कल्पो–विकल्पः समुत्पन्नः आगारमध्ये–गेहमध्ये वसामि–अधितिष्ठामि, पाठान्तरतो अगारमध्ये आवसामि, 'आढंति' आद्रियन्ते 'परिजानन्ति' यदुतायमेवंविध इति 'सक्कारयंति सत्कारयन्ति च वस्त्रादिभिरभ्यर्चयन्तीत्यर्थः 'सन्मानयन्ति' उचितप्रतिपत्तिकरणेन, अर्थान्–जीवादीन् हेतून्–तद्गमकानन्वयव्यतिरेकलक्षणान् प्रश्नान्–पर्यनुयोगान् कारणानि–उपपत्तिमात्राणि व्याकरणानि–परेण प्रश्ने कृते उत्तराणीत्यर्थः, आख्यान्ति–ईषत् संलपन्ति–मुहुर्मुहुः, 'अदुत्तरं च णं'ति अथवा परं 'एवं संपेहेइ'त्ति संप्रेक्षते–पर्यालोचयति 'अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए'ति आर्त्तेन–ध्यानवि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ६२ ॥

शेषेण दुःखार्त्त–दुःखपीडितं वशार्त्त–विकल्पवशमुपगतं यन्मानसं तद्वतः–प्राप्तो यः स तथा, निरयप्रतिरूपिकां च–नरकसदृशीं दुःखसाधर्म्यात् तां रजनीं क्षपयति–गमयति ।

ततेणं मेहाति समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं एवं वदासी–से णूणं तुमं मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए पुच्छणाए जाव महालियं च णं राइं णो संचाएमि मुहुत्त-मवि अच्छिं निमिलावेत्तए, ततेणं तुब्भं मेहा! इमे एयारूवे अज्झत्थिए० समुप्पज्जित्था–जया णं अहं अगा-रमज्झे वसामि तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति जाव परियाणंति, जप्पभितिं च णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि तप्पभितिं च णं मम समणा णो आढायंति जाव नो परियाणंति अदु-त्तरं च णं समणा निग्गंथा राओ अप्पेगतिया वायणाए जाव पायरयरेणुगुंडियं करेंति, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे आवसित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेसि २ अट्टदुहट्टवसट्टमाणसे जाव रयणीं खवेसि २ जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए?, से णूणं मेहा! एस अत्थे समट्ठे ?, हंता अत्थे समट्ठे, एवं खलु मेहा ! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपाय-मूले वणयरेहिं णिव्वत्तियणामधेज्जे सेते संखदलउज्जलविमलनिम्मलदहिघणगोखीरफेणरयणियरप्पयासे सत्तुस्सेहे णवायए दसपरिणाहे सत्तंगपतिट्ठिए सोमे समिए सुरूवे पुरतो उदग्गे समूसियसिरे सुहा-सणे पिट्ठओ वराहे अतियाकुच्छी अच्छिद्दकुच्छी अलंबकुच्छी पलंबलंबोदराहरकरे धणुपट्ठागिइविसिट्ठ-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मे-घपूर्वभवो-दितिः सू. २७

॥ ६२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवा:

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [३७]

पुट्ठे अल्लीणपमाणजुत्तवट्टियापीवरगत्तावरे अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छे पडिपुन्नसुचारुकुम्मचलणे पंडुरसुविसुद्धनिद्धणिरुवहयविंसतिणहे छद्दंते सुमेरुप्पभे नामं हत्थिराया होत्था, तत्थ णं तुमं मेहा! बहूहिं हत्थीहि य हत्थीणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभेहि य कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे हत्थिसहस्सणायए देसए पागट्टी पट्ठवए जूहवई वंदपरियट्टए अन्नेसिं च बहूणं एकल्लाणं हत्थिकलभाणं आहेवच्चं जाव विहरसि, तते णं तुमं मेहा! णिच्चप्पमत्ते सइं पललिए कंदप्परई मोहणसीले अवितण्हे कामभोगतिसिए बहूहिं हत्थीहि य जाव संपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य दरीसु य कुहरेसु य कंदरासु य उज्झरेसु य निज्झरेसु य वियरएसु य गद्दासु य पल्लवेसु य चिल्ललेसु य कडयेसु य कडयपल्ललेसु य तडीसु य वियडीसु य टंकेसु य कूडेसु य सिहरेसु य पब्भारेसु य मंचेसु य मालेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य वणराईसु य नदीसु य नदीकच्छेसु य जूहेसु य संगमेसु य वावीसु य पोक्खरिणीसु य दीहियासु य गुंजालियासु य सरेसु य सरपंतियासु य सरसरपंतियासु य वणयरएहिं दिन्नवियारे बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धिं संपरिवुडे बहुविहतरुपल्लवपउरपाणियतणे निब्भए निरुव्विग्गे सुहंसुहेणं विहरसि। तते णं तुमं मेहा! अन्नया कयाई पाउसवरिसारत्तसरयहेमंतवसंतेसु कमेण पंचसु उऊसु समतिक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासे पायवघंससमुट्ठिएणं सुक्कतणपत्तकयवरमारुतसंजोगदीविएणं महाभयंकरेणं हुयवहेणं वणदवजालासंपलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु महावायवेगेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवः

संघट्टिएसु छिन्नजालेसु आवयमाणेसु पोल्लरुक्खेसु अंतो २ झियायमाणेसु मयकुहितविणिविट्ठकिमिय-कद्दमनदीवियरगजिण्णपाणीयंतेसु वणंतेसु भिंगारकदीणकंदियरवेसु खरफरुसअणिट्ठरिट्ठवाहितविहुम-ग्गेसु दुमेसु तण्हावसमुक्कपक्खपयडियजिब्भतालुयअसंपुडिततुंडपक्खिसंघेसु ससंतेसु गिम्हउम्हउ-ण्हवायखरफरुसचंडमारुयसुक्कतणपत्तकयवरवाउलिभमंतदित्तसंभंतसावयाउलमिगतण्हाबद्धचिण्हपट्टेसु गिरिवरेसु संवट्टिएसु तत्थमियपसवसिरीसिवेसु अवदालियवयणविवरणिल्लालियग्गजीहे महंततु-बइव पुन्नकन्ने संकुचियथोरपीवरकरे ऊसियलंगूले पीणाइयविरसरडियसद्देणं फोडयंतेव अंबरतलं पायद-द्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं विणिम्मुयमाणे य सीयारं सव्वतो समंता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे रुक्ख-सहस्सातिं तत्थ सुबहूणि णोल्लायंते विणट्ठरट्ठेव णरवरिंदे वायाइद्धेव पोए मंडलवाएव्व परिब्भमंते अभि-क्खणं २ लिंडणियरं पमुंचमाणे २ बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था, तत्थ णं तुमं मेहा! जुन्ने जराजज्जरियदेहे आउरे झंझिए पिवासिए दुब्बले किलंते नट्ठसुइए मूढदिसाए सयातो जूहातो विप्पहूणे वणदवजालापारद्धे उण्हेण तण्हाए य छुहाए य परब्भाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजातभए सव्वतो समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं अप्पोदयं पंकबहुलं अतित्थेणं पाणियपाए उइन्नो, तत्थ णं तुमं मेहा! तीरमतिगते पाणियं असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसन्ने, तत्थ ण तुमं मेहा! पाणियं पाइस्सामित्तिकट्टु हत्थं पसारेसि, सेवि य ते हत्थे उदगं न पावति, ततेणं तुमं मेहा!

॥ ६३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	मेघकुमारस्य पूर्वभवा:



पुणरवि कायं पडुद्धरिस्सामीतिकट्टु बलियतरायं पंकंसि खुत्ते। तते णं तुमे मेहा! अन्नया कदाइ एगे चिरनिज्जूढे गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ करचरणदंतमुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयं पादेउं समोयरेति, तते णं से कलभए तुमं पासति २ तं पुव्ववेरं समरति २ आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छति २ तुमं तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठतो उच्छुभति उच्छुभित्ता पुव्ववेरं निज्जाएति २ हट्ठतुट्ठे पाणियं पियति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तते णं तव मेहा! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था उज्जला विउला तिउला कक्खडा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरित्था। तते णं तुमं मेहा! तं उज्जलं जाव दुरहियासं सत्तराइंदियं वेयणं वेदेसि सवीसं वाससतं परमाउं पालइत्ता अट्टवसट्टदुहट्टे कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गंगाए महाणदीए दाहिणे कूले विंझगिरिपायमूले एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिंसि गयकलभए जणिते, तते णं सा गयकलभिया णवण्हं मासाणं वसंतमासंमि तुमं पयाया, तते णं तुमं मेहा! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था, रत्तुप्पलरत्तसूमालए जासुमणारत्तपारिजत्तयलक्खारससरसकुंकुमसंझब्भरागवन्ने इट्ठे णिगस्स जूहवइणो गणियायारकणेरुकोत्थहत्थी अणेगहत्थिसयसंपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेणं विहरसि। तते णं तुमं मेहा! उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते जूहव-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

इणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि, तते णं तुमं मेहा ! वणयरेहिं निव्वत्तियनाम-धेज्जे जाव चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था, तत्थ णं तुमं मेहा! सत्तंगपइट्ठिए तहेव जाव पडिरूवे, तत्थ णं तुमं मेहा ! सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था, तते णं तुमं अन्नया कयाइ गिम्ह-कालसमयंसि जेट्ठामूले वणदवजालापलित्तेसु वणंतेसु सुधूमाउलासु दिसासु जाव मंडलवाएव्व तते णं परिब्भमंते भीते तत्थे जाव संजायभए बहूहिं हत्थीहि य जाव कलभियाहि य सद्धिं संपरि-वुडे सव्वतो समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था, तते णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–कहिण्णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसंभवे अणुभूयपुव्वे ?, तव मेहा ! लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं अज्झवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातिसरणे समुपज्जित्था, तते णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं अभिसमेसि, एवं खलु मया अतीए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे वियड्ढगि-रिपायमूले जाव तत्थ णं महया अयमेयारूवे अग्गिसंभवे समणुभूए, तते णं तुमं मेहा ! तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं सद्धिं समन्नागए यावि होत्था, तते णं तुमं मेहा ! सत्तुस्सेहे जाव स-न्निजाइस्सरणे चउदंते मेरुप्पभे नाम हत्थी होत्था, तते णं तुज्झं मेहा अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-ज्जित्था–तं सेयं खलु मम इयाणिं गंगाए महानदीए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विंझगिरिपायमूले दवग्गि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवः

संताणकारणट्ठा सएणं जूहेणं महालयं मंडलं घाइत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेसि २ सुहंसुहेणं विहरसि, तते णं तुमं मेहा! अन्नया कदाइं पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि गंगाए महानदीए अदूरसामंते बहूहिं हत्थीहिं जाव कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहिं संपरिवुडे एगं महं जोयणपरिमंडलं महतिमहालयं मंडलं घाएसि, जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कंटए वा लया वा वल्ली वा खाणुं वा रुक्खे वा खुवे वा तं सव्वं तिखुत्तो आहुणिय एगंते एडेसि २ पाएण उट्ठवेसि हत्थेणं गेण्हसि [२ त्ता] तते णं तुमं मेहा! तस्सेव मंडलस्स अदूरसामंते गंगाए महानदीए दाहिणिल्ले कूले विंझगिरिपायमूले गिरीसु य जाव विहरसि, तते णं मेहा! अन्नया कदाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ दोच्चंपि तच्चंपि मंडलं घाएसि २ एवं चरिमे वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयमाणंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ तच्चंपि मंडलघायं करेसि जं तत्थ तणं वा जाव सुहंसुहेणं विहरसि, अह मेहा! तुमं गइंदभावंमि वट्टमाणो कमेणं नलिणिवणविवहणगरे हेमंते कुंदलोद्धउद्धततुसारपउरंमि अतिक्कंते अहिणवे गिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणेसु वणेसु वणकरेणुविविहदिण्णकयपंसुघाओ तुमं उउयकुसुमकयचामरकन्नपूरपरिमंडियाभिरामो मयवसविगसंतकडतडकिलिन्नगंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरिवारिओ उउसमत्तजणितसोभो काले दिणयरकरपयंडे परिसोसियतरुवरसिहरभीमतरदंसणिज्जे भिंगाररवंतभेरवरवे णाणाविहपत्तकट्ठतणकयवरुद्धतपइ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवा:

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [३७]

मारुयाइद्धनहयलदुमगणे वाउलियादारुणतरे तण्हावसदोसदूसियभमंतविविहसावयसमाउले भीमदरिसणिज्जे वट्टंते दारुणंमि गिम्हे मारुतवसपसरपसरियवियंभिएणं अब्भहियभीमभेरवरवप्पगारेणं महुधारापडियसित्तउद्धायमाणधगधगधगंतसद्दुद्धुएणं दित्ततरसफुलिंगेणं धूममालाउलेणं सावयसयंतकरणेणं अब्भहियवणदवेणं जालालोवियनिरुद्धधूमंधकारभीयो आयवालोयमहंततुंबइयपुन्नकन्नो आकुंचियथोरपीवरकरो भयवसभयंतदित्तनयणो वेगेण महामेहोव्व पवणोल्लियमहल्लरूवो जेणेव कओ ते पुरा दवग्गिभयभीयहियएणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गिसंताणकारणट्ठाए जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए, एक्को ताव एस गमो। तते णं तुमं मेहा! अन्नया कदाइं कमेणं पंचसु ऊउसु समतिक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायवसंघंससमुट्ठिएणं जाव संवट्टिएसु मियपसुपक्खिसिरीसिवे दिसो दिसिं विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य सद्धिं जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तत्थ णं अण्णे बहवे सीहा य वग्घा य विगया दीविया अच्छा य तरच्छा य पारासरा य सरभा य सियाला विराला सुणहा कोला ससा कोकंतिया चित्ता चिल्ला पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविद्दुया एगयाओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति, तए णं तुमं मेहा! जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ त्ता तेहिं बहूहिं सीहेहिं जाव चिल्ललएहि य एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि, तते णं तुमं मेहा! पाएणं गत्तं कंडुइस्सामीतिकट्टु पाए उक्खित्ते तंसिं च णं अंतरंसि अन्नेहिं बलवन्तेहिं सत्तेहिं पणोल्लिज्जमाणे २ ससए अणुपविट्ठे।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [३७]

ततेणं तुमं मेहा ! गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायं पडिनिक्खमिस्सामित्तिकट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि २ पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपाए जीवाणुकंपाए सत्ताणुकंपयाए सो पाए अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं णिक्खित्ते, ततेणं तुमं मेहा ! ताए पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए संसारे परित्तीकते माणुस्साउए निबद्धे, ततेणं से वणदवे अहोरातिज्जातिं रातिंदियाइं तं वणं झामेइ २ निट्ठिए उवरए उवसंते विज्झाए यावि होत्था, ततेणं ते बहवे सीहा य जाव चिल्ललगा य तं वणदवं निट्ठियं जाव विज्झायं पासंति २ त्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा मंडलातो पडिनिक्खमंति २ सव्वतो समंता विप्पसरित्था, [तएणं ते बहवे हत्थि जाव छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति २ दिसो दिसिं विप्पसरित्था,] तएणं तुमं मेहा! जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयापिणिद्धगत्ते दुब्बले किलंते जुंजिए पिवासिते अत्थामे अबले अपरक्कमे अचंकमणो वा ठाणुखंडे वेगेण विप्पसरिस्सामित्तिकट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहते विव रयतगिरिपब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहि य सन्निवइए, ततेणं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरसि, ततेणं तुमं मेहा ! तं उज्जलं जाव दुरहियासं तिन्नि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससतं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणितस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए। (सूत्रं २७)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [३७]

'मेहाइ'त्ति हे मेघ इति, एवमभिलाप्य महावीरस्तमवादीत् । 'से णूण'मित्यादि, अथ नूनं–निश्चितं मेघ ! अस्ति एषोऽर्थः?, 'हंते'ति कोमलामन्त्रणे अस्त्येषोऽर्थ इति मेघेनोत्तरमदायि, वनचरकैः–शबरादिभिः, 'संखे'त्यादि विशेषणं प्राग्वि सत्तुस्सेहे–सप्तहस्तोच्छ्रितः, नवायतो–नवहस्तायतः, एवं दशहस्तप्रमाणः मध्यभागे सप्ताङ्गानि–पादकरपुच्छलिङ्ग-लक्षणानि प्रतिष्ठितानि भूमौ यस्य स तथा समः–अविषमगात्रः सुसंस्थितो–विशिष्टसंस्थानः पाठान्तरेण सौम्यसम्मितः तत्र सोम्यः–अरौद्राकारो नीरोगो वा सम्मितः–प्रमाणोपेताङ्गः, पुरतः–अग्रतः उदग्रः–उच्चः सधुच्छ्रितशिराः शुभानि सुखानि वा आसनानि–स्कन्धादीनि यस्य स तथा, पृष्ठतः–पश्चाद्भागे वराह इव–शूकर इव वराहः अवनतत्वात्, अजि-काया इवोन्नतत्वात् कुक्षी यस्य स तथा, अच्छिद्रकुक्षी मांसलत्वात् अलम्बकुक्षिरपलक्षणवियोगात् पलम्बलंबोयराहरकरे-त्ति–प्रलम्बं च लम्बौ च क्रमेणोदरं च–जठरमधरकरौ च–ओष्ठहस्तौ यस्य स तथा, पाठान्तरे [प्र]लम्बौ लम्बोदरस्येव–गणपतेरिव अधरकरौ यस्य स तथा, धनुःपृष्ठाकृति–आरोपितज्यधनुराकारं विशिष्टं–प्रधानं पृष्ठं यस्य स तथा, आलीनानि–सुश्लिष्टानि प्रमाणयुक्तानि वर्त्तितानि–वृत्तानि पीवराणि–उपचितानि गात्राणि–अङ्गानि अपराणि–वर्णितगात्रेभ्योऽन्यानि अपर-भागगतानि वा यस्य स तथा, अथवा आलीनादिविशेषणं गात्रं–उरः अपरश्च–पश्चाद्भागो यस्य स तथा, वाचनान्तरे विशेष-णद्वयमिदं–अभ्युद्गता–उन्नता मुकुलमल्लिकेव–कोरकावस्थविचकिलकुसुमवद्धवलाश्च दन्ता यस्य सोऽभ्युद्गतमुकुलमल्लिकाध-वलदन्तः आनामितं यच्चापं–धनुस्तस्येव ललितं–विलासो यस्याः सा तथा सा च संवेल्लिता च–संवेल्लन्ती सङ्कोचिता वा अग्र-सुण्डा–सुण्डाग्रं यस्य स आनामितचापललितसंवेल्लिताग्रसुण्डः, आलीनप्रमाणयुक्तपुच्छः प्रतिपूर्णः सुचारवः कूर्म्मवच्चरणा यस्य स

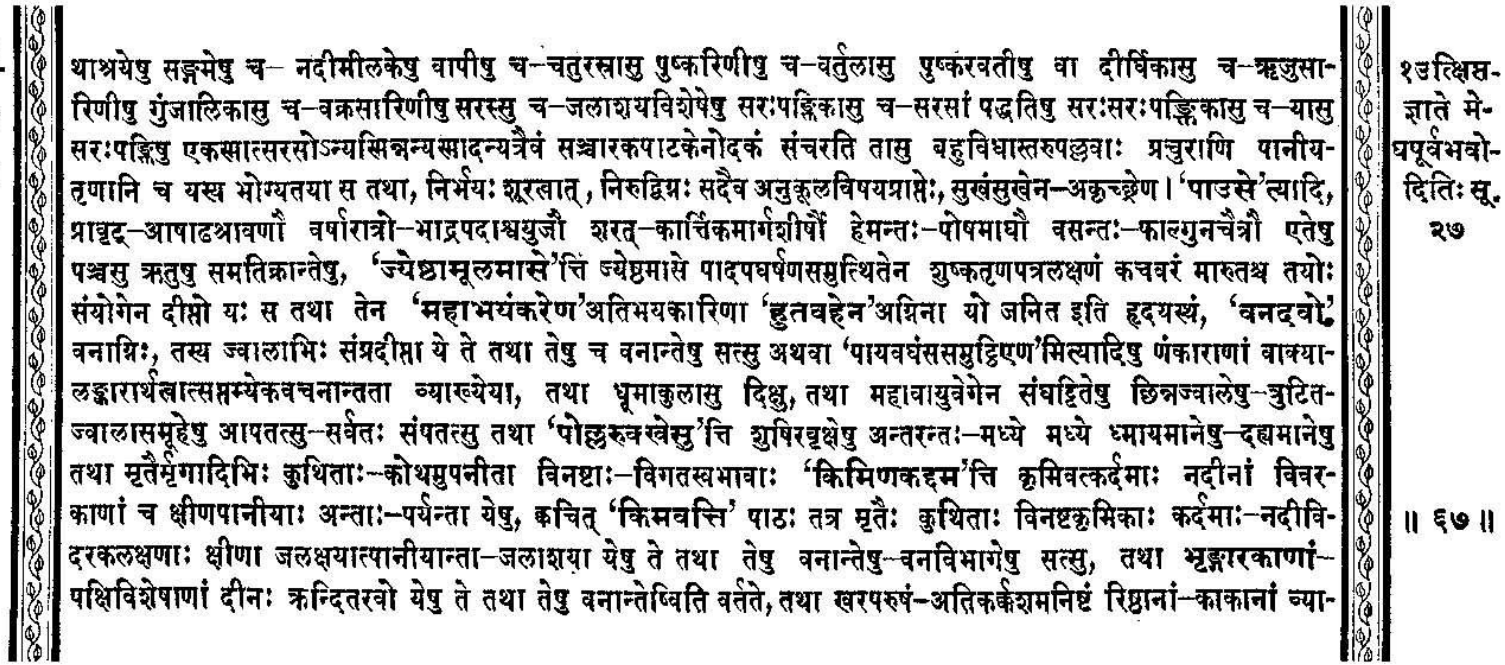
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

तथा पाण्डुराः–शुक्लाः सुविशुद्धाः–निर्म्मलाः स्निग्धाः–कान्ता निरुपहताः–स्फोटादिदोषरहिता विंशतिर्नखा यस्य स तथा, तत्र त्वं हे मेघ ! बहुभिर्हस्त्यादिभिः सार्द्धं संपरिवृतः आधिपत्यं कुर्वन् विहरसीति सम्बन्धः । तत्र हस्तिनः–परिपूर्णप्रमाणाः लोट्टकाः–कुमारकावस्थाः कलभाः–बालकावस्थाः हस्तिसहस्रस्य नायकः–प्रधानः न्यायको वा–देशको हितमार्गादेः प्राकर्षी–प्राकर्षको अग्रगामी प्रस्थापको–विविधकार्येषु प्रवर्तको यूथपतिः–तत्स्वामी वृन्दपरिवर्द्धकः–तद्वृद्धिकारकः 'सइं पललिए'त्ति सदा प्रललितः–प्रक्रीडितः कन्दर्परतिः–केलिप्रियः मोहनशीलो–निधुवनप्रियः अवितृप्तो–मोहने एवानुपरतवाञ्छः, तथा सामान्येन कामभोगेऽतृप्तिः गिरिषु च–पर्वतेषु दरीषु च–कन्दरविशेषेषु कुहरेषु च–पर्वतान्तरालेषु कन्दरासु च–गुहासु उज्झरेषु च–उदकस्य प्रपातेषु निर्झरेषु च–स्यन्दनेषु विदरेषु च–क्षुद्रनद्याकारेषु नदीपुलिनस्यन्दजलगतिरूपेषु वा गर्तासु च–प्रतीतासु पल्वलेषु च–प्रह्लादनशीलेषु चिल्ललेषु च–चिक्खिल्लमिश्रेषु कटकेषु च–पर्वततटेषु कटकपल्वलेषु–पर्वततटव्यस्थितजलाशयविशेषेषु तटीषु च–नद्यादीनां तटेषु वितटीषु च–तास्वेव विरूपासु अथवा वियडिशब्देन लोके अटवी उच्यते, टङ्केषु च–एकदिशि छिन्नेषु पर्वतेषु कुटकेषु च अधोविस्तीर्णेषूपरि संकीर्णेषु वृत्तपर्वतेषु हस्त्यादिबन्धनस्थानेषु वा शिखरेषु च–पर्वतोपरिवर्त्तिकूटेषु प्राग्भारेषु च–ईषदवनतपर्वतभागेषु मञ्चेषु च–स्तम्भन्यस्तफलकमयेषु नद्यादिलङ्घनार्थेषु मालेषु च–श्वापदादिरक्षार्थेषु तद्विशेषेष्वेव मञ्चमालकाकारेषु पर्वतदेशेष्वित्यन्ये काननेषु च–स्त्रीपक्षस्य पुरुषपक्षस्य चैकतरस्य भोग्येषु वनविशेषेषु अथवा यत्परतः पर्वतोऽटवी वा भवति तानि काननानि जीर्णवृक्षाणि वा तेषु वनेषु च–एकजातीयवृक्षेषु वनखण्डेषु च–अनेकजातीयवृक्षेषु वनराजीषु च–एकानेकजातीयवृक्षाणां पङ्क्तिषु नदीषु च–प्रतीतासु नदीकक्षेषु च–तद्गहनेषु यूथेषु च वानरादियू-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्-

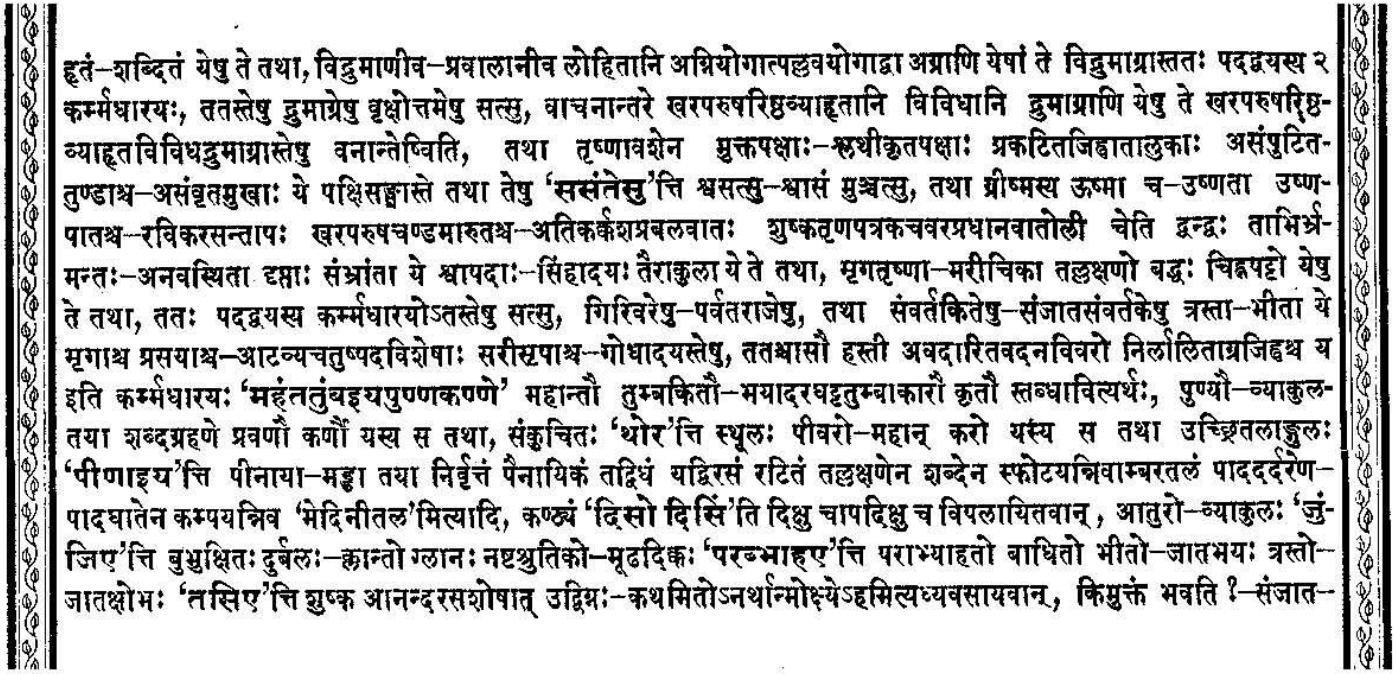
॥ ६७ ॥

थाश्रयेषु सङ्गमेषु च– नदीमीलकेषु वापीषु च–चतुरस्रासु पुष्करिणीषु च–वर्तुलासु पुष्करवतीषु वा दीर्घिकासु च–ऋजुसारिणीषु गुंजालिकासु च–वक्रसारिणीषु सरस्सु च–जलाशयविशेषेषु सरःपङ्क्तिकासु च–सरसां पद्धतिषु सरःसरःपङ्क्तिकासु च–यासु सरःपङ्क्तिषु एकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन्नन्यस्मादन्यत्रैवं सञ्चारकपाटकेनोदकं संचरति तासु बहुविधास्तरुपल्लवाः प्रचुराणि पानीयतृणानि च यस्य भोग्यतया स तथा, निर्भयः शूरत्वात्, निरुद्विग्नः सदैव अनुकूलविषयप्राप्तेः, सुखंसुखेन–अक्लेशेन। 'पाउसे'त्यादि, प्रावृट्–आषाढश्रावणौ वर्षारात्रो–भाद्रपदाश्वयुजौ शरत्–कार्तिकमार्गशीर्षौ हेमन्तः–पोषमाघौ वसन्तः–फाल्गुनचैत्रौ एतेषु पञ्चसु ऋतुषु समतिक्रान्तेषु, 'ज्येष्ठामूलमासे'त्ति ज्येष्ठमासे पादपघर्षणसमुत्थितेन शुष्कतृणपत्रलक्षणं कचवरं मारुतश्च तयोः संयोगेन दीप्तो यः स तथा तेन 'महाभयंकरेण'अतिभयकारिणा 'हुतवहेन'अग्निना यो जनित इति हृदयस्थं, 'वनदवो' वनाग्निः, तस्य ज्वालाभिः संप्रदीप्ता ये ते तथा तेषु च वनान्तेषु सत्सु अथवा 'पायवघंससमुट्ठिएण'मित्यादिषु णंकाराणां वाक्यालङ्कारार्थत्वात्सप्तम्येकवचनान्तता व्याख्येया, तथा धूमाकुलासु दिक्षु, तथा महावायुवेगेन संघट्टितेषु छिन्नज्वालेषु–त्रुटितज्वालासमूहेषु आपतत्सु–सर्वतः संपतत्सु तथा 'पोल्लरुक्खेसु'त्ति शुषिरवृक्षेषु अन्तरन्तः–मध्ये मध्ये ध्मायमानेषु–दह्यमानेषु तथा मृतैर्मृगादिभिः कुथिताः–कोथमुपनीता विनष्टाः–विगतस्वभावाः 'किमिणकद्दम'त्ति कृमिवत्कर्दमाः नदीनां विवरकाणां च क्षीणपानीयाः अन्ताः–पर्यन्ता येषु, क्वचित् 'किमवत्ति' पाठः तत्र मृतैः कुथिताः विनष्टकृमिकाः कर्दमाः–नदीविदरकलक्षणाः क्षीणा जलक्षयात्पानीयान्ता–जलाशया येषु ते तथा तेषु वनान्तेषु–वनविभागेषु सत्सु, तथा भृङ्गारकाणां–पक्षिविशेषाणां दीनः क्रन्दितरवो येषु ते तथा तेषु वनान्तेष्विति वर्तते, तथा खरपरुषं–अतिकर्कशमनिष्टं रिष्टानां–काकानां व्या-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघपूर्वभवो-दितिः सू. २७

॥ ६७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



हृतं–शब्दितं येषु ते तथा, विद्रुमाणीव–प्रवालानीव लोहितानि अग्नियोगात्पल्लवयोगाद्वा अग्राणि येषां ते विद्रुमाग्रास्ततः पदद्वयस्य २ कर्म्मधारयः, ततस्तेषु द्रुमाग्रेषु वृक्षोत्तमेषु सत्सु, वाचनान्तरे खरपरुषरिष्ठव्याहृतानि विविधानि द्रुमाग्राणि येषु ते खरपरुषरिष्ठव्याहृतविविधद्रुमाग्रास्तेषु वनान्तेष्विति, तथा तृष्णावशेन मुक्तपक्षाः–शिथीकृतपक्षाः प्रकटितजिह्वातालुकाः असंपुटिततुण्डाश्च–असंवृतमुखाः ये पक्षिसङ्घास्ते तथा तेषु 'ससंतेसु'त्ति श्वसत्सु–श्वासं मुञ्चत्सु, तथा ग्रीष्मस्य ऊष्मा च–उष्णता उष्णपातश्च–रविकरसन्तापः खरपरुषचण्डमारुतश्च–अतिकर्कशप्रबलवातः शुष्कतृणपत्रकचवरप्रधानवातोली चेति द्वन्द्वः ताभिर्भ्रमन्तः–अनवस्थिता दृप्ताः संभ्रांता ये श्वापदाः–सिंहादयः तैराकुला ये ते तथा, मृगतृष्णा–मरीचिका तल्लक्षणो बद्धः चिह्नपट्टो येषु ते तथा, ततः पदद्वयस्य कर्म्मधारयोऽतस्तेषु सत्सु, गिरिवरेषु–पर्वतराजेषु, तथा संवर्तकितेषु–संजातसंवर्तकेषु त्रस्ता–भीता ये मृगाश्च प्रसयाश्च–आटव्यचतुष्पदविशेषाः सरीसृपाश्च–गोधादयस्तेषु, ततश्चासौ हस्ती अवदारितवदनविवरो निर्लालिताग्रजिह्वश्च य इति कर्म्मधारयः 'महंततुंबइयपुण्णकण्णे' महान्तौ तुम्बकितौ–मयादरघट्टतुम्बाकारौ कृतौ स्तब्धावित्यर्थः, पुण्यौ–व्याकुलतया शब्दग्रहणे प्रवणौ कर्णौ यस्य स तथा, संकुचितः 'थोर'त्ति स्थूलः पीवरो–महान् करो यस्य स तथा उच्छ्रितलाङ्गुलः 'पीणाइय'त्ति पीनाया–मङ्गा तया निर्वृत्तं पैनायिकं तद्विधं यद्विरसं रटितं तल्लक्षणेन शब्देन स्फोटयन्निवाम्बरतलं पाददर्दरेण–पादघातेन कम्पयन्निव 'मेदिनीतल'मित्यादि, कण्ड्यं 'दिसो दिसिं'ति दिक्षु चापदिक्षु च विपलायितवान्, आतुरो–व्याकुलः 'जुंजिए'त्ति बुभुक्षितः दुर्बलः–क्लान्तो ग्लानः नष्टश्रुतिको–मूढदिक्कः 'परब्भाहए'त्ति पराभ्याहतो बाधितो भीतो–जातभयः त्रस्तो–जातक्षोभः 'तसिए'त्ति शुष्क आनन्दरसशोषात् उद्विग्नः–कथमितोऽनर्थान्मोक्ष्येऽहमित्यध्यवसायवान्, किमुक्तं भवति ?–संजात–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [३७]

भयः–सर्वात्मनोत्पन्नभयः आधावमानः–ईषत् परिधावमानः–समन्तात् 'पाणियपाए'त्ति पानं पायः पानीयस्य पायः पानीयपायस्तस्मिन्, जलपानायेत्यर्थः, 'सेयंसि विसन्ने'त्ति पङ्के निमग्नः, कार्यं प्रत्युद्धरिष्यामीतिकृत्वा कायमुद्धर्त्तुमारब्ध इति शेषः, 'बलियतरायं'ति गाढतरं । 'तए ण'मित्यादि, इहैवमक्षरघटना–त्वया हे मेघ ! एको गजवरयुवा करचरणदन्तमुशलप्रहारैर्विप्रालब्धो विनाशयितुमिति गम्यते, विपराद्धो वा–हतः सन् अन्यदा कदाचित् स्वकाद्यूथात् चिरं 'निज्जूढे'ति निर्धाटितो यः स पानीयपानाय तमेव महाह्रदं समवतरति स्मेति, 'आसुरुत्ते'त्ति स्फुरितकोपलिङ्गः रुष्टः–उदितक्रोधः कुपितः–प्रवृद्धकोपोदयः चाण्डिक्यितः–संजातचाण्डिक्यः प्रकटितरौद्ररूप इत्यर्थः 'मिसिमिसीमाणे'त्ति क्रोधाग्निना देदीप्यमान इव, एकार्थिका वैते शब्दाः कोपप्रकर्षप्रतिपादनार्थं नानादेशजविनेयानुग्रहार्थं वा, 'उच्छुहइ' अवष्टभ्नाति विध्यतीत्यर्थः, 'निज्जाए'त्ति निर्यातयति समापयति, वेदना किंविधा ?–उज्ज्वला विपक्षलेशेनापि अकलङ्किता विपुला शरीरव्यापकत्वात् क्वचित्तितुलेत्ति पाठस्तत्र त्रीनपि मनोवाक्कायलक्षणानर्थांस्तुलयति–जयति तुलारूढानिव वा करोतीति त्रितुला कर्कशा–कर्कशद्रव्यमिवानिष्टेत्यर्थः, प्रगाढा–प्रकर्षवती चण्डा–रौद्रा दुःखा–दुःखरूपा न सुखेत्यर्थः, किमुक्तं भवति ?–दुरधिसह्या, 'दाहवक्कंतीए'त्ति दाहो व्युत्क्रान्त–उत्पन्नो यस्य स तथा स एव दाहव्युत्क्रान्तिकः 'अट्टवसट्टदुहट्टे'त्ति आर्त्तवशं–आर्त्तध्यानवशतामृतो–गतो दुःखार्त्तश्च यः स तथा, 'कणेरुए'त्ति करेणुकायाः 'रत्तुप्पले'त्यादि रक्तोत्पलवद्रक्तः सुकुमारकश्च यः स तथा जपासुमनश्च आरक्तपारिजातकश्च वृक्षविशेषौ लाक्षारसश्च सरसकुङ्कुमं च सन्ध्याभ्ररागश्चेति द्वन्द्वः एतेषामिव वर्णो यस्य स तथा, 'गणियार'त्ति गणिकाकारः–समकायाः करेणवस्तासां 'कोत्थं'ति उदरदेशस्तत्र हस्तो यस्य कामक्रीडापरायणत्वात् स तथा, इह चेत्समासान्तो द्रष्टव्यः ।

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघपूर्वभवो-दितिः सू. २७

॥ ६८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [३७]

'कालधंमुण'त्ति कालः–मरणं स एव धर्मो–जीवपर्यायः कालधर्मः **'निवत्तियनामधेज्जो'** इह यावत्करणेन यद्यपि समग्रः पूर्वोक्तो हस्तिवर्णकः सूचितस्तथापि श्वेततावर्णकवर्ज्जो द्रष्टव्यः, इह रक्तस्य तस्य वर्णितत्वादत एवाग्रे **'सत्तुस्सेहे'**इत्यादिकमतिदेशं वक्ष्यति यत् पुनरिह दृश्यते **'सत्तंगे'**त्यादि तद्वाचनान्तरं, वर्णकापेक्षं तु लिखितमिति । **'लेसाही'**त्यादि तेजोलेश्याद्यन्यतरलेश्यां प्राप्तस्येत्यर्थः अध्यवसानं–मानसी परिणतिः परिणामो–जीवपरिणतिः, जातिस्मरणावरणीयानि कर्म्माणि–मतिज्ञानावरणीयभेदाः क्षयोपशमः–उदितानां क्षयोऽनुदितानां विष्कम्भितोदयत्वं ईहा–सदर्थाभिमुखो वितर्क इत्यादि प्राग्वत्, संज्ञिनः पूर्वजातिः–प्राक्तनं जन्म तस्या यत् स्मरणं तत्संज्ञिपूर्वजातिस्मरणं व्यस्तनिर्देशे तु संज्ञी पूर्वो भवो यत्र तत्संज्ञिपूर्वं संज्ञीति च विशेषणं स्वरूपज्ञापनार्थं, न ह्यसंज्ञिनो जातिविषयं स्मरणमुत्पद्यत इति, **'अभिसमेसि'**त्ति अवबुध्यसे प्रत्यपराह्णः–अपराह्णः, **'तए ण'**मित्यादिको ग्रन्थो जातिस्मरणविशेषणमाश्रित्य वर्णितः, **'दवग्गिजायकारणट्ठ'**त्ति दवाग्नेः संजातस्य कारणस्य–भयहेतोर्निवृत्तये इदं दवाग्निसंजातकारणार्थं, अर्थशब्दस्य निवृत्त्यर्थत्वात्, क्वचित् **'दवग्गिसंताणकारणट्ठ'**त्ति दृश्यते, तत्र दवाग्निसन्ताणकारणायेति व्याख्येयं, **'मंडलं घाएसि'** वृक्षाद्युपघातेन तत्करोतीत्यर्थः **'खुवेतयति व'**त्ति क्षुवो-ह्रस्वशिखः शाखी **'आहुणिय'**त्ति २ प्रकम्प्य चलयित्वेत्यर्थः, **'उद्दवेसि'**त्ति उद्धरसि **'एडेसि'**त्ति छर्दयसि, **'दोच्चंपि'** द्वितीयं तस्यैव मण्डलस्य घातं, एवं तृतीयमिति, नलिनीवनविवधनकरे, इह विवधनं–विनाशः, **'हेमंते'**त्ति शीतकाले कुन्दाः–पुष्पजातीयविशेषाः लोध्राश्च–वृक्षविशेषास्ते च शीतकाले पुष्पन्त्यतस्ते उद्धताः–पुष्पसमृद्ध्या उद्धुरा इव यत्र स तथा, तथा तुषारं–हिमं तत् प्रचुरं यत्र स तथा, ततः कर्मधारयः ततस्तत्र, ग्रीष्मे–उष्णकाले विवर्तमानो–विचरन् वनेषु वन-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

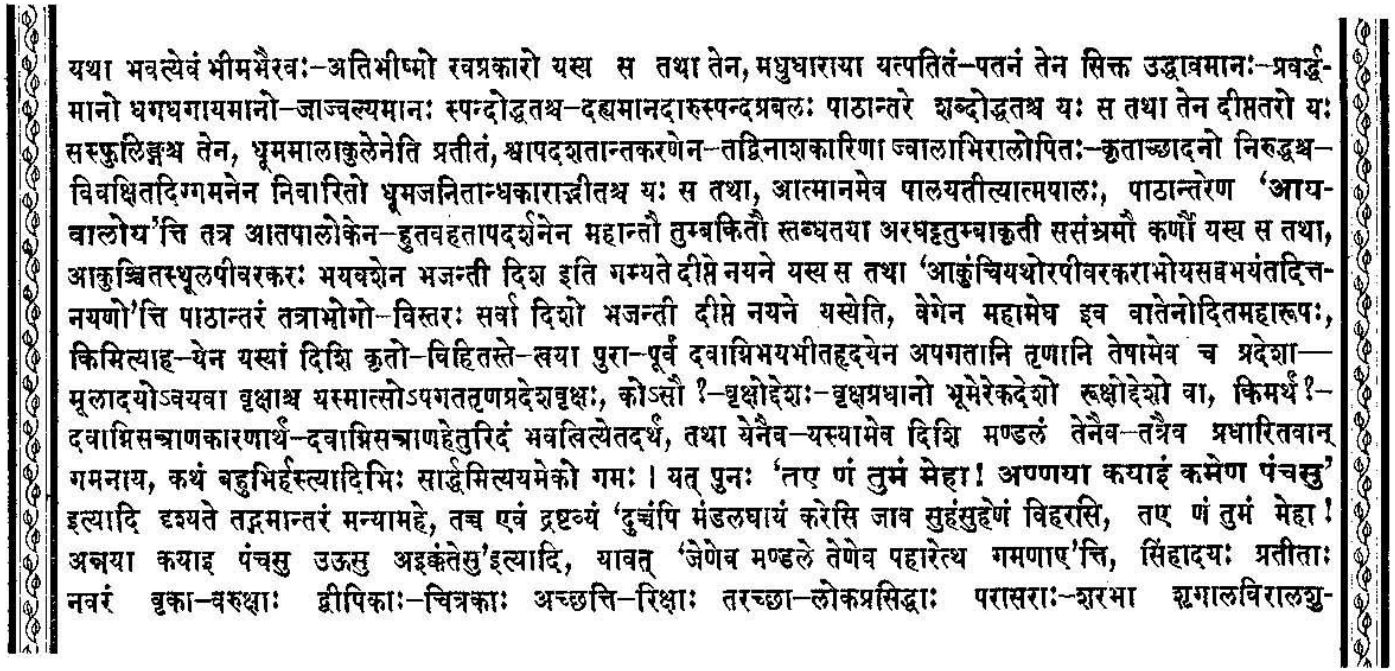
करेणूनां ताभिर्वा विविधा 'दिन्न'त्ति दत्ताः कजग्रसवैः–पद्मकुसुमैर्धाताः–प्रहारा येषु यस्य वा स तथा 'वणरेणुविविहदिन्न-कयपंसुघाओ'त्ति पाठान्तरे तु वनरेणवो–वनपांशवो विविधं–अनेकधा 'दिन्न'त्ति दत्ता दिक्ष्वात्मनि च क्रीडापरतया क्षिप्ता येन स तथा, तथा क्रीडयैव कृताः पांशुघाता येन स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्म्मधारयः, 'तुमं'ति त्वं, तथा कुसुमैः कृतानि यानि चामरवत्कर्णपूराणि तैः परिमण्डितोऽभिरामश्च यः स तथा, क्वचित् 'उउयकुसुम'त्ति पाठः, तत्र ऋतुजकुसुमैरिति व्याख्येयं, तथा मदवशेन विकसन्ति कटतटानि–गण्डतटानि क्लिन्नानि–आर्द्रीकृतानि येन तत्तथा तच्च तद्गन्धमदवारि च तेन सुरभिजनित-गन्धः–मनोज्ञकृतगन्धः करेणुपरिवृतः ऋतुभिः समस्ता समाप्ता वा–परिपूर्णा जनिता शोभा यस्य स तथा, काले किंभूते?–दिनकरः करप्रचण्डो यत्र स तथा तत्र, परिशोषिताः–नीरसीकृताः तरुवराः श्रीधराः–शोभावन्तो येन परिशोषिता वा तरुवराणां श्रीः–संपद्धरायां–भुवि वा येन, पाठान्तरे परिशोषितानि तरुवरशिखराणि येन स तथा स चासौ भीमतरदर्शनीयश्चेति, तत्र, भृङ्गाराणां–पक्षिविशेषाणां रुवतां–रवं कुर्वतां भैरवो–भीमो रवः–शब्दो यस्मिन् स तथा तत्र, नानाविधानि पत्रकाष्ठतृणकच-वराण्युद्धतानि–उत्पाटितानि येन स तथा स चासौ प्रतिमारुतश्च–प्रतिकूलवायुस्तेन आदिग्धं–व्याप्तं नभस्तलं–व्योम 'पडुम-माणे'त्ति पटुत्वादुपतापकारि यस्मिन्, पाठान्तरे उक्तविशेषणेन प्रतिमारुतेनादिग्धं नभस्तलं द्रुमगणश्च यस्मिन् स तथा, तत्र वातोल्या—वात्यया दारुणतरो यः स तथा तत्र, तृष्णावशेन ये दोषा–वेदनादयस्तैर्दोषिता–जातदोषा दूषिता वा भ्रमन्तो विविधा ये श्वापदास्तैः समाकुलो यः स तथा तत्र, भीमं यथा भवत्येवं दृश्यते यः स भीमदर्शनीयः तत्र वर्तमाने दारुणे ग्रीष्मे, केनेत्याह–मारुतवशेन यः प्रसरः–प्रसरणं तेन प्रसृतो विजृम्भितश्च–प्रबलीभूतो यः स तथा तेन, वनदवेनेति योगः, अभ्यधिकं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [३७]



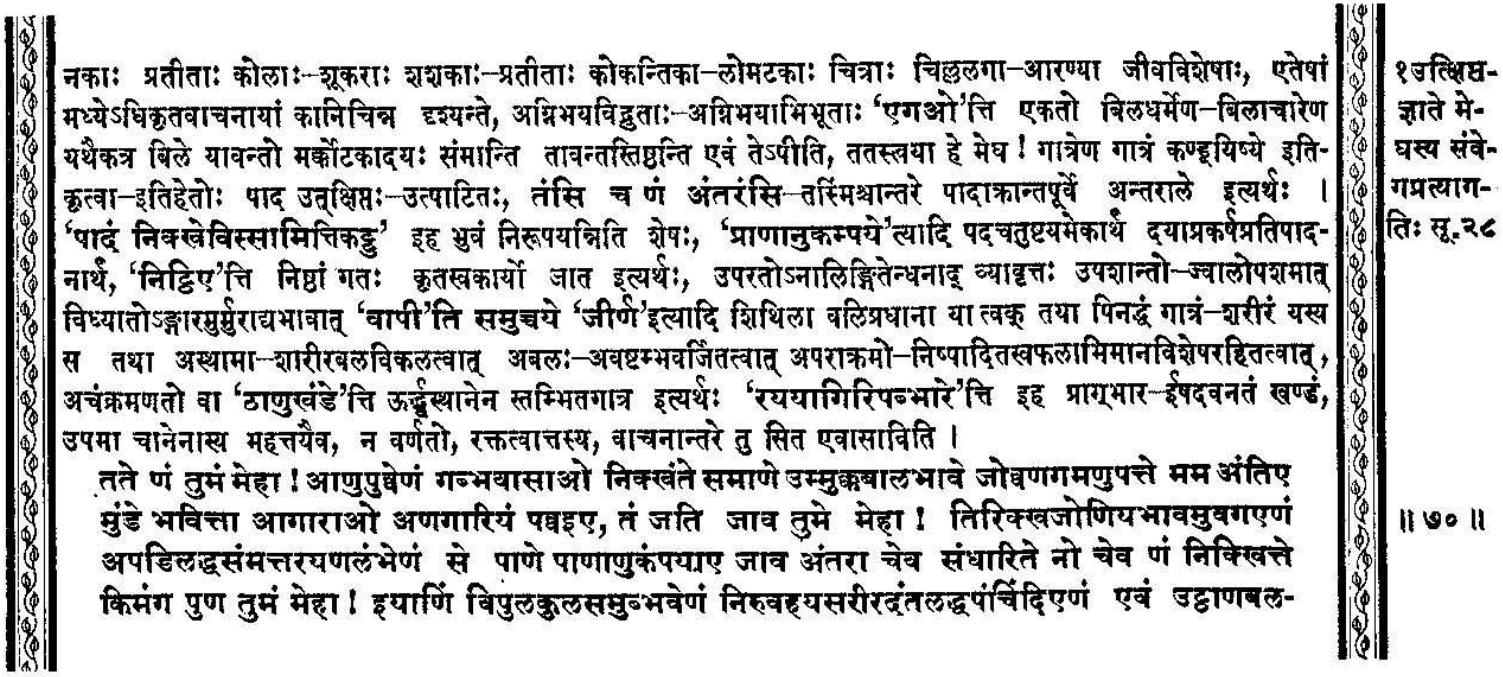
यथा भवत्येवं भीममैरवः–अतिभीष्मो रवप्रकारो यस्य स तथा तेन, मधुधारायां यत्पतितं–पतनं तेन सिक्त उद्भावमानः–प्रवर्द्धमानो धगधगायमानो–जाज्वल्यमानः स्पन्दोद्धतश्च–दह्यमानदारुस्पन्दप्रबलः पाठान्तरे शब्दोद्धतश्च यः स तथा तेन दीप्ततरो यः सस्फुलिङ्गश्च तेन, धूममालाकुलेनेति प्रतीतं, श्वापदशतान्तकरणेन–तद्विनाशकारिणा ज्वालाभिरालोपितः–कृताच्छादनो निरुद्धश्च–विवक्षितदिग्गमनेन निवारितो धूमजनितान्धकाराद्धीतश्च यः स तथा, आत्मानमेव पालयतीत्यात्मपालः, पाठान्तरेण 'आयवालोय'त्ति तत्र आतपालोकेन–हुतवहतापदर्शनेन महान्तौ तुम्बकितौ स्तब्धतया अरघट्टतुम्बाकृती ससंभ्रमौ कर्णौ यस्य स तथा, आकुञ्चितस्थूलपीवरकरः भयवशेन भजन्ती दिश इति गम्यते दीप्ते नयने यस्य स तथा 'आकुंचियथोरपीवरकराभोयसद्दभयंतदित्तनयणो'त्ति पाठान्तरं तत्राभोगो–विस्तरः सर्वा दिशो भजन्ती दीप्ते नयने यस्येति, वेगेन महामेघ इव वातेनोदितमहारूपः, किमित्याह–येन यस्यां दिशि कृतो–विहितस्ते–तया पुरा–पूर्वं दवाग्निभयभीतहृदयेन अपगतानि तृणानि तेषामेव च प्रदेशा—मूलादयोऽवयवा वृक्षाश्च यस्मात्सोऽपगततृणप्रदेशवृक्षः, कोऽसौ ?–वृक्षोद्देशः–वृक्षप्रधानो भूमेरेकदेशो रूक्षोद्देशो वा, किमर्थं ?–दवाग्निसन्त्राणकारणार्थं–दवाग्निसन्त्राणहेतुरिदं भवत्येतदर्थं, तथा येनैव–यस्यामेव दिशि मण्डलं तेनैव–तत्रैव प्रधारितवान् गमनाय, कथं बहुभिर्हस्त्यादिभिः सार्द्धमित्ययमेको गमः । यत् पुनः 'तए णं तुमं मेहा! अण्णया कयाइं कमेण पंचसु' इत्यादि दृश्यते तद्गमान्तरं मन्यामहे, तच्च एवं द्रष्टव्यं 'दुच्चंपि मंडलघायं करेसि जाव सुहंसुहेणं विहरसि, तए णं तुमं मेहा! अन्नया कयाइ पंचसु उऊसु अइक्कंतेसु'इत्यादि, यावत् 'जेणेव मण्डले तेणेव पहारेत्थ गमणाए'त्ति, सिंहादयः प्रतीताः नवरं वृका–वरुक्षाः द्वीपिकाः–चित्रकाः अच्छत्ति–रिक्षाः तरच्छा–लोकप्रसिद्धाः परासराः–शरभा शृगालविरालशु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवाः

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [३७]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥ ७० ॥

नकाः प्रतीताः कोलाः–शूकराः शशकाः–प्रतीताः कोकन्तिका–लोमटकाः चित्राः चिल्ललगा–आरण्या जीवविशेषाः, एतेषां मध्येऽधिकृतवाचनायां कानिचिन्न दृश्यन्ते, अग्निभयविद्रुताः–अग्निभयाभिभूताः 'एगओ'त्ति एकतो बिलधर्मेण–बिलाचारेण यथैकत्र बिले यावन्तो मर्कोटकादयः संमान्ति तावन्तस्तिष्ठन्ति एवं तेऽपीति, ततस्त्वया हे मेघ ! गात्रेण गात्रं कण्डूयिष्ये इति-कृत्वा–इतिहेतोः पाद उत्क्षिप्तः–उत्पाटितः, तंसि च णं अंतरंसि–तस्मिंश्चान्तरे पादाक्रान्तपूर्वे अन्तराले इत्यर्थः । 'पादं निक्खेविस्सामित्तिकट्टु' इह भुवं निरूपयन्निति शेषः, 'प्राणानुकम्पये'त्यादि पदचतुष्टयमेकार्थं दयाप्रकर्षप्रतिपाद-नार्थं, 'निट्ठिए'त्ति निष्ठां गतः कृतस्वकार्यो जात इत्यर्थः, उपरतोऽनालिङ्गितेन्धनाद् व्यावृत्तः उपशान्तो–ज्वालोपशमात् विध्यातोऽङ्गारमुर्मुराद्यभावात् 'वापी'ति समुच्चये 'जीर्ण'इत्यादि शिथिला वलिप्रधाना या त्वक् तया पिनद्धं गात्रं–शरीरं यस्य स तथा अस्थामा–शारीरबलविकलत्वात् अबलः–अवष्टम्भवर्जितत्वात् अपराक्रमो–निष्पादितस्वफलाभिमानविशेषरहितत्वात्, अचंक्रमणतो वा 'ठाणुखंडे'त्ति ऊर्द्धस्थानेन स्तम्भितगात्र इत्यर्थः 'रययागिरिपब्भारे'त्ति इह प्राग्भार–ईषदवनतं खण्डं, उपमा चानेनास्य महत्त्वेनैव, न वर्णतो, रक्तत्वात्तस्य, वाचनान्तरे तु सित एवासाविति ।

तते णं तुमं मेहा ! आणुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खंते समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, तं जति जाव तुमे मेहा ! तिरिक्खजोणियभावमुवगएणं अपडिलद्धसंमत्तरयणलंभेणं से पाणे पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा चेव संधारिते नो चेव णं निक्खित्ते किमंग पुण तुमं मेहा ! इयाणिं विपुलकुलसमुब्भवेणं निरुवहयसरीरदंतलद्धपंचिंदिएणं एवं उट्ठाणबल-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मे-घस्य संवे-गप्रत्याग-तिः सू.२८

॥ ७० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य पूर्वभवः

वीरियपुरिसगारपरक्कमसंजुत्तेणं मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतिए समाणे समणाणं निग्गंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अतिगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य पायसंघट्टणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि ?। तते णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एतमट्ठं सोचा णिसम्म सुभेहिं परिणामेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहावूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातीसरणे समुप्पन्ने, एतमट्ठं सम्मं अभिसमेति। तते णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वजातीसंभरणे दुगुणाणीयसंवेगे आणंदयंसुपुन्नमुहे हरिसवसेणं धाराहयकदंबकं पिव समुस्ससितरोमकूवे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ त्ता एवं वदासी–अज्जप्पभिती णं भंते ! मम दो अच्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाणं णिग्गंथाणं निसट्ठेत्तिकट्टु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ एवं वदासी–इच्छामि णं भंते ! इयाणिं सयमेव दोच्चंपि सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं जाव सयमेव आयारगोयरं जायामायावत्तियं धम्ममातिक्खह, तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ जाव जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ, एवं देवाणुप्पिया ! गन्तव्वं एवं चिट्ठियव्वं एवं णिसीयव्वं एवं तुयट्टियव्वं एवं भुंजियव्वं भासियव्वं उट्ठाय २ पाणाणं भूयाणं जीवाणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२८]

दीप अनुक्रम [३८]

सत्ताणं संजमेणं संजमितव्वं, तते णं से मेहे समणस्स भगवतो महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छति २ तह चिट्ठति जाव संजमेणं संजमति, तते णं से मेहे अणगारे जाए ईरियासमिए अणगारवन्नओ भाणियव्वो, तते णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एतारूवाणं थेराणं सामातियमातियाणि एक्कारस अंगातिं अहिज्जति २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं स० भ० महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेतियाओ पडिनिक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरति (सूत्रं २८)

'अपडिलद्धसंमत्तरयणलंभेणं'ति अप्रतिलब्धः–असंजातः, 'विपुलकुलसमुब्भवेण'मित्यादौ णंकारा वाक्यालङ्कारे निरुपहतं शरीरं यस्य स तथा दान्तानि–उपशमं नीतानि प्राक्काले लब्धानि सन्ति पञ्चेन्द्रियाणि येन स तथा, ततः कर्म्मधारयः, पाठान्तरे निरुपहतशरीरप्राप्तश्चासौ लब्धपञ्चेन्द्रियश्चेति समासः, 'एव'मित्युपलभ्यमानरूपैरुत्थानादिभिः संयुक्तो यः स तथा, तत्र उत्थानं–चेष्टाविशेषः बलं–शारीरं वीर्यं–जीवप्रभवं पुरुषकारः–अभिमानविशेषः पराक्रमः–स एव साधितफल इति । नो सम्यक् सहसे भयाभावेन क्षमसे क्षोभाभावेन तितिक्षसे दैन्यानवलम्बनेन अध्यासयसि अविचलितकायतया, एकार्थिकानि वैतानि पदानि, तस्य मेघस्यानगारस्य जातिस्मरणं समुत्पन्नमिति सम्बन्धः, समुत्पन्ने च तत्र किमित्याह–एतमर्थं–पूर्वोक्तं वस्तु सम्यक् 'अभिसमेइ'त्ति अभिसमेति अवगच्छतीत्यर्थः । 'संभारियपुव्वजाईसरणे'त्ति संस्मारितं पूर्वजात्योः–प्राक्तनजन्मनोः सम्बन्धि सरणं–गमनं पूर्वजातिसरणं यस्य स तथा, पाठान्तरे संस्मारितपूर्वभवः, तथा प्राक्कालापेक्षया द्विगुण आनीतः संवेगो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यस्य स तथा, आनन्दाश्रुभिः पूर्णं भृतं प्लुतमित्यर्थो मुखं यस्य स तथा, 'हरिसवस'त्ति अनेन 'हरिसवसविसप्पमाणहियए'त्ति द्रष्टव्यं, धाराहतं यत्कदम्बकं-कदम्बपुष्पं तद्वत् समुच्छ्रितरोमकूपो रोमाञ्चित इत्यर्थः, 'निसट्ठे'त्ति निःसृष्टो दत्तः । अनगारवर्णको वाच्यः, स चायं-'ईरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते ३' मनःप्रभृतीनां समितिः-सत्प्रवृत्तिः गुप्तिस्तु-निरोधः अत एव 'गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी' ब्रह्मगुप्तिभिः चाई-सङ्गानां वण्णे लज्जू-रज्जुरिवावक्रव्यवहारात् लज्जालुर्वा संयमेन लौकिकलज्जया वा 'तवस्सी खंतिखमे' क्षान्त्या क्षमते यः स तथा 'जिइंदिए सोही' शोधयत्यात्मपरावितिं शोधी शोभी वा 'अणिदाणे अप्पुस्सुए' अल्पौत्सुक्योऽनुत्सुक इत्यर्थः, 'अबहिल्लेसे' संयमादबहिर्भूतचित्तवृत्तिः 'सुसामण्णरए इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओत्तिकट्टु विहरइ' निर्ग्रन्थप्रवचनानुमार्गेण इत्यर्थः ।

तते णं से मेहे अणगारे अन्नया कदाइ समणं भगवं० वंदति नमंसति २ एवं वदासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह, तते णं से मेहे समणेणं भगवया० अब्भणुन्नाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं० सम्मं काएणं फासेति पालेति सोभेति तीरेति किट्टेति सम्मं काएण फासेत्ता पालित्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ त्ता एवं वदासी-इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ७२ ॥

दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबन्धं करेह, जहा पढमाए अभिलावो तहा दोचाए तचाए चउत्थाए पंचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तराइंदियाए दोचं सत्तरातिंदियाए तइयं सत्तरातिंदियाए अहोरातिंदियाएवि एगराइंदियाएवि, तते णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वंदति नमंसइ २ त्ता एवं वदासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे गुणरतणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जिता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह, तते णं से मेहे अणगारे पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं दोचं मासं छट्ठंछट्ठेणं० तचं मासं अट्ठमंअट्ठमेणं० चउत्थं मासं दसमं २ अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमूहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं पंचमं मासं दुवालसमं २ अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमिए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडतेणं, एवं खलु एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोद्दसमं २ सत्तमे सोलसमं २ अट्ठमे अट्ठारसमं २ नवमे वीसतिमं २ दसमे बावीसतिमं २ एक्कारसमे चउवीसतिमं २ बारसमे छवीसतिमं २ तेरसमे अट्ठावीसतिमं २ चोद्दसमे तीसइमं २ पंचदसमे बत्तीसतिमं २ चउत्तीसतिमं २ सोलसमे

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते प्रति-मावहनादि सू. २९

॥ ७२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुएणं सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण य अवाउडतेण य, तते णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ अहासुत्तं अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरति (सूत्रं २९)

'अहासुहं'ति यथासुखं सुखानतिक्रमेण मा पडिबन्धं–विघातं विधेहि विवक्षितस्येति गम्यं, 'भिक्खुपडिम'त्ति अभिग्रहविशेषः, प्रथमा एकमासिकी एवं द्वितीयाद्याः सप्तम्यन्ताः क्रमेण द्वित्रिचतुष्पञ्चषट्सप्तमासमानाः, अष्टमीनवमीदशम्यः प्रत्येकं सप्ताहोरात्रमानाः एकादशी अहोरात्रमाना द्वादशी एकरात्रमानेति, तत्र 'पडिवज्जइ एयाओ संघयणधिइजुओ महासत्तो। पडिमाओ भावियप्पा सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥ गच्छेचिय निम्माओ जा पुव्वा दस भवे असंपुण्णा । नवमस्स तइय वत्थू होइ जहन्नो सुयाहिगमो ॥ २ ॥ वोसट्ठचत्तदेहो उवसग्गसहो जहेव जिणकप्पी । एसण अभिग्गहिया भत्तं च अलेवडं तस्स ॥ ३ ॥ दुट्ठस्सहत्थिमाइ तओ भएणं पयंपि नोसरइ । एमाइ नियमसेवी विहरइ जाऽखंडिओ मासो ॥ ४ ॥' [प्रतिपद्यते एताः संहननधृतियुतो महासत्त्वः । प्रतिमा भावितात्मा सम्यग् गुरुणाऽनुज्ञातः ॥ १ ॥ गच्छ एव निर्मातो यावत्पूर्वाणि दश भवन्ति असंपूर्णानि नवमस्य तृतीयं वस्तु भवति श्रुताधिगमो जघन्यः ॥ २ ॥ व्युत्सृष्टत्यक्तदेह उपसर्गसहो यथैव जिनकल्पी । एषणाऽभिग्रहयुता भक्तं चालेपकृत्तस्य ॥ ३ ॥ दुष्टाश्वहस्त्यादयः (आगच्छेयुः) ततो भयेन पदमपि नापसरति । एवमादि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नियमसेवी विहरति यावदखण्डितो मासः ॥ ४ ॥] इत्यादिग्रन्थान्तराभिहितो विधिरासां द्रष्टव्यः । यच्चेह एकादशाङ्गविदोऽपि मेघानगारस्य प्रतिमानुष्ठानं भणितं तत्सर्ववेदिसमुपदिष्टत्वादनवद्यमवसेयमिति, 'यथासूत्रं' सूत्रानतिक्रमेण 'यथाकल्पं' प्रतिमाचारानतिक्रमेण 'यथामार्गं' ज्ञानाद्यनतिक्रमेण क्षायोपशमिकभावानतिक्रमेण वा कायेन न मनोरथमात्रेण 'फासेइ'त्ति उचितकाले विधिना ग्रहणात् 'पालयति' असकृदुपयोगेन प्रतिजागरणात् 'शोभयति' पारणकदिने गुरुदत्तशेषभोजनकरणात् शोधयति वा–अतिचारपङ्कक्षालनात् 'तीरयति' पूर्णेऽपि काले स्तोककालमवस्थानात् 'कीर्त्तयति' पारणकदिने इदं चेदं चैतस्याः कृत्यं कृतमित्येवं कीर्त्तनात् । गुणानां–निर्जराविशेषाणां रचना–करणं संवत्सरेण–सत्रिभागवर्षेण यस्मिंस्तत्तपो गुणरचनसंवत्सरं गुणा एव वा रत्नानि यत्र स तथा गुणरत्नः संवत्सरो यत्र तपसि तद्गुणरत्नसंवत्सरमिति, इह च त्रयोदश मासाः सप्तदश दिनाधिकास्तपःकालः, त्रिसप्ततिश्च दिनानि पारणककाल इति, एवं चार्थ–"पण्णरस वीस चउवीस चेव चउवीस पण्णवीसा य । चउवीस एक्कवीसा चउवीसा सत्तवीसा य ॥ १ ॥ तीसा तेत्तीसावि य चउवीस छवीस अट्ठवीसा य । तीसा बत्तीसावि य सोलस मासेसु तवदिवसा ॥२॥ पनरसदसट्ठ छप्पंच चउर पंचसु य तिण्णि तिण्णित्ति । पंचसु दो दो य तहा सोलसमासेसु पारणगा ॥ ३ ॥" इह च यत्र मासे अष्टमादितपसो यावन्ति दिनानि न पूर्यन्ते तावन्त्यग्रेतनमासादाकृष्य पूरणीयान्यधिकानि चाग्रेतनमासे क्षेप्तव्यानीति । 'चउत्थ'मित्यादि, चत्वारि भक्तानि यत्र त्यज्यन्ते तच्चतुर्थं, इयं चोपवासस्य संज्ञा, एवं षष्ठादिरुपवासद्वयादेरिति, 'अणिक्खित्तेणं'ति अविश्रान्तेन 'दिया ठाणुक्कुडुएणं' दिवा–दिवसे स्थानं–आसनमुत्कुटुकं आसनेषु पुतालगनरूपं यस्य स तथा आतापयन्–आतापनां कुर्वन् 'वीरासणेणं'ति सिंहासनोपविष्टस्य भुवि न्यस्तपादस्यापनीतसिंहासनस्येव यदव-

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघकुमारस्य प्रतिभावहनादि सू.३९

॥ ७३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	मेघकुमारस्य तपोमय-संयम-जीवनं

स्थानं तद्वीरासनं तेन व्यवस्थित इति गम्यते । किंभूतेन अप्रावृतेन–अविद्यमानप्रावरणेन स एव वा अप्रावृतः, णंकारस्तु अलङ्कारार्थः ।

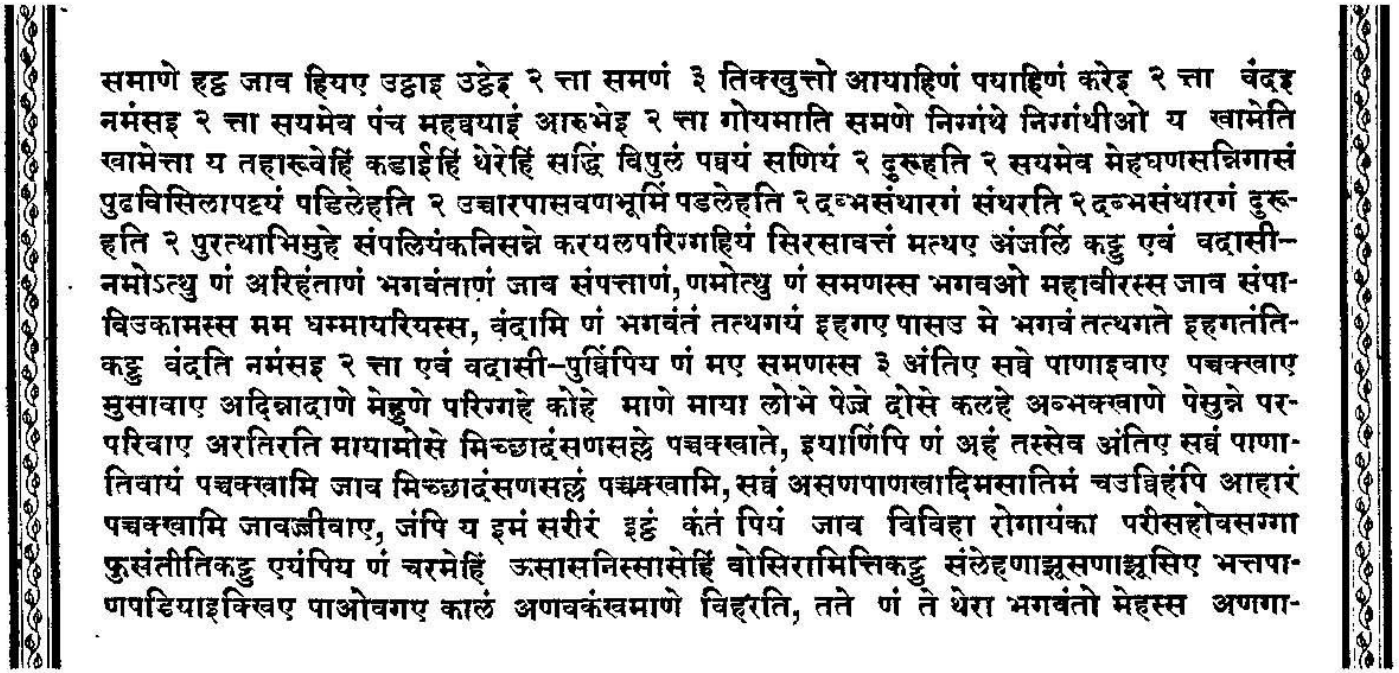
तते णं से मेहे अणगारे तेणं उरालेणं विपुलेणं सस्सिरीएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारएणं उत्तमेणं महाणुभावेणं तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे लुक्खे निम्मंसे निस्सोणिए किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसंतए जाते यावि होत्था, जीवं जीवेणं गच्छति जीवं जीवेणं चिट्ठति भासं भासित्ता गिलायति भासं भासमाणे गिलायति भासं भासिस्सामित्ति गिलायति से जहा नामए इंगालसगडियाइ वा कट्ठसगडियाइ वा पत्तसगडियाइ वा तिलसगडियाइ वा एरंड-कट्ठसगडियाइ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठति एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ उवचिए तवेणं अवचिते मंससोणिएणं हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठति । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महा-वीरे आइगरे तित्थगरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुतिज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नगरे जेणामेव गुणसिलए चेतिए तेणामेव उवागच्छति २त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते जाव समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उरालेणं तहेव जाव भासं भासिस्सामीति गिलामि तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे सद्धा धिई संवेगे तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसगारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे जाव इमे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरति ताव ताव मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते सूरे समणं ३ वंदित्ता नमंसित्ता समणेणं भगगता महावीरेणं अब्भणुन्नायस्स समाणस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहित्ता गोयमादिए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं २ सणियं सणियं दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेत्ता संलेहणाझूसणाए झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खितस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए, एवं संपेहेति २ कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ समणं ३ तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेइ २ त्ता वंदति नमंसति २ नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियपुडे पज्जुवासति, मेहेत्ति समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वदासी–से णूणं तव मेहा! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जाव जेणेव अहं तेणेव हव्वमागए, से णूणं मेहा अट्ठे समट्ठे?, हंता अत्थि, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह, तते णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया० अब्भणुन्नाए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	मेघकुमारस्य तपोमय-संयम-जीवनं



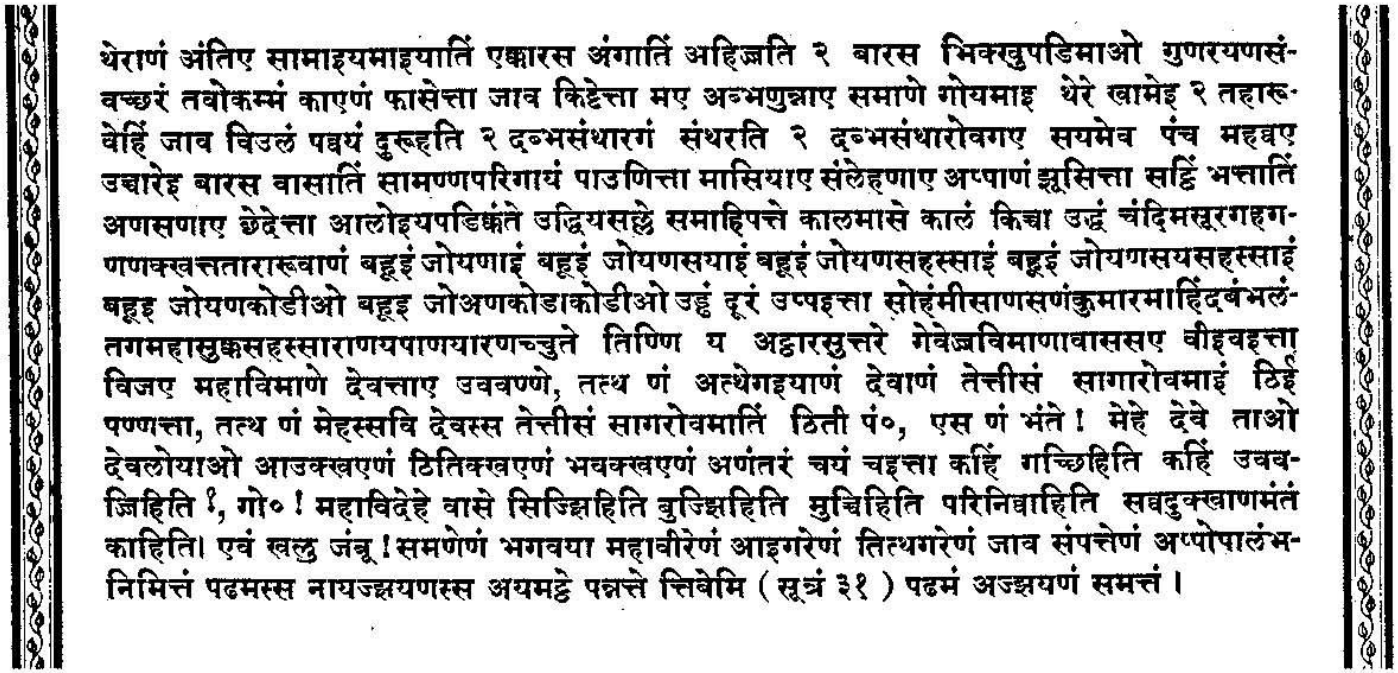
समाणे हट्ठ जाव हियए उट्ठाइ उट्ठेइ २ त्ता समणं ३ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ २ त्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेइ २ त्ता गोयमाति समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेति खामेत्ता य तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं २ दुरूहति २ सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहति २ उच्चारपासवणभूमिं पडलेहति २ दब्भसंथारगं संथरति २ दब्भसंथारगं दुरूहति २ पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासी–नमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए पासउ मे भगवं तत्थगते इहगतंतिकट्टु वंदति नमंसइ २ त्ता एवं वदासी–पुव्विंपिय णं मए समणस्स ३ अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोभे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुन्ने परपरिवाए अरतिरति मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाते, इयाणिंपि णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि, सव्वं असणपाणखादिमसातिमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतीतिकट्टु एयंपिय णं चरमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरति, तते णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रस्स अगिलाए वेयावडियं करेंति । तते णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं दुवालस वरिसाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोतियपडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते आणुपुव्वेणं कालगए, तते णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं आणुपुव्वेणं कालगयं पासेंति २ परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति २ मेहस्स आयारभंडयं गेण्हंति २ विउलाओ पव्वयाओ सणियं २ पच्चोरुहंति २ जेणामेव गुणसिलए चेइए जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति २ त्ता समणं ३ वंदंति नमंसंति २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीते से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुन्नाए समाणे गोतमातिए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं २ दुरूहति २ सयमेव मेघघणसन्निगासं पुढविसिलं पट्टयं पडिलेहेति २ भत्तपाणपडियाइक्खित्ते अणुपुव्वेणं कालगए, एस णं देवाणुप्पिया मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए। (सूत्रं ३०) भंतेत्ति भगवं गोतमे समणं उ वंदति नमंसति २ त्ता एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे णामं अणगारे से णं भंते ! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने ?, गोतमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी-एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी मेहे णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए से णं तहारूवाणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य तपोमय-संयम-जीवनं



थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बारस भिक्खुपडिमाओ गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं काएणं फासेत्ता जाव किट्टेत्ता मए अब्भणुन्नाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेइ २ तहारूवेहिं जाव विउलं पव्वयं दुरूहति २ दब्भसंथारगं संथरति २ दब्भसंथारोवगए सयमेव पंच महव्वए उच्चारेइ बारस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उद्धं चंदिमसूरगहगणणक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूइ जोयणकोडीओ बहूइ जोअणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहंमीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलंतगमहासुक्कसहस्सारणयपाणयारणच्चुते तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं मेहस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पं०, एस णं भंते! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठितिक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति?, गो०! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं काहिति। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं अप्पोपालंभनिमित्तं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि (सूत्रं ३१) पढमं अज्झयणं समत्तं।

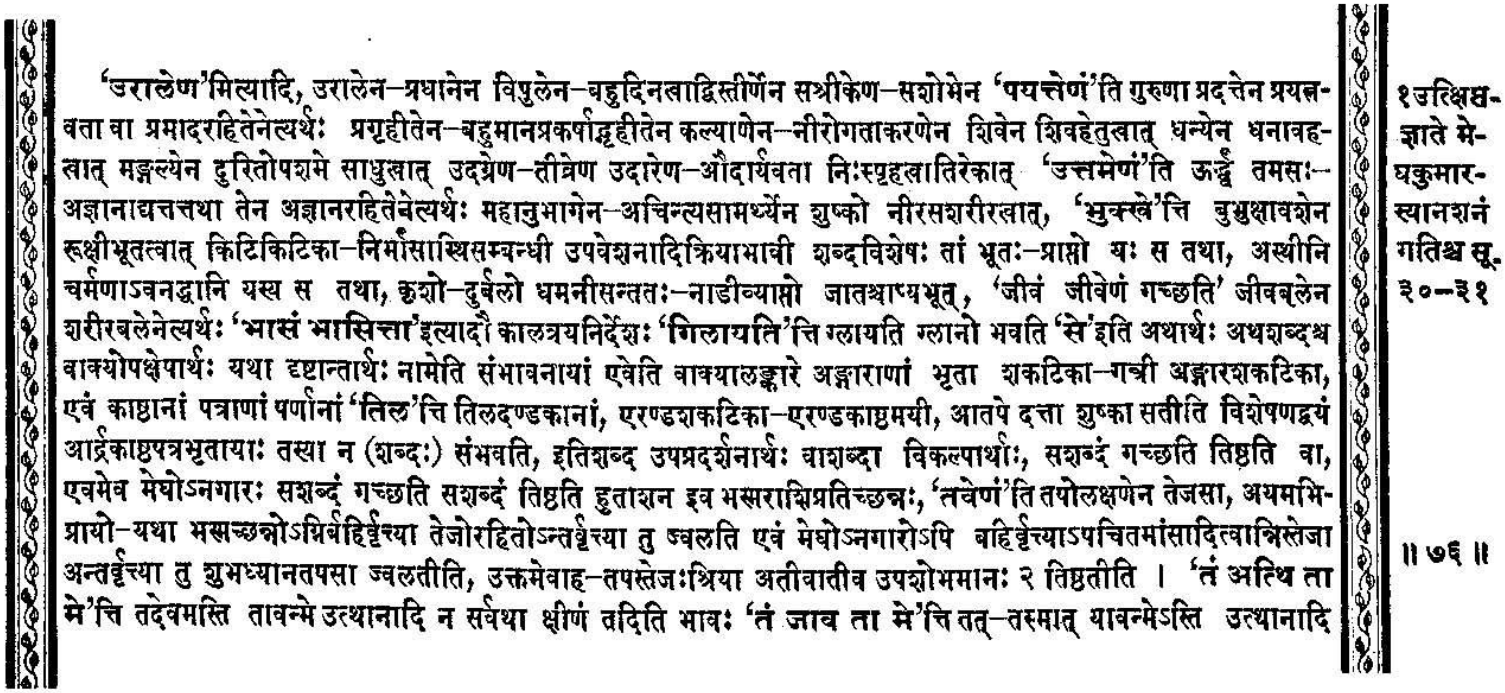
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	मेघकुमारस्य तपोमय-संयम-जीवनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३०,३१]

दीप अनुक्रम [४०,४१]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ७६ ॥

'उरालेण'मित्यादि, उरालेन–प्रधानेन विपुलेन–बहुदिनत्वाद्विस्तीर्णेन सश्रीकेण–सशोभेन 'पयत्तेणं'ति गुरुणा प्रदत्तेन प्रयत्नवता वा प्रमादरहितेनेत्यर्थः प्रगृहीतेन–बहुमानप्रकर्षाद्गृहीतेन कल्याणेन–नीरोगताकरणेन शिवेन शिवहेतुत्वात् धन्येन धनावहत्वात् मङ्गल्येन दुरितोपशमे साधुत्वात् उदग्रेण–तीव्रेण उदारेण–औदार्यवता निःस्पृहत्वातिरेकात् 'उत्तमेणं'ति ऊर्द्धं तमसः–अज्ञानाद्यत्तत्था तेन अज्ञानरहितेनेत्यर्थः महानुभागेन–अचिन्त्यसामर्थ्येन शुष्को नीरसशरीरत्वात्, 'भुक्खे'त्ति बुभुक्षावशेन रूक्षीभूतत्वात् किटिकिटिका–निर्मांसास्थिसम्बन्धी उपवेशनादिक्रियाभावी शब्दविशेषः तां भूतः–प्राप्तो यः स तथा, अस्थीनि चर्मणाऽवनद्धानि यस्य स तथा, कृशो–दुर्बलो धमनीसन्ततः–नाडीव्याप्तो जातश्चाप्यभूत्, 'जीवं जीवेणं गच्छति' जीवबलेन शरीरबलेनेत्यर्थः 'भासं भासित्ता'इत्यादौ कालत्रयनिर्देशः 'गिलायति'त्ति ग्लायति ग्लानो भवति 'से'इति अथार्थः अथशब्दश्च वाक्योपक्षेपार्थः यथा दृष्टान्तार्थः नामेति संभावनायां एवेति वाक्यालङ्कारे अङ्गाराणां भृता शकटिका–गन्त्री अङ्गारशकटिका, एवं काष्ठानां पत्राणां पर्णानां 'तिल'त्ति तिलदण्डकानां, एरण्डशकटिका–एरण्डकाष्ठमयी, आतपे दत्ता शुष्का सतीति विशेषणद्वयं आर्द्रकाष्ठपत्रभूतायाः तस्या न (शब्दः) संभवति, इतिशब्द उपप्रदर्शनार्थः वाशब्दा विकल्पार्थाः, सशब्दं गच्छति तिष्ठति वा, एवमेव मेघोऽनगारः सशब्दं गच्छति सशब्दं तिष्ठति हुताशन इव भस्मराशिप्रतिच्छन्नः, 'तवेणं'ति तपोलक्षणेन तेजसा, अयमभिप्रायो–यथा भस्मच्छन्नोऽग्निर्बहिर्वृत्त्या तेजोरहितोऽन्तर्वृत्त्या तु ज्वलति एवं मेघोऽनगारोऽपि बहिर्वृत्त्याऽपचितमांसादित्वान्निस्तेजा अन्तर्वृत्त्या तु शुभध्यानतपसा ज्वलतीति, उक्तमेवाह–तपस्तेजःश्रिया अतीवातीव उपशोभमानः २ तिष्ठतीति । 'तं अत्थि ता मे'त्ति तदेवमस्ति तावन्मे उत्थानादि न सर्वथा क्षीणं तदिति भावः 'तं जाव ता मे'त्ति तत्–तस्मात् यावन्मेऽस्ति उत्थानादि

१उत्क्षिप्त-ज्ञाते मेघकुमार-स्यानशनं गतिश्च सू. ३०–३१

॥ ७६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मेघकुमारस्य तपोमय-संयम-जीवनं

ता इति भाषामात्रेण यावच्च मे धर्माचार्यः 'सुहत्थी'ति पुरुषवरगन्धहस्ती शुभाः वा क्षायिकज्ञानादयोऽर्था यस्य स तथा 'ताव तावं'त्ति तावच्च तावच्चेति वस्तुद्वयापेक्षा द्विरुक्तिः 'कडाईहिं'ति कृतयोग्यादिभिः, 'मेहघणसन्निगासं'ति घनमेघसदृशं कालमित्यर्थः, 'भत्तपाणपडियाइक्खियस्स'त्ति प्रत्याख्यातभक्तपानस्य, 'कालं'ति मरणं 'जेणेव इहं'ति इहशब्दविषयं स्थानं इदमित्यर्थः, 'संपलियंकनिसण्णे'ति पद्मासनसन्निविष्टः 'पेज्जे'त्ति अभिष्वङ्गमात्रं 'दोस'त्ति अप्रीतिमात्रं अभ्याख्यानं–असद्दोषारोपणं पैशून्यं–पिशुनकर्म्म परपरिवादः–विप्रकीर्णपरदोषकथा अरतिरती धर्माधर्मोङ्गेषु मायामृषा–वेषान्तरकरणतो लोकविप्रतारणं संलेखनां–कषायशरीरकृशतां स्पृशतीति संलेखनास्पर्शकः, पाठान्तरेण 'संलेहणाझूसणाझूसिय'त्ति संलेखनासेवनाजुष्टः इत्यर्थः। 'मासियाए'त्ति मासिक्या मासपरिमाणया 'अप्पाणं झूसिते'त्ति क्षपयित्वा षष्टिं भक्तानि 'अणसणाए'त्ति अनशनेन छित्त्वा–व्यवच्छेद्य, किल दिने २ द्वे द्वे भोजने लोकः कुरुते एवं च त्रिंशता दिनैः षष्टिर्भक्तानां परित्यक्ता भवतीति, 'परिनिव्वाणवत्तिय'त्ति परिनिर्वाणमुपरतिर्मरणमित्यर्थः तत्प्रत्ययो–निमित्तं यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययः मृतकपरिष्ठापनाकायोत्सर्ग इत्यर्थः, तं कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, 'आयारभंडगं'ति आचाराय–ज्ञानादिभेदभिन्नाय भाण्डकं–उपकरणं वर्षाकल्पादि आचारभाण्डकं, 'पगइभद्दए'इत्यत्र यावत्करणादेवं दृश्यं 'पगइउवसन्ते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने आलीणे भद्दए विणीए'त्ति तत्र प्रकृत्यैव–स्वभावेनैव भद्रकः–अनुकूलवृत्तिः प्रकृत्यैवोपशान्तः–उपशान्ताकारः, मृदु च तन्माईवं च मृदुमार्दवं–अत्यन्तमार्दवं इत्यर्थः, आलीनः–आश्रितो गुर्वनुशासनेऽपि सुभद्रक एव यः स तथा 'कहिं गए'त्ति कस्यां गतौ गतः? क्व च देवलोकादौ उत्पन्नो? जातः, विजयविमानमनुत्तरविमानानां प्रथमं पूर्वदिग्भागवर्त्ति, तत्रोत्कृष्टादिस्थितेर्भावादाह–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'तत्थे'त्यादि, आयुःक्षयेण–आयुर्दलिकनिर्जरणेन स्थितिक्षयेण–आयुःकर्मणः स्थितेर्वेदनेन भवक्षयेण–देवभवनिबन्धनभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरणेनेति। अनन्तरं देवभवसम्बन्धिनं चयं–शरीरं 'चइत्त'त्ति त्यक्त्वा अथवा च्यवं–च्यवनं कृत्वा सेत्स्यति निष्ठितार्थतया विशेषतः सिद्धिगमनयोग्यतया महर्द्धिप्राप्त्या वा भोत्स्यते केवलालोकेन मोक्ष्यते सकलकर्मांशैः परिनिर्वास्यति-स्वस्थो भविष्यति सकलकर्म्मकृतविकारविरहिततया, किमुक्तं भवति ?–सर्वदुःखानामन्तं करिष्यतीति । 'एवं खल्वि'त्यादि निगमनं 'अप्पोपालंभनिमित्तं' आप्तेन हितेन गुरुणेत्यर्थः उपालम्भो–विनेयस्याविहितविधायिनः आप्तोपालम्भः स निमित्तं यस्य प्रज्ञापनस्य तत्तथा । प्रथमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायं–अनन्तरोदितः मेघकुमारचरितलक्षणोऽर्थोऽभिधेयः प्रज्ञप्तः–अभिहितः । अविधिप्रवृत्तस्य शिष्यस्य गुरुणा मार्गे स्थापनाय उपालम्भो देयो यथा भगवता दत्तो मेघकुमारायेत्येवमर्थं प्रथममध्ययनमित्यभिप्रायः। इह गाथा–मद्दुरेहिं निउणेहिं वयणेहिं चोययंति आयरिया । सीसे कहिंचि खलिए जह मेहमुणिं महावीरो ॥ १ ॥ [मधुरैर्निपुणैर्वचनैः स्थापयन्ति आचार्याः। शिष्यं कचित् स्खलिते यथा मेघमुनिं महावीरः ॥ १ ॥] इतिशब्दः समाप्तौ, ब्रवीमीति–प्रतिपादयाम्येतदहं तीर्थकरोपदेशेन, न स्वकीयबुद्ध्या, इत्येवं गुरुवचनपारतन्त्र्यं सुधर्मस्वामी आत्मनो जम्बूस्वामिने प्रतिपादयति, एवमन्येनापि मुमुक्षणा भवितव्यमित्येतदुपदर्शनार्थमिति । ज्ञाताधर्मकथायां प्रथमं ज्ञातविवरणं मेघकुमारकथानकाख्यं समाप्तं ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययन-१ परिसमाप्तम्

प्रत सूत्रांक [३२]

दीप अनुक्रम [४२]

अथ संघाटाख्यं द्वितीयं ज्ञाताध्ययनं व्याख्यायते ॥

अस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः, पूर्वस्मिन्ननुचितप्रवृत्तिकस्य शिष्यस्य उपालम्भ उक्तः, इह त्वनुचितप्रवृत्तिकोचितप्रवृत्तिकयोरनर्थार्थप्राप्तिपरम्पराऽभिधीयते इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदमुपक्षेपसूत्रं—

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते बितीयस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं नयरे होत्था वन्नओ, तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेतिए होत्था वन्नओ, तस्स णं गुणसिलयस्स चेतियस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे जिण्णुज्जाणे यावि होत्था विणट्ठदेवउले परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिवच्छच्छाइए अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था, तस्स णं जिन्नुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भग्गकूवए यावि होत्था, तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था, किण्हे किण्होभासे जाव रम्मे महामेहनिउरंबभूते बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य कुसेहि य खाणुएहि य संच्छन्ने पलिच्छन्ने अंतो झुसिरे बाहिं गंभीरे अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था । (सूत्रं ३२)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- २ "संघाटः" आरभ्यते

'जइ ण'मित्यादि, कण्ह्यं 'एवं खल्वि'त्यादि तु प्रकृताध्ययनार्थसूत्रं सुगमं चैतत्सर्वं नवरं जीर्णोद्यानं चाप्यभूत्, चापीति समुच्चये अपिचेत्यादिवत्, विनष्टानि देवकुलानि परिसटितानि तोरणानि प्राकारद्वारदेवकुलसम्बन्धीनि गृहाणि च यत्र तत्तथा, नानाविधा ये गुच्छा–वृन्ताकीप्रभृतयः गुल्मा–वंशजालीप्रभृतयः लताः–अशोकलतादयः वल्ल्यः–त्रपुषीप्रभृतयः वृक्षाः–सह-कारादयः तैः छादितं यत्तत्तथा, अनेकैर्व्यालशतैः–श्वापदशतैः शङ्कनीयं–भयजनकं चाप्यभूत्, शङ्कनीयमित्येद्विशेषणसम्ब-न्धत्वात्क्रियावचनस्य न पुनरुक्तता, 'मालुकाकच्छए'त्ति एकास्थिफलाः वृक्षविशेषाः मालुकाः प्रज्ञापनाभिहितास्तेषां कक्षो–गहनं मालुकाकक्षः, चिर्भटिकाकच्छक इति तु जीवाभिगमचूर्णिकारः । 'किण्हे किण्होभासे' इह यावत्करणा-दिदं दृश्यं, "नीले नीलोभासे, हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे निद्धे निद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीये सीयच्छाए निद्धे निद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए घणकडियडच्छाए"त्ति कृष्णः–कृष्णवर्णःअञ्जनवत् स्वरूपेण कृष्णवर्ण एवावभासते–द्रष्टॄणां प्रतिभातीति कृष्णावभासः, किल किञ्चिद्वस्तु स्वरूपेण भवत्यन्यादृशं प्रतिभासते तु सन्नि-धानविप्रकर्षादेः कारणादन्यादृशमिति, एवं क्वचिदसौ नीलो मयूरग्रीवेव क्वचित् हरितः शुकपिच्छवत्, हरितालाभ इति वृद्धाः, तथा शीतः स्पर्शतः वल्ल्याद्याक्रान्तत्वादिति च वृद्धाः, स्निग्धो न रूक्षः तीव्रो वर्णादिगुणप्रकर्षवान् तथा कृष्णः सन् वर्णतः कृष्णच्छायः, छाया च–दीप्तिरादित्यकरावरणजनिता वेति, एवमन्यत्रापि 'घणकडियडच्छाए'त्ति अन्योऽन्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशात् घननि-रन्तरच्छायो रम्यो महामेघानां निकुरम्बः–समूहस्तद्वद् यः स महामेघनिकुरम्बभूतः,वाचनान्तरे त्विदमधिकं पठ्यते–'पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे' हरितकश्चासौ रेरिज्जमाणेत्ति–भृशं राजमानश्च यः स तथा "सिरीए अईव २ उवसोभेमाणे चिट्ठइ'त्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३२]

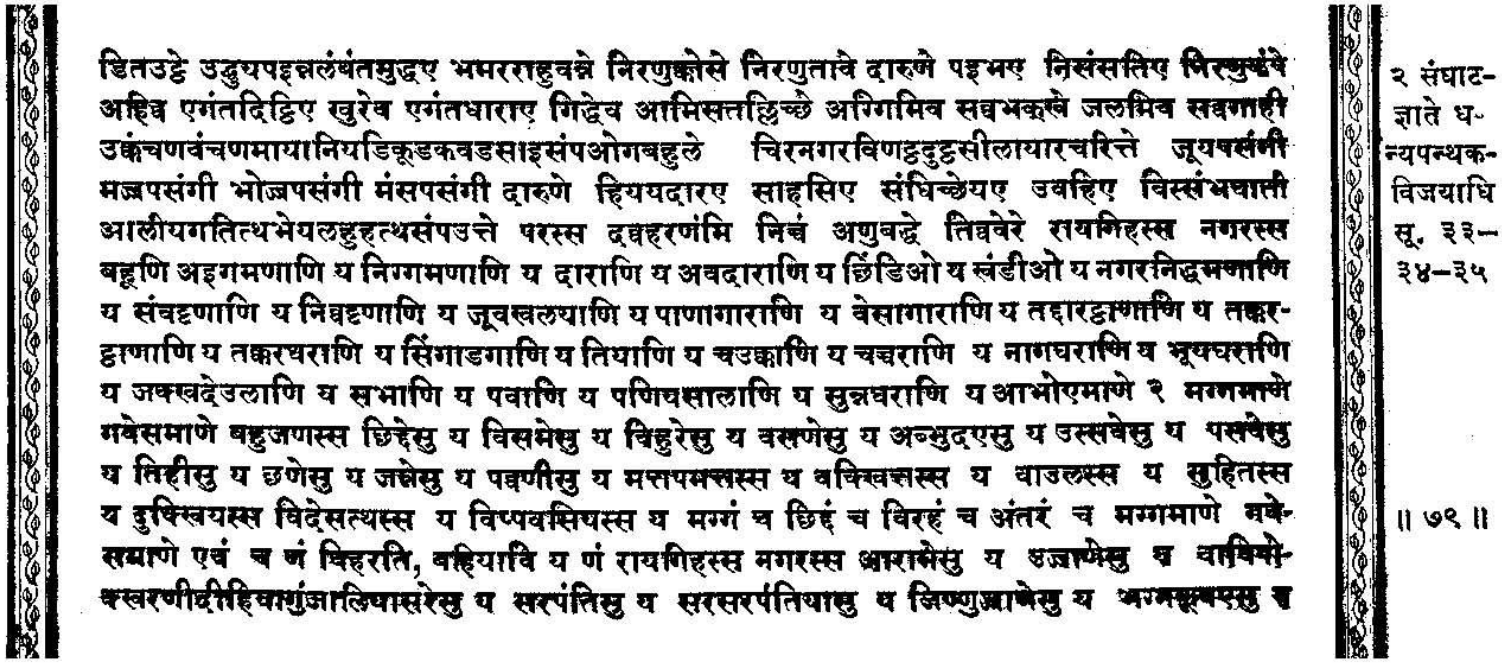
दीप अनुक्रम [४२]

श्रिया–वनलक्ष्म्या अतीव २ उपशोभमानस्तिष्ठति 'कुसेहि य'त्ति दर्भैः क्वचित् 'कूविएहि य'त्ति पाठः तत्र कूपिकाभिः लिङ्गव्यत्ययात् 'खाणुएहि'न्ति स्थाणुभिश्च पाठान्तरेण 'खत्तएहिं'ति खातैर्गर्तैरित्यर्थः, अथवा 'कूविएहिं'ति चोरगवेषकैः 'खत्तएहिं'ति खातकैः क्षेत्रस्येति गम्यते चौरैरित्यर्थः, अयमभिप्रायो–गहनत्वात् तस्य तत्र चौराः प्रविशन्ति तद्गवेषणार्थमितरे चेति, संछन्नो–व्याप्तः परिच्छन्नः–समन्तात् अन्तः–मध्ये शुषिरः सावकाशत्वात् बहिर्गभीरो दृष्टेरप्रक्रमणात् ।

तत्थ णं रायगिहे नगरे धण्णे नामं सत्थवाहे अड्ढे दित्ते जाव विउलभत्तपाणे, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणप्पमाणपडिपुन्नसुजातसव्वंगसुंदरंगी ससिसोमागारा कंता पियदंसणा सुरूवा करयलपरिमियतिवलियमज्झा कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुदिरयणियरपडिपुण्णसोमवयणा सिंगारागारचारुवेसा जाव पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था । (सूत्रं ३३) तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पंथए नाम दासचेडे होत्था सव्वंगसुंदरंगे मंसोवचिते बालकीलावणकुसले यावि होत्था, तते णं से धण्णे सत्थवाहे रायगिहे नयरे बहूणं नगरनिगमसेट्ठिसत्थवाहाणं अट्ठारसण्ह य सेणियप्पसेणीणं बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य जाव चक्खुभूते यावि होत्था, नियगस्सवि य णं कुडुंबस्स बहुसु य कज्जेसु जाव चक्खुभूते यावि होत्था (सूत्रं ३४) तत्थ णं रायगिहे नगरे विजए नामं तक्करे होत्था, पावे चंडालरूवे भीमतररुद्दकम्मे आरुसियदित्तरत्तनयणे खरफरुसमहल्लविगयबीभत्थदाढिए असंपु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्-

॥ ७९ ॥

डितउट्ठे उद्धुयपइन्नलंबंतमुद्धए भमरराहुवन्ने निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निस्संसतिए निरणुकंपे अहिव एगंतदिट्ठिए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिसत्तल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खे जलमिव सव्वगाही उक्कंचणवंचणमायानियडिकूडकवडसाइसंपओगबहुले चिरनगरविणट्ठदुट्ठसीलायारचरित्ते जूयपसंगी मज्जपसंगी भोज्जपसंगी मंसपसंगी दारुणे हियदारए साहसिए संधिच्छेयए उवहिए विस्संभघाती आलीयगतित्थभेयलहुहत्थसंपउत्ते परस्स दव्वहरणंमि निच्चं अणुबद्धे तिव्वेवेरे रायणिहस्स नगरस्स बहूणि अइगमणाणि य निग्गमणाणि य दाराणि य अवदाराणि य छिंडिओ य खंडीओ य नगरनिद्धमणाणि य संवट्टणाणि य निवट्टणाणि य जूवखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागाराणि य तद्दारट्ठाणाणि य तक्करट्ठाणाणि य तक्करघराणि य सिंगाडगाणि य तियाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे २ मग्गमाणे गवेसमाणे बहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहितस्स य दुक्खियस्स विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्गं च छिद्दं च विरहं च अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरति, बहियावि य णं रायणिहस्स नगरस्स आरामेसु य उज्जाणेसु य वावियोक्खरणीदीहियागुंजालिघासरेसु य सरपंतिसु य सरसरपंतियासु य जिण्णुज्जाणेसु य अगडतलएसु य

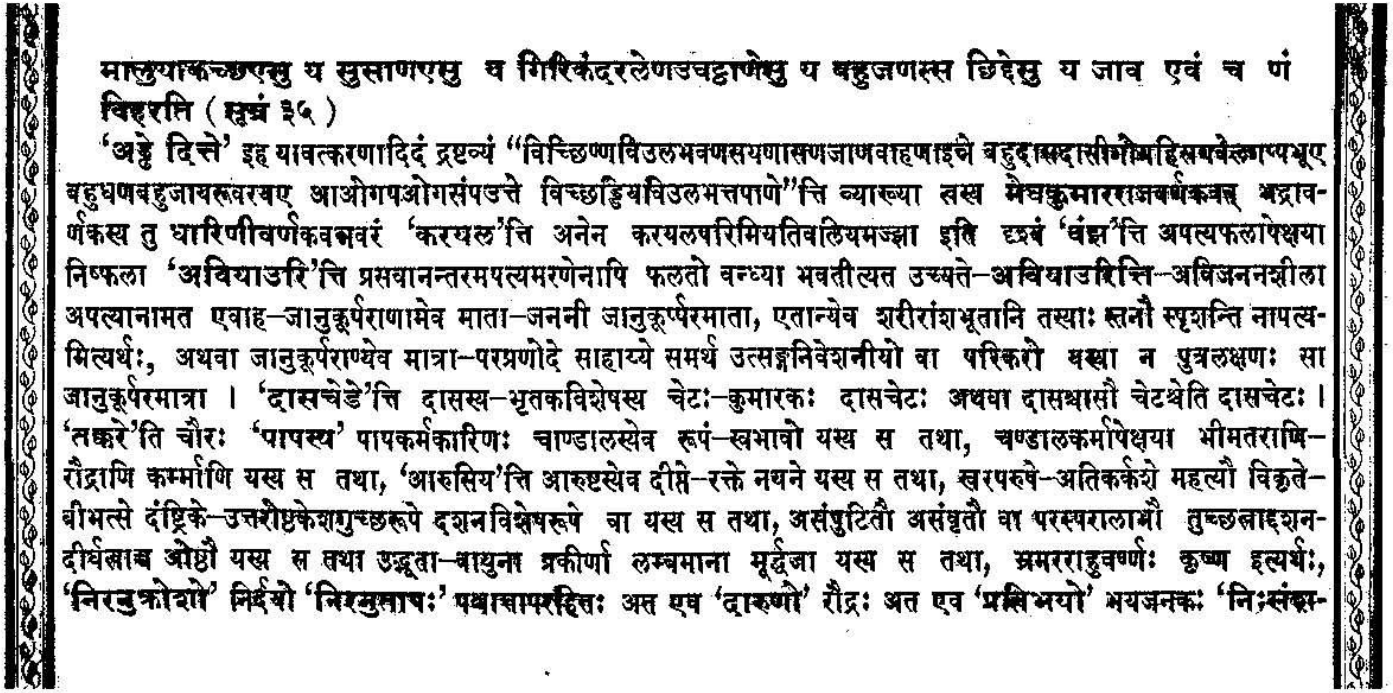
२ संघाट-ज्ञाते ध-न्यपन्थक-विजयाधि सू. ३३-३४-३५

॥ ७९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाह: एवं विजयस्तेनस्य कथा

प्रत सूत्रांक [३३-३५] दीप अनुक्रम [४३-४५]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

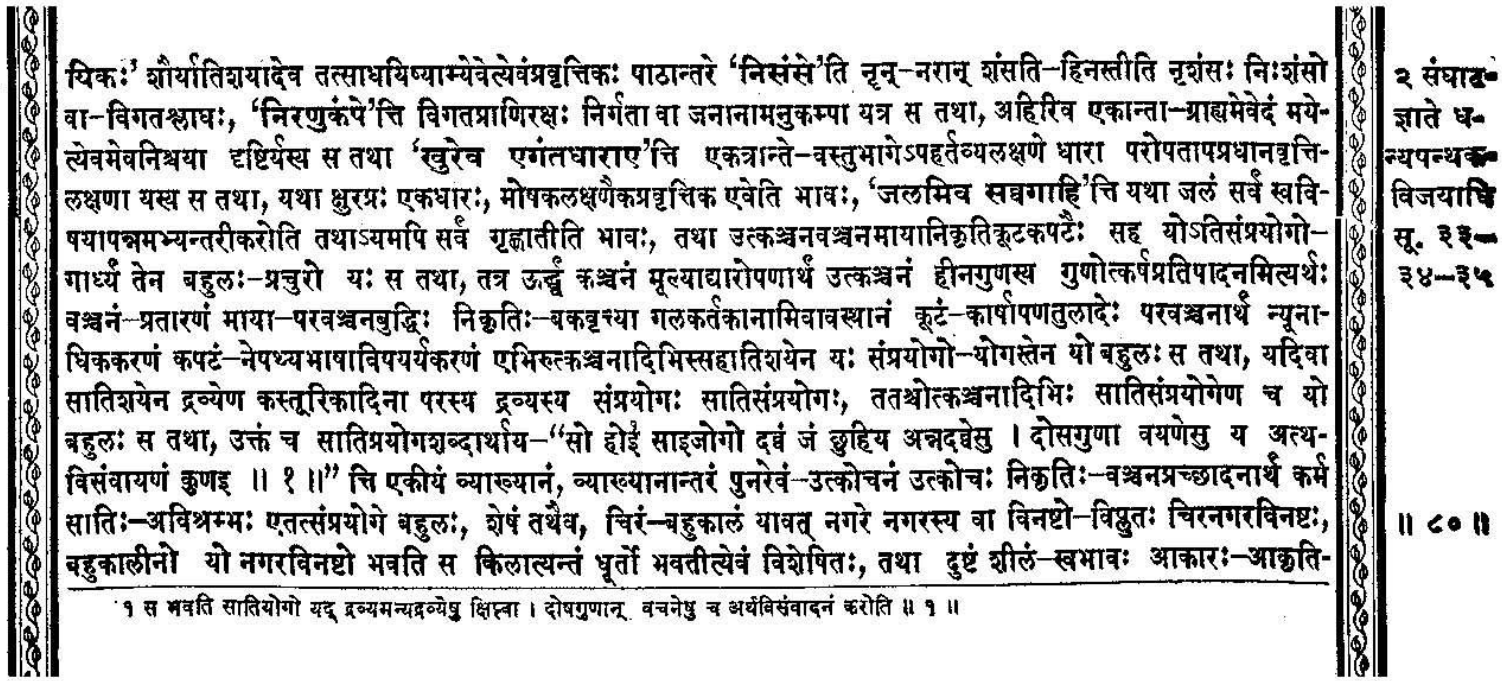


मालुयाकच्छएसु य सुसाणएसु य गिरिकंदरलेणउवट्ठाणेसु य बहुजणस्स छिद्देसु य जाव एवं च णं विहरति (सूत्रं ३५)

'अड्ढे दित्ते' इह यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं "विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुदासदासीगोमहिसगवेलगप्पभूए बहुधणबहुजायरूवरयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डियविउलभत्तपाणे"त्ति व्याख्या तस्य मेघकुमारराजवर्णकवत् भद्रावर्णकस्य तु धारिणीवर्णकवन्नवरं 'करयल'त्ति अनेन करयलपरिमियतिवलियमज्झा इति दृश्यं 'वंझ'त्ति अपत्यफलापेक्षया निष्फला 'अवियाउरि'त्ति प्रसवानन्तरमपत्यमरणेनापि फलतो वन्ध्या भवतीत्यत उच्यते–अवियाउरित्ति–अविजननशीला अपत्यानामत एवाह–जानुकूपराणामेव माता–जननी जानुकूर्परमाता, एतान्येव शरीरांशभूतानि तस्याः स्तनौ स्पृशन्ति नापत्यमित्यर्थः, अथवा जानुकूपराण्येव मात्रा–परप्रणोदे साहाय्ये समर्थं उत्सङ्गनिवेशनीयो वा परिकरो यस्या न पुत्रलक्षणः सा जानुकूपरमात्रा । 'दासचेडे'त्ति दासस्य–भृतकविशेषस्य चेटः–कुमारकः दासचेटः अथवा दासश्चासौ चेटश्चेति दासचेटः । 'तक्करे'ति चौरः 'पावस्स' पापकर्मकारिणः चाण्डालस्येव रूपं–स्वभावो यस्य स तथा, चण्डालकर्मापेक्षया भीमतरानि–रौद्राणि कर्म्माणि यस्य स तथा, 'आरुसिय'त्ति आरुष्टस्येव दीप्ते–रक्ते नयने यस्य स तथा, खरपरुषे–अतिकर्कशे महत्यौ विकृते–बीभत्से दंष्ट्रिके–उत्तरौष्ठकेशगुच्छरूपे दशनविशेषरूपे वा यस्य स तथा, असंपुटितौ असंवृतौ वा परस्परालाभौ तुच्छलाद्दशनदीर्घलाच्च ओष्ठौ यस्य स तथा उद्धूता–वायुना प्रकीर्णा लम्बमाना मूर्द्धजा यस्य स तथा, भ्रमरराहुवर्णः कृष्ण इत्यर्थः, 'निरणुक्कोसे' निर्दयो 'निरणुतावे' पश्चात्तापरहितः अत एव 'दारुणो' रौद्रः अत एव 'पइभयो' भयजनकः 'निःसंक-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥ ८० ॥

यिकः' शौर्यातिशयादेव तत्साधयिष्याम्येवेत्येवंप्रवृत्तिकः पाठान्तरे 'निस्संसे'ति नृन्–नरान् शंसति–हिनस्तीति नृशंसः निःशंसो वा–विगतश्लाघः, 'निरणुकंपे'त्ति विगतप्राणिरक्षः निर्गता वा जनानामनुकम्पा यत्र स तथा, अहिरिव एकान्ता–ग्राह्यमेवेदं मयेत्येवमेवनिश्चया दृष्टिर्यस्य स तथा 'खुरेव एगंतधाराए'त्ति एकत्रान्ते–वस्तुभागेऽपहर्तव्यलक्षणे धारा परोपतापप्रधानवृत्तिलक्षणा यस्य स तथा, यथा क्षुरप्रः एकधारः, मोषकलक्षणैकप्रवृत्तिक एवेति भावः, 'जलमिव सव्वगाहि'त्ति यथा जलं सर्वं स्वविषयापन्नमभ्यन्तरीकरोति तथाऽयमपि सर्वं गृह्णातीति भावः, तथा उत्कञ्चनवञ्चनमायानिकृतिकूटकपटैः सह योऽतिसंप्रयोगो–गार्ध्यं तेन बहुलः–प्रचुरो यः स तथा, तत्र ऊर्द्ध कञ्चनं मूल्याद्यारोपणार्थं उत्कञ्चनं हीनगुणस्य गुणोत्कर्षप्रतिपादनमित्यर्थः वञ्चनं–प्रतारणं माया–परवञ्चनबुद्धिः निकृतिः–वकवृत्त्या गलकर्तकानामिवावस्थानं कूटं–कार्षापणतुलादेः परवञ्चनार्थं न्यूनाधिककरणं कपटं–नेपथ्यभाषाविपर्ययकरणं एभिरुत्कञ्चनादिभिस्सहातिशयेन यः संप्रयोगो–योगस्तेन यो बहुलः स तथा, यदिवा सातिशयेन द्रव्येण कस्तूरिकादिना परस्य द्रव्यस्य संप्रयोगः सातिसंप्रयोगः, ततश्चोत्कञ्चनादिभिः सातिसंप्रयोगेण च यो बहुलः स तथा, उक्तं च सातिप्रयोगशब्दार्थाय–"सो होई[1] साइजोगो दव्वं जं छुहिय अन्नदव्वेसु । दोसगुणा वयणेसु य अत्थविसंवायणं कुणइ ॥ १ ॥" त्ति एकीयं व्याख्यानं, व्याख्यानान्तरं पुनरेवं–उत्कोचनं उत्कोचः निकृतिः–वञ्चनप्रच्छादनार्थं कर्म सातिः–अविश्रम्भः एतत्संप्रयोगे बहुलः, शेषं तथैव, चिरं–बहुकालं यावत् नगरे नगरस्य वा विनष्टो–विप्रुतः चिरनगरविनष्टः, बहुकालीनो यो नगरविनष्टो भवति स किलात्यन्तं धूर्तो भवतीत्येवं विशेषितः, तथा दुष्टं शीलं–स्वभावः आकारः–आकृति-

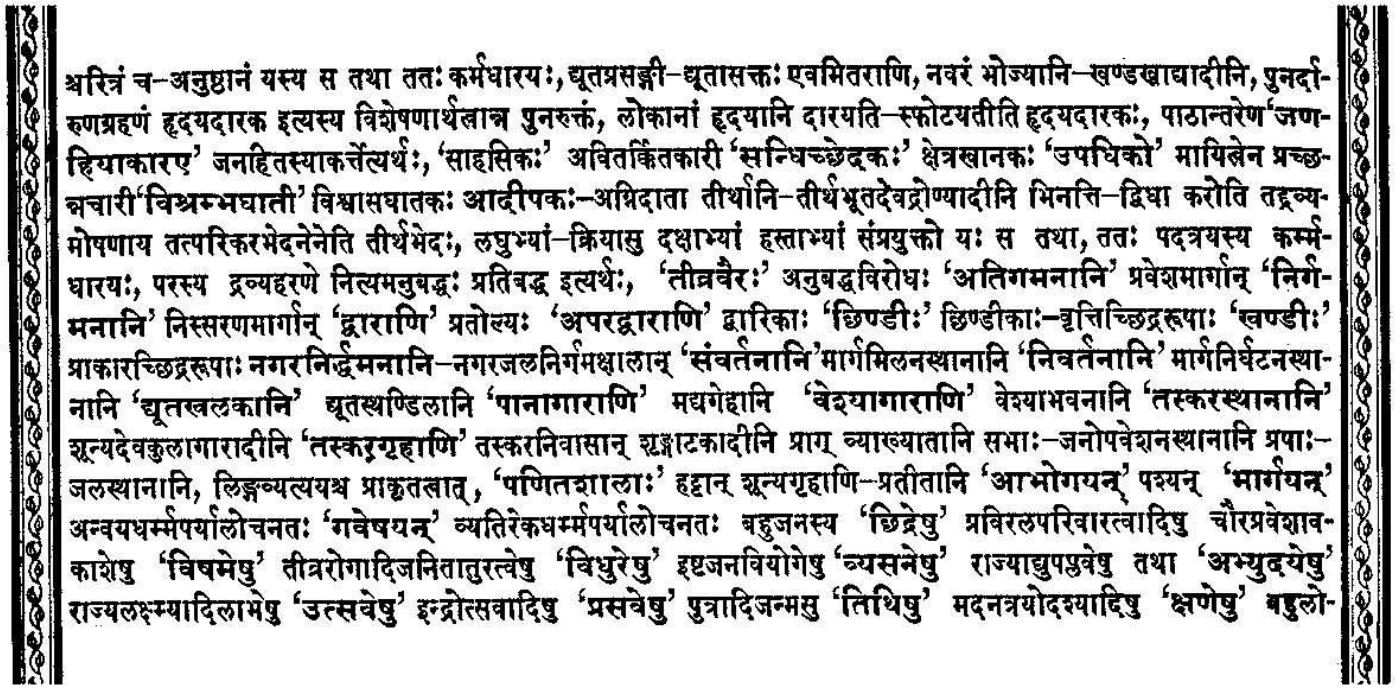
[1] स भवति सातियोगो यद् द्रव्यमन्यद्रव्येषु क्षिप्त्वा । दोषगुणान् वचनेषु च अर्थविसंवादनं करोति ॥ १ ॥

२ संघाद-ज्ञाते ध-न्यपन्थक-विजयादि सू. ३३-३४-३५

॥ ८० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा



श्चरित्रं च–अनुष्ठानं यस्य स तथा ततः कर्मधारयः, द्यूतप्रसङ्गी–द्यूतासक्तः एवमितराणि, नवरं भोज्यानि–खण्डखाद्यादीनि, पुनर्दारुणग्रहणं हृदयदारक इत्यस्य विशेषणार्थत्वान्न पुनरुक्तं, लोकानां हृदयानि दारयति–स्फोटयतीति हृदयदारकः, पाठान्तरेण 'जणहियाकारए' जनहितस्याकर्त्तेत्यर्थः, 'साहसिकः' अविमृश्यकारी 'सन्धिच्छेदकः' क्षेत्रखानकः 'उपधिको' मायिल्लेन प्रच्छन्नचारी 'विश्रम्भघाती' विश्वासघातकः आदीपकः–अग्निदाता तीर्थानि–तीर्थभूतदेवद्रोण्यादीनि भिनत्ति–द्विधा करोति तद्द्रव्यमोषणाय तत्परिकरभेदनेनेति तीर्थभेदः, लघुभ्यां–क्रियासु दक्षाभ्यां हस्ताभ्यां संप्रयुक्तो यः स तथा, ततः पदत्रयस्य कर्म्मधारयः, परस्य द्रव्यहरणे नित्यमनुबद्धः प्रतिबद्ध इत्यर्थः, 'तीव्रवैरः' अनुबद्धविरोधः 'अतिगमनानि' प्रवेशमार्गान् 'निर्गमनानि' निस्सरणमार्गान् 'द्वाराणि' प्रतोल्यः 'अपरद्वाराणि' द्वारिकाः 'छिण्डीः' छिण्डीकाः–वृत्तिच्छिद्ररूपाः 'खण्डीः' प्राकारच्छिद्ररूपाः नगरनिर्द्धमनानि–नगरजलनिर्गमक्षालान् 'संवर्तनानि' मार्गमिलनस्थानानि 'निवर्तनानि' मार्गनिर्घटनस्थानानि 'द्यूतखलकानि' द्यूतस्थण्डिलानि 'पानागाराणि' मद्यगेहानि 'वेश्यागाराणि' वेश्याभवनानि 'तस्करस्थानानि' शून्यदेवकुलागारादीनि 'तस्करगृहाणि' तस्करनिवासान् शृङ्गाटकादीनि प्राग् व्याख्यातानि सभाः–जनोपवेशनस्थानानि प्रपाः–जलस्थानानि, लिङ्गव्यत्ययश्च प्राकृतत्वात्, 'पणितशालाः' हट्टान् शून्यगृहाणि–प्रतीतानि 'आभोगयन्' पश्यन् 'मार्गयन्' अन्वयधर्म्मपर्यालोचनतः 'गवेषयन्' व्यतिरेकधर्म्मपर्यालोचनतः बहुजनस्य 'छिद्रेषु' प्रविरलपरिवारत्वादिषु चौरप्रवेशावकाशेषु 'विषमेषु' तीव्ररोगादिजनितातुरत्वेषु 'विधुरेषु' इष्टजनवियोगेषु 'व्यसनेषु' राज्याद्युपप्लवेषु तथा 'अभ्युदयेषु' राज्यलक्ष्म्यादिलाभेषु 'उत्सवेषु' इन्द्रोत्सवादिषु 'प्रसवेषु' पुत्रादिजन्मसु 'तिथिषु' मदनत्रयोदश्यादिषु 'क्षणेषु' बहुलो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कभोजनदानादिरूपेषु 'यज्ञेषु' नागादिपूजासु 'पर्वणीषु' कौमुदीप्रभृतिषु अधिकरणभूतासु मत्तः पीतमद्यतया प्रमत्तत्वम्-प्रमादवान् यः स तथा तस्य बहुजनस्येति योगः, 'व्याक्षिप्तस्य' प्रयोजनान्तरोपयुक्तस्य व्याकुलस्य च नानाविधकार्याक्षेपेण सुखितस्य दुःखितस्य च विदेशस्थस्य च-देशान्तरस्थस्य विप्रोषितस्य च-देशान्तरं गन्तुं प्रवृत्तस्य 'मार्गं च' पन्थानं 'छिद्रं च' अपद्वारं 'विरहं च' विजनं अन्तरं च-अवसरमिति आरामादिपदानि प्राग्वत् 'सुसाणेसु य'त्ति श्मशानेषु 'गिरिकन्दरेषु' गिरिरन्ध्रेषु 'लयनेषु' गिरिवर्तिपाषाणगृहेषु 'उपस्थानेषु' तथाविधमण्डपेषु बहुजनस्य छिद्रेष्वित्यादि पुनरावर्त्तनीयं यावद् 'एवं च णं विहरह'त्ति ।

तते णं तीसे भद्दाए भारियाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहं धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं बहूणि वासाणि सद्दफरिसरसगंधरूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं जासिं मन्ने निगयकुच्छिसंभूयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपयंपियाइं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणाइं मुद्धयाइं थणयं पिवंति, ततो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंगे निवेसियाइं देंति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिते, तं अहन्नं अधन्ना अपुन्ना अलक्खणा अकयपुन्ना एत्तो एगमवि न पत्ता, तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते

२ संघाट-ज्ञाते धन्यपन्थक-विजयाधि सू. ३३-३४-३५

॥ ८१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाह: एवं विजयस्तेनस्य कथा

प्रत सूत्रांक [३६-३७]

दीप अनुक्रम [४६-४७]



धण्णं सत्थवाहं आपुच्छित्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुं विपुलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरिजणमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया पागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इंदाणि य खंदाणि य रुद्दाणि य सिवाणि य वेसमणाणि य तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य महरिहं पुप्फचणियं करेत्ता जाणुपायपडियाए एवं वइत्तए–जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारिगं वा पयायामि तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमित्ति कट्टु उवातियं उवाइत्तए, एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते जेणामेव धण्णे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छति उवागच्छित्ता एवं वदासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाति जाव देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिते तण्णं अहं अहन्ना अपुन्ना अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी विपुलं असणं ४ जाव अणुवड्ढेमि उवाइयं करेत्तए, तते णं धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वदासी–ममंपि य णं खलु देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे–कहं णं तुमं दारगं दारियं वा पयाएज्जसि ?, भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठमणुजाणति, तते णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाता समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हयहियया विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेति २ त्ता सुबहुं पुप्फगंधवत्थमल्लालंकारं गेण्हति २ सयाओ गिहाओ

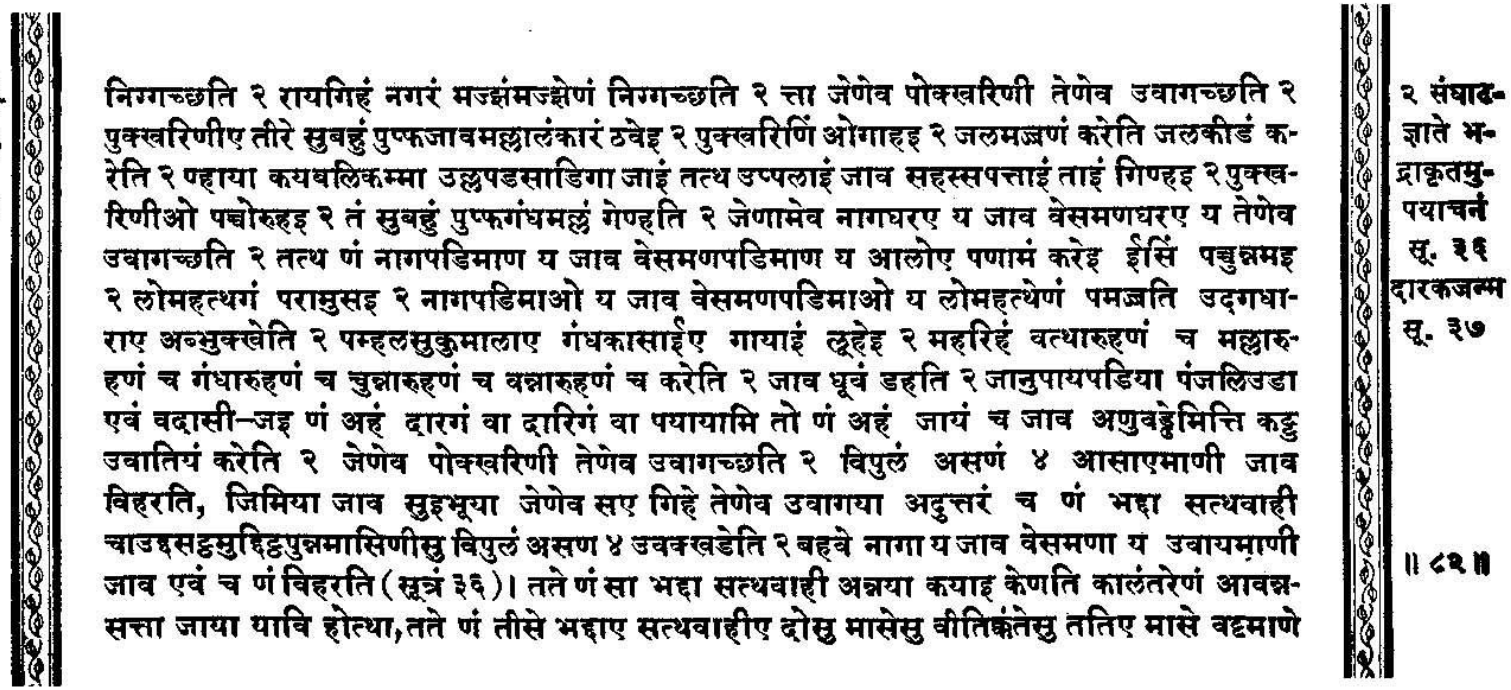


Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाह: एवं विजयस्तेनस्य कथा

प्रत सूत्रांक [३६-३७]

दीप अनुक्रम [४६-४७]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ८२ ॥

निग्गच्छति २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ त्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फजावमल्लालंकारं ठवेइ २ पुक्खरिणिं ओगाहइ २ जलमज्जणं करेति जलकीडं करेति २ ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ २ पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ २ तं सुबहुं पुप्फगंधमल्लं गेण्हति २ जेणामेव नागघरए य जाव वेसमणघरए य तेणेव उवागच्छति २ तत्थ णं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ ईसिं पच्चुन्नमइ २ लोमहत्थगं परामुसइ २ नागपडिमाओ य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थेणं पमज्जति उदगधाराए अब्भुक्खेति २ पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ २ महरिहं वत्थारुहणं च मल्लारुहणं च गंधारुहणं च चुन्नारुहणं च वन्नारुहणं च करेति २ जाव धूवं डहति २ जानुपायपडिया पंजलिउडा एवं वदासी–जइ णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि तो णं अहं जायं च जाव अणुवड्ढेमित्ति कट्टु उवातियं करेति २ जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ विपुलं असणं ४ आसाएमाणी जाव विहरति, जिमिया जाव सुइभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया अदुत्तरं च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुन्नमासिणीसु विपुलं असण ४ उवक्खडेति २ बहवे नागा य जाव वेसमणा य उवायमाणी जाव एवं च णं विहरति (सूत्रं ३६)। तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ केणति कालंतरेणं आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था, तते णं तीसे भद्दाए सत्थवाहीए दोसु मासेसु वीतिक्कंतेसु ततिए मासे वट्टमाणे

२ संघाद-ज्ञाते भद्राकृतमुपयाचनं सू. ३६ दारकजन्म सू. ३७

॥ ८२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा

प्रत सूत्रांक [३६-३७]

दीप अनुक्रम [४६-४७]



इमेयारूवे दोहले पाउब्भूते–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं विउलं असणं ४ सुबहुयं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गहाय मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणमहिलियाहि य सद्धिं संपरिवुडाओ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति २ जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २ पोक्खरिणीं ओगाहिंति २ ण्हायाओ कयबलिकम्माओ सव्वालंकारविभूसियाओ विपुलं असणं ४ आसाएमाणीओ जाव पडिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति एवं संपेहेंति २ कल्लं जाव जलंते जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मम तस्स गब्भस्स जाव विणेति तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी जाव विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह, तते णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठा जाव विपुलं असणं ४ जाव ण्हाया जाव उल्लपडसाडगा जेणेव नागघरते जाव धूवं दहति २ पणामं करेति पणामं करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ तते णं ताओ मित्तनाति जाव नगरमहिलाओ भद्दं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसितं करेंति, तते णं सा भद्दा सत्थवाही ताहिं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरिजणणगरमहिलियाहिं सद्धिं तं विपुलं असणं ४ जाव परिभुंजमाणी य दोहलं विणेति २ जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया, तते णं सा भद्दा सत्थवाही संपुन्नडोहला जाव तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति, तते णं सा भद्दा सत्थवाही

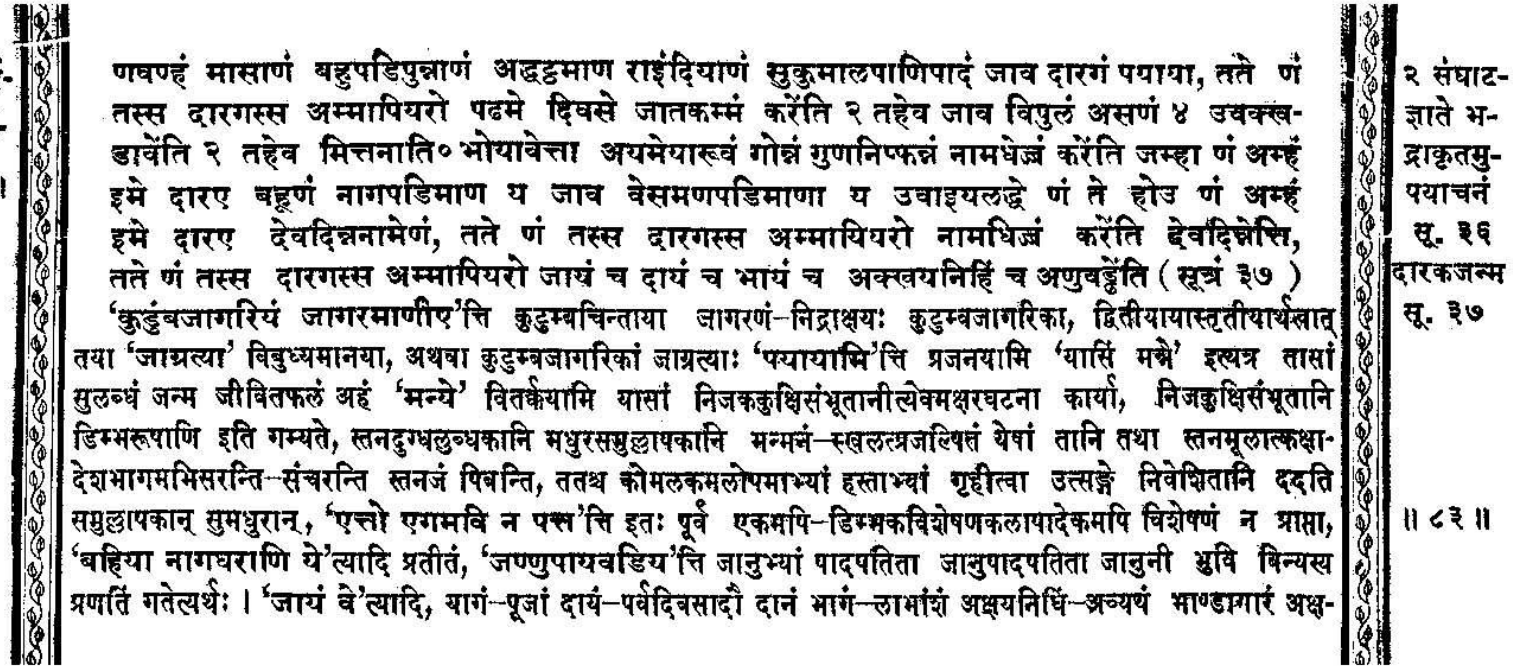


Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा

प्रत सूत्रांक [३६-३७]

दीप अनुक्रम [४६-४७]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ८३ ॥

णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राईंदियाणं सुकुमालपाणिपादं जाव दारगं पयाया, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्मं करेंति २ तहेव जाव विपुलं असणं ४ उवक्खडावेंति २ तहेव मित्तनाति० भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति जम्हा णं अम्हं इमे दारए बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाणा य उवाइयलद्धे णं ते होउ णं अम्हं इमे दारए देवदिन्ननामेणं, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं करेंति देवदिन्नेत्ति, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेंति (सूत्रं ३७)

'कुडुंबजागरियं जागरमाणीए'त्ति कुटुम्बचिन्तायां जागरणं–निद्राक्षयः कुटुम्बजागरिका, द्वितीयायास्तृतीयार्थत्वात् तया 'जाग्रत्या' विबुध्यमानया, अथवा कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्याः 'पयायामि'त्ति प्रजनयामि 'यासिं मन्ने' इत्यत्र तासां सुलब्धं जन्म जीवितफलं अहं 'मन्ये' वितर्कयामि यासां निजककुक्षिसंभूतानीत्येवमक्षरघटना कार्या, निजकुक्षिसंभूतानि डिम्भरूपाणि इति गम्यते, स्तनदुग्धलुब्धकानि मधुरसमुल्लापकानि मन्मनं–स्खलत्प्रजल्पितं येषां तानि तथा स्तनमूलात्कक्षा-देशभागमभिसरन्ति–संचरन्ति स्तनजं पिबन्ति, ततश्च कोमलकमलोपमाभ्यां हस्ताभ्यां गृहीत्वा उत्सङ्गे निवेशितानि ददति समुल्लापकान् सुमधुरान्, 'एत्तो एगमवि न पत्त'त्ति इतः पूर्वं एकमपि–डिम्भकविशेषणकलापादेकमपि विशेषणं न प्राप्ता, 'बहिया नागघराणि ये'त्यादि प्रतीतं, 'जण्णुपायवडिय'त्ति जानुभ्यां पादपतिता जानुपादपतिता जानुनी भुवि विन्यस्य प्रणतिं गतेत्यर्थः। 'जायं वे'त्यादि, यागं–पूजां दायं–पर्वदिवसादौ दानं भागं–लाभांशं अक्षयनिधिं–अक्ष्यं भाण्डागारं अक्ष-

२ संघाट-ज्ञाते भद्राकृतमुपयाचनं सू. ३६ दारकजन्म सू. ३७

॥ ८३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा

यनिधिं वा–मूलधनं येन जीर्णीभूतदेवकुलस्योद्धारः करिष्यते अक्षीणिकां वा प्रतीतां वर्द्धयामि–पूर्वकाले अल्पं सन्तं महान्तं करोमीति भावः 'उवघाइयं'ति उपयाच्यते–मृग्यते स यत्तत् उपयाचितं–ईप्सितं वस्तु 'उवयाचित्तुं' प्रार्थयितुं 'उल्लपडसाडय'त्ति स्नानेनार्द्रे पटशाटिके–उत्तरीयपरिधानवस्त्रे यस्याः सा तथा 'आलोए'त्ति दर्शने नागादिप्रतिमानां प्रणामं करोति, ततः प्रत्युन्नमति, लोमहस्तं–प्रमार्जनीकं 'परामृशति' गृह्णाति, ततस्तेन ताः प्रमार्जयति 'अब्भुक्खेइ'त्ति अभिषिञ्चति वस्त्राशोषणादीनि प्रतीतानि । 'चाउद्दसी'त्यादौ 'उद्दिट्ठि'ति अमावस्या 'आवन्नसत्ते'ति आपन्नः–उत्पन्नः सत्त्वो–जीवो गर्भे यस्याः सा तथा ।

ततेणं से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दारयं कडीए गेण्हति २ बहूहिं डिंभएहि य डिंभगाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे अभिरममाणे अभिरमति। ततेणं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइं देवदिन्नं दारयं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं करेति पंथयस्स दासचेडयस्स हत्थयंसि दलयति,तते णं से पंथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्नं दारगं कडिए गिण्हति२ सयातो गिहाओ पडिनिक्खमति२ बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ२ देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेति २ बहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि होत्था विहरति, इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि बाराणि य अवदाराणि य तहेव जाव आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३८-३८R]

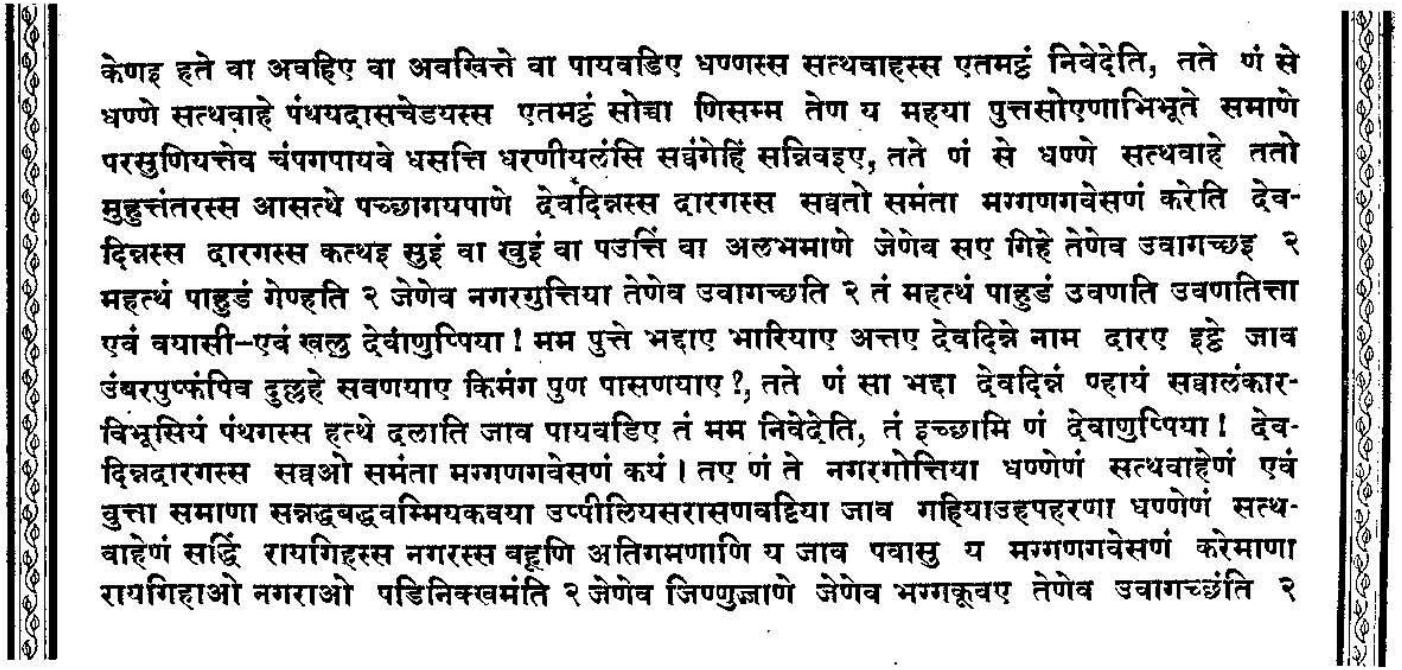
दीप अनुक्रम [४८-४९]

माणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ २ देवदिन्नं दारगं सव्वालंकारविभूसियं पासति पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने पंथयं दासचेडं पमत्तं पासति २ दिसालोयं करेति करेत्ता देवदिन्नं दारगं गेण्हति २ कक्खंसि अल्लियावेति २ उत्तरिज्जेणं पिहेइ २ सिग्घं तुरियं चवलं चेतियं रायगिहस्स नगरस्स अवदारेणं निग्गच्छति २ जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति २ देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेति २ आभरणालंकारं गेण्हति २ देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवियविप्पजहं भग्गकूवए पक्खिवति २ जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छति २ मालुयाकच्छयं अणुपविसति २ निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवसं खिवेमाणे चिट्ठति (सूत्रं ३८) तते णं से पंथए दासचेडे तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छति २ देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे देवदिन्नदारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेइ २ देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुतिं वा खुतिं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी-एवं खलु सामी! भद्दा सत्थवाही देवदिन्नं दारयं ण्हायं जाव मम हत्थंसि दलयति तते णं अहं देवदिन्नं दारयं कडीए गिण्हामि २ जाव मग्गणगवेसणं करेमि तं न णज्जति णं सामि! देवदिन्ने दारए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

***अत्र सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम ३८ द्वि-वारान् मुद्रितं. तत् कारणात् मया शिर्षक-स्थाने ३८, ३८-R निर्दिष्टम्

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा



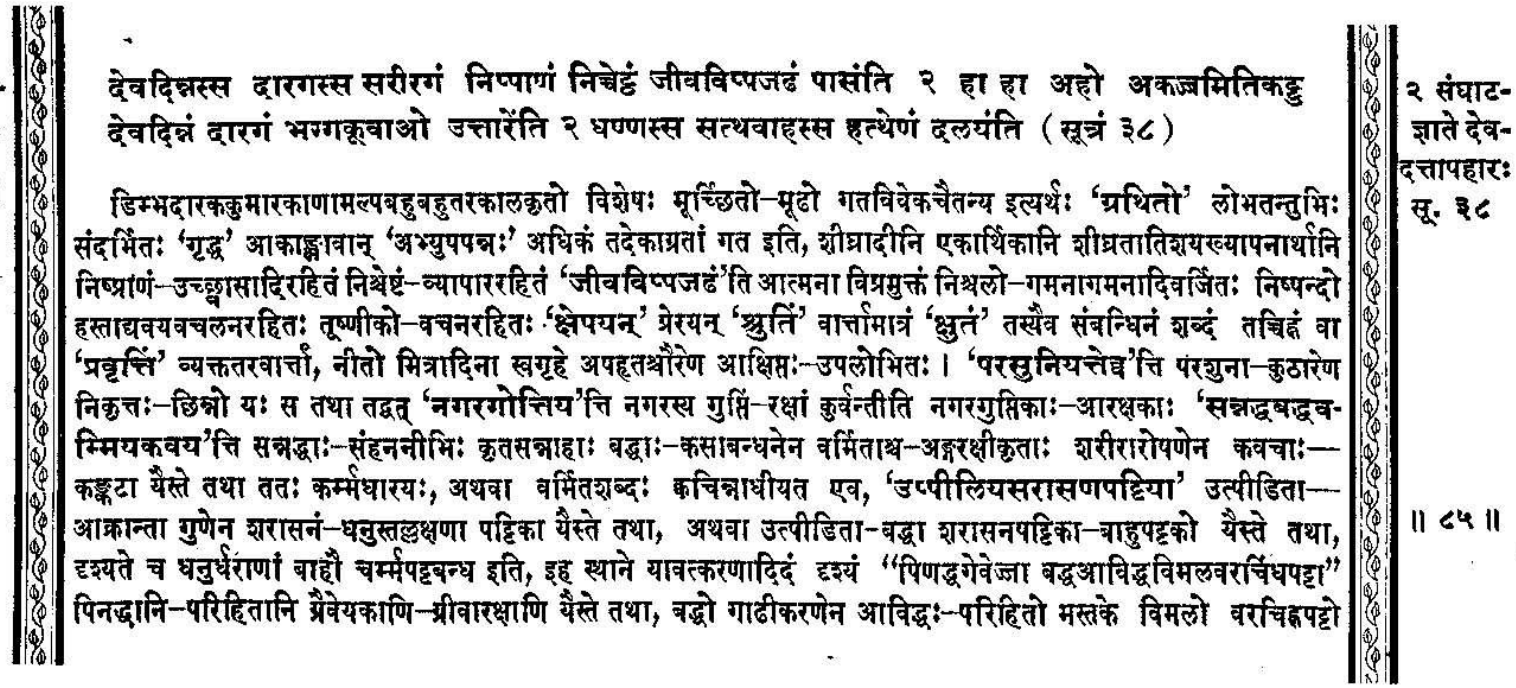
केणइ हते वा अवहिए वा अवखित्ते वा पायवडिए धण्णस्स सत्थवाहस्स एतमट्ठं निवेदेति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंथयदासचेडयस्स एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूते समाणे परसुणियत्तेव चंपगपायवे धसत्ति धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सन्निवइए, तते णं से धण्णे सत्थवाहे ततो मुहुत्तंतरस्स आसत्थे पच्छागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेति देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ महत्थं पाहुडं गेण्हति २ जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छति २ तं महत्थं पाहुडं उवणेति उवणेत्तिा एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नाम दारए इट्ठे जाव उंबरपुप्फंपिव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए?, तते णं सा भद्दा देवदिन्नं पहायं सव्वालंकारविभूसियं पंथगस्स हत्थे दलाति जाव पायवडिए तं मम निवेदेति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! देवदिन्नदारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं कयं। तए णं ते नगरगोत्तिया धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा सन्नद्धबद्धवम्मियकवया उप्पीलियसरासणवट्टिया जाव गहियाउहपहरणा धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अतिगमणाणि य जाव पवासु य मग्गणगवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छंति २

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	***अत्र सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम ३८ द्वि-वारान् मुद्रितं. तत् कारणात् मया शिर्षक-स्थाने ३८, ३८-R निर्दिष्टम् धन्यसार्थवाह: एवं विजयस्तेनस्य कथा

प्रत सूत्रांक [३८-३८R]

दीप अनुक्रम [४८-४९]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ८५ ॥

देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति २ हा हा अहो अकज्जमितिकट्टु देवदिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेंति २ धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थेणं दलयंति (सूत्रं ३८)

डिम्भदारककुमारकाणामल्पबहुबहुतरकालकृतो विशेषः मूर्च्छितो–मूढो गतविवेकचैतन्य इत्यर्थः 'ग्रथितो' लोभतन्तुभिः संदर्भितः 'गृद्ध' आकाङ्क्षावान् 'अभ्युपपन्नः' अधिकं तदेकाग्रतां गत इति, शीघ्रादीनि एकार्थिकानि शीघ्रतातिशयख्यापनार्थानि निष्प्राणं–उच्छ्वासादिरहितं निश्चेष्टं–व्यापाररहितं 'जीवविप्पजढं'ति आत्मना विप्रमुक्तं निश्चलो–गमनागमनादिवर्जितः निष्पन्दो हस्ताद्यवयवचलनरहितः तूष्णीको–वचनरहितः 'क्षेपयन्' प्रेरयन् 'श्रुतिं' वार्त्तामात्रं 'क्षुतं' तस्यैव संबन्धिनं शब्दं तच्चिह्नं वा 'प्रवृत्तिं' व्यक्ततरवार्त्तां, नीतो मित्रादिना स्वगृहे अपहृतश्चौरेण आक्षिप्तः–उपलोभितः। 'परसुनियत्तेव्व'त्ति परशुना–कुठारेण निकृत्तः–छिन्नो यः स तथा तद्वत् 'नगरगोत्तिय'त्ति नगरस्य गुप्तिं–रक्षां कुर्वन्तीति नगरगुप्तिकाः–आरक्षकाः 'सन्नद्धबद्धवम्मियकवय'त्ति सन्नद्धाः–संहननीभिः कृतसन्नाहाः बद्धाः–कसाबन्धनेन वर्मिताश्च–अङ्गरक्षीकृताः शरीरारोपणेन कवचाः–कङ्कटा यैस्ते तथा ततः कर्म्मधारयः, अथवा वर्मितशब्दः क्वचिन्नाधीयत एव, 'उप्पीलियसरासणपट्टिया' उत्पीडिता–आक्रान्ता गुणेन शरासनं–धनुस्तल्लक्षणा पट्टिका यैस्ते तथा, अथवा उत्पीडिता–बद्धा शरासनपट्टिका–बाहुपट्टको यैस्ते तथा, दृश्यते च धनुर्धराणां बाहौ चर्म्मपट्टबन्ध इति, इह स्थाने यावत्करणादिदं दृश्यं "पिणद्धगेवेज्जा बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टा" पिनद्धानि–परिहितानि ग्रैवेयकाणि–ग्रीवारक्षाणि यैस्ते तथा, बद्धो गाढीकरणेन आविद्धः–परिहितो मस्तके विमलो वरचिह्नपट्टो

२ संघाट-ज्ञाते देव-दत्तापहारः सू. ३८

॥ ८५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

***अत्र सूत्रान्ते मुद्रण-दोषात् अस्य सूत्रस्य क्रम ३८ द्वि-वारान् मुद्रितं. तत् कारणात् मया शिर्षक-स्थाने ३८, ३८-R निर्दिष्टम्

धन्यसार्थवाह: एवं विजयस्तेनस्य कथा

यैस्ते तथा ततः कर्मधारयः 'गहियाउहपहरणा' गृहीतान्यायुधानि प्रहरणाय–प्रहारदानाय यैस्ते तथा, अथवाऽऽयुधप्रहरणयोः क्षेप्याक्षेप्यकृतो विशेषः, 'ससक्खं'ति ससाक्षि ससाक्षिणोऽध्यक्षान् विधायेत्यर्थः ।

ततेणं ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति २ मालुयाकच्छयं अणुपविसंति २ विजयं तक्करं ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं जीवग्गाहं गिण्हंति २ अट्ठिमुट्ठिजाणुकोप्परपहारसंभग्गमहियगत्तं करेंति २ अवउडाबन्धणं करेंति २ देवदिन्नगस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति २ विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति २ मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति २ रायगिहं नगरं अणुपविसंति २ रायगिहे नगरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य निवाएमाणा २ छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पक्किरमाणा २ महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वदंति–एस णं देवाणुप्पिया ! विजए नामं तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी बालघायए बालमारए, तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केति राया वा रायपुत्ते वा रायमच्चे वा अवरज्झति एत्थट्ठे अप्पणो सयाति कम्माइं अवरज्झंतित्तिकट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति २ हडिबंधणं करेंति २ भत्तपाणनिरोहं करेंति २ तिसंझं कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा २ विहरंति, ततेणं से धण्णे सत्थवाहे मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं रोयमाणे जाव विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं निह-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

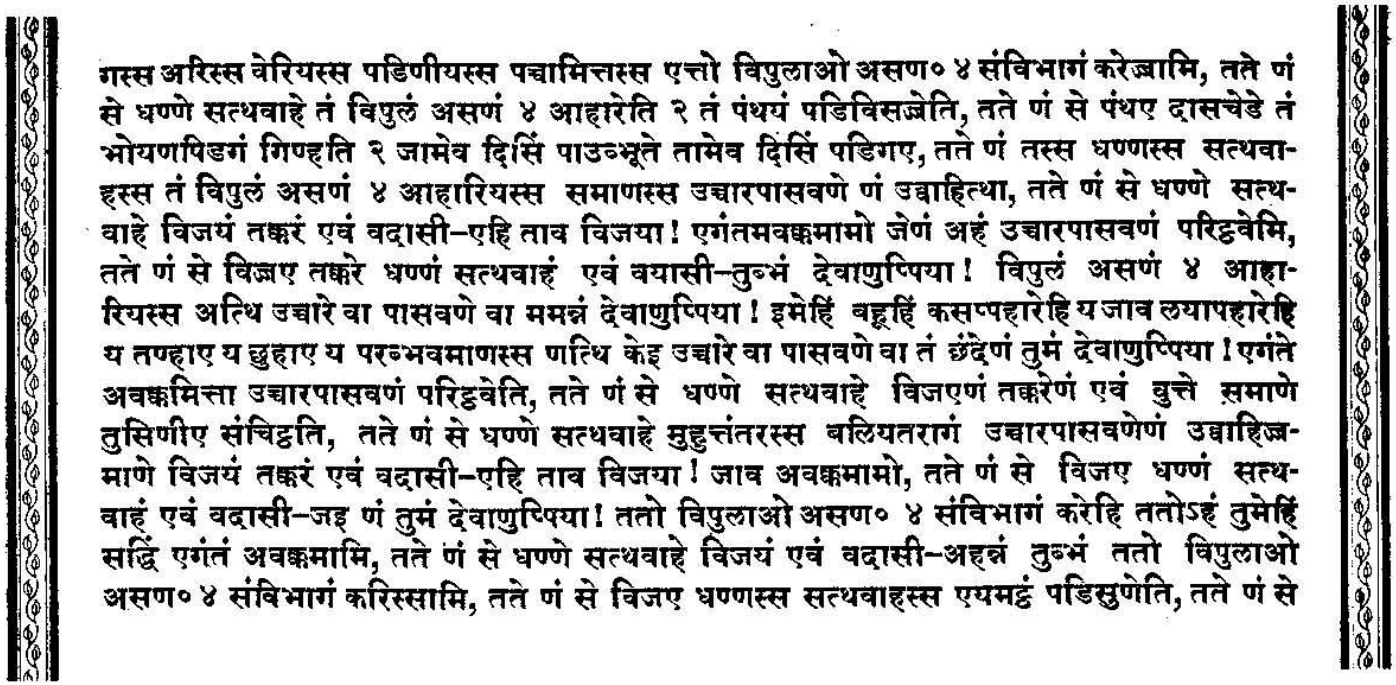
प्रत सूत्रांक [३९,४०]

दीप अनुक्रम [५०,५१]

रणं करेंति २ बहूइं लोतियातिं मयगकिच्चाइं करेंति २ केणइ कालंतरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था। (सूत्रं ३९)। तते णं से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइं लहूसयंसि रायावराहंसि संपलत्ते जाए यावि होत्था, तते णं ते नगरगुत्तिया धण्णं सत्थवाहं गेण्हंति २ जेणेव चारगे तेणेव उवागच्छंति २ चारगं अणुपवेसंति २ विजएणं तक्करेणं सद्धिं एगयओ हडिबंधणं करेंति। तते णं सा भद्दा भारिया कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडेति २ भोयणपिंडए करेति २ भोयणाइं पक्खिवति लंछियमुद्दियं करेइ २ एगं च सुरभिवारिपडिपुन्नं दगवारयं करेति २ पंथयं दासचेडं सद्दावेति २ एवं वदासी–गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं विपुलं असणं ४ गहाय चारगसालाए धण्णस्स सत्थवाहस्स उवणेहि, तते णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे तं भोयणपिंडयं तं च सुरभिवरवारिपडिपुन्नं दगवारयं गेण्हति २ सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति २ रायगिहे नगरे मज्झंमज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ भोयणपिडयं ठावेति २ उल्लंछति २ त्ता भायणाइं गेण्हति २ भायणाइं धोवेति २ हत्थसोयं दलयति २ धण्णं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण० ४ परिवेसति, तते णं से विजए तक्करे धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–तुमण्णं देवाणुप्पिया! मम एयाओ विपुलातो असण० ४ संविभागं करेहि, तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वदासी–अवि याइं अहं विजया! एयं विपुलं असणं ४ कायाणं वा सुणगाणं वा दलएज्जा उक्कुरुडियाए वा णं छड्डेज्जा नो चेव णं तव पुत्तघायगस्स पुत्तमार-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा



गस्स अरिस्स वेरियस्स पडिणीयस्स पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण० ४ संविभागं करेज्जामि, तते णं से धण्णे सत्थवाहे तं विपुलं असणं ४ आहारेति २ तं पंथयं पडिविसज्जेति, तते णं से पंथए दासचेडे तं भोयणपिडगं गिण्हति २ जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए, तते णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स तं विपुलं असणं ४ आहारियस्स समाणस्स उच्चारपासवणे णं उब्बाहित्था, तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वदासी–एहि ताव विजया! एगंतमवक्कमामो जेणं अहं उच्चारपासवणं परिट्ठवेमि, तते णं से विजए तक्करे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी–तुब्भं देवाणुप्पिया! विपुलं असणं ४ आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा पासवणे वा ममन्नं देवाणुप्पिया! इमेहिं बहूहिं कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणस्स णत्थि केइ उच्चारे वा पासवणे वा तं छंदेणं तुमं देवाणुप्पिया! एगंते अवक्कमित्ता उच्चारपासवणं परिट्ठवेति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजएणं तक्करेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स बलियतरागं उच्चारपासवणेणं उब्बाहिज्जमाणे विजयं तक्करं एवं वदासी–एहि ताव विजया! जाव अवक्कमामो, तते णं से विजए धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–जइ णं तुमं देवाणुप्पिया! ततो विपुलाओ असण० ४ संविभागं करेहि ततोऽहं तुमेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि, तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं एवं वदासी–अहन्नं तुब्भं ततो विपुलाओ असण० ४ संविभागं करिस्सामि, तते णं से विजए धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३९,४०]

दीप अनुक्रम [५०,५१]

विजए धण्णेणं सद्धिं एगंते अवक्कमेति उच्चारपासवणं परिट्ठवेति आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसंकमित्ता णं विहरति, तते णं सा भद्दा कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ जाव परिवेसेति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ततो विपुलाओ असण० ४ संविभागं करेति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंथयं दासचेडं विसज्जेति, तते णं से पंथए भोयणपिडयं गहाय चारगाओ पडिनिक्खमति २ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता भद्दं सत्थवाहिणिं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिए! धण्णे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण० ४ संविभागं करेति (सूत्रं ४०)

'सहोढं'ति समोषं 'सगेवेज्जं'ति सह ग्रैवेयकेण–ग्रीवाबन्धनेन यथा भवति तथा गृह्णन्ति 'जीवग्गाहं गिण्हंति'त्ति जीवतीति जीवन्तं गृह्णन्ति अस्थिमुष्टिजानुकूर्परैस्तेषु वा ये प्रहारास्तैः संभग्नं–मथितं मोटितं–जर्जरितं गात्रं–शरीरं यस्य स तथा तं कुर्वन्ति 'अवउडगबंधणं'ति अवझोटनेन–अवमोटनेन कूकाटिकायाः बाह्वोश्च पश्चाद्भागनयनेन बन्धनं यस्य स तथा तं कुर्वन्ति 'कसप्पहारे य'त्ति वर्धताडनानि 'छिव'त्ति श्लक्ष्णः कपः 'लता' कम्बा 'बालघातकः' प्रहारदानेन 'बालमारकः' प्राणवियोजनेन। 'रायमज्जे'त्ति राजामात्यः 'अवरज्झइ'त्ति अपराध्यति अनर्थं करोति 'नन्नत्थ'त्ति नत्वन्यत्रेत्यर्थः, वाचनान्तरे त्विदं नाधीयत एव, स्वकानि निरुपचरितानि नोपचारेणात्मनः सम्बन्धीनि 'लहुस्सगंसि'त्ति लघुः स्व–आत्मा स्वरूपं यस्य स लघुस्वकः–अल्पस्वरूपः राज्ञि विषये अपराधो राजापराधस्तत्र 'संप्रलसः' प्रतिपादितः पिशुनैरिति गम्यते।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा

'भोयणपडिय'त्ति भोजनस्थालाद्याधारभूतं वंशमयं भाजनं पिटकं तत् करोति, सज्जीकरोतीत्यर्थः, पाठान्तरेण 'भरेइ'त्ति पूरयति पाठान्तरेण भोजनपिटके करोति अशनादीनि 'लाञ्छितं' रेखादिदानतो मुद्रितं कृतमुद्रादिमुद्रं 'उल्लंछेइ'त्ति विगतलाञ्छनं करोति 'परिवेशयति' भोजयति, 'आवि याइं'ति अपिः संभावने आइंति भाषायां अरेः–शत्रोर्वैरिणः–सानुबन्धशत्रुभावस्य प्रत्यनीकस्य–प्रतिकूलवृत्तेः प्रत्यमित्रस्य–वस्तु २ प्रति अमित्रस्य 'धण्णस्स'त्ति कर्मणि षष्ठी उच्चारप्रश्रवणं कर्तुमित्यलङ्कारे 'उवाहित्थ'त्ति उद्वाधयति स्म, 'एहि तावे'त्यादि, आगच्छ तावदिति भाषामात्रे हे विजय! एकान्तं–विजनमपक्रमामो–यामः 'जेणं'ति येनाहमुच्चारादि परिष्ठापयामीति 'छंदेणं'ति अभिप्रायेण यथारुचीत्यर्थः।

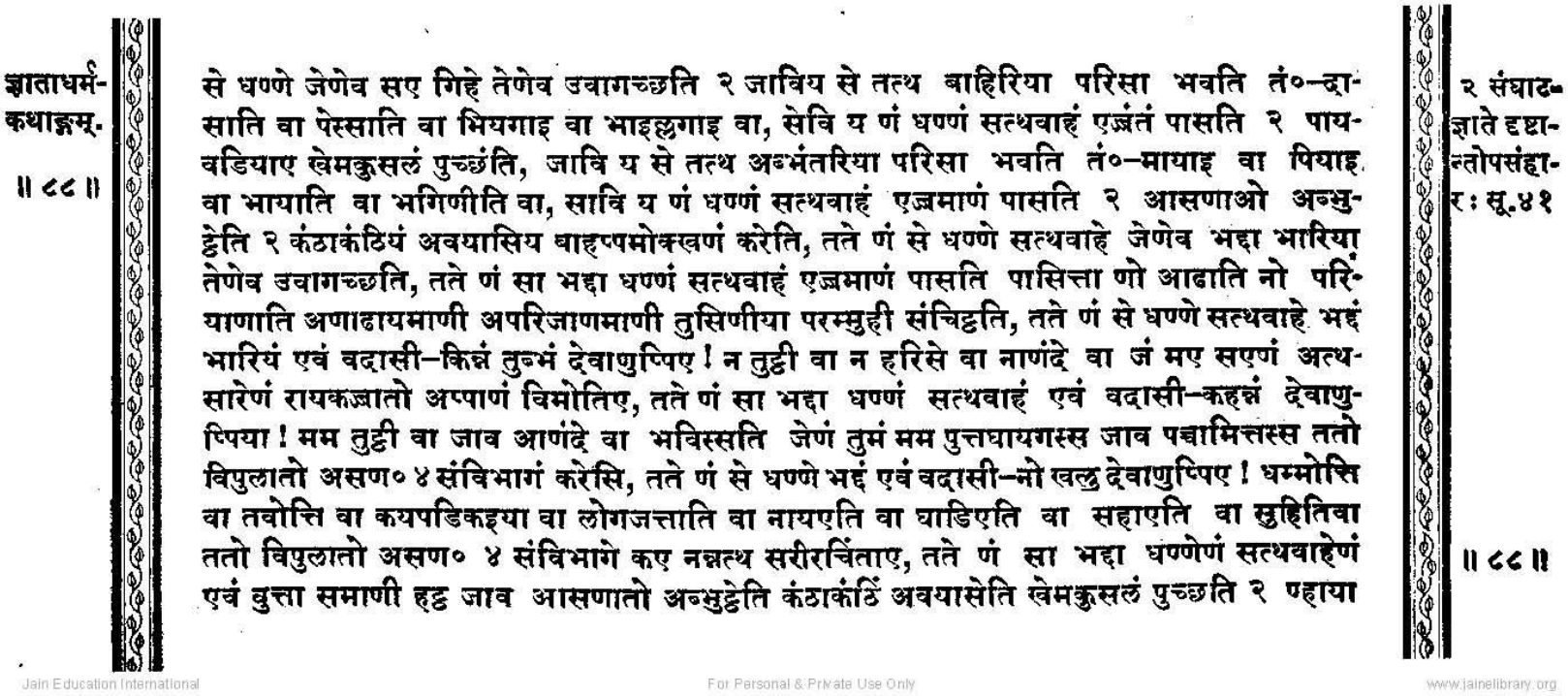
ततेणं सा भद्दा सत्थवाही पंथयस्स दासचेडयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ता रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणा धण्णस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जति, ततेणं से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सएण य अत्थसारेणं रायकज्जातो अप्पाणं मोयावेति २ चारगसालाओ पडिनिक्खमति २ जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति २ अलंकारियकम्मं करेति २ जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ अहत धोयमट्टियं गेण्हति पोक्खरिणीं ओगाहति २ जलमज्जणं करेति २ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव रायगिहं नगरं अणुपविसति २ रायगिहनगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पधारेत्थ गमणाए। ततेणं तं धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नगरे बहवे नियगसेट्ठिसत्थवाहपभितओ आढंति परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अब्भुट्ठेंति सरीरकुसलं पुच्छंति। ततेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४१]

दीप अनुक्रम [५२]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥ ८८ ॥

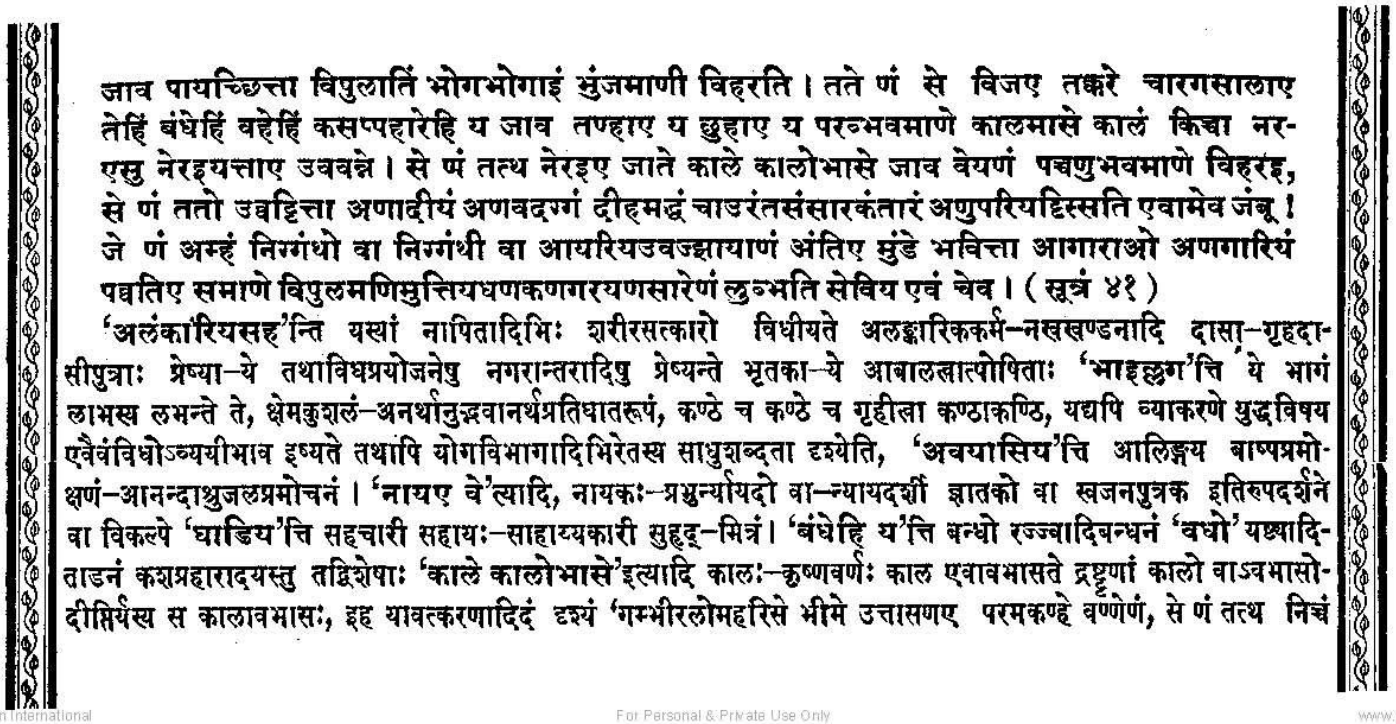
से धण्णे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ जावियं से तत्थ बाहिरिया परिसा भवति तं०–दासाति वा पेस्साति वा भियगाइ वा भाइल्लगाइ वा, सेवि य णं धण्णं सत्थवाहं एज्जंतं पासति २ पायवडियाए खेमकुसलं पुच्छंति, जावि य से तत्थ अब्भंतरिया परिसा भवति तं०–मायाइ वा पियाइ वा भायाति वा भगिणीति वा, सावि य णं धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासति २ आसणाओ अब्भुट्ठेति २ कंठाकंठियं अवयासिय बाहप्पमोक्खणं करेति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छति, तते णं सा भद्दा धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासति पासित्ता णो आढाति नो परियाणाति अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मुही संचिट्ठति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वदासी–किन्नं तुब्भं देवाणुप्पिए! न तुट्ठी वा न हरिसे वा नाणंदे वा जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जातो अप्पाणं विमोतिए, तते णं सा भद्दा धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–कहन्नं देवाणुप्पिया! मम तुट्ठी वा जाव आणंदे वा भविस्सति जेणं तुमं मम पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ततो विपुलातो असण० ४ संविभागं करेसि, तते णं से धण्णे भद्दं एवं वदासी–नो खलु देवाणुप्पिए! धम्मोत्ति वा तवोत्ति वा कयपडिकइया वा लोगजत्तातिवा नायएति वा घाडिएति वा सहाएति वा सुहितिवा ततो विपुलातो असण० ४ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरचिंताए, तते णं सा भद्दा धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव आसणातो अब्भुट्ठेति कंठाकंठिं अवयासेति खेमकुसलं पुच्छति २ ण्हाया

२ संघाट-ज्ञाते दृष्टान्तोपसंहारः सू.४१

॥ ८८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा



जाव पायच्छित्ता विपुलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति। तते णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहिं वहेहिं कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से णं तत्थ नेरइए जाते काले कालोभासे जाव वेयणं पच्चणुभवमाणे विहरइ, से णं ततो उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सति एवामेव जंबू! जे णं अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिए समाणे विपुलमणिमुत्तियधणकणगरयणसारेणं लुब्भति सेविय एवं चेव। (सूत्रं ४१)

'अलंकारियसह'न्ति यस्यां नापितादिभिः शरीरसत्कारो विधीयते अलङ्कारिककर्म–नखखण्डनादि दासा–गृहदासीपुत्राः प्रेष्या–ये तथाविधप्रयोजनेषु नगरान्तरादिषु प्रेष्यन्ते भृतका–ये आबालत्वात्पोषिताः 'भाइल्लग'त्ति ये भागं लाभस्य लभन्ते ते, क्षेमकुशलं–अनर्थानुद्भवानर्थप्रतिघातरूपं, कण्ठे च कण्ठे च गृहीत्वा कण्ठाकण्ठि, यद्यपि व्याकरणे युद्धविषय एवैवंविधोऽव्ययीभाव इष्यते तथापि योगविभागादिभिरेतस्य साधुशब्दता दृश्येति, 'अवयासिय'त्ति आलिङ्गय बाष्पप्रमोक्षणं–आनन्दाश्रुजलप्रमोचनं। 'नायए वे'त्यादि, नायकः–प्रभुर्न्यायदो वा–न्यायदर्शी ज्ञातको वा स्वजनपुत्रक इतिरूपदर्शने वा विकल्पे 'घाडिय'त्ति सहचारी सहायः–साहाय्यकारी सुहृद्–मित्रं। 'बंधेहि य'त्ति बन्धो रज्ज्वादिबन्धनं 'वधो' यष्ट्यादिताडनं कशप्रहारादयस्तु तद्विशेषाः 'काले कालोभासे'इत्यादि कालः–कृष्णवर्णः काल एवावभासते द्रष्टृणां कालो वाऽवभासोदीप्तिर्यस्य स कालावभासः, इह यावत्करणादिदं दृश्यं 'गम्भीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए परमकण्हे वण्णेणं, से णं तत्थ निच्चं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भीए निचं तत्थे निचं तसिए निचं परमसुहसम्बद्धं नरगं'ति तत्र गम्भीरो–महान् रोमहर्षो–भयसंभूतो रोमाञ्चो यस्य यतो वा सकाशात् स तथा, किमित्येवमित्याह–'भीमो'भीष्मः, अत एवोत्रासकारित्वादुत्रासकः, एतदपि कुत इत्याह–परमकृष्णो वर्णेनेति, परां–प्रकृष्टां अशुभसंबद्धां–पापकर्मणोपनीतां 'अणाइय'मित्यादि, अनादिकं 'अणवदग्गं'ति अनन्तं 'दीहमद्धं'ति दीर्घाद्धं–दीर्घकालं दीर्घाध्वं वा–दीर्घमार्गं चातुरंतं–चतुर्विभागं संसार एव कान्तारं–अरण्यं संसारकान्तारमिति । इतोऽधिकृतं ज्ञातं ज्ञापनीये योजयन्नाह–एवमेव–विजयचौरवदेव 'सारे णं'ति सारे णमित्यलङ्कारे करणे तृतीया वेयं, लुभ्यते–लोभी भवति, 'सेवि एवं चेव'त्ति सोऽपि प्रव्रजितो विजयवदेव नरकादिकमुक्तरूपं प्राप्नोति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना २ जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेतिए जाव अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, परिसा निग्गया धम्मो कहिओ, तते णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेतारूवे अज्झत्थिते जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु भगवंतो जातिसंपन्ना इह-मागया इह संपत्ता तं इच्छामि णं थेरे भगवंते वंदामि नमंसामि एहाते जाव सुद्धप्पावेसातिं मङ्गल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए पायविहारचारेणं जेणेव गुणसिले चेतिए जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति २ वंदति नमंसति। तते णं थेरा धण्णस्स विचित्तं धम्ममातिक्खंति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा एवं वदासी–सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथे पावयणे जाव पव्वतिए जाव बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं

॥ ८९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धन्यसार्थवाहः एवं विजयस्तेनस्य कथा

पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खाविता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं धण्णस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, से णं धण्णे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठितीक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्व-दुक्खाणमंतं करेहिति (सूत्रं ४२) जहा णं जंबू! धण्णेणं सत्थवाहेणं नो धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स तक्करस्स ततो विपुलाओ असण० ४ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए, एवामेव जंबू! जे णं अम्हं निग्गंथे वा २ जाव पव्वतिए समाणे ववगयण्हाणुम्मद्दणपुप्फगंधमल्लालंकारविभूसे इमस्स ओरालिय-सरीरस्स नो वन्नहेउं वा रूवहेउं वा विसयहेउं वा असणं ४ आहारमाहारेति, नन्नत्थ णाणदंसणचरित्ताणं वहणयाए, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं समणीणं सावगाण य साविगाण य अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे भवति, परलोएवि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कन्नच्छेयणाणि य नासाछे-यणाणि य एवं हियउप्पायणाणि य वसणुप्पाडणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिति अणातीयं च णं अणवदग्गं दीहं जाव वीतिवतिस्सति जहा व से धण्णे सत्थवाहे। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव दोच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ॥ (सूत्रं ४३) बितीयं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

'जहा ण'मित्यादिनाऽपि ज्ञातमेव ज्ञापनीये नियोजितं, 'नन्नत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए'त्ति न शरीरसंरक्षणार्थादन्यत्र

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तदर्थमेवेत्यर्थः 'जहा व से धण्णे'त्ति दृष्टान्तनिगमनं । इह पुनर्विशेषयोजनामिमामभिदधति बहुश्रुताः–इह राजगृहनगरस्थानीयं मनुष्यक्षेत्रं धन्यसार्थवाहस्थानीयः साधुजीवः विजयचौरस्थानीयं शरीरं पुत्रस्थानीयो निरुपमनिरन्तरानन्दनिबन्धनत्वेन संयमो, भवति ह्यसत्प्रवृत्तिकशरीरात्संयमविघातः, आभरणस्थानीयाः शब्दादिविषयाः, तदर्थप्रवृत्तं हि शरीरं संयमविघाते प्रवर्तते, हडिबन्धस्थानीयं जीवशरीरयोरविभागेनावस्थानं राजस्थानीयः कर्मपरिणामः राजपुरुषस्थानीयाः कर्मभेदाः लघुस्वकापराधस्थानीया मनुष्यायुष्कबन्धहेतवः, मूत्रादिमलपरिस्थानीयाः प्रत्युपेक्षणादयो व्यापाराः, यतो भक्तादिदानाभावे यथासौ विजयः प्रश्रवणादिव्युत्सर्जनाय न प्रवर्त्तितवान् एवं शरीरमपि निरशनं प्रत्युपेक्षणादिषु न प्रवर्तते, पान्थकस्थानीयो मुग्धसाधुः, सार्थवाहीस्थानीया आचार्याः, ते हि विवक्षितसाधुं भक्तादिभिः शरीरमुपष्टम्भयन्तं साध्वन्तरादुपश्रुत्योपालम्भयन्ति विवक्षितसाधुनैव निवेदिते वेदनावैयावृत्त्यादिके भोजनकारणे परितुष्यन्ति चेति, पठ्यते च "सिवसाहणेसु आहारविरहिओ जं न वट्टए देहो । तम्हा धण्णोव्व विजयं साहू तं तेण पोसेज्जा ॥" [शिवसाधनेषु आहारविरहितो यन्न प्रवर्त्तते देहः । तस्मात् धन्य इव विजयं साधुस्तत् तेन पोषयेत् ॥ १ ॥] 'एवं खल्वि'त्यादि निगमनं' इतिशब्दः समाप्तौ ब्रवीमीति पूर्ववदेवेति ॥ ज्ञाताधर्म्मकथायां विवरणतो द्वितीयमध्ययनं समाप्तमिति–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययन-२ परिसमाप्तम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४४]

दीप अनुक्रम [५५]

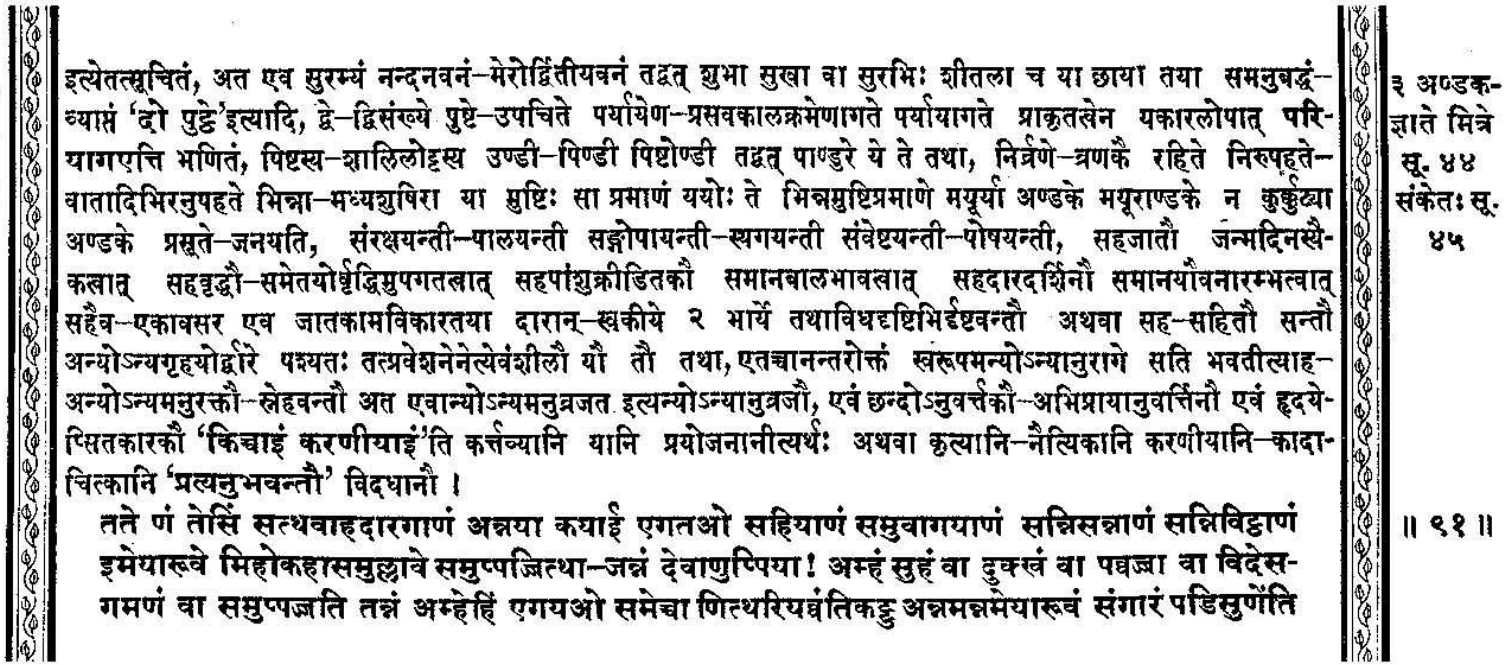
अथ तृतीयमण्डकाख्यमध्ययनं, तस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः–अनन्तराध्ययने साभिष्वङ्गस्य निरभिष्वङ्गस्य च दोषगुणानभिदधता चारित्रशुद्धिर्विधेयतयोपदिष्टा, इह तु शङ्कितस्य निःशङ्कस्य च तानभिदधता संयमशुद्धेरेव हेतुभूता सम्यक्त्वशुद्धिर्विधेयतयोपदिश्यते इत्येवंसंबन्धस्यास्येदमुपक्षेपसूत्रं–

जति णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स णायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पन्नत्ते तइअस्स अज्झयणस्स केअट्ठे पण्णत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ चंपा नामं नयरी होत्था वन्नओ, तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सुभूमिभाए नामं उज्जाणे होत्था सव्वोउय० सुरम्मे नंदणवणे इव सुहसुरभिसीयलच्छायाए समणुबद्धे, तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ एगदेसंमि मालुयाकच्छए वन्नओ, तत्थ णं एगा वरमऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरी अंडए पसवति २ सतेणं पक्खवाएणं सारक्खमाणी संगोवमाणी संविट्ठेमाणी विहरति, तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति तं०–जिणदत्तपुत्ते य सागरदत्तपुत्ते य, सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अन्नमन्नमणुरत्तया अन्नमन्नमणुव्वयया अन्नमन्नच्छंदाणुवत्तया अन्नमन्नहियतिच्छियकारया अन्नमन्नेसु गिहेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति (सूत्रं ४४)

'जइ ण'मित्यादि 'एवं खल्वि'त्यादि, प्रकृताध्ययनसूत्रं च समस्तं कण्ठ्यं नवरं 'सव्वोउए'त्ति सर्वे ऋतवो–वसन्तादयः तत्संपाद्यकुसुमादिभावानां वनस्पतीनां समुद्भवात् यत्र तत्तथा, क्वचित् 'सव्वोउय'त्ति दृश्यते, तेन च 'सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- ३ "अण्डः" आरभ्यते



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ९१ ॥

इत्येतत्सूचितं, अत एव सुरम्यं नन्दनवनं–मेरोर्द्वितीयवनं तद्वत् शुभा सुखा वा सुरभिः शीतला च या छाया तया समनुबद्धं–व्याप्तं 'दो पुट्ठे'इत्यादि, द्वे–द्विसंख्ये पुष्टे–उपचिते पर्यायेण–प्रसवकालक्रमेणागते पर्यायागते प्राकृतत्वेन यकारलोपात् परियागएत्ति भणितं, पिष्टस्य–शालिलोष्टस्य उण्डी–पिण्डी पिष्टोण्डी तद्वत् पाण्डुरे ये ते तथा, निव्रणे–व्रणकै रहिते निरुपहते–वातादिभिरनुपहते भिन्ना–मध्यशुषिरा या मुष्टिः सा प्रमाणं ययोः ते भिन्नमुष्टिप्रमाणे मयूर्या अण्डके मयूराण्डके न कुर्कुट्या अण्डके प्रसूते–जनयति, संरक्षयन्ती–पालयन्ती सङ्गोपायन्ती–स्वगयन्ती संवेष्टयन्ती–पोषयन्ती, सहजातौ जन्मदिनस्थैकत्वात् सहवृद्धौ–समेतयोर्वृद्धिमुपगतत्वात् सहपांशुक्रीडितकौ समानबालभावत्वात् सहदारदर्शिनौ समानयौवनारम्भत्वात् सहैव–एकावसर एव जातकामविकारतया दारान्–स्वकीये २ भार्ये तथाविधदृष्टिभिर्दृष्टवन्तौ अथवा सह–सहितौ सन्तौ अन्योऽन्यगृहयोर्द्वारे पश्यतः तत्प्रवेशनेनेत्येवंशीलौ यौ तौ तथा, एतच्चानन्तरोक्तं स्वरूपमन्योऽन्यानुरागे सति भवतीत्याह–अन्योऽन्यमनुरक्तौ–स्नेहवन्तौ अत एवान्योऽन्यमनुव्रजत इत्यन्योऽन्यानुव्रजौ, एवं छन्दोऽनुवर्त्तकौ–अभिप्रायानुवर्त्तिनौ एवं हृदयेप्सितकारकौ 'किच्चाइं करणीयाइं'ति कर्त्तव्यानि यानि प्रयोजनानीत्यर्थः अथवा कृत्यानि–नैत्यिकानि करणीयानि–कादाचित्कानि 'प्रत्यनुभवन्तौ' विदधानौ ।

तते णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कयाई एगतओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निसन्नाणं सन्निविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–जन्नं देवाणुप्पिया! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जति तन्नं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्वंतिकट्टु अन्नमन्नमेयारूवं संगारं पडिसुणेंति

३ अण्डक-ज्ञाते मित्रे सू. ४४ संकेतः सू. ४५

॥ ९१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

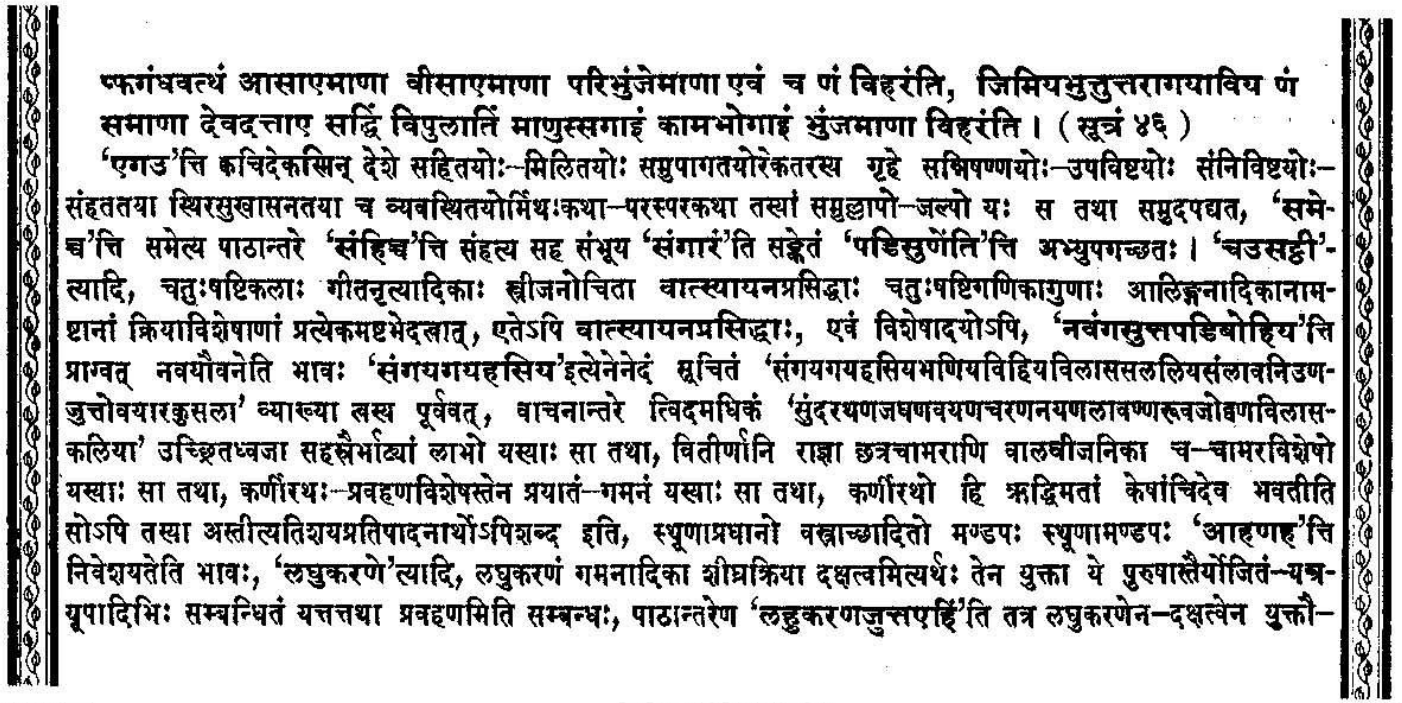
२ सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था। (सूत्रं ४५) तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ अड्ढा जाव भत्तपाणा चउसट्ठिकलापंडिया चउसट्ठिगणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीसरतिगुणप्पहाणा बत्तीसपुरिसोवयारकुसला णवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा संगयगयहसिय० ऊसियझया सहस्सलंभा विदिन्नछत्तचामरबालवियणिया कन्नीरहप्पयाया यावि होत्था बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरति, तते णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कदाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जिमियभुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं आयन्ताणं चोक्खाणं परमसुतिभूयाणं सुहासणवरगयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फगंधवत्थं गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ कल्लं पाउब्भूए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति २ एवं वदासी–गच्छह णं देवाणुप्पिया! विपुलं असणं ४ उवक्खडेह २ तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फं गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव णंदापुक्खरिणी तेणामेव उवागच्छह २ नंदापुक्खरिणीतो अदूरसामंते थूणामंडवं आहणह २ आसितसम्मज्जितोवलित्तं सुगंध जाव कलियं करेह २ अम्हे पडिवालेमाणा २ चिट्ठह जाव चिट्ठंति, तए णं सत्थवाहदारगा दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति २ एवं वदासी–खिप्पामेव लहुकरणजुत्तजो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तियं समखुरवालिहाणं समलिहियतिक्खग्गसिंगएहिं रययामयघंटसुत्तरज्जुपवरकंचणखचियणत्थपग्गहोवग्गहितेहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयणकंचणघंटियाजालपरिक्खित्तं पवरलक्खणोववेयं जुत्तमेव पवहणं उवणेह, तेऽवि तहेव उवणेंति, तते णं से सत्थवाहदारगा ण्हाया जाव सरीरा पवहणं दुरूहंति २ जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता पवहणातो पच्चोरुहंति २ देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुपविसंति, तते णं सा देवदत्ता गणिया सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति २ हट्ठ २ आसणाओ अब्भुट्ठेति २ सत्तट्ठ पदाति अणुगच्छति २ ते सत्थवाहदारए एवं वदासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमिहागमणप्पतोयणं ?, तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्तं गणियं एवं वदासी–इच्छामो णं देवाणुप्पिए ! तुम्हेहिं सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्तए, तते णं सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाणं एतमट्ठं पडिसुणेति २ ण्हाया कयकिच्चा किं ते पवर जाव सिरिसमाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव समागया, तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं जाणं दुरूहति २ चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २ पवहणातो पच्चोरुहंति २ नंदापोक्खरिणीं ओगाहिंति २ जलमज्जणं करेंति जलकीडं करेंति ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं पच्चुत्तरंति जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति २ थूणामंडवं अणुपविसंति २ सव्वालंकारविभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विपुलं असणं ४ धूवपु-

॥ ९२ ॥

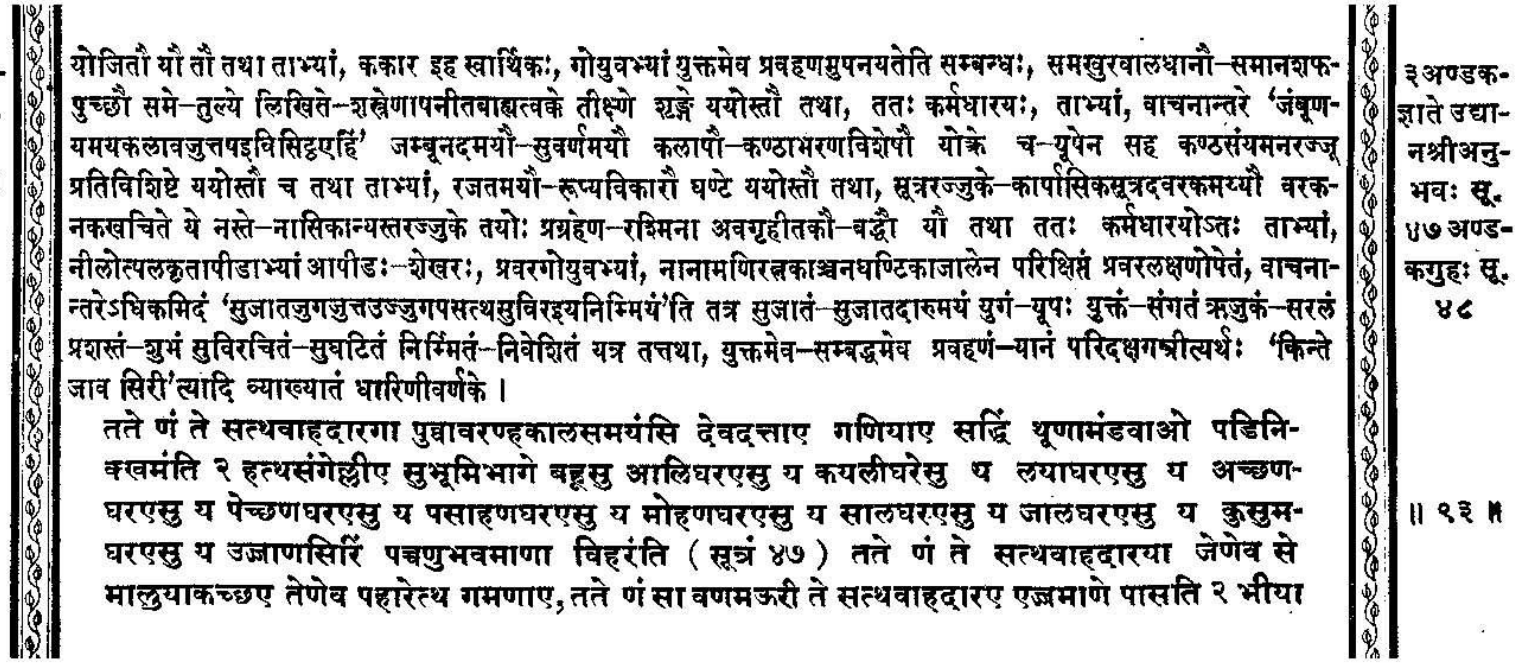
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ष्फगंधवत्थं आसाएमाणा वीसाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति, जिमियभुत्तुत्तरागयावियणं समाणा देवदत्ताए सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। (सूत्रं ४६)

'एगउ'त्ति कचिदेकस्मिन् देशे सहितयोः–मिलितयोः समुपागतयोरेकतरस्य गृहे सन्निषण्णयोः–उपविष्टयोः संनिविष्टयोः–संहततया स्थिरसुखासनतया च व्यवस्थितयोर्मिथःकथा–परस्परकथा तस्यां समुल्लापो–जल्पो यः स तथा समुदपद्यत, 'समेच्च'त्ति समेत्य पाठान्तरे 'संहिच्च'त्ति संहत्य सह संभूय 'संगारं'ति सङ्केतं 'पडिसुणेंति'त्ति अभ्युपगच्छतः। 'चउसट्ठी'-त्यादि, चतुःषष्टिकलाः गीतनृत्यादिकाः स्त्रीजनोचिता वात्स्यायनप्रसिद्धाः चतुःषष्टिगणिकागुणाः आलिङ्गनादिकानामष्टानां क्रियाविशेषाणां प्रत्येकमष्टभेदत्वात्, एतेऽपि वात्स्यायनप्रसिद्धाः, एवं विशेषादयोऽपि, 'नवंगसुत्तपडिबोहिय'त्ति प्राग्वत् नवयौवनेति भावः 'संगयगयहसिय'इत्येनेनेदं सूचितं 'संगयगयहसियभणियविहियविलाससललियसंलावनिउणजुत्तोवयारकुसला' व्याख्या तस्य पूर्ववत्, वाचनान्तरे त्विदमधिकं 'सुंदरथणजघणवयणचरणनयणलावण्णरूवजोव्वणविलासकलिया' उच्छ्रितध्वजा सहस्रैर्भाट्यां लाभो यस्याः सा तथा, वितीर्णानि राज्ञा छत्रचामराणि वालवीजनिका च–चामरविशेषो यस्याः सा तथा, कर्णीरथः–प्रवहणविशेषस्तेन प्रयातं–गमनं यस्याः सा तथा, कर्णीरथो हि ऋद्धिमतां केषांचिदेव भवतीति सोऽपि तस्या अस्तीत्यतिशयप्रतिपादनार्थोऽपिशब्द इति, स्थूणाप्रधानो वस्त्राच्छादितो मण्डपः स्थूणामण्डपः 'आहणाह'त्ति निवेशयतेति भावः, 'लघुकरणे'त्यादि, लघुकरणं गमनादिका शीघ्रक्रिया दक्षत्वमित्यर्थः तेन युक्ता ये पुरुषास्तैर्योजितं–यन्त्रयूपादिभिः सम्बन्धितं यत्तत्तथा प्रवहणमिति सम्बन्धः, पाठान्तरेण 'लहुकरणजुत्तएहिं'ति तत्र लघुकरणेन–दक्षत्वेन युक्तौ–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥ ९३ ॥

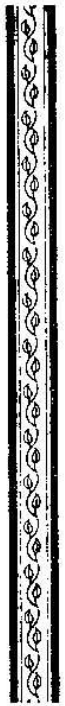
योजितौ यौ तौ तथा ताभ्यां, ककार इह स्वार्थिकः, गोयुवभ्यां युक्तमेव प्रवहणमुपनयतेति सम्बन्धः, समखुरवालधानौ–समानशफपुच्छौ समे–तुल्ये लिखिते–शस्त्रेणापनीतबाह्यत्वके तीक्ष्णे शृङ्गे ययोस्तौ तथा, ततः कर्मधारयः, ताभ्यां, वाचनान्तरे 'जंबूणयमयकलावजुत्तपइविसिट्ठएहिं' जम्बूनदमयौ–सुवर्णमयौ कलापौ–कण्ठाभरणविशेषौ योक्त्रे च–यूपेन सह कण्ठसंयमनरज्जू प्रतिविशिष्टे ययोस्तौ च तथा ताभ्यां, रजतमयौ–रूप्यविकारौ घण्टे ययोस्तौ तथा, सूत्ररज्जुके–कार्पासिकसूत्रदवरकमय्यौ वरकनकखचिते ये नस्ते–नासिकान्यस्तरज्जुके तयोः प्रग्रहेण–रश्मिना अवगृहीतकौ–बद्धौ यौ तथा ततः कर्मधारयोऽतः ताभ्यां, नीलोत्पलकृतापीडाभ्यां आपीडः–शेखरः, प्रवरगोयुवभ्यां, नानामणिरत्नकाञ्चनघण्टिकाजालेन परिक्षिप्तं प्रवरलक्षणोपेतं, वाचनान्तरेऽधिकमिदं 'सुजातजुगजुत्तउज्जुगपसत्थसुविरइयनिम्मियं'ति तत्र सुजातं–सुजातदारुमयं युगं–यूपः युक्तं–संगतं ऋजुकं–सरलं प्रशस्तं–शुभं सुविरचितं–सुघटितं निर्म्मितं–निवेशितं यत्र तत्तथा, युक्तमेव–सम्बद्धमेव प्रवहणं–यानं परिदक्षगश्रीत्यर्थः 'किन्ते जाव सिरी'त्यादि व्याख्यातं धारिणीवर्णके ।

ततेणं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिनिक्खमंति २ हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे बहूसु आलिघरएसु य कयलीघरेसु य लयाघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य कुसुमघरएसु य उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरंति (सूत्रं ४७) तते णं ते सत्थवाहदारया जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं सा वणमऊरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति २ भीया

३अण्डक-ज्ञाते उद्या-नश्रीअनु-भवः सू. ४७ अण्ड-कगुहः सू. ४८

॥ ९३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



तत्था० महया २ सद्देणं केकारवं विणिम्मुयमाणी २ मालुयाकच्छाओ पडिनिक्खमति २ एगंसि रुक्ख-मालयंसि ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छयं च अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी २ चिट्ठति । तते णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमन्नं सद्दावेंति २ एवं वदासी–जहा णं देवाणुप्पिया ! एसा वणमऊरी अम्हे एज्जमाणा पासित्ता भीता तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महता २ सद्देणं जाव अम्हे मालुयाकच्छयं च पेच्छमाणी २ चिट्ठति तं भवियव्वमेत्थ कारणेणंतिकट्टु मालुयाकच्छयं अंतो अणुपवि-संति २ तत्थ णं दो पुट्ठे परियागये जाव पासित्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवं वदासी–सेयं खलु देवा-णुप्पिया ! अम्हे इमे वणमऊरीअंडए साणं जाइमंताणं कुक्कुडियाणं अंडएसु अ पक्खिवावेत्तए, तते णं ताओ जातिमन्ताओ कुक्कुडियाओ ताए अंडए सए य अंडए सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति, तते णं अम्हं एत्थं दो कीलावणगा मऊरपोयगा भविस्संतित्तिकट्टु अन्न-मन्नस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २ सए सए दासचेडे सद्दावेंति २ एवं वदासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणु-णुप्पिया ! इमे अंडए गहाय सगाणं जाइमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह जाव तेवि पक्खिवेंति, तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभव-माणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरूढा समाणा जेणेव चंपानयरीए जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ देवदत्ताए गिहं अणुपविसंति २ देवदत्ताए गणियाए विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दल-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यंति २ सक्कारेंति २ सम्माणेंति २ देवदत्ताए गिहातो पडिनिक्खिमंति २ जेणेव सयाइं २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था (सूत्रं ४८) तते णं जे से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए से णं कल्लं जाव जलंते जेणेव से वणमऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति २ तंसि मऊरीअंडयंसि संकिते कंखिते वितिगिच्छासमावन्ने भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने किन्नं ममं एत्थ किलावणमऊरीपोयए भविस्सति उदाहु णो भविस्सइत्तिकट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं २ उव्वत्तेति परियत्तेत्ति आसारेति संसारेति चालेति फंदेइ घट्टेति खोभेति अभिक्खणं २ कन्नमूलंसि टिट्टियावेति, तते णं से मऊरीअंडए अभिक्खणं २ उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाते यावि होत्था, तते णं से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अन्नया कयाइं जेणेव से मऊरअंडए तेणेव उवागच्छति २ तं मऊरीअंडयं पोच्चडमेव पासति २ अहो णं ममं एस कीलावणए मऊरीपोयए ण जाएत्तिकट्टु ओहतमण जाव झियायति। एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंचमहव्वएसु जाव छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे संकिते जाव कलुससमावन्ने से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे परलोएवियं णं आगच्छति बहूणि दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टए (सूत्रं ४९) तते णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति २ तंसि मऊरीअंडयंसि निस्संकिते,सुवत्तए णं मम एत्थ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कीलावणए मऊरीपोयए भविस्सतीतिकट्टु तं मउरीअंडयं अभिक्खणं २ नो उव्वत्तेत्ति जाव नो दिट्टिया-
वेति, तते णं से मउरीअंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव अदिट्टियाविज्जमाणे तेणं कालेणं तेणं समएणं
उब्भिन्ने मऊरिपोयए एत्थ जाते, तते णं से जिणदत्तपुत्ते तं मऊरपोययं पासति २ हट्ठ तुट्ठे मऊरपोसए
सद्दावेति २ एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमं मऊरपोययं बहूहिं मऊरपोसणपाउग्गेहिं दव्वेहिं अणु-
पुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेह नट्ठुल्लगं च सिक्खावेह, तते णं ते मऊरपोसगा जिणदत्तस्स
पुत्तस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २ तं मउरपोययं गेण्हंति जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति २ तं
मयूरपोयगं जाव नट्ठुल्लगं सिक्खावेंति । तते णं से मऊरपोयए उम्मुक्कबालभावे विन्नाय० जोव्वणग०
लक्खणवंजण० माणुम्माणप्पमाणपडिपुन्न० पक्खपेहुणकलावे विचित्तपिच्छे सतचंदए नीलकंठए नच-
णसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगातिं नट्ठुल्लगसयातिं केकारवसयाणि य करेमाणे विह-
रति, तते णं ते मऊरपोसगा तं मऊरपोयगं उम्मुक्कजाव करेमाणं पासित्ता २ तं मऊरपोयगं गेण्हंति
२ जिणदत्तस्स पुत्तस्स उवणेंति, तते णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मउरपोयगं उम्मुक्क जाव
करेमाणं पासित्ता हट्ठतुट्ठे तेसिं विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं जाव पडिविसज्जेइ, तए णं से मऊरपो-
तए जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए णंगोलाभंगसिरोधरे सेयावंगे गिण्हइ अवया-
रियपइन्नपक्खे उक्खित्तचंदकातियकलावे केक्काइयसयाणि विमुचमाणे णचइ, तते णं से जिणदत्तपुत्ते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेणं मउरपोयएणं चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य पणिएहि य जयं करेमाणे विहरति। एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे पंचसु महव्वएसु छसु जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संकिते निक्कंखिए निवितिगिच्छे से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं जाव वीतिवतिस्सति। एवं खलु जंबू! समणेणं० णायाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्ति बेमि (सूत्रं ५०) तच्चं नायज्झयणं समत्तं ॥ ३ ॥

'हत्थसंगेल्लीए'त्ति अन्योऽन्यं हस्तावलम्बनेन, 'आलिघरसु य कयलिघरएसु य' आलीकदल्यौ वनस्पतिविशेषौ, 'लताघरऐसु य' लताः–अशोकादिलता 'अच्छणघरएसु य' अच्छणंति–आसनं, 'पेच्छणघरएसु य' प्रेक्षणं–प्रेक्षणकं, 'पसाहणघरएसु य' प्रसाधनं–मण्डनं, 'मोहणघरएसु य' मोहनं–निधुवनं, 'सालघरएसु य' सालाः–शाखाः अथवा शाला–वृक्षविशेषाः, 'जालघरएसु य' जालगृहं–जालकान्वितं, 'कुसुमघरएसु य' कुसुमप्रायवनस्पतिगृहेष्वित्यर्थः, क्वचित्कदलीगृहादिपदानि यावच्छब्देन सूच्यन्त इति, शङ्कितः–किमिदं निष्पत्स्यते न वेत्येवं विकल्पवान् काङ्क्षितः–तत्फलाकाङ्क्षावान् कदा निष्पत्स्यते इतो विवक्षितं फलमित्यौत्सुक्यवानित्यर्थः विचिकित्सितः–जातेऽपीतो मयूरपोतेऽतः किं मम क्रीडालक्षणं फलं भविष्यति न वेत्येवं फलं प्रति शङ्कावान्, किमुक्तं भवति?–भेदसमापन्नो मतेर्द्वैधाभावं प्राप्तः सद्भावासद्भावविषयविकल्पव्याकुलित इति भावः, कलुषसमापन्नो–मतिमालिन्यमुपगतः, एतदेव लेशत आह–'किन्न'मित्यादि, उद्वर्तयति–अधोदेशस्योपरिकरणेन परिवर्तयति–तथैव पुनः स्थापनेन 'आसारयति' ईषत्स्वस्थानत्याजनेन 'संसारयति' पुनरीषत्स्वस्थानात् स्थानान्तरनयनेन चालः

॥ ९५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

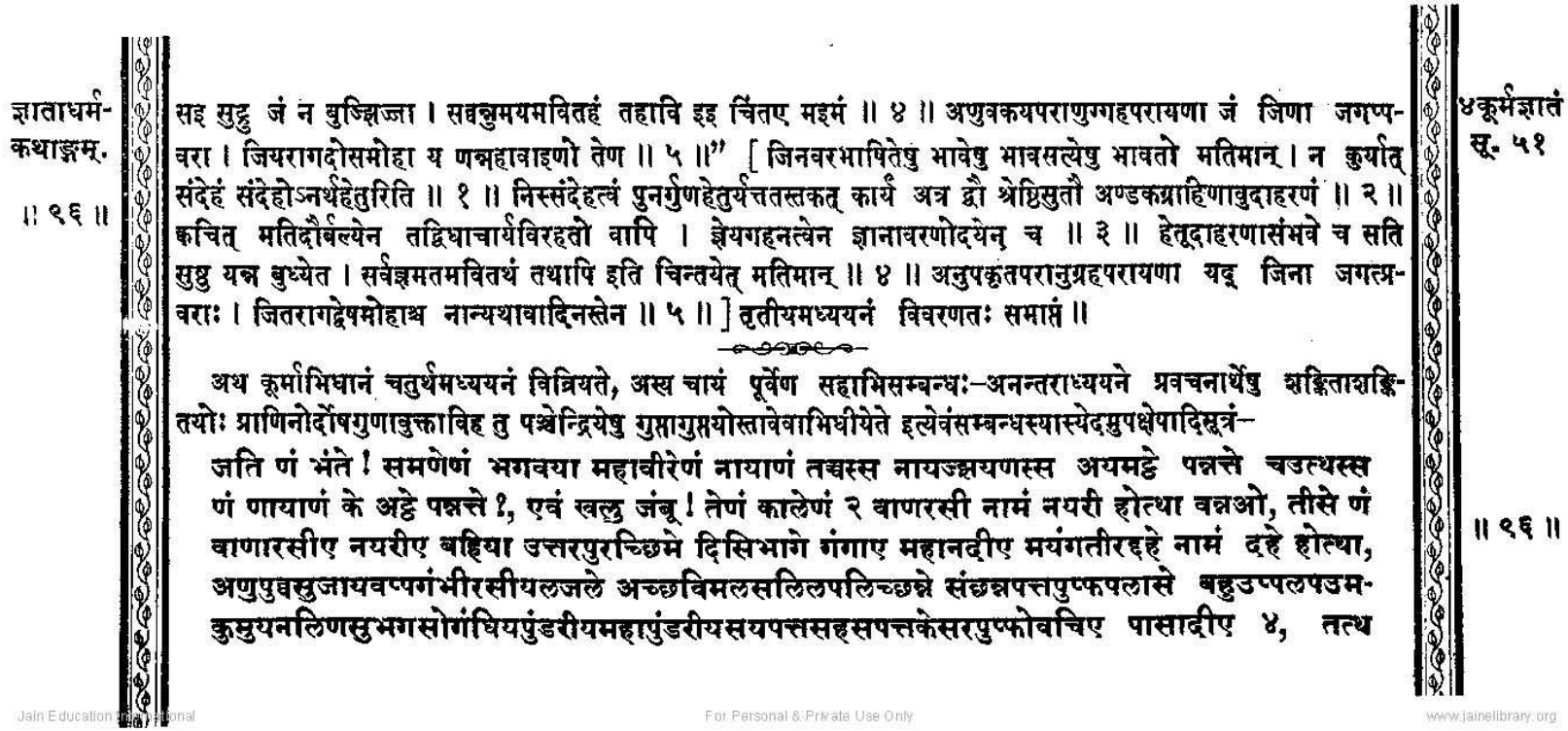
यति–स्थानान्तरनयनेन स्पन्दयति–किंचिच्चलनेन घट्टयति–हस्तस्पर्शनेन क्षोभयति–ईषद्भूमिमुत्कीर्य तत्प्रवेशनेन 'कण्णमूलंसि'त्ति स्वकीयकर्णसमीपे धृत्वा 'टिट्टियावेति' शब्दायमानं करोति 'पोचडं'ति असारं, हीलनीयो गुरुकुलाद्युद्भट्टनतः निन्दनीयः कुत्सनीयो–मनसा खिंसनीयो–जनमध्ये गर्हणीयः–समक्षमेव च परिभवनीयोऽनभ्युत्थानादिभिः, मयूरपोषका ये मयूरान् पुष्णन्ति। 'नट्ठल्लगं'ति नाट्यं 'विन्नाये'त्यादौ 'विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खणवंजणगुणोववेए' इत्येवं दृश्यं, मानेन–विष्कम्भतः उन्मानेन–बाहल्यतः प्रमाणेन च–आयामतः परिपूर्णौ पक्षौ 'पेडुणकलावि'त्ति मयूराङ्गकलापश्च यस्य स तथा, विचित्राणि पिच्छानि शतसंख्याश्च चन्द्रका यस्य स तथा, वाचनान्तरे विचित्राः–पिच्छेष्ववसक्ताः संबद्धाश्चन्द्रका यस्य स विचित्रपिच्छावसक्तचन्द्रकः नीलकण्ठको नर्त्तनशीलकः चप्पुटिका–प्रतीता केकायितं—मयूराणां शब्दः एकस्यां चप्पुटिकायां कृतायां सत्यां 'णंगोलाभंगसिरोहरि'त्ति लाङ्गुलाभङ्गवत्–सिंहादिपुच्छवक्रीकरणमिव शिरोधरा—ग्रीवा यस्य स तथा, स्वेदापन्नो—जातस्वेदः श्वेतापाङ्गो वा सितनेत्रान्तः अवतारितौ—शरीरात्पृथक्कृतौ प्रकीर्णौ—विकीर्णपिच्छौ पक्षौ यस्य स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, उत्क्षिप्तः–ऊर्द्धीकृतश्चन्द्रकादिकः–चन्द्रकप्रभृतिकमयूराङ्गकविशेषोपेतश्चन्द्रकै रचितैर्वा कलापः–शिखण्डो येन स तथा, केकायितशतं–शब्दविशेषशतं 'पणिएहिं'ति पणितैः–व्यवहारैर्हीदादिभिरित्यर्थः 'एवमेवे'त्यादि उपनयवचनमिति, भवन्ति चात्र गाथाः–'जिणवरभासियभावेसु भावसच्चेसु भावओ मइमं। नो कुज्जा संदेहं संदेहोऽणत्थहेउत्ति ॥ १ ॥ निस्संदेहत्तं पुण गुणहेउं जं तओ तयं कज्जं। एत्थं दो सिट्ठिसुया अंडयगाही उदाहरणं ॥ २ ॥ तथा 'कत्थइ मइदुब्बलेण तविहायरियविरहओ वा वि। नेयगहणत्तणेणं नाणावरणोदएणं च ॥ ३ ॥ हेऊदाहरणासंभवे य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४७-५०]

दीप अनुक्रम [५८-६१]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥ ९६ ॥

सइ सुट्ठु जं न बुज्झिज्जा । सव्वन्नुमयमवितहं तहावि इइ चिंतए मइमं ॥ ४ ॥ अणुवकयपराणुग्गहपरायणा जं जिणा जगप्प-वरा । जियरागदोसमोहा य णन्नहावाइणो तेण ॥ ५ ॥" [जिनवरभाषितेषु भावेषु भावसत्येषु भावतो मतिमान् । न कुर्यात् संदेहं संदेहोऽनर्थहेतुरिति ॥ १ ॥ निस्संदेहत्वं पुनर्गुणहेतुर्यत्तत्तत्कृत् कार्यं अत्र द्वौ श्रेष्ठिसुतौ अण्डकग्राहिणावुदाहरणं ॥ २ ॥ कचित् मतिदौर्बल्येन तद्विधाचार्यविरहतो वापि । ज्ञेयगहनत्वेन ज्ञानावरणोदयेन् च ॥ ३ ॥ हेतूदाहरणासंभवे च सति सुष्ठु यन्न बुध्येत । सर्वज्ञमतमवितथं तथापि इति चिन्तयेत् मतिमान् ॥ ४ ॥ अनुपकृतपरानुग्रहपरायणा यद् जिना जगत्प्र-वराः । जितरागद्वेषमोहाश्च नान्यथावादिनस्तेन ॥ ५ ॥] तृतीयमध्ययनं विवरणतः समाप्तं ॥

अथ कूर्माभिधानं चतुर्थमध्ययनं विव्रियते, अस्य चायं पूर्वेण सहाभिसम्बन्धः–अनन्तराध्ययने ग्रवचनार्थेषु शङ्किताशङ्कि-तयोः प्राणिनोर्दोषगुणावुक्ताविह तु पञ्चेन्द्रियेषु गुप्तागुप्तयोस्तावेवाभिधीयेते इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदमुपक्षेपादिसूत्रं–

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं नायाणं तच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते चउत्थस्स णं णायाणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ बाणारसी नामं नयरी होत्था वन्नओ, तीसे णं बाणारसीए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे गंगाए महानदीए मयंगतीरद्दहे नामं दहे होत्था, अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजले अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने संछन्नपत्तपुप्फपलासे बहुउप्पलपउम-कुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तकेसरपुप्फोवचिए पासादीए ४, तत्थ

४कूर्मज्ञातं सू- ५१

॥ ९६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययन-३ परिसमाप्तम्

अथ अध्ययनं- ४ "कूर्मः" आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [५१]

दीप अनुक्रम [६२]

णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुंसुमाराण य सइयाण य साहस्सियाण य सयसाहस्सियाण य जूहाइं निब्भयाइं निरुविग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणगातिं २ विहरंति, तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए होत्था वन्नओ, तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति, पावा चंडा रोद्दा तल्लिच्छा साहसिया लोहितपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिसं गवेसमाणा रत्तिं वियालचारिणो दिया पच्छन्नं चावि चिट्ठंति, तते णं ताओ मयंगतीरद्दहातो अन्नया कदाइं सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलियाए संझाए पविरलमाणुसंसि णिसंतपडिणिसंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा सणियं २ उत्तरंति, तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वतो समंता परिघोलेमाणा २ वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, तयणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी जाव आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छयाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता जेणेव मयंगतीरे दहे तेणेव उवागच्छंति तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलेमाणा २ वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, तते णं ते पावसियाला ते कुम्मए पासंति २ जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति २ भीता तत्था तसिया उव्विग्गा संजातभया हत्थे य पादे य गीवाए य सएहिं २ काएहिं साहरंति २ निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति, तते णं ते पावसियालया जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति २ ते कुम्मगा सव्वतो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५१]

दीप अनुक्रम [६२]

समन्ता उव्वतेंति परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति फंदेंति खोभेंति नहेहिं आलुंपंति दंतेहि य अक्खोडेंति नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स आबाहं वा पबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए, तते णं ते पावसियालया एए कुम्मए दोच्चंपि तच्चंपि सव्वतो समंता उव्वतेंति जाव नो चेव णं संचाएन्ति करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निविन्ना समाणा सणियं २ पच्चोसक्केंति एगंतमवक्कमंति निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति, तत्थ णं एगे कुम्मगे ते पावसियालए चिरंगते दूरंगए जाणित्ता सणियं २ एगं पायं निच्छुभति, तते णं ते पावसियाला तेणं कुम्मएणं सणियं २ एगं पायं नीणियं पासंति २ ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घं चवलं तुरियं चंडं जतिणं वेगितं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति २ तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति दंतेहिं अक्खोडेंति ततो पच्छा मंसं च सोणियं च आहारेंति २ तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वतेंति जाव नो चेव णं संचाइन्ति करेत्तए ताहे दोच्चंपि अवक्कमंति एवं चत्तारिवि पाया जाव सणियं २ गीवं णीणेति, तते णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं गीवं णीणियं पासंति २ सिग्घं चवलं ४ नहेहिं दंतेहिं कवालं विहाडेंति २ तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति २ मंसं च सोणियं च आहारेंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा २ आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंच(से) इंदिया अगुत्ता भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे परलोगेऽवि य णं आगच्छति बहूणं दंडणाणं जाव अणुपरि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यट्टंति, जहा से कुम्मए अगुत्तिंदिए, तते णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चए कुम्मए तेणेव उवागच्छंति २ तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव दंतेहिं अक्खुडेंति जाव करेत्तए, तते णं ते पावसियालगा दोच्चंपि तच्चंपि जाव नो संचाएन्ति तस्स कुम्मगस्स किंचि आबाहं वा विबाहं वा जाव छविच्छेयं वा करेत्तए ताहे संता तंता परितंता निविन्ना समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया, तते णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरंगए दूरगए जाणित्ता सणियं २ गीवं नेणेति २ दिसावलोयं करेइ २ जमगसमगं चत्तारिवि पादे नीणेति २ ताए उक्किट्ठाए कुम्मगईए वीइवयमाणे २ जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ २ मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं समणो वा २ पंच से इंदियातिं गुत्तातिं भवंति जाव जहा उ से कुम्मए गुत्तिंदिए। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति बेमि ॥ (सूत्रं ५१) चउत्थं नायऽज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

'जई'त्यादि, सुगमं सर्वं, नवरं 'मयंगतीरद्दहे'त्ति मृतगङ्गातीरह्रदः मृतगङ्गा यत्र देशे गङ्गाजलं व्यूढमासीदिति, 'आनुपूर्व्येण' परिपाट्या सुष्ठु जाता वप्राः–तटा यत्र स तथा गम्भीरं–अगाधं शीतलं जलं यत्र स तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, क्वचिदिदमधिकं दृश्यते 'अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने' प्रतीतं नवरं भृतत्वात्प्रतिच्छन्नः–आच्छादितः क्वचित्तु 'संछन्ने'त्यादिसूचनादिदं दृश्यं 'संछन्नपउमपत्तभिसमुणाले' संछन्नानि–आच्छादितानि पद्मैः पत्रैश्च–पद्मिनीदलैः बिशानि–पद्मिनीमूलानि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५१]

दीप अनुक्रम [६२]

मृणालानि च–नलिननालानि यत्र स तथा, क्वचिदेवं पाठः 'संछन्नपत्तपुप्फपलासे' संछन्नैः पत्रैः–पद्मिनीदलैः पुष्पपलाशैश्च–कुसुमदलैर्यः स तथा 'बहुउप्पलकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तकेसरफुल्लोवइए' बहुभिरुत्पलादिभिः केसरप्रधानैः फुल्लैः-जलपुष्पैरुपचितः–समृद्धो यः स तथा, तत्रोत्पलानि–नीलोत्पलादीनि कुमुदानि–चन्द्रबोध्यादीनि पुण्डरीकाणि–सितपद्मानि शेषाणि लोकरूढ्याऽवसेयानि 'छप्पयपरिभुज्जमाणकमले अच्छविमलसलिलपत्थपुण्णे' अच्छं च विमलं च यत्सलिलं–जलं पथ्यं–हितं तेन पूर्णः 'परिहत्थभमंतमच्छकच्छभअणेगसउणगणमिहुणपविचरिए' 'परिहत्थ'त्ति दक्षा भ्रमन्तो मत्स्याः कच्छपाश्च यत्र स तथा अनेकानि शकुनगणानां मिथुनानि प्रविचरितानि यत्र स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्म्मधारयः, 'पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे' इति प्राग्वत्, 'पावे'त्यादि, पापौ पापकारित्वात् चण्डौ क्रोधनत्वात् रौद्रौ भीषणाकारतया तत्तद्विवक्षितं वस्तु लब्धुमिच्छत इति तल्लिप्सू साहसिकौ-साहसात् प्रवृत्तौ लोहितौ पाणी–अग्रिमौ पादौ ययोस्तौ तथा, लोहितपानं वा अनयोरस्तीति लोहितपानिनौ, आमिषं–मांसादिकमर्थयतः–प्रार्थयतो यौ तौ तथा, आमिषाहारौ–मांसादिभोजिनौ आमिषप्रियौ–वल्लभमांसादिकौ आमिषलोलौ–आमिषलम्पटौ आमिषं गवेषयमाणौ सन्तौ रात्रौ–रजन्यां विकाले च–सन्ध्यायां चरत इत्येवंशीलौ यौ तौ तथा, दिवा प्रच्छन्नं चापि तिष्ठतः। 'सूरिए'इत्यादि, सूर्ये–भास्करे 'चिरास्तमिते' अत्यन्तास्तं गते 'लुलितायां' अतिक्रान्तप्रायायां सन्ध्यायां 'पविरलमाणुस्संसि विसंतपडिनिसंतंसि'त्ति कोऽर्थः–प्रविरलं किल मानुषं सन्ध्याकाले यत्र तत्र देशे आसीत् तत्रापि निशान्तप्रतिनिशान्ते–अत्यन्तं भ्रमणाद्विरते निशान्तेषु वा–गृहेषु प्रतिनिश्रान्ते–विश्रान्ते निलीने अत्यन्तजनसञ्चारविरह इत्यर्थः 'समाणंसि'त्ति सति आबाधां–ईषद्बाधां प्रबाधां–प्रकृष्टां

॥ ९८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बाधां व्याबाधां वा छविच्छेदं–शरीरच्छेदं, श्रान्तौ–शरीरतः खिन्नौ तान्तौ–मनसा परितान्तौ–उभयतः, 'ताए उक्किट्ठाए' इह एवं दृश्यं 'तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए जयणाए छेयाए'त्ति तत्र उत्कृष्टा–कूर्माणां यः स्वगत्युत्कर्षः तद्वती त्वरितत्वं मनस औत्सुक्यात् चपलत्वं कायस्य चण्डत्वं संरम्भारब्धत्वात् शीघ्रत्वं अत एव उद्धुतत्वं अशेषशरीरावयवकम्पनात्, जयनीत्वं शेषकूर्म्मगतिजेतृत्वात् छेकत्वमपायपरिहारनैपुण्यादिति। ज्ञातोपनयनिगमने च कण्ठ्ये, केवलं 'आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे' इत्यत्र विहरतीति शेषो द्रष्टव्यः, विशेषोपनयनमेवं कार्यं-इह कूर्मस्थानीयौ साधू शृगालस्थानीयौ रागद्वेषौ ग्रीवापश्चमपादचतुष्टयस्थानीयानि पञ्चेन्द्रियाणि पादग्रीवाप्रसारणस्थानीयाः शब्दादिविषयेष्विन्द्रियप्रवृत्तयः शृगालप्राप्तिस्थानीयो रागद्वेषोद्भवः पादादिच्छेदकूर्ममरणस्थानीयानि रागादिजनितकर्मप्रभवानि तिर्यग्नरनरकजातिभवेषु नानाविधदुःखानि पादादिगोपनस्थानीया इन्द्रियसंलीनता शृगालाग्रहणलक्षणा रागाद्यनुत्पत्तिः मृतगङ्गानदप्रवेशतुल्या निर्वाणप्राप्तिरिति। इह गाथा–'विसएसु इंदिआइं रुंभंता रागदोसनिम्मुक्का। पावंति निव्वुइसुहं कुम्मुव्व मयंगदहसोक्खं ॥ १ ॥ अवरे उ अणत्थपरंपरा उ पावेंति पापकम्मवसा। संसारसागरगया गोमाउग्गसियकुम्मोव्व ॥ २ ॥" [विषयेभ्य इन्द्रियाणि रुन्धन्तो रागद्वेषविमुक्ताः। प्राप्नुवन्ति निर्वृतिसुखं कूर्म इव मृतगङ्गाह्रदसौख्यम् ॥ १ ॥ अपरे त्वनर्थपरम्परास्तु प्राप्नुवन्ति पापकर्मवशाः। संसारसागरगता गोमायुग्रस्तकूर्म इव ॥ २ ॥] इति ज्ञातधर्मकथायां चतुर्थमध्ययनं विवरणतः समाप्तम् ॥ ४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययन-४ परिसमाप्तम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५२]

दीप अनुक्रम [६३]

अथ पञ्चमं शैलकाख्यं ज्ञाताध्ययनं विव्रियते, अस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः–पूर्वत्रासंलीनेन्द्रियेतरयोरनर्थार्थावुक्तौ इह तु पूर्वमसंलीनेन्द्रियो भूत्वाऽपि यः पश्चात्संलीनेन्द्रियो भवति तस्यार्थप्राप्तिरभिधीयत इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदं सूत्रं–

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते पंचमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ बारवती नामं नयरी होत्था पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिन्ना नवजोयणविच्छिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवइमतिनिम्मिया चामीयरपवरपागारणाणामणिपंचवन्नकविसीसगसोहिया अलयापुरिसंकासा पमुतियपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोयभूता, तीसे णं बारवतीए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए रेवतगे नाम पव्वए होत्था तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगते हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए अणेगतडकडगविवरउज्झरपवायपब्भारसिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसंविचिन्ने निच्चच्छणए दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाणं सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासातीए ४, तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते एत्थ णं णंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासातीए ४, तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था दिव्वे वन्नओ, तत्थ णं बारवतीए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसति, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं

॥ ९९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- ५ "शेलकः" आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [५२]

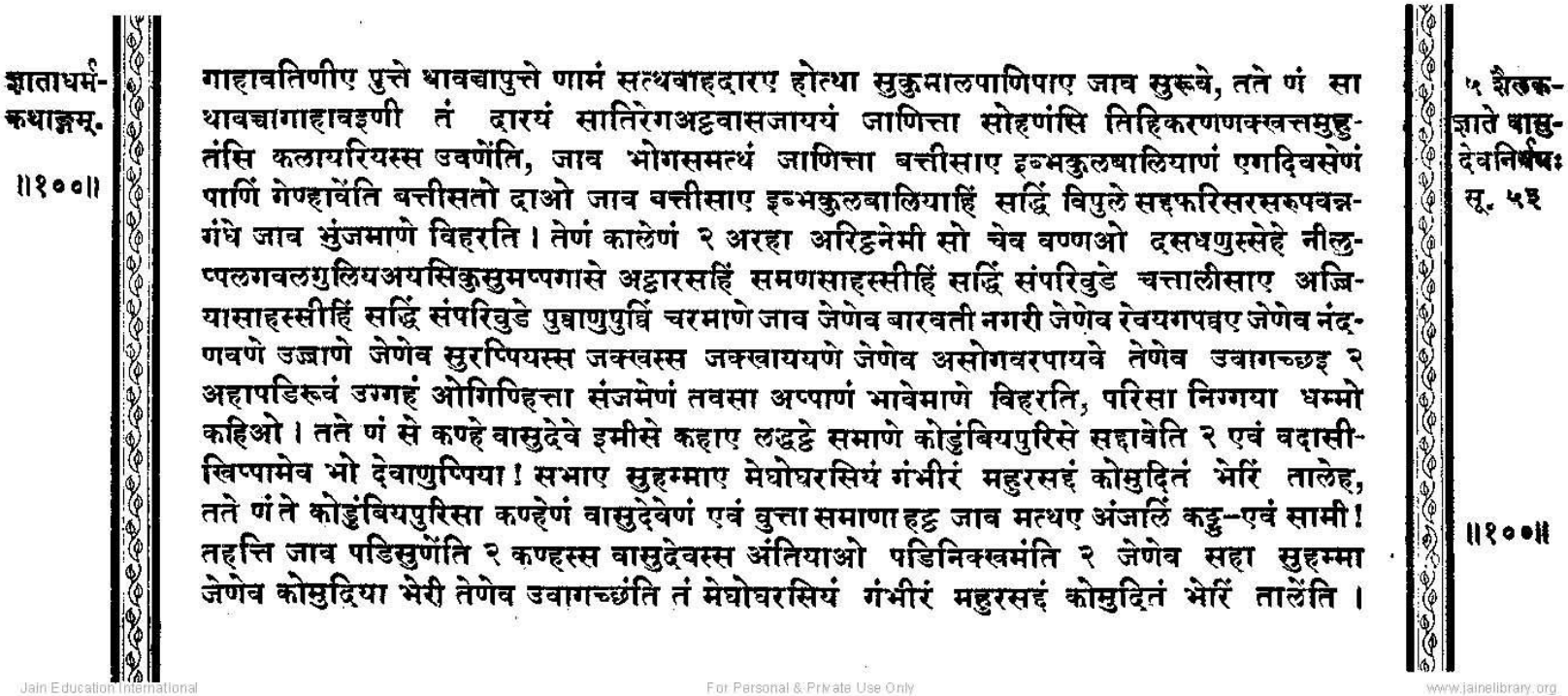
दीप अनुक्रम [६३]

राईसहस्साणं पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धट्ठाणं कुमारकोडीणं संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुइंतसाहस्सीणं वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं महासेनपामोक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं ईसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढगिरिसायरपेरंतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स [य] बारवतीए नयरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरति। (सूत्रं ५२)

'जइ ण'मित्यादि, सर्वं सुगमं, नवरं 'धणवइमइनिम्माय'त्ति धनपतिः–वैश्रमणस्तन्मत्या निर्मापिता–निरूपिता अलकापुरी–वैश्रमणपुरी प्रमुदितप्रक्रीडिता तद्वासिजनानां प्रमुदितप्रक्रीडितत्वात् रैवतकः–उज्जयन्तः 'चक्कवाग'त्ति चक्रवाकः 'मयणसाल'त्ति मदनसारिका अनेकानि तटानि कटकाश्च–गण्डशैला यत्र स तथा, 'विअर'त्ति विवराणि च अवज्झराश्च–निर्झरविशेषाः प्रपाताश्च–भृगवः प्राग्भाराश्च–ईषदवनता गिरिदेशाः शिखराणि च–कूटानि प्रचुराणि यत्र स तथा, ततः कर्मधारयः । अप्सरोगणैः–देवसङ्घैः चारणैः–जङ्घाचारणादिभिः साधुविशेषैर्विद्याधरमिथुनैश्च 'संविचिण्णे'त्ति संविचरित आसेवितो यः स तथा, 'निच्चं' सर्वदा 'क्षणा' उत्सवा यत्रासौ नित्यक्षणिकः, केषामित्याह–'दशाराः' समुद्रविजयादयः तेषु मध्ये वरास्त एव वीरा–धीरपुरुषा ये ते तथा 'तेलोक्कबलवगाणं' त्रैलोक्यादपि बलवन्तोऽतुलबलनेमिनाथयुक्तत्वात् ये ते तथा ते च ते चेति तेषां।

तस्स णं बारवईए नयरीए थावच्चा णामं गाहावतिणी परिवसति अड्ढा जाव अपरिभूता,तीसे णं थावच्चाए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

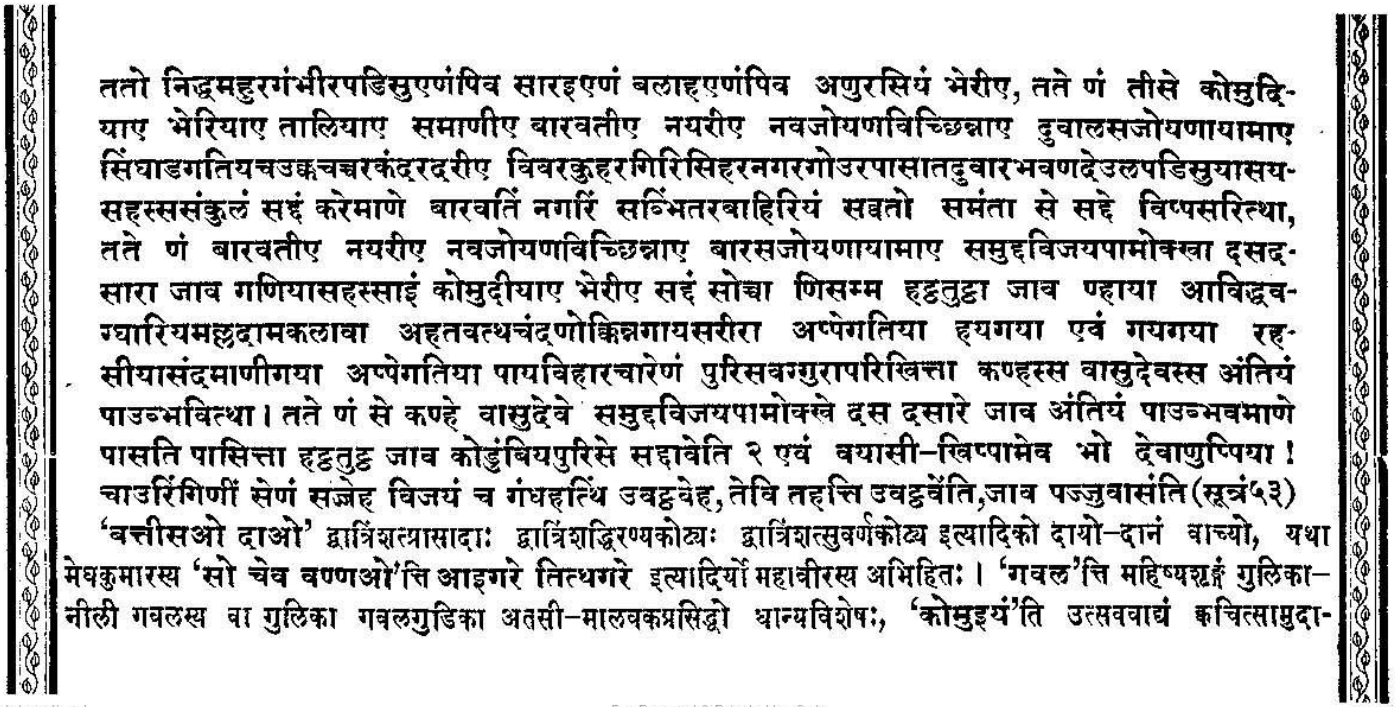
॥१००॥

गाहावतिणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तते णं सा थावच्चागाहावइणी तं दारयं सातिरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति, जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति बत्तीसतो दाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरसरूपवन्नगंधे जाव भुंजमाणे विहरति। तेणं कालेणं २ अरहा अरिट्ठनेमी सो चेव वण्णओ दसधणुस्सेहे नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव बारवती नगरी जेणेव रेवयगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ २ अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, परिसा निग्गया धम्मो कहिओ। तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं कोमुदितं भेरिं तालेह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु–एवं सामी! तहत्ति जाव पडिसुणेंति २ कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छंति तं मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं कोमुदितं भेरिं तालेंति।

५ शैलक-ज्ञाते वासुदेवनिर्वाणः सू. ५३

॥१००॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ततो निद्धमहुरगंभीरपडिसुएणंपिव सारइएणं बलाहएणंपिव अणुरसियं भेरीए, तते णं तीसे कोमुदियाए भेरियाए तालियाए समाणीए बारवतीए नयरीए नवजोयणविच्छिन्नाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरकंदरदरीए विवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासातदुवारभवणदेउलपडिसुयासयसहस्ससंकुलं सद्दं करेमाणे बारवतिं नगरिं सब्भितरबाहिरियं सव्वतो समंता से सद्दे विप्पसरित्था, तते णं बारवतीए नयरीए नवजोयणविच्छिन्नाए बारसजोयणायामाए समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव गणियासहस्साइं कोमुदीयाए भेरीए सद्दं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव ण्हाया आविद्धवग्घारियमल्लदामकलावा अहतवत्थचंदणोक्खित्तगायसरीरा अप्पेगतिया हयगया एवं गयगया रहसीयासंदमाणीगया अप्पेगतिया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था। तते णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे जाव अंतियं पाउब्भवमाणे पासति पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउरिंगिणीं सेणं सज्जेह विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह, तेवि तहत्ति उवट्ठवेंति,जाव पज्जुवासंति (सूत्रं५३)

'बत्तीसओ दाओ' द्वात्रिंशत्प्रासादाः द्वात्रिंशद्धिरण्यकोट्यः द्वात्रिंशत्सुवर्णकोट्य इत्यादिको दायो–दानं वाच्यो, यथा मेघकुमारस्य 'सो चेव वण्णओ'त्ति आइगरे तित्थगरे इत्यादिर्यो महावीरस्य अभिहितः। 'गवल'त्ति महिष्यशृङ्गं गुलिका–नीली गवलस्य वा गुलिका गवलगुडिका अतसी–मालवकप्रसिद्धो धान्यविशेषः, 'कोमुइयं'ति उत्सववाद्यं क्वचित्सामुदा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५३]

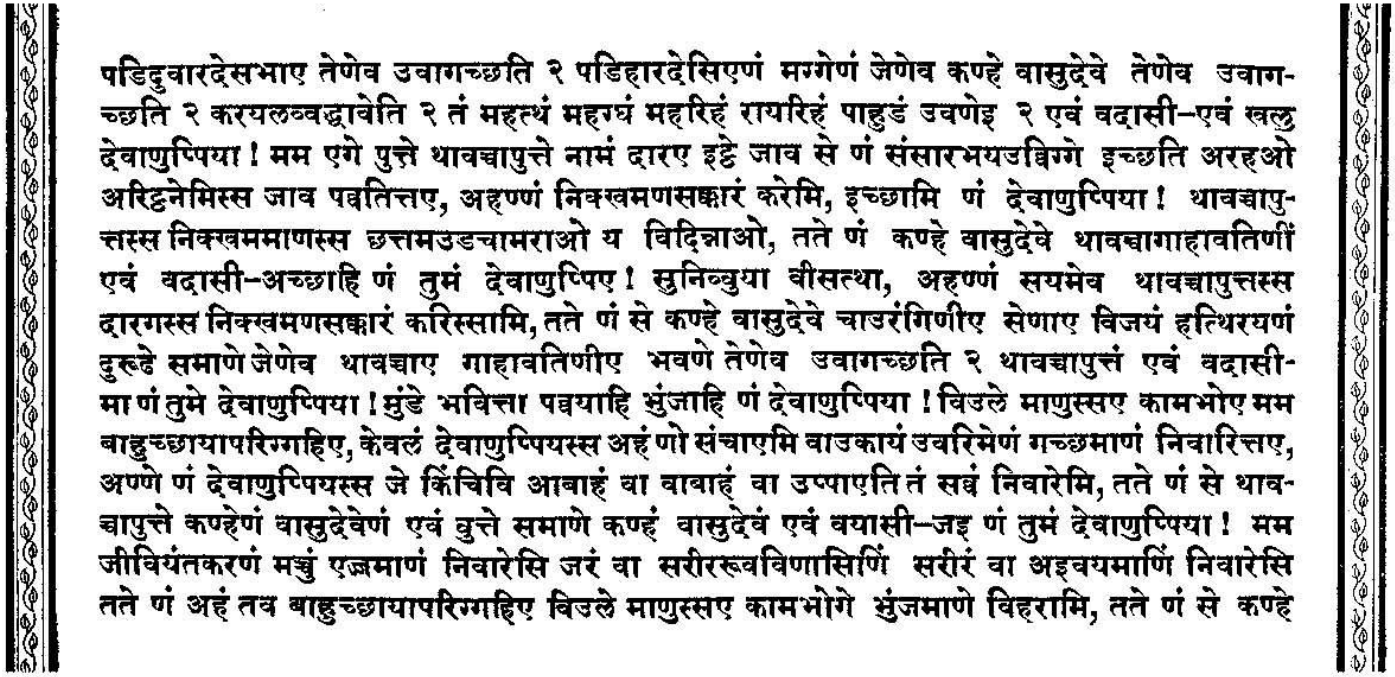
दीप अनुक्रम [६४]

यिकीमिति पाठः तत्र सामुदायिकी–जनमीलकप्रयोजना । 'निद्धमहुरगंभीरपडिसुएणंपिव'त्ति स्निग्धं मधुरं गम्भीरं प्रतिश्रुतं–प्रतिशब्दो यस्य स तथा तेनेव, केनेत्याह–'शारदिकेन' शरत्कालजातेन 'बलाहकेन' मेघेनानुरसितं–शब्दायितं भेर्याः, शृङ्गाटकादीनि प्राग्वत्, गोपुरं–नगरद्वारं प्रासादो–राजगृहं द्वाराणि प्रतीतानि भवनानि–गृहाणि देवकुलानि–प्रतीतानि तेषु याः 'पडिसुय'त्ति प्रतिश्रुताः–प्रतिशब्दकास्तासां यानि शतसहस्राणि–लक्षास्तैः संकुला या सा तथा तां कुर्वन्, कामित्याह–द्वारकावतीं नगरीं, कथंभूतामित्याह–'सब्भिंतरबाहिरियं'ति सहाभ्यन्तरेण–मध्यभागेन बाहिरिकया च–प्राकाराद्बहिर्नगरदेशेन या सा तथा साभ्यन्तरबाहिरिका तां, 'से' इति स भेरीसम्बन्धी शब्दः 'विप्पसरित्थ'त्ति विप्रासरत् 'पामोक्खाइं'ति प्रमुखाः 'आविद्धवग्घारियमल्लदामकलाव'त्ति परिहितप्रलम्बपुष्पमालासमूहा इत्यादिर्वर्णकः प्राग्वत् 'पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता' वागुरा–मृगबन्धनं वागुरेव वागुरा समुदायः ।

थावच्चापुत्तेवि णिग्गए जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा णिसम्म जेणेव थावच्चा गाहावतिणी तेणेव उवागच्छति २ पायग्गहणं करेति जहा मेहस्स तहा चेव णिवेयणा जाहे नो संचाएति विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलेहि य बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवित्तए वा ४ ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तदारगस्स निक्खमणमणुमन्नित्था नवरं निक्खमणाभिसेयं पासामो, तए णं से थावच्चापुत्ते तुसिणीए संचिट्ठइ, तते णं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेति २ महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं गेण्हति २ मित्त जाव संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

थावच्चापुत्रस्य दिक्षायाः प्रसंगः



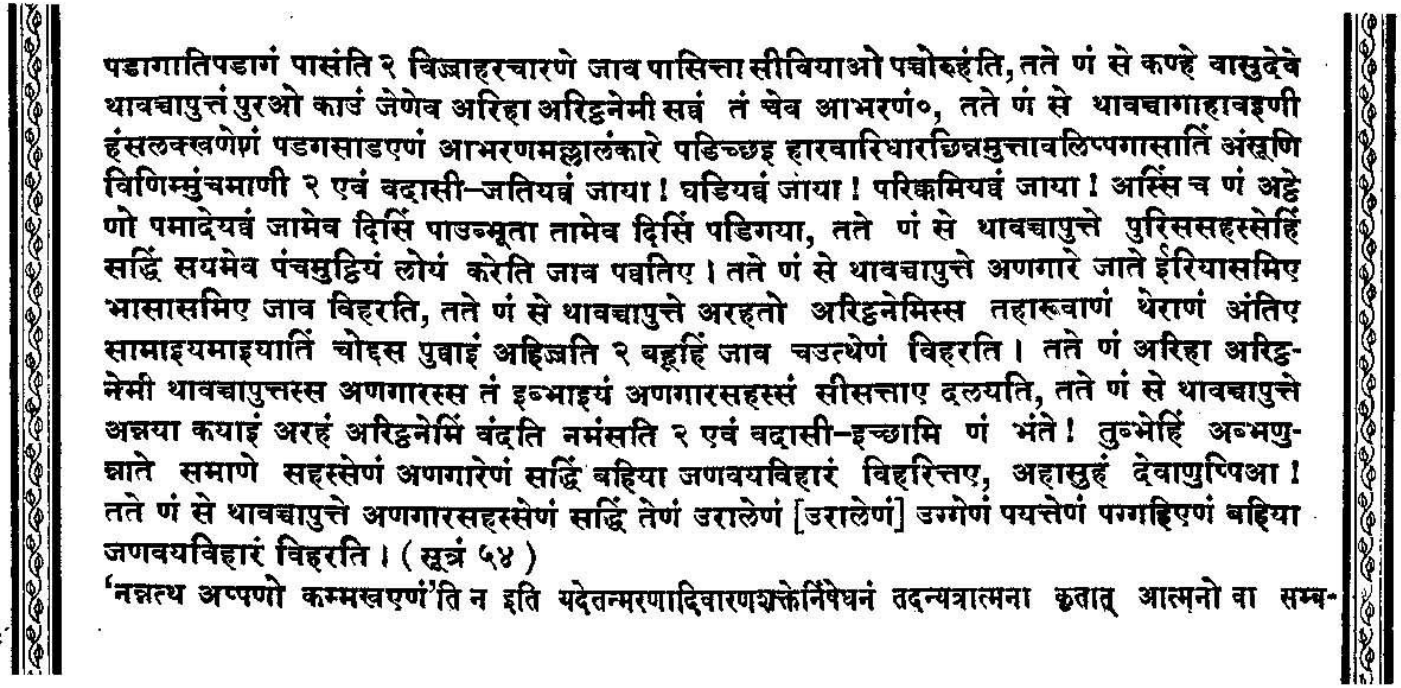
पडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छति २ पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति २ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति २ तं महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं उवणेइ २ एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए इट्ठे जाव से णं संसारभयउव्विग्गे इच्छति अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वतित्तए, अहण्णं निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउडचामराओ य विदिन्नाओ, तते णं कण्हे वासुदेवे थावच्चागाहावतिणीं एवं वदासी–अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए ! सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि, तते णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावतिणीए भवणे तेणेव उवागच्छति २ थावच्चापुत्तं एवं वदासी-मा णं तुमे देवाणुप्पिया ! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि भुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए, केवलं देवाणुप्पियस्स अहं णो संचाएमि वाउकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए, अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे किंचिवि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि, तते णं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम जीवियंतकरणं मच्चुं एज्जमाणं निवारेसि जरं वा सरीररूवविणासिणिं सरीरं वा अइवयमाणिं निवारेसि तते णं अहं तव बाहुच्छायापरिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि, तते णं से कण्हे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे थावच्चापुत्तं एवं वदासी—एए णं देवाणुप्पिया दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अन्नाणमिच्छत्तअविरइकसायसंचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए, तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–गच्छह णं देवाणुप्पिया ! बारवतीए नयरीए सिंघाडगतियगचउक्कचच्चर जाव हत्थिखंधवरगया महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उग्घोसणं करेह–एवं खलु देवा० थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं इच्छति अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए तं जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुंबिय० मांडबिय० इब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणुपव्वयति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणति पच्छातुरस्सविय से मित्तनातिनियगसंबंधिपरिजणस्स जोगखेमं वट्टमाणं पडिवहतित्तिकट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसंति, तते णं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पत्तेयं २ पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढं समाणं मित्तणातिपरिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं, तते णं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी-जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेति २ जाव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

थावच्चापुत्रस्य दिक्षायाः प्रसंगः



पडागातिपडागं पासंति २ विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सीवियाओ पच्चोरुहंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी सवं तं चेव आभरणं०, तते णं से थावच्चागाहावइणी हंसलक्खणेणं पडगसाडएणं आभरणमल्लालंकारे पडिच्छइ हारवारिधारच्छिन्नमुत्तावलिप्पगासाति अंसूणि विणिम्मुंचमाणी २ एवं वदासी–जतियवं जाया ! घडियवं जाया ! परिक्कमियवं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयवं जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया, तते णं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति जाव पवतिए । तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते ईरियासमिए भासासमिए जाव विहरति, तते णं से थावच्चापुत्ते अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयातिं चोद्दस पुवाइं अहिज्जति २ बहूहिं जाव चउत्थेणं विहरति । तते णं अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगारसहस्सं सीसत्ताए दलयति, तते णं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति २ एवं वदासी–इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिआ ! तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उरालेणं [उरालेणं] उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बहिया जणवयविहारं विहरति । (सूत्रं ५४)

'नन्नत्थ अप्पणो कम्मखएणं'ति न इति यदेतन्मरणादिवारणशक्तेर्निषेधनं तदन्यत्रात्मना कृतात् आत्मनो वा सम्ब-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५४]

दीप अनुक्रम [६५]

न्धिनः कर्मक्षयात्, आत्मना क्रियमाणं आत्मीयं वा कर्मक्षयं वर्जयित्वेत्यर्थः, 'अज्झाने'त्यादि 'अप्पणा अप्पणो वा कम्मक्खयं करित्तए'त्ति कर्मण इह षष्ठी द्रष्टव्या, 'पच्छाउरस्से'त्यादि, पश्चाद् अस्मिन् राजादौ प्रव्रजिते सति आतुरस्यापि च द्रव्याद्यभावाद्दुःस्थस्य 'से' तस्य तदीयस्येत्यर्थः मित्रज्ञातिनिजकसम्बन्धिपरिजनस्य योगक्षेमवार्त्तमानीं प्रतिवहति, तत्रालब्धस्येप्सितस्य वस्तुनो लाभो योगो लब्धस्य परिपालनं क्षेमस्ताभ्यां वर्त्तमानकालभवा वार्त्तमानी वार्ता योगक्षेमवार्त्तमानी तां–निर्वाहं राजा करोतीति तात्पर्यं, 'इतिकट्टु' इतिकृत्वा इतिहेतोरेवंरूपामेव वा घोषणां घोषयत–कुरुत, 'पुरिससहस्स' मित्यादि, इह पुरुषसहस्रं स्नानादिविशेषणं थावच्चापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भूतमिति सम्बन्धः । 'विज्जाहरचारणे'त्ति इह 'जंभए य देवे वीइवयमाणे इत्यादि' द्रष्टव्यं, एवमन्यदपि मेघकुमारचरितानुसारेण पूरयित्वाऽध्येतव्यमिति । 'ईरियासमिए'इत्यादि, इह यावत्करणादिदं दृश्यं, "एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए" आदानेन–ग्रहणेन सह भाण्डमात्राया–उपकरणलक्षणपरिच्छदस्य या निक्षेपणा–मोचनं तस्यां समितः–सम्यक्प्रवृत्तिमान् 'उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए' उच्चारः–पुरीषं, प्रश्रवणं–मूत्रं, खेलो निष्ठीवनं, सिङ्घानो–नासामलः, जल्लः–शरीरमलः, मणसमिए वयसमिए कायसमिए' चित्तादीनां कुशलानां प्रवर्तक इत्यर्थः, 'मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते' चित्तादीनामशुभानां निषेधकः, अत एवाह गुत्ते–योगापेक्षया गुप्तिदिए–इन्द्रियाणां विषयेष्वसत्प्रवृत्तिनिरोधात् 'गुत्तबंभचारी' वसत्यादिनवब्रह्मचर्यगुप्तियोगात्, अकोहे ४, कथमित्याह–सन्ते–सौम्यमूर्तित्वात् पसन्ते–कषायोदयस्य विफलीकरणात् उपसन्ते–कषायोदयाभावात् परिनिव्वुडे–स्वास्थ्यातिरेकात्, अणासवे–हिंसादिनिवृत्तेः अममे–ममेत्युल्लेखस्याभिष्वङ्गतोऽप्यसद्भावात्, 'अकिंचणे' निर्द्रव्यत्वात्, छिन्नग्गंथे–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

थावच्चापुत्रस्य दिक्षाया: प्रसंग:

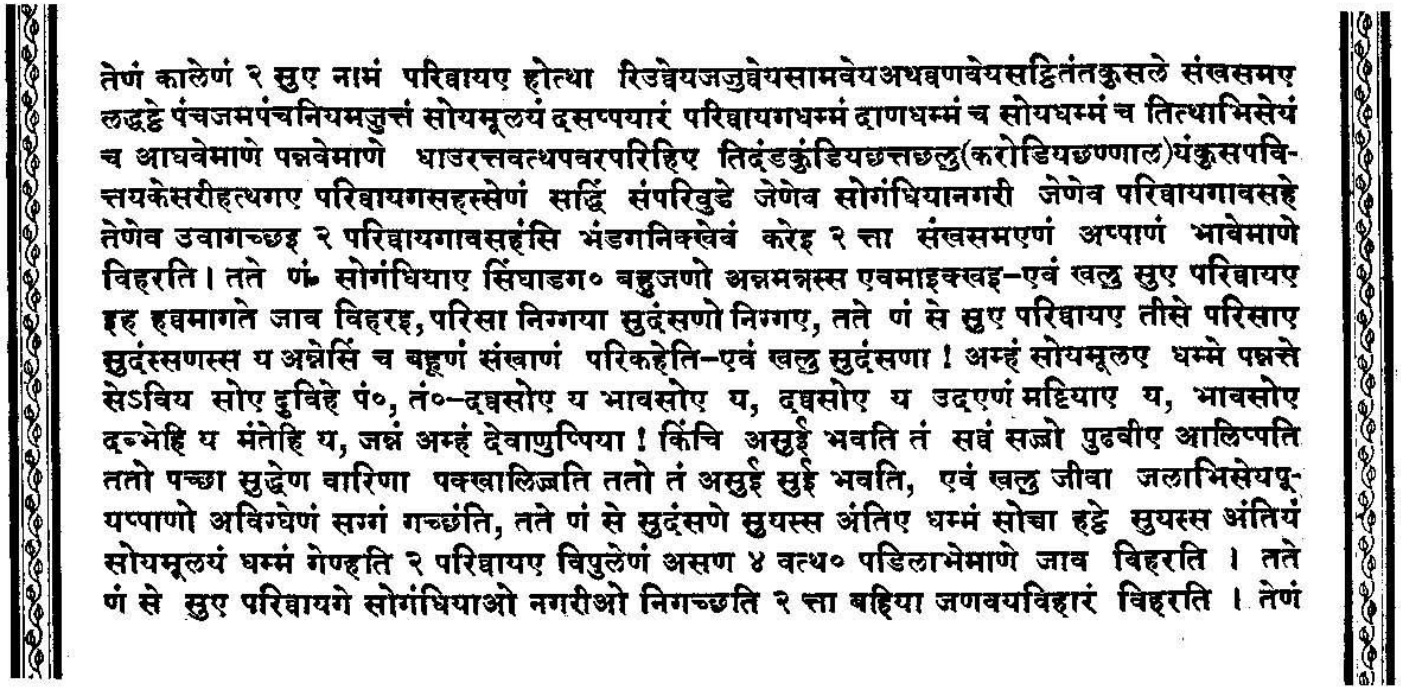
मिथ्यात्वादिभावग्रन्थिच्छेदात् निरुवलेवे–तथाविधबन्धहेतुभावेन तथाविधकर्मानुपादानात्, एतदेवोपमानैरुच्यते–'कंसपाईव मुक्कतोए' बन्धहेतुत्वेन तोयाकारस्य स्नेहस्याभावात्, 'संखो इव निरंजणे' रञ्जनस्य रागस्य कर्तुमशक्यत्वात्, 'जीवो विव अप्पडिहयगई' सर्वत्रौचित्येनास्खलितविहारित्वात्, 'गगणमिव निरालंबणे' देशग्रामकुलादीनामनालम्बकत्वात् 'वायुरिव अपडिबद्धे' क्षेत्रादौ प्रतिबन्धाभावेनौचित्येन सततविहारित्वात्, 'सारयसलिलंव सुद्धहियए' शाठ्यलक्षणगडुलत्ववर्जनात्, 'पुक्खरपत्तंपिव निरुलेवे' पद्मपत्रमिव भोगाभिलाषलेपाभावात् 'कुम्मो इव गुत्तिंदिए' कूर्मः–कच्छपः, 'खग्गिविसाणं व एगजाए' खड्गिः–आरण्यः पशुविशेषः तस्य विषाणं–शृङ्गं तदेकं भवति तद्वदेकीजातो योऽसंगतः सहायत्यागेन स तथा, 'विहग इव विप्पमुक्के' आलयाप्रतिबन्धेन 'भारंडपक्खीव अप्पमत्ते' भारण्डपक्षिणो हि एकोदराः पृथग्ग्रीवा अनन्यफलभक्षिणो जीवद्वयरूपा भवन्ति, ते च सर्वदा चकितचित्ता भवन्तीति, 'कुंजरो इव सोंडीरे' कर्मशत्रुसैन्यं प्रति शूर इत्यर्थः 'वसभो इव जायथामे' आरोपितमहाव्रतभारवहनं प्रति जातबलो निर्वाहकत्वात्, 'सीहो इव दुद्धरिसे' दुर्द्धर्षणीयः उपसर्गमृगैः, 'मंदरो इव निप्पकंपे' परीषहपवनैः, 'सागरो इव गंभीरे' अतुच्छचित्तत्वात्, 'चंदो इव सोमलेसे' शुभपरिणामत्वात्, 'सूरो इव दित्ततेए' परेषां क्षोभकत्वात्, 'जच्चकंचणं व जायरूवे' अपगतदोषलक्षणकुद्रव्यत्वेनोत्पन्नस्वस्वभावः, 'वसुंधरा इव सव्वफासविसहो' पृथ्वीवत् शीतातपाद्यनेकविधस्पर्शक्षमः, 'सुहुयहुयासणोव्व तेजसा जलंते' घृतादितर्पितवैश्वानरवत् प्रभया दीप्यमानः, 'नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधो भवइ' नास्त्ययं पक्षो यदुत तस्य (भगवतः) प्रतिबन्धो भवति 'से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–दव्वओ ४, दव्वओ सचित्ताचित्तमीसेसु खेत्तओ गामे वा नगरे वा रण्णे वा खले वा अंगणे वा,' खलं–धान्यमलनादिस्थण्डिलं 'कालओ समए वा आवलियाए वा–असंख्यातसमयरूपायां,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'आणापाणूए वा' उच्छ्वासनिश्वासकाले थोवे वा–सप्तोच्छ्वासरूपे खणे वा–बहुतरोच्छ्वासरूपे लवे वा–सप्तस्तोकरूपे मुहूर्त्ते वा–लवसप्तसप्ततिरूपे 'अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा' दक्षिणायनेतररूपे प्रत्येकं षण्मासप्रमाणे संवत्सरे वा, 'अन्नतरे वा दीहकालसंजोए' युगादौ । 'भावओ कोहे वा ४ भये वा हासे वा' हास्ये हर्षे वा, 'एवं तस्स न भवइ' एवमनेकधा तस्य प्रतिबन्धो न भवति, 'से णं भगवं वासीचंदणकप्पे' वास्यां चन्दनकल्पो यः स तथा, अपकारिणोऽप्युपकारकारीत्यर्थः, वासीं वा अङ्गछेदनप्रवृत्तां चन्दनं कल्पयति यः स तथा 'समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे' समानि उपेक्षणीयतया तृणादीनि यस्य स तथा, 'इहलोगपरलोगऽप्पडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एवं च णं विहरइ'त्ति,

तेणं कालेणं तेणं समएणं सेलगपुरे नामं नगरं होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, सेलए राया पउमावती देवी मंडुए कुमारे जुवराया, तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया होत्था उप्पत्तियाए वेणइयाए ४ उववेया रज्जधुरं चिंतयंति । थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे राया णिग्गतो धम्मकहा, धम्मं सोच्चा जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइत्ता तहा णं अहं नो संचाएमि पव्वत्तिए, अहन्नं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति, पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया समणोवासया जाया, थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरति । तेणं कालेणं २ सोगंधिया नाम नयरी होत्था वन्नओ, नीलासोए उज्जाणे वन्नओ, तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नगरसेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



तेणं कालेणं २ सुए नामं परिव्वायए होत्था रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले संखसमए लद्धट्ठे पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलयं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पन्नवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए तिदंडकुंडियछत्तछलु(करोडियछण्णाल)यंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधियानगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ २ परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ २ त्ता संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तते णं० सोगंधियाए सिंघाडग० बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ–एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागते जाव विहरइ, परिसा निग्गया सुदंसणो निग्गए, तते णं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अन्नेसिं च बहूणं संखाणं परिकहेति–एवं खलु सुदंसणा ! अम्हं सोयमूलए धम्मे पन्नत्ते सेऽविय सोए दुविहे पं०, तं०–दव्वसोए य भावसोए य, दव्वसोए य उदएणं मट्टियाए य, भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य, जन्नं अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवति तं सव्वं सज्जो पुढवीए आलिप्पति ततो पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जति ततो तं असुई सुई भवति, एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छंति, तते णं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठे सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हति २ परिव्वायए विपुलेणं असण ४ वत्थ० पडिलाभेमाणे जाव विहरति । तते णं से सुए परिव्वायगे सोगंधियाओ नगरीओ निग्गच्छति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति । तेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५५,५६]

दीप अनुक्रम [६६-६८]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१०५॥

कालेणं २ थावच्चापुत्तस्स समोसरणं, परिसा निग्गया, सुदंसणोवि णीइ, थावच्चापुत्तं वंदति नमंसति २ एवं वदासी–तुम्हाणं किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?, तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वदासी–सुदंसणा ! विणयमूले धम्मे पन्नत्ते, सेविय विण० दुविहे पं०, तं०–अगारविणए अणगारविणए य, तत्थ णं जे से अगारविणए से णं पंच अणुव्वयाति सत्त सिक्खावयाति एक्कारस उवासगपडिमाओ, तत्थ णं जे से अणगारविणए से णं पंच महव्वयाइं, तंजहा–सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वातो अदिन्नादाणातो वेरमणं सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं, दसविहे पच्चक्खाणे बारस भिक्खुपडिमाओ, इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगंठीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणे भवंति, तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वदासी–तुब्भे णं सुदंसणा ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?, अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूले धम्मे पन्नत्ते जाव सग्गं गच्छंति, तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वदासी–सुदंसणा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा तते णं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, एवामेव सुदंसणा ! तुब्भंपि पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही, सुदंसणा !



५ शैलक-ज्ञाते शुक-परिव्राज-कदीक्षा सू. ५५

॥१०५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

प्रत सूत्रांक [५५,५६]

दीप अनुक्रम [६६-६८]

से जहा णामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपति २ पयणं आरुहेति २ उण्हं गाहेइ २ त्ता ततो पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा, से णूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहितस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवति ?, हंता भवइ, एवामेव सुदंसणा ! अम्हंपि पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अत्थि सोही, जहा वीयस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही, तत्थ णं से सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदति नमंसति २ एवं वदासी–इच्छामि णं भंते ! धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाते अहिगयजीवाजीवे जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु सुदंसणेणं सोयं धम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए० पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छति २ परिव्वायगावसहंसि भंडनिक्खेवं करेति २ धाउरत्तवत्थपरिहिते पविरलपरिव्वायगेणं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमति २ सोगंधियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छति तते णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासति २ नो अब्भुट्ठेति नो पच्चुग्गच्छति णो आढाइ नो परियाणाइ नो वंदति तुसिणीए संचिट्ठति तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं० पासित्ता एवं वदासी–तुमं णं सुदं-

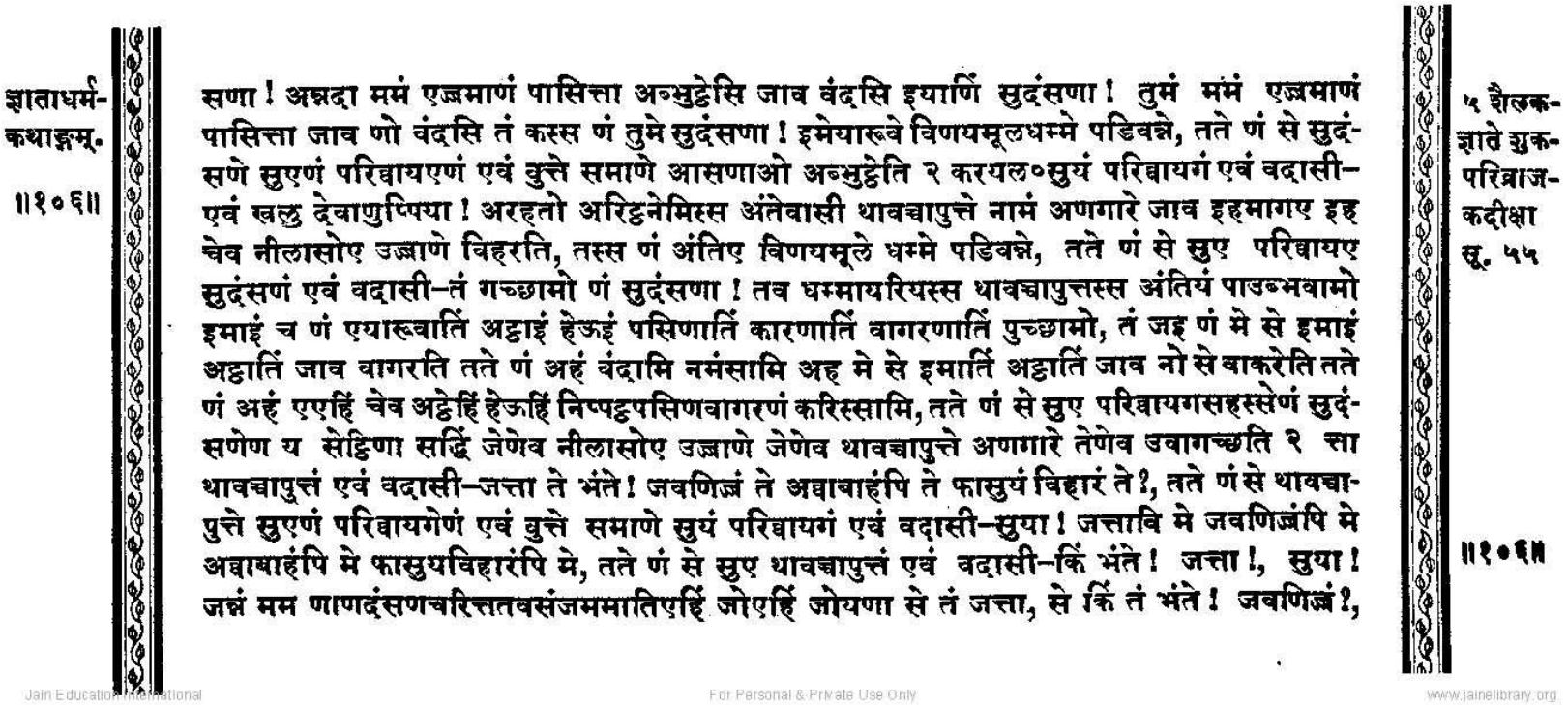
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५५,५६]

दीप अनुक्रम [६६-६८]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१०६॥

सणा ! अन्नदा ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि इयाणिं सुदंसणा ! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वंदसि तं कस्स णं तुमे सुदंसणा ! इमेयारूवे विणयमूलधम्मे पडिवन्ने, तते णं से सुदंसणे सुएणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेति २ करयल०सुयं परिव्वायगं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरति, तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने, तते णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वदासी–तं गच्छामो णं सुदंसणा ! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो इमाइं च णं एयारूवातिं अट्ठाइं हेऊइं पसिणातिं कारणातिं वागरणातिं पुच्छामो, तं जइ णं मे से इमाइं अट्ठातिं जाव वागरति तते णं अहं वंदामि नमंसामि अह मे से इमातिं अट्ठातिं जाव नो से वाकरेति तते णं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं करिस्सामि, तते णं से सुए परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति २ त्ता थावच्चापुत्तं एवं वदासी–जत्ता ते भंते ! जवणिज्जं ते अव्वाबाहंपि ते फासुयं विहारं ते ?, तते णं से थावच्चापुत्ते सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वदासी–सुया ! जत्तावि मे जवणिज्जंपि मे अव्वाबाहंपि मे फासुयविहारंपि मे, तते णं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वदासी–किं भंते ! जत्ता !, सुया ! जन्नं मम णाणदंसणचरित्ततवसंजममातिएहिं जोएहिं जोयणा से तं जत्ता, से किं तं भंते ! जवणिज्जं ?,

॥१०६॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

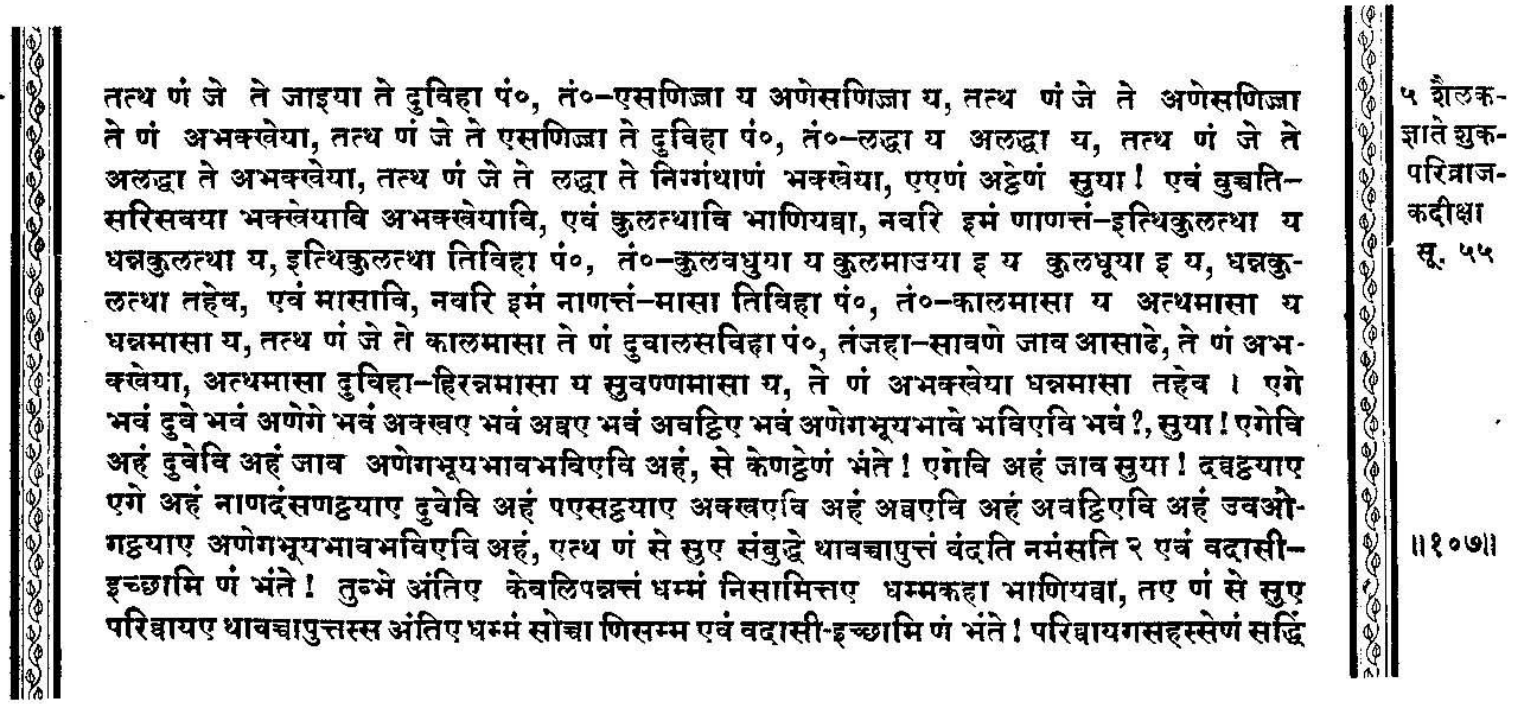
प्रत सूत्रांक [५५,५६]

दीप अनुक्रम [६६-६८]

सुया ! जवणिज्जे दुविहे पं०, तं०–इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य, से किं तं इंदियजवणिज्जं ?, सुया ! जन्नं मम सोतिंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति से तं इंदियजवणिज्जं, से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?, सुया ! जन्नं कोहमाणमायालोभा खीणा उवसंता नो उदयंति से तं नोइंदियजवणिज्जे, से किं तं भंते ! अव्वाबाहं ?, सुया ! जन्नं मम वातियपित्तियसिंभियसन्निवाइया विविहा रोगातंका णो उदीरेंति सेत्तं अव्वाबाहं, से किं तं भंते ! फासुयविहारं ?, सुया ! जन्नं आरामेसु उज्जाणेसु देवउलेसु सभासु पवासु इत्थिपसुपंडगविवज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीठफलगसेज्जासंथारयं उग्गिण्हित्ताणं विहरामि सेत्तं फासुयविहारं । सरिसवया ते भंते ! किं भक्खेया अभक्खेया ?, सुया ! सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?–सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि ?, सुया ! सरिसवया दुविहा पं०, तं०–मित्तसरिसवया धन्नसरिसवया य, तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पं०, तं०–सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया, ते णं समणाणं णिग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पं०, तं०–सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य, तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पं०, तं०–फासुगा य अफासुगा य, अफासुया णं सुया ! नो भक्खेया, तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पं०, तं०–जातिया य अजातिया य, तत्थ णं जे ते अजातिया ते अभक्खेया,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१०७॥

तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पं०, तं०–एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य, तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पं०, तं०–लद्धा य अलद्धा य, तत्थ णं जे ते अलद्धा ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते निग्गंथाणं भक्खेया, एएणं अट्ठेणं सुया! एवं वुच्चति–सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि, एवं कुलत्थावि भाणियव्वा, नवरि इमं णाणत्तं–इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य, इत्थिकुलत्था तिविहा पं०, तं०–कुलवधुया य कुलमाउया इ य कुलधूया इ य, धन्नकुलत्था तहेव, एवं मासावि, नवरि इमं नाणत्तं–मासा तिविहा पं०, तं०–कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य, तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा पं०, तंजहा–सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया, अत्थमासा दुविहा–हिरन्नमासा य सुवण्णमासा य, ते णं अभक्खेया धन्नमासा तहेव । एगे भवं दुवे भवं अणेगे भवं अक्खए भवं अव्वए भवं अवट्ठिए भवं अणेगभूयभावे भविएवि भवं?, सुया! एगेवि अहं दुवेवि अहं जाव अणेगभूयभावभविएवि अहं, से केणट्ठेणं भंते! एगेवि अहं जाव सुया! दव्वट्ठयाए एगे अहं नाणदंसणट्ठयाए दुवेवि अहं पएसट्ठयाए अक्खएवि अहं अव्वएवि अहं अवट्ठिएवि अहं उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविएवि अहं, एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदति नमंसति २ एवं वदासी–इच्छामि णं भंते! तुब्भे अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए धम्मकहा भाणियव्वा, तए णं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वदासी-इच्छामि णं भंते! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं

५ शैलक-ज्ञाते शुक-परिव्राज-कदीक्षा सू. ५५

॥१०७॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, अहासुहं जाव उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेति २ सयमेव सिहं उप्पाडेति २ जेणेव थावच्चापुत्ते० मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिए सामाइयमातियाइं चोद्दस पुव्वातिं अहिज्जति, तते णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारस्सहस्सं सीसत्ताए वियरति, तते णं थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरति, तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहति २ मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने, तते णं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्तातिं अणसणाए जाव केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता ततो पच्छा सिद्धे जाव पहीणे। (सूत्रं ५५) तते णं से सुए अन्नया कयाइं जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे समोसरणं परिसा निग्गया सेलओ निग्गच्छति धम्मं सोचा जं नवरं देवाणुप्पिया! पंथगपामोक्खातिं पंच मंतिसयातिं आपुच्छामि मण्डुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि, ततो पच्छा देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि, अहासुहं, तते णं से सेलए राया सेलगपुरं नयरं अणुपविसति २ जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ सीहासणं सन्निसन्ने, तते णं से सेलए राया पंथयपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ सद्दावेत्ता एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुयस्स अंतिए धम्मे णिसंते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५५,५६]

दीप अनुक्रम [६६-६८]

सेवि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुतिए अहं णं देवाणुप्पिया ! संसारभयउविग्गे जाव पवयामि, तुब्भे णं देवाणुप्पिया किं करेह किं ववसह किं वा ते हियइच्छंति ?, तते णं तं पंथयपामोक्खा सेलगं रायं एवं वदासी–जइ णं तुब्भे देवा० संसार जाव पवयह अम्हाणं देवाणुप्पिया ! किमन्ने आहारे वा आलंबे वा अम्हेऽविय णं देवा० संसारभयउविग्गा जाव पवयामो, जहा देवाणुप्पिया ! अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पवतियाणवि समाणाणं बहुसु जाव चक्खुभूते, तते णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं व०–जति णं देवाणु० तुब्भे संसार जाव पवयह तं गच्छह णं देवा० सएसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुंबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवहत्ति, तहेव पाउब्भवंति, तते णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणातिं पासति २ हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह० अभिसिंचति जाव राया विहरति । तते णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ, तते णं से मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे० एवं वदासी–खिप्पामेव सेलगपुरं नगरं आसित जाव गंधवट्टिभूतं करेह य कारवेह य २ एवमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं से मंडुए दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वदासी–खिप्पामेव सेलगस्स रन्नो महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव णवरं पउमावतीदेवी अग्गकेसे पडिच्छति सवेवि पडिग्गहं गहाय सीयं दुरूहंति, अवसेसं तहेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५५,५६]

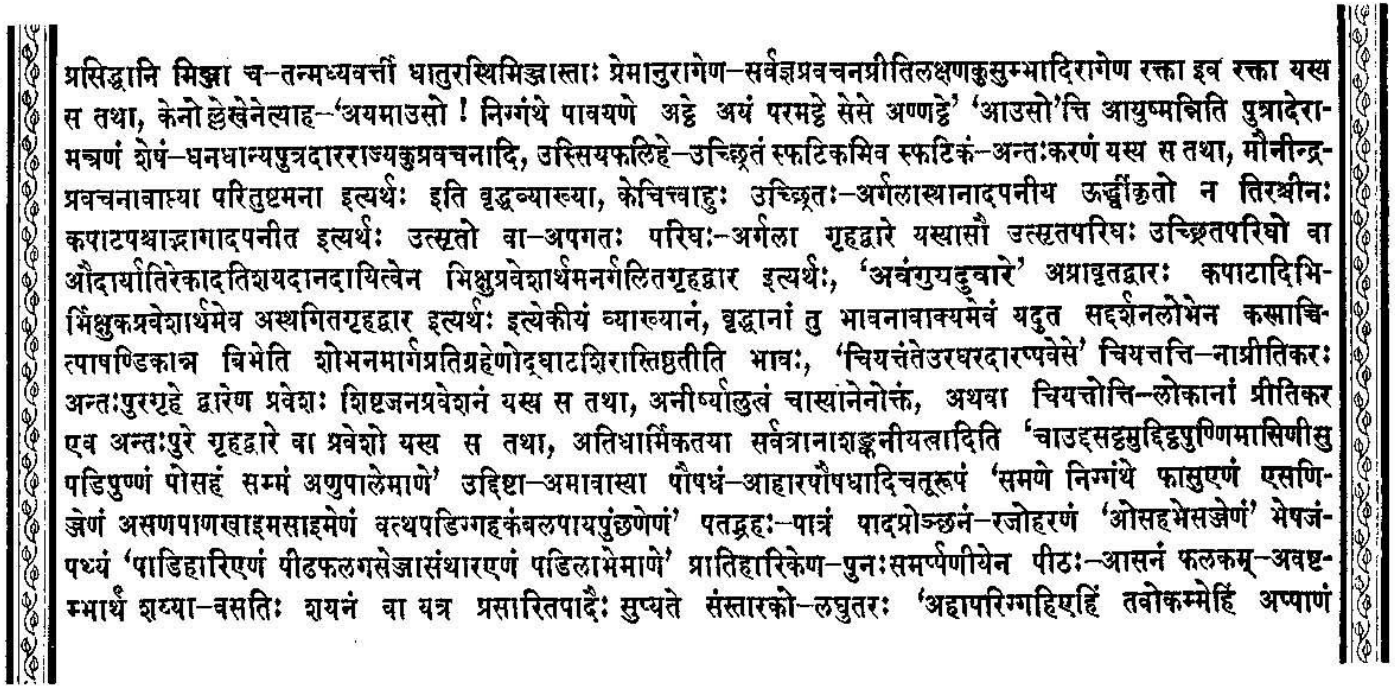
दीप अनुक्रम [६६-६८]

जाव सामातियमातियातिं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति २ बहूहिं चउत्थ जाव विहरति, तए णं से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइं पंथयपामोक्खातिं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरति, तते णं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति, तते णं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं विहरमाणे जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे (सूत्रं ५६)

एवमीर्यासमित्यादिगुणयोगेनेति । 'पंचाणुव्वइयं' इह यावत्करणात् एवं दृश्यं 'सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं काहिसि । तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव उवसंपज्जइ, तए णं से सेलए राया समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे' इह यावत्करणादिदं दृश्यं 'उवलद्धपुण्णपावे आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले' क्रिया–कायिक्यादिका अधिकरणं–खड्गनिर्वर्त्तनादि, एतेन च ज्ञानितोक्ता, 'असहेज्जे' अविद्यमानसाहाय्यः कुतीर्थिकप्रेरितः सम्यक्त्वविचलनं प्रति न परसाहाय्यमपेक्षते इति भावः, अत एवाह 'देवासुरनागजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरुसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जे' देवा-वैमानिकज्योतिष्काः शेषा भवनपतिव्यन्तरविशेषाः गरुडाः–सुवर्णकुमाराः एवं चैतद्यतो 'निग्गंथे पावयणे निस्संकिए' निःसंशयः, निक्कंखिए–मुक्तदर्शनान्तरपक्षपातो निव्वितिगिच्छे–फलं प्रति निःशङ्कः लद्धट्ठे–अर्थश्रवणतः गहियट्ठे–अर्थावधारणेन पुच्छियट्ठे–संशये सति अहिगयट्ठे–बोधात्, विणिच्छियट्ठे–ऐदम्पर्योपलम्भात् अत एव अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्तेत्ति–अस्थीनि च

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१०९॥

प्रसिद्धानि मिश्रा च–तन्मध्यवर्त्ती धातुरस्थिमिञ्जास्ताः प्रेमानुरागेण–सर्वज्ञप्रवचनप्रीतिलक्षणकुसुम्भादिरागेण रक्ता इव रक्ता यस्य स तथा, केनोल्लेखेनेत्याह–'अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे' 'आउसो'त्ति आयुष्मन्निति पुत्रादेरामन्त्रणं शेषं–धनधान्यपुत्रदारराज्यकुप्रवचनादि, उस्सियफलिहे–उच्छ्रितं स्फटिकमिव स्फटिकं–अन्तःकरणं यस्य स तथा, मौनीन्द्रप्रवचनावास्था परितुष्टमना इत्यर्थः इति वृद्धव्याख्या, केचित्त्वाहुः उच्छ्रितः–अर्गलास्थानादपनीय ऊर्द्धीकृतो न तिरश्चीनः कपाटपश्चाद्भागादपनीत इत्यर्थः उत्सृतो वा–अपगतः परिघः–अर्गला गृहद्वारे यस्यासौ उत्सृतपरिघः उच्छ्रितपरिघो वा औदार्यातिरेकादतिशयदानदायित्वेन भिक्षुप्रवेशार्थमनर्गलितगृहद्वार इत्यर्थः, 'अवंगुयदुवारे' अप्रावृतद्वारः कपाटादिभिर्भिक्षुकप्रवेशार्थमेव अस्थगितगृहद्वार इत्यर्थः इत्येकीयं व्याख्यानं, वृद्धानां तु भावनावाक्यमेवं यदुत सद्दर्शनलोभेन कस्माच्चित्पाषण्डिकान्न बिभेति शोभनमार्गप्रतिग्रहेणोद्घाटशिरास्तिष्ठतीति भावः, 'चियत्तंतेउरघरदारप्पवेसे' चियत्तेत्ति–नाप्रीतिकरः अन्तःपुरगृहे द्वारेण प्रवेशः शिष्टजनप्रवेशनं यस्य स तथा, अनीर्ष्यालुत्वं चास्यानेनोक्तं, अथवा चियत्तोत्ति–लोकानां प्रीतिकर एव अन्तःपुरे गृहद्वारे वा प्रवेशो यस्य स तथा, अतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीयत्वादिति 'चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे' उद्दिष्टा–अमावास्या पौषधं–आहारपौषधादिचतूरूपं 'समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं' पतद्ग्रहः–पात्रं पादप्रोञ्छनं–रजोहरणं 'ओसहभेसज्जेणं' भेषजं–पथ्यं 'पाडिहारिएणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणे' प्रातिहारिकेण–पुनःसमर्पणीयेन पीठः–आसनं फलकम्–अवष्टम्भार्थं शय्या–वसतिः शयनं वा यत्र प्रसारितपादैः सुप्यते संस्तारको–लघुतरः 'अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं

५ शैलक-राजदीक्षा सू. ५६

॥१०९॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५५,५६]

दीप अनुक्रम [६६-६८]

भावेमाणे विहरइ 'सुए परिव्वायगे'त्ति शुको–व्यासपुत्रः ऋग्वेदादयश्चत्वारो वेदाः षष्टितन्त्रं–साङ्ख्यमतं सांख्यसमये–साङ्ख्यसमाचारे लब्धार्थो, वाचनान्तरे तु यावत्करणादेवमिदमवगन्तव्यं ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदाथर्वणवेदानामितिहासपञ्चमानां इतिहासः–पुराणं 'निर्घण्टुषष्ठानां' निर्घण्टुः–नामकोशः'साङ्गोपाङ्गानां' अङ्गानि–शिक्षादीनि उपाङ्गानि–तदुक्तप्रपञ्चनपराः प्रबन्धाः सरहस्यानां–ऐदम्पर्ययुक्तानां सारकः–अध्यापनद्वारेण प्रवर्तकः स्मारको वा अन्येषां विस्मृतस्य स्मारणात् वारकोऽशुद्धपाठनिषेधकः पारगः–पारगामी षडङ्गवित् षष्टितन्त्रविशारदः षष्टितन्त्रं–कापिलीयशास्त्रं, षडङ्गवेदकलमेव व्यनक्ति–सङ्ख्याने–गणितस्कन्धे 'शिक्षाकल्पे' शिक्षायां–अक्षरस्वरूपनिरूपके शास्त्रे कल्पे–तथाविधसमाचारप्रतिपादके व्याकरणे–शब्दलक्षणे छन्दसि–पद्यवचनलक्षणनिरूपके निरुक्ते–शब्दनिरुक्तप्रतिपादके ज्योतिषामयने–ज्योतिःशास्त्रे अन्येषु च–ब्राह्मणकेषु शास्त्रेषु सुपरिनिष्ठित इति, वाचनान्तरं 'पञ्चयमपञ्चनियमयुक्तः' तत्र पञ्च यमाः–प्राणातिपातविरमणादयः नियमास्तु–शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि शौचमूलकं यमनियममीलनादशप्रकारं, धातुरक्तानि वस्त्राणि प्रवराणि परिहितो यः स तथा, त्रिदण्डादीनि सप्त हस्ते गतानि यस्य स तथा, तत्र कुण्डिका–कमण्डलुः, क्वचित्काञ्चनिका करोटिका वाऽधीयेते ते च क्रमेण रुद्राक्षकृतमाला मृद्भाजनं चोच्यते, छण्णालकं–त्रिकाष्ठिका अङ्कुशो–वृक्षपल्लवच्छेदार्थः पवित्रकं–ताम्रमयमङ्गुलीयकं केसरी–चीवरखण्डं प्रमार्जनार्थं, 'संखाणं'ति साङ्ख्यमतं 'सज्जपुढवि'त्ति कुमारपृथिवी। 'पयणं आरुहेइ' पाकस्थाने चुल्यादावारोपयति उष्माणं–उष्णत्वं ग्राहयति 'दिट्ठिं वमित्तए' मतं वमयितुं त्याजयितुमित्यर्थः। 'अट्ठाइं'ति अर्थान् अर्थ्यमानत्वादधिगम्यमानत्वादित्यर्थः, प्रार्थ्यमानत्वाद्वा याच्यमानत्वादित्यर्थाः, वक्ष्यमाणयात्रायापनीयादीन्, तथा तानेव 'हेऊइं'ति हेतून्, अन्तर्वर्त्तिन्यास्तदी-

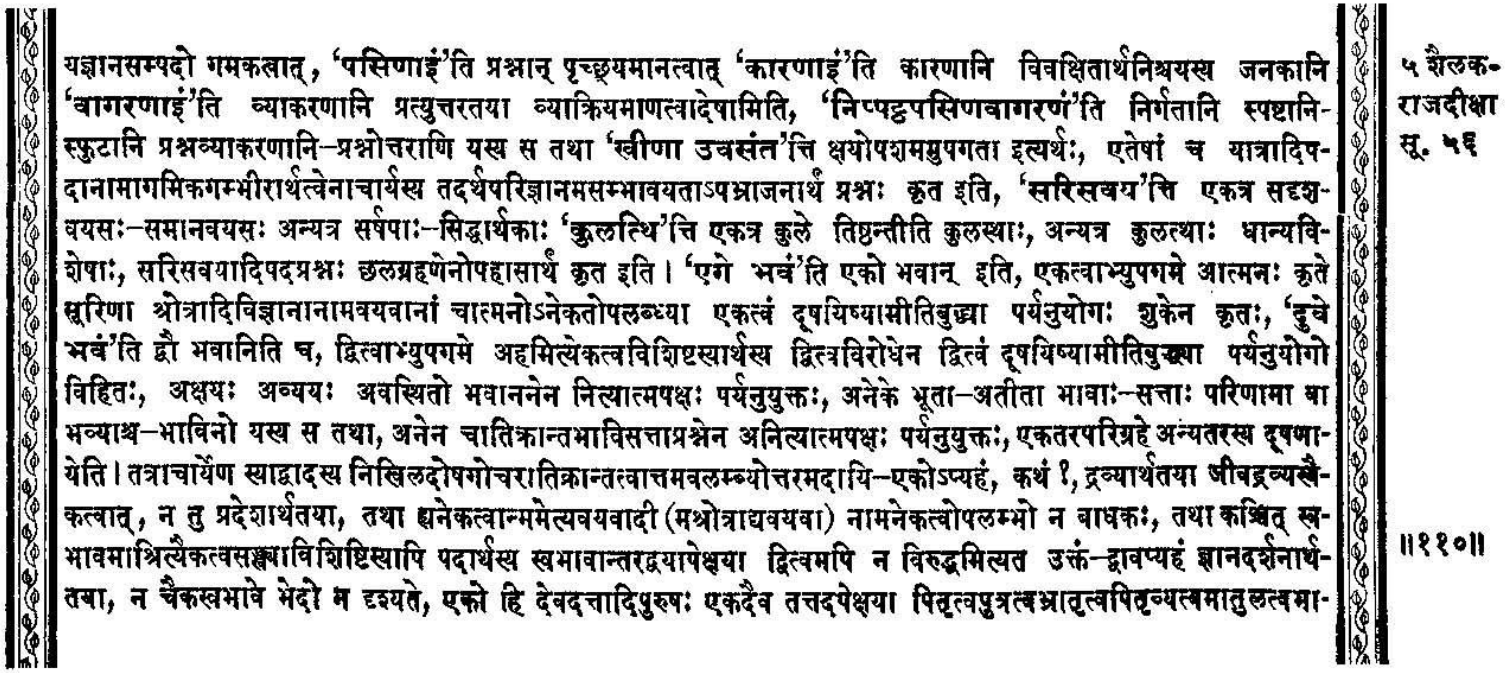
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५५,५६]

दीप अनुक्रम [६६-६८]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥११०॥

यज्ञानसम्पदो गमकत्वात्, 'पसिणाइं'ति प्रश्नान् पृच्छ्यमानत्वात् 'कारणाइं'ति कारणानि विवक्षितार्थनिश्चयस्य जनकानि 'वागरणाइं'ति व्याकरणानि प्रत्युत्तरतया व्याक्रियमाणत्वादेषामिति, 'निप्पट्ठपसिणवागरणं'ति निर्गतानि स्पष्टानि-स्फुटानि प्रश्नव्याकरणानि-प्रश्नोत्तराणि यस्य स तथा 'खीणा उवसंत'त्ति क्षयोपशममुपगता इत्यर्थः, एतेषां च यात्रादिप-दानामागमिकगम्भीरार्थत्वेनाचार्यस्य तदर्थपरिज्ञानमसम्भावयताऽपभ्राजनार्थं प्रश्नः कृत इति, 'सरिसवय'त्ति एकत्र सदृश-वयसः–समानवयसः अन्यत्र सर्षपाः–सिद्धार्थकाः 'कुलत्थि'त्ति एकत्र कुले तिष्ठन्तीति कुलस्थाः, अन्यत्र कुलत्थाः धान्यवि-शेषाः, सरिसवयादिपदप्रश्नः छलग्रहणेनोपहासार्थं कृत इति। 'एगे भवं'ति एको भवान् इति, एकत्वाभ्युपगमे आत्मनः कृते सूरिणा श्रोत्रादिविज्ञानानामवयवानां चात्मनोऽनेकतोपलब्ध्या एकत्वं दूषयिष्यामीतिबुद्ध्या पर्यनुयोगः शुकेन कृतः, 'दुवे भवं'ति द्वौ भवानिति च, द्वित्वाभ्युपगमे अहमित्येकत्वविशिष्टस्यार्थस्य द्वित्वविरोधेन द्वित्वं दूषयिष्यामीतिबुद्ध्या पर्यनुयोगो विहितः, अक्षयः अव्ययः अवस्थितो भवाननेन नित्यात्मपक्षः पर्यनुयुक्तः, अनेके भूता–अतीता भावाः–सत्ताः परिणामा वा भव्याश्च–भाविनो यस्य स तथा, अनेन चातिक्रान्तभाविसत्ताप्रश्नेन अनित्यात्मपक्षः पर्यनुयुक्तः, एकतरपरिग्रहे अन्यतरस्य दूषणा-येति। तत्राचार्येण स्याद्वादस्य निखिलदोषगोचरातिक्रान्तत्वात्तमवलम्ब्योत्तरमदायि–एकोऽप्यहं, कथं ?, द्रव्यार्थतया जीवद्रव्यस्यै-कत्वात्, न तु प्रदेशार्थतया, तथा ह्यनेकत्वान्ममेत्यवयववादी (मश्रोत्राद्यवयवा) नामनेकत्वोपलम्भो न बाधकः, तथा कश्चित् स्व-भावमाश्रित्यैकत्वसङ्ख्याविशिष्टस्यापि पदार्थस्य स्वभावान्तरद्वयापेक्षया द्वित्वमपि न विरुद्धमित्यत उक्तं–द्वावप्यहं ज्ञानदर्शनार्थ-तया, न चैकस्वभावे भेदो मृदृश्यते, एको हि देवदत्तादिपुरुषः एकदैव तत्तदपेक्षया पितृत्वपुत्रत्वभ्रातृत्वपितृव्यत्वमातुलत्वमा-

५ शैलक-राजदीक्षा सू. ५६

॥११०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रपरिव्राजकस्य दिक्षायाः प्रसंगः

गिनेयत्वादीननेकान् स्वभावांल्लभत इति, तथा प्रदेशार्थतया असङ्ख्यातान् प्रदेशानाश्रित्याक्षयः, सर्वथा प्रदेशानां क्षयाभावात्, अव्ययः कियतामपि च व्ययाभावात्, किमुक्तं भवति ?–अवस्थितो नित्यः, असङ्ख्येयप्रदेशता हि न कदाचनापि व्यपैति अतो नित्यताभ्युपगमेऽपि न दोषः, उपयोगार्थतया–विविधविषयानुपयोगानाश्रित्य अनेकभूतभावभविकोऽपि, अतीतानागतयोर्हि कालयोरनेकविषयबोधानामात्मनः कथंचिदभिन्नानामुत्पादाद्विगमाद्वाऽनित्यपक्षो न दोषायेति । पुण्डरीकेण–आदिदेवगणधरेण निर्वाणत उपलक्षितः पर्वतः तस्य तत्र प्रथमं निर्वृतत्वात्पुण्डरीकपर्वतः–शत्रुञ्जयः ।

ततेणं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालातिक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य णिच्चं पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा कंडुयदाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे यावि विहरति, ततेणं से सेलए तेणं रोयायंकेण सुक्के जाए यावि होत्था, ततेणं सेलए अन्नया कदाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरति, परिसा निग्गया, मंडुओऽवि निग्गओ, सेलयं अणगारं जाव वंदति नमं० २ पज्जुवासति, ततेणं से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्कं भुक्कं जाव सव्वाबाहं सरोगं पासति २ एवं वदासी–अहं णं भंते! तुब्भं अहापवित्तेहिं तिगिच्छएहिं अहापवित्तेणं ओसहभेसज्जेणं भत्तपाणेणं तिगिच्छं आउंटावेमि, तुब्भे णं भंते! मम

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाणसालासु समोसरह फासुअं एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरह, तते णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रन्नो एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेति, तते णं से मंडुए सेलयं वंदति नमंसति २ जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए। तते णं से सेलए कल्लं जाव जलंते सभंडमत्तोवगरणमायाए पंथयपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सेलगपुरमणुपविसति २ जेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छति २ फासुयं पीढ जाव विहरति, तते णं से मंडुए चिगिच्छए सद्दावेति २ एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह, तते णं तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठ० सेलयस्स अहापवित्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणयं च से उवदिसंति, तते णं तस्स सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणेण रोगायंके उवसंते होत्था हट्ठे मल्लसरीरे जाते ववगयरोगायंके, तते णं से सेलए तंसि रोयायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण ४ मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्नो ओसन्नविहारी एवं पासत्थे २ कुसीले २ पमत्ते संसत्ते उउबद्धपीढफलगसेज्जासंथारए पमत्ते यावि विहरति, नो संचाएति फासुएसणिज्जं पीढं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जाव (जणवयविहारं अब्भुज्जएण पवत्तेण पग्गहिएण) विहरित्तए (सूत्रं ५७) तते णं तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अन्नया कयाइं एगयओ सहियाणं जाव पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्प-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ज्झित्था–एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव पव्वतिए, विपुलेणं असण ४ मज्जपाणए मुच्छिए नो संचाएति जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणाणं जाव पमत्ताणं विहरित्तए, तं सेयं खलु देवा० अम्हं कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए, एवं संपेहेंति २ कल्लं जेणेव सेलए आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ० पच्चप्पिणंति २ पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावंति २ बहिया जाव विहरंति (सूत्रं ५८) तते णं से पंथए सेलयस्स सेज्जासंथारउच्चारपासवणखेलसंघाणमत्तओसहभेसज्जभत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ, तते णं से सेलए अन्नया कयाइं कत्तियचाउम्मासियंसि विपुलं असण० ४ आहारमाहारिए सुबहुं मज्जपाणयं पीए पुव्वावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते, तते णं से पंथए कत्तियचाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कमिउंकामे सेलयं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ, तते णं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उट्ठेति २ एवं वदासी–से केस णं भो एस अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे णं ममं सुहपसुत्तं पाएसु संघट्टेति? तते णं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयल०कट्टु एवं वदासी–अहण्णं भंते! पंथए कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते चाउम्मासियं पडिक्कंते चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि, तं खमंतु णं देवाणुप्पिया! खमन्तु मेऽवराहं तुमण्णं देवाणुप्पिया! णाइभुज्जो एवं करणयाएत्तिकट्टु सेलयं अणगारं एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेति, तते णं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीढ० विहरामि, तं नो खलु कप्पति समणाणं णिग्गंथाणं अपसत्थाणं जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जाव जणवयविहारेणं विहरित्तए, एवं संपेहेति २ कल्लं जाव विहरति (सूत्रं ५९) एवामेव समणाउसो! जाव निग्गंथो वा २ ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरति से णं इह लोए चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो। तते णं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवं वयासी–सेलए रायरिसी पंथएणं बहिया जाव विहरति, तं सेयं खलु देवा०! अम्हं सेलयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, एवं संपेहेंति २ त्ता सेलयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति (सूत्रं ६०) तते णं ते सेलयपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छंति २ जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा। एवामेव समणाउसो! जो निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सति एवं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	शैलकराजर्षेः पार्श्वस्थता, सद्बोधप्राप्तिः, सिद्धिः

खलु जंबू! समणेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ॥ (सूत्रं ६१) ॥ पंचमं नाय-ज्झयणं समत्तं ॥

'अंतेहि'इत्यादि, अन्तैः–वल्लचणकादिभिः प्रान्तैः–तैरेव भुक्तावशेषैः पर्युषितैर्वा रूक्षैः–निःस्नेहैस्तुच्छैः–अल्पैः अरसैः–हिङ्गु-दिभिरसंस्कृतैर्विरसैः–पुराणत्वाद्विगतरसैः शीतैः–शीतलैः उष्णैः–प्रतीतैः कालातिक्रान्तैः–तृष्णाबुभुक्षाकालाप्राप्तैः प्रमाणाति-क्रान्तैः–बुभुक्षापिपासामात्रानुचितैः, चकाराः समुच्चयार्थाः, एवंविधविशेषणान्यपि पानादीनि निष्ठुरशरीरस्य न भवन्ति बाधायै अत आह–'प्रकृतिसुकुमारकस्से'त्यादि, वेयणा पाउब्भूया इत्यस्य स्थाने रोगायंकेत्ति क्वचित् दृश्यते, तत्र रोगा-श्चासावातङ्कश्च–कृच्छ्रजीवितकारीति समासः, कण्डूः–कण्डूतिः दाहः–प्रतीतस्तत्प्रधानेन पित्तज्वरेण परिगतं शरीरं यस्य स तथा, 'तेइच्छं'ति चिकित्सां 'आउट्टावेमि'त्ति आवर्त्तयामि कारयामि । 'सभंडमत्तोवगरणमायाए'त्ति भाण्डमात्रा-पतद्ग्रहं परिच्छदश्च उपकरणं च–वर्षाकल्पादि भाण्डमात्रोपकरणं स्वं च–तदात्मीयं भाण्डमात्रोपकरणं च स्वभाण्डमात्रो-पकरणं तदादाय–गृहीत्वा, 'अभ्युद्यतेन' सोद्यमेन 'प्रदत्तेन' गुरुणोपदिष्टेन 'प्रगृहीतेन' गुरुसकाशादङ्गीकृतेन 'विहा-रेण' साधुवर्त्तनेन 'विहर्त्तुं' वर्त्तितुं पार्श्वे–ज्ञानादीनां बहिस्तिष्ठतीति पार्श्वस्थः–गाढग्लानत्वादिकारणं विना शय्यातरा-भ्याहृतादिपिण्डभोजकत्वाद्यागमोक्तविशेषणः, स च सकृदनुचितकरणेनाल्पकालमपि भवति तत उच्यते–पार्श्वस्थानां यो विहारो–बहूनि दिनानि यावत्तथा वर्त्तनं स पार्श्वस्थविहारः सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थविहारी, एवमवसन्नादिविशेषणान्यपि, नव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रमवसन्नो–विवक्षितानुष्ठानालसः, आवश्यकस्वाध्यायप्रत्युपेक्षणाध्यानादीनामसम्यक्कारीत्यर्थः, कुत्सितशीलः कुशीलः—कालविनयादिभेदभिन्नानां ज्ञानदर्शनचारित्राचाराणां विराधक इत्यर्थः, प्रमत्तः–पञ्चविधप्रमादयोगात्, संसक्तः कदाचित्संविग्नगुणानां कदाचित्पार्श्वस्थादिदोषाणां सम्बन्धात् गौरवत्रयसंसजनाच्चेति, ऋतुबद्धेऽपि–अवर्षाकालेऽपि पीठफलकानि शय्यासंस्तारकार्थं यस्य स तथा 'नाइभुज्जो एवं करणयाए'त्ति नैवः भूयः–पुनरपि एवं–इत्थंकरणाय प्रवर्त्तिष्ये इति शेषः, 'एवमेवे'त्यादिरुपनयः, इह गाथा–"सिढिलियसंजमकज्जावि होइउं उज्जमंति जइ पच्छा । संवेगाओ तो सेलउव्व आराहया होंति ॥ १ ॥" [शिथिलितसंयमकार्या अपि भूत्वोद्यच्छन्ति यदि पश्चात् । संवेगात् तर्हि शैलक इव ते आराधका भवन्ति ॥१॥] इति पञ्चमशैलकज्ञातविवरणं समाप्तमिति ॥

पञ्चमानन्तरं षष्ठं व्याख्यायते, तस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः–अनन्तराध्ययने प्रमादवतोऽप्रमादवतश्चानर्थेतरावुक्तौ, इहापि तयोरेव तावेवोच्येते इत्येवसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते छट्ठस्स णं भंते! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं परिसा निग्गया, तेणं कालेणं २ समणस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती अदूरसामंते जाव सुक्कज्झा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-५ परिसमाप्तम्

अथ अध्ययनं- ६ "तुम्बकः" आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [६२]

दीप अनुक्रम [७४]

णोवगए विहरति, तते णं से इंदभूती जायसड्ढे० समणस्स ३ एवं वदासी–कहण्णं भंते! जीवा गुरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति?, गोयमा! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कं तुंबं णिच्छिड्डं निरुवहयं दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ २ मट्टियालेवेणं लिंपति उण्हे दलयति २ सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेति २ मट्टियालेवेणं लिंपति २ उण्हे सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेति २ मट्टियालेवेणं लिंपति, एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे अंतरा लिंपेमाणे अंतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपति, अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से णूणं गोयमा! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गुरुययाए भारियत्ताए गुरुयभारियत्ताए उप्पिं सलिलमतिवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवति, एवामेव गोयमा! जीवावि पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडीओ समज्जिणन्ति, तासिं गरुययाए भारियत्ताए गरुयभारियत्ताए कालमासे कालं किच्चा धरणियलमतिवतित्ता अहे नरगतलपइट्ठाणा भवंति, एवं खलु गोयमा! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति। अहण्णं गोतमा! से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि मट्टियालेवंसि तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पतित्ता णं चिट्ठति, ततोऽणंतरं च णं दोच्चंपि मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता णं चिट्ठति, एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे अहेधरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवति, एवामेव गोयमा! जीवा पाणाति-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६२]

दीप अनुक्रम [७४]

वातवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्गपतिट्ठाणा भवंति, एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्तिबेमि ॥ (सूत्रं ६२) छट्ठं नायज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

सर्वं सुगमं, नवरं, निरुपहतं–वातादिभिः दर्भैः–अग्रभूतैः कुशैः–मूलभूतैः, जात्या दर्भकुशभेद इत्यन्ये, 'अत्थाहंसि'त्ति अस्थाघे अगाधे इत्यर्थः, पुरुषः परिमाणमस्येति पौरुषिकं तन्निषेधादपौरुषिकं, मृल्लेपानां सम्बन्धात् गुरुकतया, गुरुकतैव कुतः ?–भारिकतया, मृल्लेपजनितभारवत्त्वेनेति भावः, गुरुकभारिकतयेति तुम्बकधर्मद्वयस्याप्यधोमज्जनकारणताप्रतिपादनायोक्तं, 'उप्पिं' उपरि 'अइवइत्ता' अतिपत्यातिक्रम्य 'तिन्नंसि'त्ति स्तिमित आर्द्रतां गते ततः 'कुथिते' कोथमुपगते ततः 'परिसडिते' पतिते इति । इह गाथे–"जह मिउलेवालित्तं गरुयं तुंबं अहो वयइ एवं । आसवकयकम्मगुरू जीवा वच्चंति अहरगयं ॥ १ ॥ तं चेव तविमुक्कं जलोवरिं ठाइ जायलहुभावं । जह तह कम्मविमुक्का लोयग्गपइट्ठिया होंति ॥ २ ॥" [यथा मृल्लेपलिप्तं गुरु तुम्बमधो व्रजति एवं । आश्रवकृतकर्मगुरुत्वा जीवा व्रजन्ति अधोगतिं ॥ १ ॥ तदेव तद्विमुक्तं जलोपरि तिष्ठति जातलघुभावं । यथा तथा कर्मविमुक्ता लोकाग्रे प्रतिष्ठिता भवन्ति ॥ २ ॥] षष्ठतुम्बकज्ञातविवरणं समाप्तमिति ॥ ६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-६ परिसमाप्तम्

अथ सप्तमं विव्रियते, अस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः, इहानन्तराध्ययने प्राणातिपातादिमतां कर्मगुरुताभावेनेतरेषां च लघुताभावेन अनर्थप्राप्तीतरे उक्ते, इह तु प्राणातिपातादिविरतिभञ्जकपरिपालकानां ते उच्येते, इत्येवंसम्बद्धम्—

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते सत्तमस्स णं भंते ! नाय-ज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नाम नयरे होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, तत्थ णं रायगिहे नगरे धण्णे नामं सत्थवाहे परिवसति, अड्ढे०, भद्दा भारिया अहीणपंचेंदिय० जाव सुरूवा, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाहदारया होत्था, तंजहा–धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं०–उज्झिया भोगवतिया रक्खतिया रोहिणिया, तते णं तस्स धण्णस्स अन्नया कदाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं रायगिहे बहूणं ईसर जाव पभिईणं सयस्स कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य करणिज्जेसु कोडुंबेसु य मंतणेसु य गुज्झे रहस्से निच्छए ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाणे आहारे आलं-बणे चक्खुमेढीभूते कज्जवट्टावए, तं ण णज्जति जं मए गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंबस्स किं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६३]

दीप अनुक्रम [७५]

मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सति ?, तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तणाति॰ चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्तणाइणियगसयण॰ य चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गं विपुलेणं असणं ४ धुवपुप्फवत्थगंध जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाति॰ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरतो चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पंच २ सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किहं वा सारक्खेह वा संगोवेह वा संवड्ढेति वा ?, एवं संपेहेइ २ कल्लं जाव मित्तणाति॰ चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ २ विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ ततो पच्छा ण्हाए भोयणमंडवंसि सुहासण॰ मित्तणाति॰ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असण ४ जाव सक्कारेति २ तस्सेव मित्तनाति॰ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो पंच सालिअक्खए गेण्हति २ जेट्ठा सुण्हा उज्झितिया तं सद्दावेति २ एवं वदासी–तुमं णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि २ अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि, जया णंऽहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएज्जासित्तिकट्टु सुण्हाए हत्थे दलयति २ पडिविसज्जेति, तते णं सा उज्झिया धण्णस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेति २ धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हति २ एगंतमवक्कमति एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अब्भत्थिए०–एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णं ममं ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएस्सति तया णं अहं पल्लंतराओ अन्ने पंच सालिअक्खए गहाय दाहामित्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ तं पंच सालिअक्खए एगंते एडेति २ सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था। एवं भोगवतियाएवि, णवरं सा छोल्लेति २ अणुगिलति २ सकम्मसंजुत्ता जाया। एवं रक्खियावि, नवरं गेण्हति २ इमेयारूवे अब्भत्थिए०–एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तनाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो सद्दावेत्ता एवं वदासी–तुमण्णं पुत्ता मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जाएज्जासित्तिकट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयति तं भवियव्वमेत्थ कारणेणंतिकट्टु एवं संपेहेति २ ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ २ रयणकरंडियाए पक्खिवेइ २ ऊसीसामूले ठावेइ २ तिसंझं पडिजागरमाणी विहरइ। तए णं से धण्णे सत्थवाहे तस्सेव मित्त जाव चउत्थिं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेति २ जाव तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कुलघरपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एते पंच सालिअक्खए गेण्हह २ पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह २ त्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह २ दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेह २ वाडिपक्खेवं करेह २ सारक्खेमाणा संगोवेमाणा अणुपुव्वेणं संवड्ढेह, तते णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एतमट्ठं पडिसुणंति ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति २ अणुपुव्वेणं सारक्खंति संगोवंति विहरंति, तए णं ते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि णिवइयंसि समाणंसि खुड्डायं केदारं सुपरिकम्मियं करेंति २ ते पंच सालिअक्खए ववंति दुचंपि तचंपि उक्खयनिहए करेंति २ वाडिपरिक्खेवं करेंति २ अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति, तते णं ते साली अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया किण्हा किण्होभासा जाव निउरंबभूया पासादीया ४, तते णं साली पत्तिया वत्तिया गब्भिया पसूया आगयगंधा खीराइया बद्धफला पक्का परियागया सल्लइया पत्तइया हरियपव्वकंडा जाया यावि होत्था, तते णं ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइए पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं णवपज्जणएहिं असियएहिं लुणेंति २ करयलमलिते करेंति २ पुणंति, तत्थ णं चोक्खाणं सूयाणं अक्खंडाणं अफोडियाणं छड्डछडापूयाणं सालीणं मागहए पत्थए जाए, तते णं ते कोडुंबिया ते साली णवएसु घडएसु पक्खिवंति २ उपलिंपंति २ लंछियमुद्दिते करेंति २ कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति २ सारक्खेमाणा संगोवेमाणा विहरंति, तते णं ते कोडुंबिया दोचंमि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति ते साली ववंति दोचंपि तचंपि उक्खयणिहए जाव लुणेंति जाव चलणतलमलिए करेंति २ पुणंति, तत्थ णं सालीणं बहवे कुडवा(मुरला) जाव एगदेसंसि ठावेंति २ सारक्ख० संगो० विहरंति, तते णं ते कोडुंबिया तचंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि बहवे केदारे सुपरि० जाव लुणेंति २ संवहंति २ खलयं करेंति २ मलेंति जाव बहवे कुंभा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६३]

दीप अनुक्रम [७५]

जाया, तते णं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति जाव विहरंति, चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया। तते णं तस्स धण्णस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु मम इओ अतीते पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच सालिअक्खता हत्थे दिन्ना तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए जाव जाणामि ताव काए किह सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया जावत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते विपुलं असण ४ मित्तनाय० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता तस्सेव मित्त० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु अहं पुत्ता! इतो अतीते पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्त० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि जया णं अहं पुत्ता! एए पंच सालियअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएसित्तिकट्टु तं हत्थंसि दलयामि, से नूणं पुत्ता! अत्थे समट्ठे?, हंता अत्थि, तन्नं पुत्ता! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएहि, तते णं सा उज्झितिया एयमट्ठं धण्णस्स पडिसुणेति २ जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छति २ पल्लातो पंच सालिअक्खए गेण्हति २ जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २ धण्णं० एवं वदासी–एए णं ते पंच सालिअक्खएत्तिकट्टु धण्णस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयति, तते णं धण्णे उज्झियं सवहसावियं करेति २ एवं वयासी-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

किण्णं पुत्ता ! एए चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने ?, तते णं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी–एवं खलु तुब्भे तातो ! इओऽतीए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त० नाति० चउण्ह य कुल० जाव विहरामि, तते णंऽहं तुब्भं एतमट्ठं पडिसुणेमि २ ते पंच सालिअक्खए गेण्हामि एगंतमवक्कमामि तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि०सकम्मसंजुत्ता तं णो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए एए णं अन्ने, तते णं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झितियं तस्स मित्तनाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च छाणुज्झियं च कयवरुज्झियं च समुच्छियं च सम्मज्जिअं च पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा २ जाव पव्वतिते पंचं य से महव्वयातिं उज्झियाइं भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव अणुपरियट्टइस्सइ जहा सा उज्झिया । एवं भोगवइयावि, नवरं तस्स कंडितियं वा कोट्टंतियं च पीसंतियं च एवं रुचंतियं रंधंतियं परिवेसंतियं च परिभायंतियं च अब्भंतरियं च पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो पंच य से महव्वयाइं फोडियाइं भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव हीलं ४ जहा व सा भोगवतिया । एवं रक्खितियावि, नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ २ मंजूसं विहाडेइ २ रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हति २ जेणेव धण्णे तेणेव उवा० २ पंच सा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

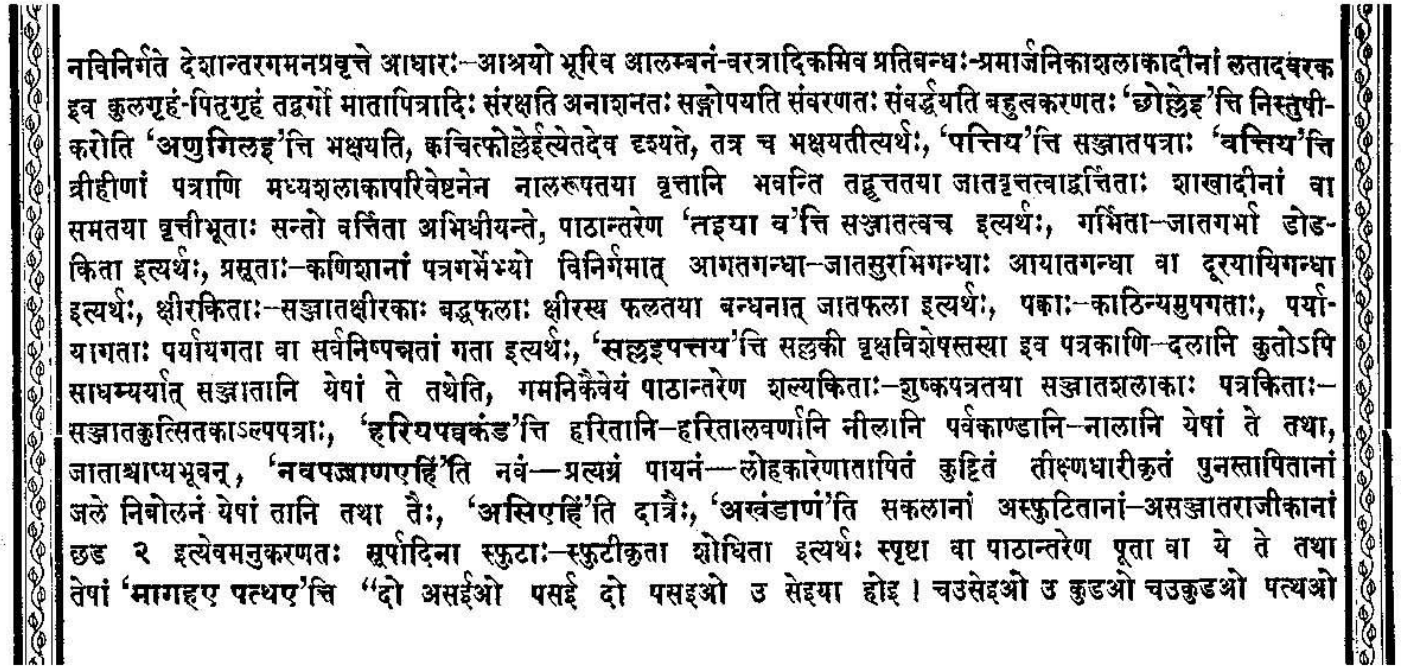
लिअक्खए धण्णस्स हत्थे दलयति, तते णं से धण्णे रक्खितियं एवं वदासी–किन्नं पुत्ता ते चेव ते पंच सालिअक्खया उदाहु अन्ने त्ति ?, तते णं रक्खितिया धण्णं एवं० ते चेव ताया ! एए पंच सालिअक्खया णो अन्ने, कहन्नं पुत्ता !, एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ पंचमंमि जाव भवियव्वं एत्थ कारणेणंतिकट्टु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसंझं पडिजागरमाणी य विहरामि, ततो एतेणं कारणेणं ताओ ! ते चेव ते पंच सालिअक्खए णो अन्ने, तते णं से धण्णे रक्खितियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठ तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स य कंसदूसविपुलधणजावसावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेति, एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महव्वयातिं रक्खियातिं भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जहा जाव सा रक्खिया। रोहिणियावि एवं चेव, नवरं तुब्भे ताओ मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाहि जेणं अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिणिज्जाएमि, तते णं से धण्णे रोहिणिं एवं वदासी–कहण्णं तुमं मम पुत्ता ! ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाइस्ससि ?, तते णं सा रोहिणी धण्णं एवं वदासी–एवं खलु तातो ! इओ तुब्भे पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त जाव वहवे कुंभसया जाया तेणेव कमेणं एवं खलु ताओ ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएमि, तते णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुयं सगडसागडं दलयति, तते णं रोहिणी सुबहुं सगडसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ कोट्ठागारे विहाडेति २ पल्ले उब्भिंदति २ सगडीसागडं भरेति २ रायगिहं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, तते णं रायगिहे नगरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमातिक्खति०–धन्ने णं देवा० ! धण्णे सत्थवाहे जस्स णं रोहिणिया सुण्हा जीए णं पंच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाएति, तते णं से धण्णे सत्थ० ते पंच सालि-अक्खए सगडसागडेणं निज्जाएतिते पासति २ हट्ठ० पडिच्छति २ तस्सेव मित्तनाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरपुरतो रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव वट्टावितं पमाणभूयं ठावेति, एवामेव समणाउसो ! जाव पंच महव्वया संवड्ढिया भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं जाव वीतीवइस्सइ जहा व सा रोहिणीया । एवं खलु जंबू ! समणेणं भग-वया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्तिबेमि ॥ (सूत्रं ६३) सत्तमं नायज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

इदमपि सुगमम्, नवरं 'मए'त्ति मयि 'गयंसि'त्ति गते ग्रामादौ एवं 'च्युते' कुतोऽप्यनाचारात् स्वपदात् पतिते 'मृते' परासुतां गते 'भग्ने' वात्यादिना कुब्जखञ्जलकरणेनासमर्थीभूते 'लुग्गंसि व'त्ति रुग्ने जीर्णतां गते 'शटिते' व्याधिवि-शेषाच्छीर्णतां गते 'पतिते' प्रासादादेर्मञ्चके वा ग्लानभावात् 'विदेशस्थे' विदेशं गत्वा तत्रैव स्थिते 'विप्रोषिते' स्वस्था-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

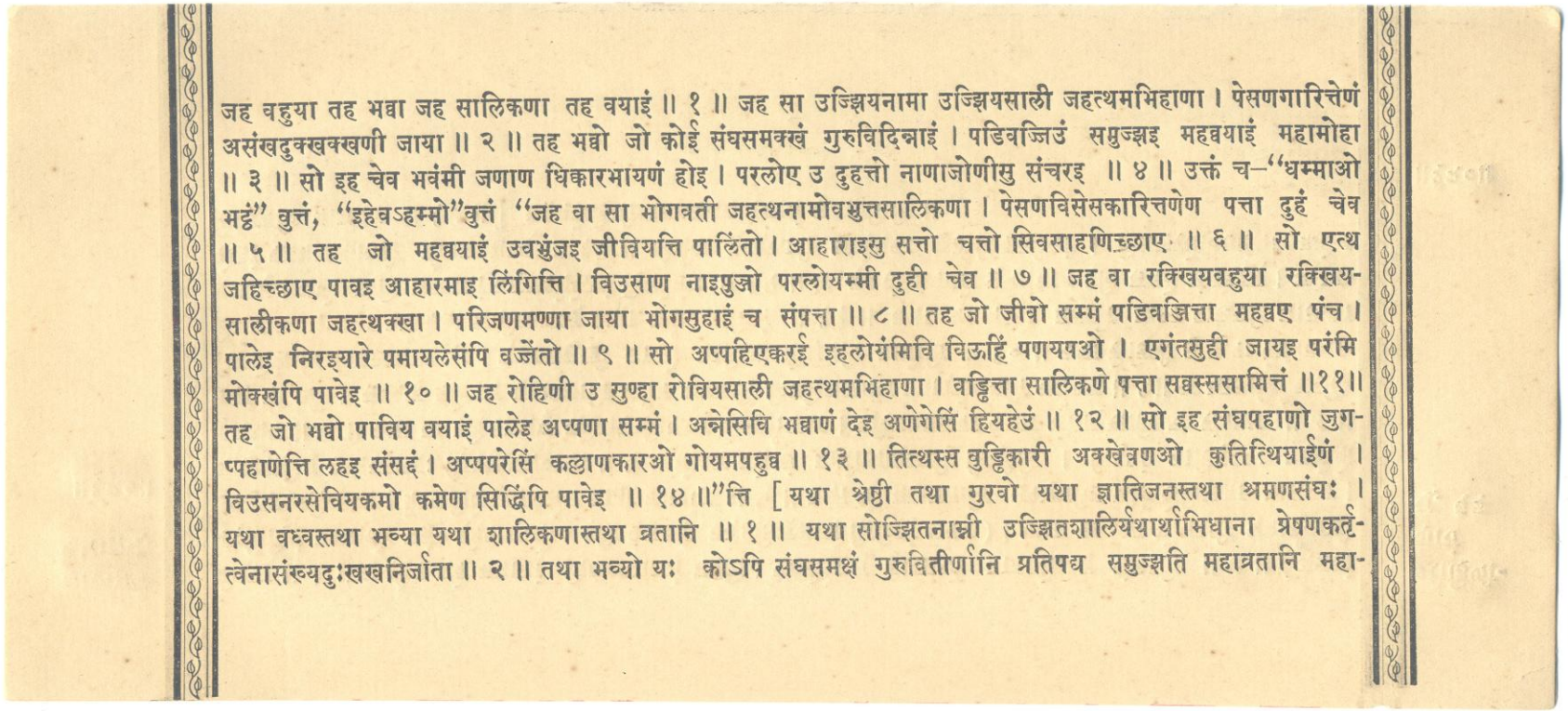


नविनिर्गते देशान्तरगमनप्रवृत्ते आधारः–आश्रयो भूरिव आलम्बनं-वरत्रादिकमिव प्रतिबन्धः-प्रमार्जनिकाशलाकादीनां लतादंवरक इव कुलगृहं-पितृगृहं तद्वर्गो मातापित्रादिः संरक्षति अनाशनतः सङ्गोपयति संवरणतः संवर्द्धयति बहुलकरणतः 'छोल्लेइ'त्ति निस्तुषीकरोति 'अणुगिलइ'त्ति भक्षयति, कचित्फोल्लेईत्येतदेव दृश्यते, तत्र च भक्षयतीत्यर्थः, 'पत्तिय'त्ति सञ्जातपत्राः 'वत्तिय'त्ति व्रीहीणां पत्राणि मध्यशलाकापरिवेष्टनेन नालरूपतया वृत्तानि भवन्ति तद्वृत्ततया जातवृत्तत्वाद्वर्त्तिताः शाखादीनां वा समतया वृत्तीभूताः सन्तो वर्त्तिता अभिधीयन्ते, पाठान्तरेण 'तइया व'त्ति सञ्जातत्वच इत्यर्थः, गर्भिता–जातगर्भा डोडकिता इत्यर्थः, प्रसूताः–कणिशानां पत्रगर्भेभ्यो विनिर्गमात् आगतगन्धा–जातसुरभिगन्धाः आयातगन्धा वा दूरयायिगन्धा इत्यर्थः, क्षीरकिताः–सञ्जातक्षीरकाः बद्धफलाः क्षीरस्य फलतया बन्धनात् जातफला इत्यर्थः, पक्काः–काठिन्यमुपगताः, पर्यायागताः पर्यायगता वा सर्वनिष्पन्नतां गता इत्यर्थः, 'सल्लइपत्तय'त्ति सल्लकी वृक्षविशेषस्तस्या इव पत्रकाणि–दलानि कुतोऽपि साधम्म्यर्यात् सञ्जातानि येषां ते तथेति, गमनिकैवेयं पाठान्तरेण शल्यकिताः–शुष्कपत्रतया सञ्जातशलाकाः पत्रकिताः–सञ्जातकुत्सितकाऽल्पपत्राः, 'हरियपव्वकंड'त्ति हरितानि–हरितालवर्णानि नीलानि पर्वकाण्डानि–नालानि येषां ते तथा, जाताश्चाप्यभूवन्, 'नवपज्जाणएहिं'ति नवं—प्रत्यग्रं पायनं—लोहकारेणातापितं कुट्टितं तीक्ष्णधारीकृतं पुनस्तापितानां जले निबोलनं येषां तानि तथा तैः, 'असिएहिं'ति दात्रैः, 'अखंडाणं'ति सकलानां अस्फुटितानां–असञ्जातराजीकानां छड २ इत्येवमनुकरणतः सूर्पादिना स्फुटाः–स्फुटीकृता शोधिता इत्यर्थः स्पृष्टा वा पाठान्तरेण पूता वा ये ते तथा तेषां 'मागहए पत्थए'त्ति "दो असईओ पसई दो पसइओ उ सेइया होइ। चउसेइओ उ कुडओ चउकुडओ पत्थओ

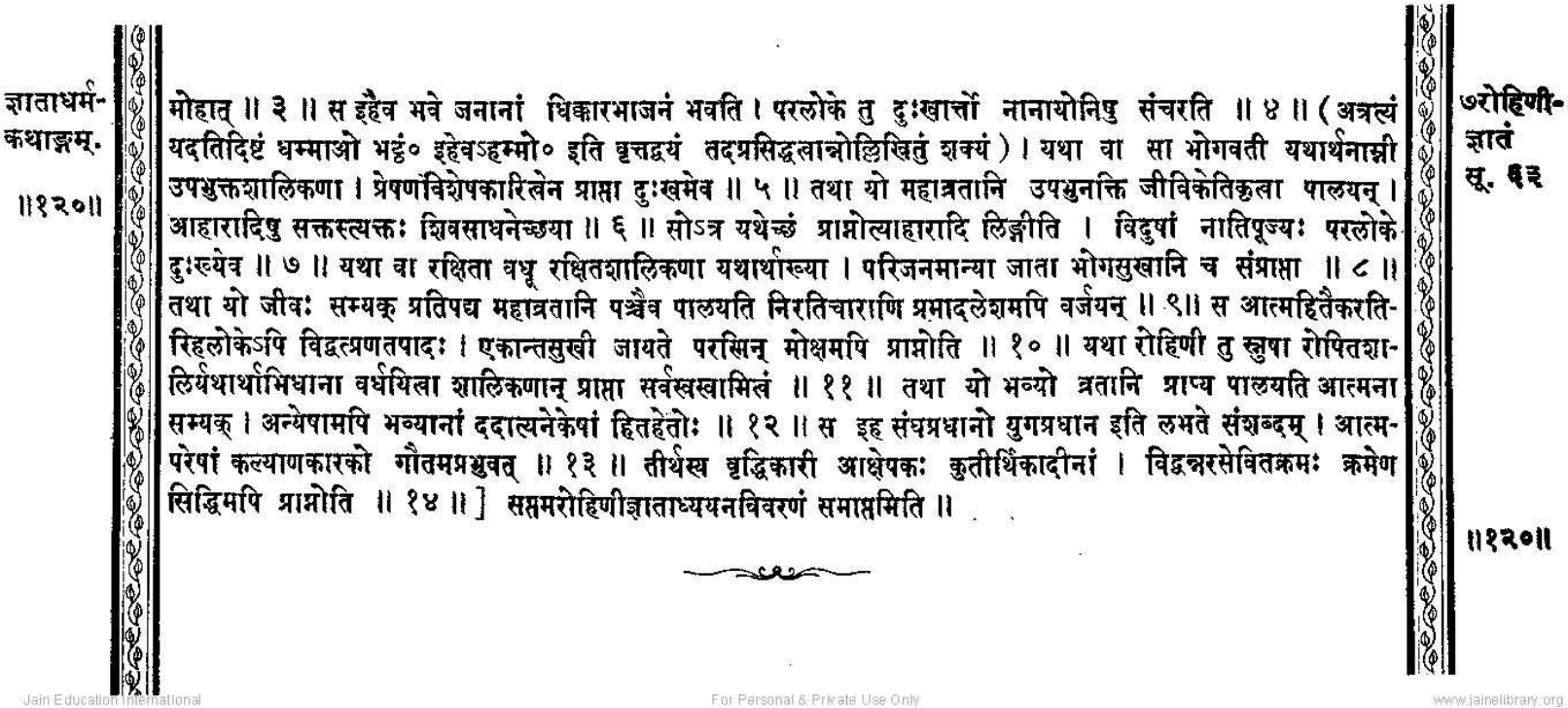
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नेउ ॥ १ ॥"त्ति [द्वे असृती प्रसृतिः द्वे प्रसृती तु सेतिका भवति । चतुःसेतिकः कुडवश्चतुष्कुडवः प्रस्थको ज्ञेयः ॥ १ ॥] अनेन प्रमाणेन मगधदेशव्यवहृतः प्रस्थो मागधप्रस्थः, 'उपलिंपंति' घटकमुखस्य तत्पिधानकस्य च गोमयादिना रन्ध्रं भञ्जन्ति 'लिंपेंति' घटमुखं तत्स्थगितं च छगणादिना पुनर्मसृणीकुर्वन्ति, लाञ्छितं रेखादिना, मुद्रितं मृन्मयमुद्रादानेन तत्कुर्वन्ति, मुरलो–मानविशेषः, खलकं–धान्यमलनस्थण्डिलं, चतुष्प्रस्थं आढकः आढकानां षष्ट्या जघन्यः कुम्भः अशीत्या मध्यमः शतेनोत्कृष्ट इति, **'क्षारोष्ट्रिकां'** भस्मपरिष्ठापिकां **'कचवरोज्झिकां'** अवकरशोधिकां 'सम्मृक्षिकां' प्रातर्गृहाङ्गणे जलच्छटकदायिकां, पाठान्तरेण **'संपुच्छिय'**त्ति तत्र सम्प्रोञ्छिकां पादादिलूषिकां **'सम्मार्जिकां'** गृहस्यान्तर्बहिश्च बहुकरिकावाहिकां **'पादोदकदायिकां'** पादशौचदायिकां स्नानोदकदायिकां प्रतीतां, बाह्यानि प्रेषणानि कर्माणि करोति या सा **'बाहिरपेसणगारियत्ति भणिया,'** **'कंडयंतिका'**मिति अनुकम्पिता कण्डयन्तीति–तन्दुलादीन् उदूखलादौ क्षोदयन्तीति कंडयन्तिका तां, एवं **'कुट्टयन्तिकां'** तिलादीनां चूर्णनकारिकां **'पेषयन्तिकां'** गोधूमादीनां घरट्टादिना पेषणकारिकां **'रुन्धयंतिकां'** यन्त्रके व्रीहिकोद्रवादीनां निस्तुषत्वकारिकां **'रन्धयन्तिकां'** ओदनस्य पाचिकां **'परिवेषयन्तिकां'** भोजनपरिवेषणकारिकां **'परिभाजयन्तिकां'** पर्वदिने स्वजनगृहेषु खण्डखाद्याद्यैः परिभाजनकारिकां महानसे नियुक्ता महानसिकी तां स्थापयति, **'सगडीसागडं'**ति शकट्यश्च–गन्त्र्यः शकटानां समूहः शाकटं च शकटीशाकटं गड्डीओ गडिया यत्ति उक्तं भवति, **'दलाह'**त्ति दत्त प्रयच्छतेत्यर्थः, 'जाणं'ति येन 'ण' मित्यलङ्कारे, **'प्रतिनिर्यातयामि'** समर्पयामीति, अस्य च ज्ञातस्यैवं विशेषेणोपनयनं निगदति, यथा–'जह सेट्ठी तह गुरुणो जह णाइजणो तहा समणसंघो ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



जह वहुया तह भवा जह सालिकणा तह वयाइं ॥ १ ॥ जह सा उज्झियनामा उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा । पेसणगारित्तेणं असंखदुक्खक्खणी जाया ॥ २ ॥ तह भवो जो कोई संघसमक्खं गुरुविदिन्नाइं । पडिवज्जिउं समुज्झइ महव्वयाइं महामोहा ॥ ३ ॥ सो इह चेव भवंमी जणाण धिक्कारभायणं होइ । परलोए उ दुहत्तो नाणाजोणीसु संचरइ ॥ ४ ॥ उक्तं च–"धम्माओ भट्ठं" वुत्तं, "इहेवऽहम्मो"वुत्तं "जह वा सा भोगवती जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा । पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुहं चेव ॥ ५ ॥ तह जो महव्वयाइं उवभुंजइ जीवियत्ति पालिंतो । आहाराइसु सत्तो चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥ ६ ॥ सो एत्थ जहिच्छाए पावइ आहारमाइ लिंगित्ति । विउसाण नाइपुज्जो परलोयम्मी दुही चेव ॥ ७ ॥ जह वा रक्खियवहुया रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा । परिजणमण्णा जाया भोगसुहाइं च संपत्ता ॥ ८ ॥ तह जो जीवो सम्मं पडिवज्जित्ता महव्वए पंच । पालेइ निरइयारे पमायलेसंपि वज्जेंतो ॥ ९ ॥ सो अप्पहिएकरई इहलोयंमिवि विऊहिं पणयपओ । एगंतसुही जायइ परंमि मोक्खंपि पावेइ ॥ १० ॥ जह रोहिणी उ सुण्हा रोवियसाली जहत्थमभिहाणा । वड्ढित्ता सालिकणे पत्ता सव्वस्ससामित्तं ॥११॥ तह जो भवो पावियं वयाइं पालेइ अप्पणा सम्मं । अन्नेसिंवि भव्वाणं देइ अणेगेसिं हियहेउं ॥ १२ ॥ सो इह संघपहाणो जुगप्पहाणेत्ति लहइ संसद्दं । अप्पपरेसिं कल्लाणकारओ गोयमपहुव्व ॥ १३ ॥ तित्थस्स वुड्ढिकारी अक्खेवणओ कुतित्थियाईणं । विउसनरसेवियकमो कमेण सिद्धिंपि पावेइ ॥ १४ ॥"त्ति [यथा श्रेष्ठी तथा गुरवो यथा ज्ञातिजनस्तथा श्रमणसंघः । यथा वध्वस्तथा भव्या यथा शालिकणास्तथा व्रतानि ॥ १ ॥ यथा सोज्झितनाम्नी उज्झितशालिर्यथार्थाभिधाना प्रेषणकर्तृत्वेनासंख्यदुःखनिर्जाता ॥ २ ॥ तथा भव्यो यः कोऽपि संघसमक्षं गुरुवितीर्णानि प्रतिपद्य समुज्झति महाव्रतानि महा-



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१२०॥

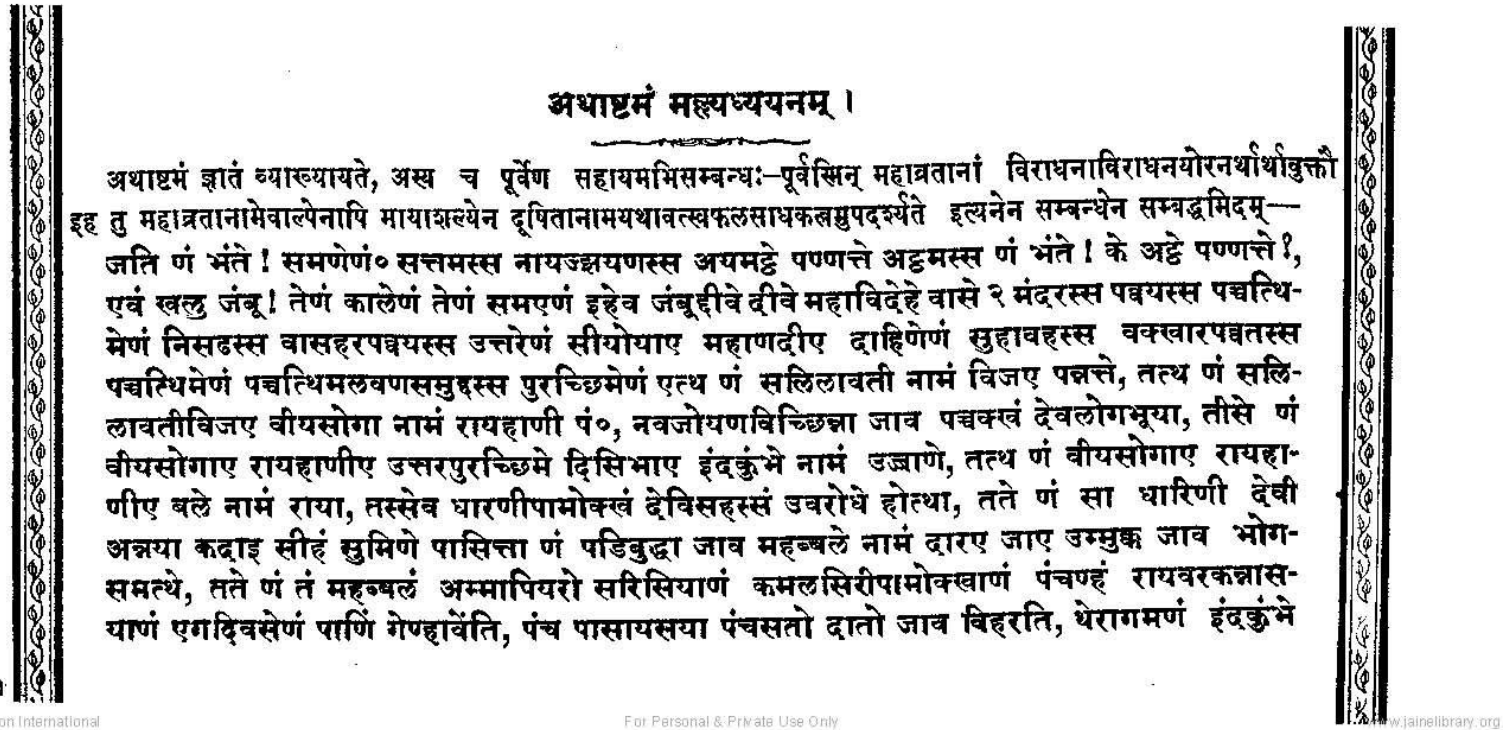
मोहात् ॥ ३ ॥ स इहैव भवे जनानां धिक्कारभाजनं भवति । परलोके तु दुःखार्त्तो नानायोनिषु संचरति ॥ ४ ॥ (अत्रत्यं यदतिदिष्टं धम्माओ भट्ठं० इहेवऽहम्मो० इति वृत्तद्वयं तदप्रसिद्धत्वान्नोल्लिखितुं शक्यं) । यथा वा सा भोगवती यथार्थनाम्नी उपभुक्तशालिकणा । प्रेषणविशेषकारित्वेन प्राप्ता दुःखमेव ॥ ५ ॥ तथा यो महाव्रतानि उपभुनक्ति जीविकेतिकृत्वा पालयन् । आहारादिषु सक्तस्त्यक्तः शिवसाधनेच्छया ॥ ६ ॥ सोऽत्र यथेच्छं प्राप्नोत्याहारादि लिङ्गीति । विदुषां नातिपूज्यः परलोके दुःख्येव ॥ ७ ॥ यथा वा रक्षिता वधू रक्षितशालिकणा यथार्थाख्या । परिजनमान्या जाता भोगसुखानि च संप्राप्ता ॥ ८ ॥ तथा यो जीवः सम्यक् प्रतिपद्य महाव्रतानि पञ्चैव पालयति निरतिचाराणि प्रमादलेशमपि वर्जयन् ॥ ९॥ स आत्महितैकरतिरिहलोकेऽपि विद्वत्प्रणतपादः । एकान्तसुखी जायते परस्मिन् मोक्षमपि प्राप्नोति ॥ १० ॥ यथा रोहिणी तु स्नुषा रोपितशालिर्यथार्थाभिधाना वर्धयित्वा शालिकणान् प्राप्ता सर्वस्वस्वामित्वं ॥ ११ ॥ तथा यो भव्यो व्रतानि प्राप्य पालयति आत्मना सम्यक् । अन्येषामपि भव्यानां ददात्यनेकेषां हितहेतोः ॥ १२ ॥ स इह संघप्रधानो युगप्रधान इति लभते संशब्दम् । आत्मपरेषां कल्याणकारको गौतमप्रभुवत् ॥ १३ ॥ तीर्थस्य वृद्धिकारी आक्षेपकः कुतीर्थिकादीनां । विद्वन्नरसेवितक्रमः क्रमेण सिद्धिमपि प्राप्नोति ॥ १४ ॥] सप्तमरोहिणीज्ञाताध्ययनविवरणं समाप्तमिति ॥

७रोहिणी-ज्ञातं सू. ६३

॥१२०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-७ परिसमाप्तम्



अथाष्टमं मल्ल्यध्ययनम् ।

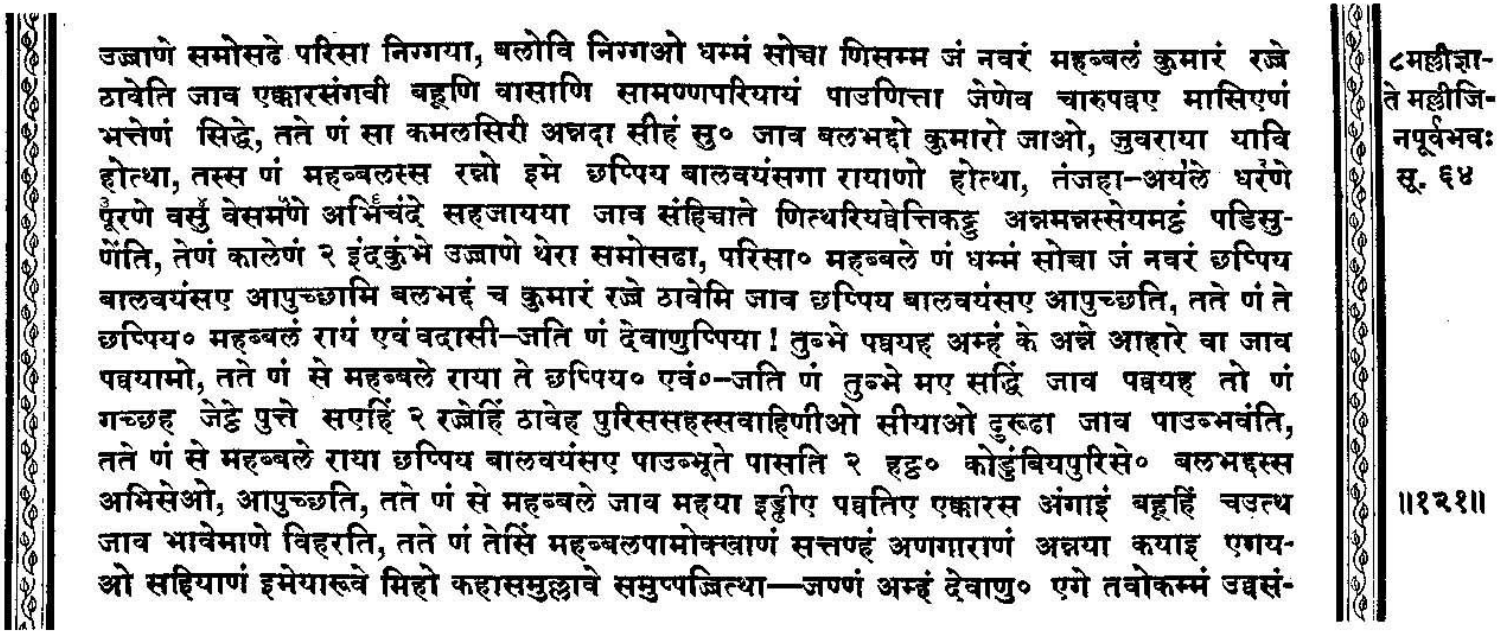
अथाष्टमं ज्ञातं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वस्मिन् महाव्रतानां विराधनाविराधनयोरनर्थार्थावुक्तौ इह तु महाव्रतानामेवाल्पेनापि मायाशल्येन दूषितानामयथावत्स्वफलसाधकत्वमुपदर्श्यते इत्यनेन सम्बन्धेन सम्बद्धमिदम्— जति णं भंते ! समणेणं० सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स णं भंते ! के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं सीयोयाए महाणदीए दाहिणेणं सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं सलिलावती नामं विजए पन्नत्ते, तत्थ णं सलिलावतीविजए वीयसोगा नामं रायहाणी पं०, नवजोयणविच्छिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोगभूया, तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे, तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले नामं राया, तस्सेव धारणीपामोक्खं देविसहस्सं उवरोधे होत्था, तते णं सा धारिणी देवी अन्नया कदाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव महब्बले नामं दारए जाए उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे, तते णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरीपामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति, पंच पासायसया पंचसतो दातो जाव विहरति, थेरागमणं इंदकुंभे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- ८ "मल्ली" आरभ्यते

भगवती मल्ली तिर्थंकर-चरित्रं

प्रत सूत्रांक [६४] + गाथा: दीप अनुक्रम [७६-८०]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥१२१॥

उज्जाणे समोसढे परिसा निग्गया, बलोवि निग्गओ धम्मं सोचा णिसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेति जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं सिद्धे, तते णं सा कमलसिरी अन्नदा सीहं सु० जाव बलभद्दो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स णं महब्बलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयंसगा रायाणो होत्था, तंजहा–अयले धरणे पूरणे वसु वेसमणे अभिचंदे सहजायया जाव संहिचाते णित्थरियवेत्तिकट्टु अन्नमन्नस्सेयमट्ठं पडिसुणेंति, तेणं कालेणं २ इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा, परिसा० महब्बले णं धम्मं सोचा जं नवरं छप्पिय बालवयंसए आपुच्छामि बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि जाव छप्पिय बालवयंसए आपुच्छति, तते णं ते छप्पिय० महब्बलं रायं एवं वदासी–जति णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पव्वयह अम्हं के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामो, तते णं से महब्बले राया ते छप्पिय० एवं०–जति णं तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तो णं गच्छह जेट्ठे पुत्ते सएहिं २ रज्जेहिं ठावेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवंति, तते णं से महब्बले राया छप्पिय बालवयंसए पाउब्भूते पासति २ हट्ठ० कोडुंबियपुरिसे० बलभद्दस्स अभिसेओ, आपुच्छति, तते णं से महब्बले जाव महया इड्ढीए पव्वतिए एक्कारस अंगाइं बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरति, तते णं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्णं अम्हं देवाणु० एगे तवोकम्मं उवसं-

८मल्लीज्ञाते मल्लीजिनपूर्वभवः सू. ६४ ॥१२१॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्ली तिर्थंकर-चरित्रं, मल्लिजिनस्य पुर्वभव:

प्रत सूत्रांक [६४] + गाथा: दीप अनुक्रम [७६-८०]

पज्जित्ता णं विहरति तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ बहूहिं चउत्थ जाव विहरति, तते णं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिणामगोयं कम्मं निवत्तेसु—जति णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ततो से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, जति णं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ततो से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, एवं अट्ठमं तो दसमं अह दसमं तो दुवालसं, इमेहि य णं वीसाएहि य कारणेहिं आसेवियबहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निवत्तिंसु, तं०–"अरहंत १ सिद्ध २ पवयण ३ गुरु ४ थेर ५ बहुस्सुए ६ तवस्सीसुं ७ ॥ वच्छल्लया य तेसिं अभिक्ख णाणोवओगे य ८ ॥ १ ॥ दंसण ९ विणए १० आवस्सए य ११ सीलव्वए निरइयारं १२ । खणलव १३ तव १४ चियाए १५ वेयावच्चे १६ समाही य १७ ॥ २ ॥ अप्पुव्वणाणगहणे १८ सुयभत्ती १९ पवयणे पभावणया २० । एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीओ ॥ ३ ॥" [अर्हत्सिद्धप्रवचनगुरुस्थविरबहुश्रुततपस्विवत्सलता अभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगश्च ॥ १ ॥ दर्शनं विनय आवश्यकानि च शीलव्रतं निरतिचारं क्षणलवः तपः त्यागः वैयावृत्त्यं समाधिश्च ॥ २ ॥ अपूर्वज्ञानग्रहणं श्रुतभक्तिः प्रवचने प्रभावना एतैः कारणैः तीर्थकरत्वं लभते जीवः ॥३॥] तए णं ते महाब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव एगराइयं उव०, तते णं ते मह-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	भगवती मल्ली तिर्थंकर-चरित्रं, मल्लिजिनस्य पुर्वभवः, २०-स्थानक्स्य नामानि

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

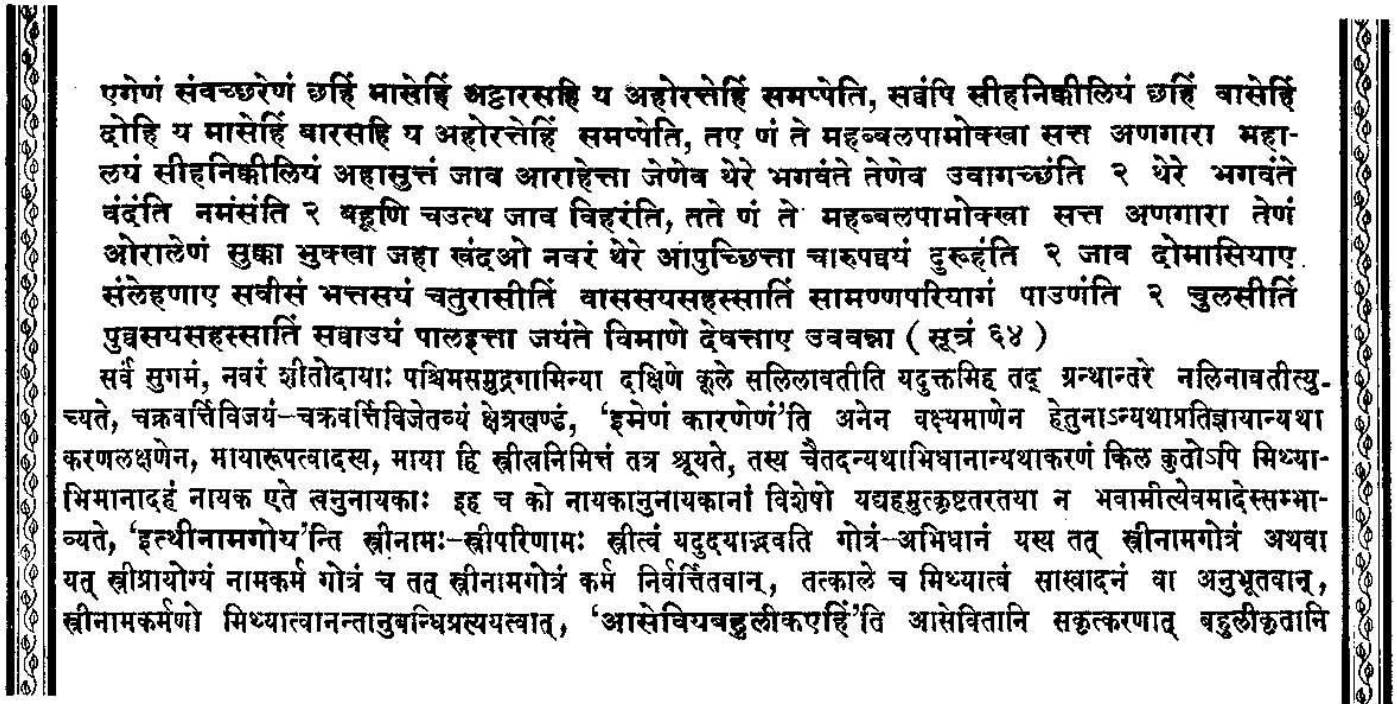
प्रत सूत्रांक [६४] + गाथा: दीप अनुक्रम [७६-८०]

ब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तं०–चउत्थं करेंति २ सव्वकामगुणियं पारेंति २ छट्ठं करेंति २ चउत्थं करेंति २ अट्ठमं करेंति २ छट्ठं करेंति २ दसमं करेंति २ अट्ठमं करेंति २ दुवालसमं करेंति २ दसमं करेंति २ चाउद्दसमं करेंति २ दुवालसमं करेंति २ सोलसमं करेंति २ चोद्दसमं करेंति २ अट्ठारसमं करेंति २ सोलसमं करेंति २ वीसइमं करेंति २ अट्ठारसमं करेंति २ वीसइमं करेंति २ सोलसमं करेंति २ अट्ठारसमं करेंति २ चोद्दसमं करेंति २ सोलसमं करेंति २ दुवालसमं करेंति २ चाउद्दसमं करेंति २ दसमं करेंति २ दुवालसमं करेंति २ अट्ठमं करेंति २ दसमं करेंति २ छट्ठं करेंति २ अट्ठमं करेंति २ चउत्थं करेंति २ छट्ठं करेंति २ चउ० क० सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेंति, एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहि य अहोरत्तेहि य अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ, तयाणंतरं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेंति नवरं विगइवज्जं पारेंति, एवं तच्चावि परिवाडी नवरं पारणए अलेवाडं पारेंति, एवं चउत्थावि परिवाडी नवरं पारणए आयंबिलेण पारेंति, तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति २ थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति २ एवं वयासी–इच्छामो णं भंते! महालयं सीहनिक्कीलियं तहेव जहा खुड्डागं नवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडीए कालो

॥१२२॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्ली तिर्थंकर-चरित्रं, मल्लिजिनस्य पुर्वभवः, तपसः वर्णनं



एगेणं संवच्छरेणं छहिं मासेहिं अट्ठारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेति, सवंपि सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं दोहि य मासेहिं बारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेति, तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति २ थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति २ बहूणि चउत्थ जाव विहरंति, तते णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं दुरूहंति २ जाव दोमासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं चतुरासीतिं वाससयसहस्सातिं सामण्णपरियागं पाउणंति २ चुलसीतिं पुव्वसयसहस्सातिं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववन्ना (सूत्रं ६४)

सर्वं सुगमं, नवरं शीतोदायाः पश्चिमसमुद्रगामिन्या दक्षिणे कूले सलिलावतीति यदुक्तमिह तद् ग्रन्थान्तरे नलिनावतीत्युच्यते, चक्रवर्त्तिविजयं–चक्रवर्त्तिविजेतव्यं क्षेत्रखण्डं, 'इमेणं कारणेणं'ति अनेन वक्ष्यमाणेन हेतुनाऽन्यथाप्रतिज्ञायान्यथाकरणलक्षणेन, मायारूपत्वादस्य, माया हि स्त्रीवनिमित्तं तत्र श्रूयते, तस्य चैतदन्यथाभिधानान्यथाकरणं किल कुतोऽपि मिथ्याभिमानादहं नायक एते ममानुनायकाः इह च को नायकानुनायकानां विशेषो यद्यहमुत्कृष्टतरतया न भवामीत्येवमादेस्सम्भाव्यते, 'इत्थीनामगोयं'न्ति स्त्रीनामः–स्त्रीपरिणामः स्त्रीत्वं यदुदयाद्भवति गोत्रं–अभिधानं यस्य तत् स्त्रीनामगोत्रं अथवा यत् स्त्रीप्रायोग्यं नामकर्म गोत्रं च तत् स्त्रीनामगोत्रं कर्म निर्वर्त्तितवान्, तत्काले च मिथ्यात्वं साक्षादनं वा अनुभूतवान्, स्त्रीनामकर्मणो मिथ्यात्वानन्तानुबन्धिप्रत्ययत्वात्, 'आसेवियबहुलीकएहिं'ति आसेवितानि सकृत्करणात् बहुलीकृतानि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [६४] + गाथाः

दीप अनुक्रम [७६-८०]

बहुशः सेवनात् यानि तैः, 'अरहंतगाहा' अर्हदादीनि सप्त पदानि, तत्र प्रवचनं–श्रुतज्ञानं तदुपयोगानन्यत्वाद्वा सङ्घः गुरवो-धर्मोपदेशकाः स्थविराः–जातिश्रुतपर्यायभेदभिन्नास्तत्र जातिस्थविरः षष्टिवर्षः श्रुतस्थविरः समवायधरः पर्यायस्थविरो विंशतिवर्ष-पर्यायः बहुश्रुताः परस्परापेक्षया तपस्विनः–अनशनादिविचित्रतपोयुक्ताः सामान्यसाधवो वा, इह च सप्तमी षष्ठ्यर्थे द्रष्टव्या, ततोऽर्हत्सिद्धप्रवचनगुरुस्थविरबहुश्रुततपस्विनां वत्सलतया–वात्सल्येनानुरागयथावस्थितगुणोत्कीर्त्तनानुरूपोपचारलक्षणया तीर्थ-करनामकर्म्म बद्धवानिति सम्बन्धः, 'तेसिं'ति ये एते जगद्वन्दनीया अर्हदादयस्तेषां,अभीक्ष्णं–अनवरतं ज्ञानोपयोगे च सति तद् बध्यते इत्यर्थः, 'दंसण'गाहा, दर्शनं–सम्यक्त्वं ९, विनयो ज्ञानादिविषयः, तयोर्निरतिचारः संस्तीर्थकरत्वं बद्धवान् १०, आवश्यकं–अवश्यकर्त्तव्यं संयमव्यापारनिष्पन्नं तस्मिंश्च निरतिचारः सन्निति ११ तथा शीलानि च–उत्तरगुणा व्रतानि च–मूलगुणास्तेषु पुन-र्निरतिचार इति १२, क्षणलवग्रहणं कालोपलक्षणं, क्षणलवादिषु संवेगभावनाध्यानासेवनतश्च निर्वर्त्तितवान् १३ तथा तपस्त्यागयोः सतो निर्वर्त्तितवान्, तत्र तपसा चतुर्थादिना १४ त्यागेन च यतिजनोचितदानेनेति १५, तथा वैयावृत्त्ये सति दशविधे निर्वर्त्तितवान् १६ समाधौ च गुर्वादीनां कार्यकरणद्वारेण चित्तस्वास्थ्योत्पादने सति निर्वर्त्तितवान् १७, द्वितीयगाथायां नव, 'अप्पुव्वगाहा' अपूर्वज्ञानग्रहणे सति निर्वर्त्तितवान् १८ श्रुतभक्तियुक्ता प्रवचनप्रभावना श्रुतभक्तिप्रवचनप्रभावना तया च निर्वर्त्ति-तवान् श्रुतबहुमानेन १९ यथाशक्ति मार्गदेशनादिकया च प्रवचनप्रभावनयेति भावः २०, तीर्थकरत्वकारणतायामुक्ताया हेतु-विंशतेः सर्वजीवसाधारणतां दर्शयन्नाह–एतैः कारणैस्तीर्थकरत्वं अन्योऽपि लभते जीव इति, पाठान्तरे तु 'एसो'त्ति एष महा-बलो लब्धवानिति 'जाव एगरायं'ति इह यावत्करणात् 'दोमासियं तेमासियं चउम्मासियं पंचमासियं छम्मासियं सत्तमा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्ली तिर्थंकर-चरित्रं, मल्लिजिनस्य पुर्वभवः, तपसः वर्णनं, विंशतिः स्थानक्स्य अर्थाः

प्रत सूत्रांक [६४] + गाथा: दीप अनुक्रम [७६-८०]

सियं पढमसत्तराइंदियं बीयसत्तराइंदियं तच्चसत्तराइंदियं अहोराइंदियं'ति द्रष्टव्यमिति, 'सीहनिक्कीलियं'ति सिंहनिष्क्रीडितमिव सिंहनिष्क्रीडितं, सिंहो हि विहरन् पश्चाद्भागमवलोकयति एवं यत्र प्राक्तनं तप आवर्त्योत्तरोत्तरं तद् विधीयते तत्तपः सिंहनिष्क्रीडितं, तच्च द्विविधं–महत् क्षुद्रकं चेति, तत्र क्षुल्लकमनुलोमगतौ चतुर्भक्तादि विंशतितमपर्यन्तं प्रतिलोमगतौ तु विंशतितमादिकं चतुर्थान्तं, उभयं मध्येऽष्टादशकोपेतं, चतुर्थषष्ठादीनि तु एकैकवृद्ध्यैकोपवासादीनि, स्थापना चेयं भवति-

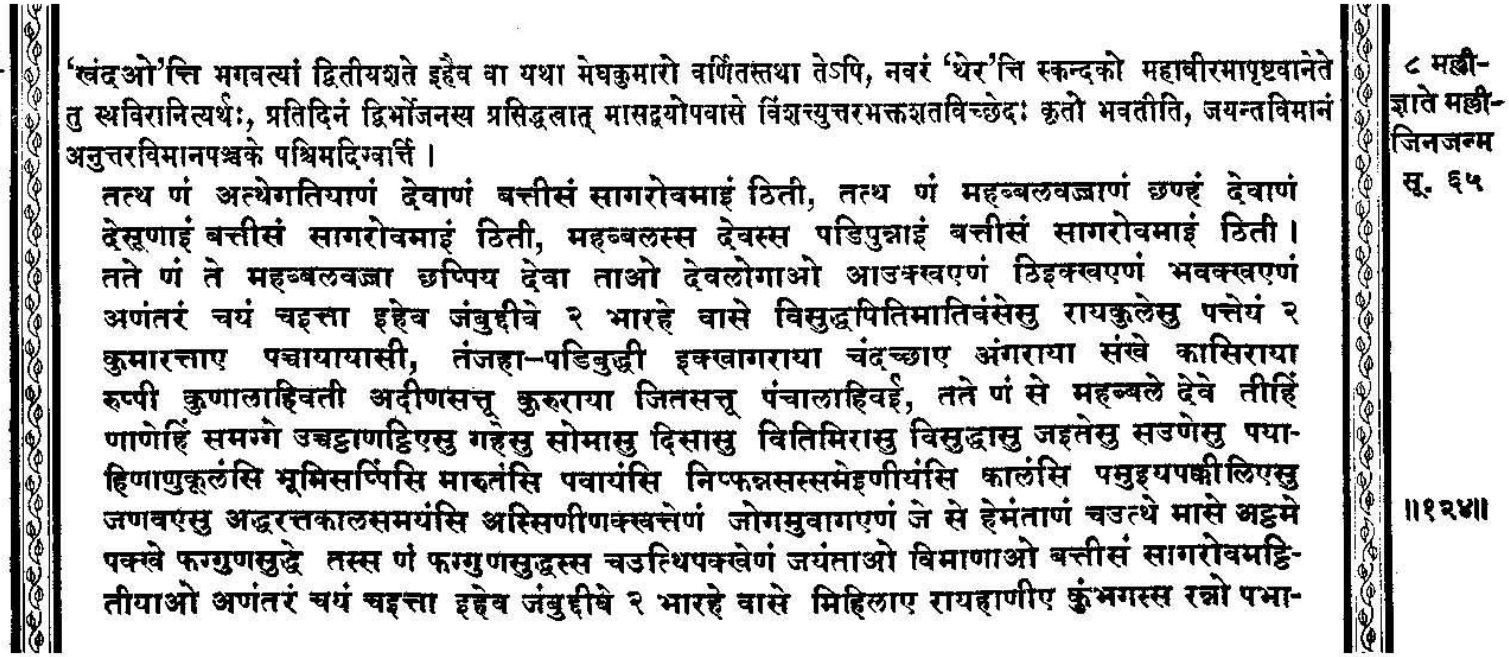
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	

इह चत्वारि २ चतुर्थादीनि त्रीण्यष्टादशानि द्वे विंशतितमे तदेवं चतुष्पञ्चाशदधिकं शतं तपोदिनानां त्रयस्त्रिंशच्च पारणकदिनानामेवमेकस्यां परिपाट्यां षण्मासाः सप्तरात्रिन्दिवाधिका भवन्ति, प्रथमपरिपाट्यां च पारणकं सर्वकामगुणिकं, सर्वे कामगुणाः–कमनीयपर्याया विकृत्यादयो विद्यन्ते यत्र तत्तथा, द्वितीयायां निर्विकृतं तृतीयायामलेपकारि चतुर्थ्यामायामाम्लमिति, प्रथमपरिपाटीप्रमाणं चतुर्गुणं सर्वप्रमाणं भवतीति । महासिंहनिष्क्रीडितमप्येवमेव भवति, नवरं चतुर्थादि चतुस्त्रिंशत्पर्यन्तं प्रत्यावृत्तौ चतुस्त्रिंशादिकं चतुर्थपर्यन्तं मध्ये द्वात्रिंशोपेतं सर्वं स्वयमूहनीयं, स्थापना चास्य

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	१५
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६			

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्ली तिर्थंकर-चरित्रं, मल्लिजिनस्य पुर्वभवः, तपसः वर्णनं



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥१२४॥

'खंदओ'त्ति भगवत्यां द्वितीयशते इहैव वा यथा मेघकुमारो वर्णितस्तथा तेऽपि, नवरं 'थेर'त्ति स्कन्दको महावीरमापृष्टवानेते तु स्थविरानित्यर्थः, प्रतिदिनं द्विर्भोजनस्य प्रसिद्धत्वात् मासद्वयोपवासे विंशत्युत्तरभक्तशतविच्छेदः कृतो भवतीति, जयन्तविमानं अनुत्तरविमानपञ्चके पश्चिमदिग्वर्त्ति ।

तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती, तत्थ णं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती, महब्बलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती। तते णं ते महब्बलवज्जा छप्पिय देवा ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे विसुद्धपितिमातिवंसेसु रायकुलेसु पत्तेयं २ कुमारत्ताए पचायायासी, तंजहा–पडिबुद्धी इक्खागराया चंदच्छाए अंगराया संखे कासिराया रुप्पी कुणालाहिवती अदीणसत्तू कुरुराया जितसत्तू पंचालाहिवई, तते णं से महब्बले देवे तीहिं णाणेहिं समग्गे उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु जइतेसु सउणेसु पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुतंसि पवायंसि निप्फन्नसस्समेइणीयंसि कालंसि पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे फग्गुणसुद्धे तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थिपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीसं सागरोवमट्ठितीयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रन्नो पभा-

८ मल्ली-ज्ञाते मल्ली-जिनजन्म सू. ६५

॥१२४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६५]

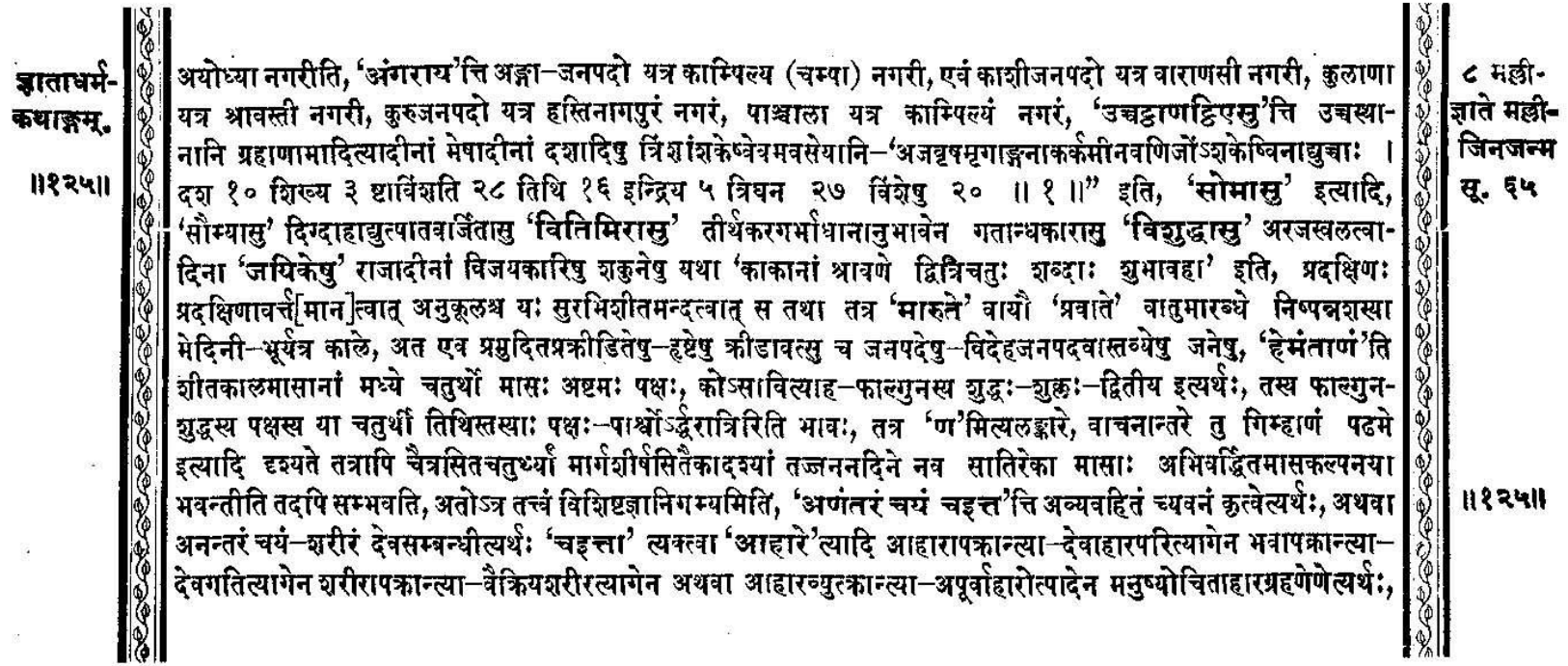
दीप अनुक्रम [८१]

वतीए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए सरीरवक्कंतीए भववक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कंते, तं रयणिं च णं चोद्दस महासुमिणा वन्नओ, भत्तारकहणं सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरति। तते णं तीसे पभावतीए देवीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूते–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं जलथलयभासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेणं अत्थुयपच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सण्णिवन्नाओ य विहरंति, एगं च महं सिरीदामगंडं पाडलमल्लियचंपयअसोगपुन्नागनागमरुयगदमणगअणोज्जकोज्जय-पउरं परमसुहफासदरिसणिज्जं महया गंधद्धणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ डोहलं विणेंति, तते णं तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवं डोहलं पाउब्भूतं पासित्ता अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जलथ-लय० जाव दसद्धवन्नमल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभगस्स रन्नो भवणंसि वा० साहरंति, एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव मुयंतं उवणेंति, तए णं सा पभावती देवी जलथलय जाव मल्लेणं डोहलं विणेति, तए णं सा पभावतीदेवी पसत्थडोहला जाव विहरइ, तए णं सा पभावतीदेवी नवण्हं मासाणं अद्ध-ट्ठमाण य रत्तिंदियाणं जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्स णं० एक्कारसीए पुव्वरत्ता-वरत्त० अस्सिणीनक्खत्तेणं उच्चट्ठाण० जाव पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोयाऽऽरोयं एकूणवीसतिमं तित्थयरं पयाया (सूत्रं ६५)

'इक्खागराय'त्ति इक्ष्वाकूणां–इक्ष्वाकुवंशजानां अथवा इक्ष्वाकुजनपदस्य राजा, स च कोशलजनपदोऽप्यभिधीयते यत्र

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्लिजिनस्य जन्मनः वर्णनं



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१२५॥

अयोध्या नगरीति, 'अंगराय'त्ति अङ्गा–जनपदो यत्र काम्पिल्य (चम्पा) नगरी, एवं काशीजनपदो यत्र वाराणसी नगरी, कुलाणा यत्र श्रावस्ती नगरी, कुरुजनपदो यत्र हस्तिनागपुरं नगरं, पाञ्चाला यत्र काम्पिल्यं नगरं, 'उच्चट्ठाणट्ठिएसु'त्ति उच्चस्थानानि ग्रहाणामादित्यादीनां मेषादीनां दशादिषु त्रिंशांशकेष्वेवमवसेयानि–'अजवृषमृगाङ्गनाकर्कमीनवणिजोऽशकेष्विनाद्युच्चाः । दश १० शिख्य ३ श्वाविंशति २८ तिथि १६ इन्द्रिय ५ त्रिघन २७ विंशेषु २० ॥ १ ॥" इति, 'सोमासु' इत्यादि, 'सौम्यासु' दिग्दाहाद्युत्पातवर्जितासु 'वितिमिरासु' तीर्थकरगर्भाधानानुभावेन गतान्धकारासु 'विशुद्धासु' अरजस्कलत्वादिना 'जयिकेषु' राजादीनां विजयकारिषु शकुनेषु यथा 'काकानां श्रावणे द्वित्रिचतुः शब्दाः शुभावहा' इति, प्रदक्षिणः प्रदक्षिणावर्त्त[मान]त्वात् अनुकूलश्च यः सुरभिशीतमन्दत्वात् स तथा तत्र 'मारुते' वायौ 'प्रवाते' वातुमारब्धे निष्पन्नशस्या मेदिनी–भूर्यत्र काले, अत एव प्रमुदितप्रक्रीडितेषु–हृष्टेषु क्रीडावत्सु च जनपदेषु–विदेहजनपदवास्तव्येषु जनेषु, 'हेमंताणं'ति शीतकालमासानां मध्ये चतुर्थो मासः अष्टमः पक्षः, कोऽसावित्याह–फाल्गुनस्य शुद्धः–शुक्लः–द्वितीय इत्यर्थः, तस्य फाल्गुनशुद्धस्य पक्षस्य या चतुर्थी तिथिस्तस्याः पक्षः–पार्श्वोऽर्द्धरात्रिरिति भावः, तत्र 'ण'मित्यलङ्कारे, वाचनान्तरे तु गिम्हाणं पढमे इत्यादि दृश्यते तत्रापि चैत्रसितचतुर्थ्यां मार्गशीर्षसितैकादश्यां तज्जननदिने नव सातिरेका मासाः अभिवर्द्धितमासकल्पनया भवन्तीति तदपि सम्भवति, अतोऽत्र तत्त्वं विशिष्टज्ञानिगम्यमिति, 'अणंतरं चयं चइत्त'त्ति अव्यवहितं च्यवनं कृत्वेत्यर्थः, अथवा अनन्तरं चयं–शरीरं देवसम्बन्धीत्यर्थः 'चइत्ता' त्यक्त्वा 'आहारे'त्यादि आहारापक्रान्त्या–देवाहारपरित्यागेन भवापक्रान्त्या–देवगतित्यागेन शरीरापक्रान्त्या–वैक्रियशरीरत्यागेन अथवा आहारव्युत्क्रान्त्या–अपूर्वाहारोत्पादेन मनुष्योचिताहारग्रहणेनेत्यर्थः,

८ मल्ली-ज्ञाते मल्ली-जिनजन्म सू. ६५

॥१२५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एवमन्यदपि पदद्वयमिति, गर्भतया व्युत्क्रान्तः–उत्पन्नः, 'मल्लेणं'ति मालाभ्यो हितं माल्यं–कुसुमं जातावेकवचनं 'अत्थुयपच्चत्थुयंसि'त्ति आस्तृते–आच्छादिते प्रत्यवस्तृते पुनः पुनराच्छादिते इत्यर्थः शयनीये निषण्णा निवन्नाः–सुप्ताः, 'सिरिदामगंडं'ति श्रीदाम्नां–शोभावन्मालानां काण्डं–समूहः श्रीदामकाण्डं, अथवा गण्डो–दण्डः तद्वद्यत्तद् गण्ड एवोच्यते, श्रीदाम्नां गण्डः श्रीदामगण्डः, पाटलाद्याः पुष्पजातयः प्रसिद्धाः, नवरं मल्लिका–विचकिलः मरुवकः–पत्रजातिविशेषः 'अणोज्ज'त्ति अनवद्यो–निर्दोषः कुब्जकः–शतपत्रिकाविशेषः एतानि प्रचुराणि यत्र तत्तथा, परमशुभदर्शनीयं परमसुखदर्शनीयं वा 'महया गंधद्धणिं मुयंतं'ति महता प्रकारेण गंधघ्राणि–सुरभिगन्धगुणं वृष्टिहेतुं पुद्गलसमूहं मुञ्चत् आजिघ्रन्त्यः–उत्सिङ्गन्त्यः, 'कुंभग्गसो य'त्ति कुम्भपरिमाणतः 'भारग्गसो य'त्ति भारपरिमाणतः, 'आरोग्गारोग्गं'ति अनाबाधा माता अनाबाधं तीर्थकरम्।

तेणं कालेणं २ अहोलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ मयहरीयाओ जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं नवरं मिहिलाए कुंभयस्स पभावतीए अभिलाओ संजोएव्वो जाव नंदीसरवरे दीवे महिमा, तया णं कुंभए राया बहूहिं भवणवति ४ तित्थयर० जाव कम्मं जाव नामकरणं, जम्हा णं अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते तं होउ णं णामेणं मल्ली, जहा महाबले नाम जाव परिवड्ढिया –सा वद्धती भगवती दियलोयचुता अणोवमसिरीया। दासीदासपरिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहिं॥१॥असियसिरया सुनयणा बिंबोट्ठी धवलदंतपंतीया। वरकमलकोमलंगी फुल्लुप्पलगंधनीसासा ॥२॥" (सूत्रं ६६)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तए णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव २ उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तते णं सा मल्ली देसूणवाससयजाया ते छप्पि रायाणो विपुलेण ओहिणा आभोएमाणी २ विहरति, तं०–पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं पंचालाहिवइं, तते णं सा मल्ली कोडुंबि० तुब्भे णं देवा० असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं, तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह, तेसि णं गब्भघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह, तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढियं करेह २ जाव पच्चप्पिणंति, तते णं मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावन्नजोव्वणगुणोववेयं कणगमइं मत्थयच्छिड्डुं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेति २ जं विपुलं असणं ४ आहारेति ततो मणुन्नाओ असण ४ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगामतीए मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी २ विहरति, तते णं तीसे कणगमतीए जाव मच्छयछिड्डाए पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे २ ततो गंधे पाउब्भवति, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतराए (सूत्रं ६७)

'अहोलोयवत्थव्वाओ'त्ति गजदन्तकानामधः अधोलोकवास्तव्या अष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिकाः, इह चावसरे यदभिधेयं तन्महतो ग्रन्थस्य विषय इतिकृत्वा सङ्क्षेपार्थमतिदेशमाह–'जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं'ति यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां सामान्यतो जिनजन्मोक्तं तथा मल्लीतीर्थकृतो जन्मेति–जन्मवक्तव्यता सर्वा वाच्येति, नवरमिह मिथिलायां नगर्यां कुम्भस्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्लिजिनस्य जन्मन: वर्णनं, पुर्वभवस्य मित्राणां प्रतिबोधार्थं मल्लिजिनस्य युक्ति:

राज्ञः प्रभावत्या देव्याः इत्ययमभिलापः संयोजितव्यो, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां तु नायं विद्यते इति, किंपर्यवसानं जन्म वक्तव्यमित्याह–यावन्नन्दीश्वरे 'महिम'त्ति अतिदिष्टग्रन्थश्चार्थतः एवं द्रष्टव्यो, यथा अष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिकाः भोगङ्करप्रभृतयस्तत्समयमुपजातसिंहासनप्रकम्पाः प्रयुक्तावधिज्ञानाः समवसितैकोनविंशतितमतीर्थनाथजननाः ससम्भ्रममनुष्ठितसमवायाः समस्तजिननायकजन्मसु महामहिमविधानमस्माकं जीतमिति विहितनिश्चयाः स्वकीयस्वकीयाभियोगिकदेवविहितदिव्यविमानारूढाः सामानिकादिपरिकरवृताः सर्वर्द्ध्या मल्लिजिनजन्मनगरीमागम्य जिनजन्मभवनं यानविमानैस्त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य उत्तरपूर्वस्यां दिशि यानविमानानि चतुर्भिरङ्गुलैर्भुवमप्राप्तानि व्यवस्थाप्य जिनसमीपं जिनजननीसमीपं च गत्वा त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य कृताञ्जलिपुटा इदमवादिषुः–नमोऽस्तु ते रत्नकुक्षिधारिके! नमोऽस्तु ते जगत्प्रदीपदायिके! वयमधोलोकवास्तव्या दिक्कुमार्यो जिनस्य जन्ममहिमानं विधास्यामः अतो युष्माभिर्न भेतव्यमिति अभिधाय च विहितसंवर्त्तवाताः जिनजन्मभवनस्य समन्ताद्योजनपरिमण्डलक्षेत्रस्य तृणपत्रकचवरादेरशुचिवस्तुनोऽपनयनेन विहितशुद्धीर्जिनजनन्योरदूरतो जिनस्यासाधारणमगणितगुणगणमागायन्त्यस्तस्थुः, एवमेवोर्ध्वलोकवास्तव्या नन्दनवनकूटनिवासिन्य इत्यर्थः अष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिकास्तथैवागत्य विरचिताभ्रवर्द्दलिकाः आयोजनमानक्षेत्रं गन्धोदकवर्षं पुष्पवर्षं धूपघटीश्च कृत्वा जिनसमीपमागत्य परिगायन्त्य आसांचक्रुः, तथा पौरस्त्यरुचकवास्तव्या रुचकाभिधानस्य त्रयोदशस्य द्वीपस्य मध्यवर्त्तिनः प्राकाराकारेण मण्डलव्यवस्थितस्योपरि पूर्वदिग्व्यवस्थितेष्वष्टासु कूटेषु कृतनिवासा इत्यर्थः आगत्य तथैवादर्शहस्ता गायन्त्यस्तस्थुः, एवं दक्षिणरुचकवास्तव्या जिनस्य दक्षिणेन भृङ्गारहस्ताः पश्चिमरुचकवास्तव्या जिनस्य पश्चिमेन तालवृन्तहस्ता उत्तररुचकवास्तव्याश्चामरहस्ता जिनस्य उत्तरेण, एवं चतसृणां रुचकस्य विदिग्वास्तव्या आगत्य दीपिका-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हस्ता जिनस्य चतसृषु विदिक्षु तथैव तस्थुः, मध्यमरुचकवास्तव्या रुचकद्वीपस्याभ्यन्तरार्द्धवासिन्य इत्यर्थः चतस्रस्तास्तथैवागत्य जिनस्य चतुरङ्गुलवर्जनाभिनालच्छेदनं च विवरखननं च नाभिनालनिधानं च विवरस्य रत्नपूरणं च तदुपरि हरितालिकापीठबन्धं च पश्चिमावर्जदिक्त्रये कदलीगृहत्रयं च तन्मध्येषु चतुःशालभवनत्रयं च तन्मध्यदेशे सिंहासनत्रयं च दक्षिणे सिंहासने जिनजन्योरुपवेशनं च शतपाकादितैलाभ्यङ्गनं च गन्धद्रव्योद्वर्त्तनं च पुष्पोदकं च पूर्वत्र पुष्पोदकगन्धोदकशुद्धोदकमज्जनं च सर्वालङ्कारविभूषणं च उत्तरत्र गोशीर्षचन्दनकाष्ठैर्वह्निसुज्ज्वलनं चाग्निहोमं च भूतिकर्म च रक्षापोट्टलिकां च मणिमयपाषाणद्वयस्य जिनकर्णाभ्यर्णे प्रताडनं च भवतु भगवान् पर्वतायुरिति भणनं च पुनः समातृकजिनस्य स्वभवननयनं च शय्याशायनं च चक्रुः कृत्वा च गायन्त्यस्तस्थुरिति । सौधर्मकल्पे च शक्रस्य सहसा आसनं प्रचकम्पे अवधिं चासौ प्रयुयुजे तीर्थकरजन्म चालुलोके ससंभ्रमं च सिंहासनादुत्तस्थौ पादुके च मुमोच उत्तरासङ्गं च चकार सप्ताष्टानि च पदानि जिनाभिमुखमुपजगाम भक्तिभरनिर्भरो यथाविधि जिनं च ननाम पुनः सिंहासनमुपविवेश हरिणेगमेषीदेवं पदात्यनीकाधिपतिं शब्दयांचकार तं चादिदेश यथा सुधर्मायां सभायां योजनपरिमण्डलां सुघोषाभिधानां घण्टां त्रिस्ताडयन्नुद्घोषणां विधेहि, यथा–भो भो देवा ! गच्छति शक्रो जम्बूद्वीपं तीर्थकरजन्ममहिमानं कर्त्तुमतो यूयं सर्वसमृद्ध्या शीघ्रं शक्रसान्तिके प्रादुर्भवतेति, स तु तथैव चकार, तस्यां च घण्टायां ताडितायामन्यान्येकोनद्वात्रिंशद्घण्टालक्षाणि समकमेव रणरणारवं चक्रुः, उपरते च घण्टारवे घोषणामुपश्रुत्य यथादिष्टं देवाः सपदि विदधुः, ततो पालकाभिधानाभियोगिकदेवविरचिते लक्षयोजनप्रमाणे पश्चिमावर्जदिक्त्रयनिवेशिततोरणद्वारे नानामणिमयूखमञ्जरीरञ्जितगगनमण्डले नयनमनसामतिप्रमोददायिनि महाविमानेऽधिरूढः सामानिकादिदेवकोटीभिरने-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

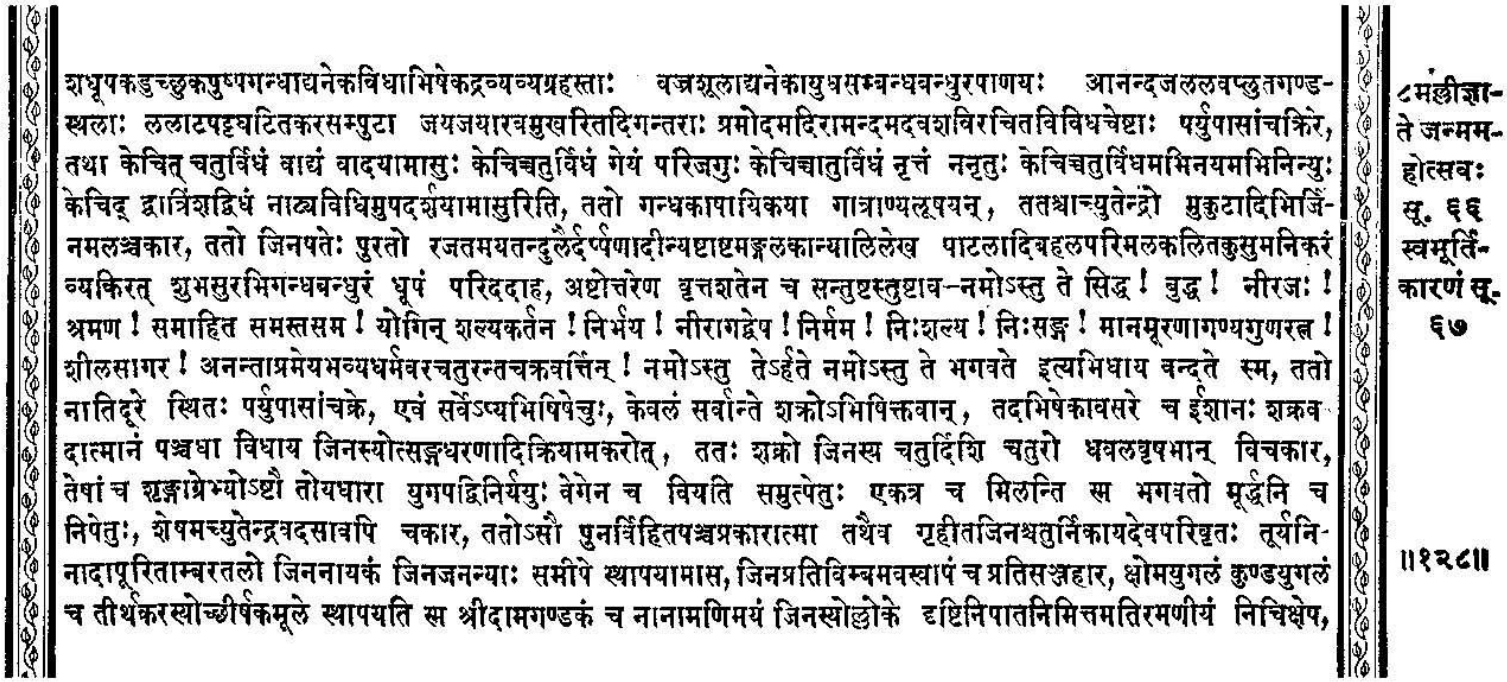
काभिः परिवृतः पुरःप्रवर्त्तितपूर्णकलशभृङ्गारच्छत्रपताकाचामराद्यनेकमङ्गल्यवस्तुस्तोमः पञ्चवर्णकुडभिकासहस्रपरिमण्डितयोजनसहस्रोच्छ्रितमहेन्द्रध्वजप्रदर्शितमार्गो नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणपूर्वे रतिकरपर्वते कृतावतारो दिव्यविमानर्द्धिमुपसंहरन् मिथिलां नगरीमाजगाम, विमानारूढ एव भगवतो जिनस्य जन्मभवनं त्रिः प्रदक्षिणीकृतवान्, उत्तरपूर्वस्यां दिशि चतुर्भिरङ्गुलैर्भुवमप्राप्तं विमानमवस्थापितवान्, ततोऽवतीर्य भगवन्तं समातृकं दिक्कुमारीवदभिवन्द्य जिनमातरमवस्वाप्य जिनप्रतिबिम्बं तत्सन्निधौ विधाय पञ्चधाऽऽत्मानमाधाय एकेन रूपेण करतलपल्लवावधृतजिनः अन्येन जिननायकोपरिविधृतच्छत्रः अन्याभ्यां करचालितप्रकीर्णकः अन्येन च करकिशलयकलितकुलिशः पुरः प्रगन्ता सुरगिरिशिखरोपरिवर्त्तिपण्डकवनं गत्वा तद्व्यवस्थितातिपाण्डुकम्बलाभिधानशिलासिंहासने पूर्वाभिमुखो निषण्णः, एवमन्ये ईशानादयो वैमानिकेन्द्राश्चमरादयो भवनपतीन्द्राः कालादयो व्यन्तरेन्द्राः चन्द्रसूर्यादयो ज्योतिष्काः सपरिवाराः मन्दरेऽवतेरुः, ततश्चाच्युतदेवराजो जिनाभिषेकमत्याऽऽभियोगिकदेवानादिदेश, ते चाष्टसहस्रं सौवर्णिकानां कलशानामेवं रूप्यमयानां मणिमयानां एवं द्विकसंयोगवतां त्रीण्यष्टसहस्राणि त्रिसंयोगवतामष्टसहस्रं भौमेयकानां च तथाऽष्टसहस्रं चन्दनकलशानां भृङ्गाराणामादर्शानां स्थालानामन्येषां च विविधानामभिषेकोपयोगिनां भाजनानामष्टसहस्रं २ विचक्रुः, तैश्च कलशादिभाजनैः क्षीरोदस्य समुद्रस्य पुष्करोदस्य च मागधादीनां च तीर्थानां गङ्गादीनां च महानदीनां पद्मादीनां महाह्रदानामुदकमुत्पलादीनि मृत्तिकां च हिमवदादीनां च वर्षधराणां वैताढ्यविजयार्द्धानां च पर्वतानां भद्रशालादीनां च वनानां पुष्पाणि गन्धान् सर्वौषधीः तूवराणि सिद्धार्थकान् गोशीर्षचन्दनं चानिन्युः, ततोऽसावच्युतदेवराजोऽनेकैः सामानिकदेवसहस्रैः सह जिनपतिमभिषिषेच, अभिषेके च वर्त्तमाने इन्द्रादयो देवाः छत्रचामरकल-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [६६-६७]

दीप अनुक्रम [८२-८५]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१२८॥

शधूपकडुच्छुकपुष्पगन्धाद्यनेकविधाभिषेकद्रव्यव्यग्रहस्ताः वज्रशूलाद्यनेकायुधसम्बन्धबन्धुरपाणयः आनन्दजललवप्लुतगण्ड-स्थलाः ललाटपट्टघटितकरसम्पुटा जयजयारवमुखरितदिगन्तराः प्रमोदमदिरामन्दमदवशविरचितविविधचेष्टाः पर्युपासांचक्रिरे, तथा केचित् चतुर्विधं वाद्यं वादयामासुः केचिच्चतुर्विधं गेयं परिजगुः केचिच्चातुर्विधं नृत्तं ननृतुः केचिच्चतुर्विधमभिनयमभिनिन्युः केचिद् द्वात्रिंशद्विधं नाट्यविधिमुपदर्शयामासुरिति, ततो गन्धकाषायिकया गात्राण्यलूषयन्, ततश्चाच्युतेन्द्रो मुकुटादिभिर्जि-नमलञ्चकार, ततो जिनपतेः पुरतो रजतमयतन्दुलैर्दर्पणादीन्यष्टाष्टमङ्गलकान्यालिलेख पाटलादिबहलपरिमलकलितकुसुमनिकरं व्यकिरत् शुभसुरभिगन्धबन्धुरं धूपं परिददाह, अष्टोत्तरेण वृत्तशतेन च सन्तुष्टस्तुष्टाव–नमोऽस्तु ते सिद्ध! बुद्ध! नीरजः! श्रमण! समाहित समस्तसम! योगिन् शल्यकर्तन! निर्भय! नीरागद्वेष! निर्मम! निःशल्य! निःसङ्ग! मानमूरणागण्यगुणरत्न! शीलसागर! अनन्ताप्रमेयभव्यधर्मवरचतुरन्तचक्रवर्त्तिन्! नमोऽस्तु तेऽर्हते नमोऽस्तु ते भगवते इत्यभिधाय वन्दते स्म, ततो नातिदूरे स्थितः पर्युपासांचक्रे, एवं सर्वेऽप्यभिषिषेचुः, केवलं सर्वान्ते शक्रोऽभिषिक्तवान्, तदभिषेकावसरे च ईशानः शक्रव दात्मानं पञ्चधा विधाय जिनस्योत्सङ्गधरणादिक्रियामकरोत्, ततः शक्रो जिनस्य चतुर्दिशि चतुरो धवलवृषभान् विचकार, तेषां च शृङ्गाग्रेभ्योऽष्टौ तोयधारा युगपद्विनिर्ययुः वेगेन च वियति समुत्पेतुः एकत्र च मिलन्ति स्म भगवतो मूर्द्धनि च निपेतुः, शेषमच्युतेन्द्रवदसावपि चकार, ततोऽसौ पुनर्विहितपञ्चप्रकारात्मा तथैव गृहीतजिनश्चतुर्निकायदेवपरिवृतः तूर्यनि-नादापूरिताम्बरतलो जिननायकं जिनजनन्याः समीपे स्थापयामास, जिनप्रतिबिम्बमवस्थापं च प्रतिसञ्जहार, क्षोमयुगलं कुण्डयुगलं च तीर्थकरस्योच्छीर्षकमूले स्थापयति स्म श्रीदामगण्डकं च नानामणिमयं जिनस्योल्लोके दृष्टिनिपातनिमित्तमतिरमणीयं निचिक्षेप,

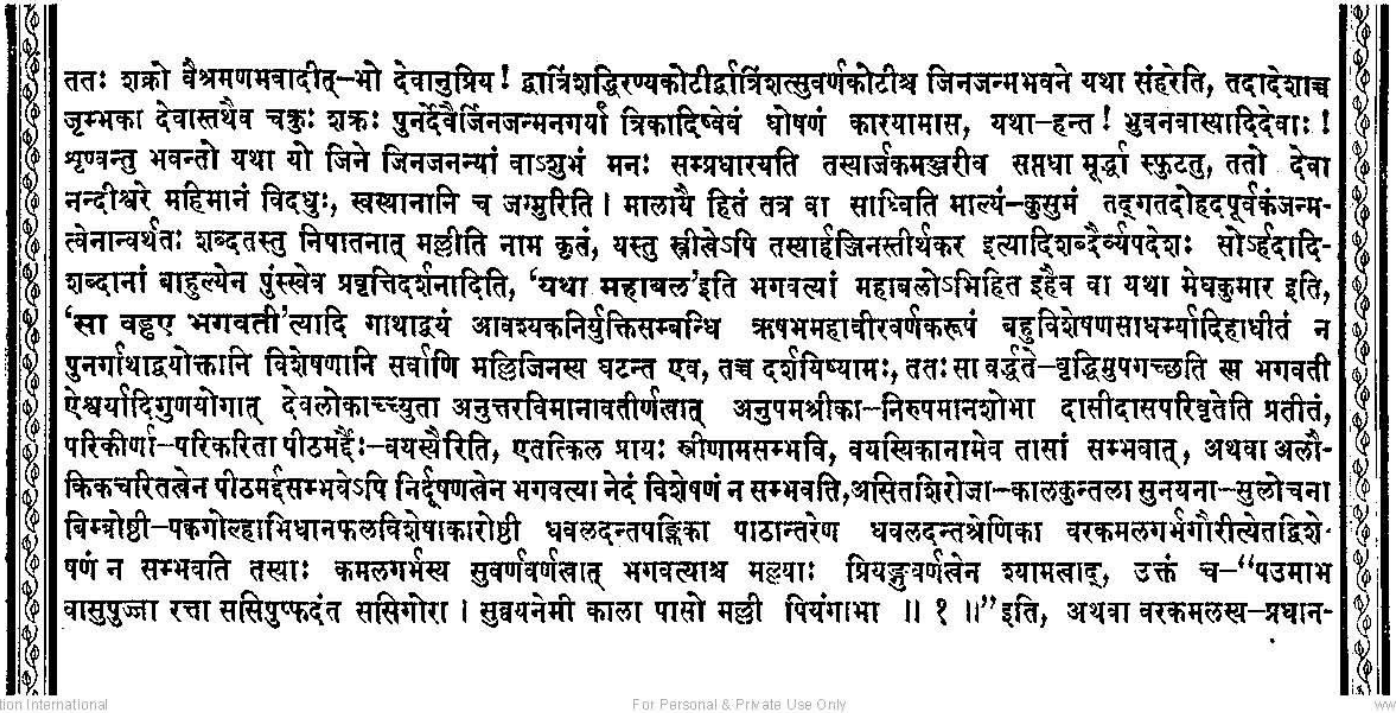
८मल्लीज्ञा-ते जन्मम-होत्सवः सू. ६६ स्वमूर्ति-कारणं सू. ६७

॥१२८॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्लिजिनस्य जन्मन: वर्णनं

प्रत सूत्रांक [६६-६७] दीप अनुक्रम [८२-८५]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः



ततः शक्रो वैश्रमणमवादीत्–भो देवानुप्रिय! द्वात्रिंशद्धिरण्यकोटीर्द्वात्रिंशत्सुवर्णकोटीश्च जिनजन्मभवने यथा संहरेति, तदादेशाच्च जृम्भका देवास्तथैव चक्रुः शक्रः पुनर्देवैर्जिनजन्मनगर्यां त्रिकादिष्वेवं घोषणं कारयामास, यथा–हन्त! भुवनवास्यादिदेवाः! शृण्वन्तु भवन्तो यथा यो जिने जिनजनन्यां वाऽशुभं मनः सम्प्रधारयति तस्यार्जकमञ्जरीव सप्तधा मूर्द्धा स्फुटतु, ततो देवा नन्दीश्वरे महिमानं विदधुः, स्वस्थानानि च जग्मुरिति। मालायै हितं तत्र वा साध्विति माल्यं–कुसुमं तद्गतदोहदपूर्वकंजन्मत्वेनान्वर्थतः शब्दतस्तु निपातनात् मल्लीति नाम कृतं, यस्तु स्त्रीलेऽपि तस्यार्हज्जिनस्तीर्थकर इत्यादिशब्दैर्व्यपदेशः सोऽर्हदादिशब्दानां बाहुल्येन पुंस्त्वेन प्रवृत्तिदर्शनादिति, 'यथा महाबल'इति भगवत्यां महाबलोऽभिहित इहैव वा यथा मेघकुमार इति, 'सा वड्ढए भगवती'त्यादि गाथाद्वयं आवश्यकनिर्युक्तिसम्बन्धि ऋषभमहावीरवर्णकरूपं बहुविशेषणसाधर्म्यादिहाधीतं न पुनर्गाथाद्वयोक्तानि विशेषणानि सर्वाणि मल्लिजिनस्य घटन्त एव, तच्च दर्शयिष्यामः, ततः सा वर्द्धते–वृद्धिमुपगच्छति सा भगवती ऐश्वर्यादिगुणयोगात् देवलोकाच्च्युता अनुत्तरविमानावतीर्णत्वात् अनुपमश्रीका–निरुपमानशोभा दासीदासपरिवृतेति प्रतीतं, परिकीर्णा–परिकरिता पीठमर्दैः–वयस्यैरिति, एतत्किल प्रायः स्त्रीणामसम्भवि, वयस्यिकानामेव तासां सम्भवात्, अथवा अलौकिकचरितत्वेन पीठमर्दसम्भवेऽपि निर्दूषणत्वेन भगवत्या नेदं विशेषणं न सम्भवति,असितशिरोजा–कालकुन्तला सुनयना–सुलोचना बिम्बोष्ठी–पक्कगोल्हाभिधानफलविशेषाकारोष्ठी धवलदन्तपङ्क्तिका पाठान्तरेण धवलदन्तश्रेणिका वरकमलगर्भगौरीत्येतद्विशेषणं न सम्भवति तस्याः कमलगर्भस्य सुवर्णवर्णत्वात् भगवत्याश्च मल्लयाः प्रियङ्गुवर्णत्वेन श्यामत्वाद्, उक्तं च–"पउमाभ वासुपुज्जा रत्ता ससिपुप्फदंत ससिगोरा। सुव्वयनेमी काला पासो मल्ली पियंगाभा ॥ १ ॥" इति, अथवा वरकमलस्य–प्रधान-

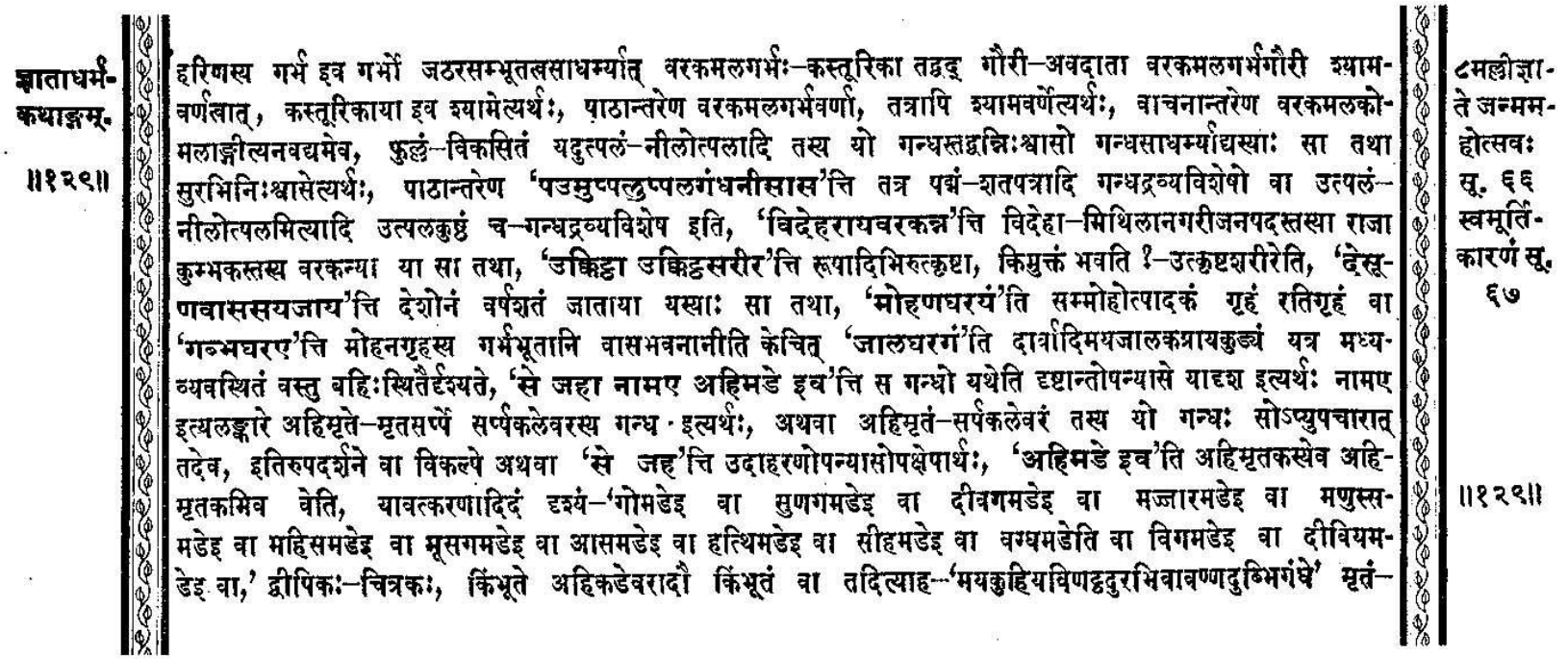
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	भगवती मल्लिजिनस्य जन्मनः वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [६६-६७]

दीप अनुक्रम [८२-८५]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥१२९॥

हरिणस्य गर्भ इव गर्भो जठरसम्भूतत्वसाधर्म्यात् वरकमलगर्भः–कस्तूरिका तद्वद् गौरी–अवदाता वरकमलगर्भगौरी श्याम-वर्णत्वात्, कस्तूरिकाया इव श्यामेत्यर्थः, पाठान्तरेण वरकमलगर्भवर्णा, तत्रापि श्यामवर्णेत्यर्थः, वाचनान्तरेण वरकमलको-मलाङ्गीत्यनवद्यमेव, फुल्लं–विकसितं यदुत्पलं–नीलोत्पलादि तस्य यो गन्धस्तद्वन्निःश्वासो गन्धसाधर्म्याद्यस्याः सा तथा सुरभिनिःश्वासेत्यर्थः, पाठान्तरेण 'पउमुप्पलुप्पलगंधनीसास'त्ति तत्र पद्मं–शतपत्रादि गन्धद्रव्यविशेषो वा उत्पलं–नीलोत्पलमित्यादि उत्पलकुष्ठं च–गन्धद्रव्यविशेष इति, 'विदेहरायवरकन्न'त्ति विदेहा–मिथिलानगरीजनपदस्तस्या राजा कुम्भकस्तस्य वरकन्या या सा तथा, 'उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीर'त्ति रूपादिभिरुत्कृष्टा, किमुक्तं भवति ?–उत्कृष्टशरीरेति, 'देसू-णवाससयजाय'त्ति देशोनं वर्षशतं जाताया यस्याः सा तथा, 'मोहणघरयं'ति सम्मोहोत्पादकं गृहं रतिगृहं वा 'गब्भघरए'त्ति मोहनगृहस्य गर्भभूतानि वासभवनानीति केचित् 'जालघरगं'ति दार्वादिमयजालकप्रायकुड्यं यत्र मध्य-व्यवस्थितं वस्तु बहिःस्थितैर्दृश्यते, 'से जहा नामए अहिमडे इव'त्ति स गन्धो यथेति दृष्टान्तोपन्यासे यादृश इत्यर्थः नामए इत्यलङ्कारे अहिमृते–मृतसर्पे सर्पकलेवरस्य गन्ध इत्यर्थः, अथवा अहिमृतं–सर्पकलेवरं तस्य यो गन्धः सोऽप्युपचारात् तदेव, इतिरुपदर्शने वा विकल्पे अथवा 'से जह'त्ति उदाहरणोपन्यासोपक्षेपार्थः, 'अहिमडे इव'ति अहिमृतकस्येव अहि-मृतकमिव वेति, यावत्करणादिदं दृश्यं–'गोमडेइ वा सुणगमडेइ वा दीवगमडेइ वा मज्जारमडेइ वा मणुस्स-मडेइ वा महिसमडेइ वा मूसगमडेइ वा आसमडेइ वा हत्थिमडेइ वा सीहमडेइ वा वग्घमडेति वा विगमडेइ वा दीवियम-डेइ वा,' द्वीपिकः–चित्रकः, किंभूते अहिकडेवरादौ किंभूतं वा तदित्याह–'मयकुहियविणट्ठदुरभिवावण्णदुब्भिगंधे' मृतं–

८मल्लीज्ञा-ते जन्मम-होत्सवः सू. ६६ स्वमूर्ति-कारणं सू. ६७

॥१२९॥

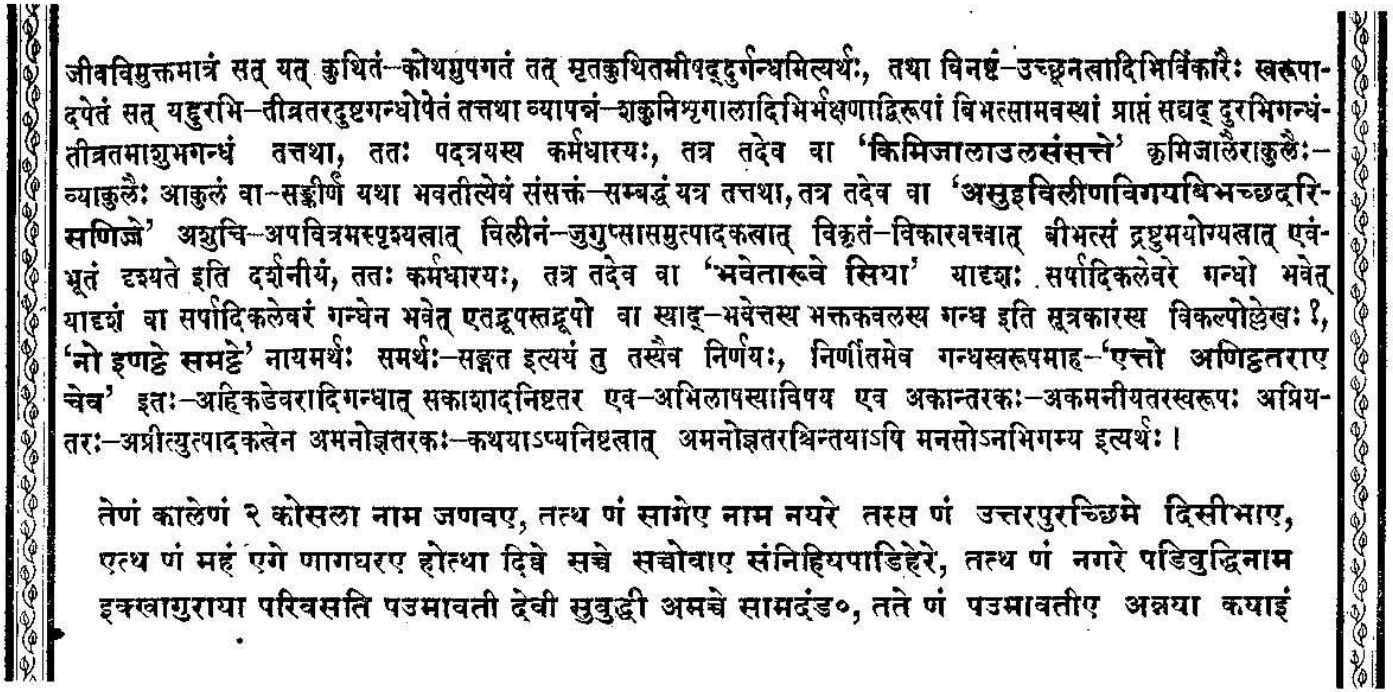
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुर्वभवस्य मित्राणां प्रतिबोधार्थे मल्लिजिनस्य युक्ति:

प्रत सूत्रांक [६६-६७]

दीप अनुक्रम [८२-८५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः



जीवविप्रमुक्तमात्रं सत् यत् कुथितं–कोथमुपगतं तत् मृतकुथितमीषद्दुर्गन्धमित्यर्थः, तथा विनष्टं–उच्छूनत्वादिभिर्विकारैः स्वरूपादपेतं सत् यद्दुरभि–तीव्रतरदुष्टगन्धोपेतं तत्तथा व्यापन्नं–शकुनिशृगालादिभिर्भक्षणाद्विरूपां विभत्सामवस्थां प्राप्तं सद्यद् दुरभिगन्धं–तीव्रतमाशुभगन्धं तत्तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः, तत्र तदेव वा **'किमिजालाउलसंसत्ते'** कृमिजालैराकुलैः–व्याकुलैः आकुलं वा–सङ्कीर्णं यथा भवतीत्येवं संसक्तं–सम्बद्धं यत्र तत्तथा, तत्र तदेव वा **'असुइविलीणविगयबिभच्छदरिसणिज्जे'** अशुचि–अपवित्रमस्पृश्यत्वात् विलीनं–जुगुप्सासमुत्पादकत्वात् विकृतं–विकारवत्त्वात् बीभत्सं द्रष्टुमयोग्यत्वात् एवंभूतं दृश्यते इति दर्शनीयं, ततः कर्मधारयः, तत्र तदेव वा **'भवेतारूवे सिया'** यादृशः सर्पादिकलेवरे गन्धो भवेत् यादृशं वा सर्पादिकलेवरं गन्धेन भवेत् एतद्रूपस्तद्रूपो वा स्याद्–भवेत्तस्य भक्तकवलस्य गन्ध इति सूत्रकारस्य विकल्पोल्लेखः ?, **'नो इणट्ठे समट्ठे'** नायमर्थः समर्थः–सङ्गत इत्यर्थं तु तस्यैव निर्णयः, निर्णीतमेव गन्धस्वरूपमाह–**'एत्तो अणिट्ठतराए चेव'** इतः–अहिकडेवरादिगन्धात् सकाशादनिष्टतर एव–अभिलाषस्याविषय एव अकान्तरकः–अकमनीयतरस्वरूपः अप्रियतरः–अप्रीत्युत्पादकत्वेन अमनोज्ञतरकः–कथयाऽप्यनिष्टत्वात् अमनोज्ञतरश्चिन्तयाऽपि मनसोऽनभिगम्य इत्यर्थः ।

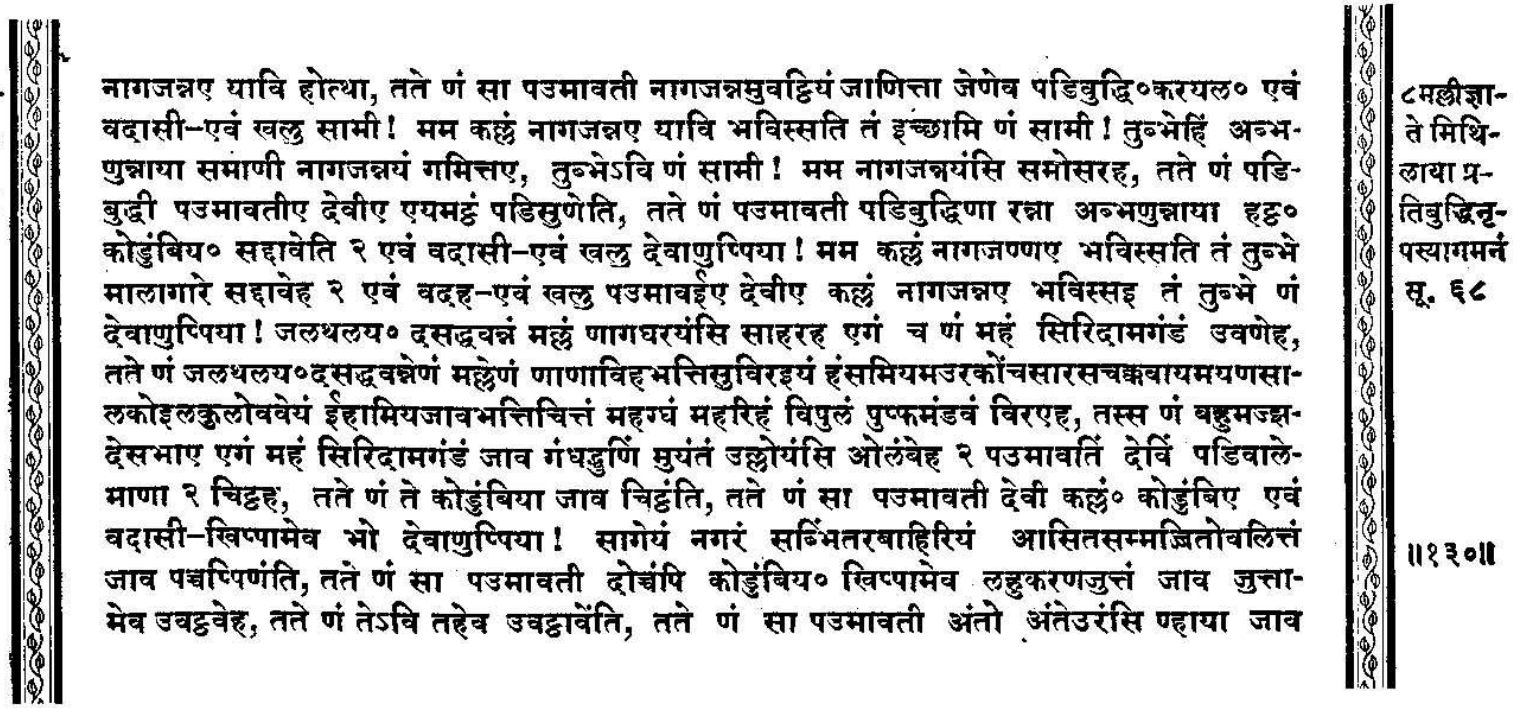
तेणं कालेणं २ कोसला नाम जणवए, तत्थ णं साएए नाम नयरे तस्स णं उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए, एत्थ णं महं एगे णागघरए होत्था दिवे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे, तत्थ णं नगरे पडिबुद्धिनाम इक्खागुराया परिवसति पउमावती देवी सुबुद्धी अमचे सामदंड०, तते णं पउमावतीए अन्नया कयाइं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुर्वभवस्य मित्राणां प्रतिबोधार्थे मल्लिजिनस्य युक्तिः

प्रत सूत्रांक [६८]

दीप अनुक्रम [८६]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१३०॥

नागजन्नए यावि होत्था, तते णं सा पउमावती नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धि०करयल० एवं वदासी–एवं खलु सामी! मम कल्लं नागजन्नए यावि भविस्सति तं इच्छामि णं सामी! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नयं गमित्तए, तुब्भेऽवि णं सामी! मम नागजन्नयंसि समोसरह, तते णं पडिबुद्धी पउमावतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं पउमावती पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठ० कोडुंबिय० सद्दावेति २ एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मम कल्लं नागजण्णए भविस्सति तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह २ एवं वदह–एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नागजन्नए भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! जलथलय० दसद्धवन्नं मल्लं णागघरयंसि साहरह एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह, तते णं जलथलय०दसद्धवन्नेणं मल्लेणं णाणाविहभत्तिसुविरइयं हंसमियमउरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेयं ईहामियजावभत्तिचित्तं महग्घं महरिहं विपुलं पुप्फमंडवं विरएह, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव गंधद्धुणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलंबेह २ पउमावतिं देविं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह, तते णं ते कोडुंबिया जाव चिट्ठंति, तते णं सा पउमावती देवी कल्लं० कोडुंबिए एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सागेयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसित्तसम्मज्जितोवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति, तते णं सा पउमावती दोच्चंपि कोडुंबिय० खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह, तते णं तेऽवि तहेव उवट्ठावेंति, तते णं सा पउमावती अंतो अंतेउरंसि ण्हाया जाव

८मल्लीज्ञाते मिथिलाया प्रतिबुद्धिनृपस्यागमनं सू. ६८

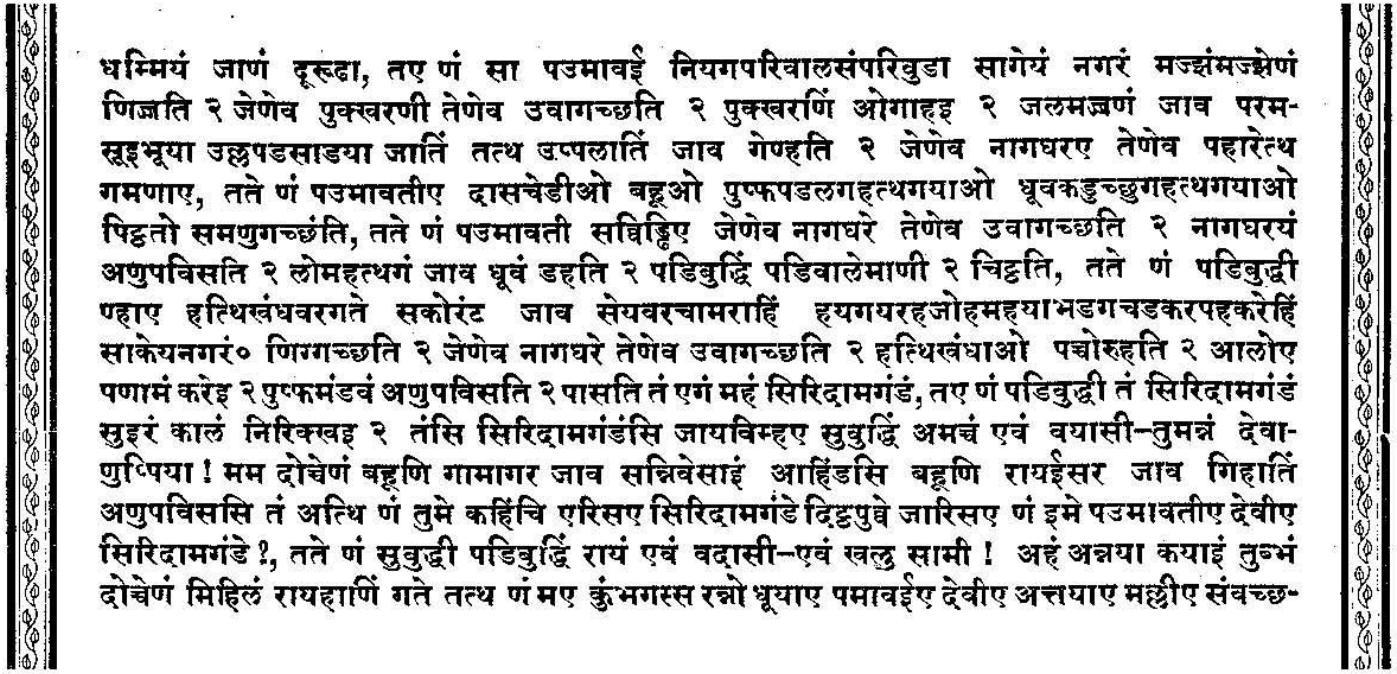
॥१३०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	प्रथम-मित्र प्रतिबुध्धिः, तस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [६८]

दीप अनुक्रम [८६]



धम्मियं जाणं दूरूढा, तए णं सा पउमावई नियगपरिवालसंपरिवुडा सागेयं नगरं मज्झंमज्झेणं णिज्जति २ जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति २ पुक्खरणिं ओगाहइ २ जलमज्जणं जाव परम-सूइभूया उल्लपडसाडया जातिं तत्थ उप्पलातिं जाव गेण्हति २ जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं पउमावतीए दासचेडीओ बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ धूवकडुच्छुगहत्थगयाओ पिट्ठतो समणुगच्छंति, तते णं पउमावती सविड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छति २ नागघरयं अणुपविसति २ लोमहत्थगं जाव धूवं डहति २ पडिबुद्धिं पडिवालेमाणी २ चिट्ठति, तते णं पडिबुद्धी णहाए हत्थिखंधवरगते सकोरंट जाव सेयवरचामराहिं हयगयरहजोहमहयाभडगचडकरपहकरेहिं साकेयनगरं० णिग्गच्छति २ जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छति २ हत्थिखंधाओ पच्चोरुहति २ आलोए पणामं करेइ २ पुप्फमंडवं अणुपविसति २ पासति तं एगं महं सिरिदामगंडं, तए णं पडिबुद्धी तं सिरिदामगंडं सुइरं कालं निरिक्खइ २ तंसि सिरिदामगंडंसि जायविम्हए सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–तुमन्नं देवा-णुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव सन्निवेसाइं आहिंडसि बहूणि रायईसर जाव गिहातिं अणुपविससि तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे पउमावतीए देवीए सिरिदामगंडे ?, तते णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वदासी–एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाइं तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गते तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पमावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम-मित्र प्रतिबुध्धिः, तस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [६८]

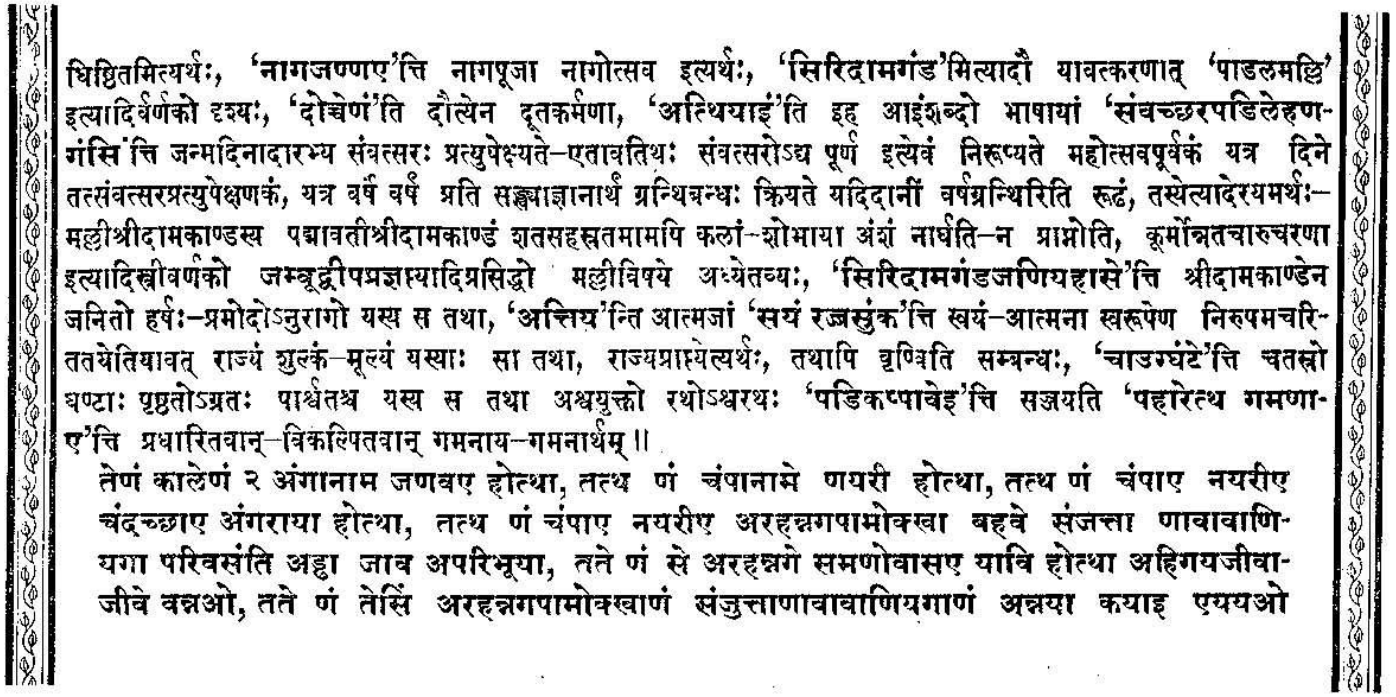
दीप अनुक्रम [८६]

रपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावतीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतिमं कलं ण अग्घति, तते णं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी–केरिसिया णं देवाणुप्पिया! मल्ली विदेहरायवरकन्ना जस्स णं संवच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावतीए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतिमंपि कलं न अग्घति?, तते णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वदासी–विदेहरायवरकन्नगा सुपइट्ठियकुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ, तते णं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए सोच्चा णिसम्म सिरिदामगंडजणितहासे दूयं सद्दावेइ २ एवं व०–गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया! मिहिलं रायहाणिं तत्थ णं कुंभगस्स रन्नो धूयं पभावतीए देवीए अत्तियं मल्लिं विदेहवररायकण्णगं मम भारियत्ताए वरेहि जतिविय णं सा सयं रज्जसुंका, तते णं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ० पडिसुणेंति २ जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छति २ चाउग्घंटं आसरहं पडिकप्पावेति २ दुरूढे जाव हयगयमहयाभडचडगरेणं साएयाओ णिग्गच्छति २ जेणेव विदेहजणवए जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए (सूत्रं ६८)

'नागघरए'त्ति उरगप्रतिमायुक्तं चैत्यं 'दिव्वे'त्ति प्रधानं 'सच्चे'त्ति तदादेशानामवितथत्वात्, 'सच्चोवाए'त्ति सत्यावपातं सफलसेवमित्यर्थः 'संलिहियपाडिहेरे'त्ति सन्निहितं–विनिवेशितं प्रातिहार्यं–प्रतीहारकर्म तथाविधव्यन्तरदेवेन यत्र तत्तथा देवा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम-मित्र प्रतिबुध्धिः, तस्य वर्णनं



धिष्ठितमित्यर्थः, 'नागजण्णए'त्ति नागपूजा नागोत्सव इत्यर्थः, 'सिरिदामगंड'मित्यादौ यावत्करणात् 'पाडलमल्लि' इत्यादिर्वर्णको दृश्यः, 'दोच्चेणं'ति दौत्येन दूतकर्मणा, 'अत्थियाइं'ति इह आइंशब्दो भाषायां 'संवच्छरपडिलेहण-गंसि'त्ति जन्मदिनादारभ्य संवत्सरः प्रत्युपेक्ष्यते–एतावतिथः संवत्सरोऽद्य पूर्ण इत्येवं निरूप्यते महोत्सवपूर्वकं यत्र दिने तत्संवत्सरप्रत्युपेक्षणकं, यत्र वर्षे वर्षे प्रति सङ्ख्याज्ञानार्थं ग्रन्थिबन्धः क्रियते यदिदानीं वर्षग्रन्थिरिति रूढं, तस्येत्यादेरयमर्थः–मल्लीश्रीदामकाण्डस्य पद्मावतीश्रीदामकाण्डं शतसहस्रतमामपि कलां–शोभाया अंशं नार्घति–न प्राप्नोति, कूर्मोन्नतचारुचरणा इत्यादिस्त्रीवर्णको जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यादिप्रसिद्धो मल्लीविषये अध्येतव्यः, 'सिरिदामगंडजणियहासे'त्ति श्रीदामकाण्डेन जनितो हर्षः–प्रमोदोऽनुरागो यस्य स तथा, 'अत्तिय'न्ति आत्मजां 'सयं रज्जसुंक'त्ति स्वयं–आत्मना स्वरूपेण निरुपमचरि-ततयेतियावत् राज्यं शुल्कं–मूल्यं यस्याः सा तथा, राज्यप्राप्त्येत्यर्थः, तथापि वृणिति सम्बन्धः, 'चाउग्घंटे'त्ति चतस्रो घण्टाः पृष्ठतोऽग्रतः पार्श्वतश्च यस्य स तथा अश्वयुक्तो रथोऽश्वरथः 'पडिकप्पावेइ'त्ति सज्जयति 'पहारेत्थ गमणा-ए'त्ति प्रधारितवान्–विकल्पितवान् गमनाय–गमनार्थम् ॥

तेणं कालेणं २ अंगानाम जणवए होत्था, तत्थ णं चंपानामे णयरी होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए चंद्दच्छाए अंगराया होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्ता णावावाणि-यगा परिवसंति अड्ढा जाव अपरिभूया, तते णं से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था अहिगयजीवा-जीवे वन्नओ, तते णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजुत्ताणावावाणियगाणं अन्नया कयाइ एगयओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६९,७०]

दीप अनुक्रम [८७,८८]

सहिआणं इमे एयारूवे मिहो कहासंलावे समुप्पज्जित्था–सेयं खलु अम्हं गणिमं धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दपोतवहणेण ओगाहित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति २ गणिमं च ४ गेण्हंति २ सगडिसागडियं च सज्जेंति २ गणिमस्स ४ भंडगस्स सगडसागडियं भरेंति २ सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असण ४ उवक्खडावेंति मित्तणाइभोअणवेलाए भुंजावेंति जाव आपुच्छंति २ सगडिसागडियं जोयंति २ चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवा० २ सगडिसागडियं मोयंति २ पोयवहणं सज्जेंति २ गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति तंदुलाण य समितस्स य तेल्लस्स य गुलस्स य घयस्स य गोरसस्स य उदयस्स य उदयभायणाण य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोतवहणं भरेंति, सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असण ४ उवक्खडावेंति २ मित्तणातिं आपुच्छंति २ जेणेव पोतट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति। तते णं तेसिं अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणो जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वदासी–अज्ज ताय भाय माउल भाइणज्जे भगवता समुद्देणं अनभिखिज्जमाणा २ चिरं जीवह भद्दं च भे पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामोत्तिकट्टु ताहिं सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति तओ समाणिएसु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गच्छाय-नृपः, तस्य वर्णनं

पुप्फबलिकम्मेसु दिन्नेसु सरसरत्तचंदणदद्दरपंचंगुलितलेसु अणुक्खित्तंसि धूवंसि पूतिएसु समुद्दवाएसु संसारियासु वलयबाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु पडुप्पवाइएसु तूरेसु जइएसु सव्वसउणेसु गहिएसु रायवरसासणेसु महया उक्किट्ठिसीहणाय जाव रवेणं पक्खुभितमहासमुद्दरवभूयंपिव मेइणिं करेमाणा एगदिसिं जाव वाणियगा णावं दुरूढा, ततो पुस्समाणवो वक्कमुदाहु–हं भो ! सव्वेसिमवि अत्थसिद्धी उवट्ठिताइं कल्लाणाइं पडिहयातिं सव्वपावाइं जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयं देसकालो, ततो पुस्समाणएणं वक्के मुदाहिए हट्ठतुट्ठे कुच्छिधारकन्नधारगब्भिजसंजत्ताणावावाणियगा वावारिंसु तं नावं पुन्नुच्छंगं पुण्णमुहिं बंधणेहिंतो मुंचंति, तते णं सा नावा विमुक्कबंधणा पवणबलसमाहया उस्सियसिया विततपक्खा इव गरुडजुवई गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखुब्भमाणी २ उम्मीतरंगमालासहस्साइं समतिच्छमाणी २ कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्दं अणेगातिं जोयणसतातिं ओगाढा, तते णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजुत्तानावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूतिं उप्पातियसतातिं पाउब्भूयाइं, तंजहा–अकाले गज्जिते अकाले विज्जुते अकाले थणियसद्दे, अभिक्खणं २ आगासे देवताओ नचंति, एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति, तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं ससिमूसगमहिसकालगं भरियमेहवन्नं लंबोट्ठं निग्गयग्गदंतं निल्लालियजमलजुयलजीहं आऊसियवयणगंडदेसं चीणचिपिटनासियं विगयभुग्गभग्गसुमयं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [६९,७०]

दीप अनुक्रम [८७,८८]

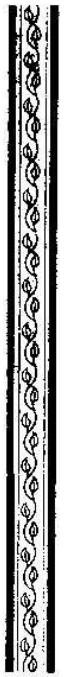
खज्जोयगदित्तचक्खुरागं उत्तासणगं विसालवच्छं विसालकुच्छिं पलंबकुच्छिं पहसियपप्फलियप्पडियगल्लं पप्फलमाणं अप्फोडंतं अभिवयंतं अभिगज्जंतं बहुसो २ अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय अभिमुहमावयमाणं पासंति। तते णं ते अरहण्णगवज्जा संजुत्ताणावावाणियगा एगं च णं महं तालपिसायं पासंति तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं फुट्टसिरं भमरणिगरवरमासरासिमहिसकालगं भरियमेहवन्नं सुप्पणहं फालसरिसजीहं लंबोट्ठं धवलवट्टअसिलिट्ठतिक्खथिरपीणकुडिलदाढोवगूढवयणं चिक्कोसियधारासिजुयलसमसरिसतणुयचंचलग्गलंतरसलोलचवलफुरुफुरेंतनिल्लालियग्गजीहं अवयच्छियमहल्लविगयबीभत्थलालपगलंतरत्ततालुयं हिंगुलुयसगब्भकंदरविलंब अंजणगिरिस्स अभिजालुग्गिलंतवयणं आऊसियअक्खचम्मउद्दगंडदेसं चीणचिविडवंकभग्गणासं रोसागयधम्मधमेंतमारुतनिट्ठुरखरफरुसझुसिरं ओमुग्गणासियपुडं धाडुब्भडरइयभीसणमुहं उद्धमुहकन्नसक्कुलियमहंतविगयलोभसंखालगलंबंतचलियकन्नं पिंगलदिप्पंतलोयणं भिउडितडियनिडालं नरसिरमालपरिणद्धचिंधं विचित्तगोणससुबद्धपरिकरं अवहोलंतपुप्फुयायंतसप्पविच्छुयगोधुंदरनउलसरडविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं भोगकूरकण्हसप्पधमधमेंतलंबंतकन्नपूरं मज्जारसियाललइयखंधं दित्तघुघुयंतघूयकयकुंतलसिरं घंटारवेणभीमं भयंकरं कायरजणहियउप्फोडणं दित्तमट्टट्टहासं विणिम्मुयंतं वसारुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं उत्तासणयं विसालवच्छं पेच्छंता भिन्नणहमुह-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अङ्

प्रत सूत्रांक [६९,७०]

दीप अनुक्रम [८७,८८]

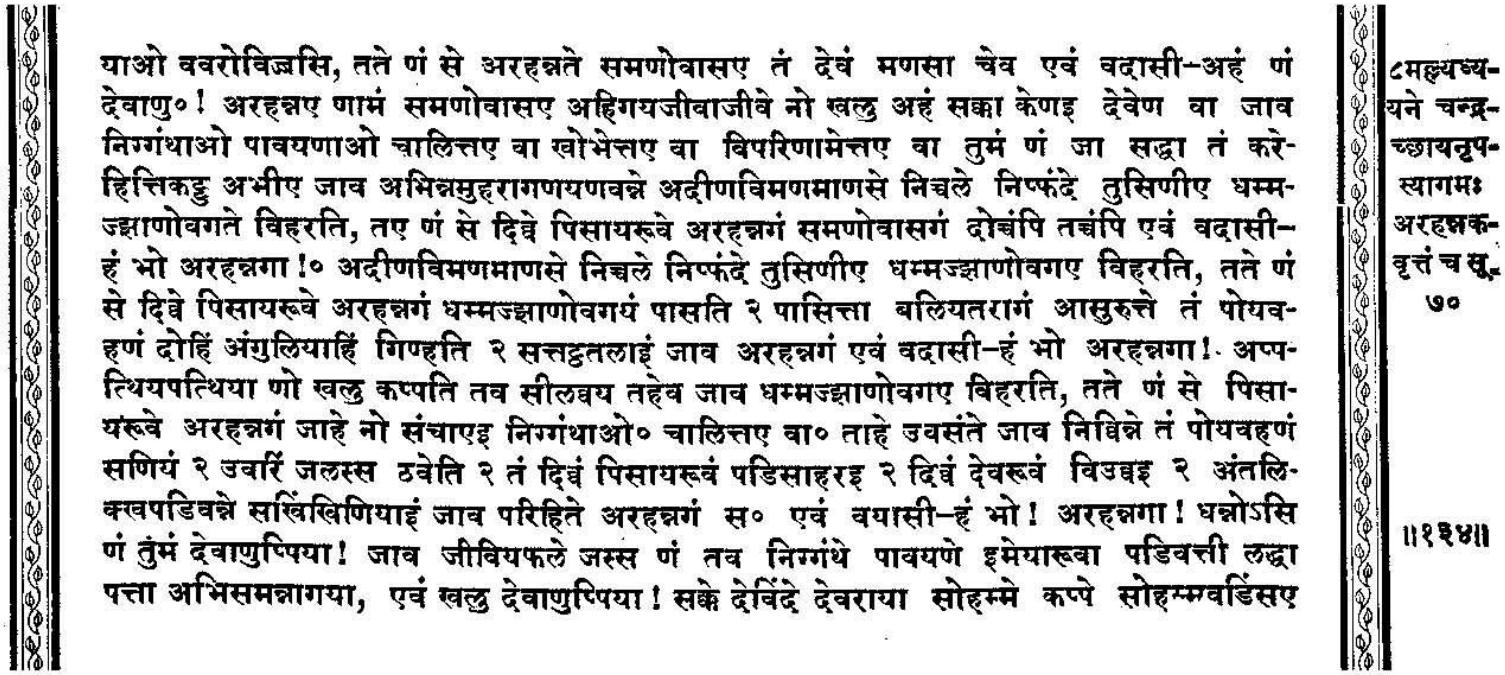


नयणकन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं सरसरुहिरमयधम्मवितत[illegible]यबाहुजुवलं ताहि य खरफरुस-असिणिद्धुअणिट्ठदित्तअसुभअप्पिय [अमणुन्न] अकंतवग्गूहि य तज्जयंतं पासंति तं तालपिसा-यरूवं एज्जमाणं पासंति २ भीया संजायभया अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा २ बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्दसिववेसमणणागाणं भूयाण य जक्खाण य अज्जकोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइयसयाणि ओवातियमाणा २ चिट्ठंति, तए णं से अरहन्नए समणोवासए तं दिवं पिसायरूवं एज्जमाणं पासति २ अभीते अतत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुविग्गे अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जति २ ठाणं ठाइ २ करयलओ एवं वयासि–नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, जइ णं अहं एत्तो उवसग्गातो मुंचामि तो मे कप्पति पारित्तए अह णं एत्तो उवसग्गाओ ण मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वेत्तिकट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाति, तते णं से पिसायरूवे जेणेव अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवा० २ अरहन्नगं एवं वदासी–हं भो ! अरहन्नगा अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया णो खलु कप्पति तव सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणे पोसहोववासातिं चालित्तए वा एवं खोभेत्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा, तं जति णं तुमं सीलव्वयं जाव ण परिच्चयसि तो ते अहं एयं पोतवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हामि २ सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्तातिं उड्ढं वेहासं उव्विहामि २ अंतो जलंसि णिच्छोलेमि जेणं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवि-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गच्छाय-नृपः, तस्य वर्णनं



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

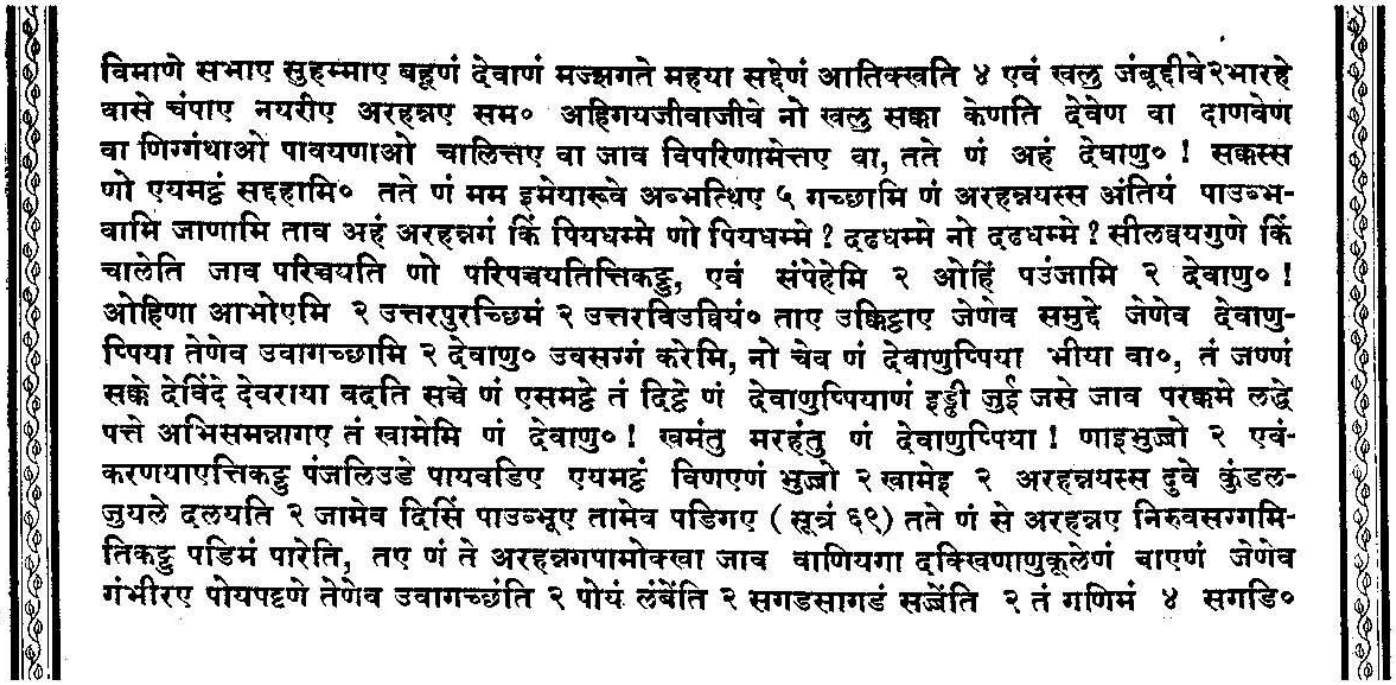
॥१३४॥

याओ ववरोविज्जसि, तते णं से अरहन्नते समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वदासी–अहं णं देवाणु०! अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्का केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभेत्तए वा विपरिणामेत्तए वा तुमं णं जा सद्धा तं करेहित्तिकट्टु अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने अदीणविमणमाणसे निचले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगते विहरति, तए णं से दिवे पिसायरूवे अरहन्नगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी–हं भो अरहन्नगा!० अदीणविमणमाणसे निचले निप्फंदे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरति, तते णं से दिवे पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासति २ पासित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गिण्हति २ सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एवं वदासी–हं भो अरहन्नगा! अप्पत्थियपत्थिया णो खलु कप्पति तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विहरति, तते णं से पिसायरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ० चालित्तए वा० ताहे उवसंते जाव निविन्ने तं पोयवहणं सणियं २ उवरिं जलस्स ठवेति २ तं दिवं पिसायरूवं पडिसाहरइ २ दिवं देवरूवं विउव्वइ २ अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं जाव परिहिते अरहन्नगं स० एवं वयासी–हं भो! अरहन्नगा! धन्नोऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, एवं खलु देवाणुप्पिया! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए

८मल्ल्यध्ययने चन्द्रच्छायनृपस्यागमः अरहन्नकवृत्तं च सू. ७०

॥१३४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

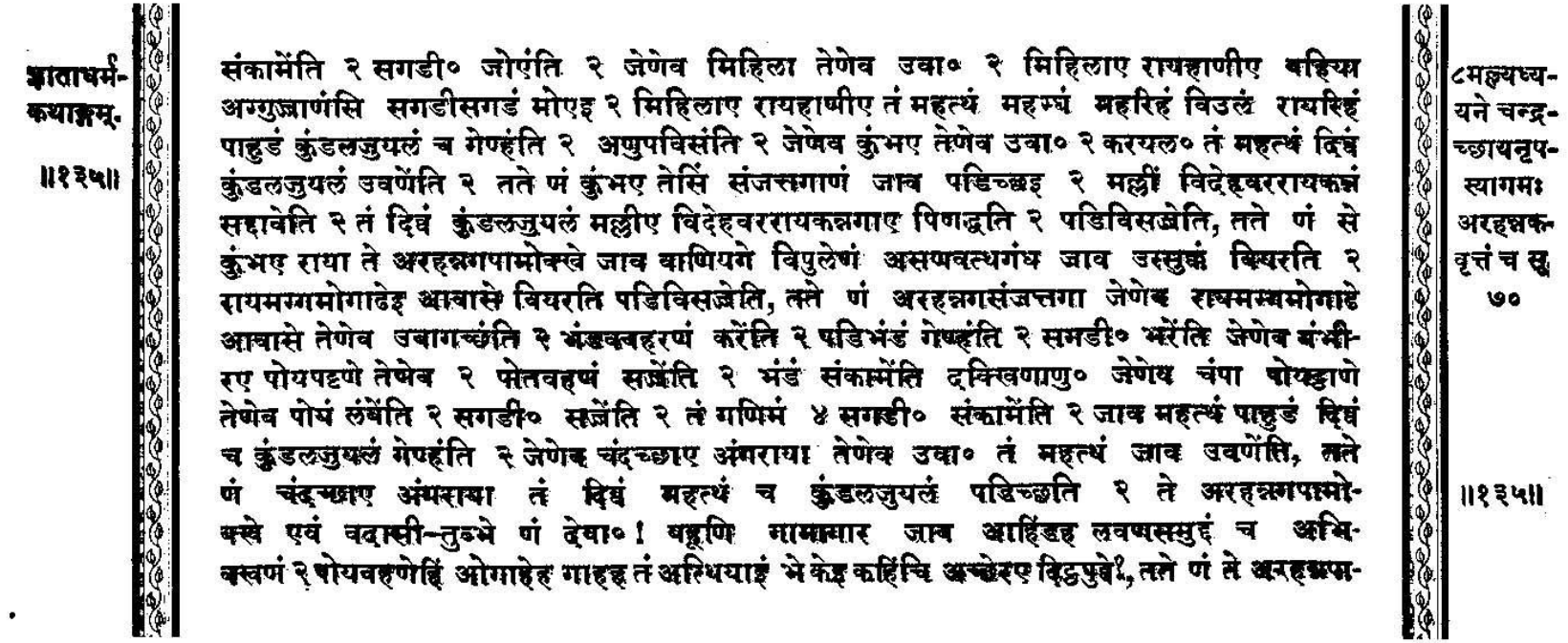


विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं मज्झगते महया सद्देणं आतिक्खति ४ एवं खलु जंबूदीवे२भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहन्नए सम० अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्का केणति देवेण वा दाणवेण वा णिग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा, तते णं अहं देवाणु० ! सक्कस्स णो एयमट्ठं सद्दहामि० तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिए ५ गच्छामि णं अरहन्नयस्स अंतियं पाउब्भवामि जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं पियधम्मे णो पियधम्मे ? दढधम्मे नो दढधम्मे ? सीलव्वयगुणे किं चालेति जाव परिच्चयति णो परिपच्चयतित्तिकट्टु, एवं संपेहेमि २ ओहिं पउंजामि २ देवाणु० ! ओहिणा आभोएमि २ उत्तरपुरच्छिमं २ उत्तरविउव्वियं० ताए उक्किट्ठाए जेणेव समुद्दे जेणेव देवाणुप्पिया तेणेव उवागच्छामि २ देवाणु० उवसग्गं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिया भीया वा०, तं जण्णं सक्के देविंदे देवराया वदति सच्चे णं एसमट्ठे तं दिट्ठे णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसे जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए तं खामेमि णं देवाणु० ! खमंतु मरहंतु णं देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो २ एवंकरणयाएत्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ २ अरहन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव पडिगए (सूत्रं ६९) तते णं से अरहन्नए निरुवसग्गमितिकट्टु पडिमं पारेति, तए णं ते अरहन्नगपामोक्खा जाव वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति २ पोयं लंबेंति २ सगडसागडं सज्जेंति २ तं गणिमं ४ सगडि०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६९,७०]

दीप अनुक्रम [८७,८८]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥१३५॥

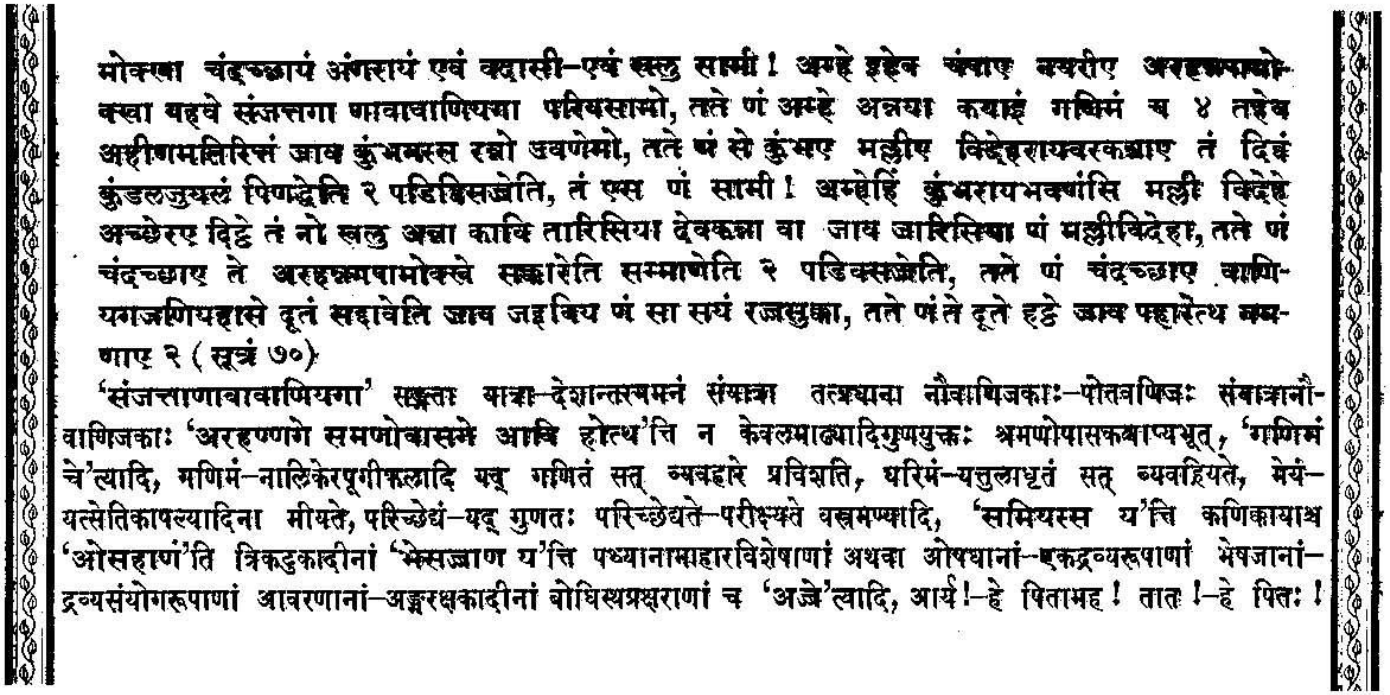
संकामेंति २ सगडी० जोएंति २ जेणेव मिहिला तेणेव उवा० २ मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडीसगडं मोएइ २ मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायरिहं पाहुडं कुंडलजुयलं च गेण्हंति २ अणुपविसंति २ जेणेव कुंभए तेणेव उवा० २ करयल० तं महत्थं दिव्वं कुंडलजुयलं उवणेंति २ तते णं कुंभए तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ २ मल्लीं विदेहवररायकन्नं सद्दावेति २ तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धंति २ पडिविसज्जेति, तते णं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे जाव वाणियगे विपुलेणं असणपत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरति २ रायमग्गमोगाढे आवासे वियरति पडिविसज्जेति, तते णं अरहन्नगसंजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति २ भंडगवहरणं करेंति २ पडिभंडं गेण्हंति २ सगडी० भरेंति जेणेव मंथीरए पोयपट्टणे तेणेव २ पोतवहणं सज्जेंति २ भंडं संकामेंति दक्खिणाणु० जेणेव चंपा पोयट्ठाणे तेणेव पोयं लंबेंति २ सगडी० सज्जेंति २ तं गणिमं ४ सगडी० संकामेंति २ जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गेण्हंति २ जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवा० तं महत्थं जाव उवणेंति, तते णं चंदच्छाए अंगराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडलजुयलं पडिच्छति २ ते अरहन्नगपामोक्खे एवं वदासी–तुब्भे णं देवा०! बहूणि गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २ पोयवहणेहिं ओगाहेह गाहह तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे?, तते णं ते अरहन्नग-

८मल्लध्ययने चन्द्रच्छायनृपस्यागमः अरहन्नकवृत्तं च सू ७०

॥१३५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गच्छाय-नृपः, तस्य वर्णनं



मोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी–एवं खलु सामी! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्तगा नावावाणियगा परिवसामो, तते णं अम्हे अन्नया कयाइं गणिमं च ४ तहेव अट्ठीगमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो, तते णं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेति २ पडिविसज्जेति, तं एस णं सामी! अम्हेहिं कुंभगरायभवणंसि मल्ली विदेहे अच्छेरए दिट्ठे तं नो खलु अन्ना काचि तारिसिया देवकन्ना वा जाव तारिसिया णं मल्लीविदेहा, तते णं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेति सम्माणेति २ पडिविसज्जेति, तते णं चंदच्छाए वाणियगजणियहासे दूतं सद्दावेति जाव जइविय णं सा सयं रज्जसुक्का, तते णं ते दूते हट्ठे जाव पहारेत्थ गमणाए २ (सूत्रं ७०)

'संजत्ताणावावाणियगा' सङ्गता यात्रा–देशान्तरगमनं संयात्रा तत्प्रधाना नौवाणिजकाः–पोतवणिजः संयात्रानौवाणिजकाः 'अरहण्णगे समणोवासगे आवि होत्थ'त्ति न केवलमाढ्यादिगुणयुक्तः श्रमणोपासकश्चाप्यभूत्, 'गणिमं चे'त्यादि, गणिमं–नालिकेरपूगीफलादि यद् गणितं सत् व्यवहारे प्रविशति, धरिमं–यत्तुलाधृतं सत् व्यवहियते, मेयं–यत्सेतिकाप्रस्थादिना मीयते, परिच्छेद्यं–यद् गुणतः परिच्छेद्यते–परीक्ष्यते वस्त्रमप्यादि, 'समियस्स य'त्ति कणिकायाश्च 'ओसहाणं'ति त्रिकटुकादीनां 'भेसज्जाण य'त्ति पथ्यानामाहारविशेषाणां अथवा ओषधानां–एकद्रव्यरूपाणां भेषजानां–द्रव्यसंयोगरूपाणां आवरणानां–अङ्गरक्षकादीनां बोधिस्थप्रक्षराणां च 'अज्जे'त्यादि, आर्य!–हे पितामह! तात!–हे पितः!

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

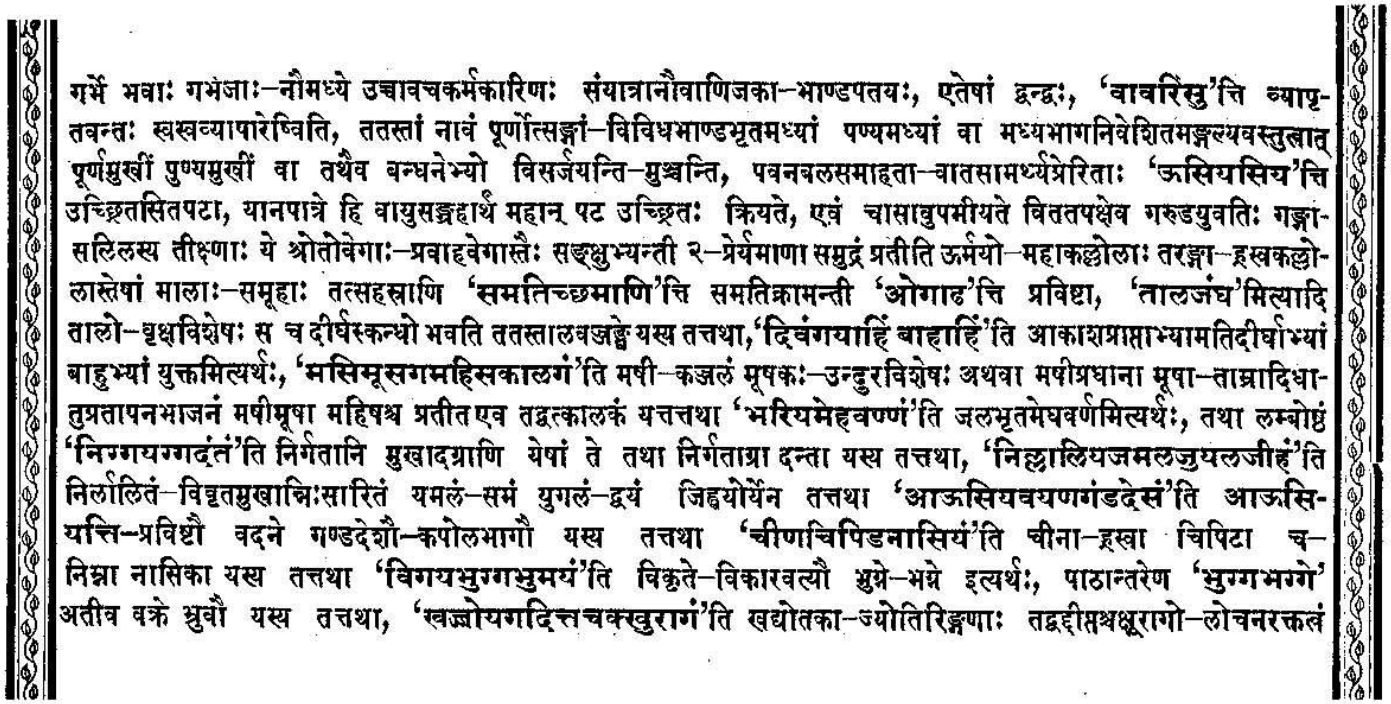
हे भ्रातः! हे मातुल! हे भागिनेय! भगवता समुद्रेण अभिरक्ष्यमाणा यूयं जीवत, भद्रं च 'भे'त्ति भवतां भवत्विति गम्यते, पुनरपि लब्धार्थान् कृतकार्यान् अनघान् समग्रान्, अनघत्वं–निर्दूषणतया समग्रत्वम्–अहीनधनपरिवारतया, निजकं गृहं 'हवं'ति शीघ्रमागतान् पश्याम इतिकृत्वा–इत्यभिधाय 'सोमाहिं'ति निर्विकारत्वात् 'निद्धाहिं'ति सस्नेहत्वात् 'दीहाहिं'ति दूरं यावदवलोकनात् 'सप्पिवासाहिं'ति सपिपासाभिः पुनर्दर्शनाकाङ्क्षावतीभिर्दर्शनात्तृषाभिर्वा 'पप्पुयाहिं'ति प्रप्लुताभिः अश्रुजलार्द्राभिः 'समाणिएसु'त्ति समापितेषु दत्तेषु नावीति गम्यते सरसरक्तचन्दनस्य दर्दरेण–चपेटाप्रकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु हस्तकेष्वित्यर्थः, 'अणुक्खित्तंसी'ति अनूत्क्षिप्ते–पश्चादुत्पाटिते धूपे पूजितेषु समुद्रवातेषु नौसांयात्रिकप्रक्रियया समुद्राधिपदेवपादेषु वा 'संसारियासु वलयबाहासु'त्ति स्थानान्तरादुचितस्थाननिवेशितेषु दीर्घकाष्ठलक्षणबाहुषु आवल्लकेष्विति सम्भाव्यते, तथा उच्छ्रितेषु–ऊर्द्धीकृतेषु सितेषु ध्वजाग्रेषु–पताकाग्रेषु पटुभिः पुरुषैः पटु वा यथा भवतीत्येवं प्रवादितेषु तूर्येषु जयिकेषु–जयावहेषु सर्वशकुनेषु–वायसादिषु गृहीतेषु राजवरशासनेषु–आज्ञासु पट्टकेषु वा प्रक्षुभितमहासमुद्ररवभूतमिव तदात्मकमिव तं प्रदेशमिति गम्यते 'तओ पुस्समाणवो वक्कमुयाइ'त्ति ततोऽनन्तरं मागधो मङ्गलवचनं ब्रवीति स्म इत्यर्थः, तदेवाह–सर्वेषामेव 'भे' भवतामर्थसिद्धिर्भवतु, उपस्थितानि कल्याणानि प्रतिहतानि सर्वपापानि–सर्वविघ्नाः, 'जुत्तो'त्ति युक्तः 'पुष्यो' नक्षत्रविशेषः चन्द्रमसा इहावसरे इति गम्यते, पुष्यनक्षत्रं हि यात्रायां सिद्धिकरं, यदाह–"अपि द्वादशमे चन्द्रे, पुष्यः सर्वार्थसाधन" इति, मागधेन तदुपन्यस्तं, विजयो मुहूर्त्तस्त्रिंशतो मुहूर्त्तानां मध्यात्, अयं देशकालः–एष प्रस्तावो गमनस्येति गम्यते 'वक्के उदाहिए'त्ति वाक्ये उदाहृते हृष्टतुष्टाः कर्णधारो–निर्यामकः कुक्षिधारा–नौपार्श्वनियुक्तकाः आवेल्लकवाहकादयः

॥१३६॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गचछाय-नृपः, तस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [६९,७०] दीप अनुक्रम [८७,८८]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः



गर्भे भवाः गर्भजाः–नौमध्ये उच्चावचकर्मकारिणः संयात्रानौवाणिजका–भाण्डपतयः, एतेषां द्वन्द्वः, 'वावरिंसु'त्ति व्याप्तवन्तः स्वस्वव्यापारेष्विति, ततस्तां नावं पूर्णोत्सङ्गां–विविधभाण्डभृतमध्यां पण्यमध्यां वा मध्यभागनिवेशितमङ्गल्यवस्तुत्वात् पूर्णमुखीं पुण्यमुखीं वा तथैव बन्धनेभ्यो विसर्जयन्ति–मुञ्चन्ति, पवनबलसमाहता–वातसामर्थ्यप्रेरिताः 'ऊसियसिय'त्ति उच्छ्रितसितपटा, यानपात्रे हि वायुसङ्ग्रहार्थं महान् पट उच्छ्रितः क्रियते, एवं चासावुपमीयते विततपक्षेव गरुडयुवतिः गङ्गासलिलस्य तीक्ष्णाः ये श्रोतोवेगाः–प्रवाहवेगास्तैः सङ्क्षुभ्यन्ती २–प्रेर्यमाणा समुद्रं प्रतीति ऊर्मयो–महाकल्लोलाः तरङ्गा–ह्रस्वकल्लोलास्तेषां मालाः–समूहाः तत्सहस्राणि 'समतिच्छमाणि'त्ति समतिक्रामन्ती 'ओगाढ'त्ति प्रविष्टा, 'तालजंघ'मित्यादि तालो–वृक्षविशेषः स च दीर्घस्कन्धो भवति ततस्तालवज्जङ्घे यस्य तत्तथा, 'दिवंगयाहिं बाहाहिं'ति आकाशप्राप्ताभ्यामतिदीर्घाभ्यां बाहुभ्यां युक्तमित्यर्थः, 'मसिमूसगमहिसकालगं'ति मषी–कज्जलं मूषकः–उन्दुरविशेषः अथवा मषीप्रधाना मूषा–ताम्रादिधातुप्रतापनभाजनं मषीमूषा महिषश्च प्रतीत एव तद्वत्कालकं यत्तत्तथा 'भरियमेहवण्णं'ति जलभृतमेघवर्णमित्यर्थः, तथा लम्बोष्ठं 'निग्गयग्गदंतं'ति निर्गतानि मुखादग्राणि येषां ते तथा निर्गताग्रा दन्ता यस्य तत्तथा, 'निल्लालियजमलजुयलजीहं'ति निर्लालितं–विवृतमुखान्निःसारितं यमलं–समं युगलं–द्वयं जिह्वयोर्येन तत्तथा 'आऊसियवयणगंडदेसं'ति आऊसियत्ति–प्रविष्टौ वदने गण्डदेशौ–कपोलभागौ यस्य तत्तथा 'चीणचिपिडनासियं'ति चीना–ह्रस्वा चिपिटा च–निम्ना नासिका यस्य तत्तथा 'विगयभुग्गभुमयं'ति विकृते–विकारवत्यौ भ्रुवे–भग्ने इत्यर्थः, पाठान्तरेण 'भुग्गभग्गे' अतीव वक्रे भ्रुवौ यस्य तत्तथा, 'खज्जोयगदित्तचक्खुरागं'ति खद्योतका–ज्योतिरिङ्गणाः तद्वद्दीप्तश्चक्षूरागो–लोचनरक्तत्वं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अङ्गच्छाय-नृपः, तस्य वर्णनं

यस्य तत्तथा, उत्रासनकं-भयंकरं विशालवक्षो-विस्तीर्णोरःस्थलं विशालकुक्षि-विस्तीर्णोदरदेशं एवं प्रलम्बकुक्षि 'पहसिय-पयलियपयडियग्गत्तं'ति प्रहसितानि-हसितुमारब्धानि प्रचलितानि च स्वरूपात् प्रवलिकानि वा-प्रजातवलीकानि प्रपतितानि च-प्रकर्षेण लम्बीभूतानि मात्राणि यस्य तत्तथा, वाचनान्तरे 'विगयभुग्गभुमयपहसियपयलियपयडियकुलिंगलल-ज्जोयदित्तचक्खुरागं'ति पाठः, तत्र विकृते भग्ने भ्रुवौ प्रहसिते च प्रचलिते प्रपतिते यस्य स्फुलिङ्गवत् खद्योतकवच्च दीप्त-श्चक्षूरागश्च यस्य तत्तथा, 'पणचमाण'मित्यादि विशेषणपञ्चकं प्रतीतं, 'नीलुप्पले'त्यादौ गवलं-महिषशृङ्गं अतसी-मालव-कदेशप्रसिद्धो धान्यविशेषः, 'खुरहारं'ति क्षुरस्येव धारा यस्य स तथा तमसिं-खड्गं, क्षुरो ह्यतितीक्ष्णधारो भवत्यन्यथा केशा-नामप्युण्डनाद्रिति क्षुरेणोपमा खड्गधारायाः कृतेति, अभिमुखमापतत् पश्यन्ति सर्वेऽपि सांयात्रिकाः, तत्रार्हन्नकवर्जा यत् कुर्वन्ति तदर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूपं सविशेषं तेषां तद्दर्शनं चानुक्तनिदमाह-'तए णं'मित्यादि, ततस्ते अर्हन्नकवर्जाः सांया-त्रिकाः पिशाचरूपं वक्ष्यमाणविशेषणं पश्यन्ति, दृष्ट्वा च बहूनामिन्द्रादीनां बहून्युपयाचितशतान्युपया चितवन्तस्तिष्ठन्तीति समुदायार्थः, अथवा 'तए णं'ति 'अरहन्नगवज्जा'इत्यादि गमान्तरं 'आगासतलयाओ नचंति' इतोऽनन्तरं द्रष्टव्यम्, अत एव वाचनान्तरे नेदमुपलभ्यते, उपलभ्यते चैवम्-'अभिमुहं आवयमाणं पासंति, तए णं ते अरहन्नगवज्जा नावा-वाणियगा भीया'इत्यादि, तत्र 'तालपिसायं'ति तालवृक्षाकारोऽतिदीर्घतेन पिशाचः तालपिशाचः तं, विशेषणद्वयं प्राग्वि, 'फुट्टसिरं'ति स्फुटितम्-अवन्धत्वेन विकीर्णं शिर इति-शिरोजातत्वात् केशा यस्य स तथा तं भ्रमरनिकरवत् वरमापराशिवत् महि-षवच्च कालको यः स तथा तं, भृत्तमेघवर्णं तथैव, सूर्पमिव-धान्यशोधकभाजनविशेषवत् नखा यस्य स सूर्पनखः तं, 'काल-

॥१३७॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गचछाय-नृपः, तस्य वर्णनं

सदृशजिह्व'मिति फालं–द्विपञ्चाशत्पलप्रमाणो लोहमयो दिव्यविशेषस्तच्च बह्निप्रतापितमिह ग्राह्यं तत्साधर्म्यं चेह जिह्वाया वर्णदीप्तिदीर्घत्वतद्वदिभिरिति, लम्बोष्ठं प्रतीतं धवलाभिर्वृत्ताभिरंशलष्टाभिर्विशरारुत्वेन तीक्ष्णाभिः स्थिराभिः निश्चलत्वेन दीप्ताभिः रुधिरचितत्वेन कुटिलाभिश्च ककचवा दंष्ट्राभिरवगूढं–व्याप्तं वदनं यस्य स तथा तं, विकोशितस्य–अपनीतकोशकस्य निरावरणस्येत्यर्थः घनस्थूलयोः–घनाश्लक्ष्णयोर्बहुगलं–द्वितयं तेन समसदृश्यौ–अत्यन्ततुल्ये तनुके–प्रतले चञ्चले–विमुक्तस्थैर्ये यथा भवत्यविश्राममित्यर्थौ कलन्तौ–रसातिलौल्यात् लालामिमुञ्चन्तौ रसलोले–भक्ष्यरसलम्पटे चपले–चञ्चले फुरुफुरायमाणे–प्रकम्पे निर्लोलिते–मुखान्निष्काशिते अग्रजिह्वे–अग्रभूते जिह्वे जिह्वाग्रे इत्यर्थो येन स तथा तं 'अवच्छियं'ति प्रसारितमित्येके, अन्ये तु यत्कारस्यालुप्तत्वात् 'अवयच्छियं' प्रसारितमुखत्वेन दृश्यमानमित्याहुः, 'महल्लं'ति महत् विकृतं–बीभत्सं लालाभिः प्रगलत् रक्तं च तालु–काकुन्दं यस्य स तथा तं,तथा हिङ्गुलकेन–कर्बुरद्रव्यविशेषेण समवर्णं कन्दरलक्षणं बिलं यस्य स तथा तमिव 'अंजणगिरिस्से'ति विभक्तिविपरिणामादञ्जनगिरिं–कृष्णवर्णपर्वतविशेषं तथाऽग्निज्वाला उद्गिरत् वदनं यस्य स तथा तं, अथवा 'अवच्छियेत्यादि हिंगलुए'त्यादि अग्निज्वाले'त्यादि प्रत्यंतरे च कर्मधारयेण वक्ष्यमाणवदनपदस्य विशेषणं कार्यं यस्य तमित्येवंरूपश्च वाक्यशेषो द्रष्टव्यः, तथा अग्निज्वाला उद्गिरद्वदनं यस्य स तथा तं, 'आऊसिय'त्ति सङ्कुचितं यदक्षचर्म–जलाकर्षणकोशस्तद्वत् 'उइट्ठ'त्ति अपकृष्टौ अपकर्षवन्तौ सङ्कुचितौ गण्डदेशौ यस्य स तथा तं, अन्ये त्वाहुः–आभूषितानि–सङ्कुटितानि अक्षाणि–इन्द्रियाणि च चर्म च ओष्ठौ च गण्डदेशौ च यस्य स तथा तं, चीना दृक्षा 'चिवड'त्ति चिपटा–निम्ना वंका–वक्रा भमेव भग्ना–अयोधनकुट्टितेवेत्यर्थो नासिका यस्य स तथा तं, रोषादाकुलो 'धमधमेंत'त्ति शब्दं कुर्वाणो मारुतो—

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६९,७०]

दीप अनुक्रम [८७,८८]

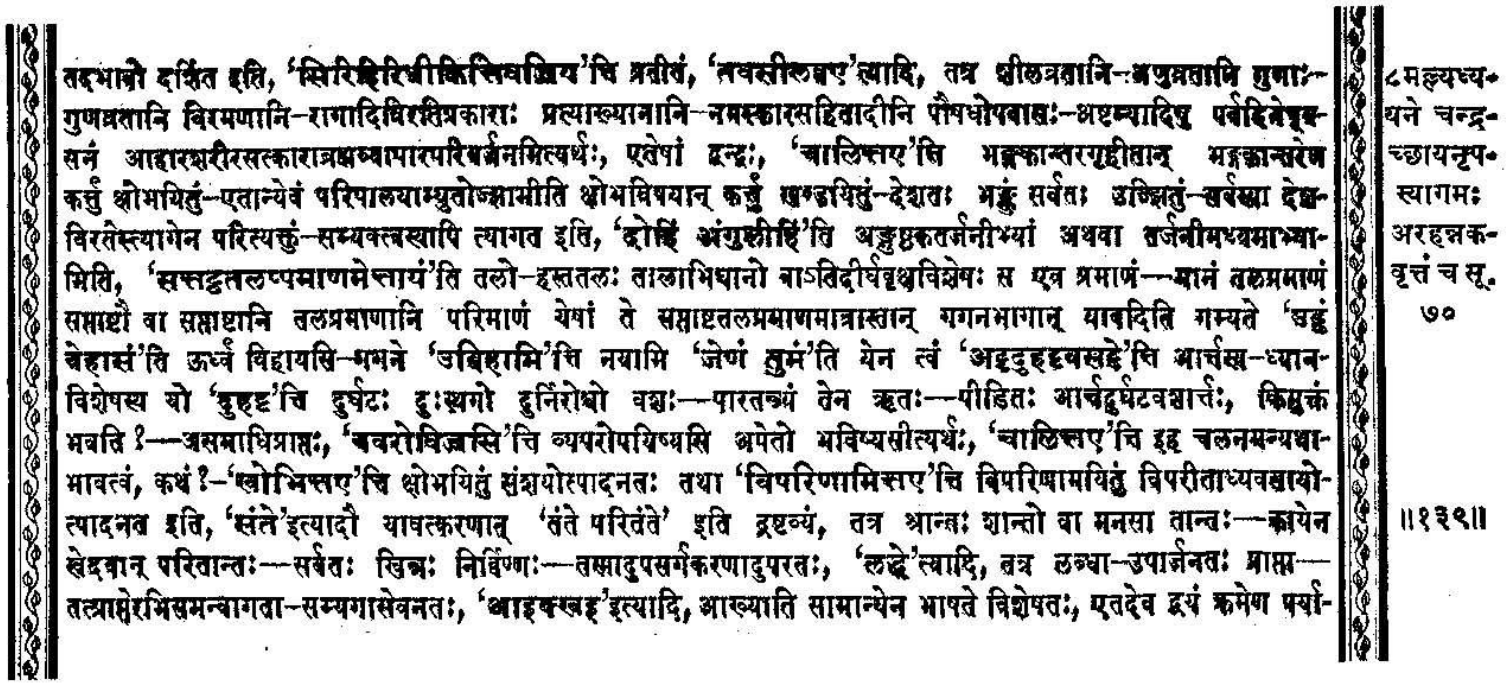
वायुर्निष्ठुरो–निर्भरः खरपरुषः–अत्यन्तकर्कशः शुषिरयोः–रन्ध्रयोर्यत्र तत्तथा, तदेवंविधमवभुग्नं–वक्रं नासिकापुटं यस्य तथा तं, इह च पदानामन्यथा निपातः प्राकृतत्वादिति, घाताय–पुरुषादिवधाय घाटाभ्यां वा–मस्तकावयवविशेषाभ्यां उद्भटं–विकरालं रचितमत एव भीषणं मुखं यस्य स तथा तं, ऊर्द्ध्वमुखे कर्णशष्कुल्यौ–कर्णावती ययोस्तौ तथा तौ च महान्ति–दीर्घाणि विकृतानि लोमानि ययोस्तौ तथा तौ च 'संखालग'त्ति शङ्खवन्तौ च शङ्खयोः–अक्षिप्रत्यासन्नावयवविशेषयोः संलग्नौ–सम्बद्धावित्येके, लम्बमानौ च–प्रलम्बौ चलितौ–चलन्तौ कर्णौ यस्य स तथा तं, पिङ्गले–कपिले दीप्यमाने–भासुरे लोचने यस्य स तथा तं, भृकुटिः–कोपकृतो भ्रूविकारः सैव तडिद्–विद्युद्यस्मिंस्तत्तथा तथाविधं पाठान्तरेण भ्रूकुटितं–कृतभ्रूकुटि ललाटं यस्य स तथा तं, नरशिरोमालया परिणद्धं–वेष्टितं चिन्हं–पिशाचकेतुर्यस्य स तथा तं, अथवा नरशिरोमालया यत्परिणद्धं–परिणहनं तदेव चिन्हं यस्य स तथा तं, विचित्रैः–बहुविधैर्गोनसैः–सरीसृपविशेषैः सुबद्धः परिकरः–सन्नाहो येन स तथा तं, 'अवहोलंत'त्ति अवघोलयन्तो डोलायमानाः 'फुप्फुयायंत'त्ति फूत्कुर्वन्तो ये सर्पाः वृश्चिका गोधाः उन्दुरा नकुलाः सरटाश्च तैर्विरचिता विचित्रा–विविधरूपवती वैकक्षेण–उत्तरासङ्गेन मर्कटबन्धेन स्कन्धलम्बमात्रतया वा मालिका–माला यस्य स तथा तं, भोगः–फणः स क्रूरो–रौद्रो ययोस्तौ तथा तौ च कृष्णसर्पौ च तौ धमधमायमानौ च तावेव लम्बमाने कर्णपूरे–कर्णाभरणविशेषौ यस्य स तथा तं, मार्जारश्रृगालौ लगितौ–नियोजितौ स्कन्धयोर्येन स तथा तं, दीप्तं–दीप्तस्वरं यथा भवत्येवं 'घुघुयंत'त्ति घूत्कारशब्दं कुर्वाणो यो घूकः–कौशिकः स कृतो–विहितो 'कुंतल'त्ति शेखरकः शिरसि येन स तथा तं, घण्टानां रवणं–शब्दस्तेन भीमो यः स तथा स चासौ भयङ्करश्चेति तं, कातरजनानां हृदयं स्फोटयति यः स तथा तं, दीप्तमट्टट्टहासं घण्टारवेण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गचच्छाय-नृपः, तस्य वर्णनं

भीमादिविशेषणविशिष्टं विनिर्मुञ्चन्तं वसारुधिरपूयमांसमलैर्मलिना 'पोच्चड'त्ति विलीना च तनुः–शरीरं यस्य स तथा तं, उन्नासनकं विशालवक्षसं च प्रतीते, 'पेच्छंत'त्ति प्रेक्ष्यमाणा–दृश्यमाना अभिन्ना–अखण्डा नखाश्च–नखरा रोम च मुखं च नयने च कर्णौ च यस्यां सा तथा सा चासौ वरव्याघ्रस्य चित्रा–कर्बुरा कृत्तिश्च–चर्मेति सा तथा सैव निवसनं–परिधानं यस्य स तथा तं, सरसं–रुधिरप्रधानं यद्गजचर्म तद्विततं–विस्तारितं यत्र तत्तथा तदेवंविधं 'ऊसवियं'ति उच्छ्रितं–ऊर्द्धीकृतं बाहुयुगलं येन स तथा तं, ताभिश्च तथाविधाभिः खरपरुषा–अतिकर्कशाः अस्निग्धाः–स्नेहविहीना दीप्ता–ज्वलन्त्य इवोपतापहेतुत्वात् अनिष्टा–अभिलाषाविषयभूताः अशुभाः स्वरूपेण अप्रियाः अप्रीतिकरत्वेन अकान्ताश्च विस्वरत्वेन या वाचस्ताभिः त्रस्तान् कुर्वाणं–त्रासयन्तं तर्जयन्तं च पश्यन्ति स्म, पुनस्तत्तालपिशाचरूपं 'एज्जमाणं'ति नावं प्रत्यागच्छत् पश्यन्ति 'समतुरंगेमाणे'त्ति आश्लिष्यन्तः, स्कन्दः–कार्त्तिकेयः रुद्रः–प्रतीतः शिवो–महादेवः वैश्रमणो–यक्षनायकः नागो–भवनपतिविशेषः भूतयक्षा–व्यन्तरभेदाः आर्य्या–प्रशान्ता प्रसन्नरूपा दुर्गा–कोट्टक्रिया–सैव महिषारूढरूपा, पूजाभ्युपगमपूर्वकाणि प्रार्थनानि उपयाचितान्युच्यन्ते, उपयाचितवन्तो–विदधतस्तिष्ठन्ति स्मेति,अर्हन्नकवर्जानामियमितिकर्त्तव्यतोक्ता, अधुनाऽर्हन्नकस्य तामाह—'तए ण'मित्यादि,'अपत्थियपत्थिय'त्ति अप्रार्थितं–यत्केनापि न प्रार्थ्यते तत्प्रार्थयति यः स तथा तदामन्त्रणं पाठान्तरेण अप्रस्थितः सन् यः प्रस्थित इव मुमूर्षुरित्यर्थः स तथोच्यते तस्यामन्त्रणं हे अप्रस्थितप्रस्थित !, यावत्करणात् 'दुरंतपंतलक्खणे'त्ति दुरन्तानि–दुष्टपर्यन्तानि प्रान्तानि–अपसदानि लक्षणानि यस्य स तथा तस्यामन्त्रणं 'हीणपुण्णचाउद्दसी' इति हीना–असमग्रा पुण्या–पवित्रा चतुर्दशी तिथिर्यस्य जन्मनि स तथा, चतुर्दशीजातो हि किल भाग्यवान् भवतीति आक्रोशे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१३९॥

तद्भावो दर्शित इति, 'सिरिहिरिधीकित्तिसिरिवज्जिय'त्ति प्रतीतं, 'तवसीलव्वए'त्यादि, तत्र शीलव्रतानि-अणुव्रतानि गुणाः-गुणव्रतानि विरमणानि-रागादिविरतिप्रकाराः प्रत्याख्यानानि-नमस्कारसहितादीनि पौषधोपवासाः-अष्टम्यादिषु पर्वदिनेषूपवसनं आहारशरीरसत्काराब्रह्मव्यापारपरिवर्जनमित्यर्थः, एतेषां द्वन्द्वः, 'चालित्तए'त्ति भङ्गकान्तरगृहीतान् भङ्गकान्तरेण कर्तुं क्षोभयितुं-एतान्येवं परिपालयाम्युतोज्झामीति क्षोभविषयान् कर्तुं खण्डयितुं-देशतः भङ्गं सर्वतः उज्झितुं-सर्वस्मा देश-विरतेस्त्यागेन परित्यक्तुं-सम्यक्त्वस्यापि त्यागत इति, 'दोहिं अंगुलीहिं'ति अङ्गुष्ठकतर्जनीभ्यां अथवा तर्जनीमध्यमाभ्या-मिति, 'सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्तायं'ति तलो-हस्ततलः तालाभिधानो वाऽतिदीर्घवृक्षविशेषः स एव प्रमाणं-मानं तलप्रमाणं सप्ताष्टौ वा सप्ताष्टानि तलप्रमाणानि परिमाणं येषां ते सप्ताष्टतलप्रमाणमात्रास्तान् गगनभागान् यावदिति गम्यते 'उड्ढं वेहासं'ति ऊर्ध्वं विहायसि-गगने 'उविहामि'त्ति नयामि 'जेणं तुमं'ति येन त्वं 'अट्टदुहट्टवसट्टे'त्ति आर्तस्य-ध्यान-विशेषस्य यो 'दुहट्ट'त्ति दुर्घटः दुःस्थगो दुर्निरोधो वशः—पारतन्त्र्यं तेन कृतः—पीडितः आर्तदुर्घटवशार्त्तः, किमुक्तं भवति ?—असमाधिप्राप्तः, 'ववरोविज्जसि'त्ति व्यपरोपयिष्यसि अपेतो भविष्यसीत्यर्थः, 'चालित्तए'त्ति इह चलनमन्यथा-भावत्वं, कथं ?-'खोभित्तए'त्ति क्षोभयितुं संशयोत्पादनतः तथा 'विपरिणामित्तए'त्ति विपरिणामयितुं विपरीताध्यवसायो-त्पादनत इति, 'संते'इत्यादौ यावत्करणात् 'तंते परितंते' इति द्रष्टव्यं, तत्र श्रान्तः शान्तो वा मनसा तान्तः—कायेन खेदवान् परितान्तः—सर्वतः खिन्नः निर्विण्णः—तस्मादुपसर्गकरणादुपरतः, 'लद्धे'त्यादि, तत्र लब्धा-उपार्जनतः प्राप्ता—तत्प्राप्तेरभिसमन्वागता-सम्यगासेवनतः, 'आइक्खइ'इत्यादि, आख्याति सामान्येन भाषते विशेषतः, एतदेव द्वयं क्रमेण पर्या-

८मल्यध्य-यने चन्द्र-च्छायनृप-स्यागमः अरहन्नक-वृत्तं च सू. ७०

॥१३९॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

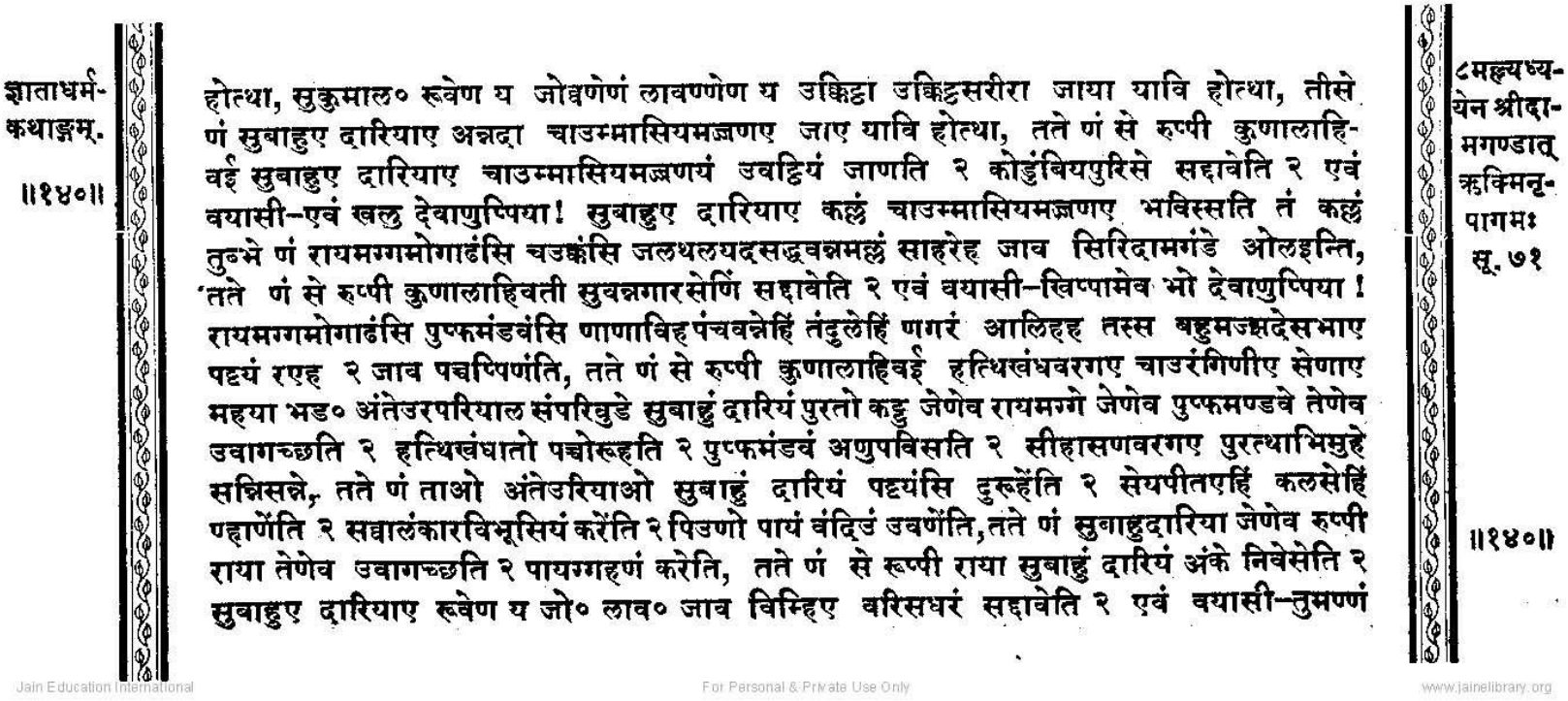
यशब्दाभ्यामुच्यते—प्रज्ञापयति प्ररूपयति, 'देवेण वा दाणवे'त्यादाविदं द्रष्टव्यमपरं 'किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण व'त्ति तत्र देवो—वैमानिको ज्योतिष्को वा दानवो—भवनपतिः शेषा व्यन्तरभेदाः, 'नो सद्दहामि'इत्यादि न श्रद्धे—प्रत्ययं न करोमि 'नो पत्तियामि' तत्र प्रीतिकं—प्रीतिं न करोमि न रोचयामि—असाकमप्येवंभूता गुणप्राप्तिर्भवत्वेवं न रुचिविषयीकरोमीति, 'पियधम्मे'त्ति धर्मप्रियो दृढधर्म्मा—आपद्यपि धर्मादविचलः, यावत्करणात् ऋद्ध्यादिपदानि दृश्यानि, तत्र 'इड्ढि'त्ति गुणर्द्धिः धृतिः—आन्तरं तेजः यशः—ख्यातिः बलं—शारीरं वीर्यं—जीवप्रभवं पुरुषकारः—अभिमानविशेषः पराक्रमः—स एव निष्पादितस्वविषयः लब्धादिपदानि तथैव, 'उस्सुक्कं वियरइ'त्ति शुल्काभावमनुजानातीत्यर्थः, 'गामागरे'त्यादाविदं द्रष्टव्यं—'नगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणनिगमसन्निवेसाइं' इति तत्र ग्रामो—जनपदाध्यासितः आकरो—हिरण्याद्युत्पत्तिस्थानं नगरं—करविरहितं खेटं—धूलीप्राकारं कर्वटं—कुनगरं मडम्बं—दूरवर्त्तिसन्निवेशान्तरं द्रोणमुखं—जलपथस्थलपथयुक्तं पत्तनं—जलपथस्थलपथयोरेकतरयुक्तं निगमो—वणिग्जनाधिष्ठितः सन्निवेशः—कटकादीनामावासः,'देवकन्नगा वे'—त्यादाविदं दृश्यं—'असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वे'ति, 'वाणियगजणियहासे'—त्ति नैगमोत्पादितमल्लीविषयानुराग इत्यर्थः २ ॥

तेणं कालेणं २ कुणाला नाम जणवए होत्था, तत्थ णं सावत्थी नामं नगरी होत्था, तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नामं राया होत्था, तस्स णं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहुनामं दारिया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [७१,७२]

दीप अनुक्रम [८९,९०]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१४०॥

होत्था, सुकुमाल० रूवेण य जोव्वणेणं लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तीसे णं सुबाहुए दारियाए अन्नदा चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था, तते णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहुए दारियाए चाउम्मासियमज्जणयं उवट्ठियं जाणति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! सुबाहुए दारियाए कल्लं चाउम्मासियमज्जणए भविस्सति तं कल्लं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि जलथलयदसद्धवन्नमल्लं साहरेह जाव सिरिदामगंडे ओलइन्ति, तते णं से रुप्पी कुणालाहिवती सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविहपंचवन्नेहिं तंदुलेहिं णगरं आलिहह तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टयं रएह २ जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भड० अंतेउरपरियाल संपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरतो कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमण्डवे तेणेव उवागच्छति २ हत्थिखंधातो पच्चोरूहति २ पुप्फमंडवं अणुपविसति २ सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तते णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरूहेंति २ सेयपीतएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति २ सव्वालंकारविभूसियं करेंति २ पिउणो पायं वंदिउं उवणेंति, तते णं सुबाहुदारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छति २ पायग्गहणं करेति, तते णं से रुप्पी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेति २ सुबाहुए दारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधरं सद्दावेति २ एवं वयासी–तुमण्णं

८मल्यध्य-येन श्रीदा-मगण्डात् रुक्मिनृ-पागमः सू. ७१ ॥१४०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रुक्मी-नृपः, तस्य वर्णनं

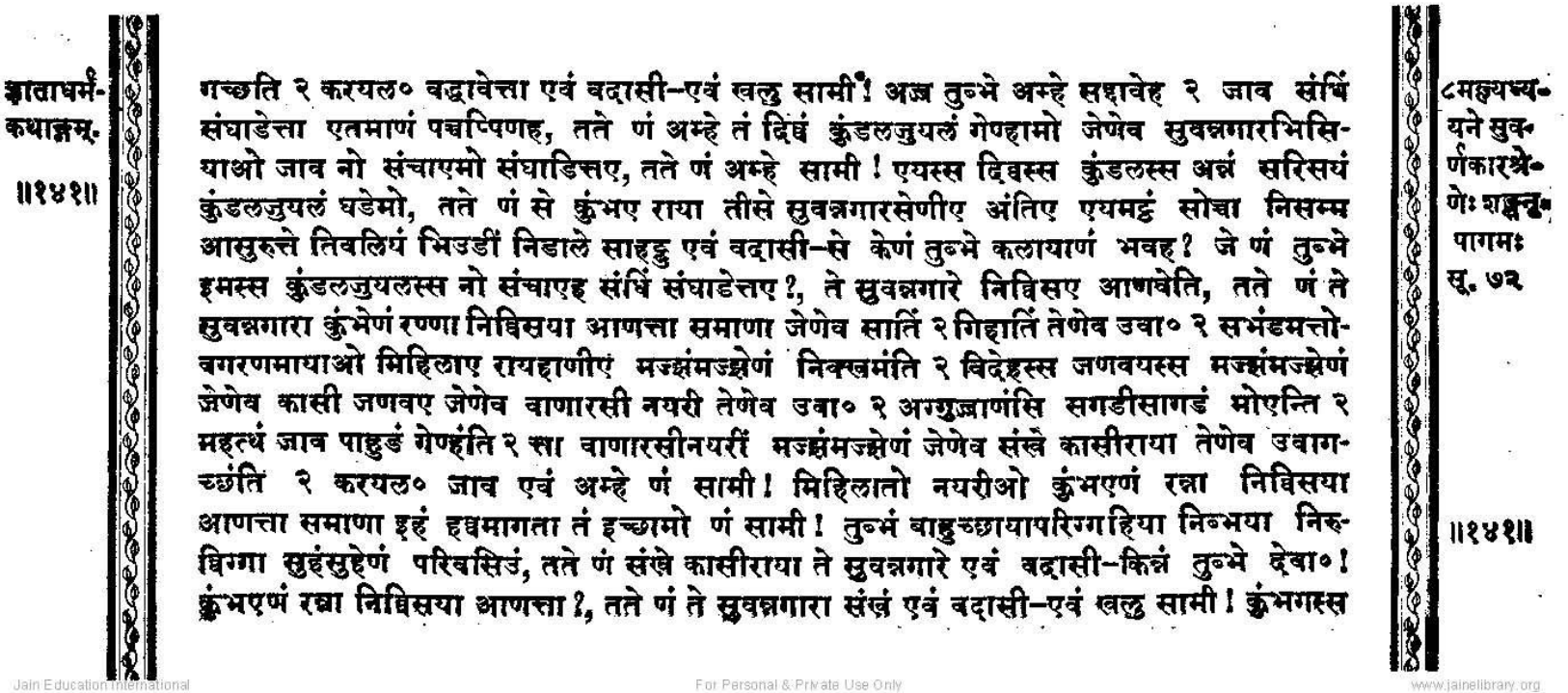
देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कस्सइ रन्नो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए?, तते णं से वरिसधरे रुप्पिं करयल० एवं व०–एवं खलु सामी ! अहं अन्नया तुब्भेणं दोच्चेणं मिहिलं गए तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावतीए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घेति, तए णं से रूप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म सेसं तहेव मज्जणगजणितहासे दूतं सद्दावेति २ एवं वयासी०–जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारित्थगमणाए ३ (सूत्रं ७१) तेणं कालेणं २ कासी नाम जणवए होत्था, तत्थ णं वाणारसीनाम नगरी होत्था, तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था, तते णं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी.विसंघडिए यावि होत्था, तते णं से कुंभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति २ एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह, तए णं सा सुवन्नगारसेणी एतमट्ठं तहत्ति पडिसुणेंति २ तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हति २ जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छंति २ सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेति २ बहूहिं आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं घडित्तए, नो चेव णं संचाएंति संघडित्तए, तते णं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	रुक्मी-नृपः, तस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७१,७२]

दीप अनुक्रम [८९,९०]



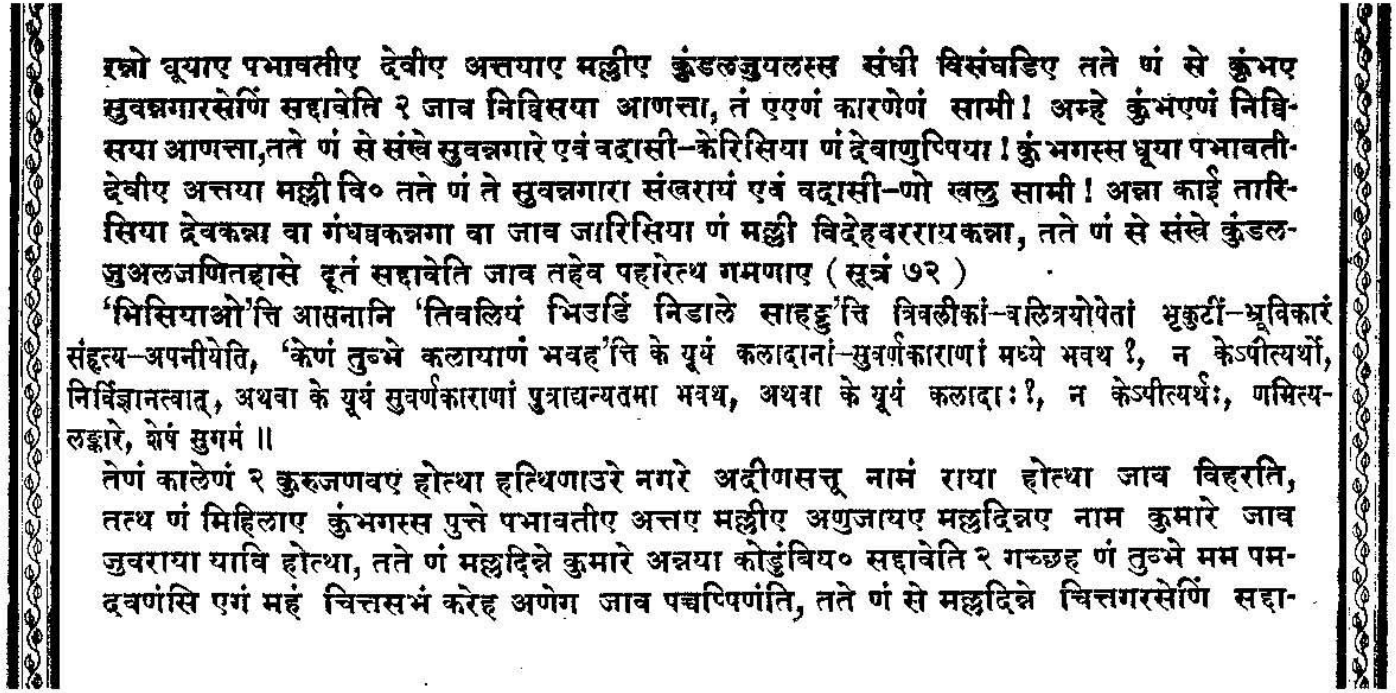
॥१४१॥

गच्छति २ करयल० वद्धावेत्ता एवं वदासी–एवं खलु सामी! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह २ जाव संधिं संघाडेत्ता एतमाणं पचप्पिणह, तते णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो संचाएमो संघाडित्तए, तते णं अम्हे सामी! एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो, तते णं से कुंभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते तिवलियं भिउडीं निडाले साहट्टु एवं वदासी–से केणं तुब्भे कलायाणं भवह? जे णं तुब्भे इमस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह संधिं संघाडेत्तए?, ते सुवन्नगारे निव्विसए आणवेति, तते णं ते सुवन्नगारा कुंभेणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव सातिं २ गिहातिं तेणेव उवा० २ सभंडमत्तोवगरणमायाओ मिहिलाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निक्खमंति २ विदेहस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवा० २ अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएन्ति २ महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति २ सा वाणारसीनयरीं मज्झंमज्झेणं जेणेव संखे कासीराया तेणेव उवागच्छंति २ करयल० जाव एवं अम्हे णं सामी! मिहिलातो नयरीओ कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता समाणा इहं हव्वमागता तं इच्छामो णं सामी! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसिउं, तते णं संखे कासीराया ते सुवन्नगारे एवं वदासी–किन्नं तुब्भे देवा०! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता?, तते णं ते सुवन्नगारा संखं एवं वदासी–एवं खलु सामी! कुंभगस्स

॥१४१॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रुक्मी-नृपः, तस्य वर्णनं



रन्नो धूयाए पभावतीए देवीए अत्तयाए मल्लीए कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए तते णं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति २ जाव निविसया आणत्ता, तं एएणं कारणेणं सामी! अम्हे कुंभएणं निविसया आणत्ता,तते णं से संखे सुवन्नगारे एवं वदासी–केरिसिया णं देवाणुप्पिया! कुंभगस्स धूया पभावतीदेवीए अत्तया मल्ली वि० तते णं ते सुवन्नगारा संखरायं एवं वदासी–णो खलु सामी! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा गंधव्वकन्नगा वा जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना, तते णं से संखे कुंडलजुअलजणितहासे दूतं सद्दावेति जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए (सूत्रं ७२)

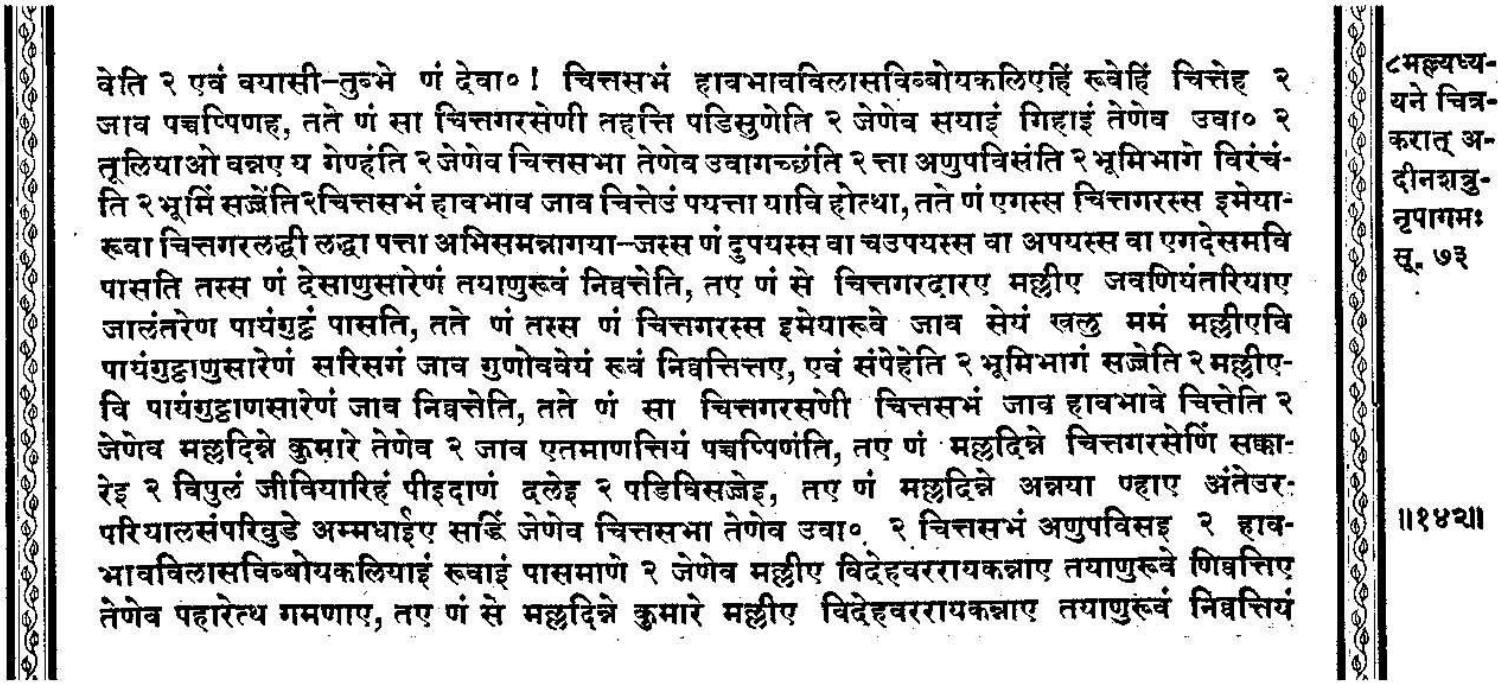
'भिसियाओ'त्ति आसनानि 'तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु'त्ति त्रिवलीकां–वलित्रयोपेतां भृकुटीं–भ्रूविकारं संहृत्य–अपनीयेति, 'केणं तुब्भे कलायाणं भवह'त्ति के यूयं कलादानां–सुवर्णकाराणां मध्ये भवथ?, न केऽपीत्यर्थो, निर्विज्ञानत्वात्, अथवा के यूयं सुवर्णकाराणां पुत्राद्यन्यतमा भवथ, अथवा के यूयं कलादाः?, न केऽपीत्यर्थः, णमित्यलङ्कारे, शेषं सुगमं ॥

तेणं कालेणं २ कुरुजणवए होत्था हत्थिणाउरे नगरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था जाव विहरति, तत्थ णं मिहिलाए कुंभगस्स पुत्ते पभावतीए अत्तए मल्लीए अणुजायए मल्लदिन्नए नाम कुमारे जाव जुवराया यावि होत्था, तते णं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबिय० सद्दावेति २ गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह अणेग जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [७३]

दीप अनुक्रम [९१]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१४२॥

वेति २ एवं वयासी–तुब्भे णं देवा० ! चित्तसभं हावभावविलासविब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह २ जाव पच्चप्पिणह, तते णं सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेति २ जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवा० २ तूलियाओ वन्नए य गेण्हंति २ जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अणुपविसंति २ भूमिभागे विरंचंति २ भूमिं सज्जेंति २ चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था, तते णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया–जस्स णं दुपयस्स वा चउपयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासति तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निवत्तेति, तए णं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासति, तते णं तस्स णं चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीएवि पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निवत्तित्तए, एवं संपेहेति २ भूमिभागं सज्जेति २ मल्लीएवि पायंगुट्ठाणसारेणं जाव निवत्तेति, तते णं सा चित्तगरसेणी चित्तसभं जाव हावभावे चित्तेति २ जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव २ जाव एतमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सक्कारेइ २ विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलेइ २ पडिविसज्जेइ, तए णं मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवा० २ चित्तसभं अणुपविसइ २ हावभावविलासविब्बोयकलियाइं रूवाइं पासमाणे २ जेणेव मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवे णिवत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवं निवत्तियं

८मल्ल्यध्ययने चित्रकरात् अदीनशत्रुनृपागमः सू. ७३ ॥१४२॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अदिनशत्रु-राजा, तस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७३]

दीप अनुक्रम [९१]

पासति २ इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एस णं मल्ली विदेहवररायकन्नत्तिकट्टु लज्जिए वीडिए विअडे सणियं २ पच्चोसक्कइ, तए णं मल्लदिन्ने अम्मधाई पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वदासी–किन्नं तुमं पुत्ता ! लज्जिए वीडिए विअडे सणियं २ पच्चोसक्कइ ?, तते णं से मल्लदिन्ने अम्मधातिं एवं वदासी–जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीएगुरुदेवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तियं सभं अणुपविसित्तए?,तएणं अम्मधाई मल्लदिन्नं कुमारं व०–नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली, एस णं मल्ली विदे० चित्तगरएणं तयाणुरूवे णिव्वत्तिए, तते णं मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते एवं वयासी–केस णं भो चित्तयरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे णं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए जाव निव्वत्तिएत्तिकट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ, तए णं सा चित्तगरस्सेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ २ त्ता २ एवं वयासी–एवं खलु सामी ! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तकरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया जस्स णं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेति तं मा णं सामी ! तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह, तं तुब्भे णं सामी ! तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह, तए णं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ २ निव्विसयं आणवेइ, तए णं से चित्तगरए मल्लदिन्नेणं णिव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ २ विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव कुरुजणवए जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अदिनशत्रु-राजा, तस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७३]

दीप अनुक्रम [९१]

उवा० २ त्ता भंडणिक्खेवं करेइ २ चित्तफलगं सज्जेइ२ मल्लीए विदेह० पायंगुट्ठाणुसारेण रूवं णिवत्तेइ २ कक्खंतरंसि छुब्भइ २ महत्थं ३ जाव पाहुडं गेण्हइ २ हत्थिणापुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छति २ तं करयल जाव वद्धावेइ २ पाहुडं उवणेति २ एवं खलु अहं सामी! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रन्नो पुत्तेणं पभावतीए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निविसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए, तं इच्छामि णं सामी! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिए जाव परिवसित्तए, तते णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगदारयं एवं वदासी–किन्नं तुमं देवाणुप्पिया! मल्लदिण्णेणं निविसए आणत्ते?, तए णं से चित्तयरदारए अदीणसत्तुरायं एवं वदासी–एवं खलु सामी! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइं चित्तगरसेणिं सद्दावेइ २ एवं व०–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम चित्तसभं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम संडासगं छिंदावेइ २ निविसयं आणवेइ, तं एवं खलु सामी! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निविसए आणत्ते, तते णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वदासी–से केरिसए णं देवाणुप्पिया! तुमे मल्लीए तदाणुरूवे रूवे निवत्तिए?, तते णं से चित्त० कक्खंतराओ चित्तफलयं णीणेति २ अदीणसत्तुस्स उवणेइ २ एवं व०–एस णं सामी! मल्लीए वि० तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निवत्तिए णो खलु सक्का केणइ देवेण वा जाव मल्लीए विदेहरायवरकण्णगाए तयाणुरूवे रूवे निवत्तित्तए, तते णं अदीणसत्तू पडिरूवजणितहासे दूयं सद्दावेति२एवं वदासी–तहेव जाव पहारेत्थ गमणयाए(सूत्रं७३)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अदिनशत्रु-राजा, तस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७३]

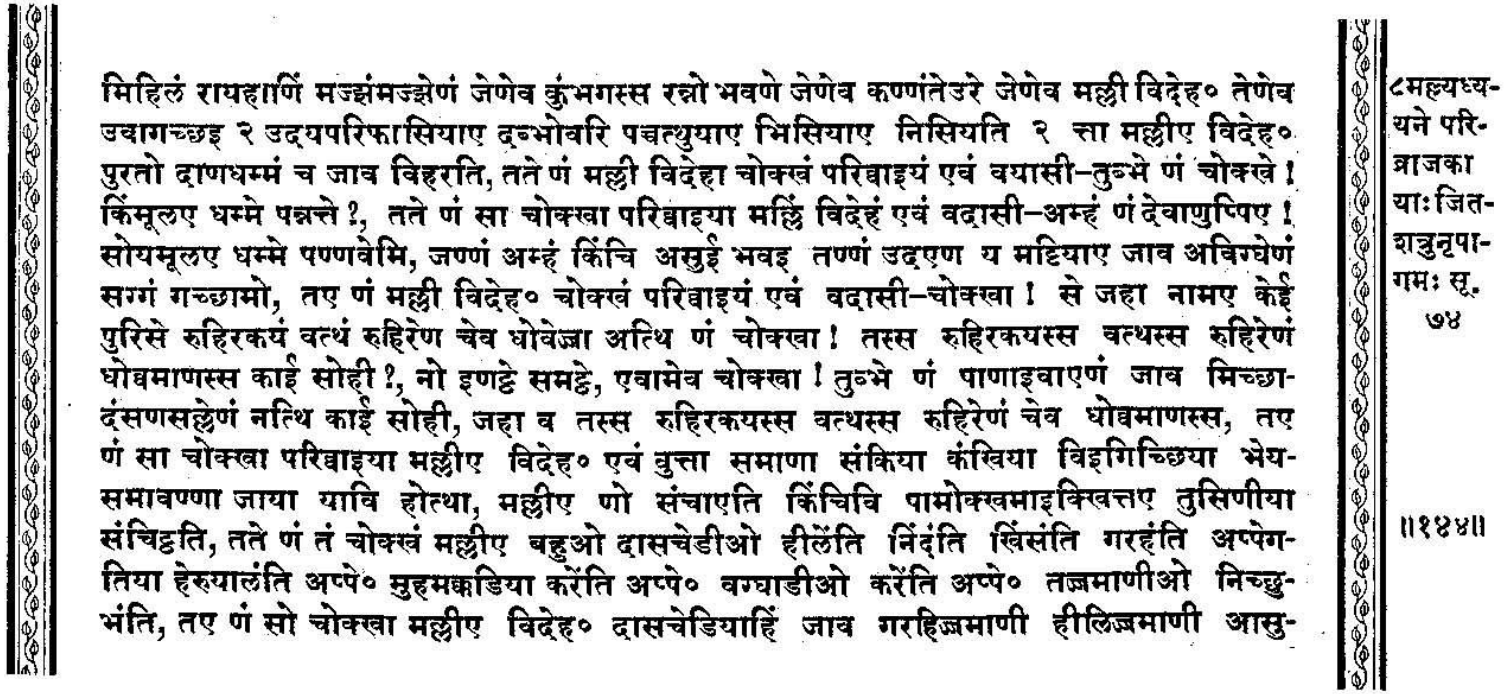
दीप अनुक्रम [९१]

'पमयवणंसि'त्ति गृहोद्याने 'हावभावविलाससविहोयकलिएहि'ति हावभावादयः सामान्येन स्त्रीचेष्टाविशेषाः, विशेषः पुनरयम्–"हावो मुखविकारः, स्याद्, भावश्चित्तसमुद्भवः। विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विभ्रमो भ्रूसमुद्भवः ॥ १ ॥" इति, अन्ये त्वेवं विलासमाहुः–"स्थानासनगमनानां हस्तभ्रूनेत्रकर्मणां चैव। उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टोऽसौ विलासः स्यात् ॥१॥" विब्बोकलक्षणं चेदम्–"इष्टानामर्थानां प्राप्तावभिमानगर्भसम्भूतः। स्त्रीणामनादरकृतो विब्बोको नाम विज्ञेयः ॥१॥" 'तूलियाउ'त्ति तूलिका बालमय्यश्चित्रलेखनकूर्चिकाः, 'तदणुरूवं रूवं'ति दृष्ट्वा द्विपदाद्युचितमाकारमिति, 'अंतेउरपरियालेण'न्ति अन्तःपुरं च परिवारश्च अन्तःपुरलक्षणो वा परिवारो यः स तथा ताभ्यां तेन वा सम्परिवृतः, लज्जितो व्रीडितो व्यर्दः इत्येते त्रयोऽपि पर्यायशब्दाः लज्जाप्रकर्षाभिधानायोक्ताः, 'लज्जणिज्जाए'त्ति लज्ज्यते यस्याः सा लज्जनीया।

तेणं कालेणं २ पंचाले जणवए कंपिल्ले पुरे नयरे जियसत्तू नाम राया पंचालाहिवई, तस्स णं जितसत्तुस्स धारिणीपामोक्खं देविसहस्सं ओरोहे होत्था, तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया रिउव्वेद जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था, तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभितीणं पुरतो दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरति, तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गेण्हइ २ परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ २ पविरलपरिव्वाइया सद्धिं संपरिवुडा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अदिनशत्रु-राजा, तस्य वर्णनं, जितशत्रु-राजा, तस्य वर्णनं



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१४४॥

मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव कण्णंतेउरे जेणेव मल्ली विदेह० तेणेव उवागच्छइ २ उदयपरिफासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए निसियति २ त्ता मल्लीए विदेह० पुरतो दाणधम्मं च जाव विहरति, तते णं मल्ली विदेहा चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी–तुब्भे णं चोक्खे ! किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?, तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेहं एवं वदासी–अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पण्णवेमि, जण्णं अम्हं किंचि असुई भवइ तण्णं उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्गं गच्छामो, तए णं मल्ली विदेह० चोक्खं परिव्वाइयं एवं वदासी–चोक्खा ! से जहा नामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा अत्थि णं चोक्खा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोवमाणस्स काई सोही ?, नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा ! तुब्भे णं पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहा व तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोवमाणस्स, तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेह० एवं वुत्ता समाणा संकिया कंखिया विइगिच्छिया भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था, मल्लीए णो संचाएति किंचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसिणीया संचिट्ठति, तते णं तं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति निंदंति खिंसंति गरहंति अप्पेगतिया हेरुयालंति अप्पे० मुहमक्कडिया करेंति अप्पे० वग्घाडीओ करेंति अप्पे० तज्जमाणीओ निच्छुभंति, तए णं सो चोक्खा मल्लीए विदेह० दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी हीलिज्जमाणी आसु-

८मल्यध्ययने परिव्राजकायाः जितशत्रुनृपागमः सू. ७४ ॥१४४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जितशत्रु-राजा, तस्य वर्णनं

रुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकण्णाए पओसमावज्जति, भिसियं गेण्हति २ कण्णं-तेउराओ पडिनिक्खमति २ मिहिलाओ निग्गच्छति २ परिवाइयासंपरिवुडा जेणेव पंचालजणवए जेणेव कंपिल्लपुरे बहूणं राइसर जाव परूवेमाणी विहरति, तए णं से जियसत्तू अन्नदा कदाई अंते-उरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे एवं जाव विहरति, तते णं सा चोक्खा परिवाइयासंपरिवुडा जेणेव जितंसत्तुस्स रण्णो भवणे जेणेव जितसत्तू तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अणुपविसति २ जियसत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेति, तते णं से जितसत्तू चोक्खं परि० एज्जमाणं पासति २ सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ चोक्खं सक्कारेति २ आसणेणं उवणिमंतेति, तते णं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निविसइ, जियसत्तुं रायं रज्जे य जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तते णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रन्नो दाणधम्मं च जाव विहरति, तते णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वदासी–तुमं णं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर जाव अडह बहूण य रातीसर गिहातिं अणुपविससि तं अत्थियाइं ते कस्सवि रन्नो वा जाव एरिसए ओरोहे दिट्ठपुवे जारिसए णं इमे मह उवरोहे?, तए णं सा चोक्खा परिवाइया जियसत्तुं [एवं वदासी] ईसिं अवहसियं करेइ २ (एवं वयासी–) एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया! तस्स अगडदद्दुरस्स?, के णं देवाणुप्पिए! से अगडदद्दुरे?, जियसत्तू! से जहा नामए अगडदद्दुरे सिया, से णं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा दहं वा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [७४,७५] + गाथा: दीप अनुक्रम [९२-९५]

सरं वा सागरं वा अपासमाणे चेवं मण्णइ–अयं चेव अगडे वा जाव सागरे वा, तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए, तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्ददद्दुरं एवं वदासी–से केस णं तुमं देवाणुप्पिया! कत्तो वा इह हव्वमागए?, तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! अहं सामुद्दए दद्दुरे, तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी–केमहालए णं देवाणुप्पिया! से समुद्दे?, तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी–महालए णं देवाणुप्पिया! समुद्दे, तए णं से दद्दूरे पाएणं लीहं कड्ढइ २ एवं वयासी–एमहालए णं देवाणुप्पिया! से समुद्दे?, णो इणट्ठे समट्ठे, महालए णं से समुद्दे, तए णं से कूवदद्दुरे पुरच्छिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं गच्छइ २ एवं वयासी–एमहालए णं देवाणुप्पिया! से समुद्दे?, णो इणट्ठे समट्ठे, तहेव एवामेव तुमंपि जियसत्तू अन्नेसिं बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभिईणं भज्जं वा भगिणीं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेव णं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स, तं एवं खलु जियसत्तू! मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूता पभावतीए अत्तिया मल्ली नामंति रूवेण य जुव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली, विदेहवररायकण्णाए छिण्णस्सवि पायंगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयसहस्सतिमंपि कलं न अग्घइत्तिकट्टु जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया, तते णं से जितसत्तू परिव्वाइयाजणितहासे दूयं सद्दावेति २ जाव पहारेत्थ गमणाए ६। (सूत्रं ७४) तते णं तेसिं जियसत्तु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जितशत्रु-राजा, तस्य वर्णनं

पामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं छप्पिय दूतका जेणेव मिहिला तेणेव उवाग० २ मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं २ खंधावारनिवेसं करेंति २ मिहिलं रायहाणीं अणुपविसंति २ जेणेव कुंभए तेणेव उवा० २ पत्तेयं २ करयल० साणं २ राईणं वयणाति निवेदेंति, तते णं से कुंभए तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एवं वयासी–न देमि णं अहं तुब्भं मल्लीं विदेहवरकण्णंतिकट्टु ते छप्पि दूते असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं णिच्छुभावेति, तते णं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रन्ना असक्कारिया असम्माणिया अवदारेणं णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा २ जाणवया जेणेव सयाति २ णगराइं जेणेव सगा २ रायाणो तेणेव उवा० करयलपरि० एवं वयासी–एवं खलु सामी ! अम्हे जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवदारेणं निच्छुभावेति, तं ण देइ णं सामी ! कुंभए मल्ली वि०, साणं २ राईणं एयमट्ठं निवेदंति, तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति २ एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव निच्छूढा, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २ ण्हाया सण्णद्धा हत्थिखंधवरगया सकोरंटमल्लदामा जाव सेयवरचामराहिं० महयाहयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरं-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [७४,७५] + गाथा: दीप अनुक्रम [९२-९५]

गिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सविड्ढीए जाव रवेणं सएहिं २ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति २ एगयओ मिलायंति २ जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव० हय जाव सेण्णं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणंति, तते णं कुंभए ण्हाते सण्णद्धे हत्थिखंध० सकोरंट० सेयवरचामरए महया० मिहिलं मज्झंमज्झेणं णिज्जाति २ विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसअंते तेणेव उवा० २ खंधावारनिवेसं करेति २ जियसत्तुपा० छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठति, तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पिय राया णो जेणेव कुंभए तेणेव उवा० २ कुंभएणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिंधद्धयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसो दिसिं पडिसेहिंति, तते णं से कुंभए जितसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहित जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए जाव अधारिणिज्जमितिकट्टु सिग्घं तुरियं जाव वेइयं जेणेव मिहिला तेणेव उवा० २ मिहिलं अणुपविसति २ मिहिलाए दुवारातिं पिहेइ २ रोहसज्जे चिट्ठति, तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा छप्पि राया णो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति २ मिहिलं रायहाणिं णिस्संचारं णिरुचारं सव्वतो समंता ओरुंभित्ताणं चिट्ठंति, तते णं से कुंभए मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता अब्भंतरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं रातीणं छिद्दाणि य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

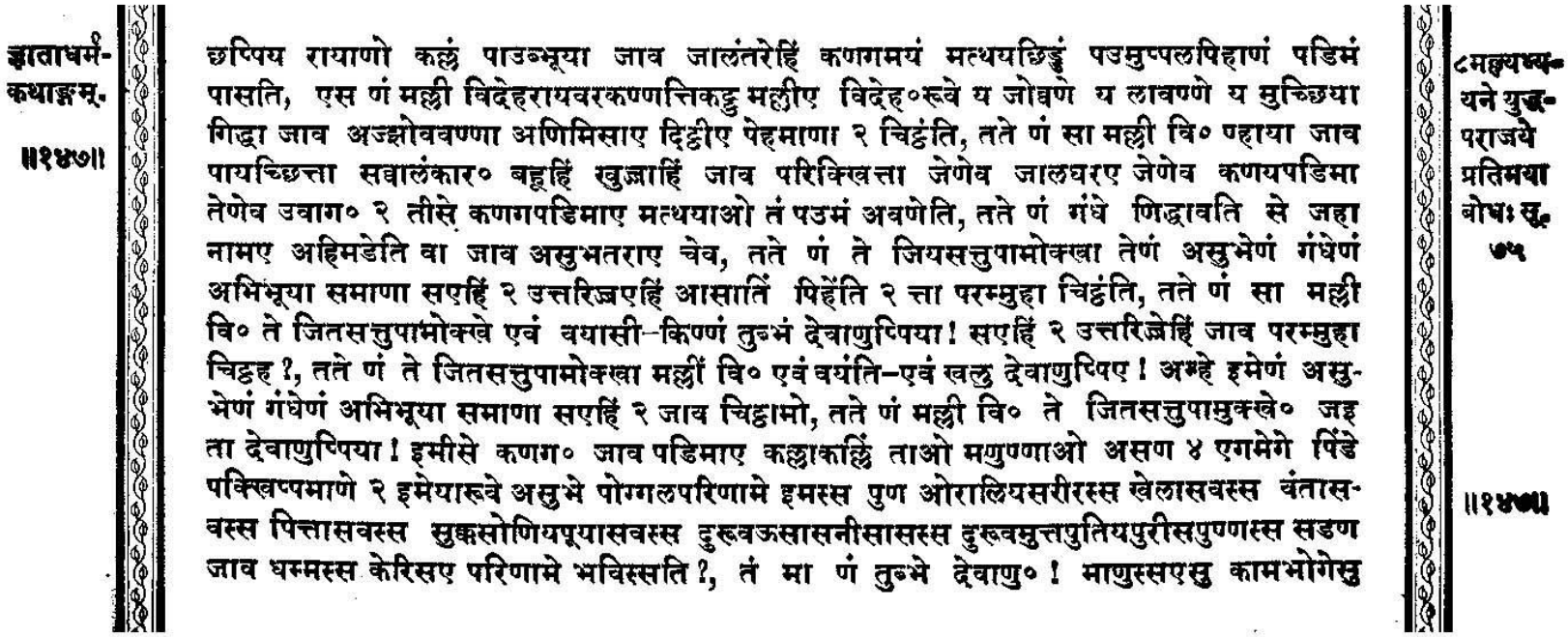
प्रत सूत्रांक [७४,७५] + गाथा: दीप अनुक्रम [९२-९५]

विवराणि य मग्गाणि य अलभमाणे बहूहिं आएहि य उवाएहि य उप्पत्तियाहि य ४ बुद्धीहिं परिणामेमाणे २ किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहतमणसंकप्पे जाव झियायति, इमं च णं मल्लीवि० ण्हाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं परिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उ० २ कुंभगस्स पायग्गहणं करेंति, तते णं कुंभए मल्लिं विदेह० णो आढाति नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं मल्ली वि० कुंभगं एवं वयासी–तुब्भे णं ताओ! अण्णदा ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह, किण्णं तुब्भं अज्ज ओहत० झियायह?, तते णं कुंभए मल्लिं वि० एवं व०–एवं खलु पुत्ता! तव कज्जे जितसत्तुपमुक्खेहिं छहिं रातीहिं दूया संपेसिया, ते णं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा, तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा तोसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठंति, तते णं अहं पुत्ता तोसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि अलभमाणे जाव झियामि, तते णं सा मल्ली वि० कुंभगं रायं एवं वयासी–मा णं तुब्भे ताओ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तुब्भे णं ताओ! तोसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं २ रहसियं दूयसंपेसे करेह, एगमेगं एवं वदह–तव देमि मल्लिं विदेहवररायकण्णंतिकट्टु संझाकालसमयंसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि पडिनिसंतंसि पत्तेयं २ मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह २ गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिधेह २ रोहसज्जे चिट्ठह, तते णं कुंभए एवं० तं चेव जाव पवेसेंति रोहसज्जे चिट्ठंति, तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [७४,७५] + गाथा: दीप अनुक्रम [९२-९५]



छप्पिय रायाणो कल्लं पाउब्भूया जाव जालंतरेहिं कणगमयं मत्थयछिद्दं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासति, एस णं मल्ली विदेहरायवरकण्णत्तिकट्टु महीए विदेह०रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा जाव अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा २ चिट्ठंति, तते णं सा मल्ली वि० ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकार० बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणयपडिमा तेणेव उवाग० २ तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ तं पउमं अवणेति, तते णं गंधे णिद्धावति से जहा नामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव, तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जएहिं आसातिं पिहेंति २ त्ता परम्मुहा चिट्ठंति, तते णं सा मल्ली वि० ते जितसत्तुपामोक्खे एवं वयासी–किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया! सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा चिट्ठह?, तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा मल्लीं वि० एवं वयंति–एवं खलु देवाणुप्पिए! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ जाव चिट्ठामो, तते णं मल्ली वि० ते जितसत्तुपामुक्खे० जइ ता देवाणुप्पिया! इमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असण ४ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे २ इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे इमस्स पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स चंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कसोणियपूयासवस्स दुरूवऊसासनीसासस्स दुरूवमुत्तपुतियपुरीसपुण्णस्स सडण जाव धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सति?, तं मा णं तुब्भे देवाणु०! माणुस्सएसु कामभोगेसु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्लिजिन एवं पूर्वभवानां मित्राणां प्रातिबोध:

प्रत सूत्रांक [७४,७५] + गाथा: दीप अनुक्रम [९२-९५]

सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह, एवं खलु देवाणु० ! तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावतिंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था सहजाया जाव पव्वतिता, तए णं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोयं कम्मं निव्वत्तेमि जति णं तुब्भं चोत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरह तते णं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि सेसं तहेव सव्वं, तते णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा तत्थ णं तुब्भे देसूणातिं बत्तीसातिं सागरोवमाइं ठिती, तते णं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ जाव साइं २ रज्जातिं उवसंपज्जित्ताणं विहरह, तते णं अहं देवाणु० ! ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया,–किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरंमि ! वुत्था समयनिबद्धं देवा ! तं संभरह जातिं ॥ १ ॥ तते णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहराय० अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं० ईहावूह० जाव सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति, तए णं मल्ली अरहा जितसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाइसरणे जाणित्ता गब्भघराणं दाराइं विहाडावेति,तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति२ तते णं महब्बलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागया यावि होत्था, तते णं मल्लीए अरहाते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवती मल्लिजिन एवं पूर्वभवानां मित्राणां प्रातिबोध:

जितसत्तूपामोक्खे छप्पिय रायाणो एवं व०–एवं खलु अहं देवा०! संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामि तं तुब्भे णं किं करेह किं चवसह जाव किं भे हियसामत्थे?, जियसत्तू० मल्लिं अरहं एवं वयासी–जति णं तुब्भे देवा०! संसार जाव पव्वयह अम्हे णं देवा०! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा जह चेव णं देवा०! तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था तहा चेव णं देवा०! इण्हिंपि जाव भविस्सह,अम्हेवियणं देवाणु०! संसारभउव्विग्गा जाव भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता जाव पव्वयामो,तते णं मल्ली अरहा ते जितसत्तुपामोक्खे एवं वयासी–जण्णं तुब्भे संसार जाव मए सद्धिं पव्वयह तं गच्छह णं तुब्भे देवा०! सएहिं २ रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह२त्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहह दुरुहा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह, तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा मल्लिस्स अरहतो एतमट्ठं पडिसुणेंति, तते णं मल्ली अरहा ते जितसत्तु० गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेति, तते णं कुंभए ते जितसत्तु० विपुलेणं असण ४ पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति जाव पडिविसज्जेति, तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा कुंभएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं २ रज्जातिं जेणेव नगरातिं तेणेव उवा० २ सगाइं रज्जातिं उवसंपज्जित्ता विहरंति, तते णं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेति (सूत्रं ७५)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	भगवती मल्लिजिन एवं पूर्वभवानां मित्राणां प्रातिबोध:

'पामोक्खं'ति उत्तरं आक्षेपस्य परिहार इत्यर्थः, 'हीलंती'त्यादि हीलयन्ति जात्याद्युद्घट्टनतः निन्दन्ति–मनसा कुत्सन्ति खिंसंति परस्परस्याग्रतः तद्दोषकीर्त्तनेन गर्हन्ते–तत्समक्षमेव 'हरुयालिं'ति विकोपयन्ति मुखमर्कटिकातः अमूयया खमुखवक्रताः कुर्वन्ति, 'वग्घाडियाओ'त्ति उपहासार्था रुतविशेषाः, 'कुसुलोदंतं'ति कुशलवार्त्ता, 'अगडदद्दुरे सिय'त्ति कूपमण्डूको भवेत्, 'जमगसमगं'ति युगपत् 'जत्तं गिण्हित्तए'त्ति यात्रां–विग्रहार्थं गमनं ग्रहीतुं–आदातुं विधातुमित्यर्थः, 'बलवाउयं'ति बलव्यापृतं सैन्यव्यापारवन्तं 'संपलग्गे'त्यत्र योद्धुमिति शेषः, 'हयमहियपवरवीरघाइयविवडियचिंधद्धयपडागे'ति हतः–सैन्यस्य हतत्वात् मथितो–मानस्य निर्मथनात् प्रवरा वीरा–भटा घातिता–विनाशिता यस्य स तथा विपतिता चिह्नध्वजाः—चिह्नभूतगरुडसिंहधरा बलकध्वजादयः पताकाश्च हस्तिनामुपरिवर्त्तिन्यः प्रबलपरबलप्रयुक्तानेकतीक्ष्णक्षुरप्रहारप्रकरेण दण्डादिच्छेदनाद्यस्य स तथा, ततः पदचतुष्कस्य कर्मधारयः, अथवा हयमथिताः–अश्वमर्दिताः प्रवरवीरा यस्य घातिताश्च सत्यो विपतिताश्चिह्नध्वजपताका यस्य स तथा तं, 'दिसोदिसं'ति दिशो दिशि सर्वत इत्यर्थः, 'पडिसेहंति'त्ति आयोधनाद्विनिवर्त्तयन्ति निराकुर्वन्तीत्यर्थः, 'अधारणिज्जं'ति अधारणीयं धारयितुमशक्यं परबलमितिकृत्वा, अथवा अधारणीयं–अयापनीयं यापना कर्तुमात्मनो न शक्यत इतिकृत्वा 'निस्संचारं'ति द्वारापद्वारैः जनप्रवेशनिर्गमवर्जितं यथा भवति 'निरुच्चारं' प्राकारस्योर्ध्वं जनप्रवेशनिर्गमवर्जितं यथा भवति अथवा उच्चारः–पुरीषं तद्विसर्गार्थं यज्जनानां बहिर्निर्गमनं तदपि स एवेति तेन वर्जितं यथा भवत्येवं सर्वतो–दिक्षु समन्तात्–विदिक्षु 'अवरुध्य' रोधकं कृत्वा तिष्ठन्ति स्मेति, 'रहस्सिए'त्ति रहसिकान् गुप्तान् 'दूतसंप्रेषान्' दूतप्रेषणानि 'पविरलमणूसंसि'त्ति प्रविरलाः मनुष्याः मार्गादिषु यस्मिन् सन्ध्याकाल-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [७४,७५] + गाथा: दीप अनुक्रम [९२-९५]

समये स तथा तस्मिन्, तथा 'निशान्तेषु' गृहेषु 'प्रतिनिश्रान्ता' विश्रान्ता यस्मिन् मनुष्या इतीह द्रष्टव्यं, स तथा तत्र, अथवा सन्ध्याकालसमये सति तथा तत्रैव यः प्रविरलो मनुष्यो–मानुषजनो मार्गेषु भवति तत्र निशान्तेषु प्रतिनिश्रान्ते इत्यर्थः 'जइ तावे'त्यादि, यदि तावदस्याहारपिण्डस्यायं परिणामः अस्य पुनरौदारिकशरीरस्य कीदृशो भविष्यतीति सम्बन्धः, इह च 'किमंग पुण'त्ति यत्कचिद् दृश्यते ततः 'इमस्स पुण'त्ति पठनीयं वाचनान्तरे तथादर्शनात्, 'कल्लाकल्लिं'ति प्रतिदिनं 'खेलासवे'त्यादि खेलं–निष्ठीवनं तदाश्रवति–क्षरतीति खेलाश्रवं तस्य एवं शेषाण्यपि पदानि, नवरं वान्तं–वमनं पित्तं–दोषविशेषः शुक्रं–सप्तमो धातुः शोणितं–आर्त्तवं सामान्येन वा रुधिरं 'पूयं' परिपक्वं तदेव दूरूपौ–विरूपावुच्छ्वासनिःश्वासौ यस्य तत्तथा तस्य, दूरूपेण मूत्रकेण पूतिकेन वा–अशुभगन्धवता पुरीषेण पूर्णं यत्तत्तथा तस्य, तथा शटनं–अङ्गुल्यादेः कुष्ठादिना पतनं छेदनं–बाह्वादेर्विध्वंसनं च–क्षयः एते धर्माः–स्वभावा यस्य तत्तथा तस्य, 'सज्जह' सज्जत सङ्गं कुरुत 'रज्यत' रागं कुरुत 'गिज्झह' गृध्यत गृद्धिं प्राप्तभोगेष्वतृप्तिलक्षणां कुरुत 'मुज्झह' मुह्यत मोहं–तदोषदर्शने मूढत्वं कुरुत 'अज्झोववज्जह' अध्युपपद्यध्वं तदप्राप्तप्रापणायाध्युपपत्तिं–तदेकाग्रतालक्षणां कुरुत, 'किं थ तयं' गाहा 'कि'मिति प्रश्ने, 'थ' इति वाक्यालङ्कारे, 'तकत्' तत् 'पम्हुट्ठं'ति विस्मृतं 'जं'ति यत् थ इति वाक्यालङ्कारे 'तदा' तस्मिन् काले 'भो' इत्यामन्त्रणे 'जयंतप्पवरे' जयन्ताभिधाने प्रवरेऽनुत्तरविमाने 'वुत्थ'ति उषिता निवासं कृतवन्तः 'समयनिबद्धं' मनसा निबद्धसङ्केतं यथा प्रतिबोधनीया वयं परस्परेणेति, समकनिबद्धां वा–सहितैर्या उपात्ता जातिस्तां देवाः अनुत्तरसुराः सन्तः, 'तं'ति त एव तां वा देवसम्बन्धिनीं स्मरत जातिं–जन्म यूयमिति ॥ १ ॥

॥१४९॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेणं कालेणं २ सक्कस्सासणं चलति, तते णं सक्के देविंदे ३ आसणं चलियं पासति २ ओहिं पउंजति २ मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएति २ इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु जंबुद्दीवे २ भारहे वासे मिहिलाए कुंभगस्स० मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेति, तं जीयमेयं तीय-पच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं ३ अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलि-त्तए, तंजहा–'तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ। असितिं च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाणं ॥ १ ॥ एवं संपेहेति २ वेसमणं देवं सद्दावेति २ त्ता० एवं खलु देवाणु० ! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइं दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबु० भारहे० कुंभग-भवणंसि इमेयारूवं अत्थसंपदाणं साहराहि २ खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तते णं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं०एवं वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ२ जंभए देवे सद्दावेइ२ एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणु०! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च कोडीओ असियं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साह-रह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं जाव सुणेत्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति २ जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विइवंति २ ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवाग-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	भगवन्त मल्ली तिर्थंकरस्य संवत्सरी-दानं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [७६,७७] + गाथा: दीप अनुक्रम [९६--१०८]

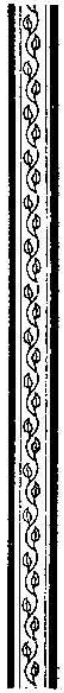
च्छंति २ कुंभगस्स रन्नो भवणंसि तिन्नि कोडिसया जाव साहरंति २ जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवा० २ करयल जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ २ करयल जाव पच्चप्पिणति, तते णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासोत्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाति सयसहस्साति इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलयति, तए णं से कुंभए मिहिलाए राय० तत्थ २ तहिं २ देसे २ बहूओ महाणससालाओ करेति, तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइभत्तवेयणा विपुलं असण ४ उवक्खडेंति २ जे जहा आगच्छंति तं०–पंथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा तस्स य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगत० तं विपुलं असणं ४ परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति, तते णं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमातिक्खति–एवं खलु देवाणु०! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असणं ४ बहूणं समणाण य जाव परिवेसिज्जति, वरवरिया घोसिज्जति किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं। सुरअसुरदेवदाणवनरिंदमहियाण निक्खमणे ॥ १ ॥ तते णं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्नि कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ असितिं च सयसहस्साइं इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलइत्ता निक्खमामित्ति मणं पहारेति (सूत्रं ७६) तेणं कालेणं २ लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाण-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त मल्ली तिर्थंकरस्य संवत्सरी-दानं



पत्थडे सएहिं २ विमाणेहिं सएहिं २ पासायवडिंसएहिं पत्तेयं २ चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरिवुडा महयाहयनट्टगीयवाइय जाव रवेणं भुंजमाणा विहरइ, तंजहा–
'सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥ १ ॥
तते णं तेसिं लोयंतियाणं देवाणं पत्तेयं २ आसणाइं चलंति तहेव जाव अरहंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तएत्ति तं गच्छामो णं अम्हेवि मल्लिस्स अरहतो संबोहणं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेंति २ उत्तरपुरच्छिमं दिसीभायं० वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति २ संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति २ अंतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइं जाव वत्थाइं पवर परिहिया करयल० ताहिं इट्ठा० एवं वयासी–
बुज्झाहि भगवं! लोगनाहा पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सतित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति २ मल्लिं अरहं वंदंति नमंसंति २ जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया,
तते णं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० २ करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते मुंडे भवित्ता जाव पव्वतित्तए, अहासुहं देवा०! मा पडिबंधं करेहि, तते णं कुंभए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

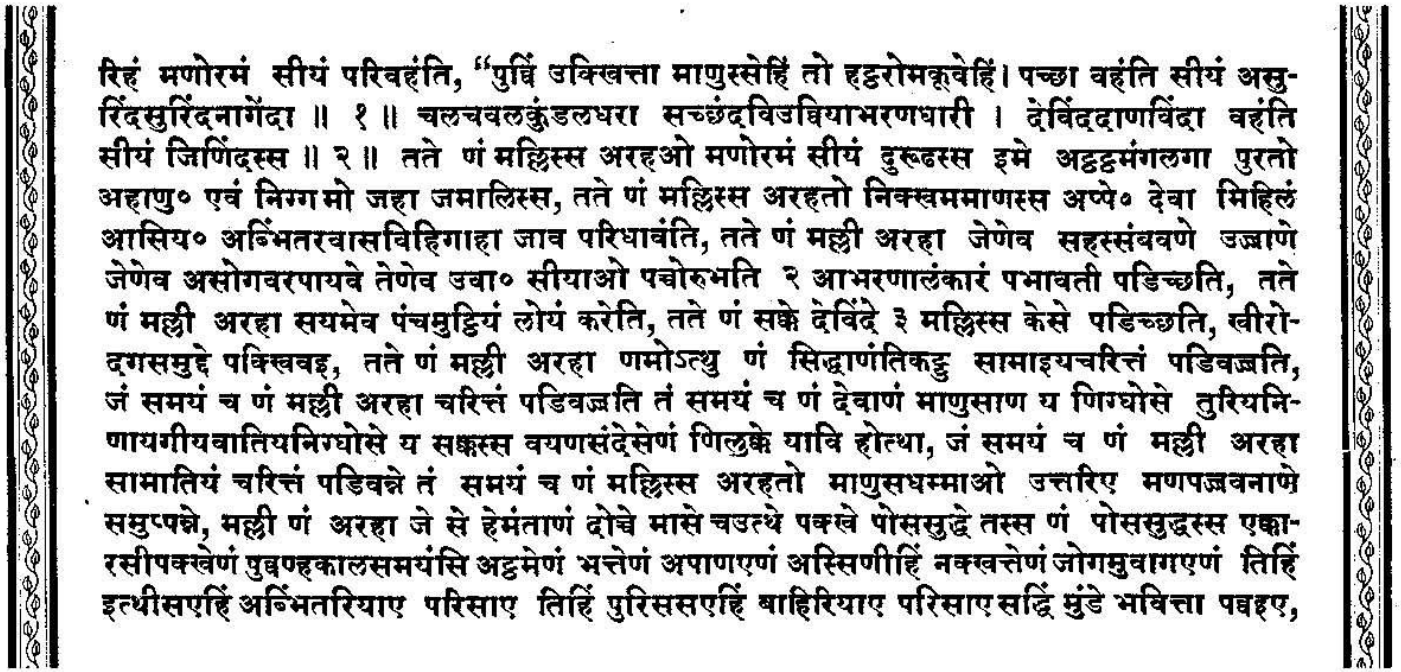
	लोकान्तिकदेवैः भगवन्त-मल्लिं सम्बोधनं

प्रत सूत्रांक [७६,७७] + गाथा: दीप अनुक्रम [९६--१०८]

भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तेणं कालेणं २ चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया, तते णं सक्के ३ आभिओगिए देवे सद्दावेति २ एवं वदासी–खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा, तते णं से सक्के देविंदे देवराया कुंभराया मल्लिं अरहं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं निवेसेइ अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचंति, तते णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगतिया देवा मिहिलं च सब्भिंतरं बाहिं आव सव्वतो समंता परिधावंति, तए णं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह ते उवट्ठवेंति, तते णं सक्के ३ आभिओगिए० खिप्पामेव अणेगखंभ० जाव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह जाव सावि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा, तते णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवा० २ मणोरमं सीयं अणुपयाहिणीकरेमाणा मणोरमं सीयं दुरूहति २ सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, तते णं कुंभए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेति २ एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह जाव परिवहंति, तते णं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, ईसाणे उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं, अवसेसा देवा जहा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त-मल्ली-तिर्थंकरस्य दीक्षा-अभिषेक: (भगवन्त के जन्म-अभिषेक कि तरह भगवन्त कि दीक्षा के पूर्व भी ६४ ईन्द्र द्वारा अभिषेक होता है)



रिहं मणोरमं सीयं परिवहंति, "पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिं तो हट्ठरोमकूवेहिं। पच्छा वहंति सीयं असुरिंदसुरिंदनागेंदा ॥ १ ॥ चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदा वहंति सीयं जिणिंदस्स ॥ २ ॥ तते णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरूढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरतो अहाणु० एवं निग्गमो जहा जमालिस्स, तते णं मल्लिस्स अरहतो निक्खममाणस्स अप्पे० देवा मिहिलं आसिय० अब्भिंतरवासविहिगाहा जाव परिधावंति, तते णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवा० सीयाओ पच्चोरुभति २ आभरणालंकारं पभावती पडिच्छति, तते णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, तते णं सक्के देविंदे ३ मल्लिस्स केसे पडिच्छति, खीरोदगसमुद्दे पक्खिवइ, तते णं मल्ली अरहा णमोऽत्थु णं सिद्धाणंतिकट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जति, जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जति तं समयं च णं देवाणं माणुसाण य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवातियनिग्घोसे य सक्कस्स वयणसंदेसेणं णिलुक्के यावि होत्था, जं समयं च णं मल्ली अरहा सामातियं चरित्तं पडिवन्ने तं समयं च णं मल्लिस्स अरहतो माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने, मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहिं इत्थीसएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त मल्लिजिनस्य दीक्षा-निष्क्रमण महोत्सव:

मल्लिं अरहं इमे अट्ठ रायकुमारा अणुपवइंसु तंजहा–णंदे य णंदिमित्ते सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य। अमरवति अमरसेणे महसेणे चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ तए णं से भवणवई ४ मल्लिस्स अरहतो निक्खमण-महिमं करेंति २ जेणेव नंदीसरवरे० अट्ठाहियं करेंति २ जाव पडिगया, तते णं मल्ली अरहा जंचेव दिवसं पव्वतिए तस्सेव दिवसस्स पुव्वा(पच्च) वरण्हकालसमयंसि असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरण-कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलनाणदंसणे समुप्पन्ने (सूत्रं ७७)

'जाव मागहओ पायरासो'त्ति मगधदेशसम्बन्धिनं प्रातराशं–प्राभातिकं भोजनकालं यावत् प्रहरद्वयादिकमित्यर्थः, 'बहूण'मित्यादि, सनाथेभ्यः–सस्वामिकेभ्यः अनाथेभ्यो–रङ्केभ्यः 'पंथियाणं'ति पन्थानं नित्यं गच्छन्तीति पान्थास्त एव पान्थिकास्तेभ्यः 'पहियाणं'ति पथि गच्छन्तीति पथिकास्तेभ्यः प्रहितेभ्यो वा केनापि क्वचित् प्रेषितेभ्य इत्यर्थः करोट्या–कपालेन चरन्तीति करोटिकास्तेभ्यः क्वचित् 'कायकोडियाणं'ति पाठस्तत्र काचो–भारोद्वहनं तस्य कोटी–भागः काच-कोटी तया ये चरन्ति काचकोटिकास्तेभ्यः, कर्पटैश्चरन्तीति कार्पटिकाः कापटिका वा–कपटचारिणस्तेभ्यः, 'एगमेगं हत्था-मासं'ति वाचनान्तरे दृश्यते तत्र हस्तेन हिरण्यस्यामर्शः–परामर्शो ग्रहो हस्तामर्शः तत्परिमाणं हिरण्यमपि स एवोच्यते अत-स्तमेकैकमेकैकस्मै ददाति स्म, प्रायिकं चैतत्सम्भाव्यते 'वरवरिया घोसिज्जइ किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं'ति वचनात्, अत

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एव 'एगा हिरण्णकोडी'त्याद्यपि शक्रार्पितहिरण्यदानप्रमाणमेव, यतोऽन्यदपि स्वकीयधनधान्यादिगतं दानं सम्भवतीति, 'तत्थ तत्थ'त्ति अवान्तरपुरादौ देशे देशे–भृङ्गाटकादौ 'तहिं तहिं'ति तत्र तत्र महापथपथादीनां भागे भागे अतिबहुषु स्थानेष्विति तात्पर्यमिति, महानससाला–रसवतीगृहाणि 'दिण्णभयभत्तवेयण'त्ति दत्तं–वितीर्णं भृतिभक्तलक्षणं द्रव्यभोजनस्वरूपं वेतनं–मूल्यं येभ्यस्ते तथा 'पासंड'त्ति लिङ्गिनः 'सव्वकामगुणियं'ति सर्वे कामगुणा–अभिलषणीयपर्याया रूपरसगन्धस्पर्शलक्षणाः सन्ति सञ्जाता वा यत्र तत् सर्वकामगुणिकं सर्वकामगुणितं वा, कः किमीप्सतीत्येवमिच्छानुसारेण यदीयते तत्किमीप्सितं, बहुभ्यः श्रमणेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः सनाथेभ्य इत्यादि पूर्ववत्, 'सुरासुरियं'ति वाचनान्तरे दृश्यते तत्र भोजने अयं च सूरोऽयं च सूरो भुंक्तां च यथेष्टमित्येवं या परिवेषणक्रिया सा सूरासूरिका पुटापुटिकादीनामिवात्र समासः तया सूरासूरिकया, तृतीयार्थे चेह सूत्रनिर्देशे द्वितीया द्रष्टव्येति, 'वरवरिया' गाहा वरस्य–इष्टार्थस्य वरणं–ग्रहणं वरवरिका, वरं वृणुत वरं वृणुतेत्येवं संशब्दनं वरवरिकेति भावः, सुरासुरैर्देवदानवनरेन्द्रैश्च महिता ये ते तथा तेषां, 'सारस्सय'गाहा सारस्वताः १ आदित्याः २ वह्नयो ३ वरुणाश्च ४ गर्दतोयाश्च ५ तुषिताः ६ अव्याबाधाः ७ आग्नेयाश्चे ८ त्यष्टौ कृष्णराज्यवकाशान्तरस्थविमानाष्टकवासिनो रिष्टाश्चेति-रिष्टाख्यविमानप्रस्तटवासिनः, कचित् दशविधा एते व्याख्यायन्ते, अस्माभिस्तु स्थानाङ्गानुसारेणैवमभिहिताः, 'हट्ठरोमकू-वेहिं'ति रोमाञ्चितैः 'चलचवलकुंडलधर'त्ति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति विग्रहः, 'सच्छंदविउव्वियाभरण-धारि'त्ति स्वच्छन्दाश्च ते विकुर्विताभरणधारिणश्च स्वच्छन्देन वा–स्वाभिप्रायेण विकुर्वितान्याभरणानि धारयन्तीति विग्रहः, 'जहा जमालिस्स'त्ति भगवत्यां यथा जमालेः निष्क्रमणं तथेह वाच्यमिहैव वा यथा मेघकुमारस्य, नवरं चामर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

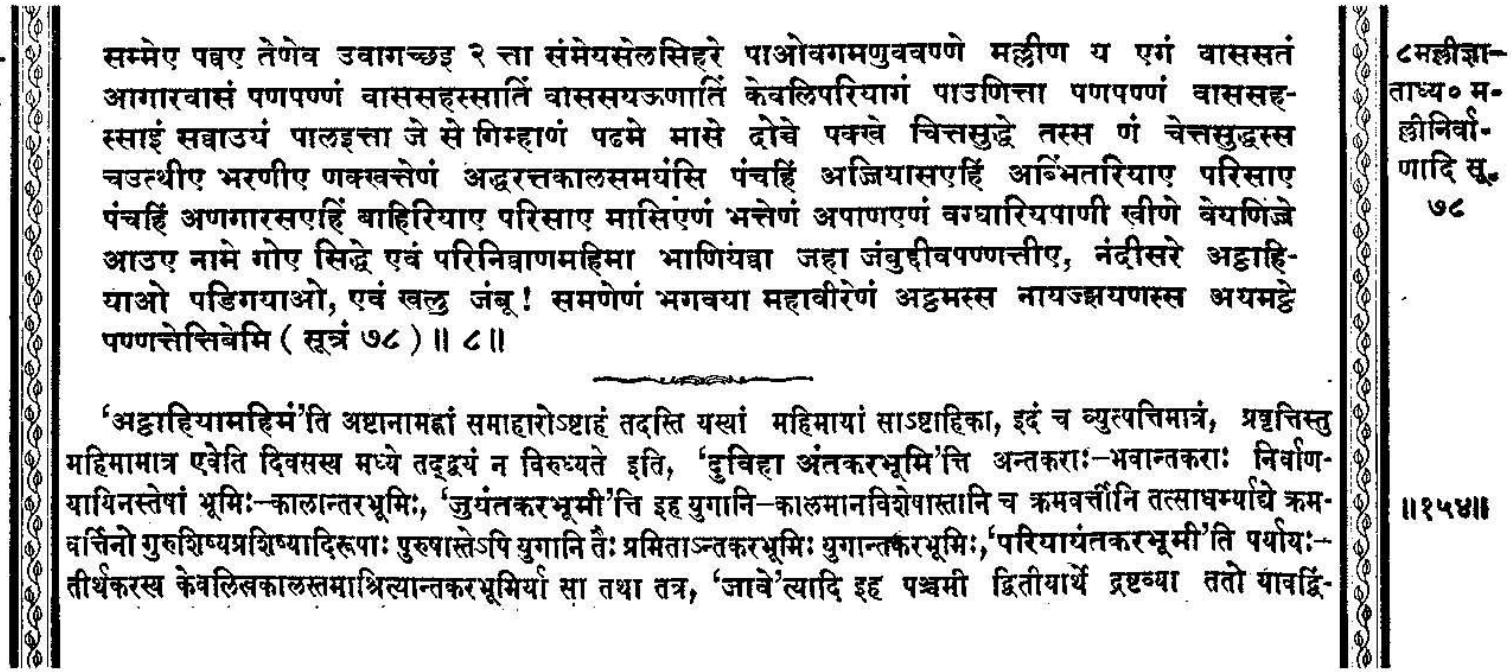
धारितरुण्यादिषु शक्रेशानादीन्द्रप्रवेशत इह विशेषः, 'आसिय० अब्भंतरा वास विहि गाहा' इति 'अप्पेगइया देवा मिहिलं रायहाणिं सब्भिंतरबाहिरं आसियसंमज्जियं संमट्ठसुइरत्थंतरावणवीहियं करेंति, अप्पेगइया देवा मंचाइमंचकलियं करेंती'त्यादिर्मेघकुमारनिष्क्रमणोक्तनगरवर्णकस्य तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासिंसु एवं सुवन्नवासं वासिंसु एवं रयणवइरपुप्फमल्लगंधचुण्णआभरणवासं वासिंसु' इत्यादिवर्षसमूहस्य तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं भाइंसु एवं 'सुवण्णचुण्णविहिं भाइंसु' इत्यादिविधिसमूहस्य तीर्थकरजन्माभिषेकोक्तसङ्ग्रहार्था याः क्वचित् गाथाः सन्ति ताः अनुश्रित्य सूत्रमध्येयं यावद् 'अप्पेगइया देवा आधावेंति परिधावन्ती'त्येतदवसानमित्यर्थः, इदं च राजप्रश्नकृतादौ द्रष्टव्यमिति, 'निल्लुक्के'त्ति निलुक्कोऽन्तर्हित इत्यर्थः 'सुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं'ति शुद्धपक्षस्य या एकादशी तिथिस्तत्पक्षे–तदर्द्धे णमित्यलङ्कारे 'णायकुमार'त्ति ज्ञाताः–इक्ष्वाकुवंशविशेषभूताः तेषां कुमाराः–राज्यार्हा ज्ञातकुमाराः, 'तस्सेव दिवसस्स पुव्वा(पच्च)वरण्हकालसमयंसि'त्ति यत्र दिवसे दीक्षां जग्राह तस्यैव पोषमासशुद्धैकादशीलक्षणस्य प्रत्यपराह्णकालसमये–पश्चिमे भागे इदमेवावश्यके पूर्वाह्णे मार्गशीर्षे च श्रूयते,यदाह–'तेवीसाए णाणं उप्पन्नं जिणवराण पुव्वण्हे'त्ति तथा 'मग्गसिरसुद्धएक्कारसीए मल्लिस्स अस्सिणीजोगि'त्ति तथा तत्रैवास्याहोरात्रं यावच्छद्मस्थपर्यायः श्रूयते तदत्राभिप्रायं बहुश्रुता विदन्तीति, 'कम्मरयविकरणकरं'ति कर्म्मरजोविक्षेपणकारि अपूर्वकरणमष्टमगुणस्थानकं, अनन्तं विषयानन्तत्वात् यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं अनुत्तरं–समस्तज्ञानप्रधानं निर्व्याघातं–अप्रतिहतं निरावरणं–क्षायिकं कृत्स्नं–सर्वार्थग्राहकत्वात् प्रतिपूर्णं–सकलखांशयुक्तत्वात् पौर्णमासीचन्द्रवत् केवलवरज्ञानदर्शनं संशुद्धं वरविशेषग्रहणं सामान्यग्रहणं चेत्यर्थः ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेणं कालेणं २ सव्वदेवाणं आसणाइं चलंति समोसढा सुणेंति अट्ठाहियमहा० नंदीसरं जामेव दिसं पाउ० कुंभएवि निग्गच्छति। तते णं ते जितसत्तुपा० छप्पि० जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीयाओ दुरूढा सविड्ढीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुवासंति, तते णं मल्ली अ० तीसे महालियाए कुंभगस्स तेसिं च जियसत्तुपामुक्खाणं धम्मं कहेति परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, कुंभए समणोवासए जाते, पडिगए, पभावती य, तते णं जितसत्तू छप्पि राया धम्मं सोच्चा आलित्तए णं भंते ! जाव पव्वइया, चोद्दसपुव्विणो अणंते केवले सिद्धा, तते णं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमति २ बहिया जणवयविहारं विहरइ, मल्लिस्स णं भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा अट्ठावीसं गणहरा होत्था, मल्लिस्स णं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्को०बंधुमतिपामोक्खाओ पणपण्णं अज्जियासाहस्सीओ उक्को० सावयाणं एगा सतसाहस्सी चुलसीतिं सहस्सा० साविआणं तिन्नि सयसाहसीओ पण्णट्ठिं च सहस्सा छस्सया चोद्दसपुवीणं वीससया ओहिनाणीणं बत्तीसं सया केवलणाणीणं पणतीसं सया वेउवियाणं अट्ठसया मणपज्जवनाणीणं चोद्दससया वाईणं वीसं सया अणुत्तरोववातियाणं, मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था तंजहा–जुयंतकरभूमी परियायंतकरभूमी य, जाव वीसतिमाओ पुरिसजुगाओ जुयंतकरभूमी, दुवासपरियाए अंतमकासी, मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूतिसुट्ठं उच्चत्तेणं वण्णेणं पियंगुसमे समचउरंससंठाणे वज्जरिसभणारायसंघयणे मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरित्ता जेणेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मल्लिजिनस्य षड् मित्राणां दिक्ष-महोत्सव:



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१५४॥

सम्मेए पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता संमेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे मल्लीण य एगं वाससतं आगारवासं पणपण्णं वाससहस्सातिं वाससयऊणातिं केवलिपरियागं पाउणित्ता पणपण्णं वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए भरणीए णक्खत्तेणं अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जियासएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए पंचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी खीणे वेयणिज्जे आउए नामे गोए सिद्धे एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए, नंदीसरे अट्ठाहियाओ पडिगयाओ, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि (सूत्रं ७८) ॥ ८ ॥

'अट्ठाहियामहिमं'ति अष्टानामह्नां समाहारोऽष्टाह्नं तदस्ति यस्यां महिमायां साऽष्टाहिका, इदं च व्युत्पत्तिमात्रं, प्रवृत्तिस्तु महिमामात्र एवेति दिवसस्य मध्ये तद्द्वयं न विरुध्यते इति, 'दुविहा अंतकरभूमि'त्ति अन्तकराः–भवान्तकराः निर्वाणयायिनस्तेषां भूमिः–कालान्तरभूमिः, 'जुयंतकरभूमी'त्ति इह युगानि–कालमानविशेषास्तानि च क्रमवर्त्तीनि तत्साधर्म्याद्ये क्रमवर्त्तिनो गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपाः पुरुषास्तेऽपि युगानि तैः प्रमिताऽन्तकरभूमिः युगान्तकरभूमिः,'परियायंतकरभूमी'ति पर्यायः–तीर्थकरस्य केवलिस्वकालस्तमाश्रित्यान्तकरभूमिर्या सा तथा तत्र, 'जावे'त्यादि इह पञ्चमी द्वितीयार्थे द्रष्टव्या ततो यावद्वि-

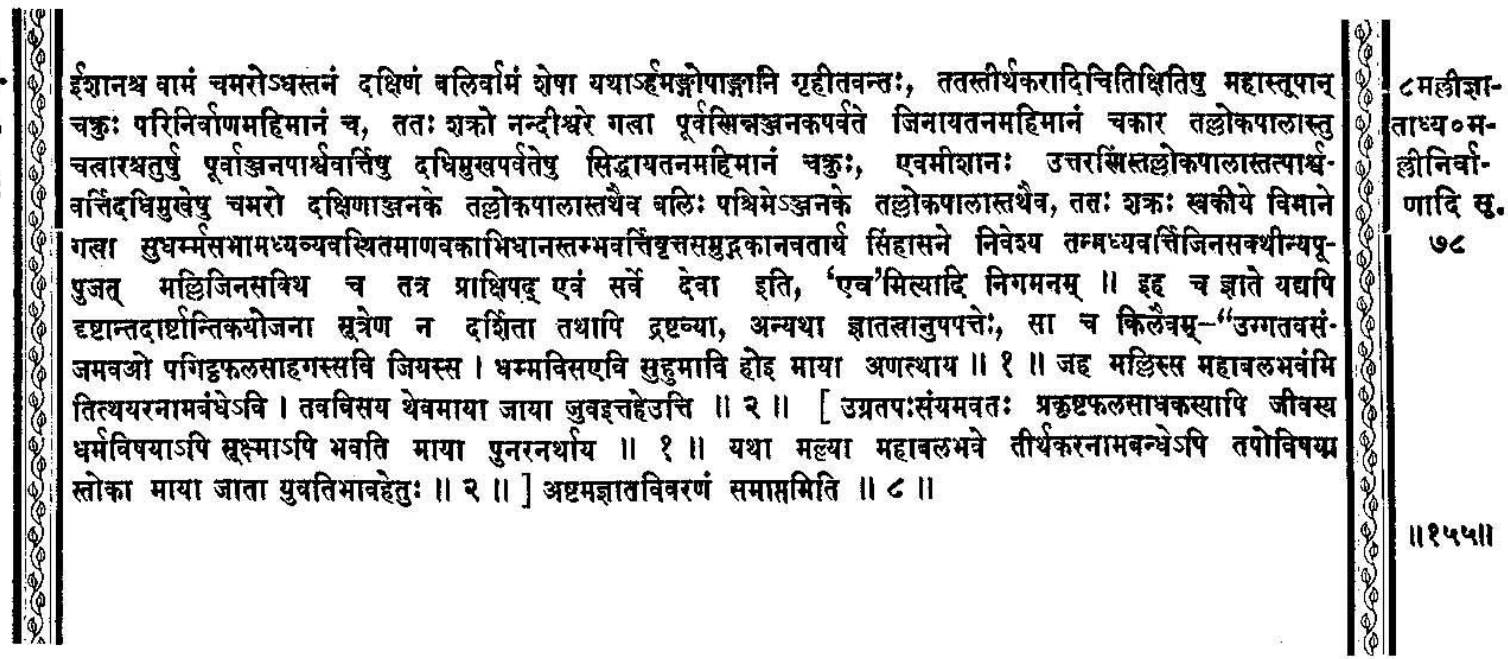
८मल्लीज्ञाताध्य० मल्लीनिर्वाणादि सू. ७८

॥१५४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शतितमं पुरुष एव युगं पुरुषयुगं विंशतितमं प्रतिशिष्यं यावदित्यर्थः युगान्तकरभूमिर्मल्लिजिनस्याभवत्, मल्लिजिनादारभ्य तत्तीर्थे विंशतितमं पुरुषं यावत् साधवः सिद्धास्ततः परं सिद्धिगमनव्यवच्छेदोऽभूदिति हृदयं, 'दुवासपरियाए'त्ति द्विवर्षपर्याये केवलिपर्यायापेक्षया भगवति जिने सति अन्तमकार्षीत्–भवान्तमकरोत् तत्तीर्थे साधुर्नारात् कश्चिदपीति, 'दुमासपरियाए' इति क्वचित् क्वचिच 'चउमासपरियाए' इति दृश्यते, 'वग्घारियपाणी'ति प्रलम्बितभुजः, 'जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए'त्ति यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां ऋषभस्य निर्वाणमहिमोक्तस्तथेह मल्लिजिनस्य वाच्य इत्यर्थः, स चैवमर्थतः–यत्र समये मल्लिरर्हन् कालगतो व्यतिक्रान्तः समुद्घातः छिन्नजातिजरामरणबन्धनः सिद्धः तत्र समये शक्रश्चलितासनः प्रत्युक्तावधिर्विज्ञातजिननिर्वाणः सपरिवारः सम्मेतशैलशिखरेऽवततार, ततोऽसौ विमना निरानन्दोऽश्रुपूर्णनयनो जिनशरीरकं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य अनतिदूरासन्ने नमस्यन् पर्युपास्ते स्म, एवं सर्वेऽपि वैमानिकादयो देवराजाः, ततः शक्रो देवैर्नन्दनवनात् आनायितगोशीर्षसरसदारुविहितचितित्रयः क्षीरसमुद्रादानीतक्षीरोदकेन जिनदेहं स्नापयामास गोशीर्षचन्दनेनानुलिलेप हंसलक्षणं शाटकं निवासयामास सर्वालङ्कारविभूषितं चकार, शेषा देवा गणधरानगारशरीरकाण्येवं चक्रुः, शक्रस्ततो देवैस्तिस्रः शिबिकाः कारयामास, तत्रैकत्रासौ जिनशरीरमारोपयामास महर्द्धा च चितिस्थाने नीत्वा चितिकायां स्थापयामास, शेषदेवा गणधरानगारशरीराणि द्वयोः शिबिकयोरारोप्य चित्योः स्थापयामासुः, ततः शक्रादेशादग्निकुमारा देवास्तिसृष्वपि चितिष्वग्निकायं विकृतवन्तो वायुकुमारास्तु वायुकायं शेषदेवाश्च कालागुरुप्रवरकुन्दरुक्ततुरुक्कधूपान् घृतं मधु च कुम्भाग्रशः प्रचिक्षिपुः, ततो मांसादिषु दग्धेषु मेघकुमारा देवाः क्षीरोदकेन चितीर्निर्वापयामासुः, ततः शक्रो भगवतो दक्षिणमुपरितनं सक्थि जग्राह

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्, ॥१५५॥

ईशानश्च वामं चमरोऽधस्तनं दक्षिणं बलिर्वामं शेषा यथाऽर्हमङ्गोपाङ्गानि गृहीतवन्तः, ततस्तीर्थकरादिचितिक्षितिषु महास्तूपान् चक्रुः परिनिर्वाणमहिमानं च, ततः शक्रो नन्दीश्वरे गत्वा पूर्वस्यिन्नञ्जनकपर्वते जिनायतनमहिमानं चकार तल्लोकपालास्तु चत्वारश्चतुर्षु पूर्वाञ्जनपार्श्ववर्त्तिषु दधिमुखपर्वतेषु सिद्धायतनमहिमानं चक्रुः, एवमीशानः उत्तरस्यिंस्तल्लोकपालास्तत्पार्श्ववर्त्तिदधिमुखेषु चमरो दक्षिणाञ्जनके तल्लोकपालास्तथैव बलिः पश्चिमेऽञ्जनके तल्लोकपालास्तथैव, ततः शक्रः स्वकीये विमाने गत्वा सुधर्म्मसभामध्यव्यवस्थितमाणवकाभिधानस्तम्भवर्त्तिवृत्तसमुद्गकानवतार्य सिंहासने निवेश्य तन्मध्यवर्त्तिजिनसक्थीन्यपूपुजत् मल्लिजिनसक्थि च तत्र प्राक्षिपद् एवं सर्वे देवा इति, 'एव'मित्यादि निगमनम् ॥ इह च ज्ञाते यद्यपि दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयोजना सूत्रेण न दर्शिता तथापि द्रष्टव्या, अन्यथा ज्ञातत्वानुपपत्तेः, सा च किलैवम्–"उग्गतवसंजमवओ पगिट्ठफलसाहगस्सवि जियस्स । धम्मविसएवि सुहुमावि होइ माया अणत्थाय ॥ १ ॥ जह मल्लिस्स महाबलभवंमि तित्थयरनामबंधेऽवि । तवविसय थेवमाया जाया जुवइत्तहेउत्ति ॥ २ ॥ [उग्रतपःसंयमवतः प्रकृष्टफलसाधकस्यापि जीवस्य धर्मविषयाऽपि सूक्ष्माऽपि भवति माया पुनरनर्थाय ॥ १ ॥ यथा मल्ल्या महाबलभवे तीर्थकरनामबन्धेऽपि तपोविषया स्तोका माया जाता युवतिभावहेतुः ॥ २ ॥] अष्टमज्ञातविवरणं समाप्तमिति ॥ ८ ॥

८मल्लीज्ञाताध्य०मल्लीनिर्वाणादि सू. ७८

॥१५५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-८ परिसमाप्तम्

प्रत सूत्रांक [७९-८०]

दीप अनुक्रम [११०--११२]

अथ नवमज्ञातविवरणम् ।

अथ नवमं विविच्यते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वत्र मायावतोऽनर्थ उक्तः इह तु भोगेष्वविरतिमतोऽनर्थो विरतिमतश्चार्थोऽभिधीयते इत्येवंसम्बद्धं—

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स णायज्झयणस अयमट्ठे पण्णत्ते नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नामं नयरी पुण्णभद्दे तत्थ णं माकंदी नामं सत्थवाहे परिवसति, अड्ढे०, तस्स णं भद्दा नामं भारिया, तीसे णं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, तं०—जिणपालिए य जिणरक्खिए य, तते णं तेसिं मागंदियदारगाणं अण्णया कयाई एगयओ इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारस वारा ओगाढा सचत्थविय णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! दुवालसमंपि लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्सेतमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० एवं वदासी–एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारस वारा तं चेव जाव नियगं घरं हव्वमागया,तं इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुम्हेहिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- ९ "माकन्दी" आरभ्यते

***शिर्षक स्थाने मया यत् [७९-८०] लिखितं तत् स्पष्टीकरण-- (मूल संपादक द्वारा सूत्र ७९, ऐसा क्रम भुलसे दोबार दिया गया है, उसके बाद सूत्र-८० है, मतलब यहां तीन सूत्र एक साथ है, इसिलिए हमने ७९,८० ऐसी हमारी पध्धत्ति को छोडकर यहा ७९-८० लिखा है

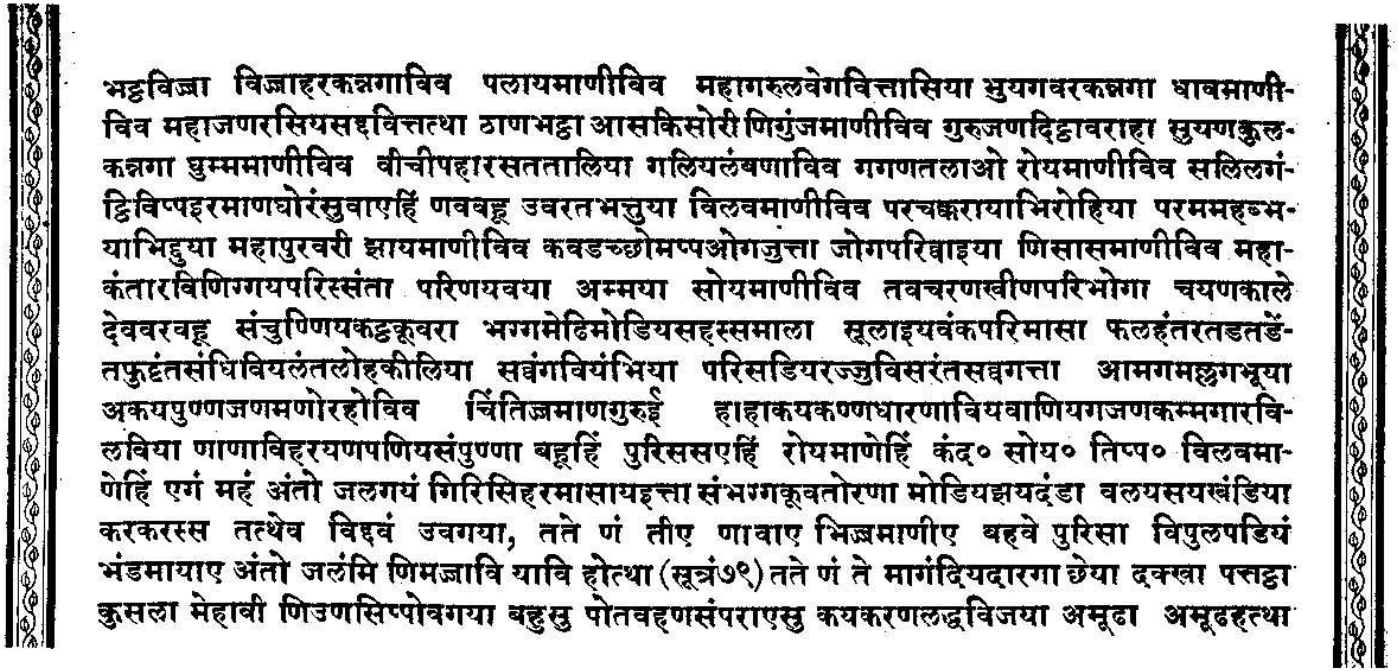
प्रत सूत्रांक [७९-८०]

दीप अनुक्रम [११०--११२]

अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए, तते णं ते मागंदियदारए अम्मापियरो एवं वदासी–इमे ते जाया! अज्जग जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं?, एवं खलु पुत्ता! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवति, तं मा णं तुब्भे दुवे पुत्ता! दुवालसमंपि लवण० जाव ओगाहेह, मा हु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सति, तते णं मागंदियदारगा अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी–एवं खलु अम्हे अम्मयाओ! एक्कारस वारा लवणं ओगाहित्तए, तते णं ते मागंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुजाणित्था, तते णं ते मागंदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहूइं जोअणसयाइं ओगाढा (सूत्रं ७९) तते णं तेसिं मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयातिं पाउब्भूयातिं, तंजहा—अकाले गज्जियं जाव थणियसद्दे कालियवाते तत्थ समुट्ठिए, तते णं सा णावा तेणं कालियवातेणं आहुणिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी २ संखोभिज्जमाणी २ सलिलतिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी २ कोट्टिमंसि करतलाहते विव तेंदूसए तत्थेव २ ओवयमाणी य उप्पयमाणी य उप्पयमाणीविव धरणीयलाओ सिद्धविज्जाहरकन्नगा ओवयमाणीविव गगणतलाओ

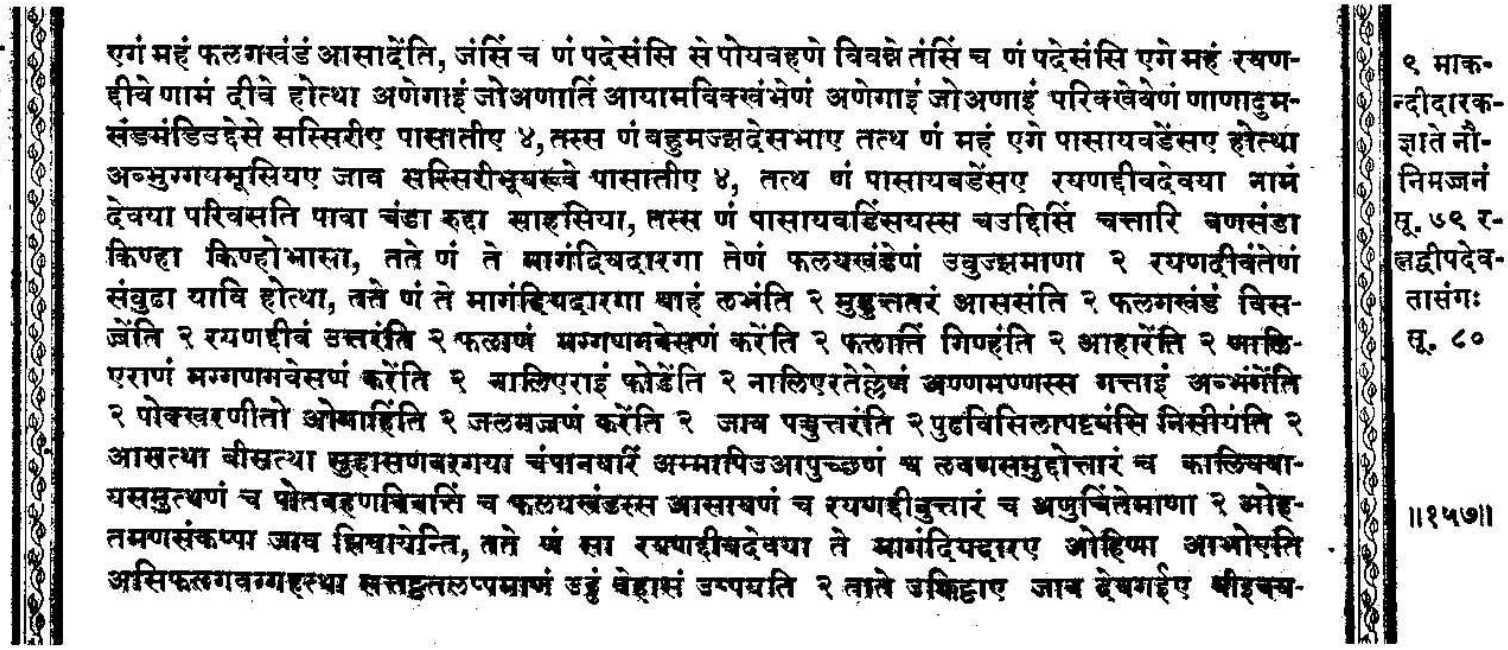
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

***अत्र सूत्रक्रमांक स्थाने मूल संपादने एका स्खलना वर्तते– यत् सू. ७९ स्थाने सू. १९ मुद्रितं



भट्ठविज्जा विज्जाहरकन्नगाविव पलायमाणीविव महागरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा धावमाणी-
विव महाजणरसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी णिगुंजमाणीविव गुरुजणदिट्ठावराहा सुयणकुल-
कन्नगा घुम्ममाणीविव वीचीपहारसततालिया गलियलंबणाविव गगणतलाओ रोयमाणीविव सलिलगं-
ट्ठिविप्पहरमाणघोरंसुवाएहिं णववहू उवरतभत्तुया विलवमाणीविव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भ-
याभिद्दुया महापुरवरी झायमाणीविव कवडच्छोमप्पओगजुत्ता जोगपरिवाइया णिसासमाणीविव महा-
कंतारविणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया सोयमाणीविव तवचरणखीणपरिभोगा चयणकाले
देववरवहू संचुण्णियकट्ठकूवरा भग्गमेढिमोडियसहस्समाला सूलाइयवंकपरिमासा फलहंतरतडतडें-
तफुट्टंतसंधिवियलंतलोहकीलिया सव्वंगवियंभिया परिसडियरज्जुविसरंतसव्वगत्ता आमगमल्लगभूया
अकयपुण्णजणमणोरहोविव चिंतिज्जमाणगुरुई हाहाकयकण्णधारणाविवाणियगजणकम्मगारवि-
लविया णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा बहूहिं पुरिससएहिं रोयमाणेहिं कंद० सोय० तिप्प० विलवमा-
णेहिं एगं महं अंतो जलगयं गिरिसिहरमासायइत्ता संभग्गकूवतोरणा मोडियझयदंडा वलयसयखंडिया
करकरस्स तत्थेव विद्दवं उवगया, तते णं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलपडियं
भंडमायाए अंतो जलंमि णिमज्जावि यावि होत्था (सूत्रं७९) तते णं ते मागंदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा
कुसला मेहावी णिउणसिप्पोवगया बहुसु पोतवहणसंपराएसु कयकरणलद्धविजया अमूढा अमूढहत्था

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥१५७॥

एगं महं फलगखंडं आसादेंति, जंसिं च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने तंसिं च णं पदेसंसि एगे महं रयण-दीवे णामं दीवे होत्था अणेगाइं जोअणाइं आयामविक्खंभेणं अणेगाइं जोअणाइं परिक्खेवेणं णाणादुम-संडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासातीए ४, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए तत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए होत्था अब्भुग्गयमूसियए जाव सस्सिरीभूयरूवे पासातीए ४, तत्थ णं पासायवडेंसए रयणदीवदेवया नामं देवया परिवसति पावा चंडा रुद्दा साहसिया, तस्स णं पासायवडिंसयस्स चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्होभासा, तते णं ते मागंदियदारगा तेणं फलगखंडेणं उवुज्झमाणा २ रयणदीवंतेणं संवुढा यावि होत्था, तते णं ते मागंदियदारगा थाहं लभंति २ मुहुत्तंतरं आससंति २ फलगखंडं विस-जेंति २ रयणदीवं उत्तरंति २ फलाणं मग्गणगवेसणं करेंति २ फलाणि गिण्हंति २ आहारेंति २ नालि-एराणं मग्गणगवेसणं करेंति २ नालिएराइं फोडेंति २ नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगेंति २ पोक्खरणीतो ओगाहेंति २ जलमज्जणं करेंति २ जाव पच्चुत्तरंति २ पुढविसिलापट्टयंसि निसीयंति २ आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चंपानयरिं अम्मापिउआपुच्छणं च लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवा-तसमुत्थणं च पोतवहणविवत्तिं च फलगखंडस्स आसासणं च रयणदीवुत्तारं च अणुचिंतेमाणा २ ओह-तमणसंकप्पा जाव झियायेन्ति, तते णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए ओहिणा आभोएति असिफलगवग्गहत्थे सत्तट्ठतलप्पमाणं उड्डं वेहासं उप्पयति २ ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीईवय-

९ माक-न्दीदारक-ज्ञाते नौ-निमज्जनं सू. ७९ र-त्नद्वीपदेव-तासंगः सू. ८० ॥१५७॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

माणी २ जेणेव मागंदियदारए तेणेव आगच्छति २ आसुरुत्ता मागंदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहिं एवं वदासी–हं भो मागंदियदारया! अप्पत्थियपत्थिया जति णं तुब्भे मए सद्धिं विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह तो भे अत्थि जीवितं, अहण्णं तुब्भे मए सद्धिं विउलातिं नो विहरह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवलगुलिय जाव खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउयाहिं उवसोहियाइं तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि, तते णं ते मागंदियदारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए सो० भीया करयल० एवं जण्णं देवाणुप्पिया! वतिस्ससि तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तते णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए गेण्हति २ जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २ असुभपोग्गलावहारं करेति २ सुभपोग्गलपक्खेवं करेति २ सा पच्छा तेहिं सद्धिं विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति कल्लाकल्लिं च अमयफलातिं उवणेति (सूत्रं ८०)

सर्वं सुगमं, नवरं 'निरालंबणेणं' निष्कारणेन प्रत्यपायसम्भवे वा त्राणायाऽऽलम्बनीयवस्तुवर्जितेन 'कालियावाए तत्थ'त्ति कालिकावातः–प्रतिकूलवायुः, 'आधुणिज्जमाणी'त्यादि आधूयमाना कम्पमाना विद्रवमुपगतेति सम्बन्धः, सञ्चाल्यमाना–स्थानात् स्थानान्तरनयनेन सङ्क्षोभ्यमाना–अधो निमज्जनतः तद्गतलोकक्षोभोत्पादाद्वा सलिलातीक्ष्णवेगैरतिवर्त्यमाना–आक्रम्यमाणा कुट्टिमे करतलेनाहतो यः स तथा स इव 'तेंदूसए'त्ति कन्दुकः तत्रैव प्रदेशेऽधः पतन्ती वा–अधो गच्छन्ती उत्प-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [७९-८०]

दीप अनुक्रम [११०--११२]

तन्ती वा–ऊर्द्धं यान्ती तथोत्पतन्तीव धरणीतलात् सिद्धविद्या विद्याधरकन्यका तथाऽधः पतन्तीव गगनतलाद् भ्रष्टविद्या विद्याधरकन्यका तथा विपलायमानेव–भयाद्धावन्तीव महागरुडवेगवित्रासिता भुजगकन्यका धावन्तीव महाजनस्य रसितशब्देन वित्रस्ता स्थानभ्रष्टाऽश्वकिशोरी तथा विगुञ्जन्तीव–अव्यक्तशब्दं कुर्वन्तीव अवनमन्तीव वा गुरुजनदृष्टापराधा–पित्राद्युपलब्धव्यलीका सुजनकुलकन्यका कुलीनेति भावः, तथा घूर्णन्तीव–वेदनया थरथरायमाणेव वीचिप्रहारशततताडिता हि स्त्री वेदनया घूर्णतीति वेदनयेव घूर्णयन्तीत्येवमुपमानं द्रष्टव्यं, गलितलम्बनेव–आलम्बनाद् भ्रष्टेव गगनतलाद्–आकाशात् पतितेति गम्यते, यथा क्षीणबन्धनं फलाद्याकाशात् पतति एवं साऽपीति, क्वचित्तु गलितलम्बना इत्येतावदेव दृश्यते, तत्र लम्ब्यन्ते इति लम्बनाः–नङ्गरास्ते गलिता यस्यां सा तथा, तथा रुदन्तीव, कैः केत्याह–सलिलभिन्ना ये ग्रन्थयस्ते सलिलग्रन्थयः ते च ते 'विप्पइरमाण'त्ति विप्रकिरन्तश्च सलिलं क्षरन्त इति समासः त एव स्थूरा अश्रुपातास्तैर्नववधूरुपरतभर्तृका तथा विलपन्तीव, कीदृशी केत्याह–परचक्रराजेन–अपरसैन्यनृपतिनाऽभिरोहिता–सर्वतः कृतनिरोधा या सा तथा, परममहाभयाभिद्रुता महापुरवरी, तथा क्षणिकस्थिरत्वसाधर्म्यात् ध्यायन्तीव कीदृशी केत्याह–कपटेन–वेषाद्यन्यथात्वेन यच्छद्म तेन प्रयोगः–परप्रतारणव्यापारः तेन युक्ता या सा तथा योगपरिव्राजिका–समाधिप्रधानव्रतिनीविशेषः, तथा निःश्वसन्तीव अधोगमनसाधर्म्यात् तद्गतजननिःश्वाससाधर्म्याद्वा निःश्वसन्तीव कीदृशी केत्याह–महाकान्तारविनिर्गता परिश्रान्ता च या सा तथा परिणतवया –विगतयौवना 'अम्मय'त्ति अम्बा पुत्रजन्मवती, एवंभूता हि स्त्री श्रमप्रचुरा भवति ततश्चात्यर्थं निःश्वसितीत्येवं सा विशेषितेति, तथा तद्गतजनविषादयोगात् शोचन्तीव, कीदृशी केवेत्याह–तपश्चरणं–ब्रह्मचर्यादि तत्फलमपि उपचारात् तपश्चरणं–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वर्गसम्भवभोगजातं तस्य क्षीणः परिभोगो यस्याः सा तथा, च्यवनकाले देववरवधूः, अथवा 'उप्पयमाणीविवे'त्यादा-विवशब्दस्यान्यत्र योगादुत्पतन्ती नौः, केव !–सिद्धविद्याविद्याधरकन्यकेवेत्यादि व्याख्येयमिति,तथा सञ्चूर्णितानि काष्ठानि कूवरं च–तुण्डं यस्याः सा तथा, तथा भग्ना मेढी–सकलफलकाधारभूतकाष्ठरूपा यस्याः सा तथा, मोटितो–भग्नः सहसा–अकस्मात् सहस्रसङ्ख्यजनाश्रयभूतो वा मालो–मालकः उपरितनभागो जनाधारो यस्याः सा तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, तथा शूलाचितेव–शूलाग्रोतेव गिरिशृङ्गारोहणेन निरालम्बनतां गतत्वाच्छूलाचिता वङ्को–वक्रः परिमर्शो–जलधिजलस्पर्शो यस्याः सा तथा ततः कर्मधारयः अथवा शूलायितः–आचरितशूलारूपः स्कन्दितपरिकरत्वात् 'सूलाइत्त'त्ति पाठे तु शूलाय-मानो वङ्कश्च–वक्रः 'परिमासो'त्ति नौगतकाष्ठविशेषो नाविकप्रसिद्धो यस्यां सा तथा, फलकान्तरेषु–सङ्घटितफलकविवरेषु तटतटायमानाः–तथाविधध्वनिं विदधानाः स्फुटन्तो–विघटमानाः सन्धयो–मीलनानि यस्यां सा तथा, विगलन्त्यो लोहकीलिका यस्यां सा तथा, ततः कर्मधारयः, तथा सर्वाङ्गैः–सर्वावयवैर्विजृम्भिता–विवृततां गता या सा तथा, परिशटिता रज्जवः–फलकसङ्घातनद्धरिका यस्याः सा तथा, अत एव 'विसरंत'त्ति विशीर्यमाणानि सर्वाणि गात्राणि यस्याः सा तथा, ततः कर्म्मधारयः, आमकमल्लकभूता–अपक्वशरावकल्पा, जलसम्पर्के क्षणेन विलयनात्, तथा अकृतपुण्यजनमनोरथ इव चिन्त्यमाना–कथमियमेतामापदं निस्तरिष्यतीत्येवं विकल्प्यमाना गुर्वी–गुरुका, आपदः सकाशात् दुःसमुद्धरणीयत्वात्, निष्पुण्यजनेनापि स्वो मनोरथः कथमयं पूरयिष्यत इत्येवं चिन्त्यमानो दुर्निर्वहत्वाद् गुरुरेव भव-न्तीति तेनोपमेति, तथा हाहाकृतेन–हाहाकारेण कर्णधाराणां–निर्यामकाणां नाविकानां–कैवर्त्तानां वाणिजकजनानां कर्म्मकराणां

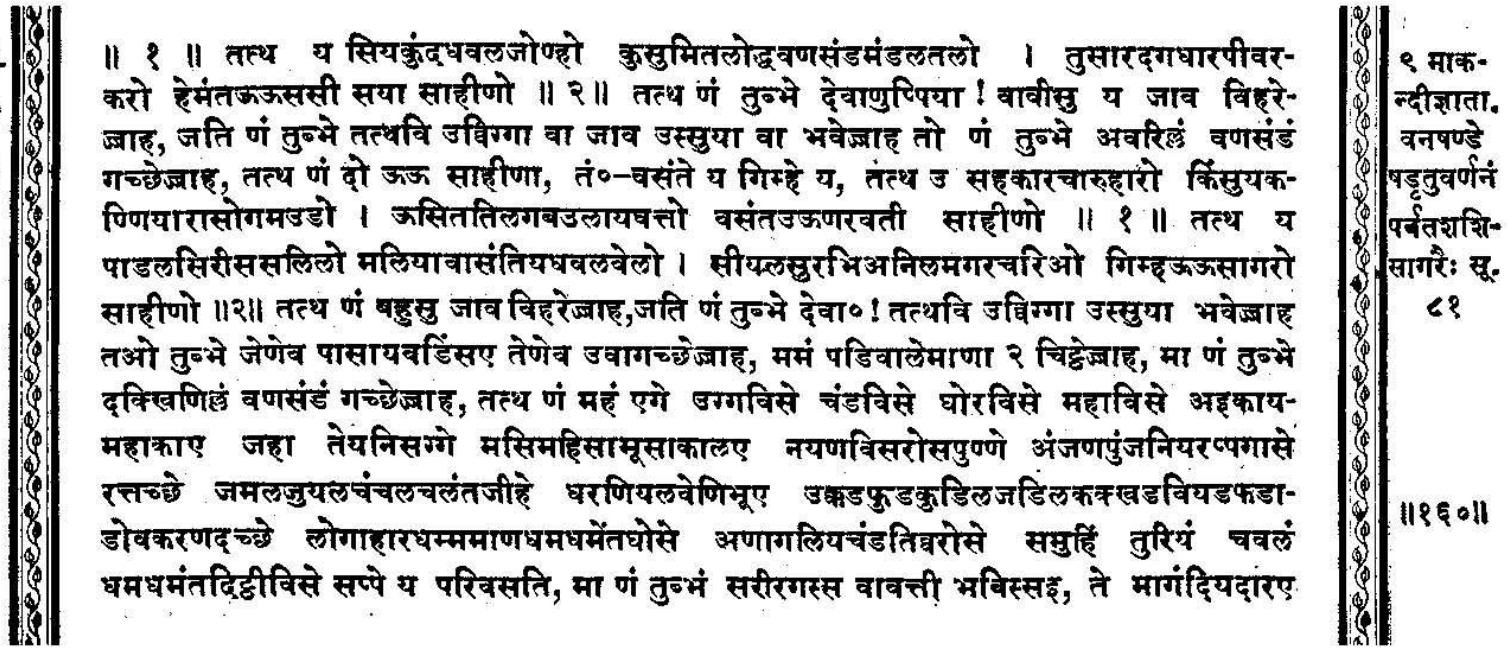
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

च प्रतीतानां विलपितं–विलापो यस्यां सा तथा, नानाविधै रत्नैः पण्यैश्च–भाण्डैः सम्पूर्णा या सा तथा, 'रोयमाणेहिं'ति सशब्दमश्रूणि विमुञ्चत्सु 'कंदमाणेहिं'ति शोकात् महाध्वनिं मुञ्चत्सु 'सोयमाणेहिं' शोचत्सु मनसा खिद्यमानेषु 'तिप्पमाणेहिं'ति भयात् प्रस्वेदलालादि तर्पत्सु 'विलपत्सु' आर्त्तं जल्पत्सु एकं महत् 'अंतो जलगयं'ति जलान्तर्गतं गिरिशिखरमासाद्य सम्भग्नः कूपकः–कूपकस्तम्भो यत्र यत्र सितपटो निबध्यते तोरणानि च यस्यां सा तथा, तथा मोटिता ध्वजदण्डा यस्यां सा तथा, वलकानां–दीर्घदारुरूपाणां शतानि खण्डानि यस्यां सा तथा अथवा वलयशतैः–वलयाकारखण्डशतैः खण्डिता या सा तथा, 'करकर'त्ति करकरेतिशब्दं विदधाना तत्रैव जलधौ विद्रवं–विलयमुपगतेति,'पोयवहणसंपराएसुं'ति सम्परायः–सङ्ग्रामः तद्वद्यानि भीषणानि पोतवहनकार्याणि तानि तथोच्यन्ते तेषु, देवताविशेषणानि विजयचौरविशेषणवद् गमनीयानि, 'असिखेडगवग्गहत्थ'त्ति खड्गफलकाभ्यां व्यग्रौ हस्तौ यस्याः सा तथा, 'रत्तगंडमंसुयाइं'ति रक्तौ–रञ्जितौ गण्डौ यैस्तानि रक्तगण्डानि तानि श्मश्रूणि–कूर्चकेशाः ययोस्ते रक्तगण्डश्मश्रुके 'माउयाहिं उवसोहियाइं'ति इह माउयाउ उत्तरौष्ठरोमाणि सम्भाव्यन्ते अथवा 'माउया' सख्यो मातरो वा ताभिः उपशोभिते–समारचितकेशवेषादिना जनितशोभे उपशोभिते वा–निर्मलीकृते शिरसी–मस्तके छिन्नेति वाक्यशेषः, 'जण्णं देवाणुप्पिए'त्यादि, यं कञ्चन प्रेष्याणामपि प्रेष्यं देवानुप्रिया वदिष्यति–उपदेक्ष्यति यदुतायमाराध्यः 'तस्स'त्ति तस्यापि आस्तां भवत्याः आज्ञा–अवश्यं विधेयतया आदेशः उपपातः–सेवावचनं–अनियमपूर्वक आदेश एव निर्देशः–कार्याणि प्रति प्रश्ने कृते यच्चियतार्थमुत्तरमेतेषां समाहारद्वन्द्वः तत्र, अथवा यद्देवानां प्रिया वदिष्यति 'तस्स'त्ति तत्र आज्ञादिरूपे स्थास्यामः–वर्त्तिष्यामह इति, 'अमयफलाइं'ति अमृतोपमफलानि ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ततेणं सा रयणदीवदेवया सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टियवेत्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय २ तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयवंतिकट्टु णिउत्ता, तते णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदियदारए एवं वदासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! सक्क० सुट्ठिय० तं चेव जाव णिउत्ता, तं जाव अहं देवा०! लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुहंसुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह, जति णं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं०–पाउसे य वासारत्ते य,–तत्थ उ कंदलसिलिंधदंतो णिउरवरपुप्फपीवरकरो । कुडयज्जुणणीवसुरभिदाणो पाउसउऊगयवरो साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य–सुरगोवमणिविचित्तो दद्दुरकुलरसियउज्झररवो। वरहिणविंदपरिणद्ध-सिहरो वासारत्तो उऊपवतो साहीणो ॥ २ ॥ तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपंतियासु बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरम-माणा विहरेज्जाह, जति णं तुब्भे एत्थवि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं०–सरदो य हेमंतो य,–तत्थ उ सणस-सचण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो । सारसचक्कवायरवितघोसो सरयऊऊगोवती साहीणो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१६०॥

॥ १ ॥ तत्थ य सियकुंदधवलजोण्हो कुसुमितलोद्धवणसंडमंडलतलो । तुसारदगधारपीवर-करो हेमंतऊऊससी सया साहीणो ॥ २॥ तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहरे-ज्जाह, जति णं तुब्भे तत्थवि उविग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिलं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ साहीणा, तं०–वसंते य गिम्हे य, तत्थ उ सहकारचारुहारो किंसुयक-णियारासोगमउडो । ऊसिततिलगबउलायवत्तो वसंतउऊणरवती साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मलियावासंतियधवलवेलो । सीयलसुरभिअनिलमगरचरिओ गिम्हऊऊसागरो साहीणो ॥२॥ तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह,जति णं तुब्भे देवा०! तत्थवि उविग्गा उस्सुया भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, ममं पडिवालेमाणा २ चिट्ठेज्जाह, मा णं तुब्भे दक्खिणिलं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे महाविसे अइकाय-महाकाए जहा तेयनिसग्गे मसिमहिसामूसाकालए नयणविसरोसपुण्णे अंजणपुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमलजुयलचंचलचलंतजीहे धरणियलवेणिभूए उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडवियडफडा-डोवकरणदच्छे लोगाहारधम्ममाणधमधमेंतघोसे अणागलियचंडतिव्वरोसे समुहिं तुरियं चवलं धमधमंतदिट्ठीविसे सप्पे य परिवसति, मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ, ते मागंदियदारए

९ माक-न्दीज्ञाता. वनषण्डे षड्ऋतुवर्णनं पर्वतशशि-सागरैः सू. ८१

॥१६०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदति २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति २ ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दं तिसत्त-खुत्तो अणुपरियट्टेउं पयत्ता यावि होत्था (सूत्रं ८१)

'सक्कवयणसंदेसेणं'ति शक्रवचनं चासौ सन्देशश्च–भाषकान्तरेण देशान्तरस्थस्य भणनं शक्रवचनसन्देशः तेन, अशुचिकं–अपवित्रं समुद्रस्याशुद्धिमात्रकारकं पत्रादीति प्रक्रमः पूतिकं–जीर्णतया कुथितप्रायं दुरभिगन्धं–दुष्टगन्धं,किमुक्तं भवति ?–अचोक्षं–अशुद्धं, 'तिसत्तखुत्तो'त्ति त्रिभिर्गुणिताः सप्त त्रिसप्त त्रिसप्त वाराः त्रिसप्तकृत्व एकविंशतिवारानित्यर्थः,'एयंसि अंतरंसि'त्ति एतस्मिन्नवसरे विरहे वा 'उव्विग्ग'त्ति उद्विग्नौ उद्वेगवन्तौ 'उप्पिच्छ'त्ति भीतौ पाठान्तरेण उत्प्लुतौ–भीतावेव 'उस्सुय'त्ति उत्सुकौ अस्मत्समागमनं प्रति, 'तत्थ णं दो उदू'इत्यादि, तत्र–पौरस्त्ये वनखण्डे द्वौ ऋतू–कालविशेषौ सदा स्वाधीनौ–अस्तित्वेन स्वायत्तौ, तज्जन्यानां वनस्पतिविशेषपुष्पादीनां सद्भावात्, तद्यथा–प्रावृट् वर्षारात्रश्च, आषाढश्रावणौ भाद्रपदाश्वयुजौ चेत्यर्थः, अनयोरेव रूपकालङ्कारेण वर्णनाय गीतिकाद्वयम्, 'तत्थ उ'इत्यादि, तत्रैव पूर्ववनखण्डे नान्यत्रौदीच्ये पश्चिमे वेत्यर्थः, कन्दलानि च–प्रत्यग्रलताः सिलिन्ध्राश्च–भूमिस्फोटाः, अन्ये त्वाहुः–कन्दलप्रधानाः सिलिन्ध्रा–वृक्षविशेषा ये प्रावृषि पुष्पन्ति सितकुसुमाश्च भवन्ति त एव कुसुमिताः सन्तो दन्ता यस्य धवलत्वसाधर्म्यात् सः कन्दलसिलीन्ध्रदन्तः, इह च सिलीन्ध्राणां कुसुमितत्वविशेषणं सामर्थ्याद् व्याख्यातं, कुसुमाभावे तेषां प्रावृषोऽन्यत्रापि कालान्तरे सम्भवादिति, तथा 'निउरो'त्ति वृक्षविशेषः तस्य यानि वरपुष्पाणि तान्येव पीवरः–स्थूरः करो यस्य स तथा, कुटजार्जुननीपा–वृक्षविशेषास्तत्पुष्पाणि कुटजार्जुननीपानि तान्येव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८१] + गाथा: दीप अनुक्रम [११३--१२२]

सुरभिदानं–सुगन्धिमदजलं यस्य स तथा, प्रावृट् ऋतुरेव गजवरः प्रावृड्ऋतुगजवरः स्वाधीनः, इह सिलिन्ध्रादिवनस्पतीनां कालान्तराकृतकुसुमानां सदाकुसुमितानां भावादात्मवशोऽस्तीति भावः ॥१॥ तथा तत्रैव वनखण्डे सुरगोपा–इन्द्रगोपकाभिधाना रक्तवर्णाः कीटास्त एव मणयः पद्मरागादयः तैर्विचित्रः–कर्बुरो यः स तथा, तथा दर्दुरकुलरसितं–मण्डूकसमूहरटितं तदेव उज्झररवो–निर्झरशब्दो यत्र स तथा, बर्हिणवृन्देन–शिखण्डिसमूहेन परिणद्धानि–परिगतानि शिखराणि ऋतुपक्षे वृक्षसम्बन्धीनि पर्वतपक्षे कूटानि यत्र स तथा वर्षारात्रऋतुरेव पर्वत इति विग्रहः, स्वाधीनः–स्वायत्तस्तद्धर्माणां सर्वदा तत्र भावादिति ॥ २ ॥ 'वावीसु'इत्यादि प्रथमाध्ययनवत्, 'सरओ हेमंतो य'त्ति कार्त्तिकमार्गशीर्षौ पौषमाघौ चेत्यर्थः, इहापि गीतिकाद्वयं– 'तत्थ उ'इत्यादि, तत्रैव सनो–वल्कप्रधानो वनस्पतिविशेषः सप्तपर्णः–सप्तच्छदस्तयोः पुष्पाणि सनसप्तपर्णानि तान्येव ककुदं–स्कन्धदेशविशेषो यस्य स तथा, नीलोत्पलपद्मनलिनानि–जलजकुसुमविशेषास्तान्येव शृङ्गे यस्य स तथा, सारसाश्चक्रवाकाश्च–पक्षिविशेषास्तेषां 'रविय'ंति रुतं तदेव घोषो–नर्दितं यस्य स तथा शरदृतुरेव गोपतिः–गवेन्द्रः शरदृतुगोपतिः स्वाधीनः ॥ १ ॥ तथैव तत्र वनखण्डे सितानि यानि कुन्दानि–कुन्दाभिधानवनस्पतिकुसुमानि तान्येव धवला ज्योत्स्ना–चन्द्रिका यस्य स तथा, पाठान्तरेण 'सितकुंदविमलजोण्हो'त्ति स्पष्टं, कुसुमितो यो लोध्रवनखण्डः स एव मण्डलतलं–बिम्बं यस्य स तथा, तुषारं–हिमं तत्प्रधानाः या उदकधारा–उदकबिन्दुप्रवाहास्ता एव पीवराः–स्थूलाः कराः–किरणा यस्य स तथा, हेमन्तऋतुरेव शशी–चन्द्र इति विग्रहः स्वाधीनः ॥ २ ॥ तथैव 'वसंते गिम्हे य'त्ति फाल्गुनचैत्रौ वैशाखज्येष्ठौ चेत्यर्थः, 'तत्थ उ'इत्यादि गीतिकाद्वयं, तत्र च सहकाराणि–चूतपुष्पाणि तान्येव चारुहारो यस्य स तथा, किंशुकानि–पलाशस्य कुसु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मानि कर्णिकाराणि–कर्णिकारस्य अशोकानि चाशोकस्य तान्येव मुकुटं–किरीटं यस्य स तथा, उच्छ्रितं–उन्नतं तिलकबकुलानि–तिलकबकुलकुसुमानि तान्येवातपत्रं–छत्रं यस्य स तथा, वसन्त ऋतुर्नरपतिः स्वाधीनः प्रतीतम् ॥१॥ तत्र च पाटलाशिरीषाणि-पाटलाशिरीषकुसुमानि तान्येव सलिलं यत्र स तथा मल्लिका–विचकिलो वासन्तिका–लताविशेषः तत्कुसुमानि मल्लिकावासन्तिकानि तान्येव धवला–सिता वेला–जलवृद्धिर्यस्य स तथा, शीतलः सुरभिश्च योऽनिलो–वायुः स एव मकरचरितं यत्र स तथा, इह चानिलशब्दस्य अकारलोपः प्राकृतत्वात् 'अरण्णं रण्णं अलायं लाउय'मित्यादिवत्,ग्रीष्मऋतुसागरः स्वाधीन इति। 'उग्गविसे' इत्यादि, उग्रं दुर्जरत्वाद्विषं यस्य स उग्रविषः, एवं सर्वत्र,नवरं चण्डं झगिति व्यापकत्वात्, पाठान्तरे तु 'भोगविसे' इति तत्र भोगः शरीरं स एव विषं यस्येति, घोरं परम्परया पुरुषसहस्रस्यापि घातकत्वात्, महत् जम्बूद्वीपप्रमाणशरीरस्यापि विषतयाऽऽभवनात्, कायान्–शरीराणि शेषाहीनामतिक्रान्तोऽतिकायः, अत एव महाकायः, 'जहा तेयनिसग्गे'त्ति शेषविशेषणानि यथा मोशालकचरिते तथेहाध्येतव्यानीत्यर्थः, तानि चैतानि 'मसिमहिसमूसाकालगे' मषी च महिषश्च मूषा च–स्वर्णादितापन-भाजनविशेषः इति द्वन्द्वः एता इव कालको यः स तथा,'नयणविसरोसपुण्णो' नयनविषेण–दृष्टिविषेण रोषेण च पूर्ण इत्यर्थः, 'अंजणपुंजनिगरप्पगासे' कज्जलपुञ्जानां निकर इव प्रकाशते यः स तथा,'रत्तच्छे जमलजुयलचंचलचलंतजीहे' ममलं–सहवर्त्ति युगलं–द्वयं चञ्चलं च यथा भवत्येवं चलन्त्योः–अतिचपलयोर्जिह्वयोर्यस्य स तथा,'धरणितलवेणिभूए' धरणीतलस्य वेणीभूतो–वनिताशिरसः केशबन्धविशेष इव यः कृष्णत्वदीर्घत्वश्लक्ष्णत्वपश्चाद्भागत्वादिसाधर्म्यात् स तथा,'उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडविगडफडाडोवकरणदच्छे' उत्कटो बलवताऽन्येनाध्वंसनीयत्वात् स्फुटो–व्यक्तः प्रयत्नविहितत्वात् कुटिलः–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तत्स्वरूपत्वात् जटिलः–स्कन्धदेशे केसरिणामिवाहीनां केसरसद्भावात् कर्कशो–निष्ठुरो बलवत्त्वात् विकटश्च–विस्तीर्णो यः स्फटाटोपः–फणासंरम्भः तत्करणे दक्षो यः स तथा, 'लोहागरधम्ममाणधमधमेंतघोसे' लोहाकरे ध्मायमानं–अग्निना तापयमानं लोहमिति गम्यते तस्येव यद्धमधमायमानो–धमधमेतिवर्णव्यक्तिमिवोत्पादयन् घोषः–शब्दो यस्य स तथा, 'अणागलियचंडतिव्वरोसे' अनर्गलितः–अनिवारितोऽनाकलितो वा–अप्रमेयश्चण्डतीव्रः–अत्यर्थतीव्रो रोषो यस्य स तथेति, 'समुहिं तुरियं चवलं धमंतं'ति शुनो मुखं श्वमुखं तस्येवाचरणं श्वमुखि–कौलेयकस्येव भषणतां त्वरितचपलं–अतिचटुलतया धमन्–शब्दं कुर्वन्नित्यर्थः ॥

तए णं ते मागंदियदारया तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडिंसए सइं वा रतिं वा धितिं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वदासी–एवं खलु देवा०! रयणदीवदेवया अम्हे एवं वदासी–एवं खलु अहं सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! पुरच्छिमिल्ले वणसंडं गमित्तए, अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति २ तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति, तते णं ते मागंदियदारया तत्थवि सइं वा जाव अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवा० २ तत्थ णं वावीसु य जाव जालीघरएसु य विहरंति, तते णं ते मागंदियदारया तत्थवि सतिं वा जाव अलभ०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८२-८८] + गाथा:

दीप अनुक्रम [१२३--१४०]

जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवा०२ जाव विहरति, तते णं ते मागंदिय० तत्थवि सतिं वा जाव अलभ० अण्णमण्णं एवं वदासी–एवं खलु देवा० ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्ठिएण लवणाहिवइणा जाव मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं गंधे निद्धाति से जहा नामए अहिमडेति वा जाव अणिट्ठतराए चेव, तते णं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया तत्थ णं महं एगं आघातणं पासंति २ अट्ठियरासिसतसंकुलं भीमदरिसणिज्जं एगं च तत्थ सूलाइतयं पुरिसं कलुणातिं विस्सरातिं कट्ठातिं कुव्वमाणं पासंति, भीता जाव संजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छंति २ तं सूलाइयं एवं वदासी–एस णं दे० ! कस्साघयणे तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए केण वा इमेयारूवं आवतिं पाविए ?, तते णं से सूलातियए पुरिसे मागंदियदारए एवं वदासी–एस णं देवाणु० ! रयणदीवदेवयाए आघयणे अहण्णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागंदीए आसवाणियए विपुलं पणियभंडमायाए पोतवहणेणं लवणसमुद्दं ओयाए, तते णं अहं पोयवहणविवत्तीए निव्वुड्ढभंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि, तते णं अहं उवुज्झमाणे २

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रयणदीवंतेणं संवूढे, तते णं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ २ ममं गेण्हेइं २ मए सद्धिं विपुलातिं भोगभोगातिं भुंजमाणी विहरति, तते णं सा रयणदीवदेवया अण्णदा कयाई अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एतारूवं आवतिं पावेइ, तं ण णज्जति णं देवा०! तुम्हंपि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवती भविस्सइ?, तते णं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमत्थं सोचा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइतयं पुरिसं एवं व०–कहण्णं देवाणु०! अम्हे रतणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो?, तते णं से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एवं वदासी–एस णं देवाणु०! पुरच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसति, तए णं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमये महया २ सद्देणं एवं वदति–कं तारयामि कं पालयामि?, तं गच्छह णं तुब्भे देवा०! पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह २ जण्णुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहे णं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा–कं तारयामि कं पालयामि?, ताहे तुब्भे वदह–अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि, सेलए भे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा, अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ? (सूत्रं ८२) तते णं ते मागंदिय० तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म सिग्घं चंडं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चवलं तुरियं चेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवा० पोक्खरिणिं गाहंति २ जलमज्जणं करेन्ति २ जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति २ जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उ० २ आलोए पणामं करेंति २ महरिहं पुप्फच्चणियं करेंति २ जण्णुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमंसमाणा पज्जुवासंति, तते णं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदासी–कं तारयामि कं पालयामि ?, तते णं ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति करयल० एवं व०–अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि, तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदिय० एवं वया०–एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्देणं मज्झं २ वीइवयमाणेणं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गं करेहिति, तं जति णं तुब्भे देवा० ! रयणदीवदेवयाए एतमट्ठं आदाह वा परियाणह वा अवयेक्खह वा तो भे अहं पिट्ठातो विधुणामि, अह णं तुब्भे रयणदीवदेवयाए एतमट्ठं णो आदाह णो परियाणह णो अवेक्खह तो भे रयणदीवदेवयाहत्थातो साहत्थिं णित्थारेमि, तए णं ते मागंदियदारया सेलगं जक्खं एवं वदासी–जण्णं देवाणु० ! वइस्संति तस्स णं उववायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तते णं से सेलए जक्खे उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति २ संखेज्जातिं जोयणाइं दंडं निस्सरइ दोच्चंपि तच्चंपि वेउव्वियसमु० २ एगं महं आसरूवं विउव्वइ २ ते मागंदियदा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रए एवं वदासी–हं भो मागंदिया ! आरुह णं देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठंसि, तते णं ते मागंदिय० हट्ठ० सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति २ सेलगस्स पिट्ठिं दुरूढा, तते णं से सेलए ते मागंदिय० दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्तातिं उड्ढं वेहासं उप्पयति, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवयाए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए (सूत्रं ८३) तते णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टति जं तत्थ तणं वा जाव एडेति, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छति २ ते मागंदिया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेति २ तेसिं मायंदियदारगाणं कच्छइ सुतिं वा ३ अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्लेवि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजति, ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे २ पासति २ आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हति २ सत्तट्ठ जाव उप्पयति २ ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय० तेणेव उवा०२ एवं व०–हं भो मागंदिय० अप्पत्थियपत्थिया किण्णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयमाणा ?, तं एवमवि गए जइ णं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अहण्णं णावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवल जाव एडेमि, तते णं ते मागंदियदारया रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सो० णिस० अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीवदेवयाए

९ माकन्दीज्ञाते शैलकयक्ष-पृष्ठेआरोहः सू. ८३ जिनरक्षितचलनं सू. ८४

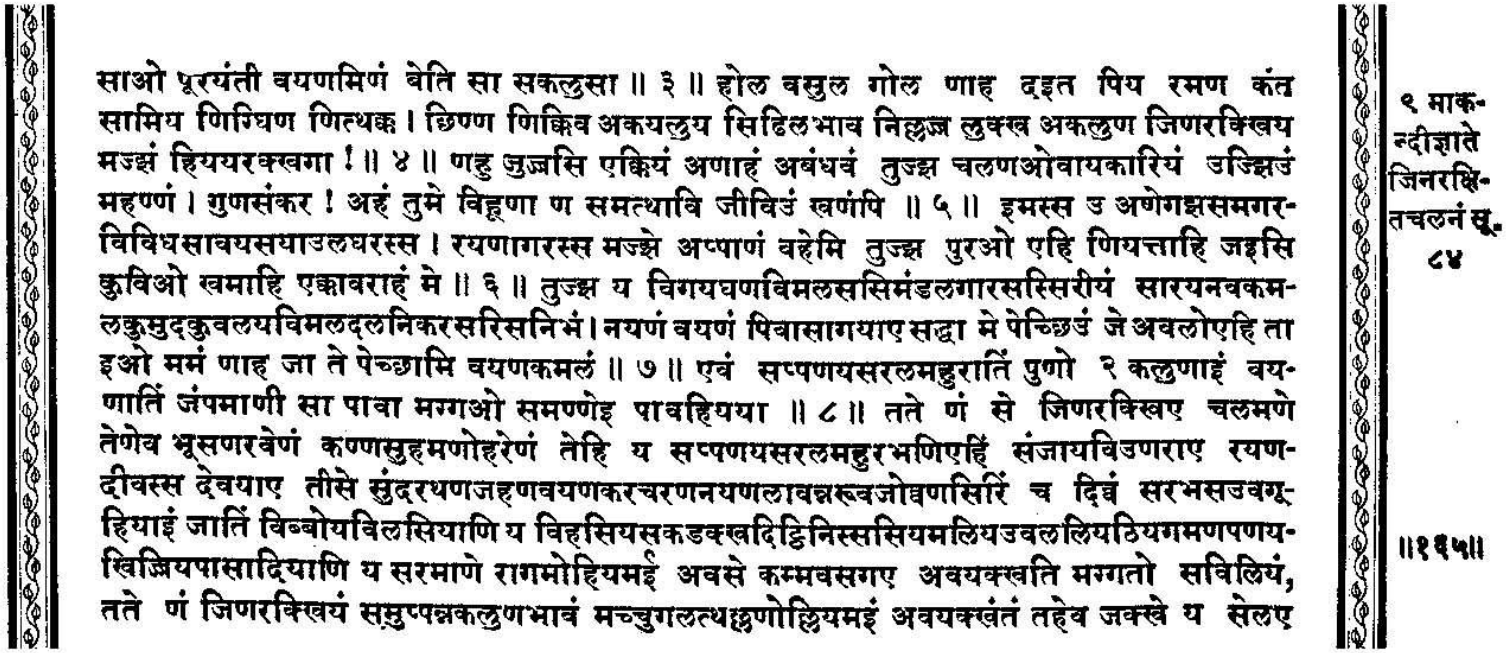
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८२-८८] + गाथा:

दीप अनुक्रम [१२३--१४०]

एयमट्ठं नो आढंति नो परि० णो अवयक्खंति, अणाढायमाणा अपरि० अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयंति, तते णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिया जाहे नो संचाएंति बहूहिं पडिलोमेहि य उवसग्गेहि य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा ताहे महुरेहि सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गेउं पयत्ता यावि होत्था; हं भो मागंदियदारगा! जति णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिंडियाणि य मोहियाणि य ताहे णं तुब्भे सव्वार्ति अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयह, तते णं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभाएति आभोएत्ता एवं वदासी–णिच्चंडपिय णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा ५ निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे ५ निच्चंपिय णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा ५ निच्चंपिय णं ममं जिणरक्खिए इट्ठे ५, जति णं ममं जिणपालिए रोयमाणीं कंदमाणीं सोयमाणीं तिप्पमाणीं विलवमाणीं णावयक्खति किण्णं तुमं जिणरक्खिया! ममं रोयमाणिं जाव णावयक्खसि?, तते णं–'सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं। नाऊण वधनिमित्तं उवरि मागंदियदारगाणं दोण्हंपि ॥ १ ॥ दोसकलिया सललियं णाणाविहचुण्णवासमीसं (सियं) दिव्वं। घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी ॥ २ ॥ णाणामणिकणगरयणघंटियखिखिणिणेऊरमेहलभूसणरवेणं। दिसाओ विदि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१६५॥

साओ पूरयंती वयणमिणं बेति सा सकलुसा ॥ ३ ॥ होल वसुल गोल णाह दइत पिय रमण कंत सामिय णिग्घिण णित्थक्क । छिण्ण णिक्किव अकयलुय सिढिलभाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा ! ॥ ४ ॥ णहु जुज्जसि एक्कियं अणाहं अबंधवं तुज्झ चलणओवायकारियं उज्झिउं महण्णं । गुणसंकर ! अहं तुमे विहूणा ण समत्थावि जीविउं खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझसमगर-विविधसावयसयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ एहि णियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एक्कावराहं मे ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमंडलगारससिरीयं सारयनवकम-लकुमुदकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभं । नयणं वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे अवलोएहि ता इओ ममं णाह जा ते पेच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एवं सप्पणयसरलमहुरातिं पुणो २ कलुणाइं वय-णातिं जंपमाणी सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥ ८ ॥ तते णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं संजायविउणराए रयण-दीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरिं च दिव्वं सरभसउवगू-हियाइं जातिं विब्बोयविलसियाणि य विहसियसकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणपणय-खिज्जियपासादियाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलियं, तते णं जिणरक्खियं समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं तहेव जक्खे य सेलए

९ माक-न्दीज्ञाते जिनरक्षि-तचलनं सू. ८४

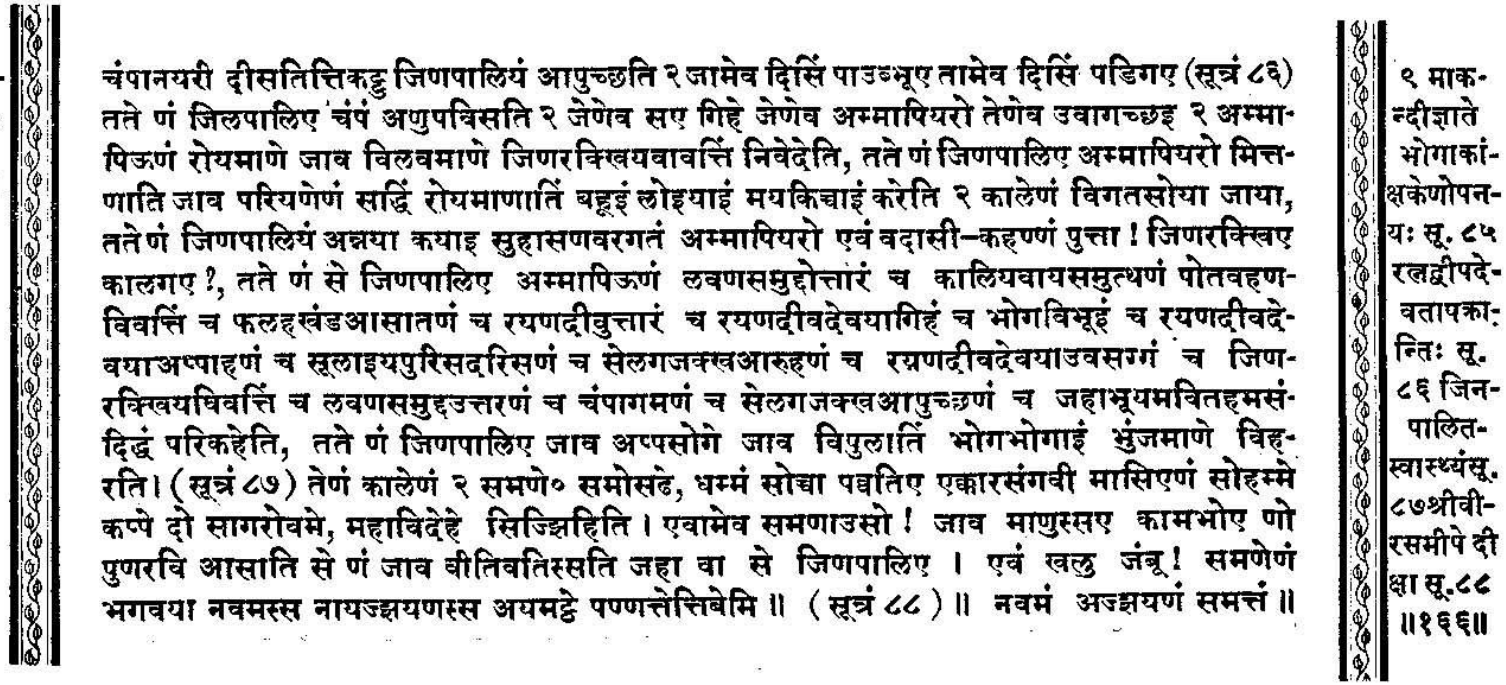
॥१६५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८२-८८] + गाथा: दीप अनुक्रम [१२३--१४०]

जाणिऊण सणियं २ उव्विहति नियगपिट्ठाहि विगयसत्थं, तते णं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि उवयंतं दास! मओसित्ति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहति, अंबरतले ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पगासेण असिवरेणं खंडाखंडिं करेति २ तत्थ विलवमाणं तस्स य सरसवहियस्स घेत्तूण अंगमंगातिं सरुहिराइं उक्खित्तबलिं चउद्दिसिं करेति सा पंजली पहिट्ठा। (सूत्रं८४) एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथाण वा २ अंतिए पव्वतिए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायति पत्थयति पीहेति अभिलसति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ जाव संसारं अणुपरियट्टिस्सति, जहा वा से जिणरक्खिए–'छलओ अवयक्खंतो निरावयक्खो गओ अविग्घेणं । तम्हा पवयणसारे निरावयक्खेण भवियव्वं ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खंता पडंति संसारसायरे घोरे। भोगेहिं निरवयक्खा तरंति संसारकंतारं ॥२॥ (सूत्रं ८५) ततें णं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवा० बहूहिं अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खरमहुरसिंगारेहिं कलुणेहि य उवसग्गेहि य जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभि० विप्प० ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसं पडिगया, तते णं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति २ जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छति २ चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पट्ठातो ओयारेति २ एवं व०–एस णं देवा०!

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१६६॥

चंपानयरी दीसतित्तिकट्टु जिणपालियं आपुच्छति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए (सूत्रं ८६) तते णं जिणपालिए चंपं अणुपविसति २ जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्तिं निवेदेति, तते णं जिणपालिए अम्मापियरो मित्तणातिं जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणातिं बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति २ कालेणं विगतसोया जाया, तते णं जिणपालियं अन्नया कयाइ सुहासणवरगतं अम्मापियरो एवं वदासी–कहण्णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?, तते णं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं पोतवहणविवत्तिं च फलहखंडआसातणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवयागिहं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवयाअप्पाहणं च सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवयाउवसग्गं च जिणरक्खियविवत्तिं च लवणसमुद्दउत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेति, तते णं जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विपुलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति। (सूत्रं ८७) तेणं कालेणं २ समणे० समोसढे, धम्मं सोचा पवतिए एक्कारसंगवी मासिएणं सोहम्मे कप्पे दो सागरोवमे, महाविदेहे सिज्झिहिति। एवामेव समणाउसो ! जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसाति से णं जाव वीतिवतिस्सति जहा वा से जिणपालिए । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ॥ (सूत्रं ८८) ॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

९ माकन्दीज्ञाते भोगाकांक्षकेणोपनयः सू. ८५ रत्नद्वीपदेवतापकान्तिः सू. ८६ जिनपालितस्वास्थ्यंसू. ८७श्रीवीरसमीपे दीक्षा सू.८८ ॥१६६॥

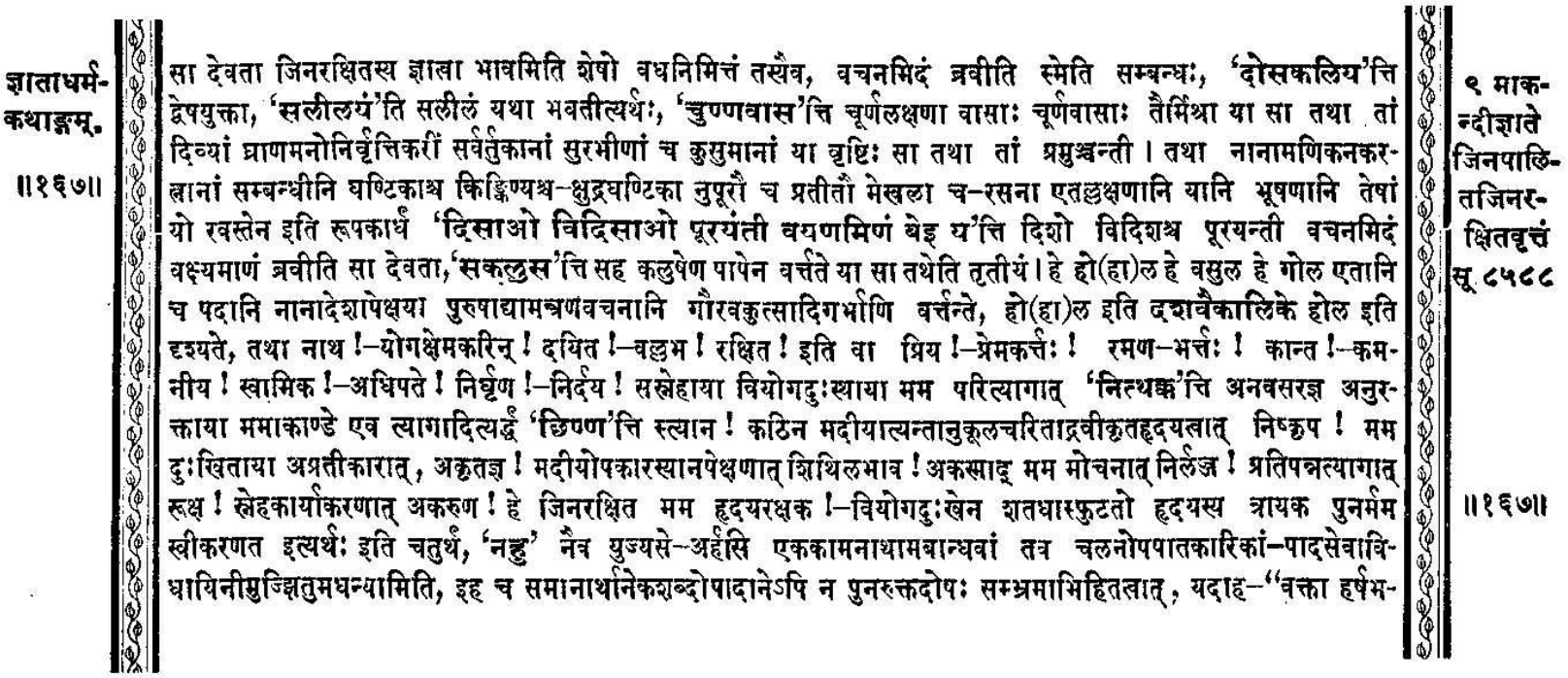
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८२-८८] + गाथाः

दीप अनुक्रम [१२३--१४०]

'सइं व'त्ति सुखलक्षणफलबहुलतां स्मृतिं वा स्मरणं अतिव्याकुलचित्ततया न लभते स्म रतिं–चित्तरमणं 'धिइं व'त्ति धृतिं चित्तस्वास्थ्यमिति, 'आसयाइं'ति आस्ये–मुखे 'पिहिंति'त्ति पिधन्तः–स्थगयन्तः 'आघयणं'ति वधस्थानं 'सूलाइयगं'ति शूलिकाभिन्नं 'कलुणाइं'ति करुणाजनकत्वात् 'कट्ठाइं'ति कष्टं–दुःखं तत्प्रभवत्वात् 'विस्सराइं'ति विरूपशब्दस्वरूपत्वात् वचनानीति गम्यते, 'कूजन्तं' अव्यक्तं शब्दायमानं 'काकंदीए'त्ति काकन्दीनगरी तद्भवः, 'ओयाए'त्ति उपायातः–उपागतः, 'अहालहुस्सगंसि'त्ति यथाप्रकारे लघुस्वरूपे, 'उद्दिट्ठ'त्ति अमावास्या, 'आगयसमए'त्ति आसन्नीभूतोऽवसरो यस्य स इत्यर्थः, प्राप्तस्तु साक्षादेव, 'हत्थाओ'त्ति हस्तात् ग्रहणप्रवृत्तात् 'साहत्थिं'ति स्वहस्तेन 'सिंगारेहिं'ति शृङ्गाररसोपेतैः कामोत्कोचकैः करुणैस्तथैव उपसर्गैः–उपद्रवैर्वचनचेष्टाविशेषरूपैः 'अवयक्खह' अपेक्षध्वं 'मए सद्धिं हसियाणि'इत्यादि, इह क्तप्रत्ययो भावे तस्य चोपाधिभेदेन भेदस्य विवक्षणाद् बहुवचनं, अन्यथा यद्युवाभ्यां मया सार्द्धं हसितं चेत्यादि वाच्यं स्यात्, तथा रतानि च अक्षादिभिः ललितानि च ईप्सितानि लीला वा 'कीलियाणि य'त्ति जलान्दोलनकक्रीडादिभिः हिण्डितानि च वनादिषु विहृतानि मोहितानि च–निधुवनानि, एतच्च वाक्यं काकाऽध्येयं, तत उपालम्भः प्रतीयते, 'तए णं सा रयणदीवे'त्यादि सूत्रं वाचनान्तरे रूपकविशेषद्वयभ्रान्तिं करोति, तथाहि–'सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खिअस्स नाऊण वहनिमित्तं उवरिं माइंदिदारगाण दोण्हंपि' इत्येकं 'दोसकलिया सलीलयं नाणाविहचुण्णवासमीसियं दिव्वं घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरहिकुसुमवुट्ठिकरं पमुंचमाणी'इति द्वितीयं, एवमन्यान्यपि परिभावनीयानि पद्यानि, पद्यबन्धं हि विना तुकारादिनिपातानां पादपूरणार्थानां निर्देशो न घटते, अपरिमितानि च छन्दःशास्त्राणीति, अर्थस्त्वेवम्–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१६७॥

सा देवता जिनरक्षितस्य ज्ञात्वा भावमिति शेषो वधनिमित्तं तस्यैव, वचनमिदं ब्रवीति स्मेति सम्बन्धः, 'दोसकलिय'त्ति द्वेषयुक्ता, 'सलीलयं'ति सलीलं यथा भवतीत्यर्थः, 'चुण्णवास'त्ति चूर्णलक्षणा वासाः चूर्णवासाः तैर्मिश्रा या सा तथा तां दिव्यां घ्राणमनोनिर्वृत्तिकरीं सर्वर्तुकानां सुरभीणां च कुसुमानां या वृष्टिः सा तथा तां प्रमुञ्चन्ती। तथा नानामणिकनकरत्नानां सम्बन्धीनि घण्टिकाश्च किङ्किण्यश्च-क्षुद्रघण्टिका नुपूरौ च प्रतीतौ मेखला च-रसना एतल्लक्षणानि यानि भूषणानि तेषां यो रवस्तेन इति रूपकार्थं 'दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं वेइ य'त्ति दिशो विदिशश्च पूरयन्ती वचनमिदं वक्ष्यमाणं ब्रवीति सा देवता,'सकलुस'त्ति सह कलुषेण पापेन वर्त्तते या सा तथेति तृतीयं। हे हो(हा)ल हे वसुल हे गोल एतानि च पदानि नानादेशापेक्षया पुरुषाद्यामन्त्रणवचनानि गौरवकुत्सादिगर्भाणि वर्त्तन्ते, हो(हा)ल इति दशवैकालिके होल इति दृश्यते, तथा नाथ!-योगक्षेमकरिन्! दयित!-वल्लभ! रक्षित! इति वा प्रिय!-प्रेमकर्त्तः! रमण-भर्त्तः! कान्त!-कमनीय! स्वामिक!-अधिपते! निर्घृण!-निर्दय! सस्नेहाया वियोगदुःस्थाया मम परित्यागात् 'निरत्थक्क'त्ति अनवसरज्ञ अनुरक्ताया ममाकाण्डे एव त्यागादित्यर्द्धं 'छिण्ण'त्ति स्त्यान! कठिन मदीयात्यन्तानुकूलचरिताद्रवीकृतहृदयत्वात् निष्कृप! मम दुःखितायाः अप्रतीकारात्, अकृतज्ञ! मदीयोपकारस्यानपेक्षणात् शिथिलभाव! अकस्माद् मम मोचनात् निर्लज्ज! प्रतिपन्नत्यागात् रूक्ष! स्नेहकार्याकरणात् अकरुण! हे जिनरक्षित मम हृदयरक्षक!-वियोगदुःखेन शतधास्फुटतो हृदयस्य त्रायक पुनर्मम स्वीकरणत इत्यर्थः इति चतुर्थं, 'नहु' नैव युज्यसे-अर्हसि एककामनाथामबान्धवां तव चलनोपपातकारिकां-पादसेवाविधायिनीमुज्झितुमधन्यामिति, इह च समानार्थानेकशब्दोपादानेऽपि न पुनरुक्तदोषः सम्भ्रमाभिहितत्वात्, यदाह-"वक्ता हर्षभ-

९ माकन्दीज्ञाते जिनपालितजिनरक्षितवृत्तं सू ८५८८

॥१६७॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यादिभिराक्षिप्तमनाः स्तुवंस्तथा निन्दन्। यत्पदमसकृद् ब्रूयात् तत्पुनरुक्तं न दोषाय॥१॥"इति अर्थः, हे गुणसंकर!–गुणसमुदायरूप! हं इति अकारलोपदर्शनादहमिति दृश्यं त्वया विहीना न समर्था जीवितुं क्षणमपीति पञ्चमं। तथा 'इमस्स उ'त्ति अस्य पुनः अनेके ये झषा–मत्स्या मकरा–ग्राहाः विविधश्वापदाश्च–जलचरक्षुद्रसत्त्वरूपास्तेषां यानि शतानि तेषामाकुलगृहं आकीर्णगेहं झषादीनां वा सदा–नित्यं कुलगृहमिव कुलगृहं यः स तथा तस्येत्यर्द्धं, रत्नाकरस्य–समुद्रस्य मध्ये आत्मानं 'वहेमि'त्ति हन्मि तव–भवतः पुरतः–अग्रतः तथा एहि निवर्त्तस्व 'जइसि'त्ति यदि भवसि कुपितः क्षमस्वैकापराधं त्वं मे इति षष्ठं। 'तुज्झ य'त्ति तव च विगतघनं विमलं च यच्छशिमण्डलं तस्येवाकारो यस्य श्रिया च सह यद्वर्त्तते तत्तथा, पाठान्तरेण विगतघनविमलशशिमण्डलेनोपमा यस्य सश्रीकं च यत्तत्तथा, शारदं–शरत्कालसम्भवं यन्नवं–प्रत्यग्रं कमलं च–सूर्यबोध्यं कुमुदं च–चन्द्रबोध्यं कुवलयं च–नीलोत्पलं तेषां यो दलनिकरः–दलवृन्दं तत्सदृशे नितरां भात इति–निभे च नयने यत्र तत्तथा, पाठान्तरेण शारदनवकमलकुमुदे च ते विमुकुले च ते विकसिते शेषं तथैव, वदनं–मुखं प्रतीति वाक्यशेषः, पिपासागतायाः–मुखदर्शनजलपानेच्छया आयातायाः तां वा गतायाः–प्राप्तायाः कस्याः?–मे–मम श्रद्धा–अभिलाषः किं कर्तुं?–प्रेक्षितुं–अवलोकयितुं जे इति पादपूरणे निपातः अवलोकय ता इति–ततस्तावदिति वा इतः–अस्यां दिशि मां नाथ जा इति–येन यावदिति वा ते–तव प्रेक्षे वदनकमलमिति रूपकं ॥ ७ ॥ एवं सप्रणयानि–सस्नेहानीव सरलानि–सुखावगम्याभिधेयानि मधुराणि च–भाषया कोमलानि यानि तानि तथा, तथा करुणानि–करुणोत्पादकत्वात् वचनानि जल्पन्ती सा पापा क्रियया मार्गतः–पृष्ठतः समन्वेति–समनुगच्छति पापहृदयेति ॥ ८ ॥ ततोऽसौ जिनरक्षितश्चलमनाः–अभ्युपगमाच्चलितचेताः 'अवयक्खइ'त्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [८२-८८] + गाथाः

दीप अनुक्रम [१२३--१४०]

सम्बन्धः, किंभूतः ?–सञ्जातद्विगुणरागः पूर्वकालापेक्षया, कस्यां ?–रत्नद्वीपदेवतायां, केन कैश्चेत्याह–तेन च–पूर्वोक्तेन भूषणरवेण कर्णसुखो मनोहरश्च यस्तेन तैश्च पूर्ववर्णितैः सप्रणयसरलमधुरभणितैः, तथा तस्या देवतायाः सुन्दरं यत्स्तनजघनवदनकरचरणनयनानां लावण्यं–स्पृहणीयत्वं तच्च रूपं च–शरीरसुन्दरत्वं च यौवनं च–तारुण्यं तेषां या श्रीः–सम्पत् सा तथा तां च दिव्यां–देवसम्बन्धिनीं स्मरन्निति सम्बन्धः, तथा सरभसानि–सहर्षाणि यान्युपगूहितानि–आलिङ्गितानि तानि तथा 'विब्बोयकाः' स्त्रीचेष्टाविशेषाः विलसितानि च–नेत्रविकारलक्षणानि च तानि तथा, विहसितानि च–अर्द्धहसितादीनि सकटाक्षाः–सापाङ्गदर्शनाः दृष्टयो–विलोकितानि निःश्वसितानि च–कामक्रीडायाः समुद्भवानि मलितानि च–पुरुषाभिलषणीययोषिदङ्गमर्दनानि च पाठान्तरेण मणितानि च–रतकूजितानि उपललितानि च–क्रीडितविशेषरूपाणि पाठान्तरेण ललितानि–ईप्सितानि क्रीडितानि वा स्थितानि च–स्वभवनेषु उत्सङ्गासनादिषु वा अवस्थानानि गमनानि च–हंसगत्या चङ्क्रमणानि प्रणयखेदितानि च–प्रणयरोषणानि प्रसादितानि च–कोपप्रसादनानीति द्वन्द्वस्तानि च स्मरन्–चिन्तयन् रागमोहितमतिः अवश आत्मन इति गम्यते, कर्म्मवशं–कर्मणः पारतन्त्र्यं गतो यः स तथा पाठान्तरे कर्म्मवशात् वेगेन मोहस्य नडितो–विडम्बितो यः स कर्म्मवशवेगनडितः, 'अवइक्खइ'त्ति अवेक्षते–निरीक्षते स मार्गतः–पृष्ठतोऽवलोकयति तामागच्छन्तीमित्यर्थः, 'सविलियं'ति सव्रीडं, सलज्जमित्यर्थः। 'मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं'ति मृत्युना–यमराक्षसेन 'गलत्थल्ला' हस्तेन गलग्रहणरूपा तया नोदिता–स्वदेशगमनवैमुख्येन यमपुरीगमनाभिमुखीकृता मतिर्यस्य स तथा तं अवेक्खमाणं तथैव यक्षस्तु शैलको ज्ञात्वा शनैः २ 'उव्विहइ'त्ति उद्विजहाति–ऊर्द्धं क्षिपति, 'तहेव सणियं' इत्येतत् पदद्वयं वाचनान्तरे नोपलभ्यते निजकपृष्ठात्—

९ माक-न्दीज्ञाते जिनपालि-तजिनर-क्षितवृत्तं सू.८५-८८

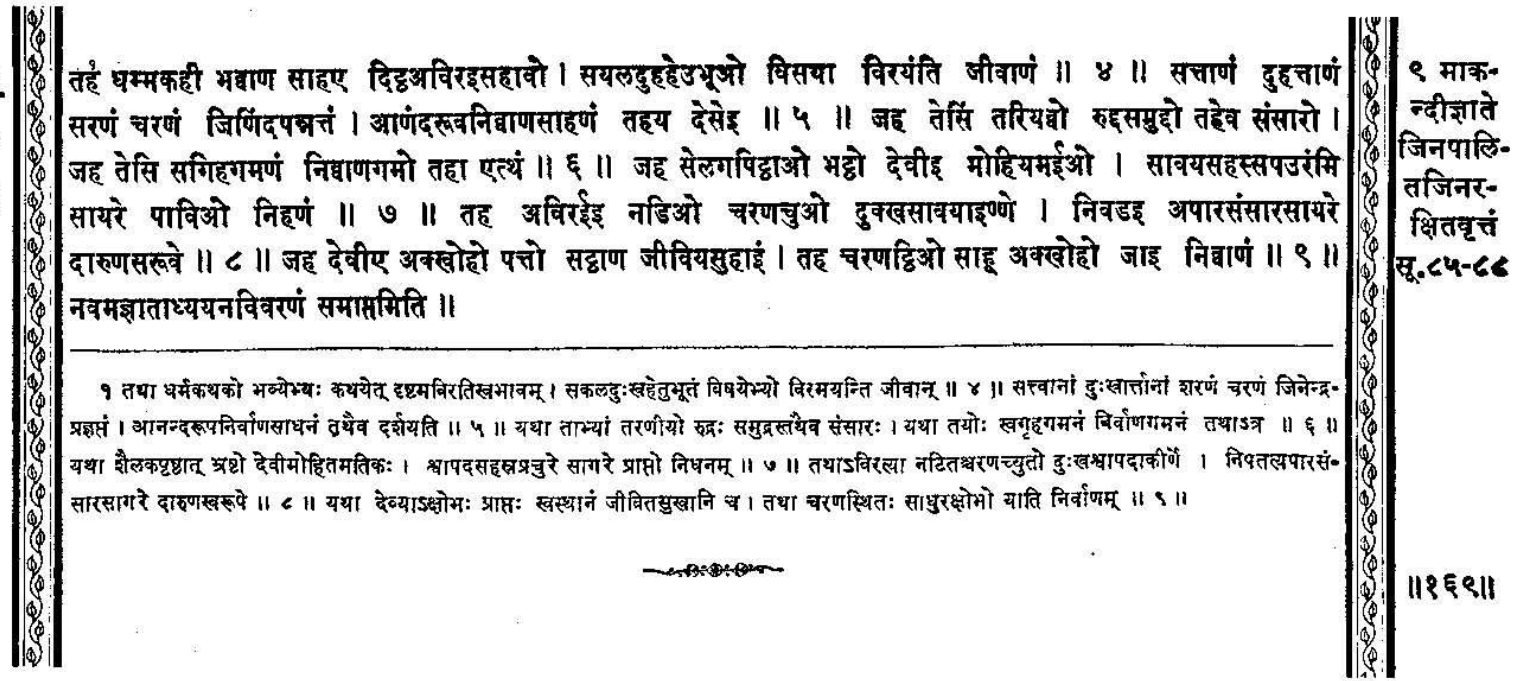
॥१६८॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शरीरावयवविशेषात् 'विगयसत्थं'ति विगतस्वास्थ्यं पाठान्तरे विगतश्रद्धो यक्षः शैलक इति, 'ओवयंतं'ति अवपतन्तं 'सरसबहियस्स'त्ति सरसं–अभिमानरसोपेतं वधितो–हतो यः स तथा तस्य 'अंगमंगाइं'ति शरीरावयवान् 'उक्खित्तबलिं'ति उत्क्षिप्तः–ऊर्द्धं आकाशे क्षिप्तो न भूमिपट्टादिषु निवेशितो यो बलिः–देवतानामुपहारः स तथा तं चतुर्दिशं करोति, सा देवता 'पंजलि'त्ति प्रकृताञ्जलिः प्रकृष्टतोपवती 'एवमेवे'त्यादि निगमनं 'आसाय'त्ति प्राप्तानाश्रयति भजते–अप्राप्तान् प्रार्थयते-ऋद्धिमन्तं याचते स्पृहयति–अप्रार्थित एव यद्ययं श्रीमान् भोगान् मे ददाति तदा साधु भवति इत्येवंरूपां स्पृहां करोति अभिलषति–दृष्टादृष्टेषु शब्दादिषु भोगेच्छां करोतीत्यर्थः, अत्रार्थे 'छलिउं' गाहा–छलितो–व्यंसितोऽनर्थं प्राप्तः 'अवकाङ्क्षन्' पश्चाद्भागमवलोकयन् जिनरक्षित इति प्रस्तुतमेव 'निरवयक्खो' निरवकाङ्क्षः पश्चाद्भागमनवेक्षमाणस्तन्निस्स्पृह इत्यर्थो गतः–स्वस्थानं प्राप्तोऽविघ्नेन–अन्तरायाभावेन जिनपालित इति वक्ष्यमाणं, एष दृष्टान्तानुवादो, दार्ष्टान्तिकस्त्वेवं–यस्मादेवं तस्मात् 'प्रवचनसारे' चारित्रे लब्धे सतीति गम्यते 'निरवकाङ्क्षेण' परित्यक्तभोगान् प्रति निरपेक्षेण–अनभिलाषवता भवितव्यमिति, 'भोगे' गाहा चारित्रं प्रतिपद्यापि भोगानवकाङ्क्षन्तः पतन्ति संसारसागरे घोरे जिनरक्षितवत्, इतरे तु तरन्ति जिनपालितवत् समुद्रमिति ॥२॥ शेषं सूत्रसिद्धं । इह विशेषोपनयमेवं वर्णयन्ति व्याख्यातारः–"[1]जह रयणदीवदेवी तह एत्थं अविरई महापावा । जह लाहत्थी वणिया तह सुहकामा इहं जीवा ॥ १ ॥ जह तेहिं भीएहिं दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो । संसारदुक्खभीया पासंति तहेव धम्मकहं ॥ २ ॥ जह तेण तेसिं कहिया देवी दुक्खाण कारणं घोरं । तत्तो चिय नित्थारो सेलगजक्खाओ नन्नत्तो ॥३॥

१ यथा रत्नद्वीपदेवी तथात्राविरतिर्महापापा । यथा लाभार्थिनौ वणिजौ तथा सुखकामा इह जीवाः ॥ १ ॥ यथा ताभ्यां भीताभ्यां दृष्ट आघातमण्डले पुरुषः । संसारदुःखभीताः पश्यन्ति तथैव धर्मकथकं ॥ २ ॥ यथा तेन ताभ्यां कथिता दुःखानां घोरं कारणं देवी । तत एव शैलकयक्षात् निस्तारो नान्यस्मात् ॥ ३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥१६९॥

तहं धम्मकही भव्वाण साहए दिट्ठअविरइसहावो । सयलदुहहेउभूओ विसया विरयंति जीवाणं ॥ ४ ॥ सत्ताणं दुहत्ताणं सरणं चरणं जिणिंदपन्नत्तं । आणंदरूवनिव्वाणसाहणं तहय देसेइ ॥ ५ ॥ जह तेसिं तरियव्वो रुद्दसमुद्दो तहेव संसारो । जह तेसि सगिहगमणं निव्वाणगमो तहा एत्थं ॥ ६ ॥ जह सेलगपिट्ठाओ भट्ठो देवीइ मोहियमईओ । सावयसहस्सपउरंमि सायरे पाविओ निहणं ॥ ७ ॥ तह अविरईइ नडिओ चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णे । निवडइ अपारसंसारसायरे दारुणसरूवे ॥ ८ ॥ जह देवीए अक्खोहो पत्तो सट्ठाण जीवियसुहाइं । तह चरणट्ठिओ साहू अक्खोहो जाइ निव्वाणं ॥ ९ ॥ नवमज्ञाताध्ययनविवरणं समाप्तमिति ॥

---

१ तथा धर्मकथको भव्येभ्यः कथयेत् दृष्टमविरतिस्वभावम् । सकलदुःखहेतुभूतं विषयेभ्यो विरमयन्ति जीवान् ॥ ४ ॥ सत्त्वानां दुःखार्त्तानां शरणं चरणं जिनेन्द्र-प्रज्ञप्तं । आनन्दरूपनिर्वाणसाधनं तथैव दर्शयति ॥ ५ ॥ यथा ताभ्यां तरणीयो रुद्रः समुद्रस्तथैव संसारः । यथा तयोः स्वगृहगमनं निर्वाणगमनं तथाऽत्र ॥ ६ ॥ यथा शैलकपृष्ठात् भ्रष्टो देवीमोहितमतिकः । श्वापदसहस्रप्रचुरे सागरे प्राप्तो निधनम् ॥ ७ ॥ तथाऽविरत्या नटितश्चरणच्युतो दुःखश्वापदाकीर्णे । निपतत्यपारसंसारसागरे दारुणस्वरूपे ॥ ८ ॥ यथा देव्याऽक्षोभः प्राप्तः स्वस्थानं जीवितसुखानि च । तथा चरणस्थितः साधुरक्षोभो याति निर्वाणम् ॥ ९ ॥

९ माक-न्दीज्ञाते जिनपालि-तजिनर-क्षितवृत्तं सू.८५-८६

॥१६९॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	अत्र अध्ययनं-९ परिसमाप्तम्

प्रत सूत्रांक [८९]

दीप अनुक्रम [१४१]

अथ दशमज्ञातविवरणम् ।

अथ दशमं विव्रियते, तस्य चायं पूर्वेण सह सम्बन्धः—अनन्तराध्ययनेऽविरतिवशवर्त्यवशवर्त्तिनोरनर्थैतरावुक्तौ, इह तुं गुणहानिवृद्धिलक्षणावनर्थार्थौ प्रमाद्यप्रमादिनोरभिधीयेते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते ! समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते दसमस्स के अट्ठे०?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे सामी समोसढे गोयमसामी एवं वदासी—कहण्णं भंते! जीवा वड्ढंति वा हायन्ति वा ?, गो० ! से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवयाचंदे पुण्णिमाचंदं पणिहाय हीणो वण्णेणं हीणे सोम्मयाए हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एवं दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेणं तयाणंतरं च णं बीयाचंदे पाडिवयं चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं तयाणंतरं च णं ततिआचंदे बितियाचंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २ जाव अमावस्साचंदे चाउद्दसिचंदं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खंतीए एवं मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए बंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च णं हीणे हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २ णट्ठे खंतीए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- १० "चन्द्रमा" आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [८९]

दीप अनुक्रम [१४१]

जाव णट्ठे बंभचेरवासेणं, से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचंदे अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंडलेणं तयाणंतरं च णं बिइयाचंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहियतराए वण्णेणं जाव अहियतराए मंडलेणं एवं खलु एएणं कमेणं परिवुड्ढेमाणे २ जाव पुण्णिमाचंदे चाउद्दसिं चंदं पणिहाय पडिपुण्णं वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं, एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे २ जाव पडिपुन्ने बंभचेरवासेणं, एवं खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि॥ (सूत्रं ८९)

दसमं णायज्झयणं समत्तं॥ १०॥

सर्वं सुगमम्, नवरं जीवानां द्रव्यतोऽनन्तत्वेन प्रदेशतश्च प्रत्येकमसङ्ख्यातप्रदेशत्वेनावस्थितपरिमाणत्वात् वर्द्धन्ते गुणैः हीयन्ते च तैरेव। अनन्तरनिर्देशत्वेन हानिमेव तावदाह–'से जहे'त्यादि, 'पणिहाए'त्ति प्रणिधायापेक्ष्य 'वर्णेन' शुक्लताल-क्षणेन 'सौम्यतया' सुखदर्शनीयतया 'स्निग्धतया' अरूक्षतया 'कान्त्या' कमनीयतया 'दीप्त्या' दीपनेन वस्तुप्रकाशनेने-त्यर्थः 'जुत्तीय'त्ति युक्त्या आकाशसंयोगेन, खण्डेन हि मण्डलेनाल्पतरमाकाशं युज्यते न पुनर्यावत्सम्पूर्णेन, 'छायया' जलादौ प्रतिबिम्बलक्षणया शोभया वा 'प्रभया' उद्गमनसमये यद् द्युतिस्फुरणं तया 'ओयाए'त्ति ओजसा दाहापनय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नादिस्वकार्यकरणशक्त्या 'लेश्यया' किरणरूपया 'मण्डलेन' वृत्ततया, क्षान्त्यादिगुणहानिश्च कुशीलसंसर्गात् सद्गुरूणाम-पर्युपासनात् प्रतिदिनं प्रमादपदासेवनात् तथाविधचारित्रावरणकर्मोदयाच्च भवतीति, गुणवृद्धिस्त्वेतद्विपर्ययादिति, एवं च हीयमानानां जीवानां न वाञ्छितस्य निर्वाणसुखस्यावाप्तिरित्यनर्थः, आह च–'चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो। तह उग्घरविग्घरनिरंगणोवि न य इच्छियं लहइ ॥ १ ॥"त्ति [चन्द्र इव कृष्णपक्षे परिहीयते पदे पदे प्रमादपरः। तथा उद्ग्रहविगृहनिरञ्जनोऽपि द्रव्यतो नेप्सितं लभते ॥ १ ॥] गुणैर्वर्द्धमानानां तु वाञ्छितार्थावाप्तेरर्थ इति, विशेषयोजना पुनरेवम्–"जह चंदो तह साहू राहुवरोहो जहा तह पमाओ। वण्णाई गुणगणो जह तहा खमाई समणधम्मो ॥ १ ॥ पुण्णोवि पइदिणं जह हायंतो सव्वहा ससी नस्से। तह पुण्णचरित्तोऽविहु कुसीलसंसग्गिमाईहिं ॥ २ ॥ जणियपमाओ साहू हायंतो पइदिणं खमाईहिं। जायइ नट्ठचरित्तो तत्तो दुक्खाइं पावेइ ॥ ३ ॥ तथा–'हीणगुणोविहु होउं सुहगुरुजोगाइजणियसंवेगो। पुण्णसरूवो जायइ विवड्ढमाणो ससहरोव्व ॥ ४ ॥ [यथा चन्द्रस्तथाः साधुः राहूपरोधो यथा तथा प्रमादः । वर्णादिर्गुणगणो यथा तथा क्षमादिः श्रमणधर्मः ॥ १ ॥ पूर्णोऽपि प्रतिदिनं यथा हीयमानः सर्वथा नश्यति शशी। तथा पूर्णचारित्रोऽपि कुशीलसंसर्गादिभिः ॥ २ ॥ जातप्रमादः साधुः प्रतिदिनं हीयमानः क्षमादिभिः। जायते नष्टचारित्रः ततो दुःखानि प्राप्नोति ॥ ३ ॥ हीनगुणोऽपि भूत्वा शुभगुरुयोगादिजनितसंवेगः। पूर्णस्वरूपो जायते विवर्धमानः शशधर इव ॥ ४ ॥] दशमज्ञातविवरणं समाप्तमिति ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-१० परिसमाप्तम्

प्रत सूत्रांक [९०]

दीप अनुक्रम [१४२]

एकादशज्ञातविवरणम् ।

अथैकादशमं विव्रियते–अस्य पूर्वेण सहायं सम्बन्धः–पूर्वत्र च प्रमाद्यप्रमादिनोर्गुणहानिवृद्धिलक्षणावनर्थार्थावुक्तौ, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यां तावुच्येते इतिसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते ! दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे एक्कारसमस्स के अट्ठे० ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे गोयमे एवं वदासी–कह णं भंते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ?, गो० ! से जहा णामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता किण्हा जाव निउरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति, जया णं दीविच्चगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति अप्पेगतिया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो ! जे अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वतिते समाणे बहूणं समणाणं ४ सम्मं सहति जाव अहियासेति बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहति जाव नो अहियासेति एस णं मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते समणाउसो ! । जया णं सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- ११ "दावद्रव" आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [९०]

दीप अनुक्रम [१४२]

वाया मंदावाया महावाता वायंति तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २ चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहति बहूणं समणाणं ४ नो सम्मं सहति एस णं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते समणाउसो!। जया णं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया तते णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा० एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे बहूणं समणाणं २ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्मं सहति एस णं मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते समणाउसो!, जया णं दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति तदा णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति, एवामेव समणाउसो! जे अम्हं पव्वतिए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं सम्मं सहति एस णं मए पुरिसे सव्वाराहए पं०!, एवं खलु गो०! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया एक्कारसमस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि॥ (सूत्रं–९०) एक्कारसमं नायज्झयणं समत्तं॥

सर्वं सुगमं, नवरं आराधका ज्ञानादिमोक्षमार्गस्य विराधका अपि तस्यैव 'जया णं'मित्यादि 'दीविच्चगा' द्वैप्या द्वीपसम्भवा ईषत् पुरोवाताः–मनाक्–सस्नेहवाता इत्यर्थः, पूर्वदिक्सम्बन्धिनो वा, पथ्या वाता–वनस्पतीनां सामान्येन हिता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वायवः पश्चाद्वाता वा मन्दाः–शनैः सञ्चारिणः महावाताः–उद्दंडवाता वान्ति तदा 'अप्पेगइय'त्ति अप्येके केचनापि स्तोका इत्यर्थः, 'जुण्ण'त्ति जीर्णा इव जीर्णाः, झोडः–पत्रादिशाटनं, तद्योगात्तेऽपि झोडाः, अत एव परिशटितानि कानिचिच्च पाण्डूनि पत्राणि पुष्पफलानि च येषां ते तथा शुष्कवृक्षक इव म्लायन्तस्तिष्ठन्ति इत्येष दृष्टान्तो, योजना त्वस्यैवं 'एवामेवे'त्यादि, 'अण्णउत्थियाणं'ति अन्ययूथिकानां–तीर्थान्तरीयाणां कापिलादीनामित्यर्थः, दुर्वचनादीनुपसर्गान् नो सम्यक् सहते इति, 'एस णं'ति य एवंभूतः एष पुरुषो देशविराधको ज्ञानादिमोक्षमार्गस्य, इयमत्र विकल्पचतुष्टयेऽपि भावना–यथा दावद्रव्य-वृक्षसमूहः स्वभावतो द्वीपवायुभिः बहुतरदेशैः स्वसम्पदः समृद्धिमनुभवति देशेन चासमृद्धिं १ समुद्रवायुभिश्च देशैरसमृद्धिं देशेन च समृद्धिं २ मुभयेषां च वायूनामभावे समृद्ध्यभाव ३ मुभयसद्भावे च सर्वतः समृद्धिं ४ मेवं क्रमेण साधुः कुतीर्थिकगृहस्थानां दुर्वचनादीन्यसहमानः क्षान्तिप्रधानस्य ज्ञानादिमोक्षमार्गस्य देशतो विराधनां करोति, श्रमणादीनां बहुमानविषयाणां दुर्वचनादिक्षमणेन बहुतरदेशानामाराधनात् १ श्रमणादिदुर्वचनानां त्वसहने कुतीर्थिकादीनां सहने देशानां विराधनेन देशत एवाराधनां करोति २ उभयेषामसहमानो विराधनायां सर्वथा तस्य वर्त्तते ३ सहमानश्च सर्वथाऽऽराधनायामिति ४, इह पुनर्विशेषयोजनामेवं वर्णयन्ति–"[1]जह दावद्दवतरुवणमेवं साहू जहेव दीविच्चा । वाया तह समणाइयसपक्खवयणाइं दुसहाइं ॥ १ ॥ जह सामुद्दयवाया तहऽण्णतित्थाइकडुयवयणाइं । कुसुमाइसंपया जह सिवमग्गाराहणा तह उ ॥ २ ॥ जह कुसुमाइविणासो

१ यथा दावद्रवतरुवनमेवं साधवः यथैव द्वीपगाः । वातास्तथा श्रमणादिकसपक्षवचनानि दुःसहानि ॥ १ ॥ यथा समुद्रवातास्तथाऽन्यतीर्थिकादिकटुक-वचनानि । कुसुमादिसंपत् यथा शिवमार्गाराधना तथैव ॥ २ ॥ यथा कुसुमादिविनाशः ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [९०]

दीप अनुक्रम [१४२]

सिवमग्गविराहणा तहा नेया। जह दीववाउजोगे बहु इड्ढी ईसि य अणिड्ढी ॥ ३ ॥ तह साहम्मियवयणाण सहमाणाराहणा भवे बहुया। इयराणमसहणे पुण सिवमग्गविराहणा थोवा ॥ ४ ॥ जह जलहि वाउजोगे थेविड्ढी बहुयरा यऽणिड्ढी य। तह परपक्खक्खमणे आराहणमीसि बहुययरं ॥ ५ ॥ जह उभयवाउविरहे सव्वा तरुसंपया विणट्ठत्ति। अनिमित्तोभयमच्छररूवे विराहणा तह य ॥ ६ ॥ जह उभयवाउजोगे सव्वसमिड्ढी वणस्स संजाया। तह उभयवयणसहणे सिवमग्गाराहणा वुत्ता ॥७॥ ता पुन्नसमणधम्माराहणचित्तो सया महासत्तो। सव्वेणवि कीरंतं सहेज्ज सव्वंपि पडिकूलं ॥ ८ ॥" इति ॥ **एकादशज्ञातविवरणं समाप्तं** ॥ ११ ॥

---

१ शिवमार्गविराधना तथा ज्ञेया। यथा द्वीपवायुयोगे बहुः ऋद्धिरीषच्चानृद्धिः ॥ ३ ॥ तथा साधर्मिकवचनानां सहमानानामाराधना भवेद्बहुका। इतरेषामसहने पुनः शिवमार्गविराधना स्तोका ॥ ४ ॥ यथा जलधिवायुयोगे स्तोकर्द्धिर्बहुकतराऽनर्द्धिश्च। तथा परपक्षक्षमणे आराधनेयत् बहुकतरा (विराधना) ॥ ५ ॥ यथोभयवायुविरहे सर्वा तरुसंपत् विनष्टेति। अनिमित्तोभयमत्सररूपेह विराधना तथा च ॥ ६ ॥ यथोभयवायुयोगे सर्वा समृद्धिर्वनस्य संजाता। तथोभयवचनसहने शिवमार्गाराधनोक्ता ॥ ७ ॥ तत् पूर्णश्रमणधर्माराधनाचित्तः सदा महासत्त्वः। सर्वेणापि क्रियमाणं सहेत सर्वमपि प्रतिकूलं ॥ ८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-११ परिसमाप्तम्

प्रत सूत्रांक [९१,९२]

दीप अनुक्रम [१४३--१४४]

द्वादशज्ञातविवरणम् ।

अधुना द्वादशं विधियते, अस्य चैवं सम्बन्धः–अनन्तरज्ञाते चारित्रधर्म्मस्य विराधकत्वमाराधकत्वं चोक्तमिह तु चारित्राराधकत्वं प्रकृतिमलीमसानामपि भव्यानां सद्गुरुपरिकर्म्मणातो भवतीत्युदकोदाहरणेनाभिधीयते, इत्येवं सम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयम० बारसमस्स णं नायज्झयणस्स के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नाम नयरी पुण्णभद्दे जितसत्तू राया धारिणी देवी, अदीणसत्तू नामं कुमारे जुवराया यावि होत्था, सुबुद्धी अमचे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए, तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था, मेयवसामंसरुहिरपूयपडलपोच्चडे मयगकलेवरसंछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं जाव फासेणं, से जहा नामए अहिमडेति वा गोमडेति वा जाव मयकुहियविणट्ठकिमिणवावण्णदुरभिगंधे किमिजालाउले संसत्ते असुइविगयबीभत्थदरिसणिज्जे, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं पण्णत्ते (सूत्रं ९१) तते णं से जितसत्तू राया अण्णदा कदाइ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभितिहिं सद्धिं भोयणवेलाए सुहासणवरगए विपुलं असणं ४ जाव विहरति, जिमितभु-

१२उदक-ज्ञाते परि-खोदकं सू. ९१ सुबु-द्धिकृतो जितशत्रो-र्बोधः सू. ९२

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- १२ "उदकज्ञात" आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [९१,९२]

दीप अनुक्रम [१४३--१४४]

त्तुत्तरायए जाव सुइभूते तंसि विपुलंसि असण ४ जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभितीए एवं वयासी–अहो णं देवा० ! इमे मणुण्णे असण ४ वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेते अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सविंदियगायपल्हायणिज्जे, तते णं ते बहवे ईसर जाव पभियओ जितसत्तुं एवं व०–तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वदह अहो णं इमे मणुण्णे असणं ४ वण्णेणं उववेए जाव पल्हायणिज्जे, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं व०–अहो णं सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असणं ४ जाव पल्हायणिज्जे, तए णं सुबुद्धी जितसत्तुस्सेयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं जितसत्तुणा सुबुद्धी दोचंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तुं रायं एवं वदासी–नो खलु सामी ! अहं एयंसि मणुण्णंसि असण ४ केइ विम्हए, एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, सुरूवावि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति दुरूवावि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति, सुब्भिगंधावि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति दुब्भिगंधावि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति सुहफासावि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति पओगवीससापरिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता, तते णं से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमातिक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो आढाति नो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परियाणई तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं से जितसत्तू अण्णदा कदाई ण्हाए आसखंधवरगते महया भडचडगरहआसवाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयइ। तते णं जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूते समाणे सएणं उत्तरिज्जगेणं आसगं पिहेइ, एगंतं अवक्कमति, ते बहवे ईसर जाव पभितिओ एवं वदासी–अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए ! अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा नामए अहिमडेति वा जाव अमणामतराए चेव, तए णं ते बहवे राईसरपभिइ जाव एवं व०–तहेव णं तं सामी ! जंणं तुब्भे एवं वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं ४ से जहा णामए अहिमडे इ वा जाव अमणामतराए चेव, तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिं अमचं एवं वदासी–अहो णं सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तए णं सुबुद्धी अमचे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमचं दोच्चंपि तच्चंपि एवं व०–अहो णं तं चेव, तए णं से सुबुद्धी अमचे जियसत्तुणा रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं व०–नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए, एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, तं चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता, तते णं जितसत्तु सुबुद्धिं एवं चेव, मा णं तुमं देवाणु० ! अप्पाणं च परं च तदुभयं वा बहूहि य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि, तते णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–अहो णं जितसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूते जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति, तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपेहेति २ पचतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडयपडए पगेण्हति २ संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि णिसंतपडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागए २ तं फरिहोदगं गेण्हावेति २ नवएसु घडएसु गालावेति २ नवएसु घडएसु पक्खिवावेति २ लंछियमुद्दिते करावेति २ सत्तरत्तं परिवसावेति २ दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेति नवएसु घडएसु पक्खिवावेति २ सज्जक्खारं पक्खिवावेह लंछियमुद्दिते कारवेति २ सत्तरत्तं परिवसावेति २ तच्चंपि णवएसु घडएसु जाव संवसावेति एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गलावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतराय विपरिवसावेमाणे २ सत्त २ रातिंदिया विपरिवसावेति, तते णं से फरिहोदए सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेते ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे, तते णं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवा० २ करयलंसि आसादेति २ तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं ४ आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिइज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं संभारेति २ जितसत्तुस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेति २ एवं व०–तुमं च णं देवाणु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्पिया ! इमं उदगरयणं गेण्हाहि २ जितसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेज्जासि, तते णं से पाणियघरिए सुबुद्धियस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २ तं उदगरयणं गिण्हाति २ जितसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेति, तते णं से जितसत्तू राया तं विपुलं असण ४ आसाएमाणे जाव विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरायावि य णं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जायविम्हए ते बहवे राईसर जाव एवं व०–अहो णं देवाणु० ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे तते णं बहवे राईसर जाव एवं व०–तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वदह जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे, तते णं जितसत्तू राया पाणियघरियं सद्दावेति २ एवं व०–एस णं तुब्भे देवा० ! उदगरयणे कओ आसादिते ?, तते णं से पाणियघरिए जितसत्तुं एवं वदासी–एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं अमचं सद्दावेति २ एवं व०–अहो णं सुबुद्धी केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे ५ जेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ?, तए णं तुमे देवा० ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं व०–एस णं सामी ! से फरिहोदए, तते णं से जितसत्तू सुबुद्धिं एवं व०–केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं व०–एवं खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमातिक्खमाणस्स ४ एतमट्ठं नो सद्दहह तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिते ६ अहो णं जितसत्तू संते जाव भावे नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोएति तं सेयं खलु ममं जियसत्तुस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [९१,९२]

दीप अनुक्रम [१४३--१४४]

रन्नो संताणं जाव सब्भूताणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एतमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपेहेमि २ तं चेव जाव पाणियघरियं सद्दावेमि २ एवं वदामि–तुमं णं देवाणु० ! उदगरतणं जितसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि, तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए । तते णं जितसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमचस्स एवमातिक्खमाणस्स ४ एतमट्ठं नो सद्दहति ३ असद्दहमाणे ३ अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति २ एवं वदासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदगसंहारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह तेऽवि तहेव संभारेंति २ जितसत्तुस्स उवणेंति, तते णं जितसत्तू राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएति आसातणिज्जं जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमचं सद्दावेति २ एवं व०–सुबुद्धी ! एए णं तुमे संता तच्चा जाव सब्भूया भावा कतो उवलद्धा ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वदासी–एए णं सामी ! मए संता जाव भावा जिणवयणातो उवलद्धा, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं एवं व०–तं इच्छामि णं देवाणु० ! तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुस्स विचित्तं केवलिपन्नत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तमाइक्खति जहा जीवा बज्झंति जाव पंच अणुव्वयातिं, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धिं अमचं एवं व०–सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं ३ जाव से जहेयं तुब्भे वयह, तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवा० ! मा पडि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बंधं०, तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमचस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ, तते णं जितसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति । तेणं कालेणं २ थेरागमणं जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छति, सुबुद्धी धम्मं सोचा जं णवरं जियसत्तुं आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुहं देवा० !, तते णं सुबुद्धी जेणेव जितसत्तू तेणेव उवा० २ एवं व०–एवं खलु सामी! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसन्ते सेऽविय धम्मे इच्छियपडिच्छिए ३, तए णं अहं सामी! संसारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए स० जाव पव्वइत्तए, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं एवं व०–अच्छासु ताव देवाणु० ! कतिवयातिं वासाइं उरालातिं जाव भुंजमाणा ततो पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं तस्स जितसत्तुस्स सुबुद्धीणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्स० पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालस वासाइं वीतिक्कंताइं तेणं कालेणं २ थेरागमणं तते णं जितसत्तू धम्मं सोचा एवं जं नवरं देवा० ! सुबुद्धिं आमंतेमि जेट्ठपुत्तं रज्जे ठवेमि, तए णं तुब्भं जाव पव्वयामि, अहासुहं, तते णं जितसत्तू जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ सुबुद्धिं सद्दावेति २ एवं वयासी–एवं खलु मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुमं णं किं करेसि ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं व०–जाव के० अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि, तं जति णं देवा० जाव पव्वयह गच्छह णं देवाणु० ! जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेहि २ सीयं दुरुहित्ताणं ममं अंतिए सीया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाव पाउब्भवेति, तते णं सुबुद्धीए सीया जाव पाउब्भवइ, तते णं जितसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचंति जाव पव्वतिए । तते णं जितसत्तू एक्कारस अंगाइं अहिज्जति बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे, तते णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अ० बहूणि वासाणि जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि (सूत्रं ९२) ॥१२॥ बारसमं नाअज्झयणं समत्तं ॥

सर्वं सुगमं नवरं 'फरिहोदए'त्ति परिखायाः–खातवलयस्योदकं परिखोदकं, चापीति समुच्चये, ततश्चंपादिकोऽर्थोऽभूद् एवं परिखोदकं चाभूदित्येवं, चः समुच्चये इति, 'मेये'त्यादि, अत्र मेदःप्रभृतीनां पटलेन–समूहेन 'पोच्चडं' विलीनं मृतकानां यथा वा द्विपदादीनां कडेवरैः संछन्नं यत्तत्तथा, अश्वादिकडेवरविशेषणायाह–मृतं–जीवविमुक्तमात्रं सद्यत् कुथितं–ईषत्दुर्गन्धमित्यर्थः तथा विनष्टं–उच्छूनत्वादिविकारवत् 'किमिणं'ति कतिपयकृमिवत् व्यापन्नं च–शकुन्यादिभक्षणाद्वीभत्सतां गतं सद्यदुरभिगन्धं–तीव्रतरदुष्टगन्धं तत्तथा 'सुब्भिसद्दावि'त्ति शुभशब्दा अपि, 'दुब्भिसद्दत्ताए'त्ति दुष्टशब्दतया, 'पओगवीससापरिणय'त्ति प्रयोगेण–जीवव्यापारेण विश्रसया च–स्वभावेन परिणताः–अवस्थान्तरमापन्ना ये ते तथा 'आसखंधवरगए'त्ति अश्व एव स्कन्धः–पुद्गलप्रचयरूपो वरः–प्रधानोऽश्वस्कन्धवरोऽथवा स्कन्धप्रदेशप्रत्यासत्तेः पृष्ठमपि स्कन्ध इति व्यपदिष्टमिति, 'असब्भावुब्भावणाहिं'ति असतां भावानां–वस्तूनां वस्तुधर्म्माणां वा या उद्भावना–उत्क्षेपणानि तास्तथा ताभिर्मिथ्या-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [९१,९२]

दीप अनुक्रम [१४३--१४४]

लोभिनिवेशेन च–विपर्यासाभिमानेन व्युद्ग्राहयन्–विविधत्वेनाधिक्येन च ग्राहयन् व्युत्पादयन्–अव्युत्पन्नमतिं व्युत्पन्नं कुर्वन् 'संते'इत्यादि सतो–विद्यमानान् 'तच्चे'ति तत्त्वरूपानैदंपर्यसमन्वितानित्यर्थः, अत एव तथ्यान्–सत्यान् , एतदेव व्यतिरेकेणोच्यते–अवितथान् न वितथानित्यर्थः, किमुक्तं भवति ?–सद्भूतान् सता प्रकारेण भूतान्–यातान् सद्भूतान् एकार्थौ वैते शब्दाः, 'अभिगमणट्ठयाए' अवगमलक्षणाय अर्थायेत्यर्थः, 'एतमट्ठं'ति एवं(तं)–पुद्गलानामपरापरपरिणामलक्षणमर्थं 'उवाइणावित्तए'त्ति उपादापयितुं ग्राहयितुमित्यर्थः, 'अंतरावणाउ'त्ति परिखोदकमार्गान्तरालवर्त्तिनो हट्टात् कुम्भकारसम्बन्धिन इत्यर्थः, 'सज्जखारं'ति सद्यो भस्म, 'अच्छे'त्यादि, अच्छं–निर्मलं, पथ्यं–आरोग्यकरं जात्यं–प्रधानमिति भावः, तनुकं–लघु सुजरमिति हृदयं, 'उदगसंभारणिज्जेहिं'ति उदकवासकैः–वालकमुस्तादिभिः संभारयति–संभृतं करोति । इहाध्ययने यद्यपि सूत्रेणोपनयो न दर्शितः तथाऽप्येवं द्रष्टव्यः–"मिच्छत्तमोहियमणा पावपसत्तावि पाणिणो विगुणा । फरिहोदगंव गुणिणो हवंति वरगुरुपसायाओ ॥ १ ॥"त्ति [मिथ्यात्वमोहितमनसः पापप्रसक्ता अपि प्राणिनो विगुणाः । परिखोदकमिव गुणिनो भवन्ति वरगुरुप्रसादात् ॥ १ ॥] द्वादशज्ञातविवरणं समाप्तम् ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-१२ परिसमाप्तम्

प्रत सूत्रांक [९३]

दीप अनुक्रम [१४५]

अथ त्रयोदशज्ञातविवरणम् ।

अथ त्रयोदशं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः–अनन्तराध्ययने संसर्गविशेषाद् गुणोत्कर्ष उक्तः, इह तु संसर्गविशेषाभावाद् गुणापकर्ष उच्यते, इत्येवं सम्बद्धमिदम्—

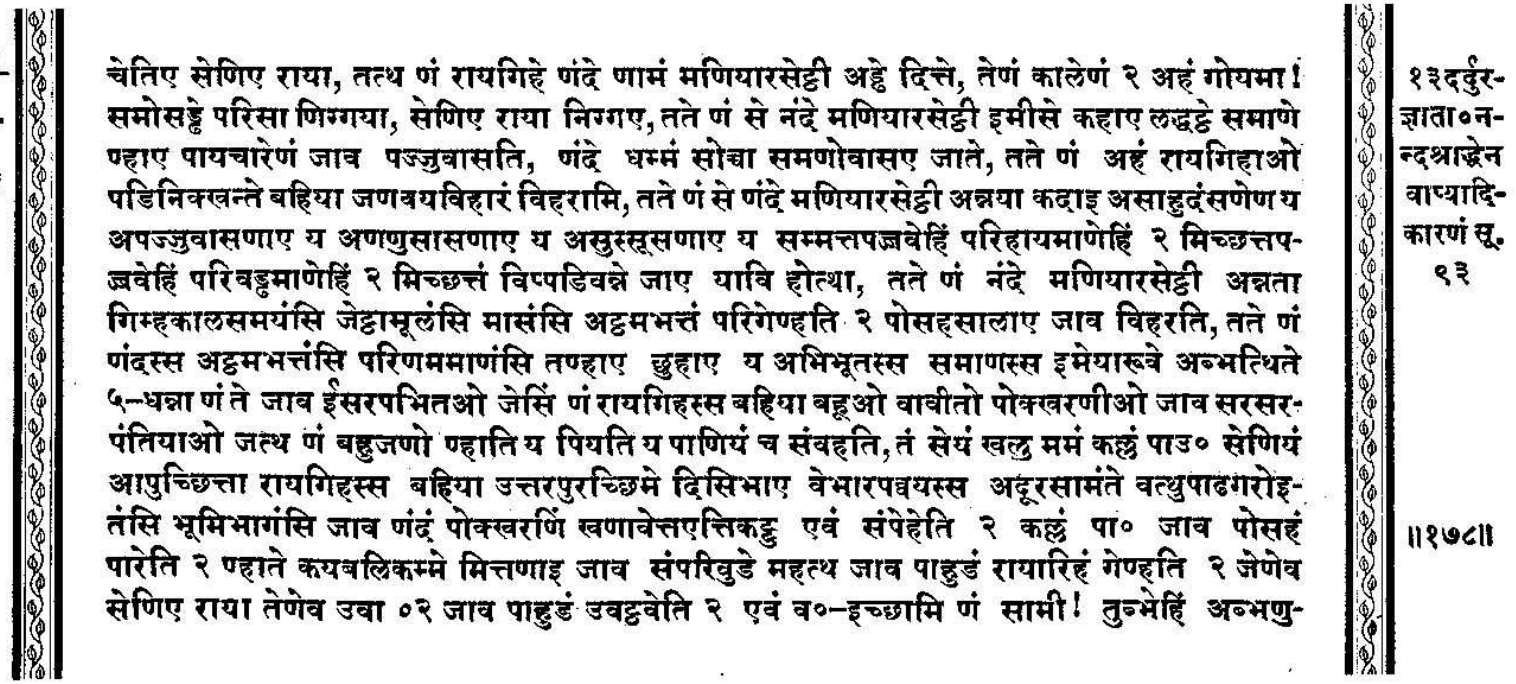
जति णं भंते ! समणेणं० बारसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तेरसमस्स णं भंते ! नाय० के० अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे गुणसिलए चेतिए, समोसरणं, परिसा निग्गया, तेणं कालेणं २ सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सुरियाभो जाव दिवाइं भोगभोगाइं भुंजमाणो विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं २ विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे २ जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगते जहा सुरियाभे। भंतेति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसति २ एवं व०–अहो णं भंते! दद्दुरे देवे महिड्ढिए २ दद्दुरस्स णं भंते! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० ?, गो० ! सरीरं गया सरीरं अणुपविट्ठा कूडागारदिट्ठंतो, दद्दुरेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी ३ किण्णा लद्धा जाव अभिसमन्नागया ?, एवं खलु गो० ! इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे गुणसिलए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- १३ "दर्दुरक" आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [९३]

दीप अनुक्रम [१४५]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥१७८॥

चेतिए सेणिए राया, तत्थ णं रायगिहे णंदे णामं मणियारसेट्ठी अड्ढे दित्ते, तेणं कालेणं २ अहं गोयमा! समोसड्ढे परिसा णिग्गया, सेणिए राया निग्गए, तते णं से नंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए पायचारेणं जाव पज्जुवासति, णंदे धम्मं सोच्चा समणोवासए जाते, तते णं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खन्ते बहिया जणवयविहारं विहरामि, तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया कदाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २ मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था, तते णं नंदे मणियारसेट्ठी अन्नता गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हति २ पोसहसालाए जाव विहरति, तते णं णंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए छुहाए य अभिभूतस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिते ५–धन्ना णं ते जाव ईसरपभितओ जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीतो पोक्खरणीओ जाव सरसरपंतियाओ जत्थ णं बहुजणो ण्हाति य पियति य पाणियं च संवहति, तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउ० सेणियं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइतंसि भूमिभागंसि जाव णंदं पोक्खरणिं खणावेत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं पा० जाव पोसहं पारेति २ ण्हाते कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव संपरिवुडे महत्थ जाव पाहुडं रायारिहं गेण्हति २ जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा ०२ जाव पाहुडं उवट्ठवेति २ एवं व०–इच्छामि णं सामी! तुब्भेहिं अब्भणु-

१३दर्दुर-ज्ञाता०नन्दश्राद्धेन वाप्यादिकारणं सू. ९३

॥१७८॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दर्दुरकदेवस्य पूर्वभव - नन्द-मणिकारश्रेष्ठिनः कथा

प्रत सूत्रांक [९३]

दीप अनुक्रम [१४५]

ज्ञाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तते णं णंदे सेणिएणं रन्ना अब्भणुण्णाते समाणे हट्ठ० रायगिहं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ वत्थुपाढयरोइयंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरणिं खणाविउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं सा णंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खणमाणा २ पोक्खरणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा समतीरा अणुपुव्वसुजायवप्पसीयलजला संछण्णपत्तबिसमुणाला बहुप्पलपउमकुमुदनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमंतमच्छकच्छभपयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया ४। तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी णंदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडे रोवावेति । तए णं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा य संवड्ढियमाणा य से वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरुंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति । तते णं नंदे पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं करावेति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं पा०, तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि चित्त० लिप्प० गंथिमवेढिमपूरिमसंघातिम० उवदंसिज्जमाणाइं २ चिट्ठंति, तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुयपच्चत्थुयाइं चिट्ठंति, तत्थ णं बहवे णडा य णट्टा य जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायरकम्मं करेमाणा विहरंति, रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहू जणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु संनिसन्नो य संतुयट्टो य सुणमाणो य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दर्दुरकदेवस्य पूर्वभव - नन्द-मणिकारश्रेष्ठिनः कथा

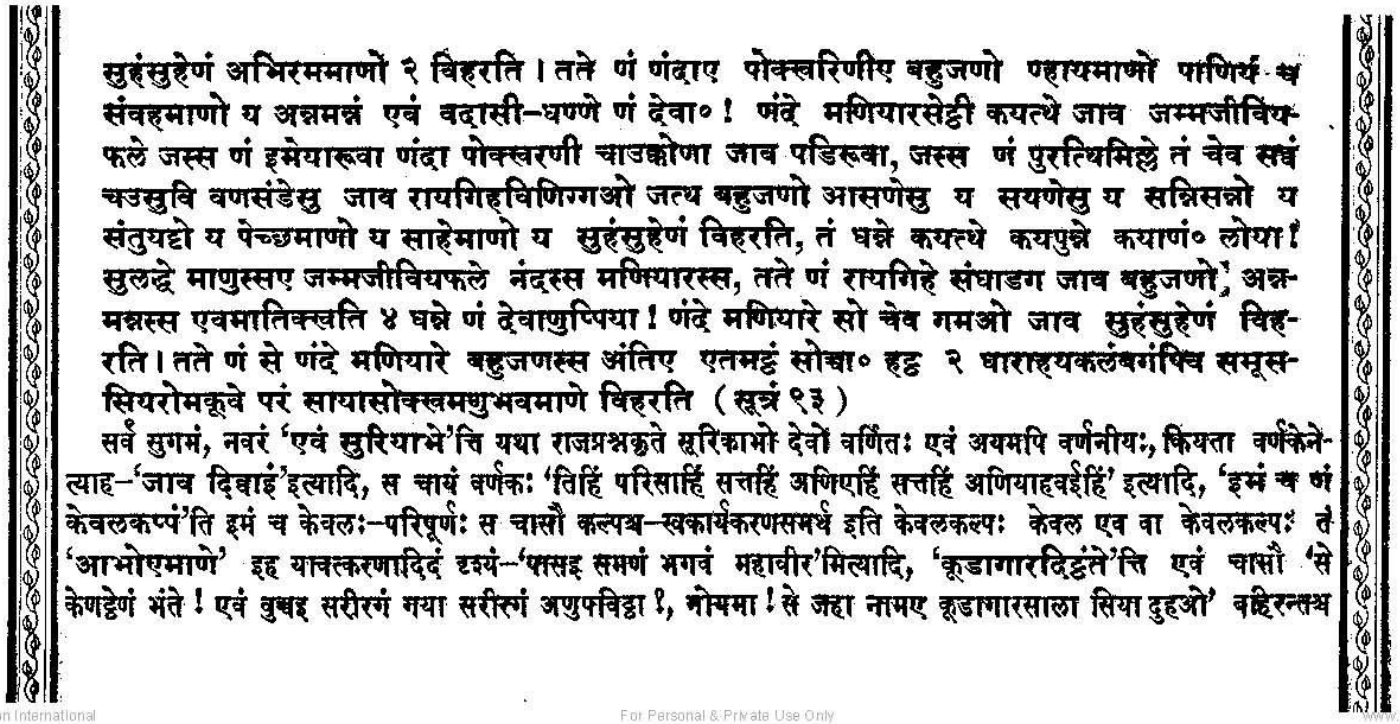
प्रत सूत्रांक [९३]

दीप अनुक्रम [१४५]

पेच्छमाणो य सोहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ, तते णं णंदे दाहिणिल्ले वणसंडे एगं महं महाणस-सालं करावेति अणेगखंभ० जाव रूवं तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असण ४ उव-क्खडेंति बहूणं समणमाहणअतिहीकिवणवणीमगाणं परिभाएमाणा २ विहरंति, तते णं णंदे मणि-यारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेगिच्छियसालं करेति, अणेगखंभसय० जाव रूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं वाहियाणं गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करेमाणा विहरंति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्न तेसिं बहूणं वाहियाण य रोगि० गिला० दुब्बला० ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडि-यारकम्मं करेमाणा विहरंति, तते णं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करेति, अणेगखं-भसत० जाव पडिरूवं, तत्थ णं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्त० बहूणं समणाण य अणाहाण य गिलाणाण य रोगि० दुब्ब० अलंकारियकम्मं करेमाणा २ विहरंति। तते णं तीए णंदाए पोक्खर-णीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करोडिया कारिया० तणहार० पत्त० कट्ठ० अप्पेगतिया ण्हायंति अप्पेगतिया पाणियं पियंति अप्पेगतिया पाणियं संवहंति अप्पे० विसज्जितसेय जल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा सुहंसुहेणं विहरंति। रायगिहविणिग्गओवि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरयअणेगसउणगणरुयरिभितसंकुलेसु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दर्दुरकदेवस्य पूर्वभव - नन्द-मणिकारश्रेष्ठिनः कथा



सुहंसुहेणं अभिरममाणो २ विहरति। तते णं णंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो पाणियं च संवहमाणो य अन्नमन्नं एवं वदासी–धण्णे णं देवा०! णंदे मणियारसेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्स णं इमेयारूवा णंदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सव्वं चउसुवि वणसंडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरति, तं धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणं० लोया! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स, तते णं रायगिहे संघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया! णंदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरति। तते णं से णंदे मणियारे बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा० हट्ठ २ धाराहयकलंबगंपिव समूससियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरति (सूत्रं ९३)

सर्वं सुगमं, नवरं 'एवं सुरियाभे'त्ति यथा राजप्रश्नकृते सूरिकाभो देवो वर्णितः एवं अयमपि वर्णनीयः, कियता वर्णकेनेत्याह–'जाव दिव्वाइं'इत्यादि, स चायं वर्णकः 'तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहवईहिं' इत्यादि, 'इमं च णं केवलकप्पं'ति इमं च केवलः–परिपूर्णः स चासौ कल्पश्च–स्वकार्यकरणसमर्थ इति केवलकल्पः केवल एव वा केवलकल्पः तं 'आभोएमाणे' इह यावत्करणादिदं दृश्यं–'पासइ समणं भगवं महावीर'मित्यादि, 'कूडागारदिट्ठंते'त्ति एवं चासौ 'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सरीरगं गया सरीरगं अणुपविट्ठा?, गोयमा! से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ' बहिरन्तश्च

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [९३]

दीप अनुक्रम [१४५]

'गुत्ता लित्ता' सावरणत्वेन गोमयाद्युपलेपनेन च, उभयतो गुप्तत्वमेवाह–गुप्ता–बहिः प्राकाराद्वृता गुप्तद्वारा–अन्तर्गुप्तेत्यर्थः, अथवा गुप्ता गुप्तद्वारा द्वाराणां केषांचित् स्थगितत्वात् केषांचिच्चास्थगितत्वादिति **'निवाया'** वायोरप्रवेशात् **'निवायगंभीरा'** किल महद् गृहं निवातं प्रायो न भवतीत्यत आह–निवातगम्भीरा निवातविशालेत्यर्थः, 'तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे जणसमूहे चिट्ठइ, तए णं से जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलयं वा वासवद्दलयं वा महावायं वा एज्जमाणं पासइ पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुपविसित्ताणं चिट्ठइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ सरीरगं गया सरीरगं अणुपविट्ठ'त्ति, **'असाधुदर्शनेने'**ति साधूनामदर्शनेनात एव **'अपर्युपासनया'** असेवनया **'अननुशासनया'** शिक्षाया अभावेन **'अशुश्रूषणया'** श्रवणेच्छाया अभावेन **'सम्यक्त्वपर्यवैः'** सम्यक्त्वरूपपरिणामविशेषैरेवं मिथ्यात्वपर्यवैरपि मिथ्यात्वं विशेषेण प्रतिपन्नो विप्रतिपन्नः, काष्ठकर्माणि–दारुमयपुत्रिकादिनिर्मापणानि एवं सर्वत्र, नवरं पुस्तं–वस्त्रं चित्रं लेप्यं च प्रसिद्धं ग्रन्थिमानि–यानि सूत्रेण ग्रथ्यन्ते मालावत् वेष्टिमानि–यानि वेष्टनतो निष्पाद्यन्ते पुष्पमालालम्बूसकवत् पूरिमाणि–यानि पूरणतो भवन्ति कनकादिप्रतिमावत् सङ्घातिमानि–सङ्घातनिष्पाद्यानि रथादिवत् उपदर्श्यमानानि लोकैरन्योऽन्यमित्यर्थः, **'तालायरकम्मं'**ति प्रेक्षणककर्मविशेषः, **'तेगिच्छियसालं'**ति चिकित्साशालं–अरोगशालां वैद्या–भिषग्वराः आयुर्वेदपाठकाः वैद्यपुत्राः–तत्पुत्रा एव **'जाणुय'**त्ति ज्ञायकाः शास्त्रानध्यायिनोऽपि शास्त्रज्ञप्रवृत्तिदर्शनेन रोगस्वरूपतः चिकित्सावेदिनः कुशलाः–स्ववितर्काचिकित्सादिप्रवीणाः, **'वाहियाणं'**ति व्याधितानां विशिष्टचित्तपीडावतां शोकादिविप्लुतचित्तानामित्यर्थः अथवा विशिष्टा आधिर्यस्मात् स व्याधिः–स्थिररोगः कुष्ठादिस्तद्वतां ग्लानानां–क्षीणहर्षाणामशक्तानामित्यर्थः रोगितानां–सञ्जातज्वरकुष्ठादिरो-

॥१८०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दर्दुरकदेवस्य पूर्वभव - नन्द-मणिकारश्रेष्ठिन: कथा

प्रत सूत्रांक [९३]

दीप अनुक्रम [१४५]

गाणामाशुघातिरोगाणां वा, 'ओसह'मित्यादि औषधं–एकद्रव्यरूपं भैषजं–द्रव्यसंयोगरूपं अथवा औषधं–एकानेकद्रव्यरूपं भैषजं तु–पथ्यं भक्तं तु–भोजनमात्रं प्रतिचारककर्म–प्रतिचारकलं 'अलंकारियसहं'ति नापितकर्मशालां, 'विसज्जिए'त्यादि विसृष्टस्वेदजल्लमलपरिश्रमनिद्राक्षुत्पिपासाः, तत्र जल्लोऽस्थिरो मालिन्यहेतुर्मलस्तु स एव कठिनीभूत इति, 'रायगिहे'त्यादि राजगृहविनिर्गतोऽपि चात्र बहुजनः 'किंते'त्ति किं तद् यत्करोति ?, उच्यते–जलरमणैः–जलक्रीडाभिः विविधमज्जनैः–बहुप्रकारस्नानैः कदलीनां च लतानां च गृहकैः कुसुमश्रस्तरैः अनेकशकुनिगणरुतैश्च रिभितैः–स्वरघोलनावद्भिर्मधुरैरित्यर्थः सङ्कुलानि यानि तानि तथा तेषु पुष्करणीवनखण्डलक्षणेषु पञ्चसु वस्तुष्विति प्रक्रमः, 'संतुयट्टो य'त्ति शयितः, 'साहेमाणो य'त्ति प्रतिपादयन् 'गमय'त्ति पूर्वोक्तः पाठः, 'सायासोक्खं'ति सातात्–सातवेदनीयोदयात् सौख्यं–सुखं ॥

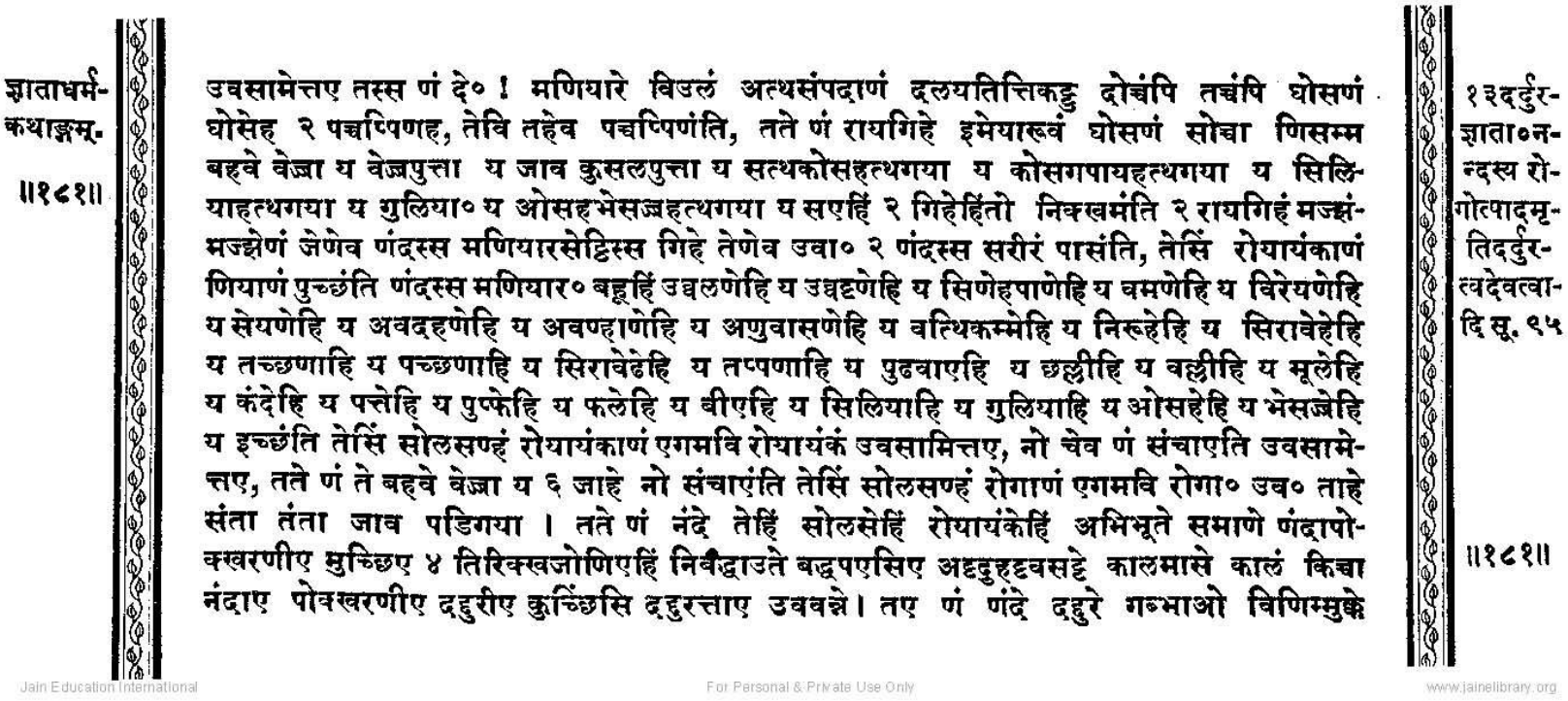
ततेणं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया तं०–"सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे ६। अरिसा अजीरए दिट्ठिमुद्धसूले अगारए" ॥१॥ अच्छिवेयणा कन्नवेयणा कंडू दउदरे कोढे ? ६। ततेणं से णंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं व०–एवं खलु देवाणु० ! णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूता तं०–'सासे जाव कोढे' तं जो णं इच्छति देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा २ कुसलो वा २ नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दर्दुरकदेवस्य पूर्वभव - नन्द-मणिकारश्रेष्ठिनः कथा

प्रत सूत्रांक [९५] + गाथा

दीप अनुक्रम [१४६--१४७]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥१८१॥

उवसामेत्तए तस्स णं दे० ! मणियारे विउलं अत्थसंपदाणं दलयतित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह २ पच्चप्पिणह, तेवि तहेव पच्चप्पिणंति, तते णं रायगिहे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य कोसगपायहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलिया० य ओसहभेसज्जहत्थगया य सएहिं २ गिहेहिंतो निक्खमंति २ रायगिहं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवा० २ णंदस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोयायंकाणं णियाणं पुच्छंति णंदस्स मणियार० बहूहिं उव्वलणेहि य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य सिरावेढेहि य तप्पणाहि य पुढवाएहि य छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए, तते णं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगाणं एगमवि रोगा० उव० ताहे संता तंता जाव पडिगया । तते णं नंदे तेहिं सोलसेहिं रोयायंकेहिं अभिभूते समाणे णंदापोक्खरणीए मुच्छिए ४ तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउते बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववन्ने। तए णं णंदे दद्दुरे गब्भाओ विणिम्मुक्के

१३दर्दुर-ज्ञाता०न-न्दस्य रो-गोत्पादमृ-तिदर्दुर-त्वदेवत्वा-दि सू. ९५

॥१८१॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

*** अत्र मूल-संपादने सूत्रक्रमांकने एकः मुद्रण-दोषः वर्तते–सूत्र ९४ स्थाने सूत्र ९५ मुद्रितं (सूत्र-९४ क्रम भूल गये है और सूत्र ९५ लिख दिया है)

दर्दुरकदेवस्य पूर्वभव - नन्द-मणिकारश्रेष्ठिनः कथा एवं नन्दस्य मृत्युः, दर्दुरकत्वेन नन्दस्य उत्पत्तिः

प्रत सूत्रांक [९५] + गाथा

दीप अनुक्रम [१४६--१४७]

समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विहरति, तते णं णंदाए पोक्खरणीए बहू जणे ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवहमाणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्स णं इमेयारूवा णंदा पुक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीवियफले, तते णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए ६–से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसंतपुव्वेत्तिकट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजातिं सम्मं समागच्छति, तते णं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५–एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नगरे णंदे णामं मणियारे अड्ढे । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं म० समोसढे, तए णं समणस्स भगवओ० अंतिए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए जाव पडिवन्ने, तए णं अहं अन्नया कयाई असाहुदंसणेण य जाव मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने, तए णं अहं अन्नया कयाई गिम्हे कालसमयंसि जाव उपसंपज्जित्ता णं विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदापुक्ख० वणसंडा सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पु० दद्दुरत्ताए उववन्ने, तं अहो णं अहं अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवन्नातिं पंचाणुव्वयातिं० उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेति २ पुव्वपडिवन्नातिं पंचाणुव्वयाइं० आरुहेति २ इमेयारूवं०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नन्द-मणिकारस्य दर्दुरक-जन्मस्य घटना (नन्द मणिकार का दर्दुरकरूपे जन्म और वो दर्दुरक के व्रत-ग्रहण कि अभूतपूर्व घटना)

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [९५] + गाथा

दीप अनुक्रम [१४६-१४७]

अभिग्गहं अभिगिण्हति–कप्पइ मे जावजीवं छट्ठंछट्ठेणं अणि० अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्सविय णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं एहाणोदएणं उम्मद्दणोलोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हति, जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरति तेणं कालेणं २ अहं गो० ! गुणसिलए समोसढे परिसा निग्गया, तए णं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हाय० ३ अन्नमन्नं० जाव समणे ३ इहेव गुणसिलए०, तं गच्छामो णं देवाणु० समणं भगवं० वंदामो जाव पज्जुवासामो एयं मे इह भवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ, तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म० अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–एवं खलु समणे० तं गच्छामि णं वंदामि० एवं संपेहेति २ णंदाओ पुक्खरणीओ सणियं २ उत्तरइ जेणेव रायमग्गे तेणेव उवा० २ ताए उक्किट्ठाए ५ दद्दुरगईए वीतिवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, इमं च णं सेणिए राया भंभसारे ण्हाए कयकोउय० जाव सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवरचामरा० हयगयरह० महया भडचडगर० चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदते हव्वमागच्छति, तते णं से दद्दुरे सेणियस्स रन्नो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समणे अंतनिग्घातिए कते यावि होत्था, तते णं से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्जमितिकट्टु एगंतमवक्कमति० करयलपरिग्गहियं० नमोऽत्थु

१३दर्दुर-ज्ञाता०न-न्दस्य रो-गोत्पादमृ-तिदर्दुर-त्वदेवत्वा-दि सू. ९५

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नन्द-मणिकारस्य दर्दुरक-जन्मस्य घटना (नन्द मणिकार का दर्दुरकरूपे जन्म और वो दर्दुरक के व्रत-ग्रहण कि अभूतपूर्व घटना)

प्रत सूत्रांक [९५] + गाथा

दीप अनुक्रम [१४६--१४७]

णं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थु णं मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स पुव्विंपिय णं मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए थूलए पाणातिवाए पच्चक्खाए जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयाणिंपि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परि० पच्च० जावजीवं सव्वं असण ४ पच्च० जावजीवं जंपिय इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव मा फुसंतु एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु, तए णं से दद्दुरे कालमासे कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववन्ने,एवं खलु गो० ! दद्दुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा ३। दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स केवतिकालं ठिई पण्णत्ता ?, गो० ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पं०, से णं दद्दुरे देवे० महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झि०जाव अंतं करेहिइ य। एवं खलु समणेणं भग० महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ॥ (सूत्रं ९५) तेरसमं णायज्झयणं समत्तं ॥ १३ ॥

'सासे'त्यादि श्लोकः प्रतीतार्थः, नवरं 'अजीरए'त्ति आहारापरिणतिः 'दिट्ठीमुद्धसूले'त्ति दृष्टिशूलं–नेत्रशूलं मूर्द्धशूलं–मस्तकशूलं, 'अकारए'त्ति भक्तद्वेषः 'अच्छिवेयणे'त्यादि श्लोकातिरिक्तं, 'कंडु'त्ति खर्जुः, 'दउदरे'त्ति दकोदरं जलोदरमित्यर्थः, 'सत्थकोसे'त्यादि, शस्त्रकोशः–क्षुरनखरदनादिभाजनं स हस्ते गतः–स्थितो येषां ते तथा, एवं सर्वत्र, नवरं शिलिकाः–किराततिक्तकादितृणरूपाः प्रततपाषाणरूपा वा शस्त्रतीक्ष्णीकरणार्थाः, तथा गुटिका–द्रव्यसंयोगनिष्पादितगोलिकाः ओषधभेषजे तथैव 'उव्वलणेही'त्यादि उद्वेलनानि–देहोपलेपनविशेषाः यानि देहाद्वस्त्रामर्शनेनापनीयमा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नन्द-मणिकारस्य दर्दुरक-जन्मस्य घटना (नन्द मणिकार का दर्दुरकरूपे जन्म और वो दर्दुरक के व्रत-ग्रहण कि अभूतपूर्व घटना)

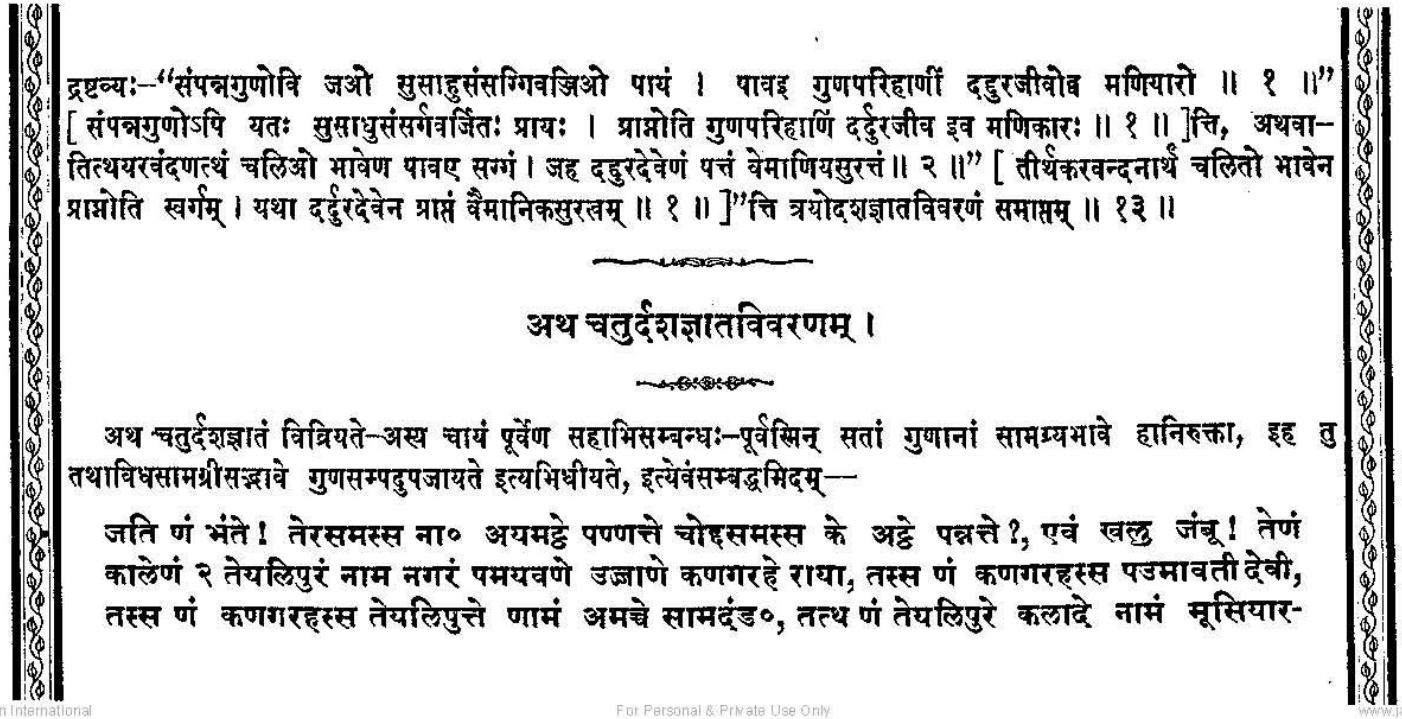
प्रत सूत्रांक [९५] + गाथा

दीप अनुक्रम [१४६--१४७]

नानि मलादिकमादायोद्वलंतीति उद्वर्त्तनानि–तान्येव विशेषस्तु लोकरूढिसमवसेय इति, स्नेहपानानि–द्रव्यविशेषपक्वघृतादिपानानि वमनानि च प्रसिद्धानि विरेचनानि–अधोविरेकाः स्वेदनानि–सप्तधान्यकादिभिः अवदहनानि–दम्भनानि अपस्नानानि–स्नेहापनयनहेतुद्रव्यसंस्कृतजलेन स्नानानि अनुवासनाः–चर्मयन्त्रप्रयोगेणापानेन जठरे तैलविशेषप्रवेशनानि बस्तिकर्माणि–चर्मवेष्टनप्रयोगेण शिरःप्रभृतीनां स्नेहपूरणानि गुदे वा वर्त्त्यादिक्षेपणानि निरुहा–अनुवासना एव केवलं द्रव्यकृतो विशेषः शिरोवेधा–नाडीवेधनानि रुधिरमोक्षणानीत्यर्थः तक्षणानि–त्वचः क्षुरप्रादिना तनूकरणानि प्रक्षणानि–ईखानि त्वचो विदारणानि शिरोबस्तयः–शिरसि बद्धस्य चर्मकोशस्य संस्कृततैलापूरलक्षणाः, प्रागुक्तानि बस्तिकर्माणि सामान्यानि अनुवासनानिरुहशिरोबस्तयस्तु तद्भेदाः, तर्प्पणानि–स्नेहद्रव्यविशेषैर्बृंहणानि पुटपाकाः–कुष्ठिकानां कणिकावेष्टितानामग्निना पचनानि अथवा पुटपाकाः–पाकविशेषनिष्पन्ना औषधविशेषाः छल्लयो–रोहिणीप्रभृतयः वल्ल्यो–गुडूचीप्रभृतयः कन्दादीनि प्रसिद्धानि, एतैरिच्छन्ति एकमपि रोगमुपशमयितुमिति, 'निबद्धाउए'त्ति प्रकृतिस्थित्यनुभागबन्धापेक्षया 'बंधपएसिए'त्ति प्रदेशबन्धापेक्षयेति 'अंतनिग्घाइए'त्ति निर्घातितान्तः, 'सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि' इत्यनेन यद्यपि सर्वग्रहणं तथापि तिरश्चां देशविरतिरेव, इहार्थे गाथे–"तिरियाणं चारित्तं निवारियं अह य तो पुणो तेसिं। सुबइ बहुयाणंपिहु महव्वयारोहणं समए ॥१॥ न महव्वयसब्भावेवि चरणपरिणामसम्भवो तेसिं। न बहुगुणाणंपि जओ केवलसंभूइपरिणामो ॥ २ ॥" इति [तिरश्चां चारित्रं निवारितं अथ च तदा पुनस्तेषां श्रूयते बहूनामपि महाव्रतारोपणं समये ॥ १ ॥ न महाव्रतसद्भावेऽपि चरणपरिणामसंभवस्तेषां। बहुगुणानामपि न यतः केवलसंभूतिपरिणामः ॥ २ ॥] इह यद्यपि सूत्रे उपनयो नोक्तः तथाऽप्येवं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नन्द-मणिकारस्य दर्दुरक-जन्मस्य घटना (नन्द मणिकार का दर्दुरकरूपे जन्म और वो दर्दुरक के व्रत-ग्रहण कि अभूतपूर्व घटना)



द्रष्टव्यः–"संपन्नगुणोवि जओ सुसाहुसंसग्गिवज्जिओ पायं । पावइ गुणपरिहाणीं दद्दुरजीवोव्व मणियारो ॥ १ ॥" [संपन्नगुणोऽपि यतः सुसाधुसंसर्गवर्जितः प्रायः । प्राप्नोति गुणपरिहाणिं दर्दुरजीव इव मणिकारः ॥ १ ॥]त्ति, अथवा–तित्थयरवंदणत्थं चलिओ भावेण पावए सग्गं । जह दद्दुरदेवेणं पत्तं वेमाणियसुरत्तं ॥ २ ॥" [तीर्थकरवन्दनार्थं चलितो भावेन प्राप्नोति स्वर्गम् । यथा दर्दुरदेवेन प्राप्तं वैमानिकसुरत्वम् ॥ १ ॥]"त्ति त्रयोदशज्ञातविवरणं समाप्तम् ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशज्ञातविवरणम् ।

अथ चतुर्दशज्ञातं विव्रियते–अस्य चायं पूर्वेण सहाभिसम्बन्धः–पूर्वस्मिन् सतां गुणानां सामग्र्यभावे हानिरुक्ता, इह तु तथाविधसामग्रीसद्भावे गुणसम्पदुपजायते इत्यभिधीयते, इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते ! तेरसमस्स ना० अयमट्ठे पण्णत्ते चोद्दसमस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया, तस्स णं कणगरहस्स पउमावती देवी, तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णामं अमचे सामदंड०, तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियार-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

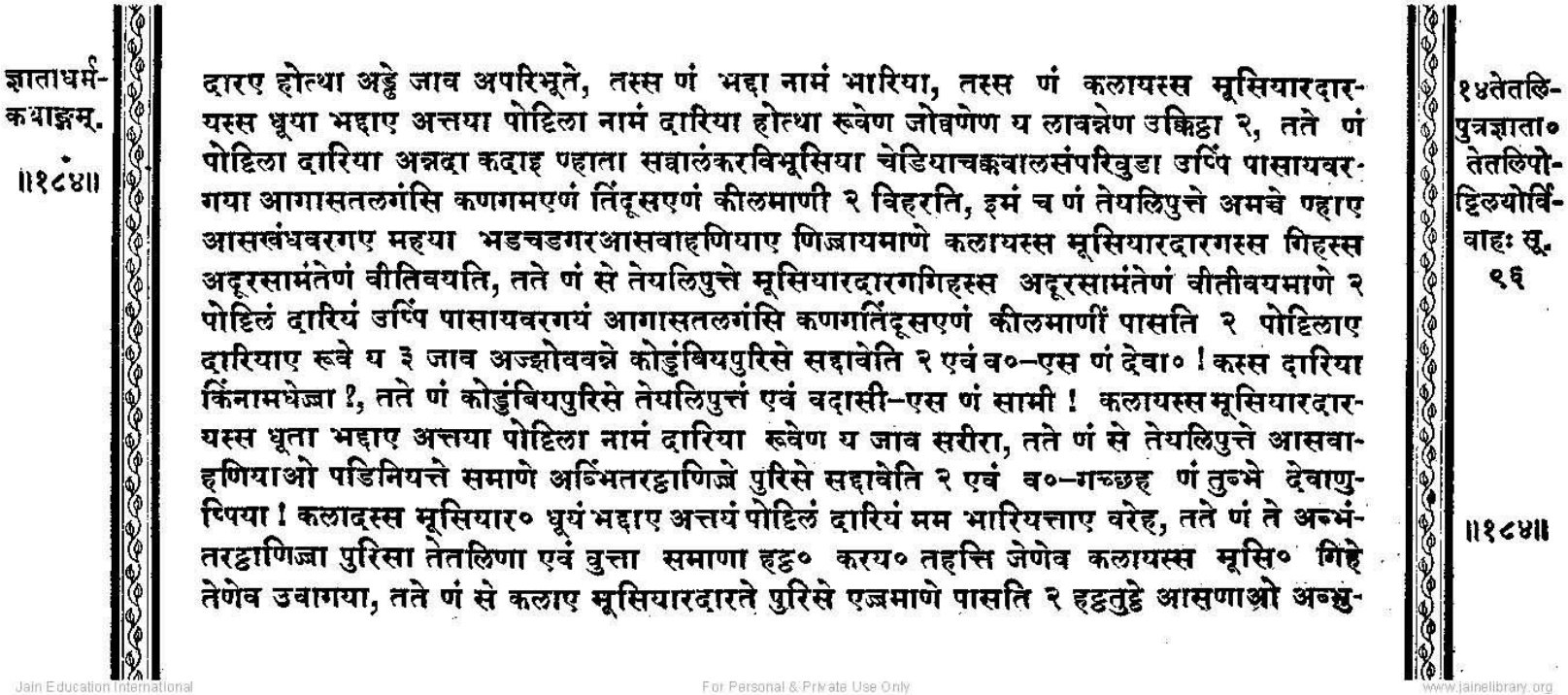
अत्र अध्ययनं-१३ परिसमाप्तम्

अथ अध्ययनं- १४ "तैतलीपुत्र" आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [९६-९९]

दीप अनुक्रम [१४८--१५१]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१८४॥

दारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूते, तस्स णं भद्दा नामं भारिया, तस्स णं कलायस्स मूसियारदार-यस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया होत्था रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण उक्किट्ठा २, तते णं पोट्टिला दारिया अन्नदा कदाइ ण्हाता सव्वालंकरविभूसिया चेडियाचक्कवालसंपरिवुडा उप्पिं पासायवर-गया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी २ विहरति, इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगरआसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतिवयति, तते णं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगगिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणे २ पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणीं पासति २ पोट्टिलाए दारियाए रूवे य ३ जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–एस णं देवा० ! कस्स दारिया किंनामधेज्जा ?, तते णं कोडुंबियपुरिसे तेयलिपुत्तं एवं वदासी–एस णं सामी ! कलायस्स मूसियारदार-यस्स धूता भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जाव सरीरा, तते णं से तेयलिपुत्ते आसवा-हणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवाणु-प्पिया ! कलादस्स मूसियार० धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह, तते णं ते अब्भं-तरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ० करय० तहत्ति जेणेव कलायस्स मूसि० गिहे तेणेव उवागया, तते णं से कलाए मूसियारदारते पुरिसे एज्जमाणे पासति २ हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भु-

१४तेतलि-पुत्रज्ञाता० तेतलिपो-ट्टिलयोर्वि-वाहः सू. ९६

॥१८४॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा

प्रत सूत्रांक [९६-९९]

दीप अनुक्रम [१४८--१५१]



ट्ठेति २ सत्तट्ठपदातिं अणुगच्छति २ आसणेणं उवणिमंतेति २ आसत्थे वीसत्थे सुहासणवर-
गए एवं व०–संदिसंतु णं देवाणु०! किमागमणपओयणं ?, तते णं ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा
कलायमूसिय० एवं व०–अम्हे णं देवाणु०! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स
भारियत्ताए वरेमो, तं जति णं जाणसि देवाणु० जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा
संजोगो ता दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, ता भण देवाणु०! किं दलामो सुक्कं ?, तते
णं कलाए मूसियारदारए ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वदासी–एस चेव णं दे०! मम सुंके जन्नं
तेतलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेणं अणुग्गहं करेति, ते ठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असण ४ पुप्फवत्थ
जाव मल्लालंकारेणं सक्कारेइ स० २ पडिविसज्जेइ, तए णं कलायस्सवि मूसि० गिहाओ पडिनि० २
जेणेव तेयलिपुत्ते अ० तेणेव उवा० २ तेयलिपु० एयमट्ठं निवेयंति, तते णं कलादे मूसियदारए अन्नया
कयाइं सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारभूसियं सीयं दुरूहइ२त्ता मित्तणाइ-
संपरिवुडे सातो गिहातो पडिनिक्खमति २ सविड्ढीए तेयलीपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेतलिस्स
गिहे तेणेव उवा० २ पोट्टिलं दारियं तेतलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयति, तते णं तेतलिपुत्ते
पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासति २ पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरूहति २ सेतापीतएहिं कलसेहिं
अप्पाणं मज्जावेति २ अग्गिहोमं करेति २ पाणिग्गहणं करेति २ पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाति जाव



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा

प्रत सूत्रांक [९६-९९]

दीप अनुक्रम [१४८--१५१]

परिजणं विपुलेणं असणपाणखातिमसातिमेणं पुप्फ जाव पडिविसज्जेति, तते णं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरति(सूत्रं९६) तते णं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिते ४ जाते २ पुत्ते वियंगेति, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदति अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदति एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठएवि कन्नसक्कुलीएवि नासापुडाइं फालेति अंगमंगाइं वियंगेति, तते णं तीसे पउमावतीए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावर० अयमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था ४–एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेति जाव अंगमंगाइं वियंगेति, तं जति अहं दारयं पयायामि सेयं खलु ममं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ तेयलिपुत्तं अमचं सद्दावेति २ एवं व०–एवं खलु देवा० ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेति तं जति णं अहं देवाणु० ! दारगं पयायामि तते णं तुमं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि, तते णं से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणे भविस्सति, तते णं से तेयलिपुत्ते पउमावतीए एयमट्ठं पडिसुणेति २ पडिगए, तते णं पउमावतीय देवीए पोट्टिलाय अमचीए सयमेव गब्भं गेण्हति सयमेव परिवहति, तते णं सा पउमावती नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया, जं रयणिं च णं पउमावती दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिलावि अमची नवण्हं मासाणं विणिहायमा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा, राजकुमार कनकध्वजस्य जन्म

वन्नं दारियं पयाया, तते णं सा पउमावती देवी अम्मधाइं सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुमे अम्मो! तेयलिगिहे तेयलिपु० रहस्सियगं चेव सद्दावेह, तते णं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेति २ अंतेउरस्स अवदारेणं निग्गच्छति २ जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवा० २ करयल जाव एवं वदासी–एवं खलु देवा० ! पउमावती देवी सद्दावेति, तते णं तेयलिपुत्ते अम्मधातीए अंतिए एयमट्ठं सोचा हट्ठ २ अम्मधातीए सद्धिं सातो गिहाओ णिग्गच्छति २ अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्सियं चेव अणुपविसति २ जेणेव पउमावती तेणेव उवाग० करयल० एवं व०–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायवं ?, तते णं पउमावती तेयलीपुत्तं एवं व०–एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेति अहं च णं देवा० ! दारगं पयाया तं तुमं णं देवाणु० ! तं दारगं गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्स-तित्तिकट्टु तेयलिपुत्तं दलयति, तते णं तेयलिपुत्ते पउमावतीए हत्थातो दारगं गेण्हति उत्तरिज्जेणं पिहेति २ अंतेउरस्स रहस्सियं अवदारेणं निग्गच्छति २ जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवा० २ पोट्टिलं एवं व०–एवं खलु देवाणु० ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेति अयं च णं दारए कणगर-हस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए तेणं तुमं देवा० ! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवेहि य संवड्ढेहि य तते णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावतीए य आहारे भविस्सतित्तिकट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवति पोट्टिलाओ पासाओ तं विणिहायमावन्नियं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा

दारियं गेण्हति २ उत्तरिज्जेणं पिहेति २ अंतेउरस्स अवदारेणं अणुपविसति २ जेणेव पउमावती देवी तेणेव उवा० २ पउमावतीए देवीए पासे ठावेति २ जाव पडिनिग्गते। तते णं तीसे पउमावतीए अंग-पडियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नियं च दारियं पयायं पासंति२ त्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव० २ त्ता करयल० एवं व०–एवं खलु सामी! पउमावती देवी महल्लियं दारियं पयाया, तते णं कणगरहे राया तीसे महल्लियाए दारियाए नीहरणं करेति बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं० कालेणं विगयसोए जाते, तते णं से तेतलिपुत्ते कल्ले कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–खिप्पामेव चारगसो० जाव ठितिपडियं जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउ णं दारए नामेणं कणग-ज्झए जाव भोगसमत्थे जाते (सूत्रं ९७) तते णं सा पोट्टिला अन्नया कयाई तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था णेच्छइ य तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोत्तमवि सवणयाए, किं पुण दरिसणं वा परिभोगं वा ?, तते णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्त० इमेयारूवे ५ जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तेयलिपुत्ते मम नामं जाव परिभोगं वा ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति, तए णं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासति २ एवं व–मा णं तुमं दे०! ओहयमणसं० तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असण ४ उवक्ख-डावेहि २ बहूणं समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि, तते णं सा पोट्टिला

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	तेतलिपुत्रस्य कथा, तेतलि-पत्नी पोट्टीलाया: दीक्षा, संयमजीवनं, देवत्व-प्राप्ति:

प्रत सूत्रांक [९६-९९]

दीप अनुक्रम [१४८--१५१]

तेयलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ० तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति २ कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असण ४ जाव दवावेमाणी विहरति (सूत्रं९८) तेणं कालेणं२ सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमिताओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवा० २ अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति २ संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति, तते णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति जाव अडमाणीओ तेतलिस्स गिहं अणुप-विट्ठाओ, तते णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासति २ हट्ठ० आसणाओ अब्भुट्ठेति २ वंदति नमंसति २ विपुलं असण ४ पडिलाभेति २ एवं व०–एवं खलु अहं अज्जाओ ! तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसी इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव दंसणं वा परिभोगं वा०, तं तुब्भे णं अज्जातो सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह बहूणं राईसर जाव गिहातिं अणुपविसह तं अत्थि याइं भे अज्जाओ ! केइ कहंचि चुन्नजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा आभिओ-गिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइ० मूले कंदे छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे जेणाहं तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि, तते णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कन्ने ठाइंति २ पोट्टिलं एवं वदासी–अम्हे णं देवा० ! समणीओ निग्गंथीओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारं कन्नेहिंवि णिसामेत्तए, किमंग पुण उवदिसित्तए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा, तेतलि-पत्नी पोट्टीलाया: बोध:, श्रावक्त्वं, दीक्षा, संयमजीवनं, देवत्व-प्राप्ति:

प्रत सूत्रांक [९६-९९]

दीप अनुक्रम [१४८--१५१]

वा आयरित्तए वा?, अम्हे णं तव देवा० ! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो, तते णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं व०–इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए, तते णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्मं परिकहेंति, तते णं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ० एवं व०–सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वयाइं जाव धम्मं पडिवज्जित्तए, अहासुहं, तए णं सा पोट्टिला ताहिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव धम्मं पडिवज्जइ ताओ अज्जाओ वंदति नमंसति २ पडिविसज्जेति, तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ (सूत्रं ९९)

सर्वं सुगमं, नवरं 'कलाए'त्ति कलादो नाम्ना मूषिकारदारक इति पितृव्यपदेशेनेति, 'अब्भिंतरठाणिज्जे'त्ति आभ्यन्तरानप्यानित्यर्थः, 'वियंगेइ'त्ति व्यङ्गयति विगतकर्णनासाद्यङ्गान् करोतीत्यर्थः, 'विइंतेति'त्ति विकृतन्तति छिनत्तीत्यर्थः, 'संरक्खमाणीय'त्ति संरक्षन्त्याः आपदः सङ्गोपयन्त्याः प्रच्छादनतः 'भिक्खाभायणे'त्ति भिक्षाभाजनमिव भिक्षाभाजनं तदस्माकं भिक्षोरिव निर्वाहकारणमित्यर्थः, 'पढमाए पोरुसीए सज्झाय'मित्यादौ यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं–'बीयाए पोरिसीए झाणं झियायइ तईयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ भायणवत्थाणि पडिलेहेइ भायणाणि पमज्जइ भायणाणि उग्गाहेइ २ जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छन्ति२ सुव्वयाओ अज्जाओ वंदन्ति नमंसन्ति२एवं वयासी–इच्छामो णं तुब्भेहिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा, तेतलि-पत्नी पोट्टीलाया: बोध:, श्रावक्त्वं, दीक्षा, संयमजीवनं, देवत्व-प्राप्ति:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [९६-९९]

दीप अनुक्रम [१४८--१५१]

अब्भणुन्नाए तेयलिपुरे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं, तए णं ताओ अज्जयाओ सुव्वयाहिं अज्जाहिं अब्भणुण्णायाओ समाणीओ सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिस्सयाओ पडिनिक्खमंति अतुरियमचवलमसंभंताए गतीए जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणीओ तेयलिपुरे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खायरियं अडमाणीउ'त्ति गृहेषु समुदानं–भिक्षा गृहसमुदानं तस्मै गृहसमुदानाय भिक्षाचर्या–भिक्षानिमित्तं विचरणं अटन्त्यः–कुर्वाणाः, 'अत्थि याइं मे'त्ति आइंति–देशभाषायां मेत्ति–भवतीनां, 'चुण्णजोए'त्ति द्रव्यचूर्णानां योगः स्तम्भनादिकर्मकारी, 'कम्मणजोए'त्ति कुष्ठादिरोगहेतुः, 'कम्माजोए'त्ति काम्ययोगः कमनीयताहेतुः, 'हियउड्डावणे'त्ति हृदयोड्डापनं चित्ताकर्षणहेतुः 'काउड्डावणे'त्ति कायाकर्षणहेतुः 'आभिओगिए'त्ति पराभिभवनहेतुः 'वसीकरणे'त्ति वश्यताहेतुः 'कोउयकम्मे'त्ति सौभाग्यनिमित्तं स्नपनादि 'भूइकम्मे'त्ति मन्त्राभिसंस्कृतभूतिदानं ।

तते णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालस० कुडुंबजागरियं० अयमेयारूवे अब्भत्थिते० एवं खलु अहं तेतलि० पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वत्तित्तए, एवं संपेहेति २ कल्लं पाउ० जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा० २ करयलपरि० एवं व०–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तते णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं व०–एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा, तेतलि-पत्नी पोट्टीलायाः बोधः, श्रावक्त्वं, दीक्षा, संयमजीवनं, देवत्व-प्राप्तिः

प्रत सूत्रांक [१००--१०१]

दीप अनुक्रम [१५२--१५३]



अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि तं जति णं तुमं देवा० ! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहिहि तोऽहं विसज्जेमि, अह णं तुमं ममं ण संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि, तते णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं तेयलिपुत्ते विपुलं असण ४ उवक्खडावेति २ मित्तणातिजावआमंतेइ २ जाव सम्माणेइ २ पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहणीयं सिअं दुरूहित्ता मित्तणाति जाव परिवुडे सविड्ढिए जाव रवेणं तेतलीपुत्तस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवा०२ सीयाओ पच्चोरुहति २ पोट्टिलं पुरतो कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छति२ वंदति नमंसति२ एवं व०–एवं खलु देवा० ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एस णं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वतित्तए पडिच्छंतु णं देवा० ! सिस्सिणिभिक्खं दलयामि, अहासुहं मा०प०,तते णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ०उत्तरपुर०सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति २सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ२वंदति नमंसति२एवं व०–आलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारस अंगाइं बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ २ मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अण० आलोइयपडि०समाहिं पत्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना (सूत्रं १००) तते णं से कणगरहे राया अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तते णं राईसर जाव णीहरणं करेंति २ अन्नमन्नं एवं व०–एवं खलु देवाणु० ! कणगरहे राया रज्जे य जाव



॥१८८॥

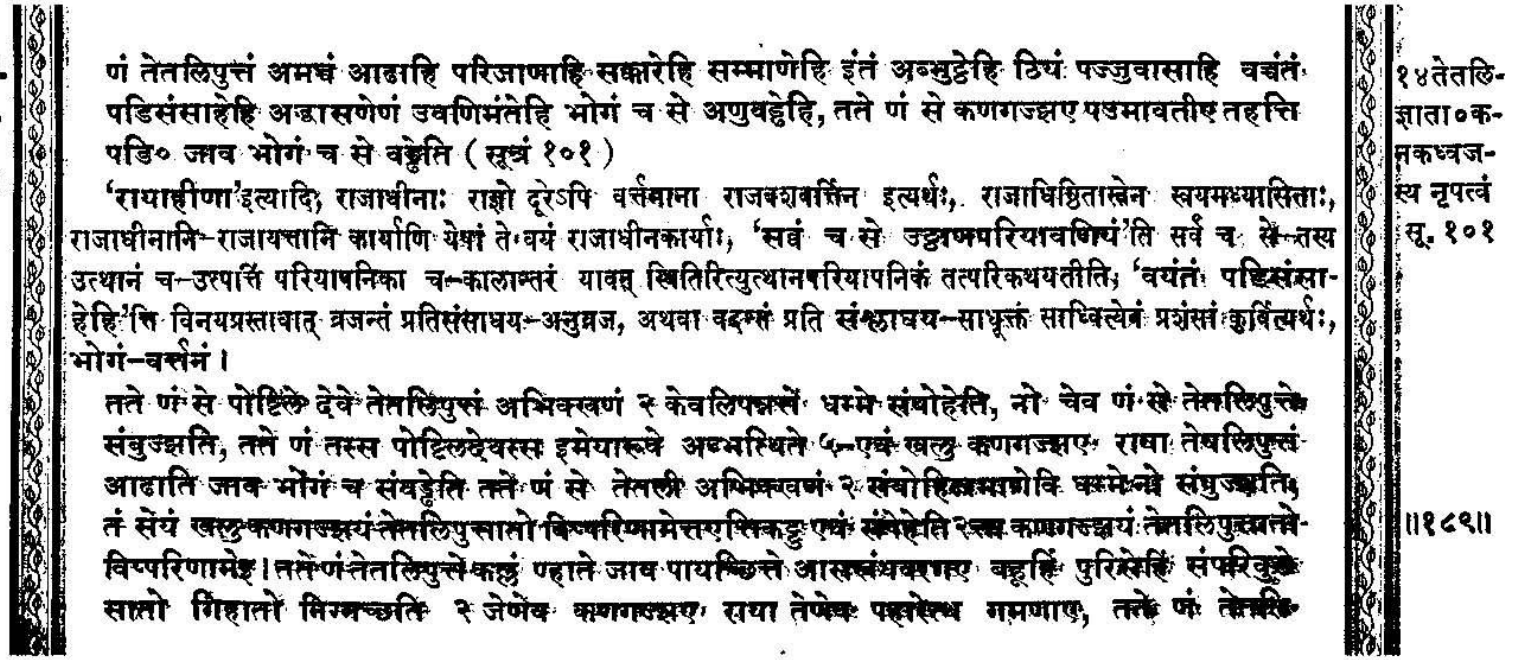
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा, तेतलि-पत्नी पोट्टीलाया: बोध:, श्रावक्त्वं, दीक्षा, संयमजीवनं, देवत्व-प्राप्ति:

पुत्ते वियंगित्था, अम्हे णं देवा०! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेतली अमचे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवट्टावए यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमचं कुमारं जातित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव तेयलिपुत्ते अमचे तेणेव उवा० २ तेयलिपुत्तं एवं व०–एवं खलु देवाणु०! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे य णं देवाणु०! रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवा०! कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए, तं जइ णं देवाणु०! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे तण्णं तुमं अम्हं दलाहि, जा णं अम्हे महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो, तए णं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर० एतमट्ठं पडिसुणेति २ कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ २त्ता तेसिं ईसर जाव उवणेति २ एवं व०–एस णं देवा०! कणगरहस्स रन्नो पुत्ते पउमावतीए देवीए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहसियगं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचह, सवं च तेसिं उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ। तते णं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया २ अभिसिंचंति। तते णं से कणगज्झए कुमारे राया जाए महया हिमवंतमलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ। तते णं सा पउमावती देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेति २ एवं व०–एस णं पुत्ता! तव० रज्जे जाव अंतेउरे य० तुमं च तेतलिपुत्तस्स पहावेणं, तं तुमं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेतलिपुत्रस्य कथा, कनकरथस्य राज्याभिषेक:



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥१८९॥

णं तेतलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि ठियं पज्जुवासाहि वच्चंतं पडिसंसाहेहि अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोगं च से अणुवड्ढेहि, तते णं से कणगज्झए पउमावतीए तहत्ति पडि० जाव भोगं च से वड्ढेति (सूत्रं १०१)

'राया हीणा' इत्यादि; राजाधीना: राज्ञो दूरेऽपि वर्त्तमाना राजवशवर्त्तिन इत्यर्थः, राजाधिष्ठितास्तेन स्वयमध्यासिता:, राजाधीनानि-राजायत्तानि कार्याणि येषां ते वयं राजाधीनकार्या:, 'सव्वं च से उट्ठाणपरियावणियं'ति सर्वं च से-तस्य उत्थानं च-उत्पत्तिं परियापनिका च-कालान्तरं यावत् स्थितिरित्युत्थानपरियापनिकं तत्परिकथयतीति, 'वयंतं पडिसंसाहेहि'त्ति विनयप्रस्तावात् व्रजन्तं प्रतिसंसाधय-अनुव्रज, अथवा वदन्तं प्रति संश्लाघय-साधूक्तं साध्वित्येवं प्रशंसां कुर्वित्यर्थः, भोगं-वर्त्तनं ।

तते णं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्तं धम्मं संबोहेति, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झति, तते णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अब्भत्थिते ५-एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाति जाव भोगं च संवड्ढेति तते णं से तेतली अभिक्खणं २ संबोहिज्जमाणोवि धम्मे नो संबुज्झति, तं सेयं खलु कणगज्झयं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेति २त्ता कणगज्झयं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ । तते णं तेतलिपुत्ते कल्लं पहाते जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं संपरिवुडे सातो गिहातो निग्गच्छति २ जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं तेतलि-

॥१८९॥

१४तेतलि-ज्ञाता०क-नकध्वज-स्य नृपत्वं सू. १०१

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	तेतलिपुत्रस्य कथा, कनकरथस्य राज्याभिषेक:

पुत्तं अम्मयं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभिइओ पासंति ते तहेव आढायंति परिजाणंति अब्भुट्ठेंति २ अंजलिपरिग्गहं करेंति इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरओ य पिट्ठओ य पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति, तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छति, तते णं कणगज्झए तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासति२नो आढाति नो परियाणाति नो अब्भुट्ठेति अणाढायमाणे ३ परम्मुहे संचिट्ठति, तते णं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स रन्नो अंजलिं करेइ, तते णं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठति, तते णं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विपरिणयं जाणित्ता भीते जाव संजातभए एवं व०–रुट्ठे णं ममं कणगज्झए राया हीणे णं मम कणगज्झए राया अवज्झाए णं कणगज्झए, तं ण नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण मारेहितिस्सिकट्टु भीते तत्थे य जाव सणियं २ पच्चोसक्केति २ तमेव आसखंधं दुरूहेति २ तेतलिपुरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं तेयलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव पासंति ते तहा नो आढायंति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठेंति नो अंजलि० इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य (मग्गतो य) समणुगच्छंति, तते णं तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवति, तं०–दासेति वा पेसेति वा भाइल्लएति वा सावि य णं नो आढाइ २, जावि य से अब्भिंतरिया परिसा भवति, तंजहा–पियाइ वा मातीति वा जाव सुण्हाति वा सावि य णं वा नो आढाइ२, तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव वास-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	पोट्टीलदेवै: तेतलिपुत्रं प्रतिबोध:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१०२--१०४]

दीप अनुक्रम [१५४--१५६]

घरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति २ सयणिज्जंसि णिसीयति २ एवं व०–एवं खलु अहं सयातो गिहातो निग्गच्छामि तं चेव जाव अब्भिंतरिया परिसा नो आढाति नो परियाणाति नो अब्भुट्ठेति, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियातो ववरोवित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवति से य विसे णो संकमति, तते णं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरति, तत्थवि य से धारा ओपल्ला, तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति २ पासगं गीवाए बंधति २ रुक्खं दुरूहति २ पासं रुक्खे बंधति २ अप्पाणं मुयति तत्थवि य से रज्जू छिन्ना, तते णं से तेतलिपुत्ते महतिमहालयं सिलं गीवाए बंधति २ अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति, तत्थवि से थाहे जाते, तते णं से तेतलि० सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवति २ अप्पाणं मुयति तत्थवि य से अगणिकाए विज्झाए, तते णं से तेतली एवं व०–सद्धेयं खलु भो समणा वयंति सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति सद्धेयं खलु भो समणा माहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयामि एवं खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते को मेदं सद्दहिस्सति ? सह मित्तेहिं अमित्ते को मेदं सद्दहिस्सति ?, एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं परिजणेणं, एवं खलु तेयलिपुत्ते णं अ० कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेयलिपुत्ते तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते सेविय णो कमति को मेयं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए तत्थविय से धारा ओपल्ला को मेदं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्तस्स पासगं गीवाए बंधेत्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पोट्टीलदेवैः तेतलिपुत्रं प्रतिबोधः

जाव रज्जू छिन्ना को मेदं सदहिस्सति?, तेतलिपुत्ते महासिलयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि अप्पा मुक्के तत्थविय णं थाहे जाए को मेयं सदहिस्सति?, तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडे अग्गी विज्झाए को मेदं सदहिस्सति?, ओहतमणसंकप्पे जाव झियाइ। तते णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वति २ तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिचा एवं व०–हं भो! तेतलिपुत्ता! पुरतो पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं दुहओ अचक्खुफासे मज्झे सराणि वरिसयंति गामे पलित्ते रन्ने झियाति रन्ने पलित्ते गामे झियाति आउसो! तेतलिपुत्ता! कओ वयामो?, तते णं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी–भीयस्स खलु भो! पव्वज्जा सरणं उक्कंठियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं तिसियस्स पाणं आउरस्स भेसज्जं माइयस्स रहस्सं अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं तरिउकामस्स पवहणं किचं परं अभिओजितुकामस्स सहायकिचं खंतस्स दंतस्स जितिंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवति, तते णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमचं एवं व०–सुट्ठु णं तुमं तेतलिपुत्ता! एयमट्ठं आयाणिहित्तिकट्टु दोच्चंपि एवं वयइ २ जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए(सूत्रं१०२)तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाइसरणे समुप्पन्ने,तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिते ५ समु०–एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे २ महाविदेहे वासे पोक्खलावतीविजये पोंडरीगिणीते रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था, तते णं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दस पुव्वाति०बहूणि वासाणि सामन्नपरियाए०मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे, तते

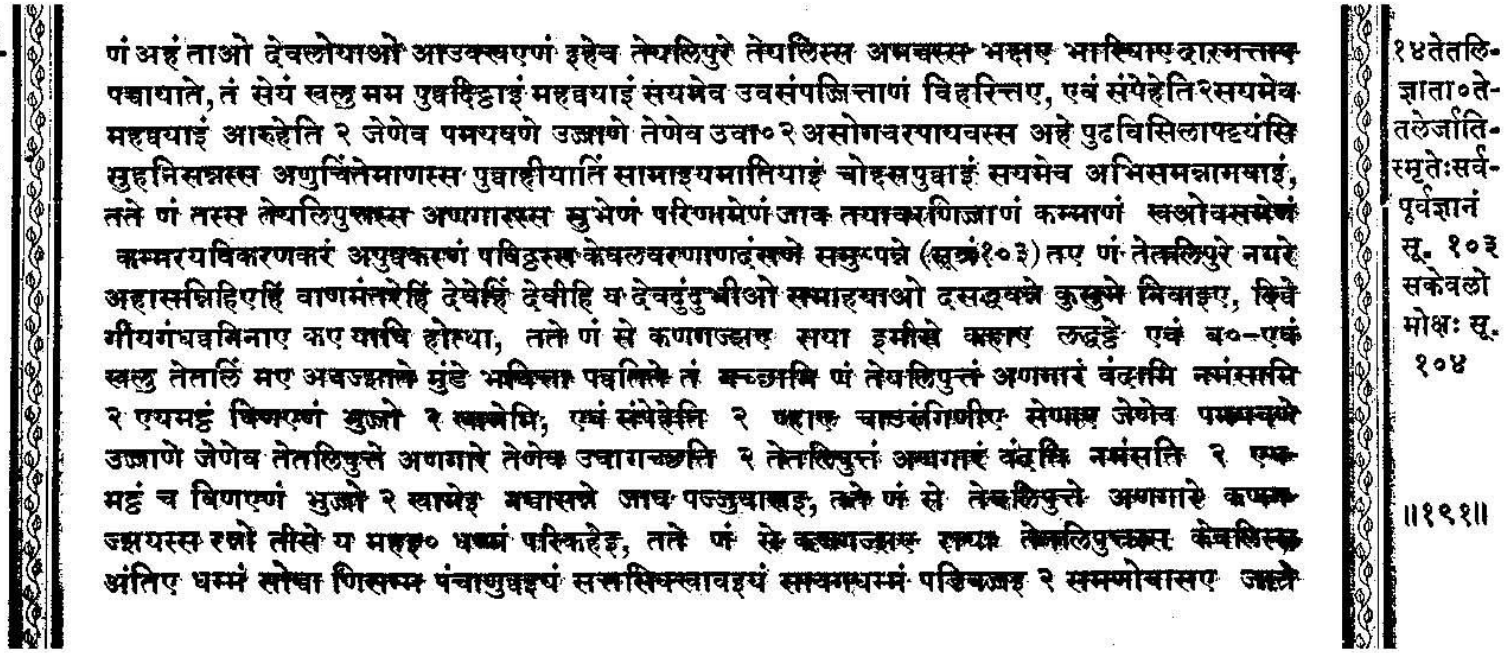
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पोट्टीलदेवै: तेतलिपुत्रं प्रतिबोध:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [१०२--१०४]

दीप अनुक्रम [१५४--१५६]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्-

॥१९१॥

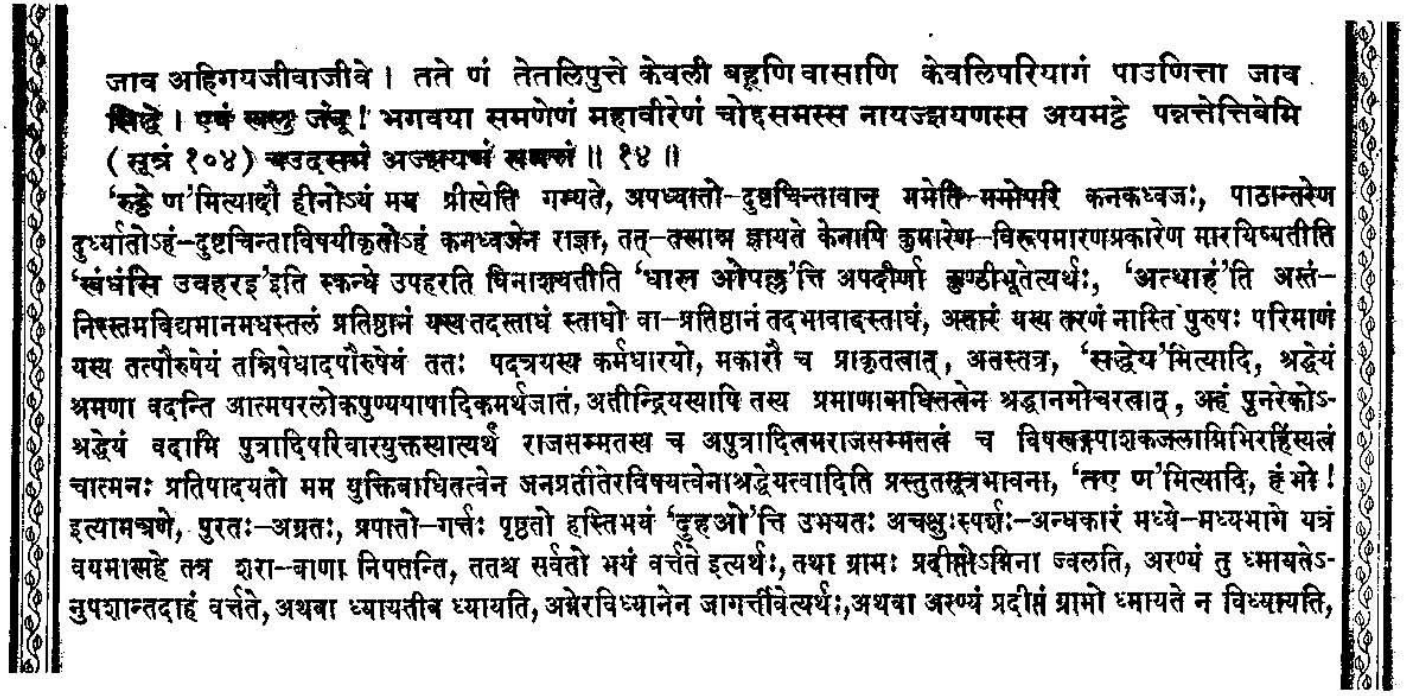
णं अहं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाते, तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेति २ सयमेव महव्वयाइं आरुहेति २ जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवा० २ असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयातिं सामाइयमातियाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं, तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने (सूत्रं१०३) तए णं तेतलिपुरे नगरे अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुंदुभीओ सम्माहयाओ दसद्धवन्ने कुसुमे निवाइए, दिव्वे गीयगंधवनिनाए कए यावि होत्था, तते णं से कणगज्झए सया इमीसे कहाए लद्धट्ठे एवं ख०-एवं खलु तेतलिं मए अवज्झाते मुंडे भवित्ता पव्वइते तं गच्छामि णं तेयलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि २ एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेमि, एवं संपेहेति २ व्हाते चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति २ तेतलिपुत्तं अणगारं वंदति नमंसति २ एयमट्ठं च विणएणं भुज्जो २ खामेइ अहासन्ने जाव पज्जुवासइ, तते णं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइ० धम्मं परिकहेइ, तते णं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ समणोवासए जाते

१४तेतलि-ज्ञाता०ते-तलेर्जाति-स्मृतेःसर्व-पूर्वज्ञानं सू. १०३ सकेवलो मोक्षः सू. १०४

॥१९१॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पोट्टीलदेवै: तेतलिपुत्रं प्रतिबोध:, तेतलिपुत्रस्य मोक्ष:



जाव अहिगयजीवाजीवे। तते णं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे। एवं खलु जंबू! भगवया समणेणं महावीरेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्तिबेमि (सूत्रं १०४) चउद्दसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १४ ॥

'रुट्ठे ण'मित्यादौ हीनोऽयं मम प्रीत्येति गम्यते, अपध्यातो–दुश्चिन्तावान् ममेति–ममोपरि कनकध्वजः, पाठान्तरेण दुर्ध्यातोऽहं–दुश्चिन्ताविषयीकृतोऽहं कनकध्वजेन राज्ञा, तत्–तस्मान्न ज्ञायते केनापि कुमारेण–विरूपमारणप्रकारेण मारयिष्यतीति 'खंधंसि उवहरइ'इति स्कन्धे उपहरति विनाशयतीति 'धारल ओपल्ल'त्ति अपदीर्णा कुण्ठीभूतेत्यर्थः, 'अत्थाहं'ति अस्तं–निस्तमविद्यमानमधस्तलं प्रतिष्ठानं यस्य तदस्ताधं स्ताघो वा–प्रतिष्ठानं तदभावादस्ताधं, अस्तारं यस्य तरणं नास्ति पुरुषः परिमाणं यस्य तत्पौरुषेयं तन्निषेधादपौरुषेयं ततः पदत्रयस्य कर्मधारयो, मकारौ च प्राकृतत्वात्, अतस्तत्र, 'सद्धेय'मित्यादि, श्रद्धेयं श्रमणा वदन्ति आत्मपरलोकपुण्यपापादिकमर्थजातं, अतीन्द्रियत्वादपि तस्य प्रमाणाबाधितत्वेन श्रद्धानमोचरत्वात्, अहं पुनरेकोऽश्रद्धेयं वदामि पुत्रादिपरिवारयुक्तस्यात्यर्थं राजसम्मतस्य च अपुत्रादिनराजसम्मतत्वं च विषलताकूपाशकजलाग्निभिरहिंसत्वं चात्मनः प्रतिपादयतो मम युक्तिबाधितत्वेन जनप्रतीतेरविषयत्वेनाश्रद्धेयत्वादिति प्रस्तुतसूत्रभावना, 'तए ण'मित्यादि, हं भो! इत्यामन्त्रणे, पुरतः–अग्रतः, प्रपातो–गर्त्तः पृष्ठतो हस्तिभयं 'दुहओ'त्ति उभयतः अचक्षुःस्पर्शः–अन्धकारं मध्ये–मध्यभागे यत्र वयमास्महे तत्र शरा–बाणा निपतन्ति, ततश्च सर्वतो भयं वर्त्तते इत्यर्थः, तथा ग्रामः प्रदीप्तोऽग्निना ज्वलति, अरण्यं तु ध्मायतेऽनुपशान्तदाहं वर्त्तते, अथवा ध्यायतीव ध्यायति, अग्नेरविध्यानेन जागर्त्तीवेत्यर्थः, अथवा अरण्यं प्रदीप्तं ग्रामो ध्मायते न विध्यायति,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

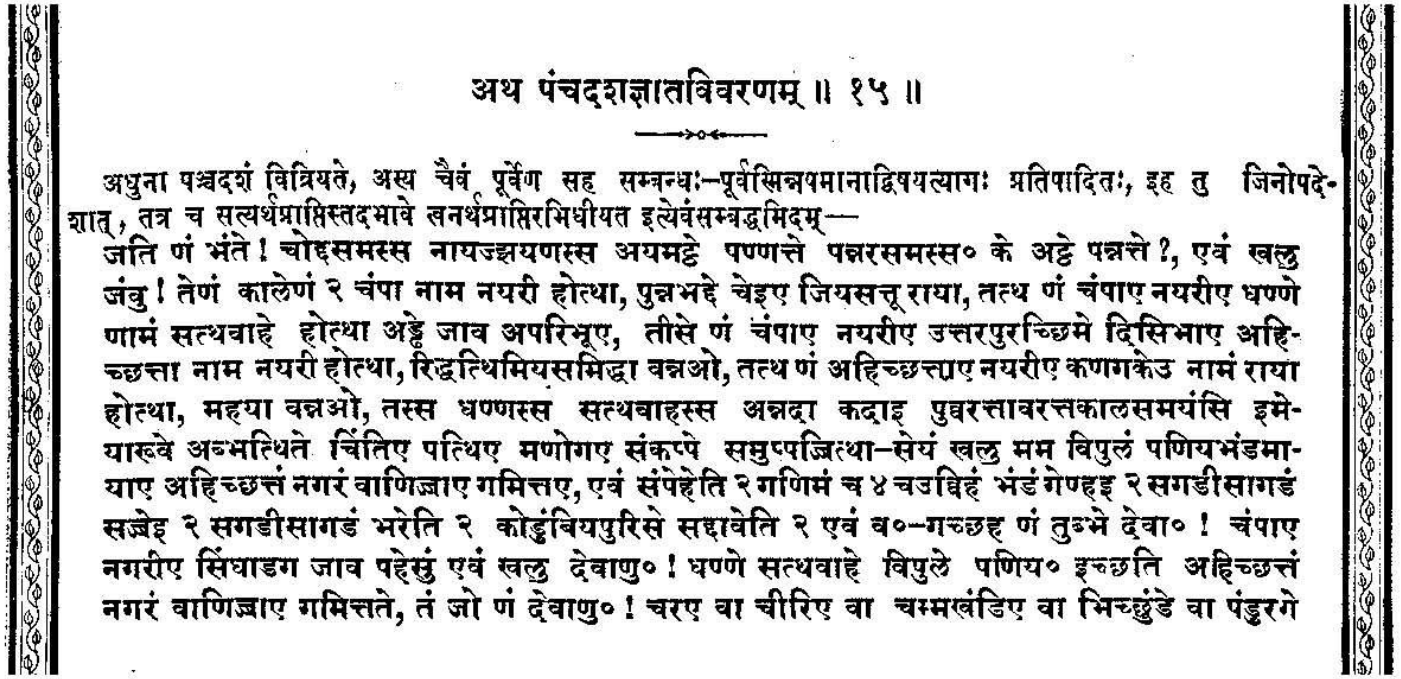
एवं सर्वस्यापि भयानकत्वात् स्थानान्तरस्य चाभावादायुष्मंस्तेतलिपुत्र ! 'कउ'त्ति क व्रजामः भीतैर्गन्तव्यमस्माभिरित्यन्येनापि भवतीति प्रश्नः, उत्तरं च भीतस्य प्रव्रज्या शरणं भवतीति गम्यते, यथोत्कण्ठितादीनां स्वदेशगमनादीनि, तत्र 'छुहियस्स'त्ति बुभुक्षितस्य मायिनो–वंचकस्य रहस्यं–गुप्तत्वं शरणमिति सर्वत्र गमनीयं, अभियुक्तस्य–सम्पादितदूषणस्य प्रत्ययकरणं–दूषणापोहेन प्रतीत्युत्पादनं अध्वानं अरियतो(अध्वपरिश्रान्तस्य)-गन्तुमशक्तस्य वाहनगमनं–शकटाद्यारोहणं तरीतुकामस्य नद्यादिकं प्लवनं–तरणं कृत्यं–कार्यं यस्य तत् प्लवनकृत्यं–तरकाण्डं परमभियोक्तुकामस्य–अभिभवितुकामस्य सहायकृत्यं–मित्रादिकृतं सहायकर्म्मेति, अथ कथं भीतस्य प्रव्रज्या शरणं भवति अत उच्यते–'खंते'त्यादि क्षान्तस्य क्रोधनिग्रहेण दान्तस्येन्द्रियनोइन्द्रियदमेन जितेन्द्रियस्य विषयेषु रागादिनिरोद्धुः 'एत्तो'त्ति एतेभ्योऽनन्तरोदितेभ्योऽतः प्रपातादिभ्यो भयेभ्यः एकमपि भयं न भवति, प्रव्रजितस्य सामायिकपरिणत्या शरीरादिषु निरभिष्वङ्गत्वात् मरणादिभयाभावादिति, एवं देवेनामात्यः स्ववाचा भीतस्य प्रव्रज्या श्रेयसीत्यभ्युपगमं कारयित्वा एवमुक्तः 'सुट्ठु'इत्यादि, अयमर्थो–भीतस्य प्रव्रज्या शरणमिति यदि प्रतिज्ञायते तदा सुष्ठु ते मतं, भयाभिभूतस्त्वमिदानीमसीति एतमर्थमाजानीहि–अनुष्ठानद्वारेणावबुध्यस्व प्रव्रज्यां विधेहीतियावत् ॥ इह च यद्यपि सूत्रे उपनयो नोक्तः तथाप्येवं द्रष्टव्यः, "जाव न दुक्खं पत्ता माणब्भंसं च पाणिणो पायं । ताव न धम्मं गेण्हंति भावओ तेयलीसुउव ॥ १ ॥ [प्राणिनः प्रायेण तावन्न धर्मं गृह्णन्ति भावतः यावद्दुःखं न प्राप्ता मानभ्रंशं च तेतलिसुतवत् ॥ १ ॥]त्ति समाप्तं चतुर्दशज्ञातविवरणम् ॥ १४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-१४ परिसमाप्तम्

प्रत सूत्रांक [१०५]

दीप अनुक्रम [१५७]



अथ पंचदशज्ञातविवरणम् ॥ १५ ॥

अधुना पञ्चदशं विविच्यते, अस्य चैवं पूर्वेण सह सम्बन्धः–पूर्वस्मिन्नपमानाद्विषयत्यागः प्रतिपादितः, इह तु जिनोपदेशात्, तत्र च सत्यर्थप्राप्तिस्तदभावे त्वनर्थप्राप्तिरभिधीयत इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते! चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स० के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबु! तेणं कालेणं २ चंपा नाम नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं चंपाए नयरीए धण्णे णामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा वन्नओ, तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेउ नामं राया होत्था, महया वन्नओ, तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अब्भत्थिते चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तए, एवं संपेहेति २ गणिमं च ४ चउविहं भंडं गेण्हइ २ सगडीसागडं सज्जेइ २ सगडीसागडं भरेति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा०! चंपाए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु एवं खलु देवाणु०! धण्णे सत्थवाहे विपुले पणिय० इच्छति अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तते, तं जो णं देवाणु०! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरंगे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- १५ "नन्दिफ़ल" आरभ्यते

वा गोतमे वा गोवतीते वा गिहिधम्मे वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथ-प्पभितिपासंडत्थे वा गिहत्थे वा तस्स णं धण्णेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नगरिं गच्छइ तस्स णं धण्णे अच्छ-त्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाउ दलयइ अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गसाहेज्जं दलयति सुहंसु-हेण य णं अहिच्छत्तं संपावेतित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव एवं व०–हंदि सुणंतु भगवंतो चंपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से कोडुंबियघोसणं सुच्चा चंपाए णयरीए बहवे चरगा य जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छन्ति तते णं धण्णे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव पत्थयणं दला-ति, गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा चिट्ठह, तते णं चरगा य०धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति,तते णं धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणन-क्खत्तंसि विपुलं असणं४उवक्खडावेइ२त्ता मित्तनाई आमंतेति२भोयणं भोयावेति२ आपुच्छति२ सगडी-सागडं जोयावेति २ चंपानगरीओ निग्गच्छति णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे २ सुहेहिं वसहि-पायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छति २ सगडीसागडं मोयावेति २ सत्थणिवेसं करेति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति एवं व०–तुब्भे णं देवा०! मम सत्थनिवेसंसि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१०५]

दीप अनुक्रम [१५७]

महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वदह–एवं खलु देवाणु० ! इमीसे आगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णंदिफला नामं रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अतीव उवसोभेमाणा चिट्ठंति मणुण्णा वन्नेणं ४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए, तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेति छायाए वा वीसमति तस्स णं आवाए भद्दए भवति ततो पच्छा परिणममाणा २ अकाले चेव जीवियातो ववरोवेंति, तं मा णं देवाणुप्पिया ! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियातो ववरोविज्जिस्सति, तुब्भे णं देवाणु० ! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेथ छायासु वीसमहत्ति घोसणं घोसेह जाव पच्चप्पिणंति, तते णं धण्णे सत्थवाहे सगडीसागडं जोएति२जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छति २ तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिवेसं करेति २ दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–तुब्भे णं देवाणु० ! मम सत्थनिवेसंसि महता सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयह–एए णं देवाणु० ! ते णंदिफला किण्हा जाव मणुन्ना छायाए तं जो णं देवाणु० ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल० जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति, तं मा णं तुब्भे जाव दूरं दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा णं अकाले जीवितातो ववरोविस्संति, अन्नेसिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रुक्खाणं मूलाणि य जाव बीसमहत्तिकट्टु घोसणं पच्चप्पिणंति, तत्थ णं अत्थेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति जाव रोयंति एयमट्ठं सद्दहमाणा तेसिं नंदिफलाणं दूरं दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव बीसमंति, तेसि णं आवाए नो भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणा २ सुहरूवत्ताए ५ भुज्जो २ परिणमंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा२ जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेति नो रज्जेति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छति जाव वीतीवतिस्सति, तत्थ णं जे से अप्पेगतिया पुरिसा धण्णस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति ३ धण्णस्स एतमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति २ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव बीसमंति तेसि णं आवाए भद्दए भवति ततो पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए पंचसु कामगुणेसु सज्जेति ३ जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व ते पुरिसा, तते णं से धण्णे सगडीसागडं जोयावेति २ जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छति २ अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेति२ सगडीसागडं मोयावेइ, तए णं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं३रायरिहं पाहुडं गेण्हइ२बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति, करयल जाव वद्धावेइ, तं महत्थं ३ पाहुडं उवणेइ, तए णं से कणगकेऊ राया हट्ठतुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं ३ जाव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पडिच्छइ २ धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ२ उस्सुक्कं वियरति२ पडिविसज्जेइ भंडविणिमयं करेइ२ पडिभंडं गेण्हति२सुहंसुहेणं जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छति२मित्तनाति० अभिसमन्नागते विपुलाइं माणुस्सगाइं जाव विहरति, तेणं कालेणं २ थेरागमणं धण्णे धम्मं सोचा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए एक्कारस सामाइयातिं अंगातिं बहूणि वासाणि जाव मासियाए सं० अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेति। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं पन्नरसस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि (सूत्रं १०५) पन्नरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

सर्वं सुगमं, नवरं 'चरए वे'त्यादि, तत्र चरको–धाटिभिक्षाचरः चीरिको–रथ्यापतितचीवरपरिधानः चीरोपकरण इत्यन्ये चर्मखण्डकः–चर्मपरिधानः चर्मोपकरण इति चान्ये भिक्षाण्डो–भिक्षाभोजी सुगतशासनस्थ इत्यन्ये, पाण्डुरागः–शैवः गौतमः–लघुतराक्षमालाचर्चितविचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापवद्वृषभकोपायतः कणभिक्षाग्राही गोव्रतिकः–गोश्वर्यानुकारी, उक्तं च–"गावीहिं समं निग्गमपवेसठाणासणाइ पकरेंति। भुंजंति जहा गावी तिरिक्खवासं विभावेंता ॥१॥" [गोभिः समं प्रवेशनिर्गमस्थानासनादि प्रकुर्वन्ति। भुंजन्ति यथा गावस्तिर्यग्वासं विभावयन्तः ॥ १ ॥] गृहिधर्मा–गृहस्थधर्म एव श्रेयानित्यभिसन्धाय तद्यथोक्तकारी धर्म्मचिन्तको–धर्मसंहितापरिज्ञानवान् सभासदः अविरुद्धो–वैनयिकः, उक्तं च–"अविरुद्धो विणयकारी देवाईणं पराए भत्तीए। जह वेसियायणसुओ एवं अन्नेवि नायवा ॥ १ ॥" [अविरुद्धो विनयकारी देवादीनां परया भक्त्या। यथा वैश्यायनसुत एवमन्येऽपि ज्ञातव्याः ॥ १ ॥] विरुद्धोः–अक्रियावादी परलोकानभ्युपगमात् सर्ववादिभ्यो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विरुद्धः एवं वृद्धः–तापसः प्रथममुत्पन्नत्वात् प्रायो वृद्धकाले च दीक्षाप्रतिपत्तेः श्रावको–ब्राह्मणः अन्ये तु वृद्धश्रावक इति व्याचक्षते, स च ब्राह्मण एव, रक्तपटः–परिव्राजको निर्ग्रन्थः–साधुः प्रभृतिग्रहणात् कापिलादिपरिग्रह इति, 'पत्थयणं'ति पथ्यदनं–शम्बलं 'पक्खिवं'ति अर्द्धपथे त्रुटितशम्बलस्य शम्बलपूरणं द्रव्यं प्रक्षेपकः, 'पडियस्स'त्ति वाहनात्पतितस्य रोगे वा पतितस्य 'भग्गरुग्गस्स'त्ति वाहनात् स्खलनाद्वा पतने भग्नस्य रुग्णस्य च–जीर्णतां गतस्येत्यर्थः, 'हंदि'त्ति आमन्त्रणे 'नाइविगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं'ति नातिविप्रकृष्टेषु–नातिदीर्घेष्वध्वसु–प्रयाणकमार्गेषु वसन् शुभैरनुकूलैः 'वसतिप्रातराशैः' आवासस्थानैः प्रातर्भोजनकालैश्चेत्यर्थः 'देसग्गं'ति देशान्तं। इहोपनयः सूत्राभिहित एव। विशेषतः पुनरेवं तं प्रतिपादयन्ति–"चंपा इव मणुयगती धणोव्व भयवं जिणो दएक्करसो। अहिछत्तानयरिसमं इह निव्वाणं मुणेयव्वं ॥१॥ घोसणया इव तित्थंकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घं। चरगाइणोव्व इत्थं सिवसुहकामा जिया बहवे ॥ २ ॥ नंदिफलाइ व इहं सिवपहपडिवण्णगाण विसया उ। तब्भक्खणाओ मरणं जह तह विसएहिं संसारो ॥ ३ ॥ तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा। परमानंदनिबंधणसिवपुरगमणं मुणेयव्वं ॥४॥ [चम्पेव मनुष्यगतिर्धन इव भगवान् जिनो दयैकरसः। अहिच्छत्रानगरीसममिह निर्वाणं ज्ञातव्यं ॥ १ ॥ घोषणमिव तीर्थकरस्य शिवमार्गदेशनमनघं। चरकादिवदत्र शिवसुखकामा जीवा बहवः ॥ २ ॥ नन्दीफलानीवेह शिवपथप्रतिपन्नानां विषयाः। तद्भक्षणात् मरणं यथा तथेह विषयैः संसारः ॥३॥ तद्वर्जनेनेष्टपुरगमो यथा विषयवर्जनेन तथा। परमानन्दनिबन्धन-शिवपुरगमनं ज्ञातव्यं ॥ ४ ॥] पञ्चदशज्ञातविवरणं समाप्तम् ॥ १५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-१५ परिसमाप्तम्

अथ षोडशज्ञातविवरणम् ॥ १६ ॥

अथ षोडशं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वत्र विषयाभिष्वङ्गस्यानर्थफलतोक्ता इह तु तद्विषयनिदानस्य सोच्यते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते! स०भ०म० पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे प०सोलसमस्स णं णायज्झयणस्स णं सम० भग० महा० केअट्ठे पण्णत्ते?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नाम नयरी होत्था, तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भातरो परिवसंति, तंजहा–सोमे सोमदत्ते सोमभूती अड्ढा जाव रिउव्वेद ४ जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसि णं माहणाणं तओ भारियातो होत्था, तं०–नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ विपुले माणुस्सए जाव विहरंति । तते णं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विपुले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाए० तं सेयं खलु अम्हं देवाणु० अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विपुलं असणं ४ उवक्खडेउं २ परिभुंजमाणाणं विहरित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुलं असण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- १६ "अपरकङ्का" आरभ्यते

द्रौपदी-कथा, द्रौपद्याः पूर्वभवस्य वृतान्तं–नागश्री कथा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१०६--१०८]

दीप अनुक्रम [१५८--१६०]

४ उवक्खडावेंति २ परिभुंजमाणा विहरंति, तते णं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नदा भोयणवारए जाते यावि होत्था, तते णं सा नागसिरी विपुलं असणं ४ उवक्खडेति २ एगं महं सालतियं तित्तालाउअं बहुसंभारसंजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडावेति, एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं व०–धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए अपुत्ताए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए जीए णं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए सुबहुदव्वक्खएणं, नेहक्खए य कए, तं जति णं ममं जाउयाओ जाणिस्संति तो णं मम खिंसिस्संति तं जाव ताव ममं जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेयं एयं सालतियं तित्तालाउ बहुसंभारणेहकयं एगंते गोवेत्तए अन्नं सालइयं मधुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए, एवं संपेहेति २ तं सालतियं जाव गोवेइ, अन्नं सालतियं मधुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासणवरगयाणं तं विपुलं असणं ४ परिवेसेति, तते णं ते माहणा जिमितभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था, तते णं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारेंति २ जेणेव सयाइं २ गेहाइं तेणेव उवा० २ सककम्मसंपउत्तातो जायातो (सूत्रं १०६) तेणं कालेणं २ धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नामं नगरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवा० २ अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रौपदी-कथा, द्रौपद्याः पूर्वभवस्य वृतान्तं–नागश्री कथा

प्रत सूत्रांक [१०६--१०८]

दीप अनुक्रम [१५८--१६०]

तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति, तते णं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ २ बीयाए पोरसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेति २ तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे,तते णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासति२त्ता तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहु०णेहा०निसिरणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठेति २ जेणेव भत्तघरे तेणेव उवा० २ तं सालतियं तित्तकडुयं च बहुनेहं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ, तते णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहातो पडिनिक्खमति २ चंपाए नगरीए मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमति २ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिदंसेइ २ अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेति, तते णं ते धम्मघोसा थेरा तस्स सालइतस्स नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा ततो सालइयातो नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसादेंति तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वदासी–जति णं तुमं देवाणु०! एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवितातो ववरोविज्जसि, तं मा णं तुमं देवाणु०! इमं सालतियं जाव आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीविताओ ववरोविज्जसि, तं गच्छ णं तुमं देवाणु०! इमं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रौपदी-कथा, द्रौपद्याः पूर्वभवस्य वृतान्तं–नागश्री कथा, धर्मरुचि अनगारस्य कथा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१०६--१०८]

दीप अनुक्रम [१५८--१६०]

सालतियं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले परिट्ठवेहि २ अन्नं फासुयं एसणिज्जं असण ४ पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि, तते णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमति २ सुभूमिभागउज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्लं पडिलेहेति २ ततो सालइयातो एगं बिंदुगं गहेइ २ थंडिलंसि निसिरति, तते णं तस्स सालतियस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउ० जा जहा य णं पिपीलिका आहारेति सा तहा अकाले चेव जीवितातो ववरोविज्जति, तते णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए५–जइ ताव इमस्स सालतियस्स जाव एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाति पिपीलिकासहस्साइं ववरोविज्जंति तं जति णं अहं एयं सालइयं थंडिल्लंसि सव्वं निसिरामि तते णं बहूणं पाणाणं ४ वहकरणं भविस्सति, तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए, मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एवं संपेहेति२ मुहपोत्तियं २ पडिलेहेति २ ससीसोवरियं कायं पमज्जेति २ तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतेणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवति, तते णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा, तते णं से धम्मरुची अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमितिकट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ २ थंडिल्लं पडिलेहेति २ दब्भसंथारगं संथारेइ २ दब्भसंथारगं दुरूहति २

१६ अपरकङ्काज्ञाता० धर्मरुच्यनगारवृत्तं सू. १०७

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रौपदी-कथा, द्रौपद्याः पूर्वभवस्य वृतान्तं–नागश्री कथा, धर्मरुचि अनगारस्य कथा



पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एवं व०–नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं, पुव्विंपि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिंपि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाति० पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जावजीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए, तते णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरं गयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति २एवं व०–एवं खलु देवाणु० ! धम्मरुइस्स अणगारस्स मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहियां निग्गते चिराति तं गच्छह णं तुब्भे देवाणु० ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेह, तते णं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति२ धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति २ धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति २ धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति २ हा हा अहो अकज्जमितिकट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति २ जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति २ गमणागमणं पडिक्कमंति२ एवं व०–एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो२ सुभूमिभागस्स उ० परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वं जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवा०२ जाव



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	द्रौपदी-कथा, द्रौपद्या: पूर्वभवस्य वृतान्तं–नागश्री कथा, धर्मरुचि अनगारस्य कथा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१०६--१०८]

दीप अनुक्रम [१५८--१६०]

इहं हव्वमागया, तं कालगए णं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए, तते णं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति२ समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति२ एवं व०–एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तए णं सा नागसिरी माहणी जाव निसिरइ, तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्मजाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता, से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति (सूत्रं१०७) तं धिरत्थु णं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवितातो ववरोविए, तते णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडगतिगजाव बहुजणस्स एवमातिक्खंति–धिरत्थु णं देवा० ! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालतिएणं जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रौपदी-कथा, द्रौपद्याः पूर्वभवस्य वृतान्तं–नागश्री कथा, धर्मरुचि अनगारस्य कथा

एवं भासति–धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविते, तते णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति २ णागसिरीं माहणीं एवं वदासी–हं भो ! नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाते जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहुरूवे मासखमणपारणगंसि सालतिएणं जाव ववरोविते,उच्चावएहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंति तज्जेंति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयातो गिहातो निच्छुभंति,तते णं सा नागसिरी सयातो गिहातो निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुह०बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडीखंडनिवसणा खंडमल्लयखंडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहंगेहेणं देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरति, तते णं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तंजहा–सासे कासे जोणिसूले जाव कोढे, तए णं सा नागसिरी माहणी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूता समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु नरएसु नेरइयत्ताते उववन्ना, सा णं तओऽणंतरंसि

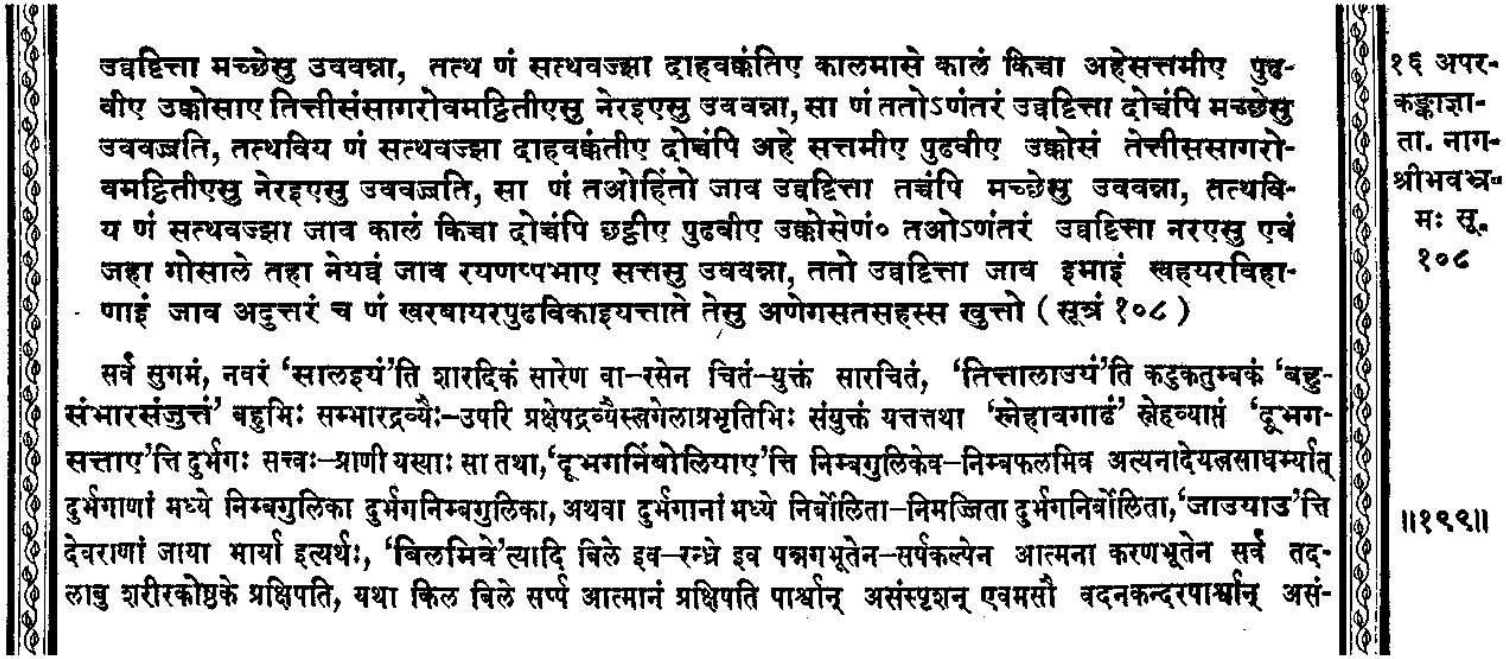
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	द्रौपदी-कथा, द्रौपद्या: पूर्वभवस्य वृतान्तं–नागश्री कथा,

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१०६--१०८]

दीप अनुक्रम [१५८--१६०]



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्. ॥१९९॥

उवट्टित्ता मच्छेसु उववन्ना, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतिए कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तित्तीससागरोवमट्ठितीएसु नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उवट्टित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उववज्जति, तत्थवि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु नेरइएसु उववज्जति, सा णं तओहिंतो जाव उवट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थवि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं० तओऽणंतरं उवट्टित्ता नरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाए सत्तसु उववन्ना, ततो उवट्टित्ता जाव इमाइं खहयरविहाणाइं जाव अदुत्तरं च णं खरबायरपुढविकाइयत्ताते तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो (सूत्रं १०८)

सर्वं सुगमं, नवरं 'सालइयं'ति शारदिकं सारेण वा–रसेन चितं–युक्तं सारचितं, 'तित्तालाउयं'ति कटुकतुम्बकं 'बहुसंभारसंजुत्तं' बहुभिः सम्भारद्रव्यैः–उपरि प्रक्षेपद्रव्यैस्तगेलाप्रभृतिभिः संयुक्तं यत्तत्तथा 'स्नेहावगाढं' स्नेहव्याप्तं 'दूभगसत्ताए'त्ति दुर्भगः सत्त्वः–प्राणी यस्याः सा तथा,'दूभगनिंबोलियाए'त्ति निम्बगुलिकेव–निम्बफलमिव अत्यनादेयत्वसाधर्म्यात् दुर्भगाणां मध्ये निम्बगुलिका दुर्भगनिम्बगुलिका, अथवा दुर्भगानां मध्ये निर्बोलिता–निमज्जिता दुर्भगनिर्बोलिता,'जाउयाउ'त्ति देवराणां जाया भार्या इत्यर्थः, 'बिलमिवे'त्यादि बिले इव–रन्ध्रे इव पन्नगभूतेन–सर्पकल्पेन आत्मना करणभूतेन सर्वं तदलाबु शरीरकोष्ठके प्रक्षिपति, यथा किल बिले सर्प आत्मानं प्रक्षिपति पार्श्वान् असंस्पृशन् एवमसौ वदनकन्दरपार्श्वान् असं-

१६ अपरकङ्काज्ञाता. नागश्रीभवभ्रमः सू. १०८

॥१९९॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

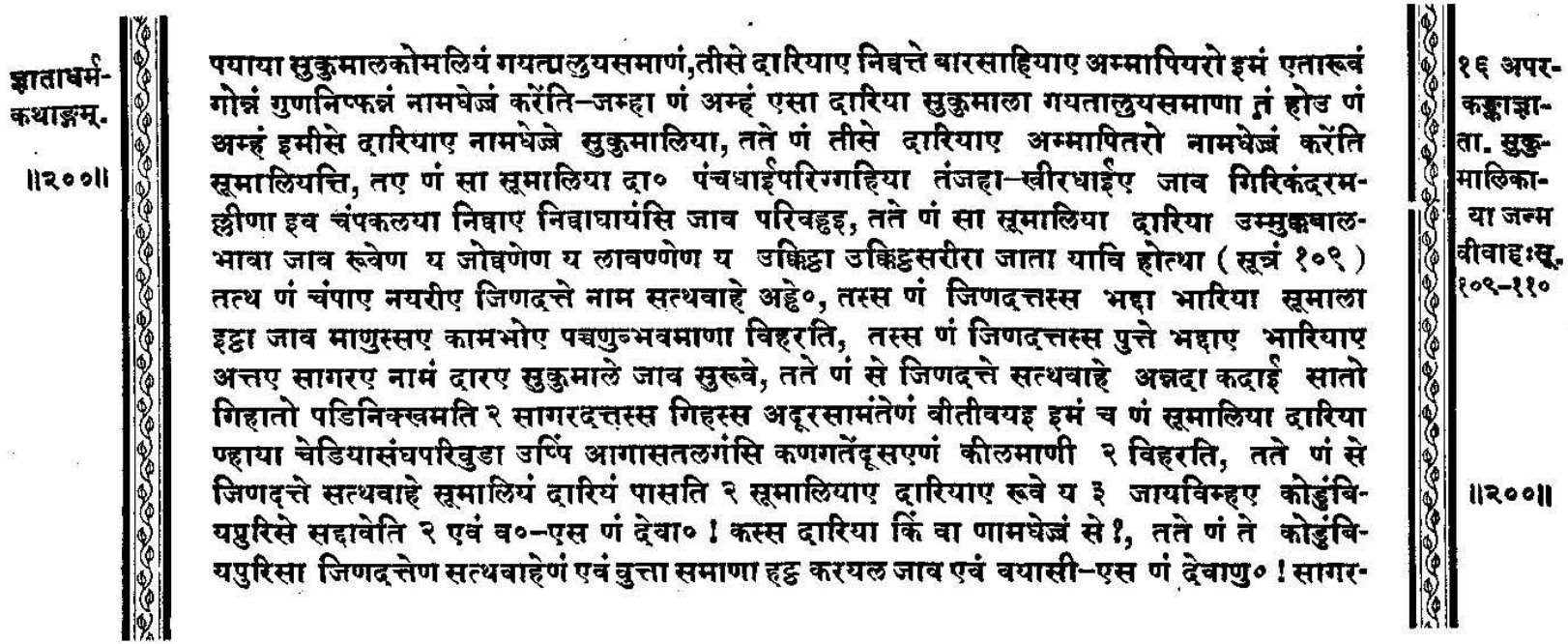
द्रौपदी-कथा, द्रौपद्याः पूर्वभवस्य वृतान्तं–नागश्री कथा, नागश्री-भवभ्रमणः

स्पृशन् आहारेण तदसञ्चारणतस्तदलाबु जठरविले प्रवेशितवानिति भावः, 'गमणागमणाए पडिक्कमंति'त्ति गमनागमनं–ईर्यापथिकीं 'उच्चावयाहिं'ति असमञ्जसाभिः 'अक्कोसणाहिं'ति मृताऽसि त्वमित्यादिभिर्वचनैः, 'उद्धंसणाहिं'ति दुष्कुलीनेत्यादिभिः कुलाद्यभिमानपातनार्थैः, 'निच्छुहणाहिं'ति निःसरासद्गेहादित्यादिभिः 'निच्छोडणाहिं'ति त्यजासदीयं वस्त्रादीत्यादिभिः 'तज्जेंति'त्ति ज्ञास्यसि पापे! इत्यादिभणनतः 'तालिंति'त्ति चपेटादिभिः हील्यमाना–जात्याद्युद्घट्टनेन खिंस्यमाना–परोक्षकुत्सनेन निन्द्यमाना–मनसा जनेन गर्ह्यमाणा–तत्समक्षमेव तर्ज्यमाना–अङ्गुलीचालनेन ज्ञास्यसि पापे इत्यादिभणनतः प्रव्यथ्यमाना–यष्ट्यादिताडनेन धिक्क्रियमाणा–धिक्शब्दविषयीक्रियमाणा एवं थूत्क्रियमाणा दण्डी–कृतसन्धानं जीर्णवस्त्रं तस्य खण्डं निवसनं–परिधानं यस्याः सा तथा, खण्डमल्लकं–खण्डशरावं भिक्षाभाजनं खण्डघटकश्च–पानीयभाजनं ते हस्तयोर्गते यस्याः सा तथा, 'फुट्ट'ंति स्फुटितया स्फुटितकेशसञ्चयत्वेन विकीर्णकेशं 'हडाहडं'ति अत्यर्थं 'शीर्षं' शिरो यस्याः सा तथा, मक्षिकाचटकरेण–मक्षिकासमुदायेन अन्वीयमानमार्गा–अनुगम्यमानमार्गा मलाविलं हि वस्तु मक्षिकाभिर्वेष्ट्यते एवेति, देह बलिमित्येतत्स्याख्यानं देहबलिका तया, अनुस्वारो नैपातिकः, 'सत्थवज्झ'त्ति शस्त्रवध्या जातेति गम्यते, 'दाहवक्कंतिए'त्ति दाहव्युत्क्रान्त्या–दाहोत्पत्त्या 'खहयरविहाणाइं जाव अदुत्तरं चे'त्यत्र गोशालकाध्ययनसमानं सूत्रं तत एव दृश्यं, बहुत्वात्तु न लिखितं ॥

सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया, तते णं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं दारियं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्- ॥२००॥

पयाया सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं,तीसे दारियाए निव्वत्ते बारसाहियाए अम्मापियरो इमं एतारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति–जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया, तते णं तीसे दारियाए अम्मापितरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति, तए णं सा सूमालिया दा० पंचधाईपरिग्गहिया तंजहा–खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ, तते णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाता यावि होत्था (सूत्रं १०९) तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे०, तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूवे, तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नदा कदाई सातो गिहातो पडिनिक्खमति २ सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयइ इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पिं आगासतलगंसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी २ विहरति, तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासति २ सूमालियाए दारियाए रूवे य ३ जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–एस णं देवा० ! कस्स दारिया किं वा णामधेज्जं से ?, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी–एस णं देवाणु० ! सागर-

१६ अपरकङ्काज्ञाता. सुकुमालिकाया जन्म वीवाहःसू. १०९–११० ॥२००॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रौपदी-कथा, द्रौपद्याः पूर्वभवस्य वृतान्तं– सुकुमालिका कथा

दत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठा, तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ पहाए जाव मित्तनाइपरिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तए णं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ एज्जमाणं पासइत्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता आसणेणं उवणिमंतेति २ आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी–भण देवाणुप्पिया! किमागमणप्पओयणं?, तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–एवं खलु अहं देवा०! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जति णं जाणाह देवा०! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरस्स, तते णं देवा०! किं दलयामो सुंकं सूमालियाए?, तए णं से सागरदत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी–एवं खलु देवा०! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमंग पुण पासणयाए तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं, तं जति णं देवाणुप्पिया! सागरदारए मम घरजामाउए भवति तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि, तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ२ सागरदारगं सद्दावेति२ एवं व०–एवं खलु पुत्ता! सागरदत्ते स० मम एवं वयासी–एवं खलु देवा०! सूमालिया दारिया इट्ठा तं चेव तं जति णं सागरदारए मम घरजामाउए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भवइ ता दलयामि, तते णं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए, तते णं जिणदत्ते स० अन्नदा कदाइ सोहणंसि तिहिकरणे विउलं असण ४ उवक्खडावेति २ मित्तणाई आमंतेइ जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ २ पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेति २ मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सविड्ढीए सातो गिहाओ निग्गच्छति २ चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छति २ सीयाओ पच्चोरुहति २ सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेति,तते णं सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असण ४ उवक्खडावेइ२ जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ २ सेयापीतएहिं कलसेहिं मज्जावेति २ होमं करावेति२ सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गेण्हाविंति (सूत्रं ११०) तते णं सागरदारए सूमालियाए दारि०इमं एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेति से जहा नाम ए असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा इतो अणिट्ठतराए चेव पाणिफासं पडिसंवेदेति, तते णं से सागरए अकामए अवसवसे तं मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ विउलं असण४पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति, तते णं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवा० २ सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तते णं ते सागरए दा० सूमालियाए दा० इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वमाणे विहरति, तते णं से सागरए अंगफासं असहमाणे अवसवसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेति२ जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवा० २ सयणीयंसि निवज्जइ, तते णं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पतिंवया पहमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेति २ जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति २ सागरस्स पासे णुवज्जइ, तते णं से सागरदारए सूमालियाए दारि० दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति जाव अकामए अवसवसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ २ वासघरस्स दारं विहाडेति २ मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए (सूत्रं १११) तते णं सूमालिया दारिया ततो मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिंवया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेति सागरस्स दा० सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ २ एवं व०–गए से सागरेत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तते णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ० दासचेडियं सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए! वहुवरस्स मुहसोहणियं उवणेहि, तते णं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेति, मुहधोवणियं गेण्हति २ जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छति २ सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासति २ एवं व०–किन्नं तुमं देवाणु० ! ओहयमणसंकप्पा

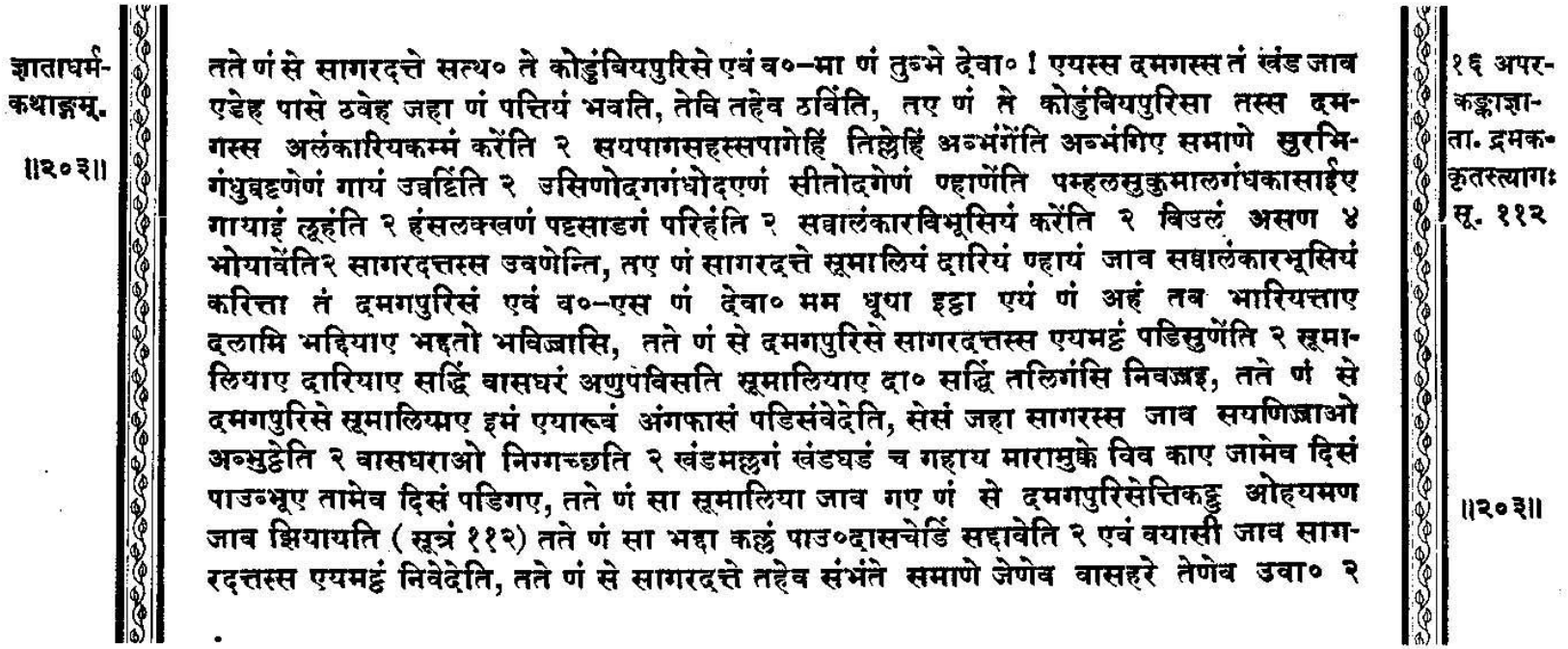
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाव झियाहिसि?, तते णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडीयं एवं व०–एवं खलु देवा०! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेति २ वासघरदुवारं अवगुण्डति जाव पडिगए, तते णं ततो अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए णं से सागरएत्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायामि, तते णं सा दासचेडी सूमालियाए दारि० एयमट्ठं सोचा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ, तते णं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तसत्थवाहगिहे तेणेव उवा० २ जिणद० एवं व०–किण्णं देवाणुप्पिया! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जन्नं सागरदारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभति, तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोचा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवा० २ सागरयं दारयं एवं व०–दुट्ठु णं पुत्ता! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गते सागरदत्तस्स गिहे, तते णं से सागरए जिणदत्तं एवं व०–अवि यातिं अहं ताओ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा विसभक्खणं वा वेहाणसं वा सत्थोवाडणं वा गिद्धापिट्ठं वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेति२ लज्जिए विलीए विड्ढे जिणदत्तस्स गिहातो पडिनिक्खमइ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ २ अंके निवेसेइ २ एवं व०–किण्णं तव पुत्ता! सागरएणं दारएणं मुक्का?, अहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ २ पडिविसज्जेइ। तए णं से सागरदत्ते सत्थ०अन्नया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गं ओलोएमाणे२ चिट्ठति, तते णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्गं, तते णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–तुब्भे णं देवा०! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असण४पलोभेहि२गिहं अणुप्पवेसेह २ खंडगमल्लगं खंडघडगं ते एगंते एडेह २ अलंकारियकम्मं कारेह २ ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह २ मणुण्णं असण ४ भोयावेह २ मम अंतियं उवणेह, तए णं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति २ जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवा० २ त्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंति २ त्ता सयं गिहं अणुपवेसिंति२ तं खंडगमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडंति, तते णं से दमगे तं खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया२ सद्देणं आरसति, तए णं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं व०–किण्णं देवाणु०! एस दमगपुरिसे महया२सद्देणं आरसति?, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा एवं व०–एस णं सामी! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया२सद्देणं आरसइ,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥२०३॥

ततेणं से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुंबियपुरिसे एवं व०–मा णं तुब्भे देवा० ! एयस्स दमगस्स तं खंडं जाव एडेह पासे ठवेह जहा णं पत्तियं भवति, तेवि तहेव ठविंति, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति २ सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेंति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुवट्टणेणं गायं उव्वट्टिंति २ उसिणोदगगंधोदएणं सीतोदगेणंण्हाणेंति पम्हलसुकुमालगंधकासाईए गायाइं लूहंति २ हंसलक्खणं पट्टसाडगं परिहेंति २ सव्वालंकारविभूसियं करेंति २ विउलं असण ४ भोयावेंति२ सागरदत्तस्स उवणेन्ति, तए णं सागरदत्ते सूमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकारभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं व०–एस णं देवा० मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि भद्दियाए भद्दतो भविज्जासि, तते णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसति सूमालियाए दा० सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तते णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति २ वासघराओ निग्गच्छति २ खंडमल्लगं खंडघडं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, तते णं सा सूमालिया जाव गए णं से दमगपुरिसेत्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायति (सूत्रं ११२) तते णं सा भद्दा कल्लं पाउ०दासचेडिं सद्दावेति २ एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेति, तते णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवा० २

१६ अपरकङ्काज्ञाता. द्रमककृतस्त्यागः सू. ११२

॥२०३॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूमालियं दारियं अंके निवेसेति २ एवं व०–अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरापोराणेणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं मा णं तुमं पुत्ता ! ओहयमण जाव झियाहि तुमं णं पुत्ता मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि, तते णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेति२ महाणसंसि विपुलं असण जाव दलमाणी विहरइ। तेणं कालेणं २ गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वदासी–एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा, जस्स २ विय णं दिज्जामि तस्स २ विय णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जे णं अहं सागरस्स दार० इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छति जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया, तते णं सा सूमालिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव बंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरति, तते णं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवा० २ वंदति नमंसति२ एवं व०–इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए, तते णं ताओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं व०–अम्हे णं अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पति बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं २ जाव विहरित्तए, कप्पति णं अम्हं अंतो उवस्सयस्स वतिपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपतियाए आयावित्तए, तते णं सा सूमालिया गोवालिया एयमट्ठं नो सद्दहति नो पत्तियइ नो रोएति एयमट्ठं अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरति (सूत्रं ११३)

सुकुमालककोमलिकां–अत्यर्थं सुकुमारां, गजतालुसमानां, गजतालुकं ह्यत्यर्थं सुकुमालं भवतीति, 'जुत्तं वे'त्यादि युक्तं–सङ्गतं 'पत्तं'ति प्राप्तं प्राप्तकालं पात्रं वा गुणानामेष पुत्रः, श्लाघनीयं वा सदृशो वा संयोगो विवाह्ययोरिति, 'से जहा नामए असिपत्तेइ वा'इत्यत्र यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं 'करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा कलंबचीरिगापत्तेइ वा सत्तिअग्गेति वा कोंतग्गेति वा तोमरग्गेति वा भिंडिमालग्गेइ वा सूचिकलावएति वा विच्छुयडंकेइ वा कविकच्छूइ वा इंगालेइति वा मुम्मुरेति वा अच्चीइ वा जालेंइ वा अलाएति वा सुद्धागणीइ वा, भवेतारूवे?, नो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुन्नतराए चेव अमणामतराए चेव'त्ति तत्रासिपत्रं–खड्गः करपत्रं–ककचं क्षुरपत्रं–क्षुरः कदम्बचीरिकादीनि लोकरूढ्याऽवसेयानि, वृश्चिकडङ्कः–वृश्चिककण्टकः, कपिकच्छुः–खर्ज्जुकारी वनस्पतिविशेषः, अङ्गारो–विज्वालोऽग्निकणः मुर्मुरः–अग्निकणमिश्रं भस्म अर्चिः–इन्धनप्रतिबद्धा ज्वाला ज्वाला तु–इन्धनच्छिन्ना अलातं–उल्मुकं शुद्धाग्निः–अयस्पिण्डान्त-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

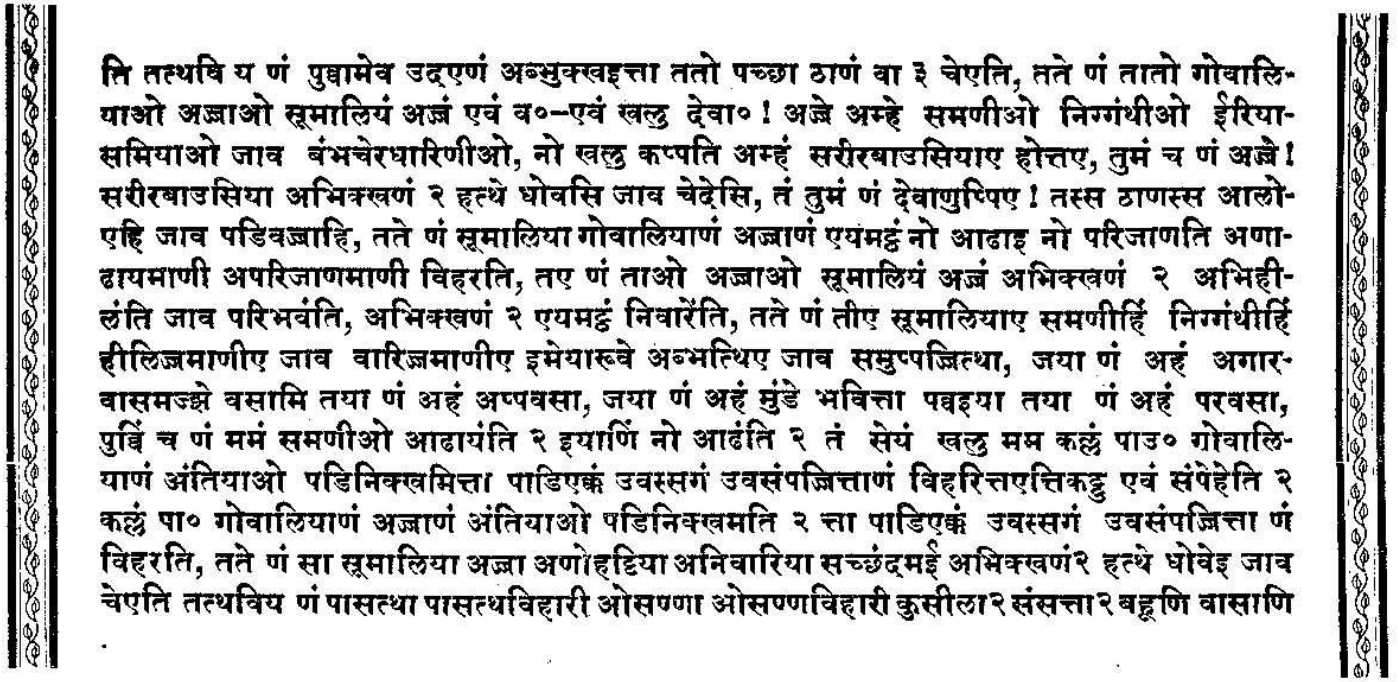
गतोऽग्निरिति 'अकामए'त्ति अकामको–निरभिलाषः, 'अवस्सवसे'त्ति अपस्ववशः, अपगतात्मतन्त्र इत्यर्थः, 'तल्लिंसि निवज्जइ'त्ति तल्पे–शयनीये निषद्यते–शेते 'पइंवय'त्ति पतिं–भर्त्तारं व्रतयति–तमेवाभिगच्छामीत्येवं नियमं करोतीति पतिव्रता, पतिमनुरक्ता–भर्त्तारं प्रति रागवतीति, 'मारामुक्केविव काए'त्ति मार्यन्ते प्राणिनो यस्यां शालायां सा मारा–शूना तस्या मुक्तो यः स मारामुक्तो माराद्वा–मरणान्मारकपुरुषाद्वा मुक्तो–विच्छुटितः काको–वायसः, 'वहुवरस्स'त्ति वधूश्च वरश्च वधूवरं तस्य, 'कुलाणुरूवं'ति कुलोचितं वणिजां वाणिज्यमिव 'कुलसरिसं'ति श्रीमद्वणिजां रत्नवाणिज्यमिव 'अदिट्ठदोसवडियं'ति न दृष्टे–उपलभ्यस्वरूपे दोषे–दूषणे पतिता–समापन्ना अदृष्टदोषपतिता तां, 'खिज्जणियाहिं'ति खेदक्रियाभिः रुण्टनकादिभिः–रुदितक्रियाभिः, 'मरुप्पवायं व'त्ति निर्जलदेशप्रपातं 'सत्थोवाडणं'ति शस्त्रेणावपाटनं–विदारणमात्मन इत्यर्थः, 'गिद्धपट्ठं'ति गृध्रस्पृष्टं–गृध्रैः स्पर्शनं कडेवराणां मध्ये निपत्य गृध्रैरात्मनो भक्षणमित्यर्थः, 'अब्भुवेज्जामि'त्ति अभ्युपैमि 'पुरा पोराणाण'मित्यत्र यावत्करणादेवं द्रष्टव्यं 'दुच्चिण्णाणं दुप्परक्कंताणं कडाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं'ति अयमर्थः–पुरा–पूर्वभवेषु पुराणानां–अतीतकालभाविनां तथा दुश्चीर्ण–दुश्चरितं मृषावादनपारदार्यादि तद्धेतुकानि कर्माण्यपि दुश्चीर्णानि व्यपदिश्यन्ते अतस्तेषामेव दुष्पराक्रान्तानां नवरं दुष्पराक्रान्तं–प्राणिघातादत्तापहारादिकृतानां प्रकृत्यादिभेदेन, पुराशब्दस्येह सम्बन्धः,पापानां–अपुण्यरूपाणां 'कर्मणां' ज्ञानावरणादीनां पापकं–अशुभं 'फलवृत्तिविशेषं' उदयवर्त्तनभेदं 'प्रत्यनुभवन्ती' वेदयन्ती 'विहरसि' वर्त्तसे, 'कप्पइ णं अम्हं'इत्यादि 'अम्हं'ति अस्माकं मते प्रव्रजिताया इति गम्यते, अन्तः–मध्ये 'उपाश्रयस्य' वसतेर्वृत्तिपरिक्षिप्तस्य परेषामनालोकवत इत्यर्थः, 'संघाटी' निर्ग्रन्थिकाप्रच्छदविशेषः सा बद्धा–निवे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शिता काये इति गम्यते यया सा संघाटीबद्धिका तस्याः, णमित्यलङ्कारे समतले द्वयोरपि भुवि विन्यस्तलात् पदे–पादौ यस्याः सा समतलपदिका तस्याः 'आतापयितुं' आतापनां कर्तुं कल्पते इति योगः ।

तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसति, नरवइदिण्णवि(प)यारा अम्मापिइनिययनिप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्ढा जाव अपरिभूया, तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था सुकुमाला जहा अंडणाए,तते णं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरति एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ एगे पुप्फपूरयं रएइ एगे पाए रएइ एगे चामरुक्खेवं करेइ, तते णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीं पासति २ इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था–अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ, तं जति णं केइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमबंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामित्तिकट्टु नियाणं करेति २ आयावणभूमिओ पच्चोरुहति (सूत्रं ११४) तते णं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ थणंतराइं धोवेइ कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेए-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ति तत्थवि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता ततो पच्छा ठाणं वा ३ चेएति, तते णं तातो गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं व०–एवं खलु देवा० ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणीओ, नो खलु कप्पति अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे ! सरीरबाउसिया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव चेदेसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तते णं सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणति अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरति, तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं २ अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तते णं तीए सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जया णं अहं अगारवासमज्झे वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जया णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा, पुव्विं च णं ममं समणीओ आढायंति २ इयाणिं नो आढंति २ तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सगं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमति २ त्ता पाडिएक्कं उवस्सगं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तते णं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवेइ जाव चेएति तत्थवि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ संसत्ता२ बहूणि वासाणि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सामण्णपरियागं पाउणति अद्धमासियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगतियाणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, तत्थ णं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता (सूत्रं ११५)

'ललिय'त्ति क्रीडाप्रधाना 'गोट्ठि'त्ति जनसमुदायविशेषः 'नरवइदिन्नपयार'त्ति नृपानुज्ञातकामचारा 'अम्मापिइनियगनिप्पिवास'त्ति मात्रादिनिरपेक्षा 'वेसविहारकयनिकेय'त्ति वेश्याविहारेषु–वेश्यामन्दिरेषु कृतो निकेतो–निवासो यया सा तथा, 'नाणाविहअविणयप्पहाणा' कण्ठ्यं 'पुप्फपूरयं रएइ'त्ति पुष्पशेखरं करोति, 'पाए रएइ' पादावलक्तादिना रञ्जयति, पाठान्तरे 'रावेइ'त्ति घृतजलाभ्यामार्द्रयति, 'सरीरबाउसिय'ंति बकुशः–शबलचरित्रः स च शरीरत उपकरणतश्चेत्युक्तं शरीरबकुशा–तद्विभूषानुवर्त्तिनीति, 'ठाणं'ति कायोत्सर्गस्थानं निषदनस्थानं वा 'शय्यां' लग्वर्त्तनं 'नैषेधिकीं' स्वाध्यायभूमिं चेतयति–करोति, 'आलोएहि जावे'त्यत्र यावत्करणात् 'निन्दाहि गरिहाहि पडिक्कमाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठेहि अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जाहि'त्ति दृश्यमिति, तत्रालोचनं–गुरोर्निवेदनं निन्दनं–पश्चात्तापो गर्हणं–गुरुसमक्षं निन्दनमेव प्रतिक्रमणं–मिथ्यादुष्कृतदानलक्षणं अकृत्यान्निवर्त्तनं वा वित्रोटनं–अनुबन्धच्छेदनं विशोधनं–व्रतानां पुनर्नवीकरणं शेषं कण्ठ्यमिति, 'पडिएक्कं'ति पृथक्, 'अणोहट्टिय'त्ति अविद्यमानोऽपघट्टको–यदृच्छया प्रवर्त्तमानायाः हस्तग्राहादिना निवर्त्तको यस्याः सा तथा, तथा नास्ति निवारको–मैवं कार्षीरित्येवं निषेधको यस्याः सा तथा।

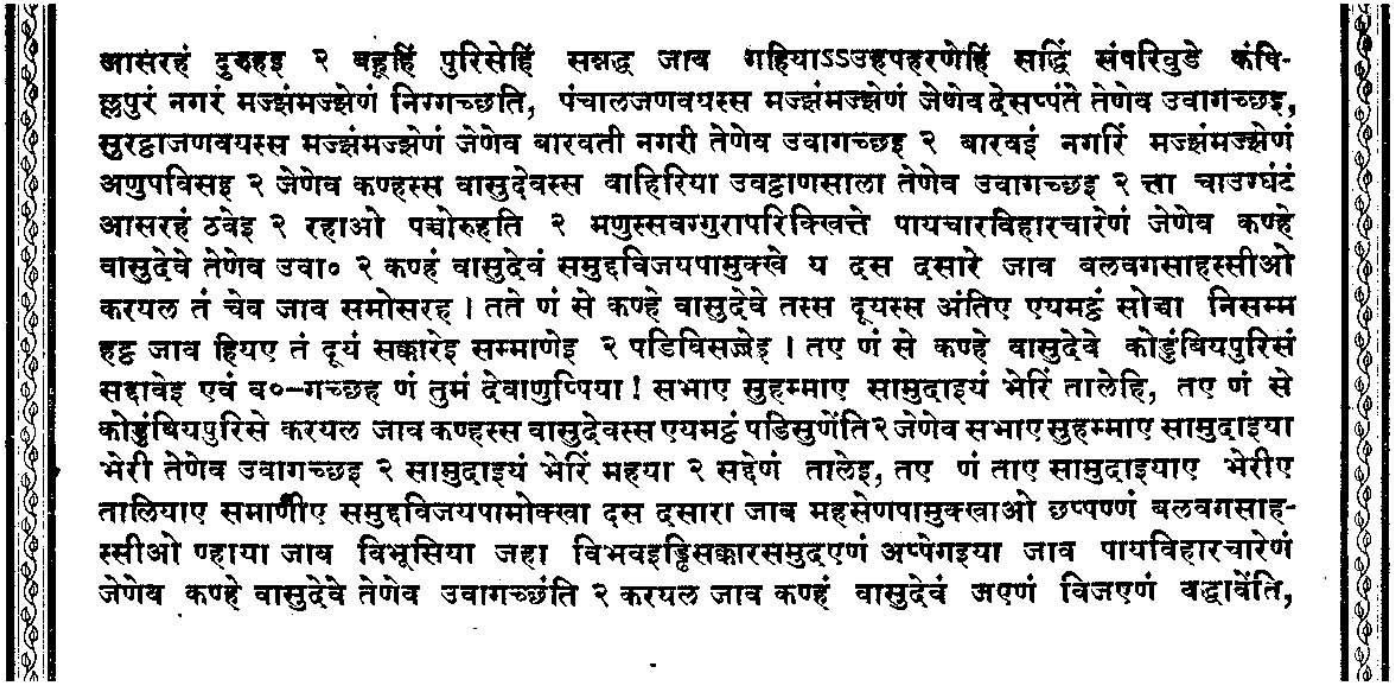
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नगरे होत्था, वन्नओ, तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था, वन्नओ, तस्स णं चुलणी देवी धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तए णं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुपयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया, तते णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया, तते णं तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं० नामं० जम्हा णं एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तिया तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई,तए णं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गुणं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवती, तते णं सा दोवई दारिया पंचधाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीण इव चंपगलया निवायनिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ । तते णं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तते णं तं दोवतिं रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंतेउरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति २ दुवयस्स रण्णो पायवंदिउं पेसंति, तते णं सा दोवती राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ २ दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेति, तए णं से दुवए राया दोवतिं दारियं अंके निवेसेइ २ दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं व०– जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि तत्थ णं तुमं सुहिया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वा दुक्खिया वा भविज्जासि, तते णं ममं जावजीवाए हिययडाहे भविस्सइ, तं णं अहं तव पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्णं सयंवरा जेणं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइत्तिकट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ २ पडिविसज्जेइ । (सूत्रं ११६) तते णं से दुवए राया दूयं सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुमं देवा० ! बारवइं नगरिं तत्थ णं तुमं कण्हं वसुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे बलदेवपामुक्खे पंच महावीरे उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्धट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुइंतसाहस्सीओ वीरसेणपामुक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसिट्ठिसेणावइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि२ एवं वयाहि–एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ तं णं तुब्भे देवा० ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह,तए णं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेंति२ जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तए णं से दूए ण्हाते जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घंटं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



आसरहं दुरुहइ २ बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंचिछपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव बारवती नगरी तेणेव उवागच्छइ २ बारवइं नगरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ २ जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं ठवेइ २ रहाओ पच्चोरुहति २ मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायचारविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा० २ कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह। तते णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ २ पडिविसज्जेइ। तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ एवं व०–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि, तए णं से कोडुंबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ २ सामुदाइयं भेरिं महया २ सद्देणं तालेइ, तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ छप्पण्णं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभवइड्ढिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति २ करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगय जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवाग०२समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे,तते णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणापामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइनयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ २ पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थगमणाए। तए णं से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ२ एवं व०–गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरं नगरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणीं कीवं आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह, तए णं से दूए एवं व०–जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २। एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्हं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमगं दूयं हत्थसीसनयरं तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नगरं तत्थ णं तुमं सह-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

देवं जरासिंधुसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थ णं तुमं रूप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कियगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु य गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह, तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह। तए णं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ० तं दूयं सक्कारेंति २ सम्माणेंति २ पडिविसर्जेंति, तए णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं२ ण्हाया सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह०महया भडचडगररहपहकर०सएहिं २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति २ जेणेव पंचालेजणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए। (सूत्रं ११७) तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०–गच्छह णं तुमं देवाणु०! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह तेवि करेत्ता पच्चप्पिणंति, तए णं दुवए वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं २ हत्थिखंधजावपरिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सविड्ढिए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ २ जेणेव ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ २ ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेति सम्माणेइ २ तेसिं वासुदेव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरति, तए णं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवा० २ हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति २ पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति २ सए२ आवासे अणुपविसंति २ सएसु२आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति,तते णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नगरं अणुपविसति२विउलं असण ४ उवक्खडावेइ २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं ४ सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह, तेवि साहरंति, तते णं ते वासुदेवपामुक्खा तं विपुलं असणं ४ जाव पसन्नं च आसाएमाणा ४ विहरंति, जिमियभुत्तुत्तरागयाविय णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति, तते णं से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं व०– गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे संघाडग जाव पहे वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया २ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा२ एवं वदह–एवं खलु देवाणु० कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुण्णस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवा० ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामर० हयगयरह० महया भडचरगरेणं जाव परिक्खित्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवा० २ पत्तेयं नामंकेसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायकण्णं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह, घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह,तए णं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दा० २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवाणु० ! सयंवरमंडपं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कजाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह २ वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं २ नामंकाइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तेवि जाव पच्चप्पिणंति, तते णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामराहिं हयगय जाव परिखुडा सविड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवा० २ अणुपविसंति २ पत्तेयं २ नामंकेसु निसीयंति दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा चिट्ठंति, तए णं से पंडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवा० २ तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल० वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति (सूत्रं ११८) तए णं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ २ ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जिणघरे तेणेव उवागच्छइ २ जिणघरं अणुपविसइ २ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ २ लोमहत्थयं परामुसइ एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ २ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ २ वामं जाणुं अञ्चेति दाहिणं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेति२ तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ२ ईसिं पच्चुण्णमति करयल जाव कट्टु एवं वयासी–नमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमंसइ २ जिणघराओ पडिनिक्खमति २ जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ (सूत्रं ११९)

'अज्जयाए'त्ति अद्यप्रभृति, 'अग्घं च'त्ति अर्घं पुष्पादीनि पूजाद्रव्याणि, 'पज्जं च'त्ति पादहितं पाद्यं–पादप्रक्षालनस्नेहनोद्वर्त्तनादि, मद्यसीधुप्रसन्नाख्याः सुराभेदा एव, 'जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ'त्ति एकस्यां वाचनायामेतावदेव दृश्यते, वाचनान्तरे तु 'ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छति २ जिणघरं अणुपविसइ २ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ २ लोमहत्थयं परामुसइ २ एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेति तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ'त्ति इह यावत्करणात् अर्थत् इदं दृश्यं–लोमहस्तकेन जिनप्रतिमाः प्रमार्ष्टि सुरभिणा गन्धोदकेन स्नपयति गोशीर्षचन्दनेनानुलिम्पति वस्त्राणि निवासयति, ततः पुष्पाणां माल्यानां–ग्रथितानामित्यर्थः, गन्धानां चूर्णानां वस्त्राणामाभरणानां चारोपणं करोति स्म, मालाकलापावलम्बनं पुष्पप्रकरं तन्दुलैर्दर्पणाद्यष्टमङ्गलालेखनं च करोति, 'वामं जाणुं अञ्चेइ'त्ति उत्क्षिपतीत्यर्थः, दाहिणं जाणुं धरणीतलंसि निहट्टु–निहत्य स्थापयित्वेत्यर्थः, 'तिक्खुत्तो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुद्धाणं धरणीतलंसि निवेसेइ–निवेशयतीत्यर्थः, 'ईसिं पच्चुन्नमति २ करतलपरिग्गहियं अंजलिं मत्थए कट्टु एवं वयासी–नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं वंदति नमंसति २ जिणघराओ पडिनिक्खमइ'त्ति तत्र वन्दते चैत्यवन्दनविधिना प्रसिद्धेन नमस्यति पश्चात् प्रणिधानादियोगेनेति वृद्धाः, न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैत्यवन्दनमभिहितं सूत्रे इति सूत्रमात्रप्रामाण्यादन्यस्यापि श्रावकादेस्तावदेव तदिति मन्तव्यं, चरितानुवादरूपत्वादस्य, न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति, अन्यथा सूरिकाभादिदेववक्तव्यतायां बहूनां शस्त्रादिवस्तूनामर्चनं श्रूयते इति तदपि विधेयं स्यात्, किञ्च–अविरतानां प्रणिपातदण्डकमात्रमपि चैत्यवन्दनं सम्भाव्यते, यतो वन्दते नमस्यतीति पदद्वयस्य वृद्धान्तरव्याख्यानमेवमुपदर्शितं **जीवाभिगमवृत्तिकृता**–"विरतिमतामेव प्रसिद्धचैत्यवन्दनविधिर्भवति, अन्येषां तथाऽभ्युपगमपुरस्सरकायोत्सर्गासिद्धेः, ततो वन्दते सामान्येन नमस्करोति आशयवृद्धेः श्रीत्युत्थानरूपनमस्कारेणे"ति किञ्च–"समणेण सावएण य अवस्स कायव्वयं हवइ जम्हा। अंतो अहो निसिस्स य तम्हा आवस्सयं नाम ॥१॥" तथा "जण्णं समणो वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तल्लेसे तम्मणे उभओ कालं आवस्सए चिट्ठति तन्नं लोउत्तरिए भावावस्सए" [श्रमणेन श्रावकेण चावश्यं कर्तव्यं भवति यस्मात्। अन्तरहो निशायाश्च तस्मादावश्यकं नाम ॥ १ ॥ यत् श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तच्चित्तः तन्मनाः तल्लेश्यः उभयस्मिन् काले आवश्यकाय तिष्ठति तत् लोकोत्तरिकं भावावश्यकं] इत्यादेरनुयोगद्वारवचनात्, तथा 'सम्यग्दर्शनसम्पन्नः प्रवचनभक्तिमान् षड्विधावश्यकनिरतः षट्स्थानयुक्तश्च श्रावको भवती'त्युमास्वातिवाचकवचनाच्च श्रावकस्य षड्विधावश्यकस्य सिद्धावावश्यकान्तर्गतं प्रसिद्धं चैत्यवन्दनं सिद्धमेव भवतीति।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ततेणं तं दोवइं रायवरकन्नं अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति किं ते ? वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ पडिणिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवा० २ किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति, ततेणं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवतीए कण्णाए सारत्थं करेति, ततेणं सा दोवती रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवा० २ रहं ठवेति रहाओ पच्चोरुहति २ किड्डावियाए लेहियाए य सद्धिं सयंवरं मंडपं अणुपविसति करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेति, ततेणं सा दोवती रायवर० एगं महं सिरिदामगंडं किं ते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्वणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गिण्हति, ततेणं सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्ललगदप्पणं गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंबं संदंसिए य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसिए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसामत्थगोत्तविक्कंतिकंतिबहुविहआगममाहप्पसरूवजोव्वणगुणलावण्णकुलसीलजाणिया कित्तणं करेइ, पढमं ताव वण्हिपुंगवाणं दसदसारवीरपुरिसाणं तेलोक्कबलवगाणं सत्तुसयसहस्समाणावमद्दगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्ललगाणं बलवीरियरूवजोव्वणगुणलावन्नकित्तिया कित्तणं करेति, ततो पुणो उग्गसेणमाईणं जायवाणं, भणति य–सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिस-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गंधहत्थीणं। जो हु ते होइ हिययदइओ, तते णं सा दोवई रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झंमज्झेणं समतिच्छमाणी २ पुव्वकयणियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवा० २ ते पंचपंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदाणेणं आवेढियपरिवेढियं करेति २ त्ता एवं वयासी–एए णं मए पंच पंडवा वरिया, तते णं तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि महया२सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयंति–सुवरियं खलु भो ! दोवइए रायवरकन्नाए२त्तिकट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति २ जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवा०, तते णं धट्ठज्जुण्णे कुमारे पंच पंडवे दोवतिं रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति २ त्ता कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं जाव सयं भवणं अणुपविसति, तते णं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकण्णं पट्टयं दुरूहेति२ सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेति २ अग्गिहोमं कारवेति पंचण्हं पंडवाणं दोवतीए य पाणिग्गहणं करावेइ, तते णं से दुवए राया दोवतीए रायवरकण्णयाए इमं एयारूवं पीतिदाणं दलयती, तंजहा–अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विपुलं धणकणग जाव दलयति तते णं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं विपुलेणं असण ४ वत्थगंध जाव पडिविसज्जेति (सूत्रं १२०) तते णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रा० करयल एवं व०–एवं खलु देवा० ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवतीए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सति तं तुब्भे णं देवा० ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह, तते णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं२ जाव पहारेत्थ गमणाए । तते णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दा० २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! हत्थिणाउरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह अब्भुग्गय-मूसिय वण्णओ जाव पडिरूवे, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव करावेंति, तते णं से पंडुए पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हयगयसंपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ२ जेणेव हत्थि-णाउरे तेणेव उवागए, तते णं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबि० सद्दावेइ २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे कारेह अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तते णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छन्ति, तते णं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलि० जहा दुपए जाव जहारिहं आवासे दलयति, तते णं ते वासुदेवपा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइं २ आवासाइं तेणेव उवा० तहेव जाव विहरंति, तते णं से पंडुराया हत्थिणाउरं णयरं अणुपविसति २ कोडुंबिय० सद्दावेति २ एवं व०–तुब्भे णं देवा० ! विउलं असण ४ तहेव जाव उवणेंति, तते णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा तं विपुलं असणं ४ तहेव जाव विहरंति, तते णं से पंडुराया पंच पंडवे दोवतिं च देविं पट्टयं दुरूहेति २ सीया-पीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति २ कल्लाणकारं करेंति २ ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विपुलेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

असण ४ पुप्फवत्थेणं सक्कारेंति सम्माणेंति जाव पडिविसज्जेंति, तते णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहुहिं जाव पडिगयातिं(सूत्रं१२१) तते णंते पंच पंडवा दोवतीए देवीए सद्धिं अंतो अंतेउरपरियाल सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं ओरालातिं भोगभोगाइं जाव विहरति, तते णं से पंडू राया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवतीए देवीए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगते यावि विहरति, इमं च णं कच्छुल्लणारए दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो २ य कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवत्थे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे हत्थकयकच्छभीए पियगंधवे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणओवयणउप्पयणिलेसणीसु य संकामणिअभिओगपण्णत्तिगमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धणिसढउम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुहातीण जायवाणं अद्धट्ठाण कुमारकोडीणं हिययदइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भंडणाभिलासी बहुसु य समरसयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहसदक्खिणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाणं आमंतेऊण तं भगवतीं एक्कमणिं गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागरनगरखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणसंवाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीतलं वसुहं ओलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण समो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वइए, तते णं से पंडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासति २ पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणातो अब्भुट्ठेति २ कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ२ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति णमंसति महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, तते णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति २ पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तते णं से पंडुराया कोंतीदेवी पंच य पंडवा कच्छुल्लणारयं आढंति जाव पज्जुवासंति, तए णं सा दोवई कच्छुल्लनारयं अस्संजयं अविरयं अपडिहयपच्चक्खायपावकम्मंतिकट्टु नो आढाति नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेति नो पज्जुवासति (सूत्रं १२२) तते णं तस्स कच्छुल्लणारयस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था अहो णं दोवती देवी रूवेणं जाव लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अणुबद्धा समाणी ममं णो आढाति जाव नो पज्जुवासइ तं सेयं खलु मम दोवतीए देवीए विप्पियं करित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ पंडुरायं आपुच्छइ २ उप्पयणिं विज्जं आवाहेति २ ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवतिउं पयत्ते यावि होत्था । तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहवासे अवरकंका णाम रायहाणी होत्था, तते णं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया होत्था महया हिमवंत० वण्णओ, तस्स णं पउमनाभस्स रन्नो सत्त देवीसयाति ओरोहे होत्था, तस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवरायावि होत्था, तते णं से पउमणाभे राया अंतो अंतेउरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरति, तए णं से कच्छुल्लणारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाहस्स भवणे तेणेव उवागच्छति २ पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि झत्ति वेगेणं समोवइए, तते णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लं नारयं एज्जमाणं पासति २ आसणातो अब्भुट्ठेति २ अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेति, तए णं से कच्छुल्लनारए उदयपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाते भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ, तते णं से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं व०–तुब्भं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाति अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुवे जारिसए णं मम ओरोहे ?, तते णं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ २ एवं व०–सरिसे णं तुमं पउमणाभा! तस्स अगडदद्दुरस्स, के णं देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ?, एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवा० ! जंबूदीवे २ भारहे वासे हत्थिणाउरे दुपयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवती देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा दोवईए णं देवीए छिन्नस्सवि पायंगुट्ठयस्स अयं तव ओरोहे सतिमंपि कलं ण अग्घतित्तिकट्टु, पउमणाभं आपुच्छति २ जाव पडिगए २, तते णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म दोवतीए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

देवीए रूवे य ३ मुच्छिए ४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उव० २ पोसहसालं जाव पुव्वसंगतियं देवं एवं व०–एवं खलु देवा० ! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा तं इच्छामि णं देवा० ! दोवतीं देवीं इहमाणियं, तते णं पुव्वसंगतिए देवे पउमनाभं एवं व०–नो खलु देवा० ! एयं भूयं वा भवं वा भविस्सं वा जण्णं दोवती देवी पंच पंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालातिं जाव विहरिस्सति, तहावि य णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवतीं देविं इहं हव्वमाणेमित्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ २ ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तेणं कालेणं २ हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया दोवतीए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तए णं से पुव्वसंगतिए देवे जेणेव जुहिट्ठिले राया जेणेव दोवती देवी तेणेव उवाग० २ दोवतीए देवीए ओसोवणियं दलयइ २ दोवतिं देविं गिण्हइ २ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवा० २ पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवतिं देविं ठावेइ २ ओसोवणिं अवहरति २ जेणेव पउमणाभे तेणेव उ० २ एवं व०–एस णं देवा० ! मए हत्थिणाउराओ दोवती इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठति, अतो परं तुमं जाणसित्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए । तते णं सा दोवई देवी ततो मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं व०–नो खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

असोगवणिया, तं ण णज्जति णं अहं केणई देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरियत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति, तते णं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकारभूसिए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवती देवी तेणेव उवा० २ दोवतीं देवीं ओहय० जाव झियायमाणीं पासति २ त्ता एवं व०–किण्णं तुमं देवा० ! ओहय जाव झियाहि ?, एवं खलु तुमं देवा० ! मम पुव्वसंगतिएणं देवेणं जंबुद्दीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहरिया तं मा णं तुमं देवा० ! ओहय० जाव झियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि, तते णं सा दोवती देवी पउमणाभं एवं व०–एवं खलु देवा० ! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे बारवतिए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसति, तं जति णं से छण्हं मासाणं ममं कूवं नो हव्वमागच्छइ तते णं अहं देवा० ! जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि, तते णं से पउमे दोवतीए एयमट्ठं पडिसुणेत्ता२ दोवतिं देविं कण्णंतेउरे ठवेति, तते णं सा दोवती देवी छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणी विहरति (सूत्रं१२३) तते णं से जुहुट्ठिले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवतिं देविं पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ २ त्ता दोवतीए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ २ त्ता दोवतीए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अल-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भमाणे जेणेव पंडुराया तेणेव उवा० २ त्ता पंडुरायं एवं व०–एवं खलु ताओ! ममं आगासतलगंसि पसुत्तस्स पासातो दोवती देवी ण णज्जति केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा?, इच्छामि णं ताओ! दोवतीए देवीए सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं कयं, तते णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं व०–एवं खलु देवा० ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासातो दोवती देवी ण णज्जति केणइ देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा, तं जो णं देवाणुप्पिया! दोवतीए देवीए सुतिं वा जाव पवित्तिं वा परिकहेति तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयतित्तिकट्टु घोसणं घोसावेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से पंडू राया दोवतीए देवीए कत्थति सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुमं देवाणु०! बारवतिं णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि, कण्हे णं परं वासुदेवे दोवतीए मग्गणगवेसणं करेज्जा, अन्नहा न नज्जइ दोवतीए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा, तते णं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ २ ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ२ कुरु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवती णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवा० २ हत्थिखंधाओ पच्चोरुहति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दा० २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! जेणेव बारवई णयरिं बारवतिं णयरिं अणुपविसह २ कण्हं वासुदेवं करयल एवं वयह–एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखति, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति, तते णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय बारवतीए य मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उ० २ हत्थिखंधातो पच्चोरुहति २ कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेति २ कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहति २ बारवतीए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ सयं गिहं अणुपविसति । तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतीं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं व०–संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?, तते णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं व०–एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिलस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स दोवती देवी पासाओ ण णज्जति केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवतीए देवीए मग्गणगवेसणं कयं, तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतीं पिउच्छिं एवं व०–जं णवरं पिउच्छा ! दोवतीए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अड्ढभरहाओ वा समंतओ दोवतिं साहत्थिं उवणेमित्तिकट्टु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कोंतीं पिउत्थिं सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति, तते णं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडि० । तते णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय-पुरिसे सद्दा० २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! बारवतिं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति, पंडुस्स जहा, तते णं से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरति, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोवइए जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, तते णं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं व०–तुमं णं देवा० ! बहूणि गामा जाव अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिं-वि दोवतीए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा ?, तते णं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं व०–एवं खलु देवा० ! अन्नया धायतीसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढभरहवासं अवरकंकारायहाणिं गए, तत्थ णं मए पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि दोवती देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था, तते णं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं व०–तुब्भं चेव णं देवाणु० ! एवं पुव्वकम्मं, तते णं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तते णं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ २ एवं व०–गच्छह णं तुमं देवा० ! हत्थिणाउरं पंडुस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेहि–एवं खलु देवाणु० ! धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवतीए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु, तते णं से दूए जाव भणति, पडिवालेमाणा चिट्ठह, तेवि जाव चिट्ठंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ२ त्ता एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह, तेवि तालेंति, तते णं तीसे सण्णाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगतिया हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुधम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव २ करयल जाव वद्धावेंति, तते णं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय० महया भडचडगरपहकरेणं बारवती णयरी मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवा० २ पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ २ खंधावारणिवेसं करेति २ पोसहसालं अणुपविसति २ सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठति, तते णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगतो, भण देवा० ! जं मए कायवं, तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं एवं व०–एवं खलु देवा० ! दोवती देवी जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया तण्णं तुमं देवा० ! मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्णं अहं अमरकंकारायहाणीं दोवतीए कूवं गच्छामि, तते णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–किण्हं देवा० ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगतिएणं देवेणं दोवती जाव संहरिया तहा चेव दोवतिं देविं धायतीसंडाओ दीवाओ भार-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि?, तते णं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं व०–मा णं तुमं देवा०! जाव साहराहि तुमं णं देवा०! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं मग्गं वियराहि, सयमेव णं अहं दोवतीए कूवं गच्छामि, तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं होउ, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वितरति, तते णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीसेणं पडिविसज्जेति २ पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति २ जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ रहं ठवेइ २ दारुयं सारहिं सद्दावेति एवं व०–गच्छह णं तुमं देवा०! अमरकंकारायहाणीं अणुपविसाहि २ पउमणाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं व०–हं भो पउमणाहा! अपत्थियपत्थिया दुरंतपंतलक्खणा हीणपुन्नचाउद्दसा सिरीहिरिधीपरिवज्जिया अज्ज ण भवसि कित्तं तुमं ण याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवतिं देविं इहं हवं आणमाणे, तं एयमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवतिं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि, एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवतीदेवीए कूवं हव्वमागए, तते णं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ २ अमरकंकारायहाणिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अणुपविसति २ जेणेव पउमनाहे तेणेव उवा० २ करयल जाव वद्धावेत्ता एवं व०–एस णं सामी ! मम विणयपडिवत्ती इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्तित्तिकट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अणुक्कमति २ कोंतग्गेणं लेहं पणामति २ त्ता जाव कूवं हव्वमागए, तते णं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं व०–णो अप्पिणामि णं अहं देवा० ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवतिं, एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामित्तिकट्टु दारुयं सारहिं एवं व०–केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झेत्तिकट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेति, तते णं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उ०२ करयल० कण्हं जाव एवं व०–एवं खलु अहं सामी ! तुब्भं वयणेणं जाव णिच्छुभावेति, तते णं से पउमणाभे बलवाउयं सद्दावेति २ एवं व०–खिप्पामेव भो देवाणु० ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, तयाणंतरं च णं छेयायरियउवदेसमइविकप्पणाविगप्पेहिं जाव उवणेति, तते णं से पउमनाहे सन्नद्ध० अभिसेयं० दूरूहति २ हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं रायाणं एज्जमाणं पासति २ ते पंच पंडवे एवं व०–हं भो दारगा ! किन्नं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ?, तते णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं व०–अम्हे णं सामी ! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह, तते णं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति २ जेणेव पउम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नाभे राया तेणेव उ० २ एवं व०–अम्हे पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तते णं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहियपवरविवडियचिन्धद्धयपडागा जाव दिसोदिसिं पडिसेहेतित्ति, तते णं ते पंच पंडवा पउमनाभेणं रन्ना हयमहियपवरविवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव अधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तते णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं व०–कहण्णं तुब्भे देवाणु० ! पउमणाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा ?, तते णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं व०–एवं खलु देवा० ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरूहामो २ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेति, तते णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं व०–जति णं तुब्भे देवा० ! एवं वयंता अम्हे णो पउमनाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गंता तो णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहियपवर जाव पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुब्भे देवा० ! अहं नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं दुरूहति २ जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवाग० २ सेयं गोखीरहारधवलं तणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुसन्निगासं नियबलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकरं पंचवण्णं संखं परामुसति २ मुहवायपूरियं करेति, तते णं तस्स पउमणाहस्स तेणं संखसद्देणं बलतिभाए हते जाव पडिसेहिए, तते णं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसति वेढो धणुं पूरेति २ धणुसद्दं करेति, तते णं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलतिभाए तेणं धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए, तते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णं से पउमणाभे राया निभागबलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कम्मे अधारणिज्जत्तिकट्टु सिग्घं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उ० २ अमरकंकं रायहाणिं अणुपविसति २ दारातिं पिहेति २ रोहसज्जे चिट्ठति, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उ० २ रहं ठवेति २ रहातो पच्चोरूहति २ वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति, एगं महं णरसीहरूवं विउव्वति २ महया २ सद्देणं पाददद्दरियं करेति, तते णं से कण्हेणं वासुदेवेणं महया २ सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्गपागारगोपुरट्टालयचरियतोरणपल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया, तते णं से पउमणाभे राया अमरकंकं रायहाणिं संभग्ग जाव पासित्ता भीए दोवतिं देविं सरणं उवेति, तते णं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं व०–किण्णं तुमं देवा० ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए गच्छह णं तुमं देवा० ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय ममं पुरतो काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि, पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तते णं से पउमनाभे दोवतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति २ ण्हाए जाव सरणं उवेति २ करयल० एवं व०–दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कम्मे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! जाव खमंतु णं जाव णाहं भुज्जो २ एवंकरणयाएत्तिकट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

दोवतिं देविं साहत्थिं उवणेति, तते णं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं व०–हं भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया ४ किण्णं तुमं ण जाणसि मम भगिणिं दोवतीं देवीं इह हव्वमाणमाणे तं एवमवि गए णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थित्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेति, दोवतिं देविं गिण्हति२ रहं दुरूहेति २ जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवा० २ पंचण्हं पंडवाणं दोवतिं देविं साहत्थिं उवणेति, तते णं से कण्हे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे २ जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए (सूत्रं १२४)

'सारत्थं'ति सारथ्यं सारथिकर्म, 'तए णं सा किड्डाविए'त्यादौ यावत्करणादेवं दृश्यं 'साभाविय०हंसा चोद्दहजणस्स उस्सुयकरं विचित्तमणिरयणबद्धच्छरुहं'ति तत्र क्रीडापिका–क्रीडनधात्री 'साभाविय०हंस'त्ति साङ्गाविकः–अकैतवकृतो घर्षो-घर्षणं यस्य स तथा तं दर्पणमिति योगः, 'चोद्दहजणस्स ऊसुयकरे'ति तरुणलोकस्य औत्सुक्यकरं–प्रेक्षणलम्पटत्वकरं 'विचित्तमणिरयणबद्धच्छरुहं'ति विचित्रमणिरत्नैर्बद्धः छरुको–मुष्टिग्रहणस्थानं यस्य स तथा तं 'चिल्लगं' दीप्यमानं दर्प-म्–आदर्शं 'दप्पणसंकंतबिंबसंदंसिए य से'त्ति दर्पणे सङ्क्रान्तानि यानि राज्ञां बिम्बानि–प्रतिबिम्बानि तैः संदर्शिताः–उपलम्भिता ये ते तथा तांश्च से–तस्या दक्षिणहस्तेन दर्शयति स द्रौपद्या इति प्रक्रमः प्रवरराजसिंहान्, स्फुटमर्थतो विशदं वर्णतः विशुद्धं शब्दार्थदोषरहितं रिभितं–स्वरघोलनाप्रकारोपेतं गम्भीरं–मेघशब्दवत् मधुरं–कर्णसुखकरं भणितं–भाषितं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

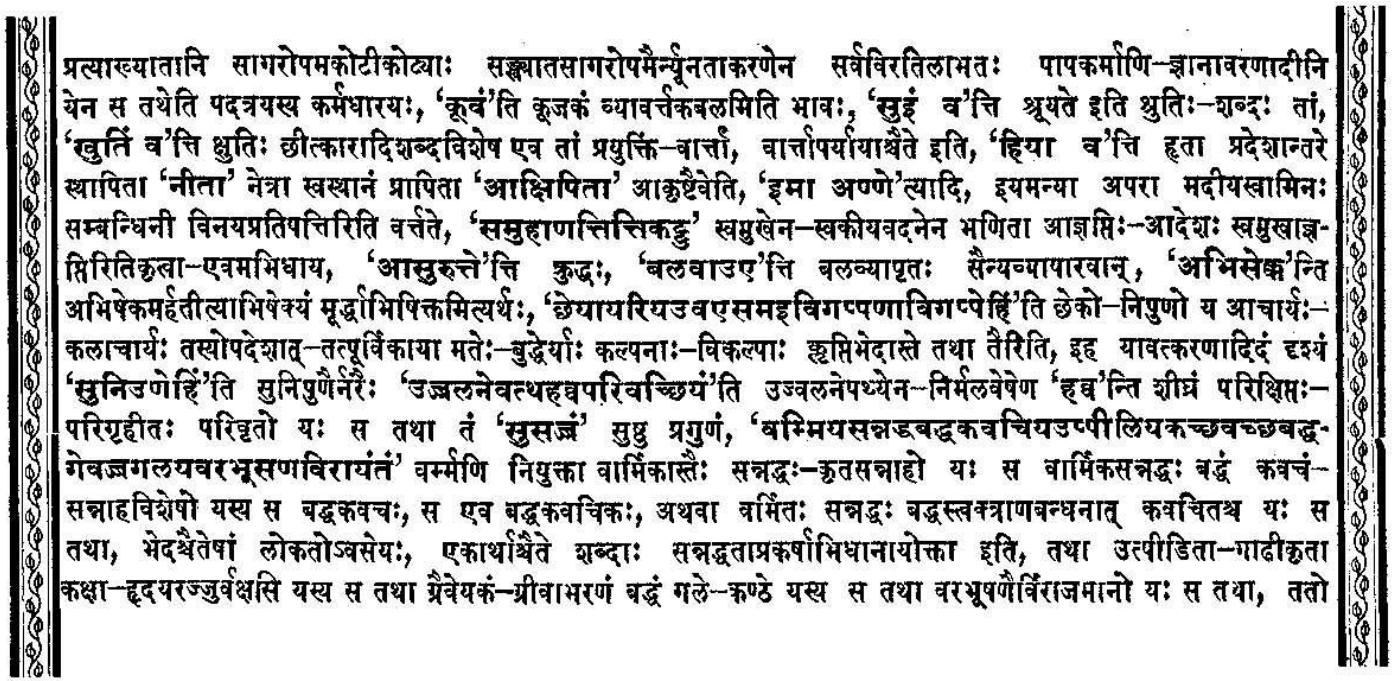
यस्याः क्रीडापिकायाः सा तथा तां, मातापितरौ वंशं–हरिवंशादिकं सत्त्वं–आपत्स्ववैक्लव्यकरमध्यवसानकरं च सामर्थ्यं–बलं गोत्रं–गौतमगोत्रादि विक्रान्तिं–विक्रमं कान्तिं–प्रभां पाठान्तरेण कीर्त्तिं वा–प्ररूयातिं बहुविधागमं–नानाविधशास्त्रविशारदमित्यर्थः माहात्म्यं–महानुभावतां कुलं–वंशस्यावान्तरभेदं शीलं च–स्वभावं जानाति या सा तथा कीर्त्तनं करोति स्मेति, वृष्णिपुङ्गवानां–यदुपुङ्गवानां यदुप्रधानानां दशाराणां–समुद्रविजयादीनां दशारस्य वा–वासुदेवस्य ये वरा वीराश्च पुरुषास्ते तथा ते च ते त्रैलोक्येऽपि बलवन्तश्चेति विग्रहस्ततस्तेषां, शत्रुशतसहस्राणां–रिपुलक्षाणां मानमवमृद्नन्ति ये ते तथा तेषां, तथा भविष्यतीति भवा–भाविनी सा सिद्धिर्येषां ते भवसिद्धिकास्तेषां मध्ये वरपुण्डरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि ये ते तथा तेषां, 'चिल्लगाणं'ति दीप्यमानानां तेजसा तथा बलं–शारीरं वीर्यं–जीवप्रभवं रूपं–शरीरसौन्दर्यं यौवनं–तारुण्यं गुणान्–सौन्दर्यादीन् लावण्यं च–स्पृहणीयतां कीर्त्तयति या सा तथा, क्रीडापिका कीर्त्तनं करोति स्म, पूर्वोक्तमपि किञ्चिद्विशेषाभिधानायाभिहितमिति न दुष्टं, 'समइच्छमाणी'ति समतिक्रामन्ती, 'दूसद्धवण्णेणं'तीह श्रीदामगण्डेन पूर्वगृहीतेनेति सम्बन्धनीयं 'कल्लाणकारे'त्ति कल्याणकरणं मङ्गलकरणमित्यर्थः, 'इमं च णं'ति इतश्च 'कण्हुल्लनारए'त्ति एतन्नामा तापसः, इह कचिद्यावत्करणादिदं दृश्यं, 'दंसणेणं अइभद्दए' भद्रदर्शन इत्यर्थः, 'विणीए अंतो अंतो य कलुसहियए' अन्तरान्तरा दुष्टचित्तः केलीप्रियत्वादित्यर्थः, 'मज्झत्थउवत्थिए य' माध्यस्थ्यं–समतामभ्युपगतो व्रतग्रहणत इति भावः, 'अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे' आलीनानां–आश्रितानां सौम्यं–अरौद्रं प्रियं च दर्शनं यस्य स तथा 'अमइलसगलपरिहिए' अमलिनं सकलं–अखण्डं शकलं वा खण्डं वल्कवास इति गम्यते परिहितं–निवसितं येन स तथा, 'कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवत्थे' कालमृगचर्म उत्त-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रासङ्गेन रचितं वक्षसि येन स तथा 'दंडकमंडलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलावागलधरे' गणेत्रिका–रुद्राक्षकृतं कलाचिकाभरणं मुञ्जमेखला–मुञ्जमयः कटीदवरकः वल्कलं–तरुत्वक्, 'हत्थकयकच्छभीए' कच्छपिका तदुपकरणविशेषः, 'पियगंधव्वे' गीतप्रियः, 'धरणिगोयरप्पहाणे' आकाशगामित्वात्, 'संचरणावरणउवयणिलेसणीसु य संकामणिअभिओगपण्णत्तिगमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे' इह सञ्चरण्यादिविद्यानामर्थः शब्दानुसारतो वाच्यः, 'विज्जाहरिसु'त्ति विद्याधरसम्बन्धिनीषु विश्रुतयशाः–ख्यातकीर्त्तिः, 'इट्ठे रामस्स केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धनिसढउम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुहाईणं जायवाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं हियय्यदइए' वल्लभ इत्यर्थः, 'संथवे' एतेषां संस्तावकः, 'कलहजुद्धकोलाहलप्पिए' कलहो–वाग्युद्धं युद्धं तु–आयुधयुद्धं कोलाहलो–बहुजनमहाध्वनिः, 'भंडणाभिलासी' भंडनं पिष्टातकादिभिः 'बहुसु य समरसंपराएसु' समरसङ्ग्रामेष्वित्यर्थः, 'दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं' सदानमित्यर्थः, 'अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाणं आमंतेऊणं तं भगवंतं एक्कमणिं गमणत्थं उप्पइओ गगणतलमभिलंघयंतो गामागरनगरखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणसंबाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीयं णिब्भरजनपदं वसुहं ओलोयंतो रम्मं हत्थिणपुरं उवागए' 'असंजयअविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मेत्तिकट्टु' असंयतः संयमरहितत्वात् अविरतो विशेषतस्तपस्यरतत्वात् न प्रतिहतानि–न प्रतिषेधितानि अतीतकालकृतानि निन्दनतः न प्रत्याख्यातानि च भविष्यत्कालभावीनि पापकर्माणि–प्राणातिपातादिक्रिया येन अथवा न प्रतिहतानि सागरोपमकोटीकोट्यन्तःप्रवेशनेन सम्यक्त्वलाभतः न च

॥२२०॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



प्रत्याख्यातानि सागरोपमकोटीकोट्याः सङ्ख्यातसागरोपमैर्न्यूनताकरणेन सर्वविरतिलाभतः पापकर्माणि–ज्ञानावरणादीनि येन स तथेति पदत्रयस्य कर्मधारयः, 'कूवं'ति कूजकं व्यावर्त्तकबलमिति भावः, 'सुइं व'त्ति श्रूयते इति श्रुतिः–शब्दः तां, 'खुर्तिं व'त्ति क्षुतिः छीत्कारादिशब्दविशेष एव तां प्रयुक्तिं–वार्त्तां, वार्त्तापर्यायाश्चैते इति, 'हिया व'त्ति हृता प्रदेशान्तरे स्थापिता 'नीता' नेत्रा स्वस्थानं प्रापिता 'आक्षिपिता' आकृष्टेवेति, 'इमा अण्णे'त्यादि, इयमन्या अपरा मदीयस्वामिनः सम्बन्धिनी विनयप्रतिपत्तिरिति वर्त्तते, 'सम्मुहाणत्तित्तिकट्टु' स्वमुखेन–स्वकीयवदनेन भणिता आज्ञप्तिः–आदेशः स्वमुखाज्ञप्तिरितिकृत्वा–एवमभिधाय, 'आसुरुत्ते'त्ति क्रुद्धः, 'बलवाउए'त्ति बलव्यापृतः सैन्यव्यापारवान्, 'अभिसेक्क'न्ति अभिषेकमर्हतीत्याभिषेक्यं मूर्द्धाभिषिक्तमित्यर्थः, 'छेयायरियउवएसमइविगप्पणाविगप्पेहिं'ति छेको–निपुणो य आचार्यः–कलाचार्यः तस्योपदेशात्–तत्पूर्विकाया मतेः–बुद्धेर्याः कल्पनाः–विकल्पाः क्रमिभेदास्ते तथा तैरिति, इह यावत्करणादिदं दृश्यं 'सुनिउणेहिं'ति सुनिपुणैर्नरैः 'उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छियं'ति उज्वलनेपथ्येन–निर्मलवेषेण 'हव्व'न्ति शीघ्रं परिक्षिप्तः–परिगृहीतः परिवृतो यः स तथा तं 'सुसज्जं' सुष्ठु प्रगुणं, 'वम्मियसन्नद्धबद्धकवचियउप्पीलियकच्छवच्छबद्धगेवज्जगलयवरभूसणविरायंतं' वर्म्मणि नियुक्ता वार्मिकास्तैः सन्नद्धः–कृतसन्नाहो यः स वार्मिकसन्नद्धः बद्धं कवचं–सन्नाहविशेषो यस्य स बद्धकवचः, स एव बद्धकवचिकः, अथवा वर्मितः सन्नद्धः बद्धस्त्वक्त्राणबन्धनात् कवचितश्च यः स तथा, भेदश्चैतेषां लोकतोऽवसेयः, एकार्थाश्चैते शब्दाः सन्नद्धतात्प्रकर्षाभिधानायोक्ता इति, तथा उत्पीडिता–गाढीकृता कक्षा–हृदयरज्जुर्वक्षसि यस्य स तथा ग्रैवेयकं–ग्रीवाभरणं बद्धं गले–कण्ठे यस्य स तथा वरभूषणैर्विराजमानो यः स तथा, ततो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वर्मितादिपदानां कर्मधारयोऽतस्तं, 'अहियतेयजुत्तं सललितवरकण्णपूरविराजितं पलंबओचूलमहुयरकयंधगारं' प्रलम्बानि अवचूलानि–करक(ट)न्यस्ताऽधोमुखकूर्चकाः यस्य सः प्रलम्बावचूलः मधुकरैः–भ्रमरैर्मदजलगन्धाकृष्टैः कृतमन्धकारं येन स तथा, ततः कर्मधारयोऽतस्तं, 'चित्तपरिच्छेयपच्छदं' चित्रो–विचित्रः परिच्छेको–लघुः प्रच्छदो–वस्त्रविशेषो यस्य स तथा तं, 'पहरणावरणभरियजुद्धसज्जं' प्रहरणानां–कुन्तादीनामावरणानां च–कङ्कटानां भृतो यः स तथा स च युद्धसज्जश्चेति कर्मधारयः अतस्तं 'सच्छत्तं सज्झयं सघंटं पंचामेलयपरिमंडियाभिरामं' पञ्चभिरापीडैः–शेखरैः परिमण्डितोऽत एवाभिरामश्च–रम्यो यः, 'ओसारियजमलजुयलघंटं' अवसारितं–अवलम्बितं यमलं–समं युगलं–द्वयं घण्टयोर्यत्र स तथा तं, 'विज्जुप्पणिद्धं व कालमेहं' घण्टाप्रहरणादीनामुज्ज्वलत्वेन विद्युत्कल्पत्वात् हस्तिदेहस्य कालत्वेन महत्त्वेन वा मेघकल्पत्वादिति, 'उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं' चङ्क्रममाणमिवौत्पातिकपर्वतं, पाठान्तरेण ओत्पातिकं पर्वतमिव, 'सक्खं'ति साक्षात् 'मत्तं'ति मदवन्तं 'गुलु२गुलंतं' 'मणपवणजइणवेगं' मनःपवनजयी वेगो यस्य स तथा तं, 'भीमं संगामियाजोग्गं' साङ्ग्रामिक आयोगः–परिकरो यस्य स तथा तं, 'अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पंति २ उवणेंति'त्ति 'हयमहियपवरविवडियचिंधधयपडागे' हतमथिता–अत्यर्थं हताः अथवा हताः प्रहारतो मथिताः मानमथनात् हतमथिताः तथा प्रवरा विपतिताश्चिन्हध्वजादयः पताकाश्च तदन्या येषां ते तथा ततः कर्मधारयोऽतस्तान्, यावत्करणात् 'किच्छोवगयप्पाणे'ति दृश्यं कष्टगतजीवितव्यानित्यर्थः, 'अम्हे वा पउमनाभे वा रायत्तिकट्टु' इति अस्माकं पद्मनाभस्य च बलवत्त्वादिह सङ्ग्रामे वयं वा भवामः पद्मनाभो वा, नोभयेषामपीह संयुगे त्राणमस्तीतिकृत्वा–इति निश्चयं विधाय सम्प्रलग्नाः योद्धुमिति शेषः, 'अम्हे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नो पउमनाभे रायत्तिकट्टु' वयमेवेह रणे जयामो न पद्मनाभो राजेति, यद्दि स्वविषये विजयनिश्चयं कृत्वा पद्मनाभेन सार्द्धं योद्धुं सम्प्रालगिष्यथ ततो न पराजयं प्राप्स्यथ, निश्चयसारत्वात् फलप्राप्तेः, आह च–"शुभाशुभानि सर्वाणि, निमित्तानि स्युरेकतः । एकतस्तु मनो याति, तद्विशुद्धं जयावहम् ॥ १ ॥ तथा–स्यान्निश्चयैकनिष्ठानां, कार्यसिद्धिः परा नृणाम् । संशयक्षुण्णचित्तानां, कार्ये संशीतिरेव हि ॥ २ ॥" शङ्खविशेषणानि क्वचिद् दृश्यन्ते–'सेयं गोखीरहारधवलं तणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुसन्निगासं' 'तणसोल्लिय'न्ति मल्लिका सिंदुवारो–निर्गुण्डिः, 'नियगस्स बलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकरं पंचजण्ण'न्ति पाञ्चजन्याभिधानं 'वेढो'त्ति वेष्टकः एकवस्तुविषया पदपद्धतिः, स चेह धनुर्विषयो जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रसिद्धोऽध्येतव्यः,तद्यथा–'अइरुग्गयबालचंददंदहणुसन्निकासं' अचिरोद्गतो यो बालचन्द्रः–शुक्लपक्षद्वितीयाचन्द्रः तेनेन्द्रधनुषा च वक्रतया सन्निकाशं–सदृशं यत्तत्तथा 'वरमहिसदरियदप्पियदढघणसिंगग्गरइयसारं' वरमहिषस्य दृप्तदर्पितस्य–सञ्जातदर्पातिशयस्य यानि दृढानि घनानि च शृङ्गाग्राणि तै रचितं सारं यत्तत्तथा, 'उरगवरपवरगवलपवरपरहुयभमरकुलनीलधंतधोयपट्टं' उरगवरो–नागवरः प्रवरगवलं–वरमहिषशृङ्गं प्रवरपरभृतो–वरकोकिलो भ्रमरकुलं–मधुकरनिकरो नीली–गुलिका एतानीव स्निग्धं कालकान्तिमत् ध्मातमिव ध्मातं च–तेजसा ज्वलत् धौतमिव धौतं च–निर्मलं पृष्ठं यस्य तत्तथा, 'निउणोविय मिसिमिसिंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं' निपुणेन शिल्पिना ओपितानां–उज्ज्वलितानां मणिरत्नघण्टिकानां यज्जालं तेन परिक्षिप्तं–वेष्टितं यत्तत्तथा 'तडितरुणकिरणतवणिज्जबद्धचिंधं' तडिदिव–विद्युदिव तरुणाः–प्रत्यग्राः किरणा यस्य तत्तथा तस्य तपनीयस्य सम्बन्धीनि बद्धानि चिन्हानि–लाञ्छनानि यत्र तत्तथा 'दद्दरमलयगिरिसिहरकेसरचामरवालयद्धचंदबिंबं' दर्द-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रमलयाभिधानौ यौ गिरी तयोर्यानि शिखराणि तत्सम्बन्धिनो ये केसरचामरवालाः–सिंहस्कन्धचमरपुच्छकेशाः अर्द्धचन्द्राश्च तल्लक्षणानि चिह्नानि यत्र तत्तथा, 'कालहरियरत्तपीयसुक्किलबहुण्हारुणिसंपिनद्धजीयं' कालादिवर्णाः या स्नायवः–शरीरान्तर्वर्त्तिधमनिसन्तानास्ताभिः सम्पिनद्धा–बद्धा जीवा–प्रत्यञ्चा यस्य तत्तथा 'जीवियान्तकरं'ति शत्रूणामिति गम्यते, 'संभग्गे'त्यादि, सम्भग्नानि प्राकारो गोपुराणि च–प्रतोल्यः अट्टालकाश्च–प्राकारोपरिस्थानविशेषाः चरिका च–नगरप्राकारान्तरेऽष्टहस्तो मार्गः तोरणानि च यस्यां सा तथा, पर्यस्तितानि–पर्यस्तीकृतानि सर्वतः क्षिप्तानि इत्यर्थः प्रवरभवनानि श्रीगृहाणि च–भाण्डागाराणि यस्यां सा तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, 'सरसरस्स'त्ति अनुकरणशब्दोऽयमिति, 'उल्लपडसाडए'त्ति सद्यःस्नानेन आर्द्रौ–पट्टशाटकौ उत्तरीयपरिधाने यस्य स तथा, 'अवचूलगवत्थनियत्थे'त्ति अवचूलं–अधोमुखचूलं मुत्कलाञ्चलं यथा भवतीत्येवं वस्त्रं निवसितं येन स तथा, 'तं एवमवि गए नत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि'त्ति तत्–तस्मादित्थमपि गते अस्मिन् कार्ये नास्ति अयं पक्षो यदुत ते–तव मत्तो भयमस्ति–भवति ।

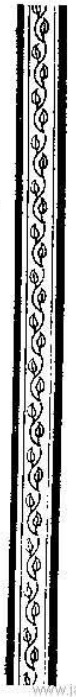
तेणं कालेणं २ धायतिसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेतिए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंत० वण्णओ, तेणं कालेणं २ मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्मं सुणेति, तते णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहतो धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेति, तते णं तस्स कविलस्स

॥२२२॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



वासुदेवस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था–किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स णं अयं संखसद्दे ममंपिव मुहवायपूरिते वियंभति, कविले वासु० सद्दातिं सुणेइ, मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं व०–से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामेमाणस्स संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए–किं मन्ने जाव वियंभइ, से णूणं कविला वासुदेवा! अयमट्ठे समट्ठे ?, हंता ! अत्थि, नो खलु कविला ! एवं भूयं वा ३ जन्नं एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु उप्पज्जिंति उप्पज्जिस्संति वा, एवं खलु वासुदेवा ! जंबुद्दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवती देवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगतिएणं देवेणं अमरकंकाणयरिं साहरिया, तते णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकंकं रायहाणिं दोवतीए देवीए कूवं हव्वमागए, तते णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव मुहवाया० इव इट्ठे कंते इहेव वियंभति, तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदति २ एवं व०–गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तम पुरिसं सरिसपुरिसं पासामि, तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं व०–नो खलु देवा०.! एवं भूयं वा ३ जण्णं अरहंता वा अरहंतं पासंति चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति बलदेवा वा बलदेवं पासंति वासुदेवा वा वासुदेवं पासंति, तहविय णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मज्झंमज्झेणं वीतिवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गातिं पासिहिसि, तते णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदति २ हत्थिखंधं दुरूहति २ सिग्घं २ जेणेव वेलाउले तेणेव उ० २ कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गातिं पासति २ एवं वयइ–एस णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयतित्तिकट्टु पंचयन्नं संखं परामुसति मुहवायपूरियं करेति, तते णं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयन्नेति २ पंचयन्नं जाव पूरियं करेति, तते णं दोवि वासुदेवा संखसद्दसामायारिं करेति, तते णं से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उ०२अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासति २ पउमणाभं एवं व०–किन्नं देवाणुप्पिया! एसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया?, तते णं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं व०–एवं खलु सामी! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूय अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तते णं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं व०–हं भो! पउमणाभा! अपत्थियपत्थिया किन्नं तुमं न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेति, पउमणाहस्स पुत्तं अमरकंकारायहाणीए महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचति जाव पडिगते (सूत्रं १२५) तते णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयति, ते पंच पडवे एवं व०–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गच्छह णं तुब्भे देवा० ! गंगामहानदिं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, तते णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानदी तेणेव उ० २ एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति २ एगट्ठियाए नावाए गंगामहानदिं उत्तरंति २ अण्णमण्णं एवं वयन्ति–पहू णं देवा० ! कण्हे वासुदेवे गंगामहाणदिं बाहाहिं उत्तरित्तए उदाहु णो पभू उत्तरित्तएत्तिकट्टु एगट्ठियाओ नावाओ णूमेंति २ कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा २ चिट्ठंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासति २ जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उ० २ एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेति २ एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ एगाए बाहाए गंगं महाणदिं बासट्ठिं जोयणातिं अद्धजोयणं च विच्छिन्नं उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं से कण्हे वासुदेवे गंगामहाणदीए बहुमज्झदेसभागं संपत्ते समाणे संते तंते परितंते बद्धसेए जाए यावि होत्था, तते णं कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगामहाणदी बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा, इच्छंतएहिं णं पंचहिं पंडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए, तते णं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अब्भत्थियं जाव जाणित्ता थाहं वितरति, तते णं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासासति २ गंगामहाणदिं बावट्ठिं जाव उत्तरति २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवा० पंच पंडवे एवं व०–अहो णं तुब्भे देवा० !

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महाबलवगा जेणं तुब्भेहिं गंगामहाणदी बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इच्छंतएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तते णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं व०–एवं खलु देवा०! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवा० २ एगट्ठियाए मग्गणगवेसणं तं चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो, तते णं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं व०–अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्णं वीतीवइत्ता पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्ग० दोवती साहत्थिं उवणीया तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं ण विण्णायं इयाणिं जाणिस्सहत्तिकट्टु लोहदंडं परामुसति, पंचण्हं पंचवाणं रहे चूरेति २ णिविसए आणवेति २ तत्थ णं रहमद्दणे णामं कोट्टे णिविट्ठे, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ २ सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवा० २ अणुपविसति (सूत्रं १२६) तते णं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छन्ति२ जेणेव पंडू तेणेव उ० २ करयल एवं व०–एवं खलु ताओ! अम्हे कण्हेणं णिविसया आणत्ता, तते णं पंडुराया ते पंच पंडवे एवं व०–कहण्णं पुत्ता! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिविसया आणत्ता?, तते णं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं व०–एवं खलु ताओ! अम्हे अमरकंकातो पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीतिव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तित्ता (त्था) तए णं से कण्हे अम्हे एवं वयासि–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! गंगामहाणदिं उत्तरह जाव चिट्ठह ताव अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो, तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण तं चेव सव्वं नवरं कण्हस्स चिंता ण जुज्ज (वुच्च) ति जाव अम्हे णिव्विसए आणवेति, तए णं से पंडुराया ते पंच पंडवे एवं व०–दुट्ठु णं पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं, तते णं से पंडू राया कोंतिं देविं सद्दावेति २ एवं व०–गच्छ णं तुमं देवा० ! बारवतिं कण्हस्स वासु० णिवेदेहि–एवं खलु देवा० ! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं देवा० ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी तं संदिसंतु णं देवा० ! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु ?, तते णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरूहति २ जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था ! किमागमणपओयणं ?, तते णं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं व०–एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं दाहिणड्ढभरह जाव वि दिसं वा० गच्छंतु ?, तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एवं व०–अपूईवयणा णं पिउत्था ! उत्तमपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणु० ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु ममं अदिट्ठसेवगा भवंतुत्तिकट्टु कोंतिं देविं सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति, तते णं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं णिवेदेति, तते णं पंडू पंच पंडवे सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ णं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह, तते णं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तहत्ति पडिसुणेंति सबलवाहणा हयगय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति २ जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवा० २ पंडुमहुरं नगरिं निवेसेंति २ तत्थ णं ते विपुलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था (सूत्रं १२७) तते णं सा दोवई देवी अन्नया कयाइं आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था, तते णं सा दोवती देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया सूमालं णिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं जम्हा णं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवतीए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं पंडुसेणे, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेइ पंडुसेणत्ति, बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरति, थेरा समोसढा परिसा निग्गया पंडवा निग्गया धम्मं सोच्चा एवं व०–जं णवरं देवा० ! दोवतिं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो ततो पच्छा देवा० ! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवा० !, तते णं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ दोवतिं देविं सद्दावेंति २ एवं व०–एवं खलु देवा० ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?, तते णं सा दोवती देवी ते पंच पंडवे एवं व०–जति णं तुब्भे देवा० ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सति ?, अहंपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वतिस्सामि, तते णं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरति, तते णं ते पंच पंडवा दोवती य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

देवी अन्नया कयाइं पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति, तते णं से पंडुसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी–खिप्पामेव भो! देवाणु० ! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहणीओ सिबियाओ उवट्ठवेह जाव पच्चोरुहंति जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्दस्स पुव्वाइं अहिज्जंति २ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति (सूत्रं १२८) तते णं सा दोवती देवी सीयातो पच्चोरूहति जाव पवतिया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयति, इक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरति(सूत्रं१२९) तते णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पंडुमहुरातो णयरीतो सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति २ बहिया जणवयविहारं विहरंति, तेणं कालेणं २ अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवा० २ सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खइ०–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि०, तते णं से जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवं व०–एवं खलु देवाणु० ! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु० जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २ थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति २ त्ता एवं व०–इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नेमिं जाव गमित्तए, अहासुहं देवा० !, तते णं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति २ थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूइज्जमाणा जाव जेणेव हत्थकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति, तते णं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति बीयाए एवं जहा गोयमसामी णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति, एवं खलु देवा० ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जिंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तते णं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थकप्पाओ पडिणिक्खमंति २ जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवा० २ भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति २ गमणागमणस्स पडिक्कमंति २ एसणमणेसणं आलोएंति २ भत्तपाणं पडिदंसेंति २ एवं व०–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुञ्जं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्तए संलेहणाए झूसणा सियाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति २ जेणेव सेत्तुञ्जे पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सेत्तुञ्जं पव्वयं दुरूहंति २ जाव कालं अणवकंखमाणा विहरंति । तते णं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

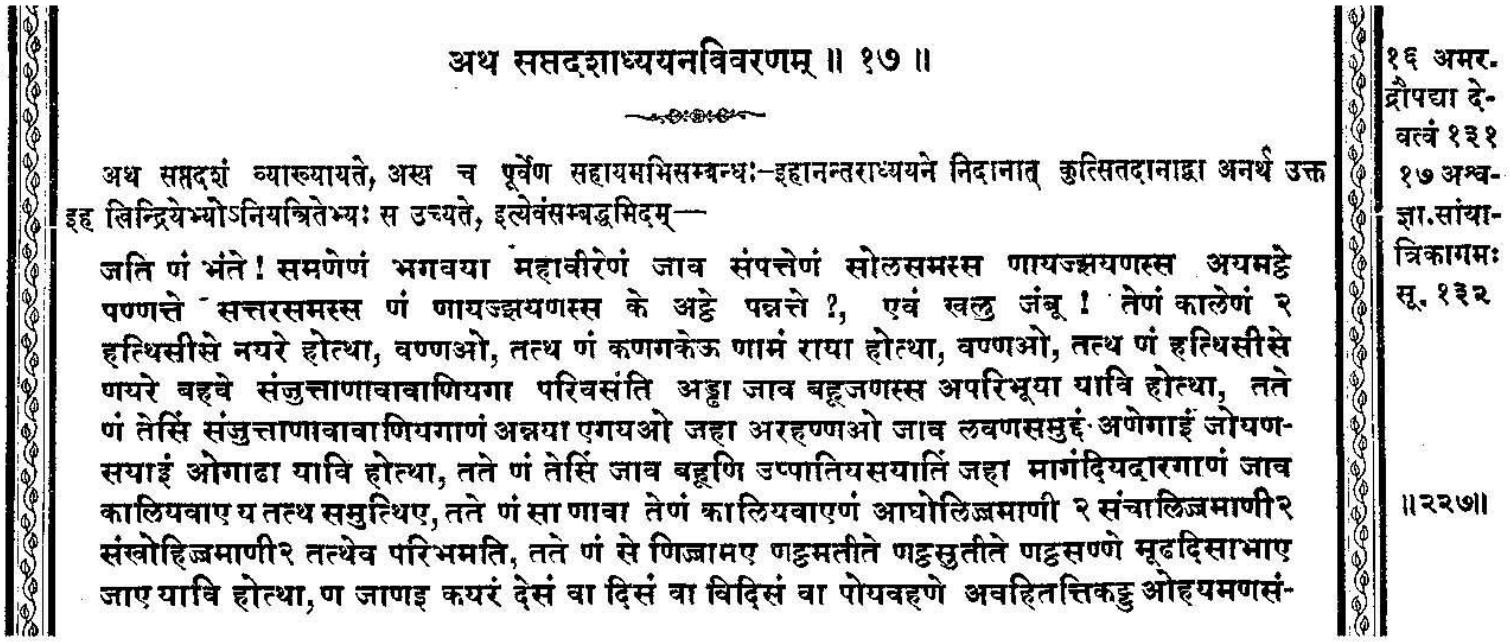
पंच अणगारा सामाइयमातियातिं चोद्दस पुव्वाइं बहूणि वासाणि दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरति णग्गभावे जाव तमट्ठमाराहेंति २ अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा (सूत्रं १३०) तते णं सा दोवती अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगातिं अहिज्जति २ बहूणि वासाणि मासियाए संलेहणाए० आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती प० तत्थ णं दुवतिस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, से णं भंते ! दुवए देवे ततो जाव महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिति। एवं खलु जंबू ! समणेणं सोलमस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि (सूत्रं १३१) सोलसमं-नायज्झयणं समत्तं ॥ १६ ॥

'एगट्ठिय'त्ति नौः 'नूमंति'त्ति गोपयन्ति, श्रान्तः–खिन्नः तान्तः–तरकाण्डकाङ्क्षावान् जातः परितान्तः–सर्वथा खिन्नः एकार्थिका वैते, 'इच्छंतएहिं'ति इच्छया कयाचिदित्यर्थः, 'वेयालीए'त्ति वेलातटे इति। इहापि सूत्रे उपनयो न दृश्यते, एवं चासौ द्रष्टव्यः–"सुबहुंपि तवकिलेसो नियाणदोसेण दूसिओ संतो । न सिवाय दोवतीए जह किल सुकुमालियाजम्मे ॥ १ ॥" अथवा–'अमणुन्नमभत्तीए पत्ते दाणं भवे अणत्थाय । जह कडुयतुंबदाणं नागसिरिभवंमि दोवइए ॥ २ ॥"त्ति [सुबहुरपि तपःक्लेशो निदानदोषेण दूषितः सन् । न शिवाय द्रौपद्या यथा सुकुमारिकाजन्मनि ॥ १ ॥ अमनोज्ञमभक्त्या पात्रे दानं भवेदनर्थाय । यथा कटुतुम्बदानं नागश्रीभवे द्रौपद्या अपि ॥ २ ॥] समाप्तं षोडशज्ञाताध्ययनविवरणम् ॥ १६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-१६ परिसमाप्तम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः



अथ सप्तदशाध्ययनविवरणम् ॥ १७ ॥

अथ सप्तदशं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–इहानन्तराध्ययने निदानात् कुत्सितदानाद्वा अनर्थ उक्त इह त्विन्द्रियेभ्योऽनियन्त्रितेभ्यः स उच्यते, इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तरसमस्स णं णायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ णं कणगकेऊ णामं राया होत्था, वण्णओ, तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजुत्ताणावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव बहूजणस्स अपरिभूया यावि होत्था, तते णं तेसिं संजुत्ताणावावाणियगाणं अन्नया एगयओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था, तते णं तेसिं जाव बहूणि उप्पातियसयाति जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समुत्थिए, तते णं सा णावा तेणं कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी२ संखोहिज्जमाणी२ तत्थेव परिभमति, तते णं से णिज्जामए पढमतीते पढसुतीते पढसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, ण जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहित्तिकट्टु ओहयमणसं-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययनं- १७ "अश्वः" आरभ्यते

कप्पे जाव झियायति, तते णं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजुत्ताणावावाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवा० २ एवं व०–किन्नं तुमं देवा० ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह ?, तते णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य४एवं व०–एवं खलु देवा० ! णट्ठमतीते जाव अवहिएत्तिकट्टु ततो ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि, तते णं ते कण्णधारा तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया ५ पहाया कयबलिकम्मा करयल बहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा २ चिट्ठंति, तते णं से णिज्जामए ततो मुहुत्तंतरस्स लद्धमतीते ३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तते णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं व०–एवं खलु अहं देवा० ! लद्धमतीए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवा० ! कालियदीवंतेणं संवूढा, एस णं कालियदीवे आलोक्कति, तते णं ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जागमस्स अंतिए सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालीयदीवे तेणेव उवागच्छंति २ पोयवहणं लंबेंति २ एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आईणवेढो, तते णं ते आसा ते वाणियए पासंति तेसिं गंधं अग्घायंति २ भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ततो अणेगाइं जोइणाति उब्भमंति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति, तए णं संजुत्तानावावाणियगा अण्णमण्णं एवं व०–किण्हं अम्हे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

देवा० ! आसेहिं?, इमे णं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति२ हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य अण्णस्स य कट्ठस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति २ पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयवहणपट्टणे तेणेव उ० २ पोयवहणं लंबेंति २ सगडीसागडं सज्जेंति २ तं हिरण्णं जाव वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवहणाओ संचारेंति २ सगडीसागडं संजोइंति २ जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवा० २ हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेसं करेंति २ सगडीसागडं मोएंति २ महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति २ हत्थिसीसं च नगरं अणुपविसंति २ जेणेव कणगकेऊ तेणेव उ०२ जाव उवणेंति, तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजुत्ताणावावाणियगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छति (सूत्रं १३२) ते संजुत्ताणावावाणियगा एवं व०–तुब्भे णं देवा० ! गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २ पोयवहणेणं ओगाहह तं अत्थि याइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुवे ?, तते णं ते संजुत्ताणावावाणियगा कणगकेउं एवं व०–एवं खलु अम्हे देवा० ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव कालियदीवंतेणं संवूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसे, किं ते ?, हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति, तते णं सामी ! अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुवे, तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संजुत्तए एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तते णं से संजुत्ता० कणगकेउं एवं व०–एवं सामित्तिकट्टु आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, तते णं कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! संजुत्तएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, तेवि पडिसुणेंति, तते णं ते कोडुंबिय० सगडीसागडं सज्जेंति २ तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य विचित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोतिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २ बहूणं किण्हाण य जाव सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य ४ गंथिमाण य ४ जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २ बहूणं कोट्ठपुडाण य केयइपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २ बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तर० अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं भरेंति २ बहूणं कोयवयाण य कंबलाण य पावरणाण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं जाव भरेंति २सगडीसागडं जोएंति २ जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव य उवा० २ सगडीसागडं मोएंति २ पोयवहणं सज्जेंति २ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति २ दक्खि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गामुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवा० २ पोयवहणं लंबेंति २ ताइं उक्किट्ठाइं सद्दफरिसरसरूव-गंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तारेंति २ जहिं २ च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वि चित्तवीणाओ य अन्नाणि बहूणि सोइंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति २ णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुंबिय० बहूणि किण्हाणि य५कट्ठकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिंदियपा-उग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति २ णिच्चला णिप्फंदा० चिट्ठंति जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाण य अन्नेसिं च घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति२तेसिं परिपेरंते जाव चिट्ठंति जत्थ२ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति २ वियरए खणंति २ गुलपाणगस्स खंडपाण-गस्स पारपाणगस्स अन्नेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरे भरेंति २ तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति, जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च ते बहवे कोयवया य जाव सिलावट्टया अण्णाणि य फासिंदिया-पाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं ठवेंति २ तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति, तते णं आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा० २ तत्थ णं अत्थेगतिया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूवगंधा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

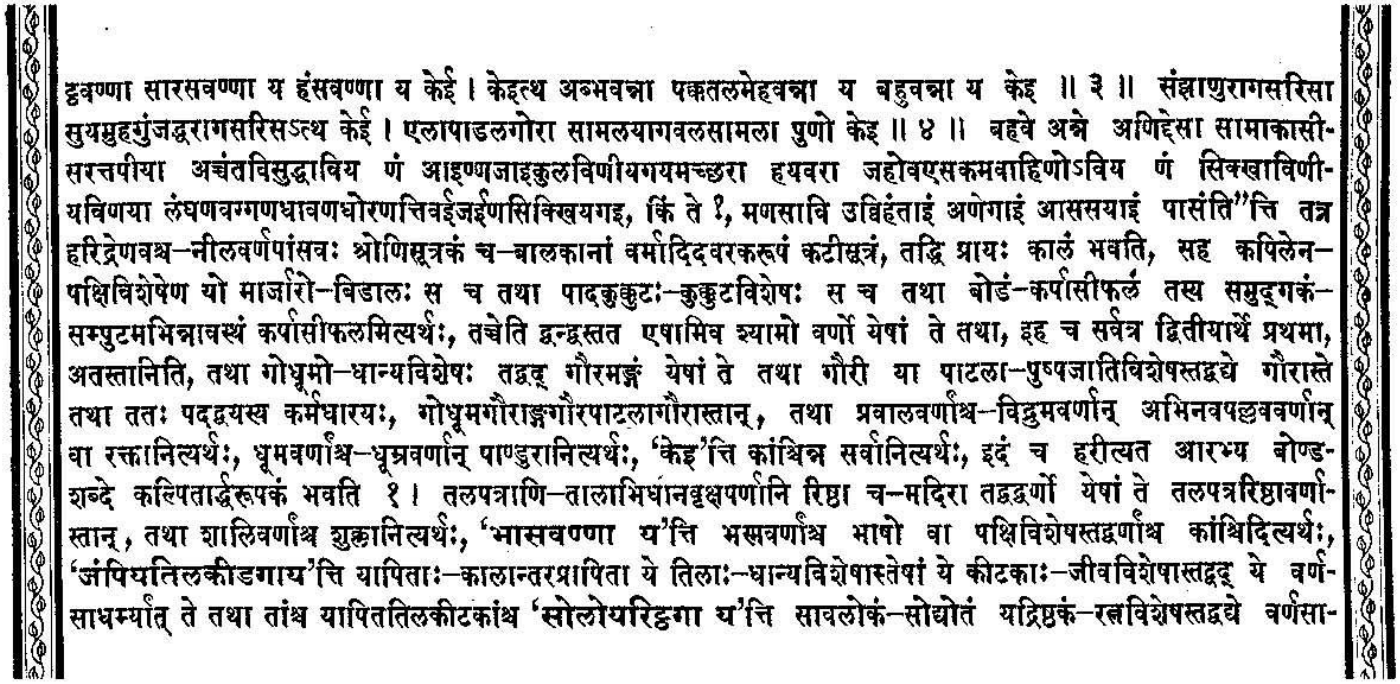
इतिकट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरं-दूरेणं अवक्कमंति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं णिग्गंथो वा २ सद्दफरिसरसरूवगंधा णो सज्जति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीतिवयति (सूत्रं १३३) तत्थ णं अत्थेगतिया आसा जेणेव उक्किट्ठसद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा० २ तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिस ५ मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं ते आसा एए उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेहिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य बज्झंति, तते णं ते कोडुंबिया एए आसे गिण्हंति २ एगट्ठियाहिं पोयवहणे संचारेंति २ तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तते णं ते संजुत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवा० २ पोयवहणं लंबेंति २ ते आसे उत्तारेंति २ जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छन्ति २ त्ता करयल जाव वद्धावेंति २ ते आसे उवणेंति, तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजुत्तावाणियगाणं उस्सुक्कं वितरति २ सक्कारेति संमाणेति २ त्ता पडिविसज्जेति, तते णं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ सक्कारेति० पडिविसज्जेति, तते णं से कणगकेऊ आसमद्दए सद्दावेति २ एवं व०–तुब्भे णं देवा० ! मम आसे विणएह, तते णं ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणंति २ ते आसे बहूहिं मुहबंधेहि य कण्णबंधेहि य णासाबंधेहि य वालबंधेहि य खुरबंधेहि य कडगबंधेहि य खलिणबंधेहि य अहिलाणेहि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

य पडियाणेहि य अंकणाहि य वेलप्पहारेहि य चित्तप्पहारेहि य लयप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति २ कणगकेउस्स रन्नो उवणेंति २ तते णं से कणगकेऊ ते आसमद्दए सक्कारेति २ पडिविसज्जेति, तते णं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहि य जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमाणसाणि दुक्खाति पावेंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं णिग्गंथो वा २ पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिस जाव गंधेसु य सज्जंति रज्जंति गिज्झंति मुज्झंति अज्झोववज्जंति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाण य जाव साविया-ण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सति (सूत्रं १३४)

सर्वं सुगमं, नवरं नट्ठमतीएत्ति–चक्षुर्ज्ञानस्य विषयानिश्चायकत्वात् नष्टश्रुतिको–निर्यामकशास्त्रेण दिगादिविवेचनस्य करणे अशक्तत्वात्, नष्टसंज्ञो मनसो भ्रान्तत्वात्, किमुक्तं भवति?–मूढः–अविनिश्चितो दिशां भागो–विभागो यस्य स मूढदिग्भागः, कुक्षिधारादयो यानपात्रव्यापारविशेषनियोगिनः, 'हिरण्णागरे'त्यादि, हिरण्याकरांश्च सुवर्णाकरांश्च रत्नाकरांश्च वैराकरांश्च तदुत्पत्तिभूमिरित्यर्थः, बहूंश्चात्राश्वान्–घोटकान् पश्यन्ति स्म, 'किंते'त्ति किंभूतान्? अत्रोच्यते–'हरी'त्यादि, 'आइन्नवेढो'त्ति आकीर्णा–जात्याः अश्वाः तेषां 'वेढो'त्ति वर्णनार्था वाक्यपद्धतिराकीर्णवेष्टकः, स चायं–"हरिरेणुसोणिसुत्तग सकविलमज्जार-पायकुक्कडबोंडसमुग्गयसामवन्ना। गोहुमगोरंगगोरीपाडलगोरा पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ ॥ १ ॥ तलपत्तरिट्ठवण्णा सालीवन्ना य भासवन्ना य। केई जंपियतिलकीडगा य सोलोयरिट्ठगा य पुंडपइया य कणगपट्ठा य केइ ॥ २ ॥ चक्कागपि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



द्वण्णा सारसवण्णा य हंसवण्णा य केई । केइत्थ अब्भवन्ना पक्कतलमेहवन्ना य बहुवन्ना य केइ ॥ ३ ॥ संझाणुरागसरिसा सुयमुहगुंजद्धरागसरिसऽत्थ केई । एलापाडलगोरा सामलयागवलसामला पुणो केइ ॥ ४ ॥ बहवे अन्ने अणिद्देसा सामाकासी-सरत्तपीया अचंतविसुद्धाविय णं आइण्णजाइकुलविणीयगयमच्छरा हयवरा जहोवएसकमवाहिणोऽविय णं सिक्खाविणी-यविणया लंघणवग्गणधावणधोरणत्तिवईजईणसिक्खियगइ, किं ते ?, मणसावि उविहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति"त्ति तत्र हरिद्रेणवश्च–नीलवर्णपांसवः श्रोणिसूत्रकं च–बालकानां वर्मादिदवरकरूपं कटीसूत्रं, तद्धि प्रायः काले भवति, सह कपिलेन–पक्षिविशेषेण यो मार्जारो–विडालः स च तथा पादकुक्कुटः–कुक्कुटविशेषः स च तथा बोडं–कर्पासीफलं तस्य समुद्गकं–सम्पुटमभिन्नावस्थं कर्पासीफलमित्यर्थः, तच्चेति द्वन्द्वस्तत एषामिव श्यामो वर्णो येषां ते तथा, इह च सर्वत्र द्वितीयार्थे प्रथमा, अतस्तानिति, तथा गोधूमो–धान्यविशेषः तद्वद् गौरमङ्गं येषां ते तथा गौरी या पाटला–पुष्पजातिविशेषस्तद्वद्ये गौरास्ते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, गोधूमगौराङ्गगौरपाटलागौरास्तान्, तथा प्रवालवर्णांश्च–विद्रुमवर्णान् अभिनवपल्लववर्णान् वा रक्तानित्यर्थः, धूमवर्णांश्च–धूम्रवर्णान् पाण्डुरानित्यर्थः, 'केइ'त्ति कांश्चिन्न सर्वानित्यर्थः, इदं च हरीत्यत आरभ्य बोण्ड-शब्दे कल्पितार्द्धरूपकं भवति १। तलपत्राणि–तालाभिधानवृक्षपर्णानि रिष्ठा च–मदिरा तद्वद्वर्णो येषां ते तलपत्ररिष्ठावर्णा-स्तान्, तथा शालिवर्णांश्च शुक्लानित्यर्थः, 'भासवण्णा य'त्ति भस्मवर्णांश्च भाषो वा पक्षिविशेषस्तद्वर्णांश्च कांश्चिदित्यर्थः, 'जंपियतिलकीडगाय'त्ति यापिताः–कालान्तरप्रापिता ये तिलाः–धान्यविशेषास्तेषां ये कीटकाः–जीवविशेषास्तद्वद् ये वर्ण-साधर्म्यात् ते तथा तांश्च यापिततिलकीटकांश्च 'सोलोयरिट्ठगा य'त्ति सावलोकं–सोद्योतं यद्रिष्ठकं–रत्नविशेषस्तद्वद्ये वर्णसा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धर्म्यात् ते सावलोकरिष्टास्तांश्च 'पुंडपइया व'त्ति पुण्डानि–धवलानि पदानि–पादा येषां ते तथा ते एव पुण्डपदिकास्तांश्च, तथा कनकपृष्ठान् कांश्चिदितिरूपकं २। 'चक्कागपिट्ठवण्ण'त्ति चक्रवाकः–पक्षिविशेषस्तत्पृष्ठस्येव वर्णो येषां ते तथा तान् सारसवर्णांश्च हंसवर्णान् कांश्चिद् इति पदार्द्धं, 'केतित्थ अब्भवण्णे'ति कांश्चिदत्राभ्रवर्णान् 'पक्कतलमेहवण्णा य'त्ति पक्वपत्रो यस्तलः–तालवृक्षः स च मेघश्चेति विग्रहस्तस्येव वर्णो येषां ते तथा तान्, 'पविरलमेहवण्ण'त्ति क्वचित्पाठः, तथा 'बहुवण्णा केइ'त्ति बभ्रुवर्णान् कांश्चित्पिङ्गानित्यर्थः, बाहुवर्णानिति क्वचित् दृश्यते, रूपकमिदं ३। तथा 'संझाणुरागसरिस'त्ति सन्ध्यानुरागेण सदृशान् वर्णत इत्यर्थः, 'सुयमुहगुंजद्धरागसरिसत्थ केइ'त्ति शुकमुखस्य गुञ्जार्द्धस्य च प्रतीतस्य रागेण–सदृशो रागो येषां ते तथा तान्, अत्र–इह कांश्चिदित्यर्थः, 'एलापाडलगोर'त्ति एलापाटला–पाटलाविशेषोऽथवा एला च पाटला च तद्वत् गौरा ये ते तथा तान्, 'सामलयागवलसामला पुणो केइ'त्ति श्यामलता–प्रियङ्गुलता गवलं च–महिषशृङ्गं तद्वत् श्यामलान्–श्यामान् पुनः कांश्चिदिति रूपकं ४। 'बहवे अन्ने य निद्देस'त्ति एकवर्णेनाव्यपदेश्यानित्यर्थः, अत एवाह 'सामाकासीसरत्तपिय'त्ति श्यामकाश्च काशीसं–रागद्रव्यं तद्वद्ये ते कासीसास्ते च रक्ताश्च पीताश्च ये ते तथा तान् शबलानित्यर्थः, 'अचंतविसुद्धाविय णं'ति निर्दोषांश्चेत्यर्थः णमित्यलङ्कारे 'आइण्णजाइकुलविणीयगयमच्छर'त्ति आकीर्णानां–जवादिगुणयुक्तानां सम्बन्धिनी जातिकुले येषां ते तथा ते च ते विनीताश्च गतमत्सराश्च–परस्परासहनवर्जिता निर्मसका वेति तथा तान्, 'हयवर'त्ति हयानां–अश्वानां मध्ये वरान् प्रधानानित्यर्थः, 'जहोवदेसकमवाहिणोऽविय णं'ति यथोपदेशक्रममिव–उपदिष्टपरिपाट्यनतिक्रमेणैव वोढुं शीलं येषां ते तथा तानपि च णमित्यलङ्कारे, 'सिक्खा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विणीयविणय'त्ति शिक्षयेव–अश्वदमकपुरुषशिक्षाकरणादिव विनीतः–अवाप्तः विनयो यैस्ते तथा तान्, 'लंघणवग्गणधावणधोरणतिवईजइणसिक्खियगइ'त्ति लङ्घनं गर्त्तादीनां वल्गनं–कूर्दनं धावनं–वेगवद् गमनं धोरणं–चतुरत्वं गतिविषयं त्रिपदी–मल्लस्येव रङ्गभूम्यां गतिविशेषः एतद्रूपा जविनी–वेगवती शिक्षितेव शिक्षिता गतिर्यैस्ते तथा तान्, किं ते इति किमपरं, 'मणसावि उव्विहंताइं'ति मनसाऽपि–चेतसाऽपि न केवलं वपुषा 'उव्विहंताइं'ति उत्पतन्ति, 'अणेगाइं आससयाइं'ति न केवलमश्वानेकैकशः अपि तु अश्वशतानि पश्यन्ति स्मेति,गमनिकामात्रमेतदस्य वर्णकस्य भावार्थस्तु बहुश्रुतबोध्य इति। 'पउरगोयर'त्ति प्रचुरचरणक्षेत्राः, 'वीणाण ये'त्यादि, वीणादीनां तन्त्रीसङ्घातादिकृतो विशेषः, भंभा–ढक्का 'कोट्ठपुडे'त्यादि, कोष्ठपुटे ये पच्यन्ते ते कोष्ठपुटाः–वासविशेषाः तेषां च, इह यावत्करणादिदं दृश्यं–'पत्तपुडाण य' पत्राणि तमालपत्रादीनि 'चोयपुडाण य' 'चोय'त्ति त्वक्पुटं–पत्रादिमयं तद्भाजनं 'तगरपुडाण य एलापुडाण य हरिबेरपुडाण य चंदणपुडाण य कुंकुमपुडाण य ओसीरपुडाण य चंपगपुडाण य मरुअगपुडाण य दमणगपुडाण य जातिपुडाण य जूहियापुडाण य मल्लियापुडाण य नोमालियापुडाण य वासंतियापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडलपुडाण य'त्ति, इह तगरादीनि गन्धद्रव्याणि गान्धिकप्रसिद्धानि, हिरिबेरं–वालकः उसीरं–वेरणीमूलं, केचित्तु पुष्पजातिविशेषाः लोकप्रसिद्धाः, पुष्पजातयश्च प्रायो यद्यपि बहुदिनक्षमा न भवन्ति तथाऽप्युपायतः कतिपयदिनक्षमाः सम्भाव्यन्ते, न च शुष्कतायामपि तासां सर्वथा सुगन्धाभाव इति तद्ग्रहणमिहादुष्टमिति, तथा 'बहुस्स'त्ति बहोः खण्डादेः पुष्पोत्तरा पद्मोत्तरा च शर्करामेदावेव, 'कोयवगाण य'त्ति रूतपूरितपटानां प्रावाराः–प्रावरणविशेषा नवतानि–जीनानि मलयानि मसूरकाणि चासनविशेषाः, अथवा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

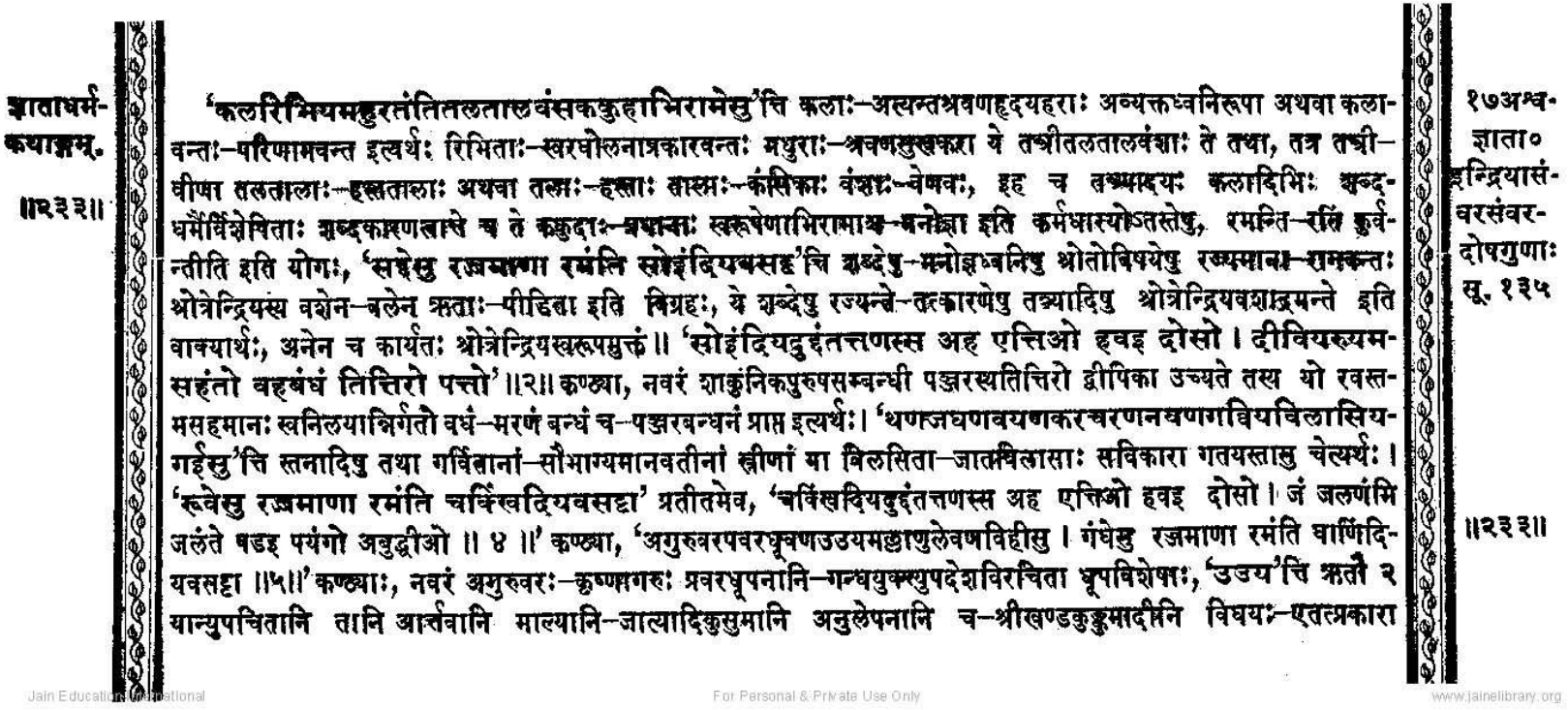
मलयानि–मलयदेशोत्पन्नाः वस्त्रविशेषाः, पाठान्तरेण 'मसगाण य'त्ति मशकाः–कृत्तिमण्डिताः वस्त्रविशेषाः शिलापट्टाः–मसृणशिलाः, 'समियस्स'त्ति कणिकायाः, 'खलिणबंधेहि य'त्ति खलिनैः–कविकैः, 'उवीलणेहि य'त्ति अवपीडनाभिर्बन्धनविशेषैः, पाठान्तरे 'अहिलाणेहिं' मुखबन्धनविशेषैः 'पडियाणएहि य'त्ति पटतानकं पर्याणस्याधो यद्दीयते इति, शेषं प्रायः प्रसिद्धं। अथेन्द्रियासंवृतानां स्वरूपस्येन्द्रियासंवरदोषस्य चाभिधायकं गाथाकदम्बकं वाचनान्तरेऽधिकमुपलभ्यते, तत्र—

कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु। सद्देसु रज्जमाणा रमंती सोइंदियवसट्टा ॥१॥ सोइंदियदुद्दन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवति दोसो। दीविंगरुयमसहंतो वहबंधं तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥ थणजहणवयणकरचरणणयणगविंयविलासियगतीसु। रूवेसु रज्जमाणा रमंति चक्खिंदियवसट्टा ॥ ३ ॥ चक्खिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ भवति दोसो। जं जलणंमि जलंते पडति पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥ अगुरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा ॥ ५ ॥ घाणिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं ओसहिगंधेणं बिलाओ निद्धावती उरगो ॥ ६ ॥ तित्तकडुयं कसायंब महुरं बहुखज्जपेज्जलेज्झेसु। आसायंमि उ गिद्धा रमंति जिब्भिंदियवसट्टा ॥७॥ जिब्भिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं गललग्गुक्खित्तो फुरइ थलविरल्लिओ मच्छो ॥ ८ ॥ उउभयमाणसुहेहि य सविभवहियगमणनिव्वुइकरेसु। फासेसु रज्जमाणा रमंति फासिंदियव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सट्टा ॥ ९ ॥ फासिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो । जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥ १० ॥ कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु । सद्देसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ ११ ॥ थणजहणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगतीसु । रूवेसु जे न रत्ता वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १२ ॥ अगरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु । गंधेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥ तित्तकडुयं कसायं ब महुरं बहुखज्जपेज्जलेज्झेसु । आसाये जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १४ ॥ उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियमणणिव्वुइकरेसु । फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥ सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥ रूवेसु य भद्दगपावएसु चक्खुविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥ गंधेसु य भद्दयपावएसु घाणविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥ रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १९ ॥ फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्तिबेमि (सूत्रं १३५) सत्तरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ १७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥२३३॥

'कलरिभितमहुरतंतितलतालवंसककुहाभिरामेसु'त्ति कलाः–अत्यन्तश्रवणहृदयहराः अव्यक्तध्वनिरूपा अथवा कलावन्तः–परिणामवन्त इत्यर्थः रिभिताः–स्वरघोलनाप्रकारवन्तः मधुराः–श्रवणसुखकरा ये तन्त्रीतलतालवंशाः ते तथा, तत्र तन्त्री–वीणा तलतालाः–हस्ततालाः अथवा तलाः–हस्ताः तालाः–कंसिकाः वंशाः–वेणवः, इह च तन्त्र्यादयः कलादिभिः शब्द-धर्मैर्विशेषिताः शब्दकारणत्वात् ते च ककुदाः–प्रधानाः स्वरूपेणाभिरामाश्च–मनोज्ञा इति कर्मधारयोऽतस्तेषु, रमन्ति–रतिं कुर्वन्तीति इति योगः, 'सद्देसु रज्जमाणा रमंति सोइंदियवसट्ट'त्ति शब्देषु–मनोज्ञध्वनिषु श्रोतोविषयेषु रज्यमानाः–रागवन्तः श्रोत्रेन्द्रियस्य वशेन–बलेन ऋताः–पीडिता इति विग्रहः, ये शब्देषु रज्यन्ते–तत्कारणेषु तन्त्र्यादिषु श्रोत्रेन्द्रियवशार्तमन्ते इति वाक्यार्थः, अनेन च कार्यतः श्रोत्रेन्द्रियस्वरूपमुक्तं॥ 'सोइंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। दीवियरुयमसहंतो वहबंधं तित्तिरो पत्तो' ॥२॥ कण्ठ्या, नवरं शाकुनिकपुरुषसम्बन्धी पञ्जरस्थतित्तिरो द्वीपिका उच्यते तस्य यो रवस्तमसहमानः स्वनिलयान्निर्गतो वधं–मरणं बन्धं च–पञ्जरबन्धनं प्राप्त इत्यर्थः। 'थणजघणवयणकरचरणनयणगवियविलासियगईसु'त्ति स्तनादिषु तथा गर्वितानां–सौभाग्यमानवतीनां स्त्रीणां या विलसिता–जातविलासाः सविकारा गतयस्तासु चेत्यर्थः। 'रूवेसु रज्जमाणा रमंति चक्खिंदियवसट्टा' प्रतीतमेव, 'चक्खिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं जलणंमि जलंते पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥' कण्ठ्या, 'अगुरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा ॥५॥' कण्ठ्याः, नवरं अगुरुवरः–कृष्णागरुः प्रवरधूपनानि–गन्धयुक्त्युपदेशविरचिता धूपविशेषाः, 'उउय'त्ति ऋतौ २ यान्युपचितानि तानि आर्तवानि माल्यानि–जात्यादिकुसुमानि अनुलेपनानि च–श्रीखण्डकुङ्कुमादीनि विषयः–एतत्प्रकारा

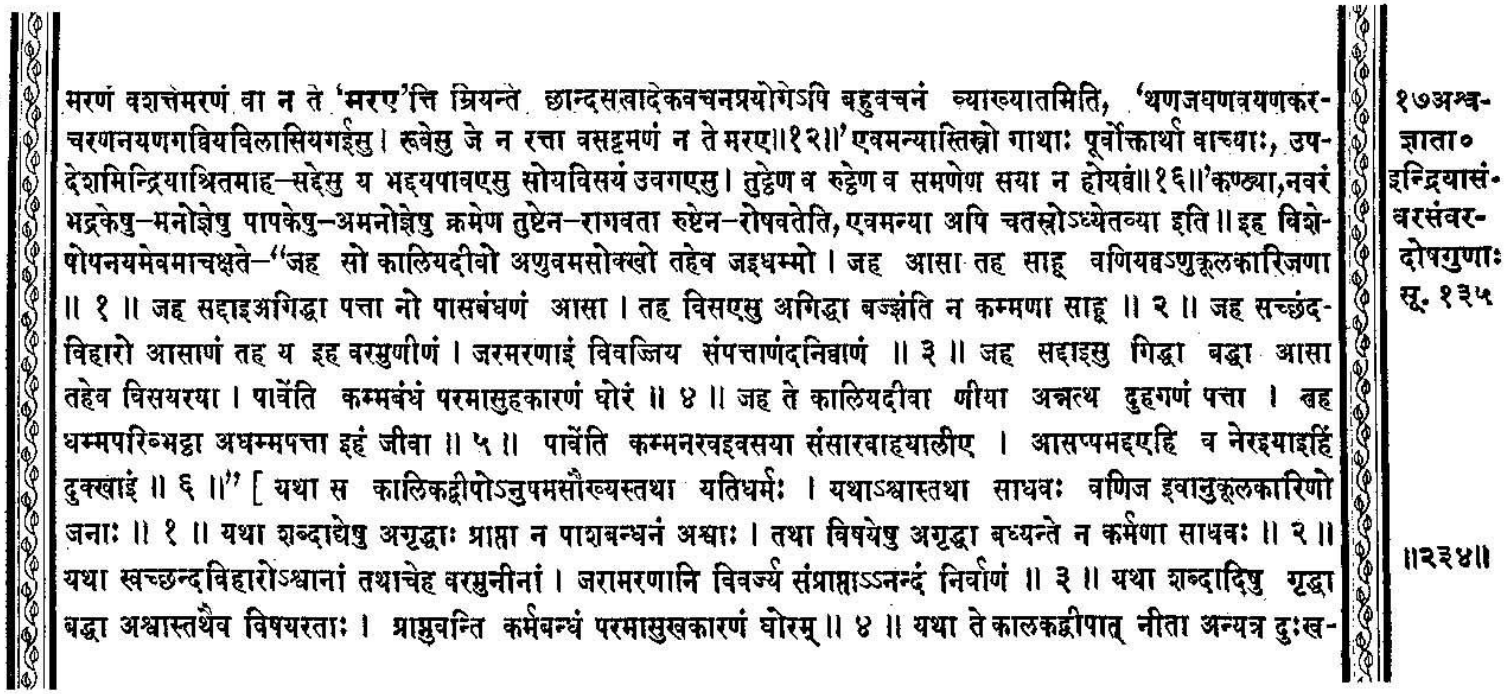
१७अश्व-ज्ञाता० इन्द्रियासंवरसंवर-दोषगुणाः सू. १३५

॥२३३॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इति ॥ 'घाणिंदियदुद्दन्तत्तणस्स अह एत्तिओ भवति दोसो। जं ओसहिगंधेणं बिलाओ निद्धावई उरगो' ६, कण्ठ्या, 'तित्तकडुअं कसायंबमहुरं बहु खज्जपेज्जलेज्झेसु। आसायंमि उ गिद्धा रमंति जिब्भिंदियवसट्टा'॥७॥, पूर्ववत्, नवरं तिक्तानि–निम्बकटुकादीनि कटुकानि–शुण्ठिमरीचादीनि कषायाणि–मुद्गादीनि अम्लानि–तक्रादिसंस्कृतानि मधुराणि–खण्डादीनि खाद्यानि–कूरमोदकादीनि पेयानि–जलमद्यदुग्धादीनि लेह्यानि–मधुशिखरिणीप्रभृतीनि आस्वादे–रसे । 'जिब्भिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ भवइ दोसो। जं गललग्गुक्खिचो फुरइ थलविरेल्लिओ मच्छो ॥८॥ कण्ठ्या, नवरं गलं–विलिपं तद्व लग्नः कण्ठे विद्धत्वात् उत्क्षिप्तो–जलादुद्धृतस्ततः कर्मधारयः, स्फुरति–स्पन्दते स्थले–भूतले 'विरेल्लिओ'त्ति प्रसारितः क्षिप्त इत्यर्थः यः स तथा ॥ 'उउभयमाणसुहेसु य सविभवहिययमणनिव्वुइकरेसु फासेसु रज्जमाणा रमंति फासिंदियवसट्टा'॥९॥, कण्ठ्या, नवरं ऋतुषु–हेमन्तादिषु भज्यमानानि–सेव्यमानानि सुखानि–सुखकराणि तानि तथा तेषु,सविभवानि–समृद्धियुक्तानि महाधनानीत्यर्थः, हितकानि–प्रकृत्यनुकूलानि सविभवानां वा–श्रीमतां हितकानि यानि तानि तथा मनसो निर्वृतिकराणि यानि तानि तथा ततः पदत्रयस्य तद्द्वयस्य वा कर्मधारयोऽतस्तेषु, सकृचन्दनाङ्गनावसनतूल्यादिषु द्रव्येष्विति गम्यते, 'फासिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥१०॥' भावना प्रतीतैव, अथेन्द्रियाणां संवरे गुणमाह–'कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसककुहाभिरामेसु। सद्देसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए' ॥११॥ पूर्ववत्, नवरमिह तत्रादयः शब्दकारणत्वेनोपचारात्छब्दा एव विवक्षिता अतः शब्देष्वित्येतस्य विशेषणतया व्याख्येया:, तथा वशेन–इन्द्रियपारतन्त्र्येण ऋताः–पीडिता वशार्त्ताः वशं वा–विषयपारतन्त्र्यं ऋताः–प्राप्ता वशार्त्ताः तेषां मरणं वशार्त्त-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



मरणं वशत्तेमरणं वा न ते 'मरए'त्ति म्रियन्ते छान्दसत्वादेकवचनप्रयोगेऽपि बहुवचनं व्याख्यातमिति, 'थणजघणवयणकर-चरणनयणगवियविलासियगईसु। रूवेसु जे न रत्ता वसट्टमणं न ते मरए॥१२॥' एवमन्यास्तिस्रो गाथाः पूर्वोक्तार्था वाच्याः, उपदेशमिन्द्रियाश्रितमाह–सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं॥१६॥'कण्ठ्या,नवरं भद्रकेषु–मनोज्ञेषु पापकेषु–अमनोज्ञेषु क्रमेण तुष्टेन–रागवता रुष्टेन–रोषवतेति, एवमन्या अपि चतस्रोऽध्येतव्या इति॥ इह विशेषोपनयमेवमाचक्षते–"जह सो कालियदीवो अणुवमसोक्खो तहेव जइधम्मो। जह आसा तह साहू वणियव्वऽणुकूलकारिजणा ॥ १ ॥ जह सद्दाइअगिद्धा पत्ता नो पासबंधणं आसा। तह विसएसु अगिद्धा बज्झंति न कम्मणा साहू ॥ २ ॥ जह सच्छंदविहारो आसाणं तह य इह वरमुणीणं। जरमरणाइं विवज्जिय संपत्ताणंदनिव्वाणं ॥ ३ ॥ जह सद्दाइसु गिद्धा बद्धा आसा तहेव विसयरया। पावेंति कम्मबंधं परमासुहकारणं घोरं ॥ ४ ॥ जह ते कालियदीवा णीया अन्नत्थ दुहगणं पत्ता। तह धम्मपरिब्भट्ठा अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥ ५ ॥ पावेंति कम्मनरवइवसया संसारवाहयालीए। आसप्पमद्दएहि व नेरइयाईहिं दुक्खाइं ॥ ६ ॥" [यथा स कालिकद्वीपोऽनुपमसौख्यस्तथा यतिधर्मः। यथाऽश्वास्तथा साधवः वणिज इवानुकूलकारिणो जनाः ॥ १ ॥ यथा शब्दाद्येषु अगृद्धाः प्राप्ता न पाशबन्धनं अश्वाः। तथा विषयेषु अगृद्धा बध्यन्ते न कर्मणा साधवः ॥ २ ॥ यथा स्वच्छन्दविहारोऽश्वानां तथाचेह वरमुनीनां। जरामरणानि विवर्ज्य संप्राप्ताऽऽनन्दं निर्वाणं ॥ ३ ॥ यथा शब्दादिषु गृद्धा बद्धा अश्वास्तथैव विषयरताः। प्राप्नुवन्ति कर्मबन्धं परमासुखकारणं घोरम् ॥ ४ ॥ यथा ते कालकद्वीपात् नीता अन्यत्र दुःख-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गणं प्राप्तः । तथा धर्मपरिभ्रष्टाः अधर्मप्राप्ता इह जीवाः ॥ ५ ॥ प्राप्नुवन्ति कर्मनरपतिवशगताः संसारवाह्यालौ अश्वश्रमर्दकैरिव नैरयिकादिभिर्दुःखानि ॥ ६ ॥] इति सप्तदशं ज्ञातं विवरणतः समाप्तम् ॥ १७ ॥

अथ अष्टादशज्ञाताध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य चायं पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वस्मिन्निन्द्रियवशवर्त्तिनामितरेषां चानर्थेतरावुक्ताविह तु लोभवशवर्त्तिनामितरेषां च तावेवोच्येते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते! समणेणं०सत्तरसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स के अट्ठे पन्नत्ते?,एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २रायगिहे णामं नयरे होत्था, वण्णओ,तत्थ णं धण्णे सत्थवाहे भद्दा भारिया,तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था,तं०–धणे धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुंसुमाणामं दारिया होत्था सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था, तते णं से दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था, सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हति २ बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-१७ परिसमाप्तम्

अथ अध्ययनं- १८ "सुंसुमा" आरभ्यते

य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे २ विहरति, तते णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारियाण य ६ अप्पेगतियाणं खल्लए अवहरति, एवं वट्टए आडोलियातो तेंदुसए पोत्तुल्लए साडोल्लए अप्पेगतियाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरति अप्पेगतिया आउस्सति एवं अवहसइ निच्छोडेति निब्भच्छेति तज्जेति अप्पे० तालेति, तते णं ते बहवे दारगा य ६ रोयमाणा य ५ साणं २ अम्मापिऊणं णिवेदेंति, तते णं तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अम्मापियरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवा० धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खेज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खेज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति, तते णं धण्णे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो २ णिवारेंति णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमति, तते णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अप्पेगतियाणं खुल्लए अवहरति जाव तालेति, तते णं ते बहवे दारगा य ६ रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं णिवेदेंति, तते णं ते आसुरुत्ता ५ जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवा० २ त्ता बहूहिं खिज्ज जाव एयमट्ठं णिवेदेंति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६ अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायं दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसति उद्धंसति णिब्भच्छेति निच्छोडेति तज्जेति उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेति सातो गिहातो णिच्छुभति (सूत्रं १३६) तते णं से चिलाए दासचेडे सातो गिहातो निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिंघाडए जाव पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य

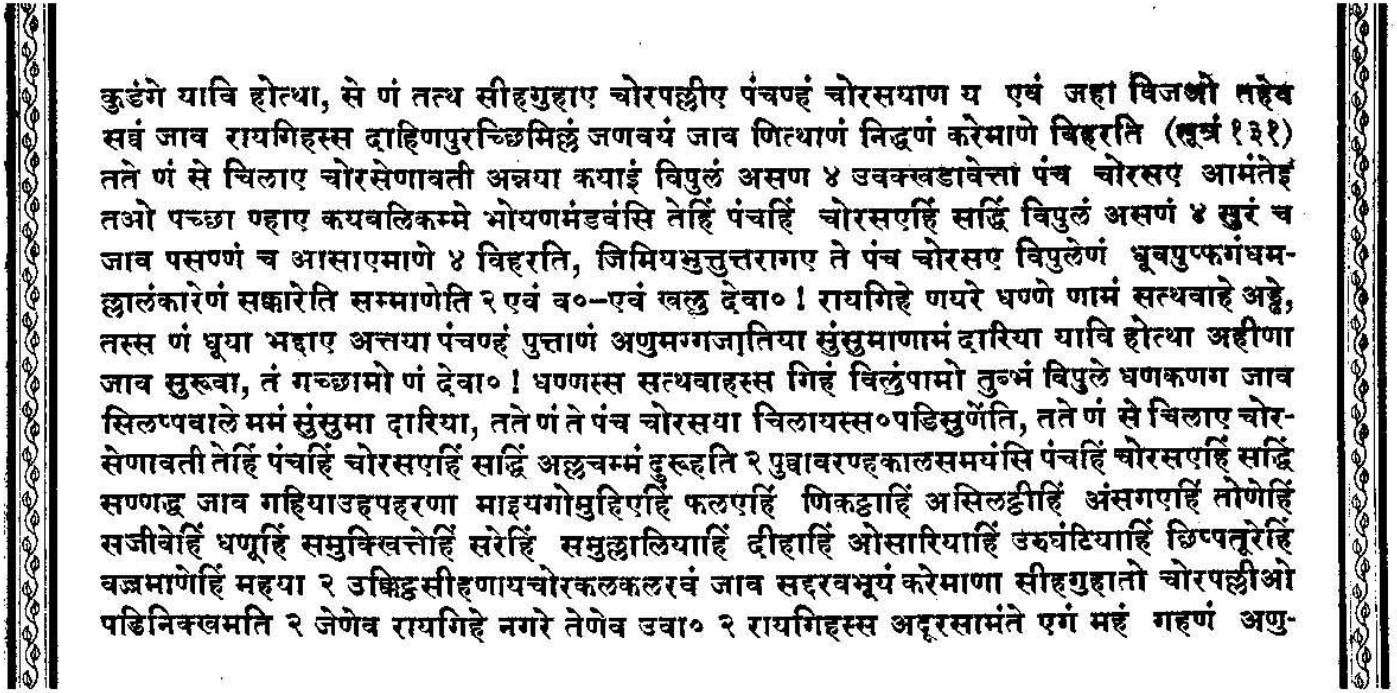
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वेसाघरेसु य पाणघरएसु य सुहंसुहेणं परिवहति, तते णं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जपसंगी चोज्जपसंगी मंसपसंगी जूयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था, तते णं रायगिहस्स नगरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसिभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था विसमगिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफरिहोवगूढा एगदुवारा अणेगखंडी विदितजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभजलपेरंता सुबहुस्सवि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था, तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावती परिवसति अहम्मिए जाव अधम्मे केऊ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसीए सद्दवेही, से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं जाव विहरति, तते णं से विजए तक्करे चोरसेणावती बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्नवहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था, तते णं से विजए तक्करे चोरसेणावती रायगिहस्स दाहिणपुरच्छिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे २ विद्धंसेमाणे २ णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरति, तते णं से चिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य धणि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एहि य जूइकरेहि य परुभवमाणे २ रायगिहाओ नगरीओ णिग्गच्छति २ जेणेव सीहगुफा चोरपल्ली तेणेव उवा० २ विजयं चोरसेणावतीं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तते णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठग्गाहे जाए यावि होत्था, जाहेविय णं से विजए चोरसेणावती गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वचति ताहेविय णं से चिलाए दासचेडे सुबहुंपि हु कूविथबलं हयविमहिय जाव पडिसेहिति, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हवमागच्छति, तते णं से विजए चोरसेणावती चिलायं तक्करं बहूइओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ, तते णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तते णं ताइं पंचचोरसयातिं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति २ बहूइं लोइयातिं मयकिच्चाइं करेइ २ जाव विगयसोया जाया यावि होत्था, तते णं ताइं पंच चोरसयातिं अन्नमन्नं सद्दावेंति२ एवं व०–एवं खलु अम्हं देवा० ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूइओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ चिलायं तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती जाए अहम्मिए जाव विहरति, तए णं से चिलाए चोरसेणावती चोरणायगे जाव

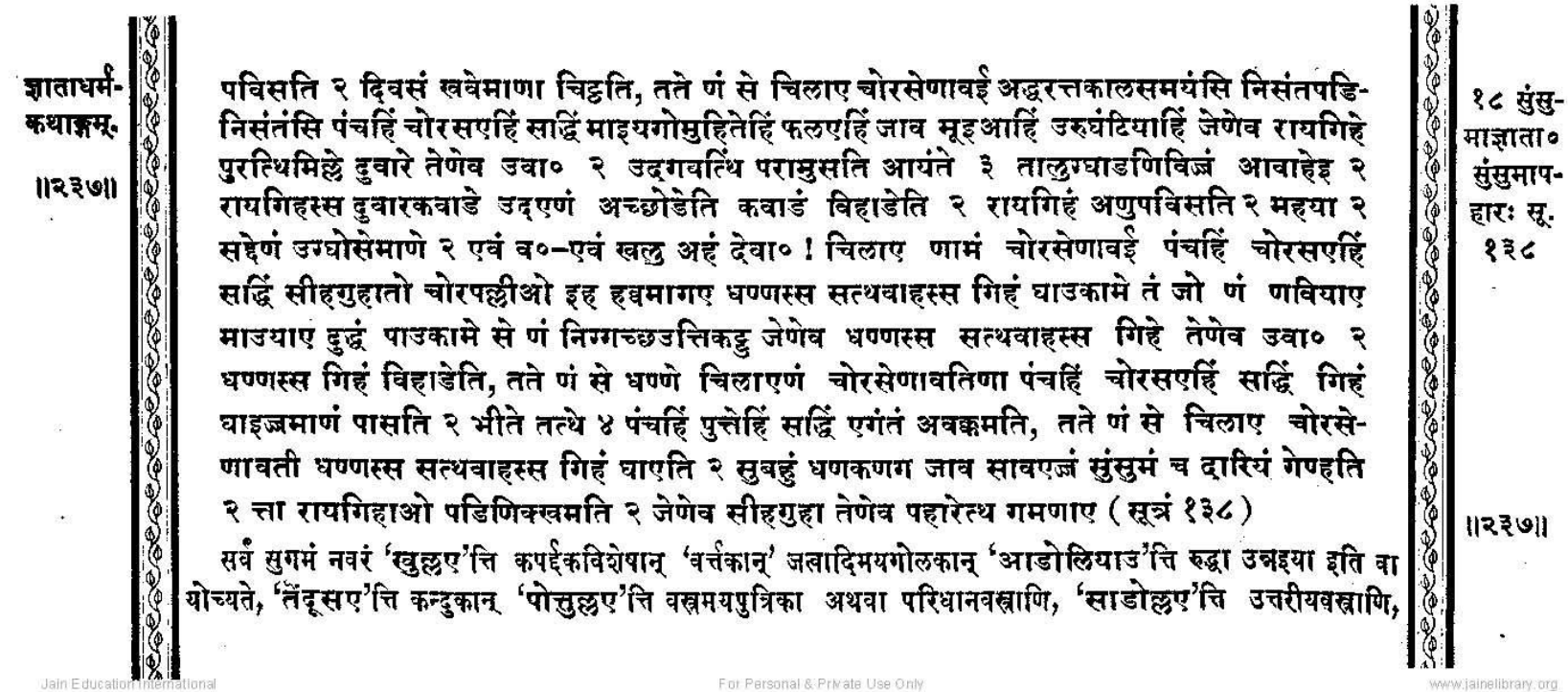
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



कुडंगे यावि होत्था, से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरच्छिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरति (सूत्रं १३१) तते णं से चिलाए चोरसेणावती अन्नया कयाइं विपुलं असण ४ उवक्खडावेत्ता पंच चोरसए आमंतेइ तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विपुलं असणं ४ सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे ४ विहरति, जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेणं धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति २ एवं व०–एवं खलु देवा० ! रायगिहे णगरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्ढे, तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातिया सुंसुमाणामं दारिया यावि होत्था अहीणा जाव सुरूवा, तं गच्छामो णं देवा० ! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो तुब्भं विपुले धणकणग जाव सिलप्पवाले ममं सुंसुमा दारिया, तते णं ते पंच चोरसया चिलायस्स०पडिसुणेंति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहति २ पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणा मायगोमुहिएहिं फलएहिं णिक्कट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दीहाहिं ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया २ उक्किट्ठसीहणायचोरकलकलरवं जाव सद्दरवभूयं करेमाणा सीहगुहातो चोरपल्लीओ पडिनिक्खमति २ जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवा० २ रायगिहस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

***मूल संपादने सूत्र-क्रमांकने यत् (सूत्रं १३१) लिखितं तत् मुद्रणदोषः, सूत्र १३७ स्थाने सूत्र १३१ लिखितं



पविसति २ दिवसं खवेमाणा चिट्ठति, तते णं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयंसि निसंतपडिनिसंतंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहितेहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहे पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवा० २ उदगवत्थिं परामुसति आयंते ३ तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ २ रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अच्छोडेति कवाडं विहाडेति २ रायगिहं अणुपविसति २ महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं व०–एवं खलु अहं देवा० ! चिलाए णामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहातो चोरपल्लीओ इह हवमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे तं जो णं णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे से णं निग्गच्छउत्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवा० २ धण्णस्स गिहं विहाडेति, तते णं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावतिणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासति २ भीते तत्थे ४ पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएति २ सुबहुं धणकणग जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेण्हति २ त्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमति २ जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए (सूत्रं १३८)

सर्वं सुगमं नवरं 'खुल्लए'त्ति कपर्दकविशेषान् 'वर्त्तकान्' जलादिमयगोलकान् 'आडोलियाउ'त्ति रुद्धा उन्नइया इति वा योच्यते, 'तेंदूसए'त्ति कन्दुकान् 'पोत्तुल्लए'त्ति वस्त्रमयपुत्रिका अथवा परिधानवस्त्राणि, 'साडोल्लए'त्ति उत्तरीयवस्त्राणि,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

'खेज्जणाहि य'त्ति खेदनाभिः खेदसंसूचिकाभिः वाग्भिः रुदनादिभिः–रुदितप्रायाभिरुपालम्भनाभिः–युक्तमेतद्भवादृशामित्यादिभिरिति 'अणोहट्टए'त्ति अकार्ये प्रवर्त्तमानं तं हस्ते गृहीत्वा योऽपहरति–व्यावर्त्तयति तदभावादनपहर्त्तृकः अनपघट्टको वा वाचा निवारयितुरभावादनिवारकः, अत एव स्वच्छन्दमतिः–निरर्गलबुद्धिरत एव स्वैरप्रचारी स्वच्छन्दविहारी, 'चोज्जपसंगे'त्ति चौर्यप्रसक्तः, अथवा 'चोज्ज'त्ति आश्चर्येषु कुहेटकेषु प्रसक्त इत्यर्थः, 'विसमगिरिकडगकोलंबसन्निविट्ठ'त्ति विषमो योऽसौ गिरिकटकस्य–पर्वतनितम्बस्य कोलम्बः–प्रान्तस्तत्र सन्निविष्टा–निवेशिता या सा तथा, कोलम्बो हि लोकेऽवनतं वृक्षशाखाग्रमुच्यते इह चोपचारतः कटकाग्रं कोलम्बो व्याख्यातः, 'वंसीकलंकपागारपरिक्खित्त'त्ति वंशीकलङ्का–वंशजालीमयी वृत्तिः सैव प्राकारस्तेन परिक्षिप्ता–वेष्टिता या सा तथा, पाठान्तरे तु वंशीकृतप्राकारेति, 'छिन्नसेलविसमप्पवायपरिहोवगूढ'त्ति छिन्नो–विभक्तोऽवयवान्तरापेक्षया यः शैलस्तस्य सम्बन्धिनो ये विषमाः प्रपाता–गर्त्ताः त एव परिखा तयोपगूढा–वेष्टिता या सा तथा, एकद्वारा–एकप्रवेशनिर्गममार्गा, 'अणेगखंडि'त्ति अनेकनश्यन्नरनिर्गमापद्वारा विदितानामेव–प्रतीतानां जनानां निर्गमप्रवेशौ यस्यां हेरिकादिभयात् सा तथा, अभ्यन्तरे पानीयं यस्याः सा तथा, सुदुर्लभं जलं पर्यन्तेषु–बहिःपार्श्वेषु यस्याः सा तथा, सुबहोरपि 'कूवियबलस्स'त्ति मोषव्यावर्त्तकसैन्यस्यागतस्य दुष्प्रध्वंसा, वाचनान्तरे पुनरेवं पठ्यते 'जत्थ चउरंगबलनिउत्ताविकूवियबला हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिन्धधयवडया कीरंति'त्ति, अत्र चतुर्णामङ्गानां हस्त्यश्वरथपदातिलक्षणानां यद्बलं–सामर्थ्यं तेन नियुक्तानि–नितरां सङ्गतानि यानि तानि तथा, 'कूवियबल'त्ति निवर्त्तकसैन्यानीति, 'अधम्मिए'त्ति अधर्मेण चरतीत्यधार्मिकः, यावत्करणात् 'अधम्मिट्ठे' अधर्मिष्ठोऽतिशयेन निर्द्धर्मा निस्तृंशकर्मकारित्वात्, 'अधम्मक्खाई' अधर्ममा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ख्यातुं शीलं यस्य स तथा, 'अधम्माणुए' अधर्म्मे कर्त्तव्येऽनुज्ञा–अनुमोदनं यस्य सोऽधर्मानुज्ञः अधर्मानुगो वा 'अधम्मपलोई' अधर्म्ममेव प्रलोकयितुं शीलं यस्यासावधर्म्मप्रलोकी 'अधम्मपलज्जणे' अधर्मप्रायेषु कर्मसु प्रकर्षेण रज्यते इत्यधर्मप्ररजनः, रलयोरैक्यमितिकृत्वा रस्य स्थाने लकारः, 'अधम्मसीलसमुदायारे' अधर्म्म एव शीलं–स्वभावः समुदाचारश्च यत्किञ्चनानुष्ठानं यस्य स तथा, 'अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरति' अधर्मेण–पापेन सावद्यानुष्ठानेनैव दहनाङ्कननिर्लाञ्छनादिना कर्म्मणा वृत्तिं–वर्त्तनं कल्पयन्–कुर्वाणो विहरति–आस्ते स 'हणछिंदभिंदवियत्तए' हन–विनाशय छिन्द–द्विधा कुरु भिंद–कुंतादिना भेदं विधेहीत्येवं परानपि प्रेरयन् प्राणिनो विकृन्ततीति हनच्छिन्दभिन्दविकर्त्तकः, हनेत्यादयः शब्दाः संस्कृतेऽपि न विरुद्धाः, अनुकरणरूपत्वादेषां, 'लोहियपाणि' प्राणविकर्त्तनो (नतो) लोहितौ रक्तरक्ततया पाणी–हस्तौ यस्य स तथा, 'चंडे' चण्डः उत्कटरोषत्वात्, 'रुद्दे' रौद्रो निस्त्रिंशत्वात्, क्षुद्रः क्षुद्रकर्म्मकारित्वात्, साहसिकः–असमीक्षितकारित्वात्, 'उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसंपओगबहुले' उत्कञ्चनमुत्कोचा, मुग्धं प्रति तत्प्रतिरूपदानादिकमसद्व्यवहारं कर्तुं प्रवृत्तस्स पार्श्ववर्त्तिविचक्षणभयात् क्षणं यत्तदकरणं तदुत्कञ्चनमित्यन्ये, वञ्चनं–प्रतारणं माया–परवञ्चनबुद्धिः निकृतिः–वकवृत्त्या कुर्कुटादिकरणं अधिकोपचारकरणेन परच्छलनमित्यन्ये मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणमित्यन्ये कपटं–वेषादिविपर्ययकरणं कूटं कार्षापणतुलाव्यवस्थापत्रादीनामन्यथाकरणं 'साइ'त्ति अविश्रम्भः एषां सम्प्रयोगः–प्रवर्त्तनं तेन बहुलः स वा बहुलो यस्य स तथा, 'निस्सीले' अपगतशुभस्वभावः 'निव्वए' अणुव्रतरहितः 'निग्गुणो' गुणव्रतरहितः 'निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे' अविद्यमानपौरुष्यादिप्रत्याख्यानोऽसत्पर्वदिनोपवासश्चेत्यर्थः, 'बहूणं दुपय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चउप्पयमियपसुपक्खिसिरीसवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए अधम्मकेऊसमुट्ठिए'त्ति प्रतीतं नवरं घातः–प्रहारो वधो–हिंसा व्यत्ययो वा उच्छादना–जातेरपि व्यवच्छेदनं तदर्थं 'अधर्म्मकेतुः' पापप्रधानः केतुः–ग्रहविशेषः स इव यः स तथा, द्विपदादिसत्त्वानां हि क्षयाय यथा केतुर्ग्रहः समुद्गच्छति तथाऽयं समुत्थित इति भावना, बहुनगरेषु निर्गतं–जनमुखान्निःसृतं यशः–ख्यातिर्यस्य स तथा, सूरो–विक्रमी दृढप्रहारी–गाढप्रहारः, शब्दं लक्षीकृत्य विध्यति यः सः शब्दवेधी, चौरादीन्येकादश पदानि प्रतीतानि, नवरं ग्रन्थिभेदकाः–न्यासकान्यथाकारिणः घुर्घुरकादिना वा ये ग्रन्थीन् छिन्दन्ति, सन्धिच्छेदका ये गृहभित्तिसन्धीन् विदारयन्ति, क्षात्रखानका ये सन्धानवर्जितभित्तीः कारयन्ति, 'अणधारयं'ति ऋणं–व्यवहरकदेयं द्रव्यं तद्ये तेषां धारयन्ति, खंडरक्षा–दण्डपाशिकाः, तथा छिन्ना–हस्तादिषु भिन्ना नासिकादौ वाह्याः देशात् आहता–दण्डादिभिः ततो द्वन्द्वः, कुडंगं–वंशादिगहनं तद्वद्यो दुर्गमत्वेन रक्षार्थमाश्रयणीयत्वसाधर्म्यात् स तथा, 'नित्थाणं'ति स्थानभ्रष्टं 'अग्गअसिलट्ठिगाहि'त्ति पुरस्तात् खड्गयष्टिग्राहः अथवा अग्र्यः–प्रधानः, 'अल्लचम्मं दुरूहति'त्ति आर्द्रं चर्म्मारोहति माङ्गल्यार्थमिति, 'माइय'त्ति ककारस्य स्वार्थिकत्वात् 'माइ'त्ति रुक्षादिवालयुक्तत्वात् पक्ष्मलानि तानि च तानि 'गोमुहीअ'त्ति गोमुखवदुरःप्रच्छादकत्वेन कृतानि गोमुखितानि चेति कर्मधारयस्ततस्तैः फलकैः–स्फुरकैः, अत्रार्थे वाचनान्तराण्यपि सन्ति तानि च विमर्शनीयानीति, गमनिकैवेयं, निकृष्टाभिः–कोशाद्बहिष्कृताभिरसियष्टिभिः असङ्गतैः–स्कन्धावस्थितैस्तूणैः–शरभस्त्रादिभिः सजीवैः–कोट्यारोपितप्रत्यञ्चैर्द्धनुर्भिः समुत्क्षिप्तैः–निसर्गार्थमाकृष्टैः शरधेः सकाशाच्छरैः–बाणैः 'समुल्लासियाहिं'ति प्रहरणविशेषाः 'ओसारियाहिं'ति प्रलम्बीकृताभिः ऊरुघंटाभिः–जङ्घाघण्टाभिः 'छिप्पतूरेणं'ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्षिप्ततूर्येण, द्रुतं वाद्यमानेन तूर्येणेत्यर्थः, प्रतिनिःक्रामन्ति, इह बहुवचनं चौरव्यक्त्यपेक्षया अन्यथा चौरसेनापतिप्रक्रमादेकवचनमेव स्यादिति ।

ततेणं से धण्णे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ सुबहुं धणकणगं सुंसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं ३ पाहुडं गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवा० २ तं महत्थं पाहुडं जाव उवणेंति २ एवं व०–एवं खलु देवा० ! चिलाए चोरसेणावती सीहगुहातो चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता सुबहुं धणकणगं सुंसुमं च दारियं गहाय जाव पडिगए, तं इच्छामो णं देवा० ! सुंसुमादारियाए कूवं गमित्तए,तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! से विपुले धणकणगे ममं सुंसुमा दारिया, ततेणं ते णयरगुत्तिया धण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया २ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूयंपिव करेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति २जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवा०२चिलाएणं चोरसेणावतिणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, ततेणं णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावतिं हयमहिया जाव पडिसेहेंति, ततेणं ते पंच चोरसया णगरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विपुलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वतो समंता विप्पलाइत्था, ततेणं ते णयरगुत्तिया तं विपुलं धणकणगं गेण्हंति २ जेणेव रायगिहे तेणेव उवा०, ततेणं से चिलाए तं चोरसेण्णं तेहिं णय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीते तत्थे सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठे, तते णं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहिं अवहीरमाणिं पासित्ताणं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध०चिलायस्स पदमग्गविहिं अभिगच्छति,अणुगज्जेमाणे हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छति, तते णं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठं सन्नद्धबद्धं समणुगच्छमाणं पासति २ अत्थामे ४ जाहे णो संचाएति सुंसुमं दारयं णिवाहित्तए ताहे संते तंते परिसंते नीलुप्पलं असिं परामुसति २ सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदति २ तं गहाय तं अगामियं अडविं अणुपविट्ठे, तते णं चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाते अभिभूते समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउं जाव आहारं आहारेति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं४हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व से चिलाए तक्करे। तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं परिधाडेमाणे २ तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते नो संचाइए चिलातं चोरसेणावतिं साहत्थिं गिण्हित्तए, से णं तओ पडिनियत्तइ २ जेणेव सा सुंसुमा दारिया चिलाएणं जीवियाओ ववरोविल्लिया तेणंतेणेव उवागच्छति२ सुंसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ २ परसुनियंतेव चंपगपायवे, तते णं से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आसत्थे कूवमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देणं कुह २ सुपरुन्ने सुचिरं कालं वाहमोक्खं करेति, तते णं से धण्णे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए सव्वतो समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य परिब्भं(रद्धं)ते समाणे तीसे आगामियाए अडवीए सव्वतो समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेंति २ संते तंते परितंते णिविन्ने तीसे आगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेंति, तते णं उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसमा जीवियातो ववरोवेहिया तेणेव उवा० २ जेट्ठं पुत्तं धण्णे सद्दावेइ २ एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वतो समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे आगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसादेमो, तते णं उदगं अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए, तण्णं तुब्भं ममं देवा० ! जीवियाओ ववरोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह २ तेणं आहारेणं अवहिट्ठा समाणा ततो पच्छा इमं आगामियं अडविं णित्थरिहिह रायगिहं च संपाविहिह मित्तणाइय अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तते णं से जेट्ठपुत्ते धण्णेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं एवं व०–तुब्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरू जणया देवयभूया ठावका पतिट्ठावका संरक्खगा संगोवगा तं कहण्णं अम्हे तातो ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं तातो ! ममं जीवियाओ वव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह आगामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह, तते णं धण्णं सत्थ० दोच्चे पुत्ते एवं व०–मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुं देवयं जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भे णं ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह, एवं जाव पंचमे पुत्ते, तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंच पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते पंच पुत्ते एवं व०–मा णं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एस णं सुंसुमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे जाव जीवविप्पजढे तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए, तते णं अम्हे तेणं आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो, तते णं ते पंच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति, तते णं धण्णे सत्थ० पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेति २ सरगं च करेति २ सरएणं अरणिं महेति २ अग्गिं पाडेति २ अग्गिं संधुक्खेति २ दारुयाति परिक्खेवेति २ अग्गिं पज्जालेति २ सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेंति, तेणं आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं नयरिं संपत्ता मित्तणाईअभिसमण्णागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जायाविहोत्था, तते णं से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयातिं जाव विगयसोए जाए यावि होत्था (सूत्रं १३९) तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे, से णं धण्णे सत्थवाहे संपत्ते धम्मं सोच्चा पव्वतिए एक्कारसंगवी मासियाए

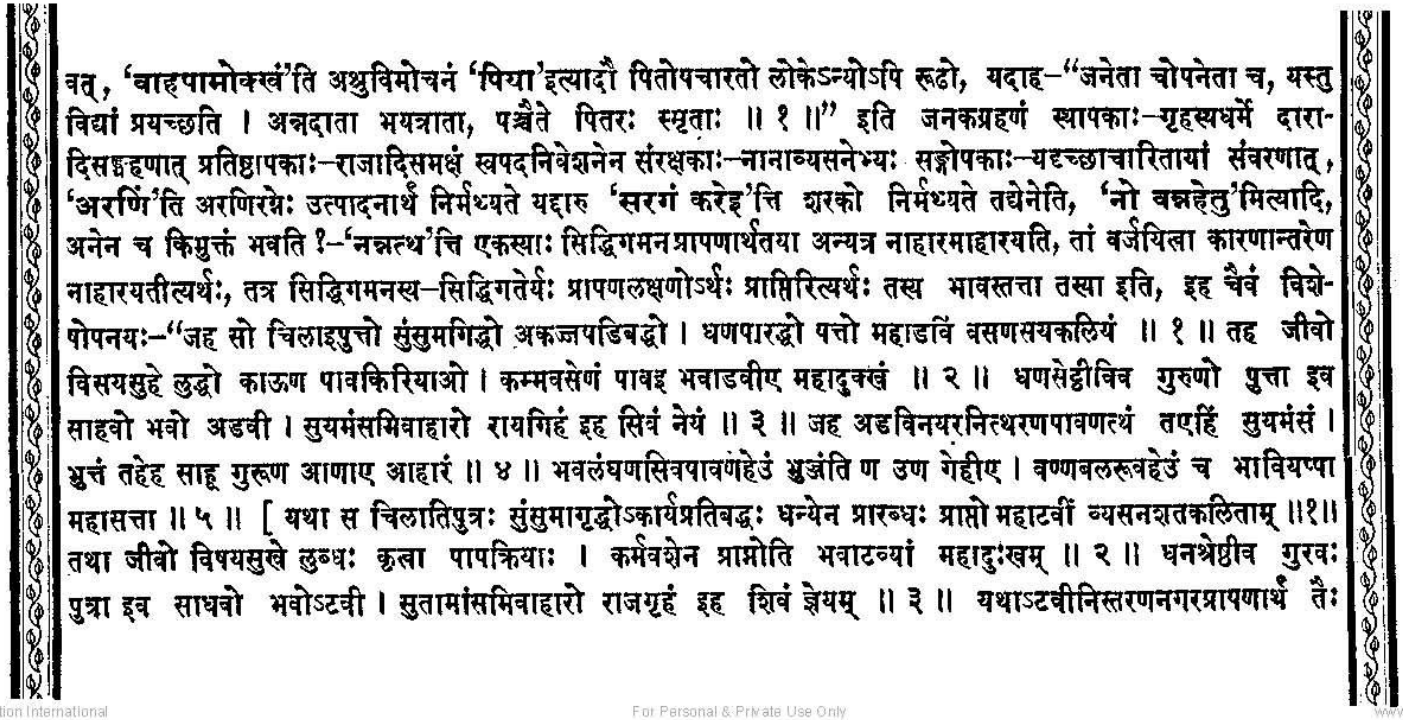
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संलेहणाए सोहंमे उववण्णो महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जहाविय णं जंबू! धण्णेणं सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा णो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दारियाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा २ इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियवस्स वा नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बल० विसयहेउं वा आहारं आहारेति नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं २ बहूणं सावयाणं बहूणं साविगाणं अच्चणिज्जे जाव वीतीवतीस्सति, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया अट्ठारमस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि

(सूत्रं १४०) अट्ठारसमं णायज्झयणं समत्तं १८

'मूइयाहिं'ति मूकीकृताभिर्निःशब्दीकृताभिरित्यर्थः, 'उदगवत्थि'त्ति जलभृतदृतिः जलाधारचर्म्ममयभाजनमित्यर्थः, 'जो णं णवियाए'त्यादि यो हि नविकायाः–अग्रेतनभवभाविन्याः मातुर्दुग्धं पातुकामः स निर्गच्छतु, यो म्रुमूर्षुरित्यर्थः, 'आगमिस्सं'ति अग्रामिकं 'दीहमद्धं'ति दीर्घमार्गं, 'पयमग्गविहिं'ति पदमार्गप्रचारं, 'पम्हुट्ठदिसाभाए'त्ति विस्मृतदिग्भागः, 'अंतरा चेव कालगए'त्ति इह एतावदेवोपयोगीति आवश्यकादिप्रसिद्धं तदीयं शेषचरितं साधुदर्शनोपशमाद्युपदेशेन सम्यक्त्वपरिभावनवज्रतुण्डकीटिकाभक्षणदेवलोकगमनलक्षणं नोक्तमिति न विरोधः सम्भावनीयः, उपनयग्रन्थः पूर्व-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



वत्, 'वाहपामोक्खं'ति अश्रुविमोचनं 'पिया'इत्यादौ पितोपचारतो लोकेऽन्योऽपि रूढो, यदाह–"जनेता चोपनेता च, यस्तु विद्यां प्रयच्छति । अन्नदाता भयत्राता, पञ्चैते पितरः स्मृताः ॥ १ ॥" इति जनकग्रहणं स्थापकाः–गृहस्थधर्मे दारादिसङ्ग्रहणात् प्रतिष्ठापकाः–राजादिसमक्षं स्वपदनिवेशनेन संरक्षकाः–नानाव्यसनेभ्यः सङ्गोपकाः–यदृच्छाचारितायां संवरणात्, 'अरणिं'ति अरणिरग्नेः उत्पादनार्थं निर्मथ्यते यद्दारु 'सरगं करेइ'त्ति शरको निर्मथ्यते तद्येनेति, 'नो वन्नहेतु'मित्यादि, अनेन च किमुक्तं भवति ?–'नन्नत्थ'त्ति एकस्याः सिद्धिगमनप्रापणार्थतया अन्यत्र नाहारमाहारयति, तां वर्जयित्वा कारणान्तरेण नाहारयतीत्यर्थः, तत्र सिद्धिगमनस्य–सिद्धिगतेर्यः प्रापणलक्षणोऽर्थः प्राप्तिरित्यर्थः तस्य भावस्तत्ता तस्या इति, इह चैवं विशेषोपनयः–"जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्जपडिबद्धो । धणपारद्धो पत्तो महाडविं वसणसयकलियं ॥ १ ॥ तह जीवो विसयसुहे लुद्धो काऊण पावकिरियाओ । कम्मवसेणं पावइ भवाडवीए महादुक्खं ॥ २ ॥ धणसेट्ठीविव गुरुणो पुत्ता इव साहवो भवो अडवी । सुयमंससमिवाहारो रायगिहं इह सिवं नेयं ॥ ३ ॥ जह अडविनयरनित्थरणपावणत्थं तएहिं सुयमंसं । भुत्तं तहेह साहू गुरूण आणाए आहारं ॥ ४ ॥ भवलंघणसिवपावणहेउं भुञ्जंति ण उण गेहीए । वण्णबलरूवहेउं च भावियप्पा महासत्ता ॥ ५ ॥ [यथा स चिलातिपुत्रः सुंसुमागृद्धोऽकार्यप्रतिबद्धः धन्येन प्रारब्धः प्राप्तो महाटवीं व्यसनशतकलिताम् ॥१॥ तथा जीवो विषयसुखे लुब्धः कृत्वा पापक्रियाः । कर्मवशेन प्राप्नोति भवाटव्यां महादुःखम् ॥ २ ॥ धनश्रेष्ठीव गुरवः पुत्रा इव साधवो भवोऽटवी । सुतामांसमिवाहारो राजगृहं इह शिवं ज्ञेयम् ॥ ३ ॥ यथाऽटवीनिस्तरणनगरप्रापणार्थं तैः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्ति:

सुतामांसं । भुक्तं तथेह साधवो गुरूणामाज्ञयाऽऽहारं ॥ ४ ॥ भवलङ्घनशिवप्रापणहेतोर्भुञ्जन्ति न पुनर्गृद्ध्या । वर्णबल-रूपहेतोश्च भावितात्मानो महासत्त्वाः ॥ ५ ॥] अष्टादश ज्ञातविवरणं समाप्तम् ॥ १८ ॥

अथ एकोनविंशतितमाध्ययनविवरणम् ॥१९॥

अथैकोनविंशतितमं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वत्रासंवृताश्रवस्येतरस्य चानर्थेतरावुक्ताविह तु चिरं संवृताश्रवो भूत्वाऽपि यः पश्चादन्यथा स्यात्तस्य अल्पकालं संवृताश्रवस्य च तावुच्येते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते! समणेणं भग० म० जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते एगूणवीसइ-मस्स नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते?,एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं तेणं कालेणं२इहेव जंबु-दीवे दीवे पुव्वविदेहे सीयाए महाणदीए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स सीतामुहवणसं-डस्स पच्छिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णामं विजए पन्नत्ते, तत्थ णं पुंडरिगिणी णामं रायहाणी पन्नत्ता णवजोयणविच्छिण्णा दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासातीया ४ । तीसे णं पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए णलिणिवणे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अध्ययनं-१८ परिसमाप्तम्

अथ अध्ययनं- १९ "पुण्डरीक" आरभ्यते

णामं उज्जाणे, तत्थ णं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था, तस्स णं पउमावती णामं देवी होत्था, तस्स णं महापउमस्स रन्नो पुत्ता पउमावतीए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं०–पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमालपाणिपाया०, पुंडरीयए जुवराया, तेणं कालेणं २ थेरागमणं महापउमे राया णिग्गए धम्मं सोचा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वतिए, पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया, महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तते णं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरति, तते णं से महापउमे बहूणि वासाणि जाव सिद्धे (सूत्रं १४१) तते णं थेरा अन्नया कयाइं पुणरवि पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए, कंडरीए महाजणसद्दं सोचा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासति, थेरा धम्मं परिकहेंति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगते, तते णं कंडरीए उट्ठाए उट्ठेति उट्ठाए उट्ठेत्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि तए णं जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तए णं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ नमंसइ० अंतियाओ पडिनिक्खमइ तमेव चाउघंटं आसरहं दुरूहति जाव पच्चोरुहइ जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छति करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी–एवं खलु देवा० ! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा० ! जाव पव्वइत्तए, तए णं से पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इदाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि अहं णं तुमं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचयामि, तए णं से कंडरीए पुंड-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाति जाव तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं व०–जाव तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं पुंडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचति जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयति, पव्वतिए अणगारे जाए एक्कारसंगविऊ, तते णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरीगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति बहिया जणवयविहारं विहरति (सूत्रं १४२) तते णं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए यावि विहरति, तते णं थेरा अन्नया कयाई जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ २ णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिग्गए धम्मं सुणेति, तए णं पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवा० कंडरीयं वंदति णमंसति २ कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासति २ जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २ थेरे भगवंते वंदति णमंसइ २ त्ता एवं व०–अहण्णं भंते! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि तं तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह, तते णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति २ जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तते णं पुंडरीए राया जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए, तते णं थेरा भगवंतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति २ बहिया जणवयविहारं विहरंति, तते णं से कंडरीए ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए, तत्थेव ओसण्णे जाए, तते णं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे पहाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवा० २ कंडरियं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ वंदति णमंसति २ एवं व०–धन्नेसि णं तुमं देवा० ! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे णं देवा० ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले जे णं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं च छड्डइत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वतिए, अहं णं अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वतित्तए, तं धन्नेऽसि णं तुमं देवा० ! जाव जीवियफले, तते णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाति जाव संचिट्ठति, तते णं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छति २ थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरति, तते णं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचि कालं उग्गं-उग्गेणं विहरति, ततो पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भत्थिए समणगुणमुक्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कति २ जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवा० असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि णिसीयति २ ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठति, तते णं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाती जेणेव असोगवणिया तेणेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उवा० २ कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासति २ जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवा० २ पोंडरीयं रायं एवं व०–एवं खलु देवा० ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति, तते णं पोंडरीए अम्मधाइए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेति २ अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो० एवं व०–धण्णेसि णं तुमं देवा० ! जाव पव्वतिए, अहण्णं अधण्णे ३ जाव पव्वइत्तए, तं धन्नेऽसि णं तुमं देवा० ! जाव जीवियफले, तते णं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति दोच्चंपि तच्चंपि जाव चिट्ठति, तते णं पुंडरीए कंडरीयं एवं व०–अट्ठो भंते ! भोगेहिं ?, हंता ! अट्ठो, तते णं से पोंडरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०–खिप्पामेव भो देवा० ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचति (सूत्रं १४३) तते णं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति २ कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हति २ इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ–कप्पति मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं ततो पच्छा आहारं आहारित्तएत्तिकट्टु, इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता णं पोंडरिगिणीए पडिनिक्खमति२ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए (सूत्रं१४४) तते णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अइभोयणप्प-
संगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ, तते णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिण्म-
माणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा
पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरति ॥ तते णं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य
अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामते अवस्सवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए
पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे । एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए
समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाइए जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व से कंडरीए राया
(सूत्रं १४५) तते णं से पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २ थेरे भगवंते वंदति
नमंसति २ थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति, छट्ठखमणपारणगंसि पढमाए पोरि-
सीए सज्झायं करेति २ जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेति २ अहापज्जत्तमितिकट्टु
पडिणियत्तति, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २ भत्तपाणं पडिदंसेति २ थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणु-
न्नाए समाणे अमुच्छिते ४ बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असण ४ सरीरकोट्ठ-
गंसि पक्खिवति, तते णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाण-
भोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्मं परिणमति, तते णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए विहरति, तते णं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल जाव एवं व०–णमोऽत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोऽत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं पुव्विंपि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने। ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिति। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जति नो रज्जति जाव नो विप्पडिघायमावज्जति से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविगाणं अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जेत्तिकट्टु परलोएऽवि य णं णो आगच्छति बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं जाव वीतीवइस्सति जहा व से पोंडरीए अणगारे। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते॥ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि (सूत्रं १४६) तस्स

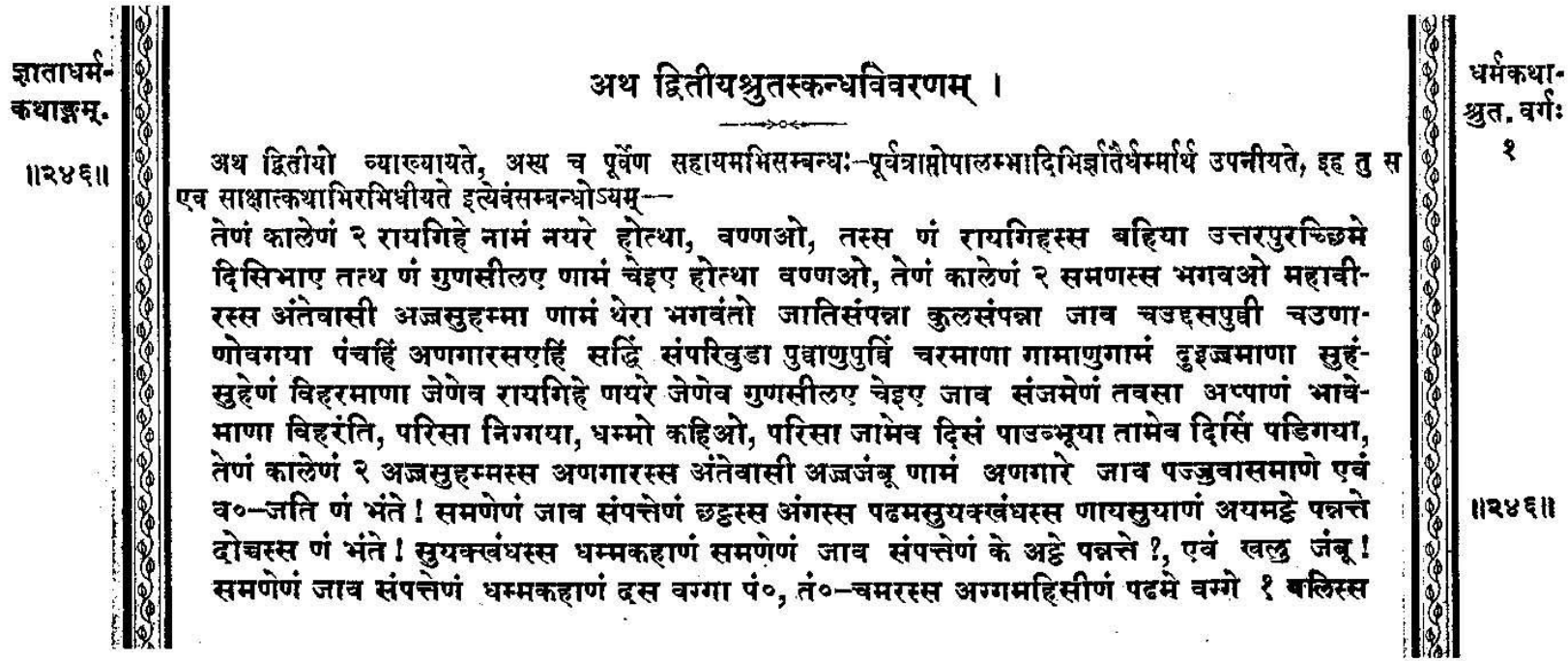
णं सुयक्खंधस्स एगूणवीसं अज्झयणाणि एक्कसरगाणि एगूणवीसाए दिवसेसु समप्पंति (सूत्रं १४७) पढमो सुयक्खंधो समत्तो॥

सर्वं सुगमं, नवरं उपनयविशेषोऽयम्–'वाससहस्संपि जई काऊणं संजमं सुविउलंपि। अंते किलिट्ठभावो न विसुज्झइ कंडरीउव्व॥ १॥ तथा–अप्पेणवि कालेणं केइ जहागहियसीलसामण्णा। साहिंति नियगकज्जं पुंडरीयमहारिसिव्व जहा॥ २॥' [वर्षसहस्रमपि यतिः कृत्वा संयमं सुविपुलमपि। अन्ते क्लिष्टभावो न विशुध्यति कण्डरीक इव॥ १॥ अल्पेनापि कालेन केचित् यथागृहीतशीलसंयुक्ताः। साधयन्ति निजकार्यं यथैव पुण्डरीकमहर्षिः॥ २॥] इत्येकोनविंशतितमं ज्ञातं विवरणतः समाप्तम्॥

अत्र अध्ययनं-१९ परिसमाप्तम्

तत् परिसमाप्ते प्रथमो श्रुतस्कन्धो अपि समाप्तम्

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः



ज्ञाताधर्म-कथाङ्गम्.

॥२४६॥

अथ द्वितीयश्रुतस्कन्धविवरणम् ।

अथ द्वितीयो व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वत्रासोपालम्भादिभिर्ज्ञातैर्धर्म्मार्थ उपनीयते, इह तु स एव साक्षात्कथाभिरभिधीयते इत्येवंसम्बन्धोऽयम्–

तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे होत्था, वण्णओ, तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए तत्थ णं गुणसीलए णामं चेइए होत्था वण्णओ, तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मा णामं थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दुइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसीलए चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेणं कालेणं २ अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं व०–जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमसुयक्खंधस्स णायसुयाणं अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पं०, तं०–चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमे वग्गे १ बलिस्स

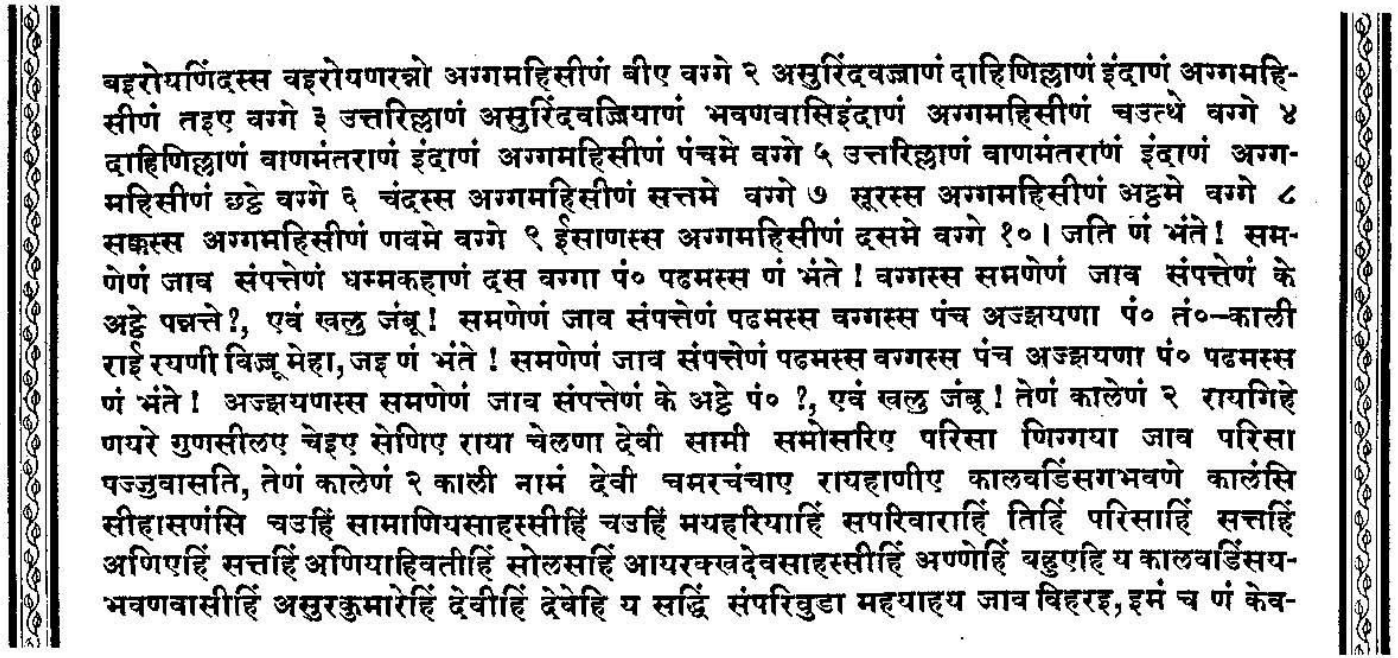
धर्मकथा-श्रुत. वर्गः १

॥२४६॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ द्वितिय: श्रुतस्कन्ध: आरभ्यते

अथ पञ्च-अध्ययनात्मक: प्रथम-वग्ग: आरब्ध:

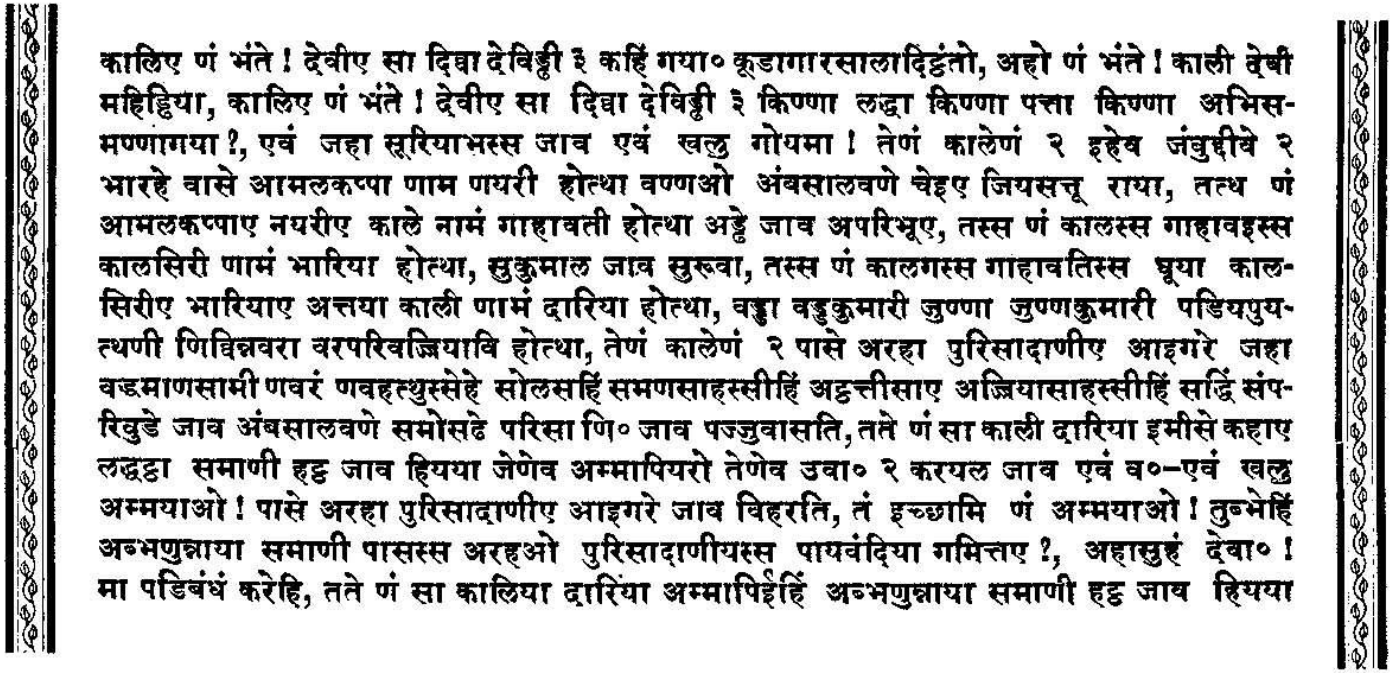


बइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीणं बीए वग्गे २ असुरिंदवज्जाणं दाहिणिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तइए वग्गे ३ उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासिइंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थे वग्गे ४ दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं पंचमे वग्गे ५ उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं छट्ठे वग्गे ६ चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमे वग्गे ७ सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमे वग्गे ८ सक्कस्स अग्गमहिसीणं णवमे वग्गे ९ ईसाणस्स अग्गमहिसीणं दसमे वग्गे १०। जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पं० पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पं० तं०–काली राई रयणी विज्जू मेहा, जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पं० पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सेणिए राया चेलणा देवी सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महयरियाहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहि य कालवडिंसय-भवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवीहिं देवेहि य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ, इमं च णं केव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

लकप्पं जंबुद्दीवं २ विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीतिमणा जाव हयहियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ पायपीढाओ पच्चोरुहति २ पाउया ओमुयति २ तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ वामं जाणुं अंचेति २ दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेति २ ईसिं पच्चुण्णमइ २ कडयतुडियथंभियातो भुयातो साहरति २ करयल जाव कट्टु एवं व०–णमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गए पासउ मे समणे भगवं महावीरे तत्थ गए इह गयंतिकट्टु वंदति २ नमंसति २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तते णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ आभिओगिए देवे सद्दावेति २ एवं व०–एवं खलु देवा० ! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सुरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह २ जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयणसहस्सविच्छिण्णं जाणं सेसं तहेव तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया। भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति २ एवं व०–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठंतो, अहो णं भंते ! काली देवी महिड्ढिया, कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया ?, एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे २ भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावती होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स णं कालगस्स गाहावतिस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था, वड्ढा वड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी णिविन्नवरा वरपरिवज्जियावि होत्था, तेणं कालेणं २ पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे परिसा णि० जाव पज्जुवासति, तते णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० २ करयल जाव एवं व०–एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरति, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पाससस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ?, अहासुहं देवा० ! मा पडिबंधं करेहि, तते णं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा सातो गिहातो पडिणिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवा० २ धम्मियं जाणपवरं दुरूढा, तते णं सा काली दारिया धम्मियं जाणपवरं एवं जहा दोवती जाव पज्जुवासति, तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महतिमहालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तते णं सा काली दारिया पाससस अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोचा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदति नमंसति २ एवं व०–सद्दहामि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवा० ! अम्मापियरो आपुच्छामि,तते णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवा० !, तते णं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदति २ तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति २ पाससस अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियातो अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिणिक्खमति २ जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवा० २ आमलकप्पं णयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवा० २ धम्मियं जाणपवरं ठवेति २ धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति २ जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवा० २ करयल एवं व०–एवं खलु अम्मयाओ! मए पाससस अरहतो अंतिए धम्मे णिसंते सेऽविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए

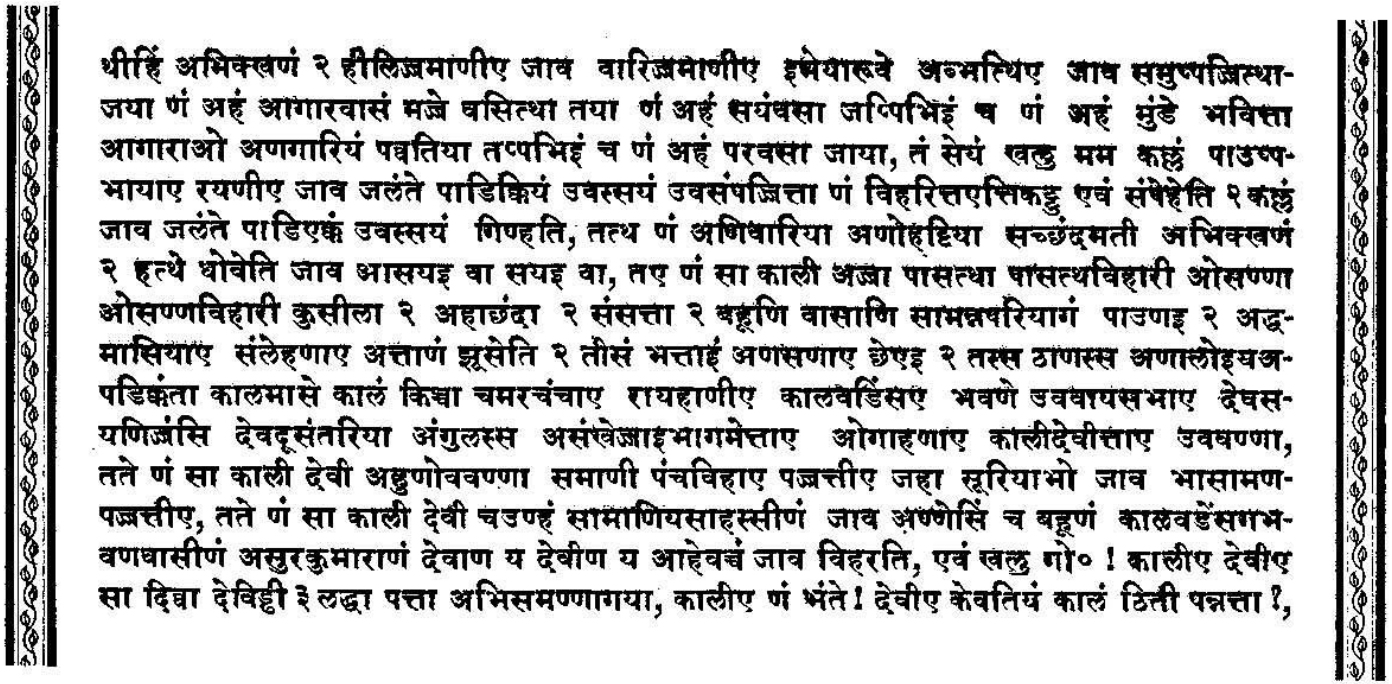
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अभिरुतिए, तए णं अहं अम्मयाओ ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहतो अंतिए मुंडा भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतित्तए, अहासुहं देवा० ! मा पडिबंधं क०, तते णं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्त-णाइणियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेति२ ततो पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरतो कालियं दारियं सेयापी-एहिं कलसेहिं ण्हावेति २ सव्वालंकारविभूसियं करेति २ पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरुहेति २ मित्त णाइणियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडा सविड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति २ जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवा०२छत्ताइए तित्थगराइसए पासति २ सीयं ठवेइ २ कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवा० २ वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं व०–एवं खलु देवा० ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव किमंग पुण पासणयाए ?, एस णं देवा० ! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ताणं जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं, अहा-सुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं, तते णं काली कुमारी पासं अरहं वंदति २ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमति २ सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति २ सयमेव लोयं करेति २ जेणेव पासे अरहा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसादाणीए तेणेव उवा० २ पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदति २ एवं व०–आलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव सयमेव पव्वाविउं, तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयति, तते णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं कुमारिं सयमेव पव्वावेति, जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तते णं सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी, तते णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाअज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाणं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ जाव विहरति, तते णं सा काली अज्जा अन्नया कयाति सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं २ हत्थे धोवइ पाए धोवइ सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ कक्खंतराणि धोवति गुज्झंतराइं धोवइ जत्थ २ विय णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेइ तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता ततो पच्छा आसयति वा सयइ वा, तते णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं व०–नो खलु कप्पति देवा०! समणीणं णिग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए तुमं च णं देवाणुप्पिया! सरीरबाउसिया जाया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि वा सयाहि वा तं तुमं देवाणुप्पिए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि,तते णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाति जाव तुसिणीया संचिट्ठति, तते णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं २ हीलेंति णिंदंति खिंसंति गरिहंति अवमण्णंति अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तते णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गं-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



थीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-
जया णं अहं आगारवासं मज्झे वसित्था तया णं अहं सयंवसा जप्पिभिइं च णं अहं मुंडे भवित्ता
आगाराओ अणगारियं पव्वतिया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्प-
भायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्कियं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं
जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हति, तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमती अभिक्खणं
२ हत्थे धोवेति जाव आसयइ वा सयइ वा, तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा
ओसण्णविहारी कुसीला २ अहाछंदा २ संसत्ता २ बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ २ अद्ध-
मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेति २ तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ २ तस्स ठाणस्स अणालोइयअ-
पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवस-
यणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जाइभागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववण्णा,
तते णं सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामण-
पज्जत्तीए, तते णं सा काली देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसगभ-
वणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरति, एवं खलु गो० ! कालीए देवीए
सा दिव्वा देविड्ढी ३ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भंते ! देवीए केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ?,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

गो० ! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उवव-ट्टित्ता कहिं गच्छिहिति कहं उववज्जिहिति ?, गो० ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमवग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि । धम्मकहाणं पढमज्झ-यणं समत्तं (सूत्रं १४८)

सर्वः सुगमः, नवरं 'किण्णा लद्ध'त्ति प्राकृतत्वात् केन हेतुना लब्धा–भवान्तरे उपार्जिता प्राप्ता–देवभवे उपनीता अभिसमन्वागता–परिभोगतः उपयोगं प्राप्तेति, 'वड्ढ'त्ति बृहती वयसा सैव बृहत्त्वादपरिणीतत्वाच्च बृहत्कुमारी जीर्णा शरीर-जरणाद्वृद्धेत्यर्थः सैव जीर्णत्वापरिणत्वाभ्यां जीर्णकुमारी जीर्णशरीरत्वादेव पतितपुतस्तनी–अवनतिगतनितम्बदेशवक्षोजा निर्विण्णाश्च वराः–परिणेतारो यस्याः सा निर्विण्णवरा अत एव वरपरिवर्जितेति, शेषं सूत्रसिद्धम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे प० बिति-यस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव आगया णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, भंतेत्ति भगवं गो० ! पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गो० ! तेणं कालेणं २ आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावती राईसिरी भारिया राई दारिया पाससस्स समो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सरणं राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिति। एवं खलु जंबू! बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ २। जति णं भंते! तइयज्झयणस्स उक्खेवतो, एवं खलु जंबू! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राती तहेव रयणीवि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावती रयणसिरी भारिया रयणी दारिया सेसं तहेव जाव अंतं काहिति ३। एवं विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावती विज्जुसिरिभारिया विज्जुदारिया सेसं तहेव ४। एवं मेहावि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावती मेहसिरि भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ५। एवं खलु जंबू समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते (सूत्रं १४९) जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पं०, तं०–सुंभा निसुंभा रंभा निरुंभा मदणा, जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पं०, दोच्चस्स णं भंते! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के० अट्ठे पं०?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढो परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ सुंभा देवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया सुंभे गाहावती सुंभसिरी भारिया सुंभा दारिया सेसं जहा कालिया णवरं

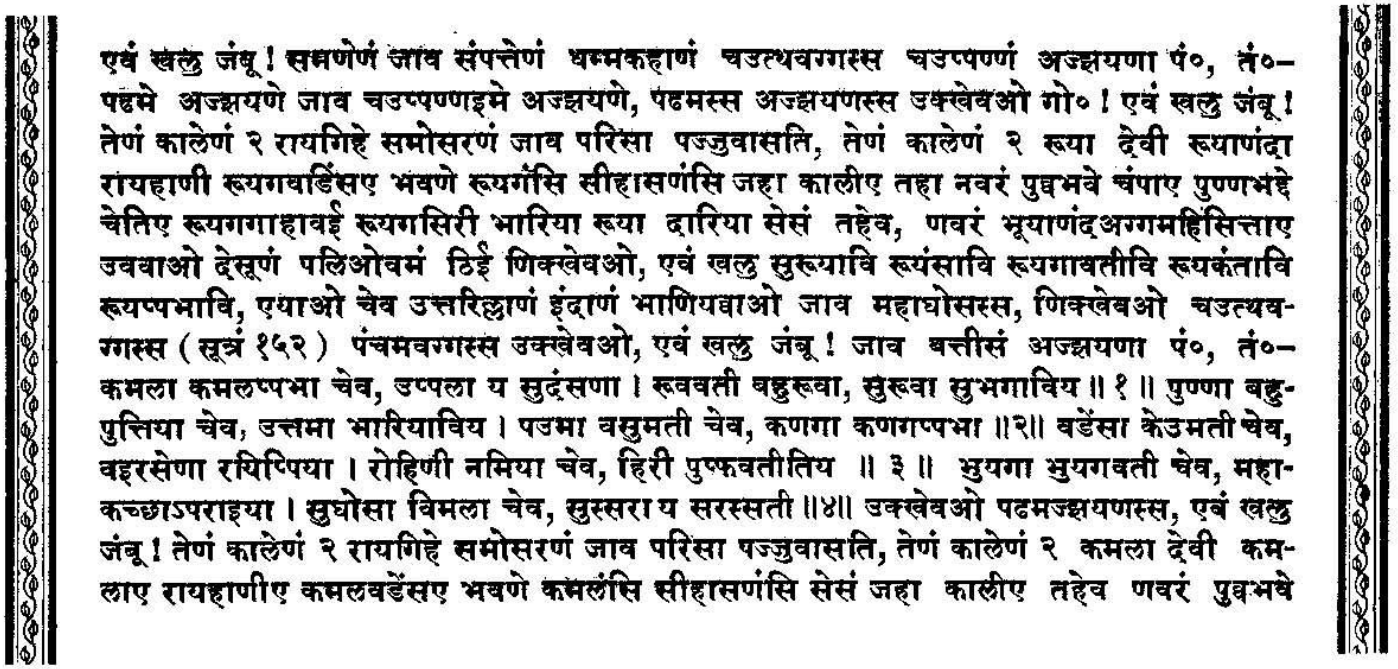
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र पञ्च-अध्ययनात्मकः प्रथम-वर्ग्गः परिसमाप्तः

अथ द्वितियात् आरभ्य दशम-वर्ग्गः पर्यन्ता वर्ग्गाः (स्व-स्व अध्ययनानि समेता) कथ्यन्ते

अद्धुट्ठातिं पलिओवमाइं ठिती, एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसावि चत्तारि अज्झयणा, सावत्थीए नवरं माया पिया सरिसनामया, एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ बितीयवग्गस्स २ (सूत्रं १५०) उक्खेवओ तइयवग्गस्स एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पन्नत्ता, तं०–पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णतिमे अज्झयणे, जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउप्पन्नज्झयणा पं० पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ इला देवी धरणीए रायहाणीए इलावडंसए भवणे इलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसीए णयरे काममहावणे चेइए इले गाहावती इलसिरी भारिया इला दारिया सेसं जहा कालीए णवरं धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ सातिरेगअद्धपलिओवमठिती सेसं तहेव, एवं खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं कमा सतेरा सोयामणी इंदा घणा विज्जुयावि, सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ एव, एते छ अज्झयणा वेणुदेवस्सवि अविसेसिया भाणियव्वा एवं जाव घोसस्सवि एए चेव छ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाणं इंदाणं चउप्पण्णं अज्झयणा भवंति, सव्वाओवि वाणारसीए काममहावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ (सूत्रं १५१) चउत्थस्स उक्खेवओ,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पं०, तं०– पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ गो० ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ रूया देवी रूयाणंदा रायहाणी रूयगवडिंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेतिए रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया सेसं तहेव, णवरं भूयाणंदअग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवमं ठिई णिक्खेवओ, एवं खलु सुरूयावि रूयंसावि रूयगावतीवि रूयकंतावि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स, णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स (सूत्रं १५२) पंचमवग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं अज्झयणा पं०, तं०– कमला कमलप्पभा चेव, उप्पला य सुदंसणा । रूववती बहुरूवा, सुरूवा सुभगावि य ॥ १ ॥ पुण्णा बहुपुत्तिया चेव, उत्तमा भारियावि य । पउमा वसुमती चेव, कणगा कणगप्पभा ॥२॥ वडेंसा केउमती चेव, वइरसेणा रतिप्पिया । रोहिणी नमिया चेव, हिरी पुप्फवतीतिय ॥ ३ ॥ भुयगा भुयगवती चेव, महाकच्छाऽपराइया । सुघोसा विमला चेव, सुस्सरा य सरस्सती ॥४॥ उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावतिस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पाससस्स० अंतिए निक्खंता कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमं ठिती, एवं सेसावि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं, भाणियवाओ सवाओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे माया पिया धूया सरिसनामया, ठिती अद्धपलिओवमं। पंचमो वग्गो समत्तो। (सूत्रं १५३) छट्ठोवि वग्गो पंचमवग्गसरिसो, णवरं महाकालिंदाणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरुउज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव। छट्ठो वग्गो समत्तो (सूत्रं १५४) सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! जाव चत्तारि अज्झयणा पं०, तं०–सूरप्पभा आयवा अचिमाली पभंकरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं २ सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा णवरं पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिती अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओवि सवाओ अरक्खुरीए णयरीए। सत्तमो वग्गो समत्तो (सूत्रं १५५) अट्ठमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! जाव चत्तारि अज्झयणा पं०, तं०–चंदप्पभा दोसिणाभा अचिमाली पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे मट्ठुराए णयरीए भंडिवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावती चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिसी ठिती अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओवि मट्ठुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरिसणामा, अट्ठमो वग्गो समत्तो। (सूत्रं १५६) णवमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! जाव अट्ठ अज्झयणा पं०, तं०–पउमा सिवा सती अंजू रोहिणी णवमिया अचला अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं २ पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा, णवरं सावत्थीए दो जणीओ हत्थिणाउरे दो जणीओ कंपिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजया मायराओ सवाओऽवि पासस्स अंतिए पव्वतियाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्त पलिओवमाइं महाविदेहे वासे अंतं काहिंति। णवमो वग्गो समत्तो (सूत्रं १५७) दसमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! जाव अट्ठ अज्झयणा पं०, तं०–कण्हा य कण्हराती रामा तह रामरक्खिया वसू या। वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे॥ १॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

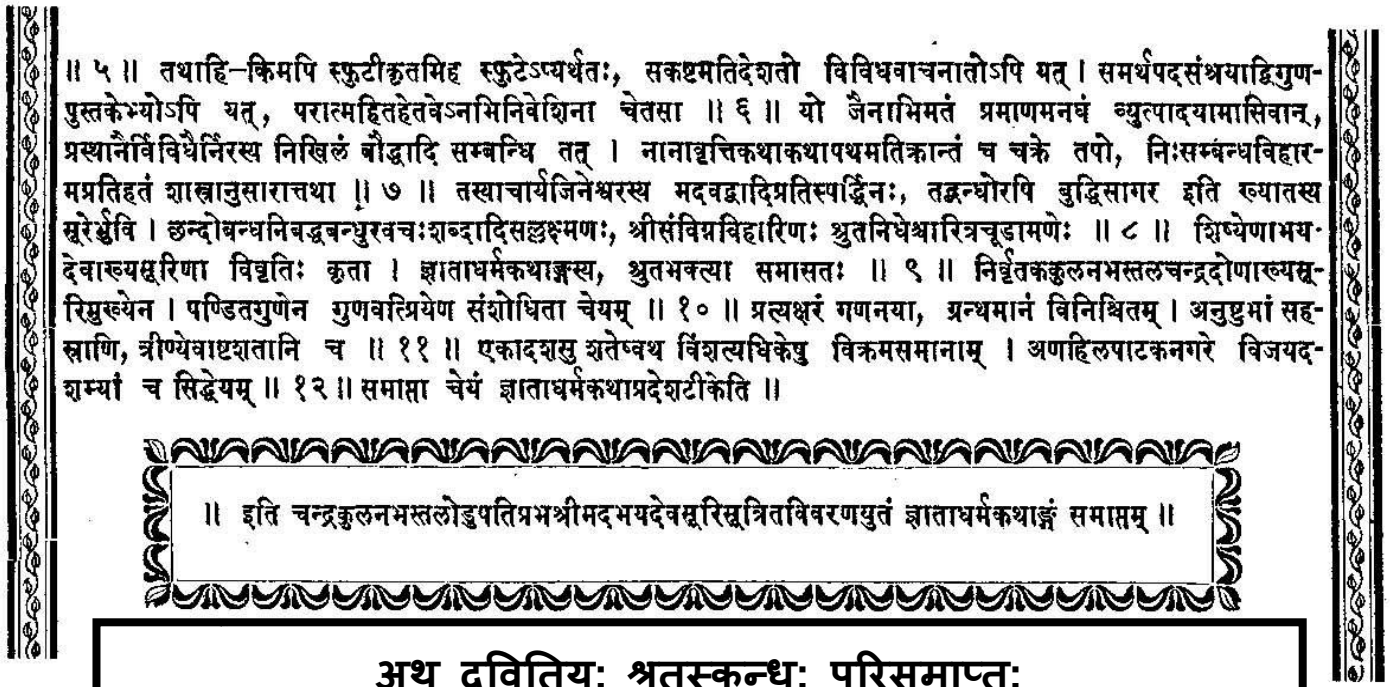
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र-[०६], अंगसूत्र-[०६] "ज्ञाताधर्मकथा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचिता वृत्तिः

तेणं कालेणं २ कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ सावत्थीए नयरीए दो जणीओ कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वाओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिती णव पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुचिहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति। एवं खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स। दसमो वग्गो समत्तो। (सूत्रं १५८)। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं०। धम्मकहा सुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ। (सूत्रं १५९) समाप्तो द्वितीयः श्रुतस्कन्धः।

नमः श्रीवर्द्धमानाय, श्रीपार्श्वप्रभवे नमः। नमः श्रीमत्सरस्वत्यै, सहायेभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥ इह हि गमनिकार्थं यन्मया व्यूहयोक्तं, किमपि समयहीनं तद्विशोध्यं सुधीभिः। नहि भवति विधेया सर्वथाऽस्मिन्नुपेक्षा, दयितजिनमतानां तायिनां चाङ्गिवर्गे ॥ २ ॥ परेषां दुर्लक्षा भवति हि विपक्षाः स्फुटमिदं, विशेषाद् वृद्धानामतुलवचनज्ञानमहसाम्। निराम्नायाधीभिः पुनरतितरां मादृशजनैस्ततः शास्त्रार्थे मे वचनमनघं दुर्लमिह ॥ ३ ॥ ततः सिद्धान्ततरुवरैः, स्वयमूह्यः प्रयत्नतः। न पुनरस्मदाख्यात, एव ग्राह्यो नियोगतः ॥ ४ ॥ तथापि माऽस्तु मे पापं, सङ्घमत्युपजीवनात्। वृद्धन्यायानुसारित्वाद्धितार्थं च प्रवृत्तितः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ द्वितियात् आरभ्य दशम-वग्गः पर्यन्ता वग्गाः (स्व-स्व अध्ययनानि समेता) परिसमाप्ताः



॥ ५ ॥ तथाहि–किमपि स्फुटीकृतमिह स्फुटेऽप्यर्थतः, सकष्टमतिदेशतो विविधवाचनातोऽपि यत् । समर्थपदसंश्रयाद्विगुण-पुस्तकेभ्योऽपि यत्, परात्महितहेतवेऽनभिनिवेशिना चेतसा ॥ ६ ॥ यो जैनाभिमतं प्रमाणमनघं व्युत्पादयामासिवान्, प्रस्थानैर्विविधैर्निरस्य निखिलं बौद्धादि सम्बन्धि तत् । नानावृत्तिकथाकथापथमतिक्रान्तं च चक्रे तपो, निःसम्बन्धविहार-मप्रतिहतं शास्त्रानुसारात्तथा ॥ ७ ॥ तस्याचार्यजिनेश्वरस्य मदवद्वादिप्रतिस्पर्द्धिनः, तद्बन्धोरपि बुद्धिसागर इति ख्यातस्य सूरेर्भुवि । छन्दोबन्धनिबद्धबन्धुरवचःशब्दादिसल्लक्ष्मणः, श्रीसंविग्नविहारिणः श्रुतनिधेश्चारित्रचूडामणेः ॥ ८ ॥ शिष्येणाभय-देवाख्यसूरिणा विवृतिः कृता । ज्ञाताधर्मकथाङ्गस्य, श्रुतभक्त्या समासतः ॥ ९ ॥ निर्वृतककुलनभस्तलचन्द्रद्रोणाख्यसू-रिमुख्येन । पण्डितगुणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ॥ १० ॥ ग्रन्थाग्रं विनिश्चितम् । अनुष्टुभां सह-स्राणि, त्रीण्येवाष्टशतानि च ॥ ११ ॥ एकादशसु शतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानाम् । अणहिलपाटकनगरे विजयद-शम्यां च सिद्धेयम् ॥ १२ ॥ समाप्ता चेयं ज्ञाताधर्मकथाप्रदेशटीकेति ॥

॥ इति चन्द्रकुलनभस्तलोडुपतिप्रभश्रीमदभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं ज्ञाताधर्मकथाङ्गं समाप्तम् ॥

अथ द्वितियः श्रुतस्कन्धः परिसमाप्तः

Jain Education International www.jainelibrary.org

	सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि भाग १ से ४० में कहां क्या मिलेगा?		
भाग	इस भागमे समाविष्ट आगम के नाम और आगम-क्रम		कुलपृष्ठ
01	आगम ०१ आचार मूलं एवं वृत्ति भाग-१ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- १,२		३१४
02	आगम ०१ आचार मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- ३ से ९, श्रुतस्कन्ध- २		५८६
03	आगम ०२ सूत्रकृत मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- १ से १३		४९८
04	आगम ०२ सूत्रकृत मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन १४ से १६, श्रुतस्कन्ध-२		३९२
05	आगम ०३ स्थान मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ स्थान- १ से ४		५९४
06	आगम ०३ स्थान मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ स्थान- ५ से १० संपूर्ण		४९४
07	आगम ०४ समवाय मूलं एवं वृत्ति.		३३८
08	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ शतक- १ से ६		५९२
09	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ शतक- ७ से ११		५५२
10	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-३ शतक- १२ से २०		५१४
11	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-४ शतक- २१ से ४१ संपूर्ण		३८४
12	आगम ०६ ज्ञाताधर्मकथा मूलं एवं वृत्ति.		५२२
13	आगम-७,८,९,१०उपासकदशा, अंतकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण मूलं एवं वृत्ति.		५३८
14	आगम-११,१२, विपाक, उववाई मूलं एवं वृत्ति.		३८४
15	आगम १३ राजप्रश्नीय मूलं एवं वृत्ति.		३१४
16	आगम१४ जीवाजीवाभिगम भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. [प्रतिपत्ति-३-अतर्गत] सूत्र- १ से १३८		४८०
17	आगम१४ जीवाजीवाभिगम भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. [प्रतिपत्ति-३-अतर्गत] सूत्र- १३९ से प्रतिपत्ती-१० संपूर्ण		४८८
18	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. पद- १ से ५		४२६
19	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. पद- ६ से २२		५१४
20	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-३ मूलं एवं वृत्ति. पद- २३ से ३६ संपूर्ण		३३६
21	आगम १६ सूर्यप्रज्ञप्ति मूलं एवं वृत्ति.		६१०

सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि भाग १ से ४० में कहां क्या मिलेगा?

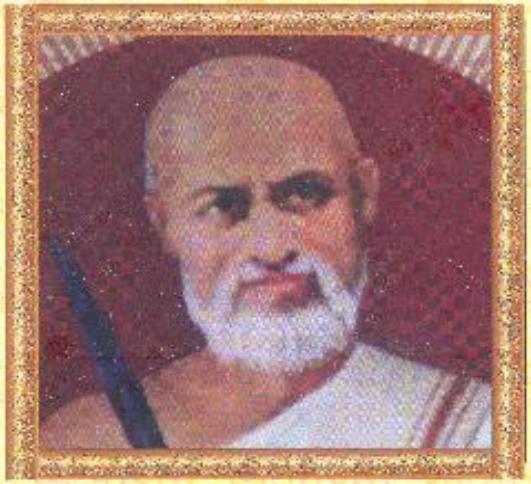
भाग	इस भागमे समाविष्ट आगम के नाम और आगम-क्रम		कुलपृष्ठ
22	आगम १७ चन्द्रप्रज्ञप्ति मूलं एवं वृत्ति.		६१४
23	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- १ एवं २.		३७६
24	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- ३ एवं ४.		४२६
25	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-३ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- ५ से ७.		३४४
26	आगम १९ थी ३२ निरयावलिका, कल्पवतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा, चतु:शरण, आतुरपरत्याख्यान, महाप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तंदुलवैचारिक, संस्तारक, गच्छाचार, गणिविद्या, देवेन्द्रस्तव मूलं एवं छाया		३१२
27	आगम ३३ थी ३९ मरणसमाधि मूलं एवं छाया, निशीथ, ब्रुहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध, जीतकल्प/पंचकल्प, महानिशीथ मूलं एव		३३०
28	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-१, निर्युक्ति- १ से ५२१		४६६
29	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-२, निर्युक्ति- ५२२ से ९५१		४४२
30	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-३ निर्युक्ति- ९५२ से १२७३ अपूर्ण, [अध्ययन- १ से ४ अपूर्ण]		४६४
31	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-४ निर्युक्ति- १२७३ अपूर्ण से १६२३, [अध्ययन- ४ अपूर्ण से ६ संपूर्ण]		४२६
32	आगम ४१/१ ओघनिर्युक्ति मूलं एवं वृत्ति.		४७२
33	आगम ४१/२ पिंडनिर्युक्ति मूलं एवं वृत्ति.		३७६
34	आगम ४२ दशवैकालिक मूलं एवं वृत्ति.		५९०
35	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-१, अध्ययन- १ से ५		५२२
36	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-२, अध्ययन- ६ से २१		४८२
37	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-३, अध्ययन- २२ से ३६		४६६
38	आगम ४४ नन्दिसूत्र मूलं एवं वृत्ति.		५२८
39	आगम ४५ अनुयोगद्वार् मूलं एवं वृत्ति.		५६०
40	कल्प[बारसा]सूत्र... चतु:शरण, तन्दुलवैचारिक, गच्छाचार मूलं एवं वृत्ति.		३९४


आगम
वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

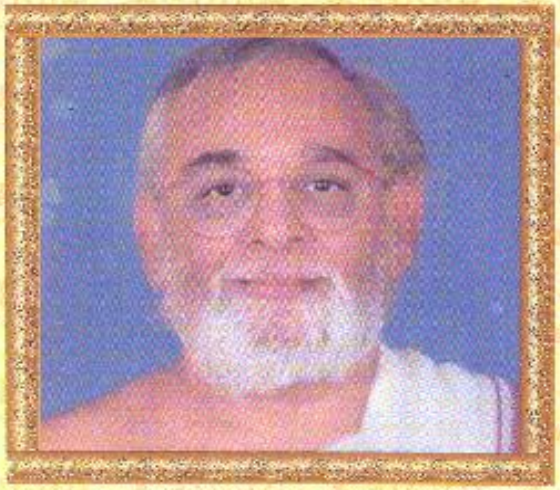
सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता

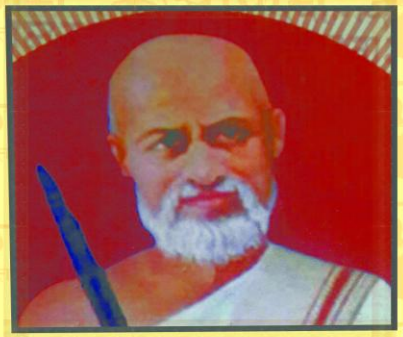


आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता





मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

आगम - ६

'ज्ञाताधर्मकथा' मूलं एवं वृत्तिः

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर **मुनिश्री दीपरत्नसागरजी**

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

